पवित्र क़ुरआन

HINDI

पवित्र क़ुरआन

अनुवादक

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

GOODWORD BOOKS

First published 2019

Translation and editorial team:
Dr. Muslema Siddiqui
Mohammad Zakwan Nadwi
Abdullah Danish
Imran Ahmad Islahi
M Harun Rashid

Goodword Books
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110013
Tel. +9111-41827083
Mob. +91-8588822672
email: info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

Goodword Books, Chennai
Mob. +91-9790853944, 9600105558

Center for Peace and Spirituality
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110 013
Mob. +91-9999944119
info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Printed in India

विषय सूची

परिचय

क़ुरआन अल्लाह की किताब है। वह अपनी मूल अरबी भाषा में पूर्णतः सुरक्षित है। ऐसी एक किताब का अनुवाद कभी मूल किताब का विकल्प नहीं बन सकता। क़ुरआन के अनुवाद का उद्देश्य उसको बोधगम्य बनाना है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो व्यक्ति अरबी भाषा न जानता हो, वह क़ुरआन को समझ नहीं सकता। क़ुरआन, अरबी भाषा न जानने वाले के लिए भी एक बोधगम्य किताब है। क़ुरआन प्रत्यक्षतः अरबी भाषा में है, परन्तु वास्तविकता यह है कि वह प्रकृति की भाषा में है, अर्थात वह भाषा जिसमें अल्लाह ने रचना के समय समस्त मनुष्यों से प्रत्यक्ष सम्बोधन किया था। यह सम्बोधन प्रत्येक महिला और पुरुष के अन्दर सहज रूप में सदैव विद्यमान रहता है। इसलिए क़ुरआन प्रत्येक मनुष्य के लिए एक बोधगम्य किताब है, किसी के लिए चेतन रूप से और किसी के लिए अचेतन रूप से।

इस वास्तविकता का क़ुरआन में इन शब्दों में उल्लेख हैः ''यह खुली हुई आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिनको ज्ञान प्रदान हुआ है।'' (49ः 49)

इसका अर्थ यह है कि क़ुरआन जिस आसमानी वास्तविकता को चेतना की भाषा में बता रहा है, वह सहज भाषा में पहले से मनुष्य के अन्दर मौजूद है। क़ुरआन का सन्देष मनुष्य के लिए कोई अजनबी सन्देष नहीं, वह उसी ज्ञान की एक शाब्दिक अभिव्यक्ति है जिससे मनुष्य प्रकृति के स्तर पर पहले से परिचित है।

क़ुरआन में बताया गया है कि जो मनुष्य बाद के युग में पैदा हो रहे हैं, वह सब प्रारम्भिक रूप से आदम की रचना के समय ही पैदा कर दिये गये थे। उस समय अल्लाह ने उन मानव आत्माओं से प्रत्यक्ष सम्बोधन किया। इस मामले का क़ुरआन में इस तरह वर्णन हैः

> ''और जब तेरे पालनहार ने आदम की सन्तान की पीठों से उनकी सन्तान को निकाला और उनको साक्षी ठहराया था स्वंय उनके ऊपर, ''क्या मैं

तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ" उन्होंने कहा हाँ, हम स्वीकार करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम क़ियामत के दिन कहने लगो कि हमको तो इस बात की ख़बर ही न थी"। (7:172)

अल्लाह और बन्दे के बीच एक और वार्त्ता का उल्लेख क़ुरआन में इस प्रकार आया हैः

"हमने अमानत (ऐच्छिक कर्म) को आसमानों और धरती और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होंने उसको उठाने से मना किया और वह इससे डर गये और मनुष्य ने इसको अर्थात अमानत को उठा लिया। निस्सन्देह, वह अत्याचारी और अज्ञानी था।" (33:72)

इन दोनों आयतों से पता चलता है कि रचना के प्रारम्भ में अल्लाह ने सभी मनुष्यों को प्रत्यक्ष रूप से सम्बोधित किया था। इस सम्बोधन में जो बात कही गयी थी, वह समस्त मनुष्यों के अवचेतन में सुरक्षित कर दी गयी। मानो अल्लाह की जिस वाणी को मनुष्य, क़ुरआन के रूप में पढ़ रहा है, इससे पहले प्रत्यक्षतः अल्लाह के सम्बोधन के अन्तर्गत वह उस वाणी को सुन चुका है और समझ चुका है। क़ुरआन, मनुष्य के लिए एक जानी हुई बात को जानना है, न कि किसी अनजानी बात को अचानक सुनना। वास्तविकता यह है कि क़ुरआन इन्सान की चेतना का प्रकटन (unfolding) है।

इस बात को सामने रखा जाये तो यह जानना कठिन नहीं कि क़ुरआन को समझने के लिए क़ुरआन का अनुवाद भी एक पर्याप्त साधन की हैसियत रखता है। जिस व्यक्ति की प्रकृत्ति जीवित हो, जिसने अपने आप को बाद की कंडीशनिंग (conditioning) से बचाया हो, वह जब क़ुरआन का अनुवाद पढ़ेगा तो उसके मन के वह खाने खुल जायेंगे जहाँ संरचना के समय किया गया अल्लाह का सम्बोधन पहले से सुरक्षित है। "अलस्तु बिरब्बिकुम" (क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ) की प्रतीज्ञा यदि यह अल्लाह का पहला सम्बोधन है तो क़ुरआन अल्लाह का दूसरा सम्बोधन है। दोनों एक दूसरे के लिए पुष्टि

की हैसियत रखते हैं। कोई व्यक्ति यदि अरबी भाषा न जानता हो, अथवा कम जानता हो और वह मात्र क़ुरआन का अनुवाद पढ़ने की स्थिति में हो तो उसको क़ुरआन बोध के सम्बन्ध में निराशा का शिकार नहीं होना चाहिए- क़ुरआन की यह मानव धारणा वर्तमान युग में एक वैज्ञानिक तथ्य बन चुकी है। वर्तमान युग में जेनेटिक (आनुवशिंक) कोड का विज्ञान और एन्थ्रोपोलोजी (मानव विज्ञान) का अध्ययन, दोनों क़ुरआन के इस दृष्टिकोण की पूर्णतः पुष्टि करते हैं।

क़ुरआन अल्लाह की किताब

क़ुरआन अल्लाह की किताब है, जो इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) को प्रदान की गयी। क़ुरआन एक संकलन के रूप में नहीं उतरा है, बल्कि वह 23 वर्ष की अवधि में भिन्न भिन्न अंशों के रूप में उतारा गया। इस्लाम के पैग़म्बर मक्का में थे, जबकि 610 ई. में क़ुरआन का पहला भाग उतरा। उसके बाद निरन्तर उसके विभिन्न भाग आप पर उतरते रहे। क़ुरआन का अन्तिम भाग आप पर 632 ई. में उतरा, जबकि आप मदीने में थे। क़ुरआन का यह अवतरण फ़रिश्ता जिब्रील के माध्यम से होता था। अन्त में स्वंय फ़रिश्ता जिब्रील के निर्देशा अनुसार, क़ुरआन के विभिन्न अंशों को एक ग्रन्थ के रूप में संकलित किया गया।

क़ुरआन में कुल 114 सूरतें हैं, कुछ बड़ी सूरतें हैं और कुछ छोटी सूरतें। आयतों की संख्या कुल 6236 है। तिलावत (वाचन) की सुविधा के लिए क़ुरआन को तीस भाग और सात मंज़िल के रूप में बाँटा गया है। क़ुरआन सातवीं शताब्दी की प्रथम चौथाई में उतरा। उस समय काग़ज़ अस्तित्व में आ चुका था। यह काग़ज़ कुछ विशेष वृक्षों के रेशे से लेकर हस्त उद्योग के रूप में बनाया जाता था। उसको पपायरस (Papyrus) कहा जाता है। क़ुरआन का कोई अंश जब भी उतरता तो उसको उस काग़ज़ पर लिख लिया जाता था, जिसको अरबी भाषा में 'क़िरतास' कहा जाता है। इसी के साथ लोग क़ुरआन

को अपनी स्मृति में सुरिक्षत कर लेते थे, क्योंकि उस समय क़ुरआन ही एक मात्र इस्लामी साहित्य था। क़ुरआन को नमाज़ों में पढ़ा जाता था और इस्लाम की ओर आमन्त्रित करने के लिए उसको लोगों के समक्ष पढ़कर सुनाया जाता था। इस प्रकार क़ुरआन एक ही साथ लिखा भी जाता रहा और इसी के साथ उसको कण्ठस्थ भी किया जाता रहा।

इस्लाम के पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के अन्तिम जीवन काल तक क़ुरआन को सुरक्षित करने का यही तरीक़ा प्रचलित रहा। आपकी मृत्यु 632 ई. में हुई, इसके बाद अबू बक्र सिद्दीक (रज़ि.) इस्लाम के पहले ख़लीफ़ा बने। उन्होंने नियमित रूप से अपनी देख रेख में क़ुरआन की एक जिल्द चढ़ाई हुई संकलित प्रति बनाई। यह प्रति प्राचीन काल के काग़ज़ अथवा क़िरतास पर बनायी गयी थी। क़ुरआन की इस प्रति की जिल्द का साइज़ चौकोर था, अतः उसको रबआ (वर्ग) कहा जाता था। इस प्रकार क़ुरआन, पहले ख़लीफ़ा के युग में एक जिल्द चढ़ी हुई किताब के रूप में सुरक्षित हो गया। तीसरे ख़लीफा उस्मान बिन अफ्फान के युग में इस जिल्द वाले क़ुरआन की अतिरिक्त प्रतियाँ तैयार की गयीं और उनको विभिन्न नगरों में भेज दिया गया। यह प्रतियाँ नगर की जामा मस्जिदों में उपलब्ध रहती थीं। लोग उनको पढ़ते भी थे और उनसे अतिरिक्त प्रतियाँ तैयार करते थे।

क़ुरआन के लिखने का यह अनुक्रम 19वीं शताब्दी तक जारी रहा। 19वीं शताब्दी में प्रिंटिंग प्रेस का अविष्कार हुआ और साथ ही काग़ज़ भी आधुनिक औद्योगिक ढंग से अधिक मात्र में तैयार किया जाने लगा। इस प्रकार 19वीं शताब्दी में नियमित रूप से प्रिंटिंग प्रेस के द्वारा छपाई का आरम्भ हो गया। छपाई की विधियों में निरन्तर विकास होता रहा। इसी के साथ क़ुरआन की मुद्रित प्रतियाँ भी अधिक उत्कृष्ट रूप में तैयार होने लगीं। अब क़ुरआन की मुद्रित प्रतियाँ इतनी सामान्य हो गयी हैं कि वह प्रत्येक घर में और प्रत्येक मस्जिद में और प्रत्येक पुस्तकालय में और प्रत्येक बाजार में इस प्रकार प्रचूर

संख्या में उपलब्ध हैं कि प्रत्येक मनुष्य विभिन्न भाषा में क़ुरआन की छपी हुए सुन्दर प्रतियाँ प्राप्त कर सकता है, चाहे वह पृथ्वी के किसी भी भाग में हो।

अल्लाह की सृष्टि निर्माण योजना

प्रत्येक किताब का एक विषय (subject) होता है। क़ुरआन का विषय यह है कि अल्लाह की सृश्टि निर्माण योजना (Creation Plan of God) से मनुष्य को अवगत कराया जाये, अर्थात मनुष्य को यह बताया जाये कि अल्लाह ने यह संसार किस लिए बनाया है। मनुष्य को धरती पर बसाने का उद्देश्य क्या है। मृत्यु से पहले के जीवन काल में मनुष्य से क्या वांछित है, और मृत्यु के बाद के जीवनकाल में मनुष्य के साथ क्या घटित होने वाला है। मनुष्य एक अमर रचना है। उसकी जीवन यात्रा मृत्यु के बाद भी जारी रहती है। क़ुरआन इस सम्पूर्ण जीवन यात्रा के लिए एक मार्गदर्शक किताब की हैसियत रखता है। मनुष्य को इस वास्तविकता से अवगत करना, यही क़ुरआन का उद्देश्य है और यही क़ुरआन की वार्त्ता का विषय है।

अल्लाह ने मनुष्य को एक अमर रचना की हैसियत से पैदा किया। फिर उसके जीवन काल को दो भागों में बाँट दिया। उसका बहुत थोड़ा भाग मृत्यु से पहले के समय में रखा और उसका अधिक बड़ा भाग मृत्यु के बाद के जीवन काल में रख दिया। मृत्यु से पहले का जो काल है, वह परीक्षा काल है और मृत्यु के बाद का जो काल है वह परीक्षाफल के अनुसार, अच्छा या बुरा परिणाम पाने का काल। क़ुरआन, जीवन की इसी वास्तविकता के लिए एक परिचयात्मक पुस्तक की हैसियत रखता है।

क़ुरआन एक दृष्टि से उपकार करने वाले की ओर से पुरस्कार का अनुस्मरण है। अल्लाह ने मनुष्य को विशेष गुणों के साथ पैदा किया। फिर उसको पृथ्वी जैसे ग्रह पर बसाया, जहाँ मनुष्य के लिए प्रत्येक क़िस्म का लाईफ सपोर्ट सिस्टम (Life Support System) उपलब्ध है। क़ुरआन का उद्देश्य यह है कि मनुष्य, प्रकृति के इन पुरस्कारों से लाभान्वित होते हुए उपकार करने वाले

को याद रखे। वह पुरस्कारों के रचयिता पर आस्था रखे। पुरस्कारों का उपभोग करते हुए उपकारक को मानना और उसके तगादों को पूरा करना, यही सदैव रहने वाली जन्नत का सर्टिफिकेट (certificate) है। और पुरस्कारों का उपभोग करते हुए उपकारक को भूल जाना, मनुष्य को नरक (जहन्नम) का भागी बना देता है। क़ुरआन वास्तव में इसी सबसे बड़ी वास्तविकता का अनुस्मरण है।

आप क़ुरआन को पढ़ें तो आप उसमें बार बार इस तरह के वर्णन पायेंगे कि यह अल्लाह की उतारी हुई वाणी (Word of God) है। प्रत्यक्ष रूप से यह एक साधारण सी बात है, परन्तु जब इसको तुलनात्मक रूप से देखा जाये तो पता चलेगा कि यह अत्यन्त असाधारण बात है। संसार में बहुत सी किताबें हैं जिनके सम्बन्ध में लोगों का विश्वास है कि वह आसमानी किताबें हैं। परन्तु क़ुरआन के अतिरिक्त किसी भी पवित्र धर्म ग्रन्थ में आपको यह लिखा हुआ नहीं मिलेगा कि - यह अल्लाह की वाणी है। इस तरह का वर्णन विशेष रूप से मात्र क़ुरआन में पाया जाता है। क़ुरआन में इस तरह वर्णन का होना, उसके पाठक को एक प्रारंभिक बिन्दु (Starting Point) देता है। वह क़ुरआन का अध्ययन एक विशेष प्रकार की पुस्तक के रूप में करता है, न कि साधारण मानवीय पुस्तक के रूप में।

क़ुरआन की शैली भी एक अनोखी शैली है। साधारण मानवकृत पुस्तकों का तरीका यह है कि उसमें चीज़े एक लेखन क्रम के साथ लिखी होती हैं। उसमें A से Z तक क्रमबद्ध रूप से चीज़ों का वर्णन किया जाता है। परन्तु क़ुरआन में इस प्रकार की शैली मौजूद नहीं। साधारण मनुष्य को प्रत्यक्षतः क़ुरआन एक अक्रमबद्ध वाणी प्रतीत होती है, परन्तु वास्तविकता के अनुसार देखा जाये तो वह एक अत्यन्त व्यवस्थित और क्रमबद्ध वाणी दिखायी देगा। क़ुरआन की वाक् शैली के सम्बन्ध में यह कहना उपयुक्त होगा कि उसकी शैली एक राजसी शैली है। क़ुरआन को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे उसका लेखक एक ऐसे उच्चतम स्थान पर है जहाँ से वह सम्पूर्ण मानवता को देख रहा है, सम्पूर्ण मानवता उसका कन्सर्न (concern) है, वह अपनी महानता

के स्थान से सम्पूर्ण मानवता को सम्बोधित कर रहा है। यद्यपि, इस सम्बोधन के बीच वह कभी एक समूह की ओर मुड़ जाता है और कभी दूसरे समूह की ओर।

क़ुरआन का एक विशेष पहलू यह है कि उसका पाठक किसी भी क्षण उसके लेखक से कन्सल्ट (consult) कर सकता है। क़ुरआन का लेखक अल्लाह है। वह एक जीवन्त हस्ती है। वह सम्पूर्ण मानवता को घेरे हुए है। वह किसी मध्यस्थ के बिना आदमी की बात को सुनता है और उसका उत्तर देता है। इसलिए क़ुरआन के पाठक के लिए प्रतिक्षण यह संभव है कि वह अल्लाह से सम्पर्क स्थापित कर सके। वह अल्लाह से पूछे और अल्लाह से अपने प्रश्नों का उत्तर पा ले।

जो लोग मात्र मीडिया के माध्यम से क़ुरआन को जानते हैं, वह सामान्य रूप से समझते हैं कि क़ुरआन जिहाद की किताब है और जिहाद उनके दृष्टिकोण के अनुसार, नाम है- हिंसा के माध्यम से अपने उद्देश्य को प्राप्त करने का। परन्तु यह मात्र ग़लतफ़हमी (भ्रम) है। जो व्यक्ति भी क़ुरआन को प्रत्यक्ष रूप से पढ़े, उसके लिए यह समझना मुष्किल नहीं होगा कि क़ुरआन का हिंसा से कोई सम्बन्ध नहीं। क़ुरआन पूर्ण रूप से शान्ति की पुस्तक है, वह हिंसा की पुस्तक नहीं।

जिहाद क्या है?

यह एक वास्तविकता है कि क़ुरआन की शिक्षाओं में एक शिक्षा वह है जिसको जिहाद कहा जाता है। परन्तु जिहाद शान्तिपूर्ण प्रयास का नाम है, न कि किसी तरह की हिंसात्मक कारवाई का। क़ुरआन में बताई गई जिहाद की धारणा क़ुरआन की इस आयत से ज्ञात होती हैः "और इसके (क़ुरआन) माध्यम से तुम उनके साथ बड़ा जिहाद करो।" (25:52)

क़ुरआन की इस आयत में, क़ुरआन के माध्यम से जिहाद करने की शिक्षा दी गयी है। स्पष्ट है कि क़ुरआन कोई हथियार नहीं, क़ुरआन एक वैचारिक

पुस्तक है। क़ुरआन, अल्लाह की आडियॉलोजी (विचारधारा) का परिचय है। इससे क़ुरआन में बताई गई जिहाद की धारणा स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। क़ुरआन के अनुसार, जिहाद वास्तव में शान्तिपूर्ण वैचारिक संघर्ष (peaceful ideological struggle) का नाम है। इस वैचारिक संघर्ष का लक्ष्य क़ुरआन में यह बताया गया है कि क़ुरआन का शान्तिपूर्ण संदेश लोगों के दिलों में उतर जाये। (4:63)

इस आयत के अनुसार, क़ुरआन का वांछित कथन वह है जो क़ौल-ए बलीग़ (बोधगम्य कथन) हो, अर्थात ऐसी वाणी जो लोगों के मन को सम्बोधित करे, जो लोगों को सन्तुष्ट करने वाली हो, जिसके माध्यम से लोगों को क़ुरआन की सच्चाई पर विश्वास पैदा हो, जिसके माध्यम से लोगों के अन्दर वैचारिक क्रान्ति उत्पन्न हो जाये। यह क़ुरआन का मिशन है। और इस प्रकार का वैचारिक मिशन मात्र तर्कों के माध्यम से पूरा किया जा सकता है। हिंसा अथवा किसी भी सशस्त्र कारवाई के माध्यम से इस लक्ष्य को पाना संभव नहीं।

यह सही है कि क़ुरआन में कुछ ऐसी आयतें हैं जो क़िताल (युद्ध) की अनुमति देती हैं, परन्तु यह आयतें मात्र युद्ध स्थिति के लिए हैं, वह मात्र आक्रमण के समय बचाव के अर्थ में हैं। रक्षात्मक युद्ध के अतिरिक्त, कोई युद्ध इस्लाम में वैध नहीं। यह रक्षात्मक युद्ध भी मात्र एक स्थापित राज्य (established state) कर सकता है। राज्य के अतिरिक्त किसी भी व्यक्ति, अथवा संगठन को जिहाद छेड़ने की अनुमति नहीं।

क़ुरआन को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण बात यह है कि क़ुरआन कोई क़ानूनी किताब नहीं है, क़ुरआन एक दावती (आवाहक) किताब है। क़ुरआन की वाक् शैली क़ानूनी नहीं है, बल्कि आवाहक है। क़ानून की भाषा निर्धारण करने वाली भाषा होती है। क़ानूनी लेख में चीज़ें शाब्दिक रूप से वांछित होती हैं, जबकि आवाहक लेखन का मामला ऐसा नहीं। आवाहक लेख में उसके अर्थ पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आवाहक किताब में शब्दों की हैसियत

मात्र एक माध्यम की हो जाती है, जबकि क़ानूनी किताब में शब्द स्वंय अपने आप में वांछित बन जाते हैं।

इसका एक पहलू यह है कि दावती लेख में विशेष बल देकर उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए तीव्रता की शैली को अपनाया जाता है। आवाहक लेख में ऐसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जो प्रत्यक्षतः अत्यन्त कठोर प्रतीत होते हैं, परन्तु आवाहक वाणी में यह कठोरता विवेक पर आधारित होती है। ऐसी किसी वाणी में कठोरता को देखकर उसको क़ानूनी कठोरता के अर्थ में लेना, पूर्णतः नासमझी की बात होगी। इसी तत्वदर्शिता का यह परिणाम है कि आवाहक भाषा में अधिकतर ऐसा होता है कि उसमें एक ऐसी बात कही जाती है जो क़ानूनी शैली के अनुसार अत्यन्त कठोर प्रतीत होती है, परन्तु आवाहक शैली के अनुसार वह मात्र झिंझोड़ने के लिए होती है, वह मात्र इसलिए होती है कि मनुष्य की प्रकृति को जगाया जाये, उसके अन्दर छिपे हुए भावों को गतिमान किया जाये। एक उदाहरण से इसका स्पष्टीकरण होता है।

पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के जीवन काल में बद्र (2 हिजरी) का युद्ध हुआ। यह युद्ध आक्रमण के समय आपने बचाव के लिए लड़ा था। इस युद्ध में आपको विजय प्राप्त हुई। युद्ध के बाद आपने विरोधियों के 70 व्यक्तियों को गिरफ़्तार कर लिया। इसके बाद यह लोग युद्ध बंदी की हैसियत से मदीना लाये गये। इस घटना पर क़ुरआन में यह आयत अवतरित हुईः ''किसी पैग़म्बर के लिए उपयुक्त नहीं कि उसके पास क़ैदी हों, जब तक वह धरती में अच्छी तरह रक्तपात न कर ले।'' (8:67)

इस आयत के शब्दों को यदि क़ानूनी अर्थ में लिया जाये तो इसका अर्थ यह होगा कि युद्ध बंदियों की आवश्यक रूप से हत्या की जानी चाहिए। जैसा कि ज्ञात है, यह युद्ध बंदी क़ुरआन के अवतरण के समय पूर्णतः मुहम्मद (सल्ल.) के नियंत्रण में थे। ऐसी स्थिति में यह आयत यदि क़ानून की भाषा में होती तो उसमें इस तरह के शब्द होने चाहिए थे कि जिन 70 व्यक्तियों को तुम युद्ध के मैदान से गिरफ़्तार करके मदीना लाये हो, वह सब के सब अपने

अपराध के कारण गर्दन उड़ा देने योग्य हैं, इसलिए तुरन्त इनकी हत्या करके इन्हें समाप्त कर दो। परन्तु न क़ुरआन में ऐसी आयत उतरी और न रसूल (सल्ल.) ने इस आयत को क़ानूनी आयत समझकर उस पर शाब्दिक रूप से अमल किया।

यह घटना स्पष्ट रूप से बताती है कि यह आयत अपने प्रकट अर्थों के अनुसार वांछित न थी, बल्कि वह अपनी वास्तविकता के अनुसार वांछित थी, यह भाषा की कठोरता का मामला था जो इसलिए था कि युद्ध बंदियों के अन्दर अपने सुधार की भावना उत्पन्न हो। दूसरे शब्दों में यह कि क़ुरआन की उपर्युक्त आयत में जो बात थी, वह कोई क़ानूनी आदेश न था बल्कि वह मात्र हैमरिंग की भाषा (language of hammering) थी। इस आयत का अर्थ अपराधियों का सुधार था, न कि अपराधियों की हत्या। अतः उन क़ैदियों में से अधिकतर लोग बाद में इस्लाम में प्रविष्ट हो गये। उदाहरण के रूप में सुहैल बिन अम्र आदि।

करने का काम

जो लोग क़ुरआन के माध्यम से सच्चाई की खोज करें, उनको क़ुरआन काम करने का दो सूत्रीय कार्यक्रम देता है। अपने जीवन में अल्लाह के मार्गदर्शन का पूर्ण रूप से आज्ञापालन, और दूसरे मनुष्यों को इस आसमानी मार्गदर्शन से अवगत कराना। आसमानी मार्गदर्शन के आज्ञापालन का प्रारम्भ, बोध अथवा आसमानी वास्तविकता की खोज से होता है। एक व्यक्ति जब क़ुरआन के माध्यम से सच्चाई की खोज करता है तो उसके अन्दर एक मानसिक क्रान्ति पैदा होती है। उसकी सोच बदल जाती है। उसके चाहने और न चाहने के मानक बदल जाते हैं। उसका जीवन अन्दर से बाहर तक एक नये दिव्य नक्शे में ढल जाता है।

अल्लाह के बोध की यह अभिव्यक्ति जिन रूपों में होती है, उसको ज़िक्र (गुणगान) और इबादत (उपासना) और उत्तम व्यवहार और ईश परायण जीवन

जैसे शब्दों में प्रस्तुत किया गया है। सच्चाई की खोज कोई मेकेनिकल खोज नहीं है। सच्चाई की खोज जीवन की वास्तविक्ता की खोज है, और जिस व्यक्ति को जीवन की वास्तविकता का बोध हो जाये, वह स्वंय अपनी प्रकृति के बल पर एक नया मनुष्य बन जाता है। सच्चाई की खोज किसी मनुष्य के लिए एक जन्म के बाद दूसरा जन्म लेना है। यह नया जन्म एक ऐसे विकासशील वृक्ष जैसा है जो सदैव बढ़ता रहे, जिसके विकास की यात्रा कभी समाप्त न हो।

क़ुरआन के माध्यम से जो लोग सच्चाई की खोज करें, उनके व्यवहारिक कार्यक्रम का दूसरा भाग वह है जिसको क़ुरआन में अल्लाह की ओर आवाहन कहा गया है, अर्थात आसमानी सच्चाई से दूसरों को अवगत कराना। यह आवाहन प्रक्रिया एक अत्यन्त गम्भीर प्रक्रिया है। यह पूर्ण डेडीकेशन (dedication) चाहता है। इसी पहलू से इसको जिहाद भी कहा गया है।

क़ुरआन के अनुसार, जिहाद पूर्ण रूप से एक अराजनैतिक (non political) प्रक्रिया है। आवाहक जिहाद का लक्ष्य मनुष्य के दिल को और उसके मन को बदलना है। और दिल व मन में परिवर्तन मात्र शान्तिपूर्ण प्रचार के माध्यम से होता है, न कि किसी तरह के बलात् अथवा हिंसात्मक कार्य के माध्यम से।

क़ुरआन का वांछित मनुष्य दिव्य मनुष्य (3:79) है, अर्थात वह मनुष्य जो इस संसार में ख़ुदा वाला मनुष्य बने, जो पालनहार की ओर एकाग्र रहकर जीवन व्यतीत करे। पालनहार का पसन्दीदा मनुष्य बनने की इसी प्रक्रिया को क़ुरआन में तज़्कियः (शुद्धिकरण) (2:129) कहा गया है। क़ुरआन के अनुसार, जन्नत उन्हीं व्यक्तियों के लिए है जो इस संसार में अपना शुद्धिकरण करें, जो मुज़क्का (शुद्ध) मनुष्य बनकर अगले जीवन में प्रवेश हों। (ता.हा.: 76)

तज़्कियः का अर्थ हैः शुद्धिकरण (purification), अर्थात अपने व्यक्तित्व को अवांछित चीज़ों से बचाना। व्यक्तित्व को पवित्र करने की यह प्रक्रिया एक सतत् प्रक्रिया है, वह कभी समाप्त नहीं होती। क़ुरआन के मानने वाले (आस्थावान) के अन्दर यह प्रक्रिया उसके जीवन के अन्तिम क्षण तक जारी रहती है।

वास्तविक्ता यह है कि प्रत्येक मनुष्य अपने जन्म के अनुसार, मूल प्रकृति पर पैदा होता है। जन्म के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य मिस्टर नेचर (Mr. Nature) होता है, परन्तु जीवन में प्रतिदिन ऐसे अनुभव सामने आते हैं जो उसके प्राकृतिक व्यक्तित्व पर नकारात्मक धब्बे डालते रहते हैं, क्रोध और द्वेष और ईर्ष्या और लालच और भेदभाव और घमण्ड और अस्वीकारोक्ति और बदले की भावना, यह सब वही नकारात्मक धब्बे हैं, जो मनुष्य के प्राकृतिक व्यक्तित्व को दूषित करते रहते हैं। ऐसी स्थिति में प्रत्येक स्त्री और पुरुष को यह करना है कि वह आत्मनिरीक्षण (introspection) के माध्यम से अपना शुद्धिकरण करता रहे, वह अपने मन में पाये जाने वाले दूषित व्यक्तित्व को प्राकृतिक व्यक्तित्व बनाता रहे। प्रत्येक व्यक्ति का वातावरण उसको एक कंडीशन्ड (conditioned) मनुष्य बना देता है। अब प्रत्येक व्यक्ति को यह करना है वह डी-कंडीशनिंग (de-conditioning) के माध्यम से अपने आप को पुनः मिस्टर नेचर बनाये। इसी मिस्टर नेचर का क़ुरआनी नाम दिव्य व्यक्तित्व अथवा अल्लाह का पसन्दीदा इन्सान है।

वहीदुद्दीन ख़ाँ
skhan@goodwordbooks.com

1. सूरह अल-फ़ातिहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो समस्त संसार का पालनहार है। (2) अत्यन्त कृपाशील, और दयावान है। (3) न्याय के दिन का स्वामी है। (4) हम तेरी ही उपासना करते हैं और तुझ ही से सहायता चाहते हैं। (5) हमको सीधा मार्ग दिखा। (6) उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की। (7) उनका मार्ग नहीं जिन पर तेरा क्रोध हुआ, और न उन लोगों का मार्ग जो (सीधे) मार्ग से भटक गये।

2. सूरह अल-बक़रह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़० लाम़० मीम। (2) यह अल्लाह की किताब है। इसमें कोई सन्देह नहीं, मार्ग दर्शन है डर रखने वालों के लिए (3) जो विश्वास करते हैं बिन देखे और नमाज़ स्थापित करते हैं। और जो कुछ हमने उनको दिया है, वह उसमें से ख़र्च करते हैं (4) और जो ईमान लाते हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर अवतरित हुआ है (क़ुरआन) और जो तुमसे पूर्व अवतरित किया गया। और वह आख़िरत (परलोक) पर विश्वास करते हैं। (5) उन्हीं लोगों ने अपने पालनहार का मार्ग पाया है और वही सफलता पाने वाले हैं।

(6) जिन लोगों ने (इन बातों की) अवज्ञा की, उनके लिए समान है तुम उनको डराओ या न डराओ, वह मानने वाले नहीं हैं। (7) अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर मुहर लगा दी है, और उनकी आँखों पर पर्दा है, और उनके लिए कठोर यातना है। (8) और लोगों में कुछ ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि हम ईमान लाये (विश्वास किया) अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर, वास्तविकता यह है कि वह ईमान वाले नहीं हैं। (9) वह अल्लाह को और ईमान वालों को धोखा देना चाहते हैं, परन्तु केवल वह अपने आप को धोखा दे रहें हैं और उन्हें इसका बोध नहीं है। (10) उनके दिलों में रोग है तो अल्लाह ने उनके रोग को बढ़ा दिया और उनके लिए कष्टप्रद यातना है, इस कारण कि वह झूठ बोलते थे।

(11) और जब उनसे कहा जाता है कि धरती पर फ़साद (बिगाड़) न करो तो वह उत्तर देते हैं कि हम तो सुधार करने वाले हैं। (12) सावधान! वास्तव में यही लोग बिगाड़ पैदा करने वाले हैं, परन्तु वह समझ नहीं रखते। (13) और जब उनसे कहा जाता है कि तुम भी उसी प्रकार ईमान लाओ (निष्ठावान बन जाओ) जिस प्रकार और लोग ईमान लाये हैं तो वह कहते हैं क्या हम उस प्रकार ईमान लायें जिस प्रकार मूर्ख लोग ईमान लाये हैं। सावध ाान! मूर्ख स्वंय यही लोग हैं, परन्तु वह नहीं जानते। (14) और जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये हैं, और जब वह अपने शैतानों की बैठक में पहुँचते हैं तो वह कहते हैं कि हम तुम्हारे साथ हैं, हम तो उनसे मात्र उपहास (हंसी) करते हैं। (15) अल्लाह उनके साथ उपहास कर रहा है और वह उनको उनके विद्रोह में ढील दे रहा है, वह भटकते फिर रहे हैं। (16) यह वे लोग हैं जिन्होंने सन्मार्ग के बदले पथभ्रष्टता (गुमराही) खरीदी, तो उनका व्यापार लाभप्रद न हुआ और वह सन्मार्ग प्राप्त करने वाले न हुए। (17) उनका उदाहरण ऐसा है जैसे एक व्यक्ति ने आग जलाई, जब आग ने उसके आस-पास को प्रकाशित कर दिया तो अल्लाह ने उनकी आँख की रोशनी छीन ली, और उनको अँधेरे में छोड़ दिया कि उनको कुछ दिखाई नहीं देता। (18) वे बहरे हैं, गूँगे हैं, अंधे हैं, अब ये (सन्मार्ग की ओर) पलटने वाले नहीं। (19) अथवा उनका उदाहरण ऐसा है जैसे आसमान से वर्षा हो रही हो, उसमें अँधेरा भी हो और गरज-चमक भी, वह कड़क से डर कर मौत से बचने के लिए अपनी ऊँगलियाँ अपने कानों में डाल रहे हों, जबकि अल्लाह अवज्ञाकारियों को अपने घेरे में लिये हुए है। (20) निकट है कि बिजली उनकी दृष्टि को उचक ले, जब भी उन पर बिजली चमकती है, वह उसमें चल पड़ते हैं और जब उन पर अँधेरा छा जाता है तो वह रुक जाते हैं, और यदि अल्लाह चाहे तो उनके कान और उनकी आँखों को छीन ले, वास्तविकता यह है कि अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ रखता है।

(21) ऐ लोगों ! अपने रब की इबादत करो जिसने तुमको पैदा किया और उन लोगों को भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, ताकि तुम (जहन्नम की आग) से बच जाओ, (22) वही हस्ती है, जिसने ज़मीन को तुम्हारे लिए

बिछौना बनाया और आसमान को छत बनाया और उतारा आसमान से पानी, और उससे पैदा किए हर प्रकार के फल, तुम्हारी जीविका के रूप में। तो तुम किसी को अल्लाह के समकक्ष न ठहराओ, जबकि तुम जानते हो। (23) यदि तुम उस वाणी (क़ुरआन) के सम्बन्ध में सन्देह में हो जो हमने अपने बन्दे (पैग़म्बर मुहम्मद) के ऊपर उतारी है तो लाओ इस जैसी एक सूरह और बुला लो अपने समर्थकों को भी, अल्लाह के सिवा, यदि तुम सच्चे हो। (24) और यदि तुम ऐसा न कर सको और कदापि न कर सकोगे तो डरो उस आग से जिसका ईंधन बनेंगे इन्सान और पत्थर, वह तैयार की गई है अवज्ञाकारियों के लिए। (25) और शुभ-सूचना दे दो उन लोगों को जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे कर्म किए इस बात की कि उनके लिए ऐसे बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जब भी उनको उन बाग़ों में से कोई फल खाने को मिलेगा तो वह कहेंगे : यह वही है जो इससे पहले हमको दिया गया था, और मिलेगा उनको एक दूसरे से मिलता-जुलता, और उनके लिए वहाँ पवित्र जोड़े होंगे, और वह उसमें सदैव रहेंगे।

(26) अल्लाह इससे नहीं शर्माता कि वह मच्छर का उदाहरण बयान करे या इससे भी किसी छोटी चीज़ का, फिर जो ईमान वाले हैं वह जानते हैं कि वह सच है उनके पालनहार की ओर से, और जो इन्कार करने वाले हैं, वह कहते हैं कि इस उदाहरण को बयान करके अल्लाह ने क्या चाहा है, अल्लाह इसके माध्यम से बहुतों को भटका देता है और बहुतों का वह इसके माध्यम से मार्ग दर्शन करता है, और वह भटकाता है उन लोगों को जो अवज्ञाकारी हैं। (27) जो अल्लाह से अपने किए हुए वचन को तोड़ देते हैं और उस चीज़ को तोड़ते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, यही लोग हैं घाटा उठाने वाले। (28) तुम किस प्रकार अल्लाह का इन्कार करते हो, जबकि तुम निर्जीव थे तो उसने तुमको जीवन प्रदान किया, फिर वह तुमको मृत्यु देगा, फिर जीवित करेगा, फिर तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे। (29) फिर वही है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा किया जो धरती पर है, फिर उसने आसमान की ओर ध्यान दिया और सात आसमान ठीक ढंग से बनाया, और वह हर चीज़ को जानने वाला है।

(30) और जब तेरे पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं पृथ्वी में एक ख़लीफा (उत्तराधिकारी) बनाने वाला हूँ। फ़रिश्तों ने कहा : क्या तू पृथ्वी पर ऐसे लोगों को बसाएगा जो उसमें फ़साद करें और ख़ून बहायें। और हम तेरी प्रशंसा करते हैं और तेरी पवित्रता बयान करते हैं। अल्लाह ने कहा, मैं वह जानता हूँ जो तुम नहीं जानते, (31) और अल्लाह ने सिखा दिये आदम को सारे नाम, फिर उनको फ़रिश्तों के समक्ष प्रस्तुत किया और कहा कि यदि तुम सच्चे हो तो मुझे इन लोगों के नाम बताओ। (32) फ़रिश्तों ने कहा कि तू पवित्र है। हम तो वही जानते हैं जो तूने हमको बताया। निस्सन्देह, तू ही ज्ञान वाला और तत्त्वदर्शी है। (33) अल्लाह ने कहा ऐ आदम, उनको बताओ उन लोगों के नाम। तो जब आदम ने बताये उनको उन लोगों के नाम तो अल्लाह ने कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि आसमानों और पृथ्वी के भेद को मैं ही जानता हूँ। और मुझको ज्ञात है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो।

(34) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो, तो उन्होंने सजूदा किया, परन्तु इबलीस ने सजदा न किया। उसने अवज्ञा की और घमण्ड किया और अवज्ञाकारियों में से हो गया। (35) और हमने कहा ऐ आदम! तुम और तुम्हारी पत्नी दोनों जन्नत (स्वर्ग के बाग़) में रहो और उसमें से खाओ इच्छाभर, जहाँ से चाहो। और उस वृक्ष के निकट मत जाना अन्यथा तुम अत्याचारियों (ज़ालिमों) में से हो जाओगे। (36) फिर शैतान (इबलीस) ने उस वृक्ष के माध्यम से दोनों को विचलित कर दिया और उनको उस आनंदमय जीवन से निकाल दिया जिसमें वह थे। और हमने कहा तुम सब उतरो यहाँ से। तुम एक दूसरे के दुश्मन (शत्रु) होगे। और तुम्हारें लिए पृथ्वी में ठहरना और काम चलाना है एक अवधि तक। (37) फिर आदम ने सीख लिये अपने पालनहार से कुछ बोल (शब्द) तो अल्लाह ने उस पर दया की। निस्सन्देह वह तौबा (क्षमा-याचना) को स्वीकार करने वाला, दया करने वाला है। (38) फिर हमने कहा तुम सब यहाँ से उतरो। फिर जब आये तुम्हारे पास मेरी ओर से कोई मार्गदर्शन तो जो लोग मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेंगे, उनके लिए न कोई डर होगा और न वह शोकाकुल होंगे।

(39) और जो लोग अवज्ञा करेंगे और हमारी निशानियों को झुठलायेंगे तो वही लोग नरक वाले हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे।

(40) ऐ इस्राईल की सन्तान ! याद करो मेरे उस उपकार को, जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया, और मेरे वचन को पूरा करो, मैं तुम्हारे वचन को पूरा करुँगा। और मेरा ही डर रखो। (41) और ईमान लाओ उस चीज़ (क़ुरआन) पर जो मैंने भेजी है। पुष्टि करती हुई उस किताब की जो तुम्हारे पास है और तुम सबसे पहले इसके झुठलाने वाले न बनो। और न लो मेरी आयतों पर थोड़ा मोल। और मुझसे डरो। (42) और सच में झूठ को न मिलाओ और सच को न छिपाओ जबकि तुम जानते हो। (43) और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो और झुकने वालों के साथ झुक जाओ। (44) तुम लोगों से भला कर्म करने को कहते हो और अपने आपको भूल जाते हो। हालाँकि तुम किताब को पढ़ते हो, क्या तुम समझते नहीं। (45) सहायता चाहो धैर्य और नमाज़ से और निस्सन्देह वह भारी है परन्तु उन लोगों पर नहीं, जो डरने वाले हैं। (46) जो समझते हैं कि उनको अपने पालनहार से मिलना है और वह उसी की ओर लौटने वाले हैं।

(47) ऐ इस्राईल की सन्तान ! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुमको संसार वालों पर प्रधानता दी। (48) और डरो उस दिन से जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के काम न आयेगा। न उसकी ओर से कोई सिफ़ारिश (recommendation) स्वीकार होगी। और न उससे बदले में कुछ लिया जायेगा और न उनकी (अपराधियों) की कोई सहायता की जायेगी। (49) और (याद करो) जब हमने तुमको फ़िरऔन के लोगों से छुटकारा दिलाया, वह तुमको बहुत कष्ट देते थे, तुम्हारे बेटों की हत्या करते और तुम्हारी बेटियों को जीवित रखते। और इसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से भारी परीक्षा थी। (50) और (याद करो वह समय) जब हमने नदी को फाड़कर तुम्हें पार कराया। फिर बचाया तुमको और डुबा दिया फ़िरऔन के लोगों को, और तुम देखते रहे। (51) और जब हमने बुलाया मूसा को चालीस रात के वादे पर, फिर तुमने उसकी अनुपस्थित में बछड़े को पूज्य बना लिया और तुम अत्याचारी (ज़ालिम) थे।

(52) फिर हमने उसके बाद तुमको क्षमा कर दिया ताकि तुम आभार व्यक्त करने वाले बनो। (53) और जब हमने मूसा को किताब दी और फ़ैसला करने वाली वस्तु ताकि तुम मार्ग पा सको। (54) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम ! तुमने बछड़े को ईश बनाकर अपने आप पर भारी अत्याचार किया है। अब अपने पैदा करने वाले की ओर अपना ध्यान करो और अपने अपराधियों की अपने हाथों से हत्या करो। यह तुम्हारे लिए तुम्हारे पैदा करने वाले के निकट उचित है। तो अल्लाह ने तुम्हारी तौबा (क्षमा-याचना) स्वीकार की। निस्सन्देहः वह बड़ा तौबा स्वीकार करने वाला, अत्यन्त दयावान है। (55) और जब तुमने कहा कि ऐ मूसा, हम तुम्हारा विश्वास नहीं करेंगे जब तक कि हम अल्लाह को साक्षात अपने सामने न देख लें, तो तुमको बिजली के कड़के ने पकड़ लिया और तुम देख रहे थे। (56) फिर हमने तुम्हारी मृत्यु के पश्चात् तुमको उठाया ताकि तुम कृतज्ञ बनो। (57) और हमने तुम्हारे ऊपर बादलों की छाया की और तुम पर मन्न (बटेर जैसा पक्षी) और सलवा (उपकार के रूप में एक विशेष खाद्य) उतारा। खाओ सुथरी चीज़ों में से जो हमने तुमको दी हैं और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा, बल्कि वह अपना ही नुकसान करते रहे।

(58) और जब हमने कहा कि प्रवेश करो इस नगर में और खाओ इसमें से जहाँ से चाहो, अपनी इच्छानुसार और प्रवेश करो द्वार में सिर झुकाये हुए, और कहो, कि ऐ पालनहार ! हमारे पापों को दूर कर दे। हम तुम्हारे पापों को दूर कर देंगे और भलाई करने वालों को अधिक भी देंगे। (59) तो अत्याचारियों ने बदल दिया उस बात को, जो उनसे कही गयी थी एक दूसरी बात से। इस पर हमने उन लोगों के ऊपर जिन्होंने अत्याचार किया, उनकी कृतघ्नता के कारण आकाश से प्रताड़ना उतारी। (60) और याद करो वह समय, जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी माँगा, तो हमने कहा अपनी लाठी पत्थर पर मारो, तो उससे फूट निकले बारह स्रोत। प्रत्येक समूह ने अपना-अपना घाट पहचान लिया। खाओ और पियो अल्लाह की दी हुई जीविका से और ज़मीन में बिगाड़ फैलाने वाले बनकर न फिरो। (61) और याद करो, जब तुमने कहा, ऐ मूसा, हम एक ही प्रकार के खाने पर कदापि सन्तोष नहीं कर सकते। अपने

पालनहार को हमारे लिए पुकारो कि वह निकाले हमारे लिए, जो उगता है धरती से, साग और ककड़ी और गेहूँ और मसूर और प्याज़। मूसा ने कहाः क्या तुम एक उत्तम चीज़ के बदले एक मामूली चीज़ लेना चाहते हो। किसी नगर में उतरो तो तुमको मिलेगी वह चीज़ जो तुम माँगते हो, और डाल दिया गया उन पर अपमान और निर्धनता और वह अल्लाह के क्रोध के भागी हो गये। यह इस कारण से हुआ कि वह अल्लाह की निशानियों को झुठलाते थे और पैग़म्बरों की अकारण हत्या करते थे। यह इस कारण से कि उन्होंने अवज्ञा की और वह हद पर न रहते थे।

(62) निस्संदेह, जो लोग मुसलमान हुए और जो लोग यहूदी हुए और नसारा (ईसाई) और साबी, उनमें से जो व्यक्ति ईमान लाया अल्लाह पर और आख़िरत (परलोक) के दिन पर और उसने भले कर्म किये तो उसके लिए उसके पालनहार के पास (अच्छा) बदला है। और उनके लिए न कोई भय है और न वह दुःखी होंगे।

(63) जब हमने तुमसे तुम्हारा वचन लिया और तूर पहाड़ को तुम्हारे ऊपर उठाया। पकड़ो उस वस्तु को जो हमने तुमको दी है दृढ़ता के साथ, और जो कुछ इसमें है उसको याद रखो ताकि तुम बचो। (64) इसके बाद तुम उससे फिर गये। यदि अल्लाह की कृपा और उसकी दया तुम पर न होती तो अवश्य तुम विनष्ट हो जाते। (65) और उन लोगों की हालत तुम जानते हो जिन्होंने सब्त (शनिवार) के सम्बन्ध में अल्लाह के आदेशों को तोड़ा, तो हमने उनको कह दिया तुम लोग अपमानित बन्दर बन जाओ। (66) फिर हमने इसको शिक्षा प्रद बना दिया उन लोगों के लिए जो उसके सामने थे और आने वाली पीढ़ियों के लिये। और इसमें हमने शिक्षा रख दी ड़रने वालों के लिए।

(67) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह तुमको आदेश देता है कि तुम एक गाय ज़बह करो। उन्होंने कहाः क्या तुम हमसे हँसी कर रहे हो। मूसा ने कहा कि मैं अल्लाह की शरण माँगता हूँ कि मैं ऐसा अज्ञानी बनूँ (68) उन्होंने कहा, अपने पालनहार से निवेदन करो कि वह हमसे वर्णन करे कि वह गाय कैसी हो। मूसा ने कहा, अल्लाह कहता है कि वह गाय न बूढ़ी हो न बच्चा, इनके बीच की हो। अब कर डालो जो आदेश तुमको मिला है। (69) फिर उन्होंने कहा, अपने

पालनहार से निवेदन करो, वह बताये उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा, अल्लाह कहता है कि वह गहरे पीले रंग की हो, देखने वालों को भली प्रतीत होती हो। (70) फिर वह कहने लगे, अपने पालनहार से पूछो कि वह हमसे वर्णन करे कि वह कैसी हो। क्योंकि गाय में हमको सन्देह हो गया है। और अल्लाह ने चाहा तो हम मार्ग प्राप्त कर लेंगे। (71) मूसा ने कहा अल्लाह कहता है कि वह ऐसी गाय हो कि परिश्रम करने वाली न हो, भूमि को जोतने वाली और खेतों को पानी देने वाली न हो। वह सम्पूर्ण सुरक्षित हो, उसमें कोई धब्बा न हो। बोलेः अब तुम स्पष्ट बात लाये। फिर उन्होंने उसको ज़बह किया। और वह ज़बह करते दिखाई न देते थे। (72) और जब तुमने एक व्यक्ति को मार डाला, फिर तुम एक दूसरे पर इसका आरोप लगाने लगे, जबकि अल्लाह प्रकट कर देना चाहता था जो कुछ तुम छिपाना चाहते थे। (73) तो हमने आदेश दिया कि मारो उस मुर्दे को इस गाय का एक टुकड़ा। इसी प्रकार जीवित करता है अल्लाह मुर्दों को। और वह तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता है, ताकि तुम समझो।

(74) फिर उसके बाद तुम्हारे दिल कठोर हो गये। अन्ततः वह पत्थर जैसे हो गये, अथवा उससे भी अधिक कठोर। पत्थरों में कुछ ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं। कुछ पत्थर फट जाते हैं और उनसे पानी निकल आता है और कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं जो अल्लाह के डर से गिर पड़ते हैं। और अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं जो तुम करते हो।

(75) क्या तुम यह आशा रखते हो कि ये यहूदी तुम्हारे कहने से ईमान ले आयेंगे। हालाँकि उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं कि वह अल्लाह की वाणी सुनते थे और फिर उसको बदल डालते थे, समझने के बाद, और वह जानते हैं। (76) जब वह ईमान वालों से मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये हुए हैं। और जब वह आपस में एक दूसरे से मिलते हैं तो कहते हैं : क्या तुम उनको वह बातें बताते हो जो अल्लाह ने तुम पर खोली हैं कि वह तुम्हारे विरुद्ध तम्हारे पालनहार के पास तुमसे तर्क-विर्तक करें। क्या तुम समझते नहीं। (77) क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह को ज्ञात है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह प्रकट करते हैं।

(78) और उनमें अनपढ़ हैं जो नहीं जानते किताब को परन्तु अभिलाषाएँ।

उनके पास कल्पना के अतिरिक्त और कुछ नहीं। (78) अतः विनाश है उन लोगों के लिए जो अपने हाथ से किताब लिखते हैं, फिर कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है। ताकि उसके माध्यम से वह थोड़ी सी पूँजी प्राप्त कर लें। अतः विनाश है उसके कारण, जो उनके हाथों ने लिखा। और उनके लिए विनाश है अपनी उस कमाई से। (80) और वह कहते हैं हमको नरक (जहन्नम) की आग नहीं छूएगी सिवाय गिनती के कुछ दिन। कहो क्या तुमने अल्लाह के पास से कोई वचन ले लिया है कि अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध नहीं करेगा। अथवा अल्लाह के ऊपर ऐसी बात कहते हो जिनका तुमको ज्ञान नहीं। (81) हाँ जिसने कोई बुराई की और उसके पाप ने उसको अपने घेरे में ले लिया, तो वही लोग नरक वाले हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे। (82) और जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने भले कर्म किये, वह जन्नत (स्वर्ग) वाले लोग हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे।

(83) और जब हमने इस्राईल की सन्तान से वचन लिया कि तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करोगे और तुम भला व्यवहार करोगे माता-पिता के साथ, सम्बन्धियों के साथ, अनाथों और निर्धनों के साथ, और यह कि लोगों से अच्छी बात कहो, और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो। फिर तुम उससे फिर गये सिवाय थोड़े लोगों के। और तुम वचन देकर उससे हट जाने वाले लोग हो।

(84) और जब हमने तुमसे वचन लिया कि तुम अपनों का ख़ून न बहाओगे और अपने लोगों को अपनी बस्तियों से न निकालोगे। फिर तुमने वचन दिया और तुम उसके साक्षी हो। (85) फिर तुम ही वह लोग हो कि अपनों की हत्या करते हो और अपने ही एक समूह को उनके नगरों से निकालते हो। उनके विरुद्ध उनके शत्रुओं की सहायता करते हो, पाप और अन्याय के साथ। फिर यदि वह तुम्हारे पास बन्दी बनकर आते हैं तो तुम फिदिया (अर्थदण्ड) अदा करके उनको छुड़ाते हो। जबकि स्वंय उनको निर्वासित करना तुम्हारे ऊपर हराम (अवैध) था। क्या तुम अल्लाह की किताब के एक भाग को मानते हो और एक भाग को झुठलाते हो। अतः तुममें से जो लोग ऐसा करें, उनका दण्ड इसके अतिरिक्त क्या है कि उनके सांसारिक जीवन में अपमान हो और

क़यामत (ऊठाये जाने के दिन) में उनको कठोर यातना में डाल दिया जाये। और अल्लाह उस बात से अनभिज्ञ नहीं है जो तुम कर रहे हो। (86) यही हैं वह लोग जिन्होंने परलोक के बदले सांसारिक जीवन ख़रीदा। अतः न उनकी यातना में कमी की जायेगी और न उनको सहायता पहुँचेगी।

(87) और हमने मूसा को किताब दी और उसके बाद एक के बाद एक रसूल (सन्देशवाहक) भेजे। और मरियम के बेटे ईसा को खुली-खुली निशानियाँ प्रदान कीं और पवित्र आत्मा (रूहुल-कुद्स) से उसकी सहायता की। तो जब भी कोई रसूल (सन्देष्टा) तुम्हारे पास वह बात लेकर आया जो तुम्हारे जी को पसंद न थी तो तुमने घमण्ड किया। फिर तुम ने एक समूह को झुठलाया और एक समूह की हत्या कर दी। (88) और यहूदी कहते हैं कि हमारे हृदय बन्द हैं। नहीं बल्कि अल्लाह ने उनकी अवज्ञा के कारण उन पर फटकार भेजी है। इसलिए वह बहुत कम ईमान लाते हैं। (89) और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक किताब आई जो पुष्टि करने वाली है उसकी जो उनके पास है और इससे पहले वह स्वंय न मानने वालों पर विजय मांगा करते थे। फिर जब उनके पास वह चीज़ आई जिसको उन्होंने पहचान लिया था तो उन्होंने उसको झुठला दिया। अतः अल्लाह की फटकार है झुठलाने वालों पर। (90) कैसी बुरी है वह चीज़ जिससे उन्होंने अपने प्राणों का सौदा किया कि वह अवज्ञा कर रहे हैं अल्लाह कि उतारी हुई वाणी की, इस हठ के कारण कि अल्लाह अपनी कृपा और दया अपने बन्दों में से जिस पर चाहे उतारे। अतः वह क्रोध पर क्रोध कमाकर लाये और अवज्ञाकारियों के लिए अपमानजनक यातना है।

(91) और जब उनसे कहा जाता है कि उस वाणी पर ईमान लाओ जो अल्लाह ने उतारी है तो वह कहते हैं कि हम उस पर ईमान रखते हैं जो हमारे ऊपर अवतरित हुआ है और वह उसको झुठलाते हैं जो उसके पीछे आया है, यद्यपि वह सच है और पुष्टि और समर्थन करने वाला है उसका जो उनके पास है। कहो, यदि तुम ईमान वाले हो तो तुम इससे पहले अल्लाह के पैग़म्बरों की हत्या क्यों करते रहे हो। (92) और मूसा तुम्हारे पास खुली निशानियाँ लेकर आया। फिर तुमने उसके पीछे बछड़े को पूज्य बना लिया और तुम अत्याचार करने वाले हो। (93) और जब हमने तुमसे वचन लिया और तूर पहाड़ को

तुम्हारे ऊपर खड़ा किया-जो आदेश हमने तुमको दिया है, उसको दृढ़ता के साथ पकड़ो और सुनो। उन्होंने कहाः हमने सुना और हमने नहीं माना। और उनकी अवज्ञा के कारण बछड़ा उनके दिलों में रच बस गया। कहो यदि तुम ईमान वाले हो तो कैसी बुरी है वह चीज़, जो तुम्हारा ईमान तुमको सिखाता है। (94) कहो यदि अल्लाह के पास परलोक का घर विशेष रूप से तुम्हारे लिए है, दूसरों को छोड़कर, तो तुम मरने की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो। (95) परन्तु वह कभी इसकी कामना नहीं करेंगे, उसके कारण जो वह अपने आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह भली-भाँति जानता है अत्याचार करने वालों को। (96) और तुम उनको जीवन का सबसे अधिक लोभी पाओगे, उन लोगों से भी अधिक जो शिर्क करने वाले हैं। उनमें से प्रत्येक यह चाहता है कि वह हज़ार वर्ष की आयु पाये, यद्यपि इतना जीना भी उसको यातना से बचा नहीं सकता। और अल्लाह देखता है जो कुछ वह कर रहे हैं।

(97) कहो कि जो कोई जिब्रील (अल्लाह की वाणी पैग़म्बर तक लाने वाला दूत) का विरोधी है तो उसने इस वाणी को तुम्हारे हृदय पर अल्लाह के आदेश से उतारा है, वह पुष्टि करने वाला है उसका, जो उसके आगे है और वह मार्गदर्शन और शुभसूचना है ईमान वालों के लिए। (98) जो कोई शत्रु हो अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) का और जिब्रील व मीकाईल (एक दूत का नाम) का तो अल्लाह ऐसे अवज्ञाकारियों का शत्रु है। (99) और हमने तुम्हारे ऊपर स्पष्ट निशानियाँ ऊतारीं और कोई उनको नहीं झुठलाता, परन्तु वही लोग जो सीमा से निकल जाने वाले हैं। (100) क्या जब भी वह कोई वचन देंगे तो उनका एक समूह उसको तोड़ फेंकेगा। बल्कि उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं रखते। (101) और जब उनके पास अल्लाह की ओर से एक रसूल (सन्देष्टा) आया जो पुष्टि करने वाला था उस चीज़ की जो उनके पास है तो उन लोगों ने जिनको किताब दी गई थी, अल्लाह कि किताब को इस तरह पीठ पीछे फेंक दिया जैसे कि वह उसको जानते ही नहीं।

(102) और वह उस चीज़ के पीछे पड़ गये जिसको शैतान, सुलेमान के राज्य का नाम लेकर पढ़ते थे। हालाँकि सुलेमान ने अवज्ञा नहीं की बल्कि ये शैतान थे

जिन्होंने अवज्ञा की। वह लोगों को जादू सिखाते थे। और वह उस चीज़ में पड़ गये जो बाबिल में दो फ़रिश्तों, हारूत और मारूत पर उतारी गई, जबकि उनका मामला यह था कि वह जब भी किसी को यह सिखाते तो उससे कह देते कि हम तो परीक्षा के लिए हैं। अतः तुम अवज्ञाकारी न बनो। परन्तु वह उनसे वह चीज़ सीखते जिससे वह एक पुरुष और उसकी पत्नी के बीच अलगाव उत्पन्न कर दें। हालाँकि वह अल्लाह के आदेश के बिना इससे किसी का कुछ बिगाड़ नहीं सकते थे। और वह ऐसी चीज़ सीखते जो उनको हानि पहुँचाये और लाभ न पहुंचाए। और वह जानते थे कि जो कोई उस चीज़ का ख़रीदार हो, परलोक में उसका कोई हिस्सा नहीं। कैसी बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपने प्राणों को बेच डाला। काश ! वह इसको समझते। (103) और यदि वह ईमान लाने वाले बनते और अल्लाह का डर अपनाते तो अल्लाह का बदला उनके लिए अधिक अच्छा था, काश वह इसको समझते।

(104) ऐ ईमान वालों, तुम 'राइना' (हमारी ओर भी ध्यान करो, अवज्ञाकारी इस वाक्य को बदलकर 'राईना' अर्थात हमारा चरवाहा कहते थे) न कहो बल्कि 'उन्ज़ुरना' (हमारी ओर ध्यान कीजिए) कहो और सुनो। और अवज्ञा करने वालों के लिए कष्टकर दण्ड है। (105) जिन लोगों ने अवज्ञा की, चाहे वह किताब वाले हों या बहुदेववादी, वह नहीं चाहते कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार की ओर से कोई भलाई अवतरित हो। और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए चुन लेता है। अल्लाह अत्यंत दयावान है। (106) हम जिस आयत को निरस्त करते हैं या भुला देते हैं तो उससे बेहतर या उसके समान दूसरी आयत लाते हैं। क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। (107) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही के लिए आकाश और धरती का साम्राज्य है, और तुम्हारे लिए अल्लाह के अतिरिक्त न कोई मित्र है और न कोई सहायक। (108) क्या तुम चाहते हो कि तुम अपने रसूल से प्रश्न करो जिस प्रकार इससे पूर्व मूसा से प्रश्न किये गये। और जिस व्यक्ति ने ईमान को कुफ़्र (अवज्ञा) से बदल लिया, वह निश्चित रूप से सन्मार्ग से भटक गया।

(109) बहुत से किताब वाले दिल से चाहते हैं कि तुम्हारे मोमिन (ईमान वाले) हो जाने के बाद किसी तरह वह फिर तुमको मुंकिर (अवज्ञाकारी) बना

दें, अपनी ईर्ष्या के कारण, इसके बावजूद कि सच्चाई उनके सामने स्पष्ट हो चुकी है। अतः क्षमा करो और अनदेखा करो यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ जाये। निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है। (110) और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात दो। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे, उसको तुम अल्लाह के पास पाओगे। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह निश्चित रूप से उसको देख रहा है। (111) और वह कहते हैं कि जन्नत में मात्र वही लोग जायेंगे जो यहूदी हों या ईसाई, ये मात्र उनकी अभिलाषाएँ हैं कहो कि लाओ अपना तर्क यदि तुम सच्चे हो। (112) बल्कि जिसने अपने आप को अल्लाह के आज्ञापालन में समर्पित कर दिया और वह पवित्र हृदय भी है तो ऐसे व्यक्ति के लिए उसके पालनहार के पास बदला है, उनके लिए न कोई डर है और न कोई दुख।

(113) और यहूदियों ने कहा कि नसारा (ईसाई) किसी चीज़ पर नहीं और नसारा ने कहा कि यहूदी किसी चीज़ पर नहीं। और वह सब आकाशीय ग्रन्थ पढ़ते हैं। उसी प्रकार उन लोगों ने कहा जिनके पास ज्ञान नहीं, उन्हीं का सा कथन। अतः अल्लाह क़ियामत (परलोक) के दिन उनके बीच उस बात का निर्णय करेगा जिसमें वह झगड़ रहे थे। (114) और उससे बढ़ कर अत्याचारी और कौन होगा जो अल्लाह की मस्जिदों को इससे रोके कि वहाँ अल्लाह के नाम का स्मरण किया जाये और वह उनको उजाड़ने का प्रयास करे। उनका हाल तो यह होना चाहिए था कि वह मस्जिदों में अल्लाह से डरते हुए प्रवेश करते। उनके लिए संसार में अपमान है और परलोक में उनके लिए बड़ी यातना है। (115) और पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के लिए है। तुम जिधर चेहरा करो उसी ओर अल्लाह है। निश्चित रूप से अल्लाह व्यापकता वाला है, ज्ञान वाला है। (116) और वह कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। अल्लाह इससे पाक है। बल्कि आकाश और धरती में जो कुछ है, सब उसी का है, उसी के आज्ञाकारी हैं सारे। (117) वह आकाशों और पृथ्वी का बनाने वाला है। वह जब किसी कार्य का करना ठहरा लेता है तो बस उसके लिए वह कह देता है कि 'हो जा', तो वह हो जाता है।

(118) और जो लोग ज्ञान नहीं रखते, उन्होंने कहा : अल्लाह क्यों नहीं

बात करता हमसे या हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं आती। इसी तरह उनके पहले के लोग भी इन्ही की सी बातें कह चुके हैं, उन सबके दिल एक जैसे हैं, हमने स्पष्ट कर दी हैं निशानियाँ उन लोगों के लिए जो विश्वास करने वाले हैं। (119) हमने तुमको सत्य के साथ भेजा है, शुभ सूचना सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर। और तुमसे जहन्नम (नरक) में जाने वालों के बारे में कोई पूछ नहीं होगी। (120) और यहूदी और ईसाई तुमसे कभी सन्तुष्ट न होंगे, जब तक तुम उनके पंथ के अनुयायी न बन जाओ। तुम कहो कि जो मार्ग अल्लाह दिखाता है, वही सच्चा मार्ग है। और इस ज्ञान के पश्चात जो तुमको पहुँच चुका है, यदि तुमने उनकी इच्छाओं का अनुकरण किया तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तुम्हारा कोई मित्र होगा और न कोई सहायक। (121) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह उसको पढ़ते हैं जैसा कि उसको पढ़ने का हक़ है, यही लोग ईमान लाते हैं इस (क़ुरआन) पर। और जो इसको झुठलायें, तो वही घाटे में रहने वाले हैं।

(122) ऐ इस्राईल की सन्तान! मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुम्हारे ऊपर किया और इस बात को कि मैंने तुमको समस्त संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की। (123) और उस दिन से डरो जिसमें कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के कुछ काम न आयेगा और न किसी की ओर से कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा और न किसी को कोई सिफ़ारिश लाभ देगी और न कहीं से उनको कोई सहायता पहुँचेगी। (124) और जब इब्राहीम को उसके पालनहार ने कुछ बातों के माध्यम से परीक्षा में डाला तो उसने पूरा कर दिखाया। अल्लाह ने कहा, मैं तुमको सब लोगों का इमाम (पथ प्रदर्शक) बनाऊँगा। इब्राहीम ने कहाः और मेरी सन्तान में से भी। अल्लाह ने कहा मेरा वचन अत्याचारियों तक नहीं पहुँचता।

(125) और जब हमने काबा को लोगों के एकत्र होने का स्थान और शान्ति का स्थान घोषित किया। और आदेश दिया कि मक़ामे— इब्राहीम (इब्राहीम के खड़े होने का स्थान) को नमाज़ पढ़ने का स्थान बना लो। और हमने इब्राहीम और इस्माईल को हुक्म दिया कि मेरे घर की परिक्रमा करने वालों, एतेकाफ (बैठ कर स्तुति) करने वालों और झुकने (रुकू) और सजदा करने वालों के लिए पवित्र रखो। (126) और जब इब्राहीम ने कहा ऐ मेरे पालनहार, इस

नगर को शान्ति का नगर बना दे और उसके वासियों को, जो इनमें से अल्लाह और परलोक के दिन पर विश्वास रखें, उनको फलों की जीविका प्रदान कर। अल्लाह ने कहा जो अवज्ञा करेगा मैं उसको भी थोड़े दिनों लाभ दूँगा। फिर उसको अग्नि की यातना की ओर ढ़केल दूँगा और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(127) और जब इब्राहीम और इस्माईल अल्लाह के घर (काबा) की दीवारें उठा रहे थे और यह कहते जाते थे : ऐ हमारे पालनहार, स्वीकार कर ले हम से, निस्संदेहः, तू ही सुनने वाला और जानने वाला है। (128) ऐ हमारे पालनहार! हमको अपना कृतज्ञ बना और हमारी सन्तान में से अपनी एक कृतज्ञ क़ौम उठा, और हमको हमारे इबादत के तरीक़े बता और हमको क्षमा कर, तू ही क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (129) ऐ हमारे पालनहार, और इनमें इन्हीं में का एक रसूल (सन्देष्टा) उठा जो उनको तेरी आयतें (श्रुति) सुनाये और उनको किताब और विवेक की शिक्षा दे और उनका तज़्किया (शुद्धिकरण और अध्यात्मिक विकास) करे। निस्सन्देहः तू बड़ा प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है।

(130) और कौन है जो इब्राहीम के दीन को पसन्द न करे, परन्तु वह जिसने अपने आप को मूर्ख बना लिया हो। हालाँकि हमने इब्राहीम को संसार में चुन लिया था और परलोक में वह भले लोगों में से होगा। (131) जब उसके पालनहार ने कहा कि मुस्लिम (अज्ञाकारी) हो जा तो उसने कहाः मैंने अपने आप को जगत के स्वामी के हवाले किया। (132) और इसी का उपदेश दिया इब्राहीम ने अपनी सन्तान को और इसी का उपदेश दिया याक़ूब ने अपनी सन्तान को। ऐ मेरे बेटो! अल्लाह ने तुम्हारे लिए इसी दीन को चुन लिया है। अतः इस्लाम के अतिरिक्त किसी और हालत पर तुमको मृत्यु न आये। (133) क्या तुम उपस्थित थे जब याक़ूब की मृत्यु का समय आया। जब उसने अपने बेटों से कहा कि मेरे बाद तुम किसकी इबादत करोगे। उन्होंने कहाः हम उसी अल्लाह की इबादत करेंगे जिसकी इबादत आप और आपके पूर्वज इब्राहीम, इस्माईल, इस्हाक़ करते आये हैं, वही एक उपास्य है और हम उस के आज्ञाकारी हैं। (134) यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी। उसको मिलेगा जो उसने कमाया और तुमको मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किये हुए की पूछ न होगी।

(135) और वह कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ तो सन्मार्ग पाओगे। कहो कि नहीं, बल्कि हम तो अनुसरण करते हैं इब्राहीम के दीन का जो अल्लाह की ओर एकाग्रचित्र था और वह बहुदेववादियों में से न था। (136) कहो कि हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस मार्गदर्शन पर जो हमारी ओर उतारा गया है, और उस पर भी जो इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याकब और उसकी सन्तान पर उतारा गया और जो दिया गया मूसा और ईसा को और जो दिया गया पैग़म्बरों को उनके पालनहार की ओर से। हम उनमें से किसी के बीच अन्तर नहीं करते, और हम अल्लाह ही के आज्ञाकारी (मुस्लिम) हैं। (137) फिर यदि वह ईमान लायें जिस तरह तुम ईमान लाये हो तो निस्सन्देहः वह सन्मार्ग पा गये और यदि वह फिर जायें तो अब वह हठधर्मिता पर हैं। अतः तुम्हारी ओर से अल्लाह उनके लिए पर्याप्त है और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (138) कहो हमने अपनाया अल्लाह का रंग और अल्लाह के रंग से किसका रंग अच्छा है और हम उसी की इबादत करने वाले हैं। (139) कहो क्या तुम अल्लाह के सम्बन्ध में हमसे झगड़ते हो, हालाँकि वह हमारा पालनहार भी है और तुम्हारा पालनहार भी। हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म, और हम पूर्ण रूप से उसके लिए हैं। (140) क्या तुम कहते हो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक़ और याक़ूब और उसकी सन्तान सब यहूदी अथवा ईसाई थे। कहो कि तुम अधिक जानते हो या अल्लाह। और उससे बड़ा अत्याचारी और कौन होगा जो उस गवाही को छिपाये जो अल्लाह की ओर से उसके पास आई हुई है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं। (141) यह एक उम्मत थी जो गुज़र चुकी, उसको मिलेगा जो उसने कमाया और तुमको मिलेगा जो तुमने कमाया। और तुमसे उनके किये हुए की पूछ न होगी।

(142) अब मूर्ख लोग कहेंगे कि ईमान वालों को किस चीज़ ने उनके क़िब्ले (केन्द्र) से फेर दिया। कहो कि पूर्व और पश्चिम अल्लाह ही के हैं। वह जिसको चाहता है, सीधा मार्ग दिखाता है। (143) और इस तरह हमने तुमको बीच की उम्मत बना दिया, ताकि तुम हो बताने वाले लोगों पर और रसूल (मुहम्मद) हो तुम पर बताने वाला। और जिस क़िब्ले पर तुम थे, हमने उसको

मात्र इसलिए ठहराया था कि हम जान लें कि कौन रसूल का अनुसरण करता है और कौन इससे उल्टे पाँव फिर जाता है। और निस्सन्देह, यह बात भारी है परन्तु उन लोगों पर जिनको अल्लाह ने सीधा रास्ता दिखा दिया है। और अल्लाह ऐसा नहीं कि वह तुम्हारे ईमान को नष्ट कर दे। निस्सन्देह, अल्लाह लोगों के साथ स्नेह करने वाला, दया करने वाला है।

(144) हम तुम्हारे चेहरे का बार-बार आसमान की ओर उठना देख रहे हैं। अतः हम तुमको उसी क़िब्ले की ओर फेर देंगे जिसको तुम पसन्द करते हो, अब अपना चेहरा मस्जिद-ए हराम (काबा) की ओर फेर दो। और तुम जहाँ कहीं भी हो, अपने चेहरों को उसी की ओर करो। और जिन लोगों को किताब दी गई, वह भली-भाँति जानते हैं कि यह सत्य है और उनके पालनहार की ओर से है। और अल्लाह अनभिज्ञ नहीं उससे, जो वह कर रहे हैं। (145) और यदि तुम इन किताब वालों के समक्ष सभी तर्क प्रस्तुत कर दो, तब भी वह तुम्हारे क़िब्ले को न मानेंगे और न तुम उनके क़िब्ले का अनुसरण कर सकते हो। और न वह स्वंय एक दूसरे के किब्ले को मानते हैं। और इस ज्ञान के प्राप्त हो जाने के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, यदि तुम उनकी इच्छाओं का अनुसरण करोगे तो निश्चय ही तुम अत्याचारियों में हो जाओगे। (146) जिनको हमने किताब दी है, वह उसको उसी तरह पहचानते हैं जिस तरह वह अपने बेटों को पहचानते हैं। और उनमें से एक समूह सत्य को छिपा रहा है, हालाँकि वह उसको जानता है। सत्य वह है जो तेरा पालनहार कहे। (147) अतः तुम कदापि सन्देह करने वालों में से न बनो।

(148) हर एक के लिए एक दिशा है जिधर वह अपना चेहरा करता है। अतः तुम भलाइयों की ओर दौड़ो। तुम जहाँ कहीं भी होगे, अल्लाह तुम सबको ले आयेगा, निस्सन्देहः अल्लाह सब कुछ कर सकता है। (149) और तुम जहाँ से भी निकलो, अपना चेहरा मस्जिद-ए हराम की ओर करो। निस्सन्देहः यह सत्य है, तुम्हारे पालनहार की ओर से है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं। (150) और तुम जहाँ से भी निकलो, अपना चेहरा मस्जिद-ए हराम की ओर करो और तुम जहाँ भी हो अपना चेहरा उसी की ओर रखो, ताकि लोगों को तुम्हारे ऊपर कोई हुज्जत (तर्क) शेष न

रहे, सिवाय उन लोगों के जो उनमें अन्यायी हैं। अतः तुम उनसे न डरो और मुझसे डरो। और ताकि मैं अपनी कृपा तुम्हारे ऊपर पूरी कर दूँ। और ताकि तुम सन्मार्ग पा जाओ। (151) जिस तरह हमनें तुम्हारे बीच एक रसूल (सन्देष्टा) तुम्हीं में से भेजा जो तुमको हमारी आयतें (श्रुति) पढ़कर सुनाता है और वह तुमको पवित्र करता है और तुमको किताब (क़ुरआन) की और हिक्मत (विवेक) की शिक्षा देता है। और तुमको वह चीज़ें सिखा रहा है जिनको तुम नहीं जानते थे। (152) अतः तुम मुझको याद रखो, मैं तुमको याद रखूँगा। और मेरे उपकार के आभारी बनो, कृतघ्न न बनो।

(153) ऐ ईमान वालों, सब्र (धैर्य) और नमाज़ के माध्यम से सहायता प्राप्त करो। निश्चय ही अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है। (154) और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे जायें, उनको मृत मत कहो, वह जीवित हैं, परन्तु तुमको ज्ञात नहीं। (155) और हम अवश्य तुमको परीक्षा में डालेंगे, कुछ डर और भूख़ से और सम्पत्ति और प्राणों और फलों की कमी से। और दृढ़ रहने वालों को शुभ-सूचना दे दो। (156) जिनका हाल यह है कि जब उन पर कोई विपत्ति आती है तो वह कहते हैं : हम अल्लाह के हैं और हम उसी की ओर लौटने वाले हैं। (157) यही लोग हैं जिनके ऊपर उनके पालनहार की ओर से शाबाशियां (विशेष कृपा) है और दया है। और यही लोग हैं जो सन्मार्ग पर हैं।

(158) सफ़ा और मरवा (मक्के की दो पहाड़ियाँ) निस्सन्देहः अल्लाह की स्मृतियों में से हैं। अतः जो व्यक्ति अल्लाह के घर का हज करे या उमरः करे तो उस पर कोई हानि नहीं कि वह इन दोनों की परिक्रमा करे और जो कोई उत्साहपूर्वक कुछ भलाई करे तो अल्लाह क़द्र करने वाला, जानने वाला है। (159) जो लोग छिपाते हैं हमारी उतारी हुई खुली निशानियों को और हमारे मार्गदर्शन को, इसके पश्चात कि हम इसको लोगों के लिए किताब में खोल चुके हैं तो यह वही लोग हैं जिन को अल्लाह ठुकरा देगा, और उन पर फटकार करने वाले फटकार करते हैं। (160) हाँ, जिन्होंने तौबा (क्षमा-याचना) की और सुधार कर लिया और स्पष्ट रूप से उसका वर्णन कर दिया तो उनको मैं क्षमा कर दूँगा, और मैं हूँ क्षमा करने वाला, दयावान। (161) निस्सन्देहः

जिन लोगों ने झुठलाया और वह उसी हालत में मृत्यु पा गये तो वही लोग हैं कि उन पर अल्लाह की और फ़रिश्तों की और मनुष्यों की सबकी फटकार है। (162) इसी स्थिति में वह सदैव रहेंगे। उन पर से यातना हल्की न की जायेगी और न उनको ढील दी जायेगी।

(163) और तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है, उसके सिवा कोई उपास्य नहीं, वह बहुत दयावान और अत्यन्त कृपाशील है। (164) निस्सन्देह, आकाशों और पृथ्वी की संरचना में और रात और दिन के आने-जाने में और उन नौकाओं में जो मनुष्यों के काम आने वाली चीज़ें लेकर समुद्र में चलती हैं, और उस पानी में जिसको अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उसने मृत भूमि को जीवन प्रदान किया। और अल्लाह ने भूमि में प्रत्येक प्रकार के जीवधारी फैला दिये। और हवाओं की गति और बादलों में जो आकाश और पृथ्वी के बीच अल्लाह के आदेश के अधीन हैं, संकेत है उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

(165) कुछ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के सिवा दूसरों को उसके समकक्ष ठहराते हैं। वह उनसे ऐसा प्रेम रखते हैं जैसा प्रेम अल्लाह से रखना चाहिए। और जो ईमान वाले हैं, वह सबसे अधिक अल्लाह से प्रेम रखते हैं। और यदि ये अत्याचारी उस समय को देख लें, जबकि वह यातना ग्रस्त होंगे, कि सम्पूर्ण शक्ति अल्लाह ही की है और अल्लाह बहुत कठोर यातना देने वाला है। (166) जब यातना उनके सामने होगी तो वह लोग जिनके कहने पर वह चलते थे, उन लोगों से अलग हो जायेंगे और उनके प्रत्येक दिशा के सम्बन्ध पूर्णतया टूट चुके होंगे। (167) वह लोग जो संसार में उनके पीछे चले थे, कहेंगे काश, हमको दुनिया की ओर वापसी मिल जाती तो हम भी उनसे अलग हो जाते जैसे ये हमसे अलग हो गये। इस प्रकार अल्लाह उनके कर्मों को उन्हें पश्चाताप बनाकर दिखाएगा। और वह आग (जहन्नम) से निकल न सकेंगे।

(168) लोगों! पृथ्वी की वस्तुओं में से हलाल (वैध) और सुथरी वस्तुएँ खाओ और शैतान के पद-चिन्हों का अनुसरण न करो, निस्सन्देहः शैतान तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु हैं। (169) वह तुमको मात्र बुरे कर्म और निर्लज्जता का आदेश देता है और इस बात का कि तुम अल्लाह के बारे में वह बातें करो, जिनके सम्बन्ध में तुमको कोई ज्ञान नहीं। (170) और जब उनसे कहा जाता

है कि उस पर चलो जो अल्लाह ने उतारा है तो वह कहते हैं कि हम उस पर चलेंगे जिस पर हमने अपने पूर्वजों (बाप-दादा) को चलते हुए पाया है। क्या उस स्थिति में भी कि उनके बाप-दादा न बुद्धि रखते हों और न सन्मार्ग जानते हों। (171) और उन झुठलाने वालों का उदाहरण ऐसा है जैसे कोई व्यक्ति ऐसे पशु के पीछे चिल्ला रहा हो जो बुलाने और पुकारने के अतिरिक्त और कुछ नहीं सुनता। ये बहरे हैं, गूगें हैं, अन्धे हैं, ये कुछ नहीं समझते।

(172) ऐ ईमान वालों, हमारी दी हुई पवित्र चीज़ों को खाओ और अल्लाह का आभार व्यक्त करो यदि तुम उसकी उपासना करने वाले हो। (173) अल्लाह ने तुम पर हराम (अवैध) किया है मात्र मुर्दार और रक्त को और सूअर के माँस को, और जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम लिया गया हो। फिर जो व्यक्ति विवश हो जाये, वह न इच्छुक हो और न सीमा का उल्लघंन करने वाला हो तो उस पर कोई पाप नहीं। निस्सन्देहः अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (174) जो लोग उस चीज़ को छिपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में उतारी है और उसके बदले में थोड़ा मोल लेते हैं, वह अपने पेट में मात्र आग भर रहे हैं। क़ियामत (उठाये जाने के दिन) में अल्लाह न उनसे बात करेगा और न उनको पवित्र करेगा और उनके लिए कष्टप्रद यातना है। (175) यही वे लोग हैं जिन्होंने सन्मार्ग के बदले पथभ्रष्टता का सौदा किया और क्षमा के बदले यातना का, तो आग को सहन करने की उनको कितनी सहार है। (176) यह इसलिए कि अल्लाह ने अपनी किताब को ठीक-ठीक उतारा, परन्तु जिन लोगों ने किताब में कई रास्ते (मतभेद) निकाल लिये, वह हठधर्मिता में दूर जा पड़े।

(177) नेकी (पुण्य) यह नहीं कि तुम अपने चेहरे पूरब और पश्चिम की ओर कर लो, बल्कि नेकी यह है कि मनुष्य ईमान लाये अल्लाह पर और परलोक के दिन पर और फ़रिश्तों पर और किताब पर और पैग़म्बरों पर। और धन दे अल्लाह के प्रेम में और सम्बन्धियों को और अनाथों को और मुहताजों को और मुसाफ़िरों को और माँगने वालों को और गर्दने छुड़ाने में। और नमाज़ स्थापित करे और ज़कात अदा करे और जब प्रण कर ले तो उसको पूरा करे।

और सब्र (धैर्य) करे कठिनाई में और विपत्ति और कष्ट में, और युद्ध के समय। यही लोग हैं जो सच्चे निकले और यही हैं डर रखने वाले।

(178) ऐ ईमान वालों, तुम पर हत्या का क़िसास (बदला) लेना अनिवार्य किया जाता है। स्वतन्त्रा व्यक्ति के बदले स्वतन्त्रा व्यक्ति, दास के बदले दास, महिला के बदले महिला। फिर जिसको उसके भाई की ओर से कुछ क्षमा प्राप्त हो जाये तो उसको चाहिए कि वह भले मार्ग का अनुसरण करे और भलाई के साथ उसको अदा करे। यह तुम्हारे पालनहार की ओर से एक सुविधा है और दया है। अब इसके बाद भी जो व्यक्ति सीमा का उल्लंघन करे, उसके लिए कष्टदायक यातना है। (179) और ऐ बुद्धि वालों, क़िसास (बदला) में तुम्हारे लिए जीवन है ताकि तुम बचो। (180) तुम पर फ़र्ज (अनिवार्य) किया जाता है कि जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाये और वह अपने पीछे, सम्पत्ति छोड़ रहा हो तो वह सामन्य रीत के अनुसार वसीयत कर दे अपने माता-पिता के लिए और सम्बन्धियों के लिए। यह आवश्यक है अल्लाह से डरने वालों के लिए। (181) फिर जो कोई वसीयत को सुनने के बाद उसको बदल डाले तो उसका पाप उसी पर होगा जिसने उसको बदला, निश्चय ही अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (182) हाँ, जिसको वसीयत करने वाले के सम्बन्ध में यह सन्देह हो कि उसने पक्षपात किया है या हक़ मारा है और वह आपस में समझौता करा दे तो उस पर कोई पाप नहीं है। अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(183) ऐ ईमान वालों, तुम पर रोज़ा फ़र्ज (अनिवार्य) किया गया, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर रोज़ा फ़र्ज (अनिवार्य) किया गया था, ताकि तुम परहेज़गार (संयमी) बनो (184) गिनती के कुछ दिन। फिर जो कोई तुममें रोगग्रस्त हो या वह यात्रा में हों तो अन्य दिनों में वह संख्या पूरी कर ले। और जिनको ताक़त न हो तो उनके ऊपर एक रोज़े का प्रतिदान एक निर्धन को खाना खिलाना है। जो कोई अतिरिक्त नेकी (पुण्य) करे तो वह उसके लिए अच्छा है। और तुम रोज़ा रखो तो यह तुम्हारे लिए अधिक अच्छा है, यदि तुम समझो। (185) रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन उतारा गया, मार्गदर्शन है लोगों के लिए और प्रत्यक्ष निशानियाँ मार्ग की,

और सत्य और असत्य के बीच निर्णय करने वाला। अतः तुममें से जो कोई इस महीने को पाये, वह इसके रोज़े रखे और जो रोगग्रस्त हो या वह यात्रा पर हो तो वह अन्य दिनों में उसी संख्या पूरी कर ले। अल्लाह तुम्हारे लिए सुविधा चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती करना नहीं चाहता। और (वह चाहता है) कि तुम संख्या पूरी कर लो और अल्लाह की बड़ाई करो इस बात पर कि उसने तुमको मार्ग बताया और ताकि तुम उसके आभार व्यक्त करने वाले बनो।

(186) और जब मेरे उपासक तुमसे मेरे सम्बन्ध में पूछें तो मैं निकट हूँ, पुकारने वाले की पुकार का उत्तर देता हूँ जबकि वह मुझे पुकारता है, तो चाहिए कि वह मेरा आदेश मानें और मुझ पर विश्वास रखें ताकि वह सन्मार्ग पायें। (187) तुम्हारे लिए रोज़े की रात में अपनी पत्नियों के पास जाना वैध किया गया। वह तुम्हारे लिए वस्त्र हैं और तुम उनके लिए वस्त्र हो। अल्लाह ने जाना कि तुम अपने आप से प्रतिज्ञा भंग कर रहे थे तो उसने तुम पर कृपा की और तुमको क्षमा कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो और चाहो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दिया है। और खाओ और पिओ यहाँ तक कि सुबह की सफेद धारी काली धारी से अलग स्पष्ट हो जाये, फिर पूरा करो रोज़ा रात तक। और जब तुम मस्जिद में एतेकाफ़ में हो तो पत्नियों से संभोग न करो। यह अल्लाह की बनाई हुई सीमाएँ हैं तो तुम उनके निकट न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी निशानियाँ लोगों के लिए बयान करता है ताकि वह बचें। (188) और तुम आपस में एक-दूसरे के धन को अनाधिकृत रूप से न खाओ, और न उनको प्रशासकों तक पहुँचाओ ताकि दूसरों के धन का कोई भाग अन्याय पूर्वक खा जाओ। हालाँकि तुम इसको जानते हो।

(189) वह तुमसे चांद के घटने एवं बढ़ने के सम्बन्ध में प्रश्न करते हैं। कह दो कि वह समय अतः तिथि (बताने वाले) हैं लोगों के लिए और हज के लिए। और नेकी यह नहीं कि तुम घरों में आओ छत पर से, बल्कि नेकी यह है कि मनुष्य संयमी बने। और घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से ड़रो ताकि तुम सफल हो। (190) और अल्लाह के मार्ग में उन लोगों से लड़ो जो लड़ते हैं तुमसे। और अत्याचार न करो, अल्लाह अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता। (191) और मारो उनको जिस स्थान पर पाओ और निकाल

दो उनको जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है। और फ़ित्ना (उपद्रव) हत्या से भी बढ़ कर है। और उनसे मस्जिद-ए हराम के पास न लड़ो, जब तक कि वह तुमसे वहां युद्ध न छेड़ें। अतः यदि वह तुमसे युद्ध छेड़ें तो उनका वध करो। यही दण्ड है अवज्ञाकारियों का। (192) फिर यदि वह मान जायें तो अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है। (193) और उनसे युद्ध करो यहाँ तक कि फ़ित्ना (धार्मिक अत्याचार) बाक़ी न रहे और दीन (धर्म) अल्लाह का हो जाये, फिर यदि वह मान जायें तो इसके बाद सख़्ती नहीं है, परन्तु अत्याचारियों पर।

(194) हुरमत वाला (प्रतिष्ठित) महीना, हुरमत वाले महीनों का बदला है और हुरमतों का भी क़िसास (बदला) है अतः जिसने तुम पर अत्याचार किया, तुम भी उस पर अत्याचार करो, जैसा उसने तुम पर अत्याचार किया है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह परहेज़गारों के साथ है। (195) और अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करो और अपने आप को हलाकत में न डालो। और काम अच्छी तरह करो। निस्सन्देहः अल्लाह पसन्द करता है अच्छी तरह काम करने वालों को।

(196) और हज और उमरः अल्लाह के लिए पूरा करो। फिर यदि तुम घिर जाओ तो जो क़ुर्बानी (वध का जानवर) उपलब्ध हो, वह प्रस्तुत कर दो और अपने सिरों का मुण्डन न कराओ जब तक क़ुर्बानी अपने ठिकाने पर न पहुँच जाये। तुममें से जो रोगग्रस्त हों और उसके सिर में कोई पीड़ा हो तो वह फ़िदिया (अर्थदण्ड) दे, रोज़ा या दान, या क़ुर्बानी का। जब शान्ति की स्थिति हो और कोई हज तक उमरः का लाभ प्राप्त करना चाहे, तो वह क़ुर्बानी प्रस्तुत करे, जो उसको उपलब्ध हो। फिर जिसके पास उपलब्ध न हो तो वह हज के दिनों में तीन दिन के रोज़े रखे और सात दिन के रोज़े जब तुम घरों को लौटो। ये पूरे दस दिन हुए। यह उस व्यक्ति के लिए है जिसका परिवार मस्जिद-ए हराम के पास न बसा हुआ हो। अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (197) हज के निर्धारित महीने हैं। अतएव जिसने इन निर्धारित महीनों में हज का इरादा कर लिया तो फिर उसको हज के दौरान न कोई अश्लील बात करनी है और न पाप की और न लड़ाई-झगड़े की बात। और जो भले कर्म तुम करोगे, अल्लाह को उसका ज्ञान हो जायेगा।

और तुम पाथेय लो। सबसे अच्छा पाथेय तक़्वा (परहेज़गारी) का पाथेय है। और ऐ बुद्धि वालों, मुझसे डरो।

(198) इसमें कोई पाप नहीं कि तुम अपने पालनहार का फ़ज़्ल (अनुकम्पा) तलाश करो। फिर जब तुम लोग 'अरफ़ात' से वापस हो तो अल्लाह को याद करो 'मश्अरे हराम' (पवित्र-स्थल) के निकट। और उसको याद करो जिस तरह अल्लाह ने तुमको बताया है। इससे पहले निश्चय ही तुम भटके हुए लोगों में थे। (199) फिर परिक्रमा को चलो जहाँ से सब लोग चलें और अल्लाह से क्षमा याचना करो। वास्तव में अल्लाह क्षमा प्रदान करने वाला, दया करने वाला है। (200) फिर जब तुम अपने हज के मनासिक (हज की प्रक्रिया) पूरे कर लो तो अल्लाह को याद करो, जिस तरह तुम पहले अपने बाप-दादा को याद करते थे, बल्कि उससे भी अधिक। लोगों में से कोई मनुष्य कहता हैः ऐ हमारे पालनहार! हमको इसी संसार में सब कुछ दे दे, और परलोक में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (201) और कोई व्यक्ति है जो कहता है कि ऐ हमारे पालनहार, हमको संसार में भलाई दे और परलोक में भी भलाई दे और हमको आग की यातना से बचा। (202) उन्हीं लोगों के लिए हिस्सा है उनके किये का (दोनों जगह- प्रलोक एवं संसार) और अल्लाह शीघ्र ही हिसाब लेने वाला है। (203) और अल्लाह को याद करो निर्धारित दिनों में। फिर जो व्यक्ति शीघ्रता से दो दिन में लौट आये, उस पर कोई पाप नहीं और जो व्यक्ति ठहर जाये, उस पर भी कोई पाप नहीं। यह उसके लिए है जो अल्लाह से डरे। और तुम अल्लाह से डरते रहो और भली-भाँति जान लो कि तुम उसी के पास एकत्र किये जाओगे।

(204) और लोगों में से कोई ऐसा है कि उसकी बात इस सांसारिक जीवन में तुमको भली प्रतीत होती है और वह अपने दिल की बात पर अल्लाह को साक्षी बनाता है, हालाँकि वह बहुत झगड़ालू है। (205) और जब वह पीठ फेरता है तो वह इस प्रयास में रहता है कि पृथ्वी पर उपद्रव फैलाये और खेतों और प्राणों को नष्ट करे, हालाँकि अल्लाह फ़साद (बिगाड़) को पसन्द नहीं करता। (206) और जब उससे कहा जाता है कि अल्लाह से डर, तो अहंकार उसको पाप पर जमा देता है। अतः ऐसे व्यक्ति के लिए नरक निश्चित है और वह

बहुत बुरा ठिकाना है। (207) और लोगों में से कोई ऐसा है कि अल्लाह की प्रसन्नता की तलाश में वह अपने प्राण को खपा देता है और अल्लाह अपने बंदों पर अत्यन्त दयावान है।

(208) ऐ ईमान वालों, इस्लाम में पूरे के पूरे प्रविष्ट हो जाओ और शैतान के पद-चिन्हों पर मत चलो, वह तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है। (209) यदि तुम फिसल जाओ इसके उपरान्त कि तुम्हारे पास स्पष्ट तर्क आ चुके हैं तो जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली है और तत्वदर्शी है। (210) क्या लोग इस प्रतीक्षा में हैं कि अल्लाह (स्वंय) बादलों की छाया में आये और फ़रिश्ते भी आ जायें और मामले का निर्णय कर दिया जाये, और समस्त मामले अल्लाह ही की ओर फेरे जाते हैं। (211) इस्राईल की सन्तान से पूछो, हमने उनको कितनी खुली-खुली निशानियाँ दीं। और जो व्यक्ति अल्लाह की नेमत (अनुकम्पा) को बदल डाले, जबकि वह उसके पास आ चुकी हो तो अल्लाह निश्चित रूप से कठोर दण्ड देने वाला है। (212) आकर्षक बना दिया गया है सांसारिक जीवन उन लोगों की दृष्टि में जो अवज्ञाकारी हैं और वह ईमान वालों पर हँसते हैं। जबकि जो परहेज़गार हैं, वह क़ियामत के दिन उनकी तुलना में ऊँचे होंगे। और अल्लाह जिस पर चाहता है, उदार अनुग्रह करता है।

(213) लोग एक उम्मत थे। उन्होंने विभेद किया तो अल्लाह ने पैग़म्बरों को भेजा शुभ सूचना देने वाले और डराने वाले बना कर। और उनके साथ किताब उतारी सत्य के साथ, ताकि वह निर्णय करे उन बातों का जिनमें लोग मतभेद कर रहे हैं। और यह मतभेद उन्हीं लोगों ने किये जिनको सत्य दिया गया था, इसके उपरान्त कि उनके पास खुला-खुला मार्गदर्शन आ चुका था, आपस की हठधर्मी के कारण। अतः अल्लाह ने अपनी कृपा से सच्चाई के मामले में ईमान वालों को मार्ग दिखाया जिसमें वह झगड़ रहे थे और अल्लाह जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। (214) क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम जन्नत में प्रवेश पा जाओगे जबकि अभी तुम पर वह परिस्थितियाँ गुज़री ही नहीं जो तुमसे पहले के लोगों पर गुज़री थीं। उनको कठिनाई और पीड़ा पहुँची और वह हिला मारे गये, यहाँ तक कि

रसूल (सन्देष्टा) और उनके साथ ईमान लाने वाले पुकार उठे कि अल्लाह की सहायता कब आयेगी। याद रखो, अल्लाह की सहायता निकट है।

(215) लोग तुमसे पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो धन तुम ख़र्च करो तो उसमें अधिकार है तुम्हारे माता-पिता का और सम्बन्धियों का और अनाथों का और निर्धनों का और मुसाफ़िरों का। और जो भलाई तुम करोगे, वह अल्लाह को मालूम है। (216) तुम पर युद्ध का आदेश हुआ है और वह तुमको भारी प्रतीत होता है। हो सकता है कि तुम एक चीज़ को नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए भली हो। और हो सकता है कि तुम एक चीज़ को पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते।

(217) लोग तुमसे हुरमत (युद्ध निषिद्ध) वाले महीने के सम्बन्ध में पूछते हैं कि उसमें युद्ध करना कैसा है। कह दो कि उसमें युद्ध करना बहुत बुरा है। परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना और उसको झुठलाना और मस्जिद-ए हराम से रोकना और उसके लोगों को उससे निकालना अल्लाह की दृष्टि में इससे भी अधिक बुरा है। और फ़ित्ना (फ़साद) हत्या से भी अधिक बड़ी बुराई है। और ये लोग तुमसे निरन्तर लड़ते रहेंगे यहाँ तक कि तुमको तुम्हारे दीन से फेर दें, यदि वह सक्षम हों। और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिरेगा और वह कुफ्र (अवज्ञा) की स्थिति में मर जाये तो ऐसे लोगों के कर्म नष्ट हो गये (इस) संसार में और परलोक में। और वह आग में पड़ने वाले हैं और वह उसमें सदैव रहेंगे। (218) वह लोग जो ईमान लाये और जिन्होंने हिजरत (अल्लाह के मार्ग में अपना घर बार छोड़ा) की और अल्लाह के मार्ग में संघर्ष किया, वह अल्लाह से दया की अपेक्षा रखते हैं और अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(219) लोग तुमसे मदिरा और जुए के विषय में पूछते हैं। कह दो कि इन दोनों चीज़ों में बड़ा पाप है और लोगों के लिए कुछ लाभ भी हैं। और उनका पाप बहुत अधिक है उनके लाभ से। और वह तुमसे पूछते हैं कि वह क्या ख़र्च करें। कह दो कि जो आवश्यकता से अधिक हो। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए आदेशों का वर्णन करता है ताकि तुम चिन्तन करो (220) संसार और परलोक के मामलों में। और वह तुमसे अनाथों के सम्बन्ध में पूछते हैं।

कह दो कि जिसमें उनकी भलाई हो, वही उपयुक्त है। और यदि तुम उनको अपने साथ सम्मिलित कर लो तो वे तुम्हारे भाई हैं। और अल्लाह को ज्ञात है कि कौन बिगाड़ करने वाला है और कौन सुधार पैदा करने वाला। और यदि अल्लाह चाहता तो तुमको विपत्ति में डाल देता। अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वज्ञ है।

(221) और मुश्रिक (बहुदेववादी) औरतों से विवाह न करो जब तक कि वह ईमान न लायें और एक मोमिन दासी अधिक अच्छी है एक मुश्रिक स्त्री से, यद्यपि वह तुमको अच्छी लगती हो। और अपनी औरतों को मुश्रिक मर्दों के निकाह में न दो जब तक कि वह ईमान न लायें, मोमिन दास अच्छा है एक स्वतन्त्रा मुश्रिक से, यद्यपि वह तुमको अच्छा लगता हो। ये लोग आग की ओर बुलाते हैं और अल्लाह जन्नत (स्वर्ग) की ओर, और अपनी क्षमा की ओर बुलाता है। वह अपने आदेश (नियम) लोगों के लिए स्पष्ट करके बयान करता है, ताकि वह नसीहत पकड़ें। (222) और वह तुमसे हैज़ (मासिक धर्म) के विषय में पूछते हैं। कह दो कि वह एक गन्दगी है, उसमें तुम औरतों से अलग रहो। और जब तक वह पवित्र न हो जायें उनके निकट न जाओ। फिर जब वह अच्छी तरह पवित्र हो जायें, तो उस विधि से उनके निकट जाओ जिसका अल्लाह ने तुमको आदेश दिया है। अल्लाह मित्र रखता है तौबा करने वालों को और वह मित्र रखता है पवित्र रहने वालों को। (223) तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेतियाँ है। अतः अपनी खेती में जिस तरह चाहो जाओ और अपने लिये आगे भेजो और अल्लाह से डरो और जान लो कि तुम्हें अवश्य उससे मिलना है। और ईमान वालों को शुभ-सूचना दे दो।

(224) और अल्लाह को अपनी सौगन्धों की ओट न बनाओ कि तुम भलाई न करो, और परहेज़गारी न करो और लोगों के बीच समझौता न कराओ। अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (225) अल्लाह तुम्हारी अन्जानी सौगन्धों पर तुमको नहीं पकड़ता, बल्कि वह उस संकल्प पर पकड़ता है जो तुम्हारे हृदय करते हैं। और अल्लाह क्षमा करने वाला, सहनशील है। (226) जो लोग अपनी पत्नियों से न मिलने की सौगन्ध खा लें, उनके लिए चार महीने तक का अवसर है। फिर यदि वह (अपनी पत्नी की ओर)

लौट आएँ तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (227) और यदि वह तलाक़ का निर्णय करें तो निश्चित रूप से अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (228) और तलाक़ दी हुई औरतें अपने आप को तीन हैज़ (मासिक धर्म) तक रोके रखें, और यदि वह अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखती हैं तो उनके लिए वैध नहीं कि वह उस चीज़ को छिपायें जो अल्लाह ने पैदा किया है उनके पेट में। और इस अवधि में उनके पति उनको फिर लौटा लेने का अधिकार रखते हैं, यदि वह संबन्धों को ठीक करना चाहें। और उन औरतों के लिए नियमानुसार उसी तरह अधिकार हैं जिस प्रकार नियम के अनुसार उन पर दायित्व हैं। और मर्दों को उन पर एक दर्जा प्राप्त है। और अल्लाह शक्तिशाली है और तत्वदर्शी है।

(229) तलाक़ दो बार है। फिर या तो प्रचलन के अनुसार, रख लेना है या अच्छे ढंग से विदा कर देना। और तुम्हारे लिए यह बात वैध नहीं कि तुमने जो कुछ उन औरतों को दिया है, उसमें से कुछ ले लो, परन्तु यह कि दोनों को डर हो कि वह अल्लाह की सीमाओं पर जमे न रह सकेंगे। फिर यदि तुमको यह डर हो कि दोनों अल्लाह की सीमाओं पर जमे न रह सकेंगे, तो पत्नी पर कुछ गुनाह नहीं कि उस सम्पत्ति में से पति को कुछ मुआवज़ा देकर उससे अलग हो जाए। यह अल्लाह की बांधी हुई सीमाएँ हैं, तो उनसे बाहर न निकलो। और जो व्यक्ति अल्लाह की सीमाओं का उल्लघन करे तो वही अत्याचारी हैं। (230) फिर यदि वह उसको तलाक दे दें तो उसके बाद वह औरत उसके लिए हलाल (वैध) नहीं जब तक कि वह किसी दूसरे मर्द से निकाह न करे। फिर यदि वह मर्द उसको तलाक़ दे दे, तब गुनाह नहीं उन दोनों पर कि फिर मिल जायें, शर्त यह है कि उन्हें अल्लाह की सीमाओं पर जमे रहने की आशा हो। यह अल्लाह के बनाए हुए नियम हैं जिनको वह बयान कर रहा है उन लोगों के लिए जो बुद्धि वाले हैं। (231) और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वह अपनी इद्दत (तीन महीने दस दिन या प्रसव तक की अवधि) तक पहुँच जायें तो उनको या तो नियम के अनुसार, रख लो या उनको नियम के अनुसार विदा कर दो। और कष्ट पहुँचाने के उद्देश्य से न रोको, कि उन पर अत्याचार करो। और जो ऐसा करेगा उसने अपना ही बुरा किया। और अल्लाह की

आयतों को खेल न बनाओ। और याद करो अपने ऊपर अल्लाह की कृपा को और इस किताब और हिक्मत को जो उसने तुम्हारी नसीहत के लिए अवतरित किया है। और अल्लाह से डरो और जान लो कि अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(232) और जब तुम अपनी औरतों को तलाक़ दे दो और वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो उनको न रोको कि वह अपने पतियों से निकाह कर लें। जबकि वह नियम के अनुसार, आपस में सहमत हो जायें। यह नसीहत की जाती है उस व्यक्ति को जो तुममें से अल्लाह और परलोक के दिन पर विश्वास रखता हो, यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र और सुथरा नियम है। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। (233) और माएँ अपने बच्चों को पूरे दो वर्ष तक दूध पिलायें, उन लोगों के लिए जो पूरी अवधि तक दूध पिलाना चाहते हों। और जिसका बच्चा है, उसका दायित्व है उन माँओं के खाने और पहनने का रीति के अनुसार। किसी को आदेश नहीं दिया जाता, परन्तु उसकी क्षमता के अनुसार। न किसी माँ को उसके बच्चे के कारण कष्ट दिया जाये और न किसी पिता को उसके बच्चे के कारण। और यही दायित्व उत्तराधिकारी (वारिस) पर भी है। फिर यदि दोनों पारस्परिक सहमति और परामर्श से दूध छुड़ाना चाहें तो दोनों पर कोई पाप नहीं, और यदि तुम चाहो कि अपने बच्चों को किसी और से दूध पिलवाओ, तब भी तुम पर कोई पाप नहीं, शर्त यह है कि तुम रीति के अनुसार, वह अदा कर दो जो तुमने उनको देना तय किया था। और अल्लाह से डरो और जान लो कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है।

(234) और तुममें से जो लोग मृत्यु पा जायें और पत्नियाँ छोड़ जायें वह पत्नियाँ अपने आप को चार महीने दस दिन तक प्रतीक्षा में रखें। फिर जब वह अपनी इद्दत (अवधि) को पहुँचें तो जो कुछ वह अपने आप के बारे में रीति के अनुसार करें, उसका तुम पर कोई गुनाह नहीं। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से पूर्णतः भिज्ञ है। (235) और तुम्हारे लिए इस बात में कोई गुनाह नहीं कि उन औरतों को (विवाह का) संदेश देने में कोई बात संकेत के रूप में कहो या उसको अपने दिल में छिपाये रखो। अल्लाह को ज्ञात है कि तुम अवश्य

उनका ध्यान करोगे। परन्तु छिपकर उनसे वादे न करो, तुम उनसे सामन्य रीति के अनुसार कोई बात कह सकते हो। और विवाह का इरादा उस समय तक न करो जब तक निर्धारित अवधि (इद्दत) अपनी पूर्णता को न पहुँच जाये। और जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। अतः उससे डरो और जान लो कि अल्लाह क्षमा करने वाला, सहनशील है। (236) यदि तुम औरतों को ऐसी स्थिति में तलाक़ दो कि उनको न तुमने हाथ लगाया है और न उनके लिए कुछ महर निर्धारित किया है तो उनके महर के सम्बन्ध में तुम पर कोई पकड़ नहीं। हाँ उनको रीति के अनुसार, कुछ सामान दे दो, क्षमता रखने वाले पर अपनी हैसियत के अनुसार है और क्षमता न रखने वाले पर अपनी हैसियत के अनुसार, यह भलाई करने वालों पर अनिवार्य है। (237) और यदि तुम उनको तलाक़ दो इससे पहले कि उनको हाथ लगाओ और तुम उनके लिए कुछ मह्र भी निर्धारित कर चुके थे तो जितना महर तुमने निर्धारित किया हो, उसका आधा मह्र अदा कर दो। सिवाय यह कि वह माफ़ कर दें या वह मर्द माफ़ कर दे जिसके हाथ में निकाह की गाँठ है। और तुम्हारा माफ़ कर देना परहेज़गारी से अधिक निकट हैं। और आपस में उपकार करना न भूलो। जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है।

(238) पाबन्दी करो नमाज़ों की और पाबन्दी करो बीच की नमाज़ की (239) और खड़े हो अल्लाह के सामने नर्म बने हुए। यदि तुमको सन्देह (डर) हो तो पैदल या सवारी पर नमाज़ पढ़ लो। फिर जब शान्ति की स्थिति आ जाये तो अल्लाह को उस ढंग से याद करो जो उसने तुमको सिखाया है, जिसको तुम नहीं जानते थे। (240) और तुममें से जो लोग मृत्यु पा जायें और पत्नियाँ छोड़ रहे हों, वह अपनी पत्नियों के सम्बन्ध में वसीयत कर दें कि एक वर्ष तक उनको घर में रखकर ख़र्च दिया जाये। फिर यदि वह स्वंय घर छोड़ दें तो जो कुछ वह अपने सम्बन्ध में रीति के अनुसार करें, उसका तुम पर कोई आरोप नहीं। अल्लाह शक्तिवान है, तत्वदर्शी है। (241) और तलाक़ दी हुई औरतों को भी रीति के अनुसार ख़र्च देना है, यह अनिवार्य है परहेज़गारों के लिए। (242) इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपने आदेश का स्पष्ट वर्णन करता है, ताकि तुम समझो।

(243) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने घरों से मौत के डर से भाग खड़े हुए, और वह हज़ारों की संख्या में थे। तो अल्लाह ने उनसे कहा कि मर जाओ। फिर अल्लाह ने उनको जीवित किया। निस्सन्देह, अल्लाह लोगों पर दया करने वाला है। परन्तु अधिकतर लोग आभार व्यक्त नहीं करते। (244) और अल्लाह के मार्ग में लड़ो और जान लो कि अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (245) कौन है जो अल्लाह को क़र्ज-ए हसन (बेहतरीन ऋण) दे कि अल्लाह उसको बढ़ा कर उसके लिए कई गुना कर दे। अल्लाह ही तंगी भी पैदा करता है और सम्पन्नता भी। और तुम सब उसी की ओर लौटाये जाओगे।

(246) क्या तुमने मूसा के बाद इस्राईल की सन्तान के सरदारों को नहीं देखा, जबकि उन्होंने अपने पैग़म्बर से कहा कि हमारे लिए एक राजा नियुक्त कर दीजिए, ताकि हम अल्लाह के मार्ग में लड़ें। पैग़म्बर ने उत्तर दिया : ऐसा न हो कि तुमको युद्ध का आदेश दिया जाये तब तुम न लड़ो। उन्होंने कहा यह कैसे हो सकता है कि हम न लड़ें अल्लाह के मार्ग में, हालाँकि हमको अपने घरों से निकाला गया है और हमको अपने बच्चों से अलग किया गया है। फिर जब उनको युद्ध का आदेश हुआ तो थोड़े लोगों के सिवा सब उससे फिर गये। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है। (247) और उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा : अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए राजा नियुक्त किया है। उन्होंने कहा कि उसको हमारे ऊपर राज कैसे मिल सकता है, हालाँकि उसकी तुलना में, हम राज करने के अधिक हक़दार हैं, और उसको अधिक दौलत भी प्राप्त नहीं। पैग़म्बर ने कहाः अल्लाह ने तुम्हारी तुलना में तालूत को चुना है और ज्ञान और शारीरिक बल में उसको प्रधानता दी है। और अल्लाह अपनी सत्ता जिसको चाहता है देता है। अल्लाह बहुत व्यापकता रखने वाला, जानने वाला है। (248) और उनके पैग़म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के राजा होने कि पहचान यह है कि तुम्हारे पास वह सन्दूक़ आ जायेगा जिसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे लिए सान्त्वना है और उसमें मूसा और हारुन के अनुयायियों की छोड़ी हुई स्मृतियाँ हैं। इस सन्दूक़ को फ़रिश्ते उठाये हुए होंगे। उसमें तुम्हारे लिए बड़ी निशानी है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो।

(249) फिर जब तालूत सेनाओं को लेकर चला तो उसने कहा : अल्लाह एक नदी के माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेने वाला है। अतः जिसने उसका पानी पिया, वह मेरा साथी नहीं और जिसने उसको न चखा, वह मेरा साथी है। परन्तु यह कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले। तो उन्होंने उसमें से भरपूर पानी पिया सिवाय थोड़े लोगों के। फिर जब तालूत और जो उसके साथ ईमान पर जमे रहे थे, नदी पार कर चुके तो वह लोग बोले कि आज हमको जालूत और उसकी सेनाओं से लड़ने की शक्ति नहीं। जो लोग यह जानते थे कि वह अल्लाह से मिलने वाले हैं, उन्होंने कहा कि कितने ही छोटे समूह अल्लाह के आदेश से बड़े समूह पर वर्चस्व प्राप्त कर चुके हैं। और अल्लाह जमे रहने वालों के साथ है। (250) और जब जालूत और उसकी सेनाओं से उनका सामना हुआ तो उन्होंने कहा : ऐ हमारे पालनहार, हमारे ऊपर धैर्य उंडेल दे और हमारे क़दमों को जमा दे और इन अवज्ञाकारियों के विरुद्ध हमारी सहायता कर। (251) फिर उन्होंने अल्लाह के आदेश से उनको पराजित किया। और दाऊद ने जालूत का वध कर दिया। और अल्लाह ने दाऊद को राज और विवेक प्रदान किया और जिन चीज़ों का चाहा, ज्ञान प्रदान किया। और यदि अल्लाह कुछ लोगों को कुछ लोगों से न बचाता रहे तो पृथ्वी बिगाड़ से भर जाये। परन्तु अल्लाह संसार वालों पर बहुत कृपा करने वाला है।

(252) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको सुनाते हैं ठीक-ठीक। और निस्सन्देह तू पैग़म्बरों में से है। (253) उन पैग़म्बरों में से हमने कुछ को कुछ पर प्रधानता दी। उनमें से कुछ से अल्लाह ने बात की। और कुछ के दर्जे ऊँचे किए। और हमने मरियम के बेटे ईसा को खुली निशानियाँ प्रदान कीं और हमने उसकी सहायता की रूहुल क़ुदुस (पवित्र आत्मा) के द्वारा। अल्लाह यदि चाहता तो उनके बाद वाले स्पष्ट आदेश आ जाने के बाद न लड़ते। परन्तु उन्होंने मतभेद किया। फिर उनमें से कोई ईमान लाया और किसी ने झुठलाया। और यदि अल्लाह चाहता तो वह न लड़ते। परन्तु अल्लाह करता है जो वह चाहता है।

(254) ऐ ईमान वालों, ख़र्च करो उन चीज़ों से जो हमने तुमको दी हैं और उस दिन के आने से पहले जिसमें न लेन-देन है और न मित्रता है और न

सिफ़ारिश। और जो अवज्ञाकारी हैं, वही हैं अत्याचार करने वाले। (255) अल्लाह उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह जीवित है, संपूर्ण जगत का संभालने वाला है, उसको न ऊँघ आती है न निद्रा। उसी का है जो कुछ आकाशों में और पृथ्वी में है। कौन है जो उसके पास उसकी अनुमति के बिना सिफ़ारिश कर सके। वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और वह अल्लाह के ज्ञान में से किसी चीज़ को घेरे (परिधि) में नहीं ले सकते, परन्तु जो वह चाहे। उसकी सत्ता आकाशों और पृथ्वी पर छायी हुई है। वह थकता नहीं उनके थामने से। और वही है उच्च प्रतिष्ठा का मालिक, महान। (256) दीन (धर्म) के सम्बन्ध में कोई ज़बरदस्ती नहीं। सन्मार्ग, पथभ्रष्टता से अलग हो चुका है। अतः जो व्यक्ति, शैतान को झुठलाये और ईमान लाये, उसने ऐसा ठोस सहारा पकड़ लिया जो टूटने वाला नहीं। और अल्लाह सुनने वाला जानने वाला है। (257) अल्लाह संरक्षक है ईमान वालों का, वह उनको अँधेरों से निकाल कर उजाले की ओर लाता है, और जिन लोगों ने झुठलाया, उनके मित्र शैतान हैं, वह उनको उजाले से निकालकर अँधेरों की ओर ले जाते हैं। यह आग में जाने वाले लोग हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे।

(258) क्या तुमने उसको नहीं देखा जिसने इब्राहीम से उसके पालनहार के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क किया, क्योंकि अल्लाह ने उसको सत्ता प्रदान की थी। जब इब्राहीम ने कहा कि मेरा पालनहार वह है जो जीवित करता है और मृत्यु देता है। वह बोला कि मैं भी जीवन देता हूँ और मृत्यु देता हूँ। इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह सूरज को पूरब से निकालता है, तुम उसको पश्चिम से निकाल दो। तब वह अवज्ञाकारी स्तब्ध (हक्का-बक्का) रह गया। और अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(259) अथवा जैसे वह व्यक्ति जो एक बस्ती से गुज़रा। और वह बस्ती अपनी छतों पर गिरी हुई थी। उसने कहा : इसके मर जाने के बाद अल्लाह इस बस्ती को पुनः किस प्रकार जीवित करेगा। फिर अल्लाह ने उस पर सौ वर्ष के लिए मृत्यु दे दी। फिर उसको पुनः जीवित किया। अल्लाह ने पूछा तुम कितनी देर इस स्थिति में रहे। उसने कहाः एक दिन अथवा एक दिन से कुछ कम। अल्लाह ने कहा नहीं बल्कि तुम सौ वर्ष इस स्थिति में रहे हो। अब

तुम अपने खाने-पीने की वस्तुओं को देखो कि वह सड़ी नहीं हैं और अपने गधे को देखो। और ताकि हम तुमको लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों की ओर देखो, किस तरह हम उनका ढ़ाँचा खड़ा करते हैं, फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं। अतः जब उस पर स्पष्ट हो गया तो उसने कहा मैं जानता हूँ कि निस्सन्देह, अल्लाह हर बात की क्षमता रखता है। (260) और जब इब्राहीम ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मुझको दिखा दे कि तू मुर्दों को किस प्रकार जीवित करेगा। अल्लाह ने कहा, क्या तुमको विश्वास नहीं। इब्राहीम ने कहा क्यों नहीं, परन्तु इसलिए कि मेरे दिल को सन्तुष्टि मिल जाये। फ़रमायाः चार पक्षी लो और उनको अपने आप से हिला लो। फिर उनमें से हर एक को अलग-अलग पहाड़ी पर रख दो, फिर उनको पुकारो। वह तुम्हारे पास दौड़ते हुए चले आयेंगे। और जान लो कि अल्लाह प्रभुत्वशाली और तत्वज्ञ है।

(261) जो लोग अपनी सम्पत्ति अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनका उदाहरण ऐसा है जैसे एक दाना हो जिससे सात बालियाँ पैदा हों, हर बाली में सौ दाने हों। और अल्लाह बढ़ाता है जिसके लिए चाहता है। और अल्लाह बड़ा समाईवाला, जानने वाला है। (262) जो लोग अपनी पूँजी अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, फिर वह ख़र्च करने के बाद न तो एहसान जताते हैं और न कष्ट पहुँचाते हैं, उनके लिए उनके पालनहार के पास बदला है। और उनके लिए न कोई भय है और न वह दुखी होंगे। (263) उचित बात कह देना और क्षमा कर देना उस दान से अधिक अच्छा है जिसके पीछे कष्ट देना हो। और अल्लाह निस्पृह है सहनशील है। (264) ऐ ईमान वालों, एहसान जता कर और कष्ट पहुँचा कर अपने दान को नष्ट न करो, जिस तरह वह व्यक्ति जो अपनी पूँजी दिखावे के लिए ख़र्च करता है और वह अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास नहीं रखता। अतः उसका उदाहरण ऐसा है जैसे एक चट्टान हो जिस पर कुछ मिट्टी हो, फिर उस पर मूसलाधार वर्षा हो और वह उसको पूर्णतः साफ़ कर दे। ऐसे लोगों को अपनी कमाई कुछ भी हाथ न लगेगी। और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(265) परन्तु जो लोग अपनी पूँजी को अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए और अपने आप में स्थिरता लाने के लिए पूरे मन से अल्लाह

के मार्ग में ख़र्च करते हैं उनका उदाहरण एक बाग़ के समान है जो ऊँचाई पर हो। उस पर मूसलाधार वर्षा हुई तो वह दुगुना फल लाया। और यदि अधिक वर्षा न हो तो हल्की फुहार भी पर्याप्त है। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसको देख रहा है। (266) क्या तुममें से कोई यह पसन्द करता है कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, उसके नीचे नहरें बह रही हों। उसमें उसके लिए हर प्रकार के फल हों। और वह बूढ़ा हो जाये और उसके बच्चे अभी कमज़ोर हों। तब उस बाग़ पर एक चक्रवात आये जिसमें आग हो। फिर वह बाग़ जल जाये। अल्लाह इस तरह तुम्हारे लिए खोल कर निशानियाँ बयान करता है, ताकि तुम चिंतन करो।

(267) ऐ ईमान वालों, ख़र्च करो सबसे अच्छी चीज़ को, अपनी कमाई में से और उसमें से जो हमने तुम्हारे लिए भूमि में से पैदा किया है। और बेकार चीज़ का इरादा न करो कि उसमें से ख़र्च करो। हालाँकि तुम स्वंय भी इसको लेने वाले नहीं सिवाय इसके कि अनदेखी कर जाओ। और जान लो कि अल्लाह निस्पृह है, खूबियों वाला है। (268) शैतान तुमको निर्धनता से डराता है और अश्लीलता का आदेश देता है और अल्लाह वादा करता है अपनी कृपा का और क्षमा का और अल्लाह व्यापकता वाला है और जानने वाला है। (269) अल्लाह जिसको चाहता है हिक्मत (विवेक) दे देता है और जिसको हिक्मत मिली, उसको बड़ी दौलत मिल गयी। और मार्गदर्शन वही प्राप्त करते हैं जो बुद्धि वाले हैं।

(270) और तुम जो ख़र्च करते हो और जो मन्नत मानते हो, उसको अल्लाह जानता है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं। (271) यदि तुम अपने दान प्रकट रूप में दो तब भी अच्छा है और यदि तुम उन्हें छिपाकर निर्धन लोगों को दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक उपयुक्त है। और अल्लाह तुम्हारे पापों को दूर कर देगा और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से भिज्ञ है। (272) उनको सन्मार्ग पर लाना तुम्हारा दायित्व नहीं, बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है सन्मार्ग प्रदान करता है। और जो धन तुम ख़र्च करोगे, अपने ही लिए ख़र्च करोगे। और तुम न ख़र्च करो परन्तु अल्लाह की प्रसन्नता के लिए। और तुम जो धन ख़र्च करोगे, वह तुमको पूरा कर दिया जायेगा और तुम्हारे

लिए उसमें कमी न की जायेगी। (273) प्रायः दान उन वंचितों के लिए है जो अल्लाह के मार्ग में घिर गये हों कि अपनी व्यक्तिगत जीविका के लिए पृथ्वी में दौड़ धूप नहीं कर सकते। अनभिज्ञ व्यक्ति उनको धनवान समझता है, उनके न माँगने के कारण। तुम उनको उनके रूप से पहचान सकते हो। वह लोगों से लिपट कर नहीं माँगते। और जो धन तुम ख़र्च करोगे, वह अल्लाह को ज्ञात है। (274) जो लोग अपनी पूँजी को रात और दिन, छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, उनके लिए उनके पालनहार के पास बदला है। और उनके लिए न भय है और न वह दुखी होंगे।

(275) जो लोग व्याज खाते हैं, वह क़ियामत में न उठेंगे परन्तु उस व्यक्ति की तरह जिसको शैतान ने स्पर्श करके बावला बना दिया हो। यह इसलिए कि उन्होंने कहा कि व्यापार करना भी वैसा ही है जैसा व्याज लेना। जबकि अल्लाह ने व्यापार को हलाल (वैध) ठहराया है और व्याज को हराम (अवैध) किया है, फिर जिस व्यक्ति के पास उसके पालनहार की ओर से नसीहत (चेतावनी) पहुँची और वह रुक गया तो जो कुछ वह ले चुका, वह उसके लिए है। और उसका मामला अल्लाह के हवाले है। और जो व्यक्ति फिर वही करे तो वही लोग नरक वाले हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे। (276) अल्लाह व्याज को घटाता है और दान को बढ़ाता है। और अल्लाह पसन्द नहीं करता कृतघ्नों को, पापियों को। (277) निस्सन्देह, जो लोग ईमान लाये और भले कर्म किए और नमाज़ की पाबन्दी की और ज़कात अदा की, उनके लिए उनका बदला है उनके पालनहार के पास। उनके लिए न कोई भय है और न वह दुखी होंगे।

(278) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो और जो व्याज बाक़ी रह गया है, उसको छोड़ दो, यदि तुम मोमिन (अल्लाह में आस्था रखने वाले) हो। (279) यदि तुम ऐसा नहीं करते तो सावधान हो जाओ अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) कि ओर से युद्ध की घोषणा है। और यदि तुम तौबा कर लो तो मूल धन के तुम अधिकारी हो, न तुम किसी पर अन्याय करो और न तुम पर अन्याय किया जाये। (280) और यदि एक व्यक्ति विपन्नता वाला है तो उसको सम्पन्नता आने तक समय दो। और यदि मॉफ़ कर दो तो यह तुम्हारे लिए अधिक बेहतर है, यदि तुम समझो। (281) और उस दिन से डरो जिस

दिन तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे। फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसका किया हुआ पूरा-पूरा बदला मिल जायेगा और उन पर अन्याय न होगा।

(282) ऐ ईमान वालों, यदि तुम किसी निर्धारित अवधि के लिए उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो। और उसको लिखे तुममें से कोई लिखने वाला न्याय के साथ। और लिखने वाला लिखने से मना न करे, जैसा अल्लाह ने उसको सिखाया, उसी तरह उसको चाहिए कि वह लिख दे। और वह व्यक्ति लिखवाये जिस पर दायित्व आता है। और वह डरे अल्लाह से जो उसका पालनहार है और वह उसमें कोई कमी न करे। और यदि वह व्यक्ति जिस पर दायित्व आता है, मूर्ख हो या दुर्बल हो या स्वंय लिखवाने की क्षमता न रखता हो तो चाहिए कि उसका अभिभावक न्याय के साथ लिखवा दे, और अपने मर्दों में से दो व्यक्तियों को गवाह बना लो। और यदि दो मर्द न हों तो फिर एक मर्द और दो औरतें, उन लोगों में से जिनको तुम पसन्द करते हो। ताकि यदि एक औरत भूल जाये तो दूसरी औरत उसको याद दिला दे। और गवाह मना न करें जब वह बुलाये जायें। और लेन-देन छोटा हो या बड़ा, अवधि निर्धारण के साथ उसको लिखने में आलस्य न करो। यह लिख लेना अल्लाह के निकट अधिक न्याय संगत है और गवाही को अधिक विश्वसनीय रखने वाला है और निकटतम अनुमान है कि तुम सन्देह में न पड़ो। लेकिन यदि कोई लेन-देन हाथ के हाथ हो जैसा कि तुम परस्पर किया करते हो तो तुम पर कोई आरोप नहीं कि तुम उसको न लिखो। परन्तु जब तुम सौदा करो तो गवाह बना लिया करो। और किसी लिखने वाले को या गवाह को कष्ट न पहुँचाया जाये। और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए बड़े पाप की बात होगी। और अल्लाह से डरो, अल्लाह तुमको सिखाता है और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (283) और यदि तुम यात्रा पर हो और कोई लिखने वाला न पाओ तो गिरवी रखने की चीज़ें गिरवी रखकर मामला किया जाये। और यदि एक व्यक्ति दूसरे पर विश्वास करता हो तो चाहिए कि जिस पर विश्वास किया गया हो, वह विश्वास को पूरा करे। और अल्लाह से डरे जो उसका पालानहार है और गवाही को न छिपाओ और जो व्यक्ति छिपायेगा उसका दिल अपराधी हो जायेगा। और जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उसको जानने वाला है।

(284) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है। तुम अपने दिल की बातों को प्रकट कर दो या छिपाओ, अल्लाह तुमसे उसका ब्योरा लेगा। फिर वह जिसको चाहेगा क्षमा करेगा और जिसको चाहेगा, दण्ड देगा और अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। (285) रसूल (सन्देष्टा) ईमान लाया है उस पर जो उसके पालनहार की ओर से उस पर उतरा है। और मुसलमान भी उस पर ईमान लाये हैं। सब ईमान लाये हैं अल्लाह पर और उसके फ़रिश्तों पर और उसकी किताबों पर और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर। हम उसके रसूलों में से किसी के बीच अन्तर नहीं करते और वह कहते हैं कि हमने सुना और माना। हम तुझसे क्षमा चाहते हैं ऐ हमारे पालनहार। और तेरी ही ओर हमें लौटना है। (286) अल्लाह किसी पर दायित्व का भार नहीं डालता परन्तु उसकी सहन-शक्ति के अनुसार। उसको मिलेगा वही जो उसने कमाया और उस पर पड़ेगा वही जो उसने किया। ऐ हमारे पालनहार हमको न पकड़ यदि हम भूलें या हम ग़लती कर जायें। ऐ हमारे पालनहार हम पर बोझ न ड़ाल जैसा तूने बोझ ड़ाला था हमसे अगलों पर। ऐ हमारे पालनहार हमसे वह न उठवा जिसका सामर्थ्य हममें न हो। और हमें क्षमा कर दे और हम पर दया कर। तू हमारा काम बनाने वाला है। अतः अवज्ञाकारियों के मुक़ाबले में हमारी सहायता कर।

3. सूरह आल इमरान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. (2) अल्लाह, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, वह जिवंत नित्य सत्ता सारे विश्व का थामने वाला। (3) उसने तुम पर किताब उतारी सच्चाई के साथ, पुष्टि करने वाली उन किताबों की जो इस से पूर्व आ चुकी हैं, और उसने तौरात (Torah) और इन्जील उतारी, (4) इससे पहले लोगों के मार्गदर्शन के लिए, और अल्लाह ने फुरक़ान (कसौटी) उतारा। निस्सन्देह जिन लोगों ने अल्लाह की निशानियों को झुठलाया, उनके लिए कठोर यातना है और अल्लाह शक्तिशाली है, बदला लेने वाला है।

(5) निस्सन्देह अल्लाह से कोई चीज़ छिपी हुई नहीं न पृथ्वी में और न आकाश में। (6) वही तुम्हारे रूप बनाता है माँ के पेट में जिस तरह चाहता है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं वह शक्तिवान है, विवेकशील है।

(7) वही अल्लाह है जिसने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी। उसमें कुछ आयतें मुहकम (स्पष्ट) हैं, वह किताब का मूल हैं। और दूसरी आयतें (वाक्य) मुतशाबेह (सदृश) हैं। अतः जिनके दिलों में टेढ़ है, वह मुतशाबेह आयतों के पीछे पड़ जाते हैं उपद्रव की तलाश में, और उसके अर्थ की तलाश में। जबकि इनका अर्थ अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। और जो लोग ठोस ज्ञान वाले हैं, वह कहते हैं कि हम उन पर ईमान लाये। सब हमारे पालनहार की ओर से हैं। और नसीहत वही लोग स्वीकार करते हैं जो बुद्धि वाले हैं। (8) ऐ हमारे पालनहार, हमारे दिलों को न फेर जबकि तू हमको सन्मार्ग दे चुका है। और हमको अपने पास से दया प्रदान कर। निस्सन्देह तू ही सब कुछ प्रदान करने वाला है। (9) ऐ हमारे पालनहार, तू एकत्र करने वाला है लोगों को एक दिन जिसके आने में कोई सन्देह नहीं। निस्सन्देह अल्लाह वादे के विरुद्ध नहीं करता।

(10) निस्सन्देह जिन लोगों ने इनकार की नीति अपनाई है, उनकी पूँजी और उनकी सन्तान अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आयेगी। और यही लोग आग के ईधन होंगे। (11) उनका परिणाम वैसा ही होगा जैसा फ़िरऔन वालों का, और उनसे पहले वालों का हुआ। उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। इस पर अल्लाह ने उनके पापों के कारण उनको पकड़ लिया। और अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (12) अवज्ञा करने वालों से कह दो कि अब तुम पराजित किये जाओगे और नरक की ओर एकत्र करके ले जाये जाओगे और नरक बहुत बुरा ठिकाना है। (13) निस्सन्देह तुम्हारे लिए शिक्षा है (निशानी है) उन दो समूहों में जिनमें (बद्र के मैदान में) मुठभेड़ हुई। एक समूह अल्लाह के रास्ते में युद्ध कर रहा था और दूसरा अवज्ञाकारी था। ये अवज्ञाकारी खुली आँखों से उनको दो गुना देखते थे। और अल्लाह जिसको चाहता है अपनी सहायता से शक्ति दे देता है। इसमें आँख वालों के लिए बड़ी शिक्षा है।

(14) लोगों के (हृदय के) लिए आकर्षक बना दी गईं हैं अभिलाषाओं से

प्रेम---औरतें, बेटे, सोने-चाँदी के ढेर, चिन्हित किये हुए घोड़े, मवेशी और खेती। ये सांसारिक जीवन के सामान हैं। और अल्लाह के पास अच्छा ठिकाना है। (15) कहो, क्या मैं तुमको बताऊँ इससे बेहतर चीज़। उन लोगों के लिए जो धर्मपरायणता अपनाते हैं, उनके पालनहार के पास बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें सदैव रहेंगे। और सुथरी पत्नियाँ होंगी और अल्लाह की प्रसन्नता होगी। और अल्लाह की निगाह (निरिक्षण) में हैं उसके बन्दे (16) जो कहते हैं ऐ हमारे पालनहार, हम ईमान ले आये। अतः तू हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमको आग की यातना से बचा। (17) वह धैर्य रखने वाले हैं और सच्चे हैं, आज्ञाकारी हैं, और दानशील हैं और रात के पिछले पहर माफ़ी (क्षमा) की प्रार्थना करने वाले हैं।

(18) अल्लाह स्वंय साक्षी है और फ़रिश्ते और ज्ञान रखने वाले, कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। और वह स्थापित करने वाला है न्याय का। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह शक्तिवान है, बुद्धि/विवेक वाला है। (19) दीन (धर्म) अल्लाह के निकट मात्र इस्लाम है। और जिन लोगों को किताब दी गयी उन्होंने इसमें जो मतभेद किया वह परस्पर हठ के कारण किया, इसके बाद कि उनको सच्चा ज्ञान पहुँच चुका था। और जो अल्लाह की आयतों को झुठलाये तो अल्लाह निश्चय ही शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (20) फिर यदि वह तुमसे इस सम्बन्ध में झगड़ें तो उनसे कह दो कि मैं अपना चेहरा अल्लाह की ओर कर चुका और जो मेरे अनुयायी हैं वह भी। और जो किताब वालों से और जो किताब वाले नहीं हैं उनसे पूछो क्या तुम भी उसी तरह इस्लाम लाते हो। यदि वह इस्लाम स्वीकार करें तो उन्होंने सन्मार्ग प्राप्त कर लिया। और यदि वह उल्टे फिर जायें तो तुम्हारे ऊपर (दायित्व) मात्र पहुँचा देना है। और अल्लाह की निगाह में हैं उसके बन्दे। (21) जो लोग अल्लाह की निशानियों को झुठलाते हैं और पैग़म्बरों का अनाधिकृत रूप से वध करते हैं और उन लोगों की हत्या करते हैं जो लोगों में से न्याय का आवाहन लेकर उठते हैं, उनको एक कष्टदायक दण्ड की सूचना दे दो। (22) यही वह लोग हैं जिनके कर्म संसार और परलोक में नष्ट हो गये और उनका सहायक कोई नहीं।

(23) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा, जिनको अल्लाह की किताब का एक अंश दिया गया था। उनको अल्लाह की किताब की ओर बुलाया जा रहा है ताकि वह उनके बीच निर्णय करे। फिर उनका एक समूह मुँह फेर लेता है कन्नी काटते हुए। (24) यह इस कारण से कि वह लोग कहते हैं कि हमको कदापि आग स्पर्श न करेगी अतिरिक्त गिनती के कुछ दिन। और उनकी बनाई हुइ बातों ने उनको उनके दीन (धर्म) के सम्बन्ध में धोखे में डाल दिया है। (25) फिर उस समय क्या होगा जब हम उनको एकत्र करेंगे एक दिन, जिसके आने में कोई सन्देह नहीं और प्रत्येक व्यक्ति को जो कुछ उसने किया है, उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा और उन पर अत्याचार न किया जायेगा। (26) तुम कहो, ऐ अल्लाह, साम्राज्य के स्वामी, तू जिसको चाहे सत्ता प्रदान करे, जिससे चाहे सत्ता छीन ले। और तू जिसको चाहे सम्मान प्रदान करे और जिसको चाहे अपमानित करे। तेरे हाथ में है सम्पूर्ण भलाई। निस्सन्देह तू हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (27) तू रात को दिन में प्रवेश करता है और दिन को रात में प्रवेश करता है। और तू पराणहीन से पराणवान को निकालता है और तू पराणवान से पराणहीन को निकालता है। और तू जिसको चाहता है बेहिसाब जीविका देता है।

(28) ईमान वालों को चाहिए कि ईमान वालों को छोड़कर अवज्ञाकारियों को मित्र न बनायें। और जो व्यक्ति ऐसा करेगा तो अल्लाह से उसका कोई सम्बन्ध नहीं। परन्तु ऐसी स्थिति में कि तुम उनसे बचाव करना चाहो। और अल्लाह तुमको डराता है अपने आप से। और अल्लाह की ही ओर लौटना है। (29) कह दो कि जो कुछ तुम्हारे सीनों में है उसको छिपाओ या प्रकट करो, अल्लाह उसको जानता है। और वह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो पृथ्वी में है। और अल्लाह का प्रभुत्व हर चीज़ पर है। (30) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई नेकी को अपने समक्ष मौजूद पायेगा, और जो बुराई की होगी उसको भी। उस दिन प्रत्येक व्यक्ति यह चाहेगा कि काश अभी यह दिन उससे बहुत दूर होता। और अल्लाह तुमको डराता है अपने आप से। और अल्लाह अपने बन्दों पर अत्यन्त दयावान है। (31) कहो यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो अल्लाह तुमसे प्रेम करेगा। और तुम्हारे

पापों को क्षमा कर देगा। अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला, अत्यन्त दयावान है। (32) कहो कि अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल (सन्देष्टा) का। फिर यदि वह मुँह मोड़ें तो अल्लाह अवज्ञाकारियों को मित्र नहीं बनाता।

(33) निस्सन्देह अल्लाह ने आदम को और नूह को और इब्राहीम के अनुयायियों को और इमरान के अनुयायियों को सम्पूर्ण संसार में चुन लिया है। (34) यह एक-दूसरे की सन्तान हैं। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (35) जब इमरान की पत्नी ने कहा ऐ मेरे पालनहार मैंने भेंट किया तेरे लिए, जो मेरे पेट में है वह स्वतन्त्रा रखा जायेगा। अतः तू मुझसे स्वीकार कर निस्सन्देह तू सुनने वाला जानने वाला है। (36) फिर जब उसने जन्म दिया तो उसने कहा ऐ मेरे पालनहार मैंने तो बेटी को जन्म दिया है और अल्लाह भली-भाँति जानता है कि उसने क्या जन्म दिया है, और लड़का लड़की की तरह नहीं होता। और मैंने इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको और इसकी सन्तान को फटकारे हुए शैतान से तेरी शरण में देती हूँ। (37) अतः उसके पालनहार ने उसको भली-भाँति स्वीकार किया और उसका अच्छी तरह पालन-पोषण किया। और ज़करिया को उसका अभिभावक बनाया। जब कभी ज़करिया उनके पास कमरे में आता तो वह वहाँ जीविका पाता। उसने पूछा ऐ मरियम, ये चीज़ तुम्हें कहाँ से मिलती है। मरियम ने कहा यह अल्लाह के पास से है, निस्सन्देह अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब जीविका देता है। (38) उस समय ज़करिया ने अपने पालनहार को पुकारा। उसने कहा ऐ मेरे पालनहार, मुझको अपने पास से पवित्र सन्तान प्रदान कर निस्सन्देह तू दुआ का सुनने वाला है। (39) फिर फ़रिश्तों ने उसको पुकारा जबकि वह कमरे में खड़ा हुआ नमाज़ पढ़ रहा था कि अल्लाह तुझको यहया की शुभ सूचना देता है जो अल्लाह के वाक्यों (वाणी) की पुष्टि करने वाला होगा और सरदार होगा और अपनी अन्तरात्मा (नफ़्स) को रोकने वाला (अत्यंत संयमी) होगा। और पैग़म्बर होगा और भले लोगों में से होगा। (40) ज़करिया ने कहा ऐ मेरे पालनहार मेरे लड़का किस तरह होगा हालाँकि मैं बूढ़ा हो चुका हूं और मेरी पत्नी बाँझ है। फ़रमाया इसी तरह अल्लाह करता है जो वह चाहता है। (41) ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे पालहार, मेरे लिए कोई निशानी निर्धारित कर

दे। कहा तुम्हारे लिए निशानी यह है कि तुम तीन दिन तक लोगों से बात न कर सकोगे परन्तु संकेत के माध्यम से, और अपने पालनहार को अधिकता से स्मरण करते रहो और शाम और सुबह उसकी स्तुति करो। (42) और जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम, अल्लाह ने तुमको चुना और तुमको पवित्र किया और तुमको पूरे संसार की महिलाओं की तुलना में चुन लिया है। (43) ऐ मरियम, अपने पालनहार का आज्ञापालन करो और सजदा (दण्डवत) करो और झुकने वालों के साथ झुको। (44) यह ग़ैब (परोक्ष) की सूचनाएँ हैं जो हम तुमको श्रुति के माध्यम से दे रहे हैं और तुम उनके पास मौजूद न थे जब वह अपने क़लम (पर्ची डालना) फेंक रहे थे कि कौन मरियम का पालन-पोषण करे और न तुम उस समय उनके पास मौजूद थे जब वह आपस में झगड़ रहे थे।

(45) जब फ़रिश्तों ने कहा ऐ मरियम, अल्लाह तुमको शुभ सूचना देता है अपनी ओर से एक कलिमा (वाक्य) की। उसका नाम 'मरियम का बेटा मसीह' होगा। वह संसार और परलोक में उच्च स्थान वाला होगा और अल्लाह के निकटवर्ती बन्दों में होगा। (46) वह लोगों से बातें करेगा जब माँ कि गोद में होगा और जब पूरी आयु का होगा। और वह नेक लोगों में से होगा। (47) मरियम ने कहा ऐ मेरे पालनहार, मेरे किस तरह लड़का होगा जबकि किसी मर्द ने मुझको हाथ नहीं लगाया। फ़रमाया इसी तरह अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह किसी काम का निर्णय लेता है तो उसको कहता कि हो जा और वह हो जाता है। (48) और अल्लाह उसको किताब और तत्वदर्शिता और विवेक और तौरात और इन्ज़ील सिखाएगा (49) और वह रसूल (सन्देष्टा) नियुक्त होगा इस्राईल की सन्तान की ओर, कि मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की निशानी लेकर आया हूँ। मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी जैसी आकृति बनाता हूँ, फिर उसमें फूँक मारता हूँ तो वह अल्लाह के आदेश से वास्तविक पक्षी बन जाती है। और मैं अल्लाह के आदेश से जन्मजात अन्धे और कोढ़ी को अच्छा करता हूँ। और मैं अल्लाह के आदेश से मृत को जीवित करता हूँ। और मैं तुमको बताता हूँ कि तुम क्या खाते हो और अपने घरों में क्या भण्डार करते हो। निस्सन्देह इसमें तुम्हारे लिए निशानी है यदि तुम विश्वास रखते हो। (50) और मैं पुष्टि करने वाला हूँ तौरात की जो मुझसे पहले की है और मैं इसलिए आया हूँ कि कुछ उन वस्तुओं को तुम्हारे लिए हलाल

(वैध) ठहराऊँ जो तुम पर हराम (अवैध) कर दी गई हैं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से निशानी लेकर आया हूँ अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा आज्ञापालन करो। (51) निस्सन्देह अल्लाह मेरा पालनहार है और तुम्हारा भी। अतः उसकी इबादत (उपासना/आज्ञापालन) करो, यही सीधा रास्ता है।

(52) फिर जब ईसा ने उनका झुठलाना देखा तो कहा कि कौन मेरा सहायक बनता है अल्लाह के मार्ग में। हवारियों (साथियों/सहयोगियों) ने कहा कि हम हैं अल्लाह के सहायक। हम ईमान लाये हैं अल्लाह पर और आप गवाह रहिये कि हम आज्ञाकारी हैं। (53) ऐ हमारे पालनहार, हम ईमान लाये उस पर जो तूने अवतरित किया, और हमने रसूल (सन्देष्टा) का आज्ञापालन किया। अतः तू लिख ले हमको गवाही देने वालों में। (54) और उन्होंने गुप्त योजना बनाई और अल्लाह ने भी गुप्त योजना बनाई। और अल्लाह सबसे अच्छी योजना बनाने वाला है। (55) जब अल्लाह ने कहा कि ऐ ईसा, मैं तुमको वापस लेने वाला हूँ और तुमको अपनी ओर उठा लेने वाला हूँ और जिन लोगों ने तुमको झुठलाया है इनसे तुम्हें पवित्र करने वाला हूँ और जो तुम्हारे अनुयायी हैं उनको क़ियामत तक उन लोगों पर जिन्होंने तुम्हारी अवज्ञा की वर्चस्व देने वाला हूँ। फिर मेरी ओर होगी सबकी वापसी। अतः मैं तुम्हारे बीच उन बातों के सम्बन्ध में निर्णय करूँगा जिनमें तुम्हारे बीच मतभेद हुआ था (56) फिर जो लोग (सत्य का) इनकार करने वाले बने उनको कठोर यातना दूँगा संसार में और परलोक में और उनका कोई सहायक न होगा। (57) और जो लोग ईमान लाये और भले कर्म किये उनको अल्लाह पूरा-पूरा बदला देगा और अल्लाह अत्याचारियों को मित्र नहीं रखता। (58) यह तत्वज्ञान और विवेक से परिपूर्ण स्मृतियां हैं जो हम तुमको सुनाते हैं अपनी आयतें के माध्यम से।

(59) निस्सन्देह, ईसा की मिसाल (उदाहरण) अल्लाह के निकट आदम जैसी है। अल्लाह ने उसको मिट्टी से बनाया। फिर उसको कहा कि हो जा तो वह हो गया। (60) सच बात है तेरे पालनहार की ओर से। अतः तुम न हो जाना सन्देह करने वालों में। (61) फिर जो तुमसे इस सम्बन्ध में तर्क-वितर्क करे इसके बाद कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है तो उनसे कहो कि आओ हम बुलायें अपने

बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी औरतों को और तुम्हारी औरतों को। और हम और तुम स्वंय भी एकत्र हों, फिर हम मिल कर दुआ करें कि जो झूठा हो उस पर अल्लाह की फटकार हो। (62) निस्सन्देह यह सच्चा विवरण हैं। और अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और अल्लाह ही प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है। (63) फिर यदि वह स्वीकार न करें तो अल्लाह बिगाड़ करने वालों से परिचित है।

(64) कहो ऐ किताब वालों (अर्थात यहूदी और ईसाई), आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच पक्की है कि हम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करें और अल्लाह के साथ किसी को साझी न ठहरायें। और हममे से कोई किसी दूसरे को अल्लाह के अतिरिक्त पालनहार न बनाये। फिर यदि वह इससे बचना चाहें तो कह दो कि तुम गवाह रहो, हम आज्ञाकारी हैं। (65) ऐ किताब वालों तुम, इब्राहीम के सम्बन्ध में क्यों झगड़ते हो। जबकि तौरात और इन्जील तो उसके बाद अवतरित हुई हैं। क्या तुम इसको नहीं समझते। (66) तुम वह लोग हो कि तुमने उस बात के सम्बन्ध में वाद-विवाद किया जिसका तुम्हें कुछ ज्ञान था। अब तुम ऐसी बात के संबंध में वाद-विवाद कर रहे हो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं। और अल्लाह जानता है, तुम नहीं जानते। (67) इब्राहीम न यहूदी था और न ईसाई, बल्कि वह एकाग्रचित्र मुस्लिम (आज्ञाकारी) था और वह शिर्क (साझी ठहराने वाला) करने वालों में से न था। (68) लोगों में इब्राहीम से अधिक समानता उनको है जिन्होंने उसका आज्ञापालन किया और यह पैग़म्बर और जो इस पैग़म्बर पर ईमान लाये। और अल्लाह ईमान वालों का मित्र है। (69) किताब वालों में से एक समूह चाहता है कि वह किसी तरह तुमको भटका दे। जबकि वह नहीं भटकाते स्वंय अपने अतिरिक्त किसी को। परन्तु उन्हें इसका आभास नहीं। (70) ऐ किताब वालों, तुम अल्लाह की निशानियों को क्यों झुठलाते हो हालाँकि तुम गवाह हो। (71) ऐ किताब वालों, तुम सच में झूठ को क्यों मिलाते हो और सच्चाई को छिपाते हो। हालाँकि तुम जानते हो।

(72) और किताब वालों के एक समूह ने कहा कि ईमान वालों (आस्थावानों) पर जो चीज़ अवतरित की गई है उस पर सुबह को ईमान लाओ और शाम को

उसको झुठला दो, शायद कि ईमान वाले भी उससे फिर जायें। (73) और विश्वास न करो परन्तु मात्र उसका जो चले तुम्हारे दीन (धर्म) पर। कहो सन्मार्ग वही है जो मार्ग अल्लाह दिखाये। और यह सब कुछ इसलिए है कि और किसी को वही कुछ क्यों मिल गया जो तुमको दिया गया था। या वह वरीयता प्राप्त करने वाले क्यों हो गये तुम्हारे पालनहर के आगे। और कहो बड़ाई अल्लाह के हाथ में है। वह जिसको चाहता है देता है और अल्लाह बड़ा व्यापकता वाला है, ज्ञान वाला है (74) वह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए चुन लेता है। और अल्लाह बहुत कृपा करने वाला है (75) और किताब वालों में कोई ऐसा भी है कि यदि तुम उसके पास अमानत का ढेर रखो तो वह उसको तुम्हें अदा कर दे। और उनमें कोई ऐसा है कि यदि तुम उसके पास एक दीनार अमानत रख दो तो वह तुमको न लौटाये सिवाय इसके कि तुम उसके सिर पर खड़े हो जाओ, यह इस कारण से कि वह कहते हैं कि जो किताब वाले नहीं है उनके सम्बन्ध में हम पर कोई आरोप नहीं। और वह अल्लाह के ऊपर झूठ लगाते हैं हालाँकि वह जानते हैं। (76) बल्कि जो व्यक्ति अपने प्रण को पूरा करे और अल्लाह से डरे तो निस्सन्देह अल्लाह ऐसे डरने वालों को मित्र रखता है।

(77) जो लोग अल्लाह के वचन और अपनी सौगन्धों को थोड़े मूल्य पर बेचते हैं उनके लिए परलोक में कोई हिस्सा नहीं। अल्लाह न उनसे बात करेगा, न उनकी ओर देखेगा क़ियामत के दिन, और न उनको पवित्र करेगा। और उनके लिए कष्टप्रद यातना है। (78) और उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अपनी जिह्वा को किताब पढ़ते हुए (शब्दों का उच्चारण करने में) मरोड़ते हैं ताकि तुम उसको किताब में से समझो, हालाँकि वह किताब में से नहीं। और वह कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है, हालाँकि वह अल्लाह की ओर से नहीं। और वह जानबूझ कर अल्लाह पर झूठ लगाते हैं। (79) किसी मनुष्य का यह काम नहीं कि अल्लाह उसको किताब और बुद्धि-विवेक और पैग़म्बरी दे और वह लोगों से यह कहे कि तुम अल्लाह को छोड़ कर मेरे बन्दे (आज्ञाकारी) बन जाओ। बल्कि वह तो कहेगा कि तुम अल्लाह वाले बनो, क्योंकि तुम दूसरों को किताब की शिक्षा देते हो और स्वंय भी उसको पढ़ते हो। (80) और न ही वह तुम्हें यह आदेश देगा कि तुम फ़रिश्तों और पैग़म्बरों

को पालनहार बनाओ। क्या वह तुम्हें अवज्ञा का आदेश देगा, इसके बाद कि तुम आज्ञाकारी (मुस्लिम) हो गये हो।

(81) और जब अल्लाह ने पैग़म्बरों से वचन लिया कि जो कुछ मैंने तुमको किताब और हिक्मत (बुद्धि-विवेक) दी है, फिर तुम्हारे पास पैग़म्बर आये जो पुष्टि करे उन भविष्यवाणियों की जो तुम्हारे पास हैं तो तुम उस पर ईमान लाओगे और उसकी सहायता करोगे। अल्लाह ने कहा क्या इस्को मानते हो, और इस पर वचनबद्ध हो। उन्होंने कहा हम वचनबद्ध हैं। फ़रमाया अब गवाह रहो और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूँ। (82) अतः जो व्यक्ति फिर जाये तो ऐसे ही लोग कृतघ्न हैं। (83) क्या ये लोग अल्लाह के दीन (धर्म) के अतिरिक्त कोई और दीन (धर्म) चाहते हैं, हालाँकि उसी के आज्ञाकारी हैं जो कुछ आकाश और पृथ्वी में हैं, इच्छासे या अनिइच्छा से, और सब उसी की ओर लौटाये जायेंगे। (84) कहो, हम अल्लाह पर ईमान लाये और उस पर जो हमारे ऊपर उतारा गया और जो उतारा गया इब्राहीम पर, इस्माईल पर, इस्हाक़ पर और याक़ूब पर और याक़ूब की सन्तान पर। और जो दिया गया मूसा और ईसा और अन्य पैग़म्बरों को उनके पालनहार की ओर से। हम उनके बीच अन्तर नहीं करते। और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (85) और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य दीन (धर्म) को चाहेगा तो वह उससे कदापि स्वीकार न किया जायेगा और वह परलोक में अभागों में से होगा। (86) अल्लाह क्यों ऐसे लोगों को सन्मार्ग प्रदान करेगा जो ईमान लाने के बाद अवज्ञाकारी हो गये। जबकि वह गवाही दे चुके कि यह रसूल (सन्देष्टा) सच्चा है और उनके पास खुली निशानियाँ आ चुकी हैं। और अल्लाह अत्याचारियों का मार्गदर्शन नहीं करता। (87) ऐसे लोगों का दण्ड यह है कि उन पर अल्लाह की, उसके फ़रिश्तों की और समस्त मनुष्यों की फटकार होगी। (88) वह उसमें सदैव रहेंगे, न उनकी यातना हल्की की जायेगी और न उनको अवकाश दिया जायेगा। (89) हाँ जो लोग उसके बाद तौबा (क्षमा-याचना) कर लें और अपना सुधार कर लें तो निस्सन्देह अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला, दयावान है। (90) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाने के बाद अवज्ञाकारी हो गये फिर कुफ़्र (अवज्ञा) में बढ़ते रहे, उनकी तौबा (क्षमा-याचना) कदापि स्वीकार न की जायेगी

और यही लोग भटके हुए हैं। (91) निस्सन्देह जिन लोगों ने अवज्ञा की और अवज्ञा की स्थिति में मृत्यु पा गये, यदि वह पृथ्वी के बराबर भी सोना बदले में दे दें तो स्वीकार न किया जायेगा। उनके लिए कष्टप्रद यातना है और उनका कोई सहायक न होगा।

(92) तुम कदापि नेकी को नहीं पहुँच सकते जब तक तुम उन वस्तुओं में से न ख़र्च करो जिनको तुम प्रिय रखते हो। और जो वस्तु भी तुम ख़र्च करोगे उससे अल्लाह भली भांति परिचित है। (93) खाने की सारी चीज़ें (जो हज़रत मुहम्मद के पंथ में वैध हैं) इस्राईल की सन्तान के लिए हलाल (वैध) थीं अतिरिक्त उसके जो इस्राईल (याक़ूब) ने अपने ऊपर हराम (अवैध) कर लिया था, इससे पहले कि तौरात उतरे। कहो कि तौरात लाओ और उसको पढ़ो, यदि तुम सच्चे हो। (94) इसके बाद भी जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधें वही अत्याचारी हैं। (95) कहो, अल्लाह ने सच कहा। अब इब्राहीम के दीन (धर्म) का अनुसरण करो जो एकाग्रचित्र था और वह शिर्क (अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य को उपास्य बनाना) करने वाला न था। (96) निस्सन्देह पहला घर जो लोगों के लिए बनाया गया वह वही है जो मक्का में है, बरकत वाला और सम्पूर्ण विश्व के लिए मार्गदर्शन का केन्द्र। (97) इसमें खुली हुई निशानियाँ हैं, मक़ाम-ए इब्राहीम (इब्राहीम के खड़े होने का स्थान) है, जो उसमें प्रवेश हो जाये वह सुरक्षित हो गया। और लोगों पर अल्लाह का यह अधिकार है कि जो इस घर तक पहुँचने की क्षमता रखता हो वह इसका हज करे और जो कोई विमुख हुआ तो अल्लाह सम्पूर्ण संसार वालों से बेपरवाह है। (98) कहो, ऐ किताब वालों, तुम क्यों अल्लाह की निशानियों को झुठलाते हो। हालाँकि अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। (99) कहो, ऐ किताब वालों, तुम ईमान लाने वालों को अल्लाह के मार्ग से क्यों रोकते हो। तुम उसमें कमी ढूँढ़ते हो, हालाँकि तुम गवाह बनाये गये हो। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों से अनभिज्ञ नहीं।

(100) ऐ ईमान वालों, यदि तुम किताब वालों में से (ईसाई व यहूदी) एक समूह की बात मान लोगे तो वह तुमको ईमान के बाद फिर मुंकिर (अवज्ञाकारी) बना देंगे। (101) और तुम किस तरह अवज्ञा करोगे हालाँकि तुमको अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं और तुम्हारे बीच उसका रसूल

(सन्देष्टा) मौजूद है। और जो व्यक्ति अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ेगा तो वह पहुँच गया सीधे रास्ते पर। (102) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो जैसा कि उससे डरना चाहिए। और तुमको मृत्यु न आये परन्तु इस स्थिति में कि तुम मुस्लिम (आज्ञाकारी) हो। (103) और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को दृढ़ता से पकड़ लो और फूट न डालो। और अल्लाह का यह उपकार अपने ऊपर याद रखो कि तुम एक-दूसरे के शत्रु थे। फिर उसने तुम्हारे दिलों में प्रेम की भावना डाल दी। अतः तुम उसकी कृपा से भाई-भाई बन गये। और तुम आग के गढ़े के किनारे खड़े थे तो अल्लाह ने तुमको उससे बचा लिया। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी निशानियाँ बयान करता है ताकि तुम मार्ग पाओ।

(104) और तुम पर यह अनिवार्य है कि तुममें एक समूह हो, जो नेकी की ओर बुलाये, भलाई का आदेश दे और बुराई से रोके और ऐसे ही लोग सफल होंगे। (105) और उन लोगों की तरह न हो जाना जो सम्प्रदायों में बट गये और आपस में मतभेद कर लिया, इसके बाद कि उनके पास स्पष्ट आदेश आ चुके थे। और उनके लिए बड़ी यातना है। (106) जिस दिन कुछ चेहरे चमकदार होंगे और कुछ चेहरे काले होंगे, तो जिनके चेहरे काले होंगे उनसे कहा जायेगा, क्या तुम अपने ईमान के बाद अवज्ञाकारी हो गये, तो अब चखो यातना अपने कुफ्र (अवज्ञा) के कारण से। (107) और जिनके चेहरे चमकदार होंगे वह अल्लाह की दया में होंगे, वह उसमें सदैव रहेंगे। (108) यह अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको सच्चाई के साथ सुना रहे हैं और अल्लाह संसार वालों पर अत्याचार नहीं चाहता। (109) और जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब अल्लाह के लिए है और सारे मामले अल्लाह के ही समक्ष परस्तुत किये जायेंगे।

(110) अब तुम सर्वश्रेष्ठ (सर्वोत्तम गुणों वाले) समूह हो जिसको लोगों के लिए निकाला गया है। तुम भलाई का आदेश देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो, और यदि किताब वाले (यहूदी और ईसाई) भी ईमान लाते तो उनके लिए बेहतर होता। उनमें से कुछ ईमान वाले हैं और उनमें अधिकतर अवज्ञाकारी हैं। (111) वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते सिवाय कुछ कष्ट के। और यदि वह तुमसे युद्ध करेंगे तो तुमको पीठ दिखायेंगे। फिर

उनको सहायता भी न पहुँचेगी (112) और उन पर थोप दिया गया अपमान, चाहे वह कहीं भी पाये जायें, अतिरिक्त इसके कि अल्लाह की ओर से कोई अहद (वचन) हो या लोगों की ओर से कोई अहद (वचन) हो और वह अल्लाह के क्रोध के अधिकारी हो गये और उन पर थोप दी गई नीचता, यह इसलिए कि वह अल्लाह की निशानियों को झुठलाते रहे और उन्होंने पैग़म्बरों की अनाधिकृत रूप से हत्या की। यह इस कारण से हुआ कि उन्होंने अवज्ञा की और वह सीमा से आगे बढ़ जाते थे।

(113) सभी किताब वाले (यहूदी एवं ईसाई) समान नहीं। उनमें एक समूह अपने प्रण पर अटल है। वह रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वह सजदा करते हैं। (114) वह अल्लाह पर और परलोक के दिन पर ईमान रखते हैं और भलाई का आदेश देते हैं। और बुराई से रोकते हैं। और भलाई के कार्यों में दौड़ते हैं। यह नेक लोग हैं। (115) जो नेकी भी वह करेंगे उसकी अपेक्षा न की जायेगी और अल्लाह परहेज़गारों (संयमी) को भली-भाँति जानता है। (116) निस्सन्देह जिन लोगों ने झुठलाया तो अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी सम्पत्ति और सन्तान उनके कुछ काम न आयेंगे। और वह लोग नरक वाले हैं वह उसमें सदैव रहेंगे। (117) वह इस संसार के जीवन में जो कुछ ख़र्च करते हैं उसका उदाहरण उस हवा जैसा है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चले जिन्होंने अपने ऊपर अत्याचार किया है फिर वह उसको नष्ट कर दे। अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वह स्वंय अपने आप पर अत्याचार करते हैं।

(118) ऐ ईमान वालों, दूसरों को भेद जानने वाला न बनाओ, वह तुम्हें हानि पहुँचाने में कोई कमी नहीं करते। उनको प्रसन्नता होती है तुम जितना कष्ट पाओ। उनकी शत्रुता उनके मुँह से टपकी पड़ती हैं और जो उनके दिलों में है वह इससे भी अधिक कठोर है, हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ खोल कर प्रकट कर दी हैं यदि तुम बुद्धि रखते हो। (119) तुम उनसे प्रेम रखते हो परन्तु वह तुमसे प्रेम नहीं रखते। हालाँकि तुम सब आसमानी किताबों (तौरात और इन्जील) को मानते हो। और जब वह तुमसे मिलते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये और जब वह आपस में मिलते हैं तो तुम पर क्रोध से ऊगलियाँ

काटते हैं। कहो, तुम अपने क्रोध में मर जाओ। निस्सन्देह, अल्लाह दिलों की बात को जानता है। (120) यदि तुमको कोई अच्छी परिस्थिति सामने आती है तो उनको दुख होता है और यदि तुम पर कोई विपदा आती है तो वह उससे प्रसन्न होते हैं। यदि तुम धैर्य रखो और अल्लाह से डरो तो उनकी कोई चाल तुमको हानि न पहुँचा सकेगी। जो कुछ वह कर रहे हैं सब अल्लाह के बस में है।

(121) जब तुम प्रातःकाल अपने घर से निकले और ईमान वालों को युद्ध के स्थानों पर नियुक्त किया और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (122) जब तुममें से दो समूहों ने इरादा किया कि वह हिम्मत हार दें और अल्लाह इन दोनों समूहों की सहायता करने वाला था। और अल्लाह ही पर चाहिए कि ईमान (आस्था) वाले भरोसा करें। (123) और अल्लाह तुम्हारी सहायता कर चुका है बद्र (के मैदान) में जबकि तुम कमज़ोर थे। अतः अल्लाह से डरो ताकि तुम आभार व्यक्त करने वाले बनो। (124) जब तुम ईमान वालों से कह रहे थे कि क्या तुम्हारे लिए पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा पालनहार तीन हज़ार (3000) फ़रिश्ते उतार कर तुम्हारी सहायता करे। (125) यदि तुम धैर्य रखो (जमे रहो) और अल्लाह से डरो और दुश्मन तुम्हारे ऊपर अकस्मात आ पहुँचे तो तुम्हारा पालनहार पाँच हज़ार (5000) चिन्हित किये हुए फ़रिश्तों से तुम्हारी सहायता करेगा। (126) और यह अल्लाह ने इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए शुभ सूचना हो और तुम्हारे दिल उससे सन्तुष्ट हो जायें और सहायता मात्र अल्लाह ही की ओर से है जो अत्यंत शक्तिशाली है, तत्तवज्ञ है, (127) ताकि अल्लाह अवज्ञाकारियों के एक हिस्से को काट दे या वह उनको अपमानित कर दे कि वह असफल लौट जायें। (128) तुमको इस मामले में कोई हस्तक्षेप नहीं। अल्लाह उनकी तौबा (क्षमा याचना) स्वीकार करे या दण्ड दे, क्योंकि वह अत्याचारी हैं। (129) और अल्लाह ही के अधिकार में है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। वह जिसको चाहे क्षमा कर दे और जिसको चाहे यातना दे और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

(130) ऐ ईमान वालों, ब्याज कई-कई हिस्सा बढ़ा कर न खाओ और अल्लाह से डरो ताकि तुम सफल हो। (131) और डरो उस आग से जो अवज्ञाकारियों

के लिए तैयार की गई है। (132) और अल्लाह और रसूल (सन्देष्टा) का आज्ञापालन करो ताकि तुम पर दया की जाये। (133) और दौड़ो अपने पालनहार की माफ़ी की ओर और उस जन्नत की ओर जिसकी व्यापकता आसमान और पृथ्वी जैसी है। वह तैयार की गई है, अल्लाह से डरने वालों के लिए। (134) जो लोग ख़र्च करते हैं सम्पन्नता में और विपन्नता में। वह क्रोध को पी जाने वाले हैं और लोगों के प्रति क्षमाशील हैं। और अल्लाह भलाई करने वालों को मित्र रखता है। (135) और ऐसे लोग कि जब वह कोई खुली बुराई कर बैठें या अपने आप पर कोई अत्याचार कर डालें तो वह अल्लाह को याद करके अपने पापों की क्षमा माँगे। अल्लाह के अतिरिक्त कौन है जो पापों को क्षमा करे और वह जानते-बूझते अपने किये पर जमे नहीं रहते। (136) यह लोग हैं कि उनका बदला उनके पालनहार की ओर से माफ़ी है और ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वह सदैव रहेंगे। कैसा अच्छा बदला है अच्छे कर्म करने वालों का। (137) तुमसे पहले बहुत से उदाहरण गुज़र चुके हैं तो धरती पर चल-फिर कर देखो कि क्या परिणाम हुआ झुठलाने वालों का। (138) यह विवरण है लोगों के लिए और शिक्षा और नसीहत है डरने वालों के लिए।

(139) और हिम्मत न हारो और दुखी न हो, तुम ही प्रभावी रहोगे यदि तुम मोमिन (आस्थावान) हो। (140) यदि तुमको कोई चोट पहुँचे तो शत्रु को भी वैसी ही चोट पहुँची है। और हम इन दिनों (परिस्थितियों) को लोगों के बीच बदलते रहते हैं, ताकि अल्लाह ईमान वालों को जान ले और तुममें से कुछ लोगों को गवाह बनाये और अल्लाह अत्याचारियों को मित्र नहीं रखता। (141) और ताकि अल्लाह ईमान वालों को छाँट लें और अवज्ञाकारियों को मिटा दें। (142) क्या तुम समझते हो कि तुम जन्नत में चले जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना नहीं जिन्होंने कड़ा संघर्ष किया और न उनको जो अटल रहने वाले हैं। (143) और तुम मृत्यु की कामना कर रहे थे उससे मिलने से पहले, तो अब तुमने उसको खुली आँखों से देख लिया।

(144) मुहम्मद मात्र एक रसूल (सन्देष्टा) हैं उनसे पहले भी रसूल (सन्देष्टा) गुज़र चुके हैं। फिर क्या यदि वह मर जायें या क़त्ल कर दिये जायें तो तुम उल्टे

पांव फिर जाओगे। और जो व्यक्ति फिर जाये, वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा और अल्लाह कृतज्ञता की नीति अपनाने वालों को बदला देगा। (145) और कोई जीव मर नहीं सकता अल्लाह के आदेश के बिना। अल्लाह का निर्धरित किया हुआ वचन है। और जो व्यक्ति सांसारिक लाभ चाहता है उसको हम संसार में से दे देते हैं और जो परलोक का लाभ चाहता है उसको हम परलोक में से दे देते हैं। और कृतज्ञता अपनाने वालों को हम उनका बदला अवश्य प्रदान करेंगे। (146) और कितने नबी (पैग़म्बर) हैं जिनके साथ मिल कर बहुत से अल्लाह वालों ने युद्ध किया। अल्लाह के मार्ग में जो कठिनाईयाँ उन पर पड़ीं उनसे न वह हिम्मत हारे न उन्होंने दुर्बलता दिखाई। और न वह दबे। और अल्लाह अटल रहने वालों को मित्र रखता है। (147) उनके मुँह से इसके अतिरिक्त कुछ और न निकला कि "ऐ हमारे पालनहार हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमारे कार्य में हमसे जो अन्याय हुआ उसको क्षमा कर दे और हमारे क़दम जमा दे और अवज्ञाकारियों के विरुद्ध हमारी सहायता कर"। (148) अतः अल्लाह ने उनको सांसारिक बदला भी दिया और परलोक का अच्छा बदला भी। और अल्लाह नेकी करने वालों को मित्र रखता है।

(149) ऐ ईमान वालों, यदि तुम अवज्ञाकारियों की बात मानोगे तो वह तुमको उल्टे पाँव फेर देंगे, फिर तुम विफल होकर रह जाओगे। (150) बल्कि अल्लाह तुम्हारा सहायक है और वह सबसे अच्छा सहायक है। (151) हम अवज्ञाकारियों के दिलों में तुम्हारा भय डाल देंगे क्योंकि उन्होंने ऐसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार ठहराया जिसके लिए अल्लाह ने कोई सनद (प्रमाण) नहीं उतारा। उनका ठिकाना नरक है और वह बुरा ठिकाना है अत्याचारियों के लिए। (152) और अल्लाह ने तुमसे अपने वचन को सच्चा कर दिखाया जबकि तुम उनको अल्लाह के आदेश से क़त्ल कर रहे थे। यहाँ तक कि जब तुम स्वंय कमज़ोर पड़ गये और तुमने मतभेद किया और तुम (पैग़म्बर के) कहने पर न चले जबकि अल्लाह ने तुमको वह चीज़ दिखाई थी जो कि तुम चाहते थे। तुममें से कुछ लोग सांसारिक (वैभव) चाहते थे और तुममें से कुछ परलोक चाहते थे। फिर अल्लाह ने तुम्हारा मुँह उनसे फेर दिया ताकि तुम्हारी परीक्षा ले और अल्लाह ने तुमको क्षमा कर दिया और अल्लाह ईमान वालों के पक्ष में बड़ा दयावान है।

(153) याद करो, जब तुम भागे चले जा रहे थे और मुड़ कर भी किसी को न देखते थे और रसूल (सन्देष्टा) तुमको तुम्हारे पीछे से पुकार रहा था। फिर अल्लाह ने तुमको दुखः पर दुखः दिया (तुम्हारे व्यवहार के कारण) ताकि तुम निराश न हो उस चीज़ पर जो तुम्हारे हाथ से चूक गयी और न उस मुसीबत पर जो तुम पर पड़े। और अल्लाह जानने वाला है जो कुछ तुम करते हो।

(154) फिर अल्लाह ने तुम्हारे ऊपर दुखः के बाद सन्तुष्टि उतारी अर्थात ऊँघ कि वह तुममें से एक समूह पर छा रही थी। और एक समूह वह था कि जिसको अपने प्राणों की चिन्ता पड़ी हुई थी। वह अल्लाह के सम्बन्ध में अज्ञानता के कारण वास्तविकता के विपरीत विचार अपने मन में बिठा रहे थे। वह कहते थे कि हमारा भी कुछ अधिकार है। कहो सारा मामला अल्लाह के अधिकार में है। वह अपने दिलों में ऐसी बात छिपाये हुए हैं जो तुम पर प्रकट नहीं करते। वह कहते हैं कि यदि इस मामले में कुछ हमारा भी दख़ल (हसतक्षेप) होता तो हम यहाँ न मारे जाते। कहो यदि तुम अपने घरों में होते तब भी जिनकी मृत्यु होनी लिखी गई थी वह अपने मारे जाने के स्थल की ओर निकल पड़ते। यह इसलिए हुआ कि अल्लाह को परीक्षा लेनी थी जो कुछ तुम्हारे मन में है और अलग करना था जो कुछ तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानता है मन के भीतर की बात को। (155) तुममें से जो लोग फिर गये थे उस दिन, कि दोनों समूहों में मुठभेड़ हुई, उनको शैतान ने उनके कुछ कर्मों के कारण फिसला दिया था। अल्लाह ने उनको क्षमा कर दिया निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है।

(156) ऐ ईमान वालों, तुम उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अवज्ञा की। वह अपने भाईयों के सम्बन्ध में कहते हैं, जबकि वह यात्रा या युद्ध में निकलते हैं और उनको मृत्यु आ जाती है, कि यदि वह हमारे पास रहते तो न मरते और न मारे जाते। ताकि अल्लाह इसको उनके दिलों में पश्चाताप का कारण बना दे। और अल्लाह ही जीवन देता है और मृत्यु देता है, और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (157) और यदि तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ तो अल्लाह की माफ़ी और दया उससे बेहतर है जिसको वह एकत्र कर रहे हैं।

(158) और तुम मर गये या मारे गये, प्रत्येक स्थिति में तुम अल्लाह ही के पास एकत्र किये जाओगे। (159) यह अल्लाह की अत्यन्त दयालुता है कि तुम उनके लिए कोमल हो। यदि तुम कठोर स्वभाव और कठोर हृदय होते तो यह लोग तुम्हारे पास से भाग जाते। अतः उनको क्षमा कर दो और उनके लिए क्षमा माँगो और मामलों में उनसे परामर्श लो। फिर जब निर्णय कर लो तो अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सन्देह अल्लाह उनसे प्रेम करता है जो उस पर भरोसा रखते हैं। (160) यदि अल्लाह तुम्हारा साथ दे तो कोई तुम पर वर्चस्व नहीं पा सकता और यदि वह तुम्हारा साथ छोड़ दे तो इसके बाद कौन है जो तुम्हारी सहायता करे। और अल्लाह ही के ऊपर भरोसा करना चाहिए ईमान वालों को।

(161) और पैग़म्बर का यह काम नहीं कि वह कुछ छिपा रखे और जो कोई छिपायेगा वह अपनी छिपायी हुई चीज़ को परलोक के दिन प्रस्तुत करेगा। फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किए हुए का पूरा बदला मिलेगा और उन पर कुछ अत्याचार न होगा। (162) क्या वह व्यक्ति जो अल्लाह की इच्छा का अनुसरण करने वाला है वह उस व्यक्ति की तरह हो जायेगा जो अल्लाह का क्रोध लेकर लौटा और उसका ठिकाना नरक है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (163) अल्लाह के यहाँ उनके दर्जे (स्तर) भिन्न-भिन्न होंगे। और अल्लाह देख रहा है जो वह करते हैं। (164) अल्लाह ने ईमान वालों पर उपकार किया कि उनमें उन्हीं में से एक सन्देष्टा भेजा जो उनको अल्लाह की आयतें (वाणी) सुनाता है और उनको पवित्र करता है और उनको किताब (क़ुरआन) और हिक्मत (विवेक) की शिक्षा देता है। निस्सन्देह ये इससे पूर्व स्पष्ट पथभ्रष्टता में थे।

(165) और जब तुमको ऐसी मुसीबत पहुँची जिसकी दोगुनी मुसीबत तुम पहुँचा चुके थे तो तुमने कहा कि यह कहाँ से आ गई। कहो यह तुम्हारे अपने पास से है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। (166) और दोनों पक्षों की मुठभेड़ के दिन तुमको जो हानि पहुँची, वह अल्लाह के आदेश से पहुँची और इसलिए कि अल्लाह ईमान वालों को जान ले। (167) और उनको भी जान ले जो कपटाचारी थे जिनसे कहा गया कि आओ अल्लाह के मार्ग में लड़ो या दुश्मन को रोको (से रक्षा करो)। उन्होंने कहा यदि

हम जानते कि युद्ध होना है तो हम अवश्य तुम्हारे साथ चलते। यह लोग उस दिन ईमान की अपेक्षा अवज्ञा (अधर्म) के अधिक निकट थे। वह अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं है और अल्लाह उस चीज़ को भली-भाँति जानता है जिसको वह छिपाते हैं। (168) यह लोग जो स्वंय बैठे रहे, अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहते हैं कि यदि वह हमारी बात मानते तो मारे न जाते। कहो तुम अपने ऊपर से मृत्यु को हटा दो यदि तुम सच्चे हो।

(169) और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे गये उनको मरा न समझो। बल्कि वह जीवित हैं अपने पालनहार के पास, उनको जीविका मिल रही है। (170) वह प्रसन्न हैं उस पर जो अल्लाह ने अपनी कृपा में से उनको दिया है और शुभ सूचना ले रहे हैं कि जो लोग उनके पीछे हैं और अभी वहाँ नहीं पहुँचे हैं, उनके लिए भी न कोई भय है और न वह दुखी होंगे। (171) वह प्रसन्न हो रहे हैं अल्लाह के पुरस्कार और उसकी कृपा पर और इस पर कि अल्लाह ईमान वालों का बदला नष्ट नहीं करता। (172) जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल (सन्देष्टा) के आदेश का अनुकरण किया इसके पश्चात कि उनको घाव लग चुका था, उनमें से जो नेक और परहेज़गार हैं उनके लिए बड़ा बदला है। (173) जिनसे लोगों ने कहा कि शत्रु ने तुम्हारे विरुद्ध बड़ी शक्ति एकत्र कर ली है उससे डरो। लेकिन इस चीज़ ने उनके ईमान में और वृद्धि कर दी और वह बोले कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त है और वह बेहतर सहायक है। (174) अतः वह अल्लाह की अनुकम्पा और उसकी कृपा के साथ वापस आये। इन लोगों को किसी बुराई से सामना न हुआ। और वह अल्लाह की प्रसन्नता के मार्ग पर चले और अल्लाह बड़ा कृपाशील है। (175) यह शैतान है जो तुमको अपने मित्रों के माध्यम से डराता है। तुम उससे न डरो बल्कि मुझसे डरो यदि तुम ईमान वाले हो।

(176) और वह लोग तुम्हारे लिए दुख का कारण न बनें जो अवज्ञा में अग्रसरता दिखा रहे हैं। वह अल्लाह को कदापि कोई हानि न पहुँचा सकेंगे। अल्लाह चाहता है कि उनके लिए परलोक में कोई हिस्सा न रखे। उनके लिए बड़ा दण्ड है। (177) जिन लोगों ने ईमान के बदले अवज्ञा को ख़रीदा है, वह अल्लाह का कुछ बिगाड़ नहीं सकते और उनके लिए कष्टप्रद यातना है।

(178) और जो लोग अवज्ञा कर रहे हैं, यह न समझें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह उनके पक्ष में बेहतर है। हम तो मात्र इसलिए मोहलत दे रहे हैं कि वह अपराध में और बढ़ जायें और उनके लिए अपमानजनक यातना है। (179) अल्लाह ऐसा नहीं कि ईमान वालों को उस दशा में छोड़ दे जिस तरह कि तुम अब हो जब तक कि वह अपवित्र को पवित्र से अलग न कर ले। और अल्लाह ऐसा नहीं कि तुमको परोक्ष से सूचित कर दे, बल्कि अल्लाह छाँट लेता है अपने रसूलों (सन्देष्टाओं) में जिसको चाहता है। अतः तुम ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर। और यदि तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी अपनाओ तो तुम्हारे लिए बड़ा बदला है।

(180) और जो लोग कंजूसी करते हैं उस चीज़ में जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा में से दिया है वह कदापि यह न समझें कि यह उनके लिए अच्छा है। बल्कि यह उनके लिए बहुत बुरा है। जिस चीज़ में वह कंजूसी कर रहे हैं और यह क़ियामत के दिन उनके लिये तौक़ (पट्टा) बन जायेगा। और अल्लाह ही उत्तराधिकारी है धरती और आकाश का। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसका जानने वाला है। (181) अल्लाह ने उन लोगों की बात सुनी जिन्होंने कहा कि अल्लाह निर्धन है और हम धनवान हैं। हम लिख लेंगे उनके इस कथन को और उनके पैग़म्बरों को अनाधिकृत रूप से मार डालने को भी। और हम कहेंगे कि अब आग की यातना चखो। (182) यह तुम्हारे अपने हाथों की कमाई है और अल्लाह अपने बन्दों के साथ अन्याय करने वाला नहीं। (183) जो लोग कहते हैं कि अल्लाह ने हमको आदेश दिया है कि हम किसी रसूल (सन्देष्टा) को स्वीकार न करें जब तक वह हमारे समक्ष ऐसी क़ुर्बानी (भेंट) प्रस्तुत न करे जिसको आग खा ले, उनसे कहो कि मुझसे पहले तुम्हारे पास रसूल (सन्देष्टा) आये खुली निशानियाँ लेकर और वह चीज़ लेकर जिसको तुम कह रहो हो, फिर तुमने क्यों उनको मार डाला यदि तुम सच्चे हो।

(184) अतः यदि ये तुमको झुठलाते हैं तो तुमसे पहले भी बहुत से रसूल (सन्देष्टा) झुठलाये जा चुके हैं जो खुली निशानियाँ और सहीफ़े (धर्म-ग्रन्थ) और प्रकाशमय किताब लेकर आये थे। (185) प्रत्येक व्यक्ति को

मृत्यु का स्वाद चखना है और तुमको सम्पूर्ण बदला तो मात्र क़ियामत (परलोक) के दिन मिलेगा। अतः जो व्यक्ति आग से बच जाये और जन्नत (स्वर्ग) में पहुंचा दिया जाये वास्तव में वही सफल रहा और संसार का जीवन तो मात्र धोखे का सौदा है।

(186) निश्चय ही तुम अपने प्राण और सम्पत्ति के मामले में परीक्षा में डाले जाओगे। और तुम बहुत सी कष्टप्रद बातें सुनोगे उनसे जिनको तुमसे पहले किताब मिली और उनसे भी जिन्होंने शिर्क (बहुदेववाद) किया। और यदि तुम धैर्य रखो और परहेज़गारी अपनाओ तो यह बड़े साहस का काम है। (187) और जब अल्लाह ने किताब वालों (यहूदी और ईसाई) से प्रण लिया कि तुम अल्लाह कि किताब को पूर्ण रूप से लोगों के लिए प्रस्तुत करोगे और उसको नहीं छिपाओगे। परन्तु उन्होंने इसको पीठ पीछे डाल दिया और इसको थोड़े मूल्य पर बेच डाला। कैसी बुरी चीज़ है जिसको वह ख़रीद रहे हैं। (188) जो लोग अपने उन कृत्यों पर प्रसन्न हैं और चाहते हैं कि जो काम उन्होंने नहीं किये उस पर उनकी प्रशंसा हो, उनको यातना से सुरक्षित न समझो। उनके लिए कष्टप्रद, यातना है। (189) और अल्लाह ही के लिए है पृथ्वी और आकाश की बादशाही, और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

(190) आकाशों और पृथ्वी की रचना में और रात-दिन के एक के बाद एक आने में बुद्धि वालों के लिए बहुत निशानियाँ हैं। (191) जो खड़े और बैठे और अपनी करवटों पर अल्लाह को याद करते हैं और आकाश और पृथ्वी की रचना पर चिन्तन करते रहते हैं। वह कह उठते हैं ऐ हमारे पालनहार, तूने यह सब बिना किसी उद्देश्य के नहीं बनाया। तू पवित्र है, अतः हमको आग की यातना से बचा। (192) ऐ हमारे पालनहार, तूने जिसको आग में डाला, उसको तूने वास्तव में अपमानित कर दिया। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं। (193) ऐ हमारे पालनहार, हमने एक पुकारने वाले को सुना जो ईमान की ओर पुकार रहा था कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ, अतः हम ईमान लाये। ऐ हमारे पालनहार, हमारे पापों को क्षमा कर दे और हमारी बुराईयों को हमसे दूर कर दे और हमारा अन्त नेक लोगों के साथ कर। (194) ऐ हमारे पालनहार, तूने जो वादे अपने रसूलों (सन्देष्टाओं) के माध्यम से हमसे किए हैं

उनको हमारे साथ पूरा कर और क़ियामत (परलोक) के दिन हमे अपमान में न डाल। निस्सन्देह तू अपने वादे के विरुद्ध करने वाला नहीं है।

(195) उनके पालनहार ने उनकी दुआ स्वीकार की, कि मैं तुममें से किसी का कर्म नष्ट करने वाला नहीं, चाहे वह मर्द हो या औरत, तुम सब एक दूसरे से हो। अतः जिन लोगों ने हिजरत (अल्लाह के मार्ग में प्रवास) की और जो अपने घरों से निकाले गये और मेरे मार्ग में सताये गये और वह लड़े और मारे गये, मैं उनके पाप अवश्य उनसे दूर कर दूँगा और उनको ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। यह उनका बदला है अल्लाह के यहाँ और सबसे अच्छा बदला अल्लाह ही के पास है। (196) और देश के अन्दर अवज्ञाकारियों की गतिविधियाँ तुमको धोखे में न डालें

(197) यह थोड़ा सा लाभ है। फिर उनका ठिकाना नरक है और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (198) हाँ, जो लोग अपने पालहार से डरते हैं, उनके लिए बाग़ होंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वह उसमें सदैव रहेंगे। यह अल्लाह की ओर से उनका आतिथ्य-सत्कार होगा और जो कुछ अल्लाह के पास नेक लोगों के लिए है वही सबसे बेहतर है। (199) और निस्सन्देह किताब वालों (यहूदी और ईसाई) में कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस किताब को भी मानते हैं जो तुम्हारी ओर भेजी गई है और उस किताब को भी मानते हैं जो इससे पहले स्वंय उनकी ओर भेजी गई थी, वह अल्लाह के आगे झुके हुए हैं और वह अल्लाह की आयतों को थोड़े मूल्य पर बेच नहीं देते। उनका बदला उनके पालनहार के पास है और अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (200) ऐ ईमान वालों, धैर्य रखो (जमे रहो) और मुक़ाबला करने में दृढ़ रहो और (आपस में) जुड़े रहो और अल्लाह से डरो, आशा है कि तुम सफल होगे।

4. सूरह अन-निसा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ लोगों, अपने पालनहार से डरो जिसने तुमको एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा पैदा किया और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं। और अल्लाह से डरो जिसका वास्ता देकर तुम एक दूसरे से सहायता माँगते हो और सचेत रहो सगे-संबन्धियों के विषय में। निस्सन्देह, अल्लाह तुम्हारा निरीक्षण कर रहा है। (2) और यतीमों की पूँजी उनको सौंप दो। और बुरी सम्पत्ति को अच्छी सम्पत्ति से न बदलो और उनकी पूँजी अपनी पूँजी के साथ मिलाकर न खाओ। यह बहुत बड़ा पाप है। (3) और यदि तुमको भय हो कि तुम यतीमों के सम्बन्ध में न्याय न कर सकोगे तो औरतों में से जो तुमको पसन्द हों उनसे दो-दो, तीन-तीन, चार-चार तक निकाह (विवाह) कर लो। और यदि तुमको डर हो कि तुम न्याय न कर सकोगे तो एक ही निकाह करो या जो दासी तुम्हारे स्वामित्व में हो। इसमें आशा है कि तुम न्याय से विचलित न होगे। (4) और औरतों को उनके मेहर प्रसन्नतापूर्वक अदा करो। फिर यदि वह उसमें से कुछ तुम्हारे लिए छोड़ दें अपनी ख़ुशी से तो तुम उसको हँसी-ख़ुशी से खाओ।

(5) और नासमझों को अपनी वह पूँजी न दो जिसको अल्लाह ने तुम्हारे लिए आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाया है, और उस पूँजी में से उनको खिलाओ और पहनाओ और उनसे भलाई की बात कहो। (6) और अनाथों को जाँचते रहो, यहाँ तक कि जब वह निकाह की आयु को पहुँच जायें तो यदि उनमें परिपक्वता देखो तो उनकी पूँजी उनको सौंप दो। और उनकी पूँजी अपव्यय के साथ और इस विचार से कि वह बड़े हो जायेंगे न खा जाओ। और जिसको आवश्यकता न हो, वह अनाथ कि पूँजी से बचे और जो व्यक्ति निर्धन हो वह सामान्य रीति के अनुसार खाये। फिर जब तुम उनकी पूँजी उनको सौंपो तो उन पर गवाह बना लो, और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है। (7) माँ-बाप और सम्बन्धियों की विरासत में से मर्दों का भी हिस्सा है और माँ-बाप और सम्बन्धियों की विरासत में से औरतों का भी हिस्सा है, चाहे थोड़ा हो या अधिक हो, एक निर्धारित

किया हुआ हिस्सा। (8) और यदि बँटवारे के समय सम्बन्धी और अनाथ और निर्धन मौजूद हों तो उसमें से उनको भी कुछ दो और उनसे सहानुभूतिपूर्ण बात कहो। (9) और ऐसे लोगों को डरना चाहिए कि यदि वह अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ जाते तो उन्हें उनकी बहुत चिन्ता रहती। अतः उनको चाहिए कि अल्लाह से डरें और बात पक्की कहें। (10) जो लोग अनाथों की पूँजी अनाधिकृत रूप से खाते हैं वह लोग अपने पेटों में आग भर रहे हैं और वह शीघ्र भड़कती हुई आग में डाले जायेंगे।

(11) अल्लाह तुमको तुम्हारी सन्तान के सम्बन्ध में आदेश देता है कि मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर है। यदि औरतें दो से अधिक हैं तो उनके लिए दो-तिहाई है उस सम्पत्ति से, जो (मृतक) छोड़ गया है और यदि वह अकेली है तो उसके लिए आधा है। और मृतक के माता-पिता को दोनो में से प्रत्येक के लिए छठवाँ हिस्सा है उस सम्पत्ति का, जो वह छोड़ गया है शर्त यह है कि मृतक की सन्तान हो। और यदि मृतक के सन्तान न हो और उसके माता-पिता उसके वारिस हों तो उसकी माँ का तिहाई हिस्सा है और यदि उसके भाई-बहन हों तो उसकी माँ के लिए छठवाँ हिस्सा है। ये हिस्से वसीयत निकालने के पश्चात या ऋण अदा करने के पश्चात हैं जो वह कर जाता है। तुम्हारे बाप हों या तुम्हारे बेटे हों, तुम नहीं जानते कि उनमें तुम्हारे लिए सबसे अधिक लाभप्रद कौन है। यह अल्लाह का निर्धारित किया हुआ हिस्सा है। निस्सन्देह अल्लाह ज्ञान वाला, विवेक वाला है। (12) और तुम्हारे लिए उस पूँजी का आधा हिस्सा है जो तुम्हारी पत्नियाँ छोड़ें, शर्त यह है कि उनकी सन्तान न हो। और यदि उनके सन्तान हो तो तुम्हारे लिए पत्नियों की विरासत का चौथाई हिस्सा है, वसीयत निकालने के पश्चात जिसकी वह वसीयत कर जाये या ऋण अदा करने के पश्चात। और उन पत्नियों के लिए चौथाई हिस्सा है तुम्हारी विरासत का यदि तुम्हारे सन्तान नहीं है, और यदि तुम्हारे सन्तान है तो उनके लिए आठवाँ हिस्सा है तुम्हारी विरासत का, वसीयत निकालने के बाद जिसकी तुम वसीयत कर जाओ या ऋण अदा करने के पश्चात। और यदि कोई मृतक मर्द हो या औरत ऐसा हो जिसके न माँ-बाप (उसूल) हों न सन्तान (फुरु), और उसके एक भाई या एक बहन हो तो दोनों में से प्रत्येक के लिए छठा हिस्सा

है। और यदि वह इससे अधिक हों तो वह एक तिहाई में साझीदार होंगे। वसीयत निकालने के पश्चात जिसकी वसीयत की गई हो या ऋण अदा करने के पश्चात, बिना किसी को हानि पहुँचाये। यह आदेश अल्लाह की ओर से है और अल्लाह ज्ञान रखने वाला, सहनशील है। (13) यह अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएँ हैं। और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करेगा, अल्लाह उसको ऐसे बाग़ों में प्रवेश कराएगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह सदैव रहेंगे और यही बड़ी सफलता है। (14) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा और उसके निर्धारित किये हुए नियमों से बाहर निकल जायेगा उसको वह आग में डालेगा। जिसमें वह सदैव रहेगा और उसके लिए अपमानजनक यातना है।

(15) और तुम्हारी औरतों में से जो कोई व्यभिचार करे तो उन पर अपनो में से चार मर्द गवाह बनाओ। फिर यदि वह गवाही दे दें तो उन औरतों को घरों के अन्दर बन्द रखो, यहाँ तक कि उनको मौत उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई रास्ता निकाल दे। (16) और तुममें से जो मर्द व्यभिचार करें तो उनको यातना पहुँचाओ। फिर यदि वह दोनों तौबा करें और अपना सुधार कर लें तो उनका विचार छोड़ दो। निस्सन्देह अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला दयावान है। (17) तौबा, जिसका स्वीकार करना अल्लाह के ज़िम्मे है, वह उन लोगों की है जो बुरा कृत्य नासमझी से कर बैठते हैं फिर शीघ्र ही तौबा कर लेते हैं। वही हैं जिनकी तौबा अल्लाह स्वीकार करता है और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है।

(18) और ऐसे लोगों की तौबा नहीं है जो निरन्तर बुरे कर्म करते रहें, यहाँ तक कि जब मृत्यु उनमें से किसी के समक्ष आ जाये तब वह कहें कि अब मैं तौबा करता हूँ, और न उन लोगों की तौबा है जो इस स्थिति में मरते हैं कि वह अवज्ञाकारी हैं, उनके लिए तो हमने कष्टप्रद यातना तैयार कर रखी है।

(19) ऐ ईमान वालों, तुम्हारे लिए वैध नहीं कि तुम औरतों को बलपूर्वक अपनी विरासत में ले लो और न उनको इस उद्देश्य से रोके रखो कि तुमने जो कुछ उनको दिया है उसका कुछ हिस्सा उनसे ले लो, परन्तु उस स्थिति में

कि वह स्पष्ट रुप से अशलील कर्म करें। और उनके साथ भली-भाँति जीवन व्यतीत करो। यदि वह तुमको नापसंद हों तो हो सकता है कि एक चीज़ उनकी तुमको पसन्द न हो परन्तु अल्लाह ने उसमें तुम्हारे लिए बहुत बड़ी भलाई रख दी हो। (20) और यदि तुम एक पत्नी के स्थान पर दूसरी पत्नी बदलना चाहो और तुम उसको बहुत अधिक सम्पत्ति दे चुके हो तो तुम उसमें से कुछ वापस न लो। क्या तुम आरोप लगाकर और स्पष्ट अत्याचार करके वापस लोगे। (21) और तुम किस तरह उसको लोगे जबकि एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध बना चुके हो और वह तुमसे पक्का प्रण ले चुकी हैं। (22) और उन औरतों से निकाह न करो जिनसे तुम्हारे पिता निकाह कर चुके हैं, परन्तु जो पहले हो चुका। निस्सन्देह यह निर्लज्जता है और घृणा की बात है और बहुत बुरा चलन है।

(23) तुम्हारे ऊपर अवैध की गईं तुम्हारी माएँ, तुम्हारी बेटियाँ, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी फूफियाँ, तुम्हारी ख़ालायें (मौसियाँ), तुम्हारी भतीजियाँ और भान्जियाँ, और तुम्हारी वह माएँ जिन्होंने तुमको दूध पिलाया, तुम्हारी दूध में साझीदार बहनें, तुम्हारी पत्नियों की माएँ और उनकी बेटियाँ जो तुम्हारे पालन-पोषण में हैं जो तुम्हारी उन पत्नियों में से हों जिनसे तुम संभोग कर चुके हो, परन्तु यदि अभी तुमने उनसे संभोग न किया हो तो तुम पर कोई पाप नहीं। और तुम्हारे सगे बेटों की पत्नियाँ और यह कि तुम एकत्र करो दो बहनों को परन्तु जो पहले हो चुका हो। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (24) और वह महिलाएँ भी अवैध हैं जो किसी दूसरे के निकाह में हों परन्तु यह कि वह युद्ध में तुम्हारे हाथ आयें। यह अल्लाह का आदेश है तुम्हारे ऊपर। इनके अतिरिक्त जो औरतें हैं वह सब तुम्हारे लिए वैध हैं शर्त यह है कि तुम अपनी दौलत के माध्यम से उनके इच्छुक बनो, उनको निकाह के बन्धन में लेकर न कि व्यभिचार करने लगो। फिर उन औरतों में से जिनसे तुमने दामपत्य जीवन का जो लाभ उठाया है उसके बदले उनको उनका निर्धारित मह्र दे दो और महर के निर्धारण के बाद जो तुमने आपस की सहमति से कोई समझौता किया हो तो उसमें कोई पाप नहीं। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, विवेकशील है। (25) और तुममें से जो व्यक्ति क्षमता न रखता हो कि कुलीन ईमान वाले औरतों से निकाह कर सके तो उसको चाहिए कि वह तुम्हारी उन दासियों में

से किसी के साथ निकाह कर ले जो तुम्हारे अधिकार में हों और ईमान वाली हों। अल्लाह तुम्हारे ईमान को भली-भाँति जानता है, तुम परस्पर एक हो। अतः उनके स्वामियों की अनुमति से उनसे निकाह कर लो और सामान्य नियम के अनुसार उनके महर अदा कर दो, इस तरह कि वह निकाह बन्धन में लायी जायें, न कि व्यभिचार करने वाली हों, और चोरी-छुपे आशनाईयाँ करें। फिर जब वह निकाह के बन्धन में आ जायें और उसके बाद वह व्यभिचार में लिप्त हों तो स्वतन्त्र महिलाओं के लिए जो दण्ड है उसका आधा दण्ड उन पर हैं। यह तुम में से उसके लिए है जिसको बुरे कर्म में पड़ने का भय हो। और यदि तुम धैर्य से काम लो तो यह तुम्हारे लिए अधिक बेहतर है, और अल्लाह क्षमा करने वाला, अतः दयावान है।

(26) अल्लाह चाहता है कि वह तुम्हारे लिए बयान करे और तुम्हें उन लोगों के आदर्शों का मार्गदर्शन करे जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और तुम पर ध्यान दे, अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (27) और अल्लाह चाहता है कि वह तुम्हारे ऊपर ध्यान दे और जो लोग अपनी इच्छाओं का अनुसरण कर रहे हैं वह चाहते हैं कि तुम सन्मार्ग से बहुत दूर निकल जाओ। (28) अल्लाह चाहता है कि तुमसे बोझ को हल्का करे और मनुष्य कमज़ोर (दुर्बल) पैदा किया गया है।

(29) ऐ ईमान वालों, आपस में एक-दूसरे का धन अनाधिकृत रूप से न खाओ परन्तु यह कि व्यापार हो आपस में सहमति से। और हत्या न करो आपस में। निस्सन्देह अल्लाह तुम्हारे ऊपर बहुत दया करने वाला है। (30) और जो व्यक्ति विद्रोह और अत्याचार से ऐसा करेगा, उसको हम अवश्य आग में डालेंगे। और यह अल्लाह के लिए आसान है। (31) यदि तुम इन बड़े पापों से बचते रहे जिनसे तुम्हें रोका गया है तो हम तुम्हारी छोटी बुराईयों को क्षमा कर देंगे और तुमको सम्मान के स्थान में प्रवेश देंगे। (32) और तुम ऐसी चीज़ की अभिलाषा न करो जिसमें अल्लाह ने तुममें से एक को दूसरे पर बड़ाई दी है। मर्दों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का और औरतों के लिए हिस्सा है अपनी कमाई का। और अल्लाह से उसकी कृपा माँगो। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। (33) और हमने माता-पिता और सम्बन्धियों के

छोड़े हुए धन में से प्रत्येक के लिए वारिस निर्धारित किये हैं और जिनसे तुमने कोई प्रण कर रखा हो तो उनको उनका हिस्सा दे दो निस्सन्देह अल्लाह के सामने है हर चीज़।

(34) मर्द, औरतों के ऊपर क़व्वाम (संरक्षक) हैं इस आधार पर कि अल्लाह ने एक को दूसरे पर बड़ाई दी है और इस आधार पर कि मर्द ने अपना धन ख़र्च किया। अतः जो भली औरतें हैं वह आज्ञाकरिणी हैं, पीठ पीछे संरक्षण करती हैं उसकी जिसकी सुरक्षा का अल्लाह ने आदेश दिया है। और जिन औरतों से तुमको अनिष्ठा का डर हो उनको समझाओ और उनको उनके सोने के स्थान पर अकेला छोड़ दो और उनको दण्ड दो। अतः यदि वह तुम्हारा आज्ञापालन करें तो उनके विरुद्ध आरोप का रास्ता न तलाश करो। निस्सन्देह अल्लाह सबसे ऊपर है, बहुत बड़ा है। (35) और यदि तुम्हें पति-पत्नी के मध्य सम्बन्धों के बिगड़ने का डर हो तो एक न्यायप्रिय, मर्द के सम्बन्धियों में से खड़ा करो और एक न्यायप्रिय औरत के सम्बन्धियों में से खड़ा करो। यदि दोनो सुधार चाहेंगे तो अल्लाह उनके बीच सहमति बना देगा। निस्सन्देह अल्लाह सब कुछ जानने वाला ख़बरदार है।

(36) और अल्लाह की इबादत करो और किसी चीज़ को उसका साझीदार न बनाओ। और अच्छा व्यवहार करो माता-पिता के साथ और सम्बन्धियों के साथ और अनाथों और निर्धनों और सम्बन्धी पड़ोसी और वह पड़ोसी जो संबंधी नहीं हैं और पास बैठने वाले और यात्री के साथ और दासों के साथ। निस्सन्देह, अल्लाह पसन्द नहीं करता डींगें मारने वाले को और घमंड करने वाले को (37) जो कि कृपणता (कंजूसी) करते हैं और दूसरों को भी कृपणता सिखाते हैं और जो कुछ उन्हें अल्लाह ने अपनी कृपा से दे रखा है उसको छिपाते हैं। और हमने अवज्ञाकारियों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। (38) और जो लोग अपना धन लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह पर और परलोक के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिसका साथी शैतान बन जाये तो वह बहुत बुरा साथी है। (39) उनकी क्या हानि थी यदि वह अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास करते और अल्लाह ने जो कुछ उन्हें दे रखा है उसमें से ख़र्च करते। और अल्लाह उनसे अच्छी तरह भिज्ञ है।

(40) निस्सन्देह अल्लाह तनिक भी किसी पर अन्याय नहीं करेगा। यदि नेकी हो तो वह उसको दोगुना बढ़ा देता है और अपने पास से बहुत बड़ा पुण्य देता है।

(41) फिर उस समय क्या हाल होगा जब हम प्रत्येक उम्मत में से एक गवाह लायेंगे और तुमको उन लोगों के ऊपर गवाह बनाकर खड़ा करेंगे। (42) वह लोग जिन्होंने अवज्ञा की और पैग़म्बर का अविशवास किया उस दिन कामना करेंगे कि काश (ऐसा संभव होता कि) धरती फट जाए और उन पर बराबर कर दी जाये और वह अल्लाह से कोई बात न छिपा सकेंगे। (43) ऐ ईमान वालों, नमाज़ के निकट न जाओ जिस समय कि तुम नशे में हो यहाँ तक कि समझने लगो जो तुम कहते हो, और न उस समय जब स्नान की आवश्यकता हो परन्तु रास्ता चलते हुए, यहाँ तक कि स्नान कर लो। और यदि तुमको बीमारी हो या यात्रा में हो या तुममें से कोई शौच के स्थान से आये या तुम औरतों के पास गये हो फिर तुमको पानी न मिले तो तुम पवित्र मिट्टी से तयम्मुम (पवित्र मिट्टी से चेहरे और हाथ मलना) कर लो और अपने चेहरे और हाथों का मसह कर लो, निस्सन्देह अल्लाह दया करने वाला क्षमा करने वाला है।

(44) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनको किताब से हिस्सा मिला था। वह पथभ्रष्टता को ख़रीद रहे हैं और चाहते हैं कि तुम भी मार्ग से भटक जाओ। (45) अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को भली-भाँति जानता है। और अल्लाह पर्याप्त है समर्थन के लिए और अल्लाह पर्याप्त है सहायता के लिए। (46) यहूदियों में से एक दल शब्द को उसके स्थान से हटा देता है और कहता है कि हमने सुना और न माना। और कहते हैं कि सुनो और तुम्हें सुनवाया न जाये (अग्रचे कि तुम सुनाने योगय नहीं हो)। वह अपनी जीभ को मोड़ कर कहते हैं राईना (हमारा चरवाहा), दीन (धर्म) में दोष लगाने के लिए है। और यदि वह कहते कि हमने सुना और माना, और सुनो और हम पर ध्यान दो तो यह उनके लिए अधिक बेहतर और उपयुक्त होता, परन्तु अल्लाह ने उनकी अवज्ञा के कारण उन पर फटकार कर दी है। अतः वह ईमान न लायेंगे परन्तु बहुत कम।

(47) ऐ वह लोगों! जिनको किताब दी गई इस पर ईमान लाओ जो हमने उतारा है, पुष्टि करने वाली उस किताब की जो तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम

चेहरों को मिटा दें फिर उनको उलट दें पीठ की ओर या उन पर फटकार करें जैसे हमने फटकार की सब्त (शनिचर) वालों पर। और अल्लाह का आदेश पूरा होकर रहता है। (48) निस्सन्देह अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसके साथ साझेदार किये जाएं। लेकिन इसके अतिरिक्त जो कुछ है उसको जिसके लिए चाहेगा क्षमा कर देगा। और जिसने अल्लाह का साझीदार ठहराया उसने बड़ा तूफ़ान बाँधा। (49) क्या तुमने देखा उनको जो अपने आप को पवित्र कहते हैं। बल्कि अल्लाह ही पवित्र करता है जिसको चाहता है, और उन पर तनिक भी अत्याचार न होगा। (50) देखो, यह अल्लाह पर कैसा झूठ बाँध रहे हैं और स्पष्ट पाप होने के लिए यही पर्याप्त है।

(51) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें किताब से हिस्सा मिला था, वह जिब्त (जादू/काल्पनिक चीज़ें) और ताग़ूत (शैतान और गंदी आत्माएं) को मानते हैं और अवज्ञाकारियों के सम्बन्ध में कहते हैं कि वह ईमान वालों से अधिक सही रास्ते पर हैं। (52) यही लोग हैं जिन पर अल्लाह ने फटकार की है और जिस पर अल्लाह फटकार करे, तुम उसका कोई सहायक न पाओगे। (53) क्या अल्लाह की सत्ता में कुछ इनका भी हस्तक्षेप है। फिर तो ये लोगों को एक तिल बराबर कुछ भी न दे। (54) क्या ये लोगों पर ईर्ष्या कर रहे हैं इस आधार पर, जो अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से दिया है। अतः हमने इब्राहीम के अनुयायियों को किताब और हिक्मत (विवेक) दी है और हमने उनको बड़ा साम्राज्य भी दे दिया है।

(55) उनमें से किसी ने इसको माना और कोई उससे रूका रहा और ऐसों के लिए नरक की भड़कती हुई आग काफ़ी है। (56) निस्सन्देह जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया उनको हम तीव्र आग में डालेंगे। जब उनके शरीर की त्वचा जल जायेगी तो हम उनकी त्वचा को बदलकर दूसरी कर देंगे ताकि वह यातना भोगते रहें। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली है, तत्वदर्शी है। (57) और जो लोग ईमान लाये और भले कर्म किए उनको हम बाग़ों में प्रवेश देंगे जिसके नीचे नहरें बहती होंगी, उसमें वह सदैव रहेंगे, वहाँ उनके लिए सुथरी पत्नियाँ होंगी और उनको हम घनी छाया में रखेंगे।

(58) अल्लाह तुमको आदेश देता है कि अमानतें उनके हक़दारों को पहुँचा

दो। और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो तो न्याय के साथ फ़ैसला करो। अल्लाह अच्छी नसीहत करता है तुमको, निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (59) ऐ ईमान वालों, अल्लाह का आज्ञापालन करो और रसूल (सन्देष्टा) का आज्ञापालन करो और अपने में अधिकार प्राप्त व्यक्ति का आज्ञापालन करो। फिर यदि तुम्हारे बीच किसी चीज़ में मतभेद हो जाये तो उसको अल्लाह और रसूल की ओर लौटाओ, यदि तुम अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखते हो। यह बात अच्छी है और इसका परिणाम बेहतर है। (60) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह ईमान लाये हैं उस पर जो उतारा गया है तुम्हारी ओर, और जो उतारा गया है तुमसे पहले, वह चाहते हैं कि मामला (वाद) ले जायें शैतान की ओर, हालाँकि उनको आदेश हो चुका है कि वह उसको न मानें, और शैतान चाहता है कि उनको बहका कर बहुत दूर डाल दे। (61) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ अल्लाह की उतारी हुई किताब की ओर और रसूल की ओर तो तुम देखोगे कि कपटाचारी तुमसे कतरा जाते हैं। (62) फिर उस समय क्या होगा जब उनके अपने हाथों कि लाई हुई मुसीबत उन पर पहुँचेगी, उस समय ये तुम्हारे पास कसमें (सौगंध) खाते हुए आयेंगे कि अल्लाह कि सौगंध, हम तो मात्र भलाई और मिलाप के इच्छुक थे। (63) उनके दिलों में जो कुछ है अल्लाह उससे भली-भाँति परिचित है। अतः तुम उनसे बचो और उनको नसीहत करो और उनसे ऐसी बात कहो जो उनके दिलों में उतर जाये।

(64) और हमने जो रसूल (सन्देष्टा) भेजा, इसीलिए भेजा कि अल्लाह के आदेश अनुसार उसका आज्ञापालन किया जाये। और यदि वह, जबकि उन्होंने अपना बुरा किया था, तुम्हारे पास आते और अल्लाह से क्षमा चाहते और रसूल भी उनके लिए क्षमा चाहता तो अवश्य वह अल्लाह को क्षमा करने वाला दया करने वाला पाते। (65) अतः तेरे पालनहार की सौगन्ध, वह कभी ईमान वाले नहीं हो सकते जब तक वह अपने आपसी झगड़े में तुमको अपना निर्णायक पंच न मान लें। फिर जो फ़ैसला तुम करो उस पर अपने दिलों में कोई तंगी (संकुचित) न पायें और उसको प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लें। (66) और यदि हम उनको आदेश देते कि अपने आप की हत्या करो या अपने घरों से निकलो तो उनमें से थोड़े

ही उस पर अमल करते। और यदि यह लोग वह करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए यह बात बेहतर और ईमान पर अटल रखने वाली होती। (67) और उस समय हम उनको अपने पास से बड़ा बदला देते, (68) और उनको सीधा रास्ता दिखाते। (69) और जो अल्लाह और रसूल का आज्ञापालन करेगा, वह उन लोगों के साथ होगा जिनको अल्लाह ने पुरस्कृत किया, अर्थात पैग़म्बर और सिद्दीक़ (सच्चे) और शहीद और सदाचारी। कैसा अच्छा है उनका साथ। (70) यह कृपा है अल्लाह की ओर से और अल्लाह का ज्ञान पर्याप्त है।

(71) ऐ ईमान वालों, अपनी सावधानी कर लो फिर निकलो अलग-अलग या एकत्र होकर। (72) और तुममें कोई ऐसा भी है जो देर लगा देता है। फिर यदि तुमको कोई मुसीबत पहुँचे तो वह कहता है कि अल्लाह ने मुझ पर कृपा की कि मैं उनके साथ न था। (73) और यदि तुमको अल्लाह की कोई कृपा प्राप्त हो तो कहता है। मानो तुम्हारे और उसके बीच प्रेम का सम्बन्ध ही नहीं-कि काश मैं भी उनके साथ होता तो बड़ी सफलता प्राप्त करता। (74) अतः चाहिए कि अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें वह लोग, जो परलोक के बदले सांसारिक जीवन को बेच देते हैं। और जो व्यक्ति अल्लाह के मार्ग में लड़े, फिर मारा जाये या विजय प्राप्त करे तो हम उसको बड़ा बदला देंगे। (75) और तुमको क्या हुआ कि तुम युद्ध नहीं करते अल्लाह के मार्ग में और उन निर्बल मर्दों और औरतों और बच्चों के लिए जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार, हमको इस बस्ती से निकाल जिसके वासी अत्याचारी हैं और हमारे लिए अपने पास से कोई समर्थक पैदा कर दे और हमारे लिए अपने पास से कोई सहायक खड़ा कर दे। (76) जो लोग ईमान वाले हैं वह अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं। और जो अवज्ञाकारी हैं वह शैतान के मार्ग में लड़ते हैं। अतः तुम शैतान के साथियों से लड़ो। निस्सन्देह शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है।

(77) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि अपने हाथ रोके रखो और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (निर्धारित दान) दो। फिर जब उनको युद्ध का आदेश दिया गया तो उनमें से एक समूह मनुष्यों से ऐसा डरने लगा जैसे अल्लाह से डरना चाहिए या उससे भी अधिक, वह

कहते हैं ऐ हमारे पालनहार, तूने हम पर युद्ध क्यों अनिवार्य कर दिया। क्यों न छोड़े रखा हमको थोड़े और समय तक। कह दो कि सांसारिक लाभ थोड़ा है और परलोक बेहतर है उसके लिए जो परहेज़गारी (संयम) करे, और तुम्हारे साथ तनिक भी अत्याचार न होगा। (78) और तुम जहाँ भी होगे मौत तुमको पा लेगी यद्यपि सशक्त दुर्ग (क़िला) में हो, यदि उनको कोई भलाई पहुँचती है तो कहते हैं कि यह अल्लाह की ओर से है यदि उनको कोई बुराई पहुँचती है तो कहते हैं कि यह तुम्हारे कारण से है। कह दो कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है। उन लोगों को क्या हुआ है कि लगता है कि कोई बात ही नहीं समझते। (79) तुमको जो भलाई भी पहुँचती है, अल्लाह की ओर से पहुँचती है और तुमको जो बुराई पहुँचती है वह तुम्हारे अपने ही कारण से हैं। और हमने तुमको मनुष्यों की ओर पैग़म्बर बना कर भेजा है और अल्लाह की गवाही पर्याप्त है।

(80) जिसने रसूल (सन्देष्टा) का आज्ञापालन किया, उसने अल्लाह का आज्ञापालन किया और जो उल्टा फिरा तो हमने उन पर तुमको संरक्षक बनाकर नहीं भेजा है (81) और यह लोग कहते हैं कि हमको स्वीकार है। फिर जब तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उनमें से एक समूह उसके विरुद्ध परामर्श करता है जो वह कह चुका था। और अल्लाह उनकी कानाफूसियों को लिख रहा है। अतः तुम उनसे बचो और अल्लाह पर भरोसा रखो, और अल्लाह भरोसे के लिए पर्याप्त है। (82) क्या यह लोग क़ुरआन पर विचार नहीं करते, यदि यह अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की ओर से होता तो वह इसके अन्दर बहुत विरोधाभास पाते। (83) और जब उनको कोई बात शान्ति या भय की पहुँचती है तो वह उसको फैला देते हैं। और यदि वह उसको रसूल (सन्देष्टा) तक या अपने उत्तरदायी साथियों तक पहुँचाते तो उनमें से जो लोग जाँच करने वाले हैं वह उसकी वास्तविकता जान लेते। और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो कुछ लोगों के अतिरिक्त तुम सब शैतान के पीछे लग जाते।

(84) अतः लड़ो अल्लाह के मार्ग में। तुम पर अपने आपके अतिरिक्त किसी का दायित्व नहीं और ईमान वालों को उभारो। आशा है कि अल्लाह

अवज्ञाकारियों का बल तोड़ दे और अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और बहुत कठोर दण्ड देने वाला है। (85) जो व्यक्ति किसी अच्छी बात के पक्ष में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और जो उसके विरोध में कहेगा उसके लिए उसमें से हिस्सा है और अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखने वाला है। (86) और जब कोई तुमको दुआ दे (अभिवादन करे) तो तुम भी दुआ दो उससे अच्छी या उलट कर वही कह दो, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का हिसाब लेने वाला है। (87) अल्लाह ही उपास्य है, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह तुम सबको क़ियामत के दिन एकत्र करेगा जिसके आने में कोई सन्देह नहीं। और अल्लाह की बात से बढ़ कर सच्ची बात और किसकी हो सकती है।

(88) फिर तुमको क्या हुआ है कि तुम कपटाचारियों के मामले में दो पक्ष हो रहे हो। हालाँकि अल्लाह ने उनके कृत्यों के कारण उनको उल्टा फेर दिया है। क्या तुम चाहते हो कि उनको मार्ग पर लाओ जिनको अल्लाह ने भटका दिया है। और जिसको अल्लाह भटका दे, तुम कदापि उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते। (89) वह चाहते हैं कि जिस तरह उन्होंने अवज्ञा की है तुम भी अवज्ञा करो, ताकि तुम सब समान हो जाओ। अतः तुम उनमें से किसी को मित्र न बनाओ जब तक वह अल्लाह के मार्ग में हिजरत (प्रवास) न करें। फिर यदि वह इसको स्वीकार न करें तो उनको पकड़ो और जहाँ कहीं उनको पाओ उनकी हत्या करो और उनमें से किसी को मित्र और सहायक न बनाओ। (90) परन्तु वह लोग जिनका सम्बन्ध किसी ऐसी क़ौम (समूह) से हो जिनके साथ तुम्हारी सन्धि है या वह लोग जो तुम्हारे पास इस स्थिति में आयें कि उनके सीने तंग हो रहे हैं तुम्हारे युद्ध से और अपनी क़ौम के युद्ध से। और यदि अल्लाह चाहता तो उनको तुम पर वर्चस्व दे देता तो वह अवश्य तुमसे लड़ते। अतः यदि वह तुमको छोड़े रहें और तुमसे युद्ध न करें और तुम्हारे साथ समझौते का मामला करें तो अल्लाह तुमको भी उनके विरुद्ध किसी आक्रमण की अनुमति नहीं देता। (91) दूसरे कुछ ऐसे लोगों को भी तुम पाओगे जो यह चाहते हैं कि वह तुमसे भी शान्तिपूर्वक रहे और अपनी क़ौम से भी शान्तिपूर्वक रहें। जब कभी वह उपद्रव का अवसर पायें वह उसमें कूद पड़ते हैं। ऐसे लोग यदि तुमसे एकाग्र न रहें और तुम्हारे साथ सुलह का व्यवहार न रखें और अपने

हाथ न रोकें तो तुम उनको पकड़ो और उनको मारो जहाँ कहीं पाओ। यह लोग हैं जिनके विरुद्ध हमने तुमको स्पष्ट तर्क दिया है।

(92) और ईमान वाले का काम नहीं कि वह ईमान वाले की हत्या करे परन्तु यह कि भूलवश ऐसा हो जाये। और जो व्यक्ति किसी ईमान वाले की भूल से हत्या कर दे तो वह एक ईमान वाले दास को स्वतन्त्र करे और मृतक के उत्तराधिकारियों को ख़ून बहा (हत्या का अर्थदण्ड) दे सिवाय यह कि वह क्षमा कर दें। फिर मृतक यदि ऐसी क़ौम में से था जो तुम्हारी दुश्मन है और वह स्वंय ईमान वाले था तो वह एक ईमान वाले दास को स्वतन्त्र करे। और यदि वह ऐसी क़ौम से था कि तुम्हारे और उसके बीच सन्धि है तो वह उसके उत्तराधिकारियों को ख़ून बहा (हत्या का अर्थदण्ड) दे और एक ईमान वाला को स्वतन्त्र करे। फिर जिसको (दास स्वतन्त्र करने की क्षमता) प्राप्त न हो तो वह निरन्तर दो महीने के रोज़े रखे। यह तौबा है अल्लाह की ओर से। और अल्लाह जानने वाला विवेकशील है। (93) और जो व्यक्ति किसी ईमान वाले की जानबूझ कर हत्या करे तो उसका दण्ड नरक है जिसमें वह सदैव रहेगा और उस पर अल्लाह का क्रोध और उसकी फटकार है और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा दण्ड तैयार कर रखा है।

(94) ऐ ईमान वालों जब तुम अल्लाह के मार्ग में यात्रा करो तो अच्छी तरह जाँच लिया करो और जो व्यक्ति तुमको सलाम (शान्ति की कामना) करे, उसको यह न कहो कि तू ईमान वाले नहीं। तुम सांसारिक जीवन का सामान चाहते हो तो अल्लाह के पास बहुत अधिक उत्तम वस्तुएं हैं। तुम भी पहले ऐसे ही थे। फिर अल्लाह ने तुम पर कृपा की, तो जाँच कर लिया करो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे भिज्ञ है। (95) समान नहीं हो सकते अकारण बैठे रह जाने वाले ईमान वाले और वह ईमान वाले जो अल्लाह के मार्ग में लड़ने वाले हैं अपने माल और जान से। माल और जान से युद्ध करने वालों का दर्जा (स्तर) अल्लाह ने बैठे रहने वालों की तुलना में ऊँचा कर रखा है और प्रत्येक से अल्लाह ने भलाई का वादा किया है। और अल्लाह ने जेहाद (धर्म युद्ध) करने वालों को बैठे रहने वालों पर बदले में बड़ी बड़ाई दी है। (96) उनके लिए अल्लाह की ओर से बड़े दर्जे (पद) हैं और माफ़ी और दया है। और अल्लाह माफ़ी प्रदान करने वाला दया करने वाला है।

(97) जो लोग अपना बुरा कर रहे हैं, जब उनके प्राण फ़रिश्ते निकालेंगे तो वह उनसे पूछेंगे कि तुम किस हालत में थे। वह कहेंगे कि हम पृथ्वी में शक्तिहीन थे। फ़रिश्ते कहेंगे क्या अल्लाह की ज़मीन विस्तृत नहीं थी कि तुम प्रवास कर कहीं चले जाते। यह वे लोग हैं जिनका ठिकाना नरक है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (98) परन्तु वह विवश मर्द और औरतें और बच्चे जो कोई उपाय नहीं कर सकते और न कोई मार्ग पा रहे हैं, (99) यह लोग आशा है कि अल्लाह इन्हें क्षमा कर देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (100) और जो कोई अल्लाह के रास्ते में देश छोड़ेगा वह धरती में बहुत ठिकाने और बड़ी व्यापकता पायेगा और जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की ओर हिजरत करके निकले, फिर उसको मृत्यु आ जाये तो उसका बदला अल्लाह के यहाँ निर्धारित हो चुका और अल्लाह क्षमा करने वाला और दयावान है।

(101) और जब तुम धरती पर यात्रा करो तो तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम नमाज़ में कमी करो, यदि तुमको भय हो कि अवज्ञाकारी तुमको सताएँगे। निस्सन्देह अवज्ञाकारी लोग तुम्हारे खुले हुए शत्रु हैं (102) और जब तुम ईमान वालों के बीच हो (युद्ध की स्थिति में) और उनके लिए नमाज़ पढ़ाने खड़े हो, तो चाहिए कि उनका एक समूह तुम्हारे साथ खड़ा हो और वह अपने हथियार लिए हुए हो। अतः जब वह सजदा कर चुके तो वह तुम्हारे पास से हट जाये और दूसरा समूह आये जिसने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है और वह तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़े। और वह भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहे। अवज्ञाकारी लोग चाहते हैं कि तुम अपने हथियारों और सामान से किसी तरह असावधान हो जाओ तो वह तुम पर अचानक टूट पड़ें। और तुम्हारे ऊपर कोई गुनाह नहीं यदि तुमको वर्षा के कारण कष्ट हो या तुम बीमार हो तो अपने हथियार उतार दो और अपने बचाव का सामान लिए रहो। निस्सन्देह अल्लाह ने अवज्ञाकारियों के लिए अपमानजनक यातना तैयार कर रखी है। (103) अतः जब तुम नमाज़ पढ़ लो तो अल्लाह को याद करो खड़े और बैठे और लेटे। फिर जब निश्चितता की स्थिति आ जाये तो नमाज़ नियम अनुसार पढ़ो, निस्सन्देह नमाज़ ईमान वालों पर नियत समय के साथ फ़र्ज (अनिवार्य) है। (104) और क़ौम का पीछा करने से हिम्मत न हारो। यदि तुम दुख उठाते हो

तो वह भी तुम्हारी तरह दुख उठाते हैं और तुम अल्लाह से वह आशा रखते हो जो आशा वह नहीं रखते। और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है।

(105) निस्सन्देह हमने यह किताब तुम्हारी ओर तथ्यों के साथ उतारी है ताकि तुम लोगों के बीच उसके अनुसार फ़ैसला करो जो अल्लाह ने तुमको दिखाया है। और विश्वासघात करने वाले लोगों की ओर से झगड़ने वाले न बनो। (106) और अल्लाह से क्षमा माँगो। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला दया करने वाला है। (107) और तुम उन लोगों की ओर से न झगड़ो जो अपने आप से विश्वासघात कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पसन्द नहीं करता जो विश्वासघात करने वाला और पापी हो। (108) वह मनुष्यों से लज्जित होते हैं और अल्लाह से लज्जित नहीं होते, हालाँकि वह उनके साथ होता है जबकि वह कानाफूसी करते हैं उस बात की जिससे अल्लाह प्रसन्न नहीं। और जो कुछ वह करते हैं अल्लाह उसको अपनी परिधि में लिये हुए है।

(109) तुम लोगों ने सांसारिक जीवन में तो उनकी ओर से झगड़ा कर लिया। परन्तु क़ियामत (परलोक) के दिन कौन उनके बदले अल्लाह से झगड़ा करेगा या कौन होगा उनका काम बनाने वाला। (110) और जो व्यक्ति बुराई करे अथवा अपने आप पर अत्याचार करे फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो वह अल्लाह को क्षमा करने वाला, दया करने वाला पायेगा। (111) और जो व्यक्ति कोई गुनाह करता है तो वह अपने ही लिए करता है और अल्लाह जानने वाला, विवेकशील है। (112) और जो व्यक्ति कोई भूल या गुनाह करे और फिर उसका आरोप किसी निर्दोष पर लगा दे तो उसने एक बड़ा आरोप और खुला हुआ गुनाह अपने सिर ले लिया। (113) और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो उनमें से एक समूह ने तो निश्चय ही कर लिया था कि तुमको भटका कर रहेगा। हालाँकि वह अपने आप को भटका रहे हैं। वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिक्मत (सुन्नत/आदर्श) उतारी है और तुमको वह चीज़ सिखाई है जिसको तुम नहीं जानते थे और अल्लाह की कृपा है तुम पर बहुत बड़ी।

(114) इनकी अधिकतर कानाफूसियों में कोई भलाई नहीं। भलाई वाली कानाफूसी मात्र उसकी है जो दान करने को कहे या किसी भले काम के लिए

कहे अथवा लोगों में संधि कराने के लिए कहे। जो व्यक्ति अल्लाह की प्रसन्नता के लिए ऐसा करे तो हम उसको बड़ा बदला देंगे। (115) परन्तु जो व्यक्ति रसूल (सन्देष्टा) का विरोध करेगा और ईमान वालों के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चलेगा, हालाँकि उस पर सन्मार्ग स्पष्ट हो चुका, तो उसको हम उसी ओर चलायेंगे जिधर वह स्वंय फिर गया और उसको नरक में प्रवेश करेंगे और वह बुरा ठिकाना है।

(116) निस्सन्देह अल्लाह इसको क्षमा नहीं करेगा कि उसका साझीदार ठहराया जाये और इसके अतिरिक्त वह दूसरे गुनाहों को क्षमा कर देगा जिसके लिए चाहेगा। और जिसने अल्लाह का साझीदार ठहराया वह भटक कर बहुत दूर जा पड़ा। (117) वह अल्लाह को छोड़कर पुकारते हैं देवियों को और वह पुकारते हैं विद्रोही शैतान को। (118) उस पर अल्लाह ने फटकार की है। और शैतान ने कहा था कि मैं तेरे बन्दो से एक निश्चित हिस्सा लेकर रहूँगा। (119) मैं उनको बहकाऊँगा और उनको आशाएँ दिलाऊँगा और उनको सुझाऊँगा तो वह पशुओं के कान काटेंगे और उनको सुझाऊँगा तो वह अल्लाह की बनावट को बदलेंगे और जो व्यक्ति अल्लाह के अतिरिक्त शैतान को अपना मित्र एवं पथदर्शक बनाए तो वह खुले हुए घाटे में पड़ गया। (120) वह उनसे वादे करता है और उनको आशाएँ दिलाता है, और शैतान के सभी वादे धोखे के अतिरिक्त और कुछ नहीं। (121) ऐसे लोगों का ठिकाना नरक है और वह उससे बचने का कोई मार्ग न पायेंगे। (122) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किए उनको हम ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जिनमें वह सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का सच्चा वादा है और अल्लाह से बढ़ कर कौन अपनी बात में सच्चा होगा।

(123) न तुम्हारी अभिलाषाओं पर है और न किताब वालों की अभिलाषाओं पर। जो कोई भी बुरा करेगा उसका बदला पायेगा। और वह न पायेगा अल्लाह के अतिरिक्त अपना कोई समर्थक और न सहायक। (124) और जो व्यक्ति कोई भला कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत शर्त यह है कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे। और उन पर तनिक भी अत्याचार न होगा

(125) और उससे बेहतर किसका दीन (धर्म) है जो अपना चेहरा अल्लाह की ओर झुका दे और वह नेकी करने वाला हो। और वह चले इब्राहीम के दीन (धर्म) पर जो एकाग्रचित्र था। और अल्लाह ने इब्राहीम को अपना मित्र बना लिया था। (126) और अल्लाह का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती पर है और अल्लाह हर चीज़ को घेरे में लिये हुए है।

(127) और लोग तुमसे स्त्रियों के विषय में आदेश पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुम्हें उनके सम्बन्ध में निर्देश देता है और (याद दिलाता है) वह आयतें भी जो तुम्हें किताब में उन अनाथ औरतों के बारे में पढ़कर सुनाई जाती हैं जिनको तुम वह नहीं देते जो उनके लिए लिखा गया है और चाहते हो कि उनको निक़ाह में ले आओ। और जो आदेश कमज़ोर बच्चों के सम्बन्ध में हैं यह कि अनाथों के साथ न्याय करो और जो भलाई तुम करोगे, वह अल्लाह को भली-भाँति ज्ञात है। (128) और यदि किसी औरत को अपने पति की ओर से दुर्व्यवहार या विमुखता का डर हो तो इसमें कोई हानि नहीं कि दोनों परस्पर कोई समझौता कर लें और समझौता बेहतर है, और लालच मनुष्य के स्वभाव में बसा हुआ है। और यदि तुम अच्छा व्यवहार करो और धर्मपरायणता से काम लो तो जो कुछ तुम करोगे अल्लाह उससे भिज्ञ है। (129) और तुम कदापि औरतों को समान नहीं रख सकते यद्यपि तुम ऐसा करना चाहो। अतः पूर्णतः एक की ओर न झुक पड़ो कि दूसरी को लटकी हुई की तरह छोड़ दो। और यदि तुम सुधार कर लो और डरो तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (130) और यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह प्रत्येक को अपनी व्यापकता से निश्चिंत कर देगा। और अल्लाह बड़ी व्यापकता वाला, विवेक वाला है।

(131) और अल्लाह का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती पर है। और हमने आदेश दिया है उन लोगों को जिन्हें तुमसे पहले किताब दी गई और तुमको भी कि अल्लाह से डरो और यदि तुमने न माना तो अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह) है सभी सद्गुणों वाला है। (132) और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती पर है और भरोसे के लिए अल्लाह काफ़ी है। (133) यदि वह चाहे तो तुम सबको ले जाये। ऐ लोगों, और दूसरों को

ले आये। और अल्लाह इसकी क्षमता रखता है। (134) जो व्यक्ति सांसारिक पुण्य चाहता हो तो अल्लाह के पास सांसारिक पुण्य भी है और परलोक का पुण्य भी और अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है।

(135) ऐ ईमान वालों, न्याय पर भली-भाँति अडिग रहने वाले और अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनो, चाहे वह तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता या रिश्तेदारों के विरुद्ध हो। यदि कोई धनवान है या निर्धन तो अल्लाह तुमसे अधिक दोनों का हीतैषी है। अतः तुम इच्छाओं का अनुसरण न करो कि न्याय से हट जाओ। और यदि तुम हेर-फेर करोगे या अपना पहलू बचाओगे तो जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह उससे भिज्ञ है।

(136) ऐ ईमान वालों, ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल (सन्देष्टा) पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल (सन्देष्टा) पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी है। और जो व्यक्ति इन्कार करे अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसकी किताबों का और उसके रसूलों का और परलोक के दिन का तो वह भटक कर दूर जा पड़ा। (137) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये फिर इन्कार किया, फिर ईमान लाये फिर इन्कार किया, फिर इन्कार में बढ़ते गये तो अल्लाह उनको कदापि क्षमा न करेगा और न उनका मार्गदर्शन करेगा। (138) कपटाचारियों को शुभ-सूचना दे दो कि उनके लिए एक कष्टप्रद यातना है। (139) वह लोग जो ईमान वालों को छोड़कर अवज्ञा करने वालों को मित्र बनाते हैं, क्या वह उनके पास सम्मान ढूँढ रहे हैं, तो सम्मान सारा अल्लाह के लिए है।

(140) और अल्लाह अपनी किताब में तुम पर यह आदेश उतार चुका है कि जब तुम सुनो कि अल्लाह की निशानियों को झुठलाया जा रहा है और उनका उपहास किया जा रहा है तो तुम उनके साथ न बैठो यहाँ तक कि वह दूसरी बात में व्यस्त हो जायें। अन्यथा तुम भी उन्ही जैसे होगे। अल्लाह कपटाचारियों को और अवज्ञाकारियों को नरक में एक स्थान पर एकत्र करने वाला है। (141) वह कपटाचारी तुम्हारे लिए प्रतीक्षा में रहते हैं। यदि तुमको अल्लाह की ओर से कोई विजय प्राप्त होती है तो वह कहते हैं कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। और यदि अवज्ञाकारियों को कोई हिस्सा मिल जाये तो

उनसे कहेंगे कि क्या हम तुम्हारे विरुद्ध लड़ने की क्षमता न रखते थे और फिर भी हमने तुमको ईमान वालों से बचाया। तो अल्लाह ही तुम लोगों के बीच परलोक के दिन फ़ैसला करेगा और अल्लाह कदापि अवज्ञाकारियों को ईमान वालों पर कोई रास्ता नहीं देगा।

(142) कपटाचारी अल्लाह के साथ धोखेबाज़ी कर रहे हैं, हालाँकि अल्लाह ही ने उनको धोखे में डाल रखा है। और जब वह नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो आलस्य के साथ खड़े होते हैं मात्र लोगों को दिखाने के लिए। और वह अल्लाह को कम ही याद करते हैं। (143) वह दोनों (विश्वास और अविश्वास) के बीच लटक रहे हैं, न इधर हैं और न उधर। और जिसको अल्लाह भटका दे, तुम उसके लिए कोई मार्ग नहीं पा सकते। (144) ऐ ईमान वालों मोमिनों को छोड़कर सत्य का इनकार करने वालों को अपना मित्र न बनाओ। क्या तुम चाहते हो कि अपने ऊपर अल्लाह की खुली हुज्जत (स्पष्टतर्क) क़ायम कर लो। (145) निस्सन्देह कपटाचारी नरक के सबसे नीचे के वर्ग में होंगे और तुम उनका कोई सहायक न पाओगे। (146) हाँ, जो लोग तौबा करें और अपना सुधार कर लें और अल्लाह को दृढ़तापूर्वक पकड़ लें और अपने दीन (धर्म) को अल्लाह के लिए विशेष कर लें तो यह लोग ईमान वालों के साथ होंगे और अल्लाह ईमान वालों को बड़ा पुण्य देगा। (147) अल्लाह तुमको यातना देकर क्या करेगा, यदि तुम आभारी बनो और ईमान लाओ। अल्लाह बड़ा गुणग्राही (सम्मान करने वाला) हैं सब कुछ जानने वाला है।

(148) अल्लाह अपशब्द कहने को पसन्द नहीं करता अतिरिक्त इसके कि जिस पर अत्याचार हुआ हो और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (149) यदि तुम भलाई को प्रकट करो या उसको छिपाओ या किसी बुराई को क्षमा करो तो अल्लाह क्षमा करने वाला, क्षमता रखने वाला है। (150) जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) को झुठला रहे हैं और चाहते हैं कि अल्लाह और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) के बीच अंतर करें और कहते हैं कि हम किसी को मानेंगे और किसी को न मानेंगे। और वह चाहते हैं कि उसके बीच में एक रास्ता निकालें। (151) ऐसे लोग पक्के अवज्ञाकारी हैं और हमने अवज्ञाकारियों के लिए अपमान जनक यातना तैयार कर रखी है। (152) और

जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान लायें और उनमें से किसी में अन्तर न करें, उनको अल्लाह अवश्य उनका बदला उनको देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला और दयावान है।

(153) किताब वाले (यहूदी एवं ईसाई) तुमसे यह माँग करते हैं कि तुम उन पर आसमान से एक किताब उतार लाओ। तो मूसा से वह इससे बड़ी अपराधजनक माँग कर चुके हैं। उन्होंने कहा कि हमें अल्लाह का प्रत्यक्ष दर्शन करा दो। अतः उनके इस अत्याचार के कारण उन पर बिजली टूट पड़ी थी। फिर खुली निशानी आ चुकने के पश्चात उन्होंने बछड़े को उपास्य बना लिया। फिर हमने उसे क्षमा कर दिया। और मूसा को हमने खुली हुज्जत (स्पष्ट तर्क) दे दिया। (154) और हमने उनके ऊपर तूर पहाड़ को उठाया उनसे वचन लेने के लिए। और हमने उनसे कहा कि दरवाज़े में प्रवेश करो सिर झुकाये हुए और उनसे कहा कि सब्त (शनिवार) के मामले में अन्याय न करना। और हमने उनसे दृढ़ वचन लिया।

(155) उनको जो दण्ड मिला वह इस पर कि उन्होंने अपने वचन को तोड़ा और इस पर कि उन्होंने अल्लाह की निशानियों को झुठलाया और इस पर कि उन्होंने पैग़म्बरों की अनाधिकृत रूप से हत्या की और इस बातों के कहने पर कि हमारे दिल तो बन्द हैं---बल्कि अल्लाह ने उनकी अवज्ञा के कारण उनके दिलों पर मुहर लगा दी है तो वह कम ही ईमान लाते हैं (156) और उनकी अवज्ञा पर और मरियम पर बड़ा तूफ़ान बाँधने (आरोप लगाना) पर (157) और उनके इस कहने पर कि हमने मरियम के बेटे मसीह, अल्लाह के रसूल (सन्देष्टा) की हत्या कर दी---हालाँकि उन्होंने न उनकी हत्या की और न सूली पर चढ़ाया बल्कि मामला उनके लिए संदिग्ध कर दिया गया। और जो लोग इसमें मतभेद कर रहे हैं वह इसके सम्बन्ध में सन्देह में पड़े हुए हैं। उनको इसका कोई ज्ञान नहीं, वह मात्र अटकल (अनुमान) पर चल रहे हैं। और निस्सन्देह उन्होंने उसकी हत्या नहीं की। (158) बल्कि अल्लाह ने उसको अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह प्रभत्वशाली और तत्वदर्शी है।

(159) और किताब वालों (यहूदी व ईसाई) में से कोई ऐसा नहीं जो उसकी मृत्यु से पहले उस पर ईमान न ले आये और क़ियामत (परलोक)

के दिन वह उन पर गवाह होगा। (160) अतः यहूदियों के अत्याचार के कारण हमने वह पवित्र चीज़ें उन पर अवैध कर दीं जो उनके लिए वैध थीं। और इस कारण से कि वह अल्लाह के मार्ग से बहुत रोकते थे। (161) और इस कारण कि वह ब्याज लेते थे हालाँकि इससे उन्हें मना किया गया था और इस कारण से कि वह लोगों का माल अनाधिकृत रूप से खाते थे और हमने उनमें से अवज्ञाकारियों के लिए कष्टप्रद यातना तैयार कर रखी है। (162) परन्तु उनमें जो लोग ज्ञान में परिपक्व और सत्यपरायण हैं वह ईमान लाये हैं उस पर जो तुम्हारे ऊपर उतारा गया है, और जो तुमसे पहले उतारा गया और वह नमाज़ पढ़ने वाले हैं और ज़कात देने वाले हैं और अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर विशवास रखने वाले हैं। ऐसे लोगों को हम अवश्य बड़ा बदला देंगे।

(163) हमने तुम्हारी ओर वह्य (श्रुति) भेजी है जिस तरह हमने नूह और उसके बाद के पैग़म्बरों की ओर वह्य भेजी थी। और हमने इब्राहीम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और याक़ूब की सन्तान और ईसा और अय्यूब और यूनुस और हारून और सुलेमान की ओर वह्य भेजी थी। और हमने दाऊद को ज़बूर दी। (164) और हमने ऐसे रसूल (सन्देष्टा) भेजे जिनके विवरण हम तुमको पहले सुना चुके हैं और ऐसे रसूल भी जिनके विवरण हमने तुमको नहीं सुनाये। और मूसा से अल्लाह ने बात की। (165) अल्लाह ने रसूलों (सन्देष्टाओं) को शुभ सूचना देने वाले और डराने वाला बनाकर भेजा ताकि रसूलों (सन्देष्टाओं) के बाद लोगों के पास अल्लाह की तुलना में कोई तर्क शेष न रहे। और अल्लाह प्रभावशाली और तत्वदर्शी है।

(166) परन्तु अल्लाह गवाह है उस पर जो उसने तुम्हारे ऊपर उतारा है कि उसने इसको अपने ज्ञान के साथ उतारा है, और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं यद्यपि अल्लाह गवाही के लिए पर्याप्त है। (167) जिन लोगों ने झुठलाया और अल्लाह के रास्ते से रोका, वह भटक कर बहुत दूर निकल गये। (168) जिन लोगों ने झुठलाया और अत्याचार किया उनको अल्लाह कदापि क्षमा न करेगा और न ही उनको कोई रास्ता दिखायेगा (169) नरक के अतिरिक्त, जिसमें वह सदैव रहेंगे। और अल्लाह के लिए यह

आसान है। (170) ऐ लोगों, तुम्हारे पास रसूल (सन्देष्टा) आ चुका तुम्हारे पालनहार की स्पष्ट वाणी लेकर। अतः मान लो ताकि तुम्हारा भला हो। और यदि न मानोगे तो अल्लाह का है जो कुछ आकाशों में और पृथ्वी पर है और अल्लाह जानने वाला, विवेकशील है।

(171) ऐ किताब वालों (यहूदी व ईसाई) अपने दीन (धर्म) में अतिशयोक्ति न करो और अल्लाह के सम्बन्ध में कोई बात सत्य के अतिरिक्त न कहो। मरियम के बेटे ईसा तो मात्र अल्लाह के एक रसूल (सन्देष्टा) और उसका एक कलिमा (वाक्य) हैं जिसको उसने मरियम की ओर भेजा और उसकी ओर से एक आत्मा हैं। अतः अल्लाह और उसके रसूलों (सन्देष्टाओं) पर ईमान लाओ और यह न कहो कि अल्लाह तीन हैं। बाज़ आ जाओ, यही तुम्हारे लिए बेहतर है। उपास्य तो मात्र एक अल्लाह ही है। वह पवित्र है कि उसके सन्तान हो। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती पर है और अल्लाह ही काम बनाने के लिए पर्याप्त है। (172) मसीह को कदापि अल्लाह का बन्दा बनने में संकोच न होगा और न निकट रहने वाले फ़रिश्तों को संकोच होगा और जो अल्लाह की बन्दगी से लज्जा करेगा और घमण्ड करेगा तो अल्लाह अवश्य सबको अपने पास एकत्र करेगा। (173) फिर जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने भले कर्म किये तो उनको वह पूरा-पूरा बदला देगा और अपनी कृपा से उनको अतिरिक्त भी देगा। और जिन लोगों ने तिरस्कार और घमण्ड किया होगा उनको कष्टप्रद यातना देगा। (174) और वह अल्लाह की तुलना में न किसी को अपना मित्र पायेंगे और न सहायक।

(175) ऐ लोगों, तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक तर्क आ चुका है और हमने तुम्हारे ऊपर एक स्पष्ट प्रकाश उतार दिया। (176) अतः जो लोग अल्लाह पर ईमान लाये और उसको दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया उनको अवश्य अल्लाह अपनी दया और कृपा में प्रवेश देगा और उनको अपनी ओर सीधा रास्ता दिखायेगा। (177) लोग तुमसे आदेश पूछते हैं। कह दो अल्लाह तुमको कलालः (वह मृतक जिसके न माँ-बाप जीवित हों और न सन्तान) के सम्बन्ध में आदेश बताता है। यदि कोई व्यक्ति मर जाये और उसकी कोई सन्तान न हो और उसके एक बहन हो तो उसके लिए उसके छोड़े

माल का आधा है। और वह मर्द उस बहन का वारिस होगा यदि उस बहन के कोई सन्तान न हो। और यदि दो बहने हों तो उनके लिए उसके छोड़े हुए माल का दो तिहाई होगा। और यदि अनेक भाई-बहिन, मर्द-औरतें हों तो एक मर्द के लिए दो औरतों के बराबर हिस्सा है। अल्लाह तुम्हारे लिए बयान करता है, ताकि तुम न भटको और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

5. सूरह अल-माइदह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ ईमान वालों, वचन को पूरा करो। तुम्हारे लिए चौपायों की प्रजाति के सभी जानवर हलाल (वैध) किये गये, अतिरिक्त उनके, जिनका उल्लेख आगे किया जा रहा है। परन्तु इहराम (हज के लिए विशेष परिधान पहनकर तैयार होने) की स्थिति में शिकार को वैध न समझो। अल्लाह आदेश देता है जो चाहता है।

(2) ऐ ईमान वालों, अल्लाह के प्रतीकों का अपमान न करो और न निषिद्ध महीनों का और निषिद्ध क्षेत्र में बलि के जानवरों का, और न पट्टे बँधे हुए चढ़ावे के जानवरों का, और प्रतिष्ठित घर की ओर आने वालों का जो अपने पालनहार की कृपा और उसकी प्रसन्नता ढूँढने निकले हैं। और जब तुम इहराम की स्थिति से बाहर आ जाओ तो शिकार करो। और किसी समूह की शत्रुता कि उसने तुमको मस्जिद-ए-हराम प्रतिष्ठित घर से रोका है, तुमको इस बात पर न उभारे कि तुम अन्याय करने लगो। तुम भलाई और धर्मपरायण ाता में एक-दूसरे की सहायता करो और पाप और अन्याय में एक दूसरे की सहायता न करो। अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

(3) तुम्हारे लिए अवैध किया गया मुर्दार और ख़ून और सूअर का माँस और वह जानवर जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और नाम पर ज़बह (क़ुर्बान करना) किया गया हो और वह जो मर गया हो गला घोंटने से या चोट से या ऊँचाई से गिरकर या सींग मारने से और वह जिसको शिकारी जानवरों ने खाया हो, परन्तु जिसको तुमने ज़बह कर लिया, और वह जो किसी स्थान पर

ज़बह किया गया हो, और यह कि बँटवारा करो जूएँ के तीरों से। यह पाप के कर्म हैं। आज अवज्ञाकारी तुम्हारे दीन की ओर से निराश हो गये। अतः तुम उनसे न डरो, मात्र मुझसे डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन (धर्म) को पूरा कर दिया और तुम पर अपनी कृपा पूरी कर दी और तुम्हारे लिए इस्लाम को दीन (धर्म) की हैसियत से पसन्द कर लिया। अतः जो भूख़ से विवश हो जाये, परन्तु वह पाप की प्रवृत्ति न रखे तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपाशील है।

(4) वह पूछते हैं कि उनके लिए क्या चीज़ वैध की गई है। कहो कि तुम्हारे लिए स्वच्छ चीज़ें हलाल हैं। और शिकारी जानवरों में से जिनको तुमने सधाया है, तुम उनको सिखाते हो उसमें से जो अल्लाह ने तुमको सिखाया। अतः तुम उनके शिकार में से खाओ जो वह तुम्हारे लिए पकड़ रखें। और उन पर अल्लाह का नाम लो और अल्लाह से डरो, अल्लाह निस्सन्देह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (5) आज तुम्हारे लिए सभी सुथरी चीज़ें वैध कर दी गईं। और किताब वालों (यहूदियों और ईसाईयों) का खाना तुम्हारे लिए वैध है और तुम्हारा खाना उनके लिए वैध है। और वैध हैं तुम्हारे लिए पाक-दामन औरतें ईमान वाली औरतों में से और पाक-दामन औरतें उनमें से जिनको तुमसे पहले किताब दी गई, जब तुम उन्हें उनके महर दे दो इस प्रकार कि तुम निकाह में लाने वाले हो, न प्रत्यक्ष व्यभिचार करो और न गुप्त प्रेम सम्बन्ध रखो। और जो व्यक्ति ईमान (विश्वास) के साथ अवज्ञा करेगा तो उसका कर्म नष्ट हो जायेगा और वह परलोक में हानि उठाने वालों में से होगा।

(6) ऐ ईमान वालों, जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों और अपने हाथों को कुहनियों तक धोओ और अपने सिरों का मसह (हाथ भिगोकर सिर पर फेरना) करो और अपने पैरों को टखनों तक धोओ और यदि तुम अपवित्र हो तो स्नान कर लो। और यदि तुम रोगग्रस्त हो या यात्रा में हो या तुममें से कोई (शौचालय से) निवृत्त होकर आये या तुमने पत्नी से सहवास किया हो फिर तुमको पानी न मिले तो पवित्र मिट्टी से तयम्मुम कर लो और अपने चेहरों और हाथों पर उससे मसह कर लो। अल्लाह नहीं चाहता है कि

वह तुम पर कोई कठिनाई डाले, बल्कि वह चाहता है कि तुमको पवित्र करे और तुम पर अपनी कृपा पूरी करे ताकि तुम आभार प्रकट करने वाले बनो।

(7) और अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो और उसके उस प्रण को याद करो जो उसने तुमसे लिया है। जब तुमने कहा कि हमने सुना और हमने माना। और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बात तक जानता है। (8) ऐ ईमान वालों, अल्लाह के लिए दृढ़ रहने वाले और न्याय के साथ गवाही देने वाले बनो। और किसी समूह की शत्रुता तुमको इस बात पर न उभारे कि तुम न्याय न करो, न्याय करो, यही ईश-परायणता से अधिक निकट है और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किये उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए माफ़ी है और बड़ा बदला है। (10) और जिन्होंने अवज्ञा की और हमारे प्रतीकों को झुठलाया, ऐसे लोग नरक वाले हैं। (11) ऐ ईमान वालों, अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो जब एक क़ौम ने निश्चय किया कि वह तुम पर हाथ उठाये तो अल्लाह ने तुमसे उनके हाथ को रोक दिया। और अल्लाह से डरो और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(12) और अल्लाह ने इस्राईल की सन्तान से प्रण लिया और हमने उनमें 12 सरदार नियुक्त किए। और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ। यदि तुम नमाज़ स्थापित करोगे और ज़कात अदा करोगे और मेरे पैग़म्बरों (सन्देष्टाओं) पर विश्वास करोगे और उनकी सहायता करोगे और अल्लाह को अच्छा ऋण दोगे तो मैं तुमसे तुम्हारे पाप अवश्य दूर करुँगा और तुमको अवश्य ऐसे बाग़ों में प्रवेश दूँगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अतः तुममें से जो व्यक्ति इसके बाद अवज्ञा करेगा तो वह सन्मार्ग से भटक गया। (13) अतः उनके द्वारा बार-बार वचन भंजन के कारण हमने उन पर फटकार कर दी और हमने उनके दिलों को कठोर कर दिया। वह वाक्यों को उसके स्थान से बदल देते हैं। और जो कुछ उनको उपदेश दिया गया था, उसका बड़ा भाग वह भुला बैठे। और तुम निरन्तर उनके किसी न किसी विश्वासघात से भिज्ञ होते रहते हो, अतिरिक्त

थोड़े लोगों के। उनको क्षमा करो और ध्यान न दो, अल्लाह भलाई करने वालों को पसन्द करता है।

(14) और जो लोग कहते हैं कि हम नसरानी (सहायता करने वाले इसाई) हैं, उनसे हमने प्रण लिया था। अतः जो कुछ उनको उपदेश दिया गया था उसका बड़ा भाग वह भुला बैठे। फिर हमने क़ियामत तक के लिए उनके बीच शत्रुता और ईर्ष्या डाल दी और अन्ततः अल्लाह उनको सूचित कर देगा उससे जो कुछ वह कर रहे थे।

(15) ऐ किताब वालों, तुम्हारे पास हमारा सन्देष्टा आया है। वह अल्लाह की किताब की बहुत सी उन बातों को तुम्हारे सामने खोल रहा है जिनको तुम छिपाते थे। और वह दरगुज़र करता है बहुत सी चीज़ों से। निस्सन्देह, तुम्हारे पास अल्लाह की ओर से एक प्रकाश और एक प्रकट करने वाली किताब आ चुकी है। (16) इसके माध्यम से अल्लाह उन लोगों को शान्ति के मार्ग दिखाता है जो उसकी प्रसन्नता के इच्छुक हैं और वह अपनी अनुकम्पा से उनको अधेरों से निकाल कर प्रकाश में ला रहा है और सीधे रास्ते की ओर उनका मार्गदर्शन करता है। (17) निस्सन्देह, उन लोगों ने अवज्ञा की जिन्होंने कहा कि अल्लाह ही तो मरियम का बेटा मसीह है। कहो फिर कौन अधिकार रखता है अल्लाह के आगे यदि वह चाहे कि मृत्यु प्रदान कर दे मसीह को और उनकी माँ को और जितने लोग पृथ्वी पर हैं सबको। और अल्लाह ही के लिए है साम्राज्य आकाशों और पृथ्वी का और जो कुछ उनके बीच है। वह पैदा करता है जो कुछ चाहता है और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

(18) और यहूदी और ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के बेटे और उसके चहेते हैं। तुम कहो कि फिर वह तुम्हारे पापों पर तुमको दण्ड क्यों देता है। नहीं, बल्कि तुम भी उसकी पैदा की हुई रचना में से एक मनुष्य हो। वह जिसको चाहेगा क्षमा कर देगा और जिसको चाहेगा दण्ड देगा। और अल्लाह ही के लिए है साम्राज्य आकाशों और पृथ्वी का और जो कुछ उनके मध्य है और उसी की ओर लौट कर जाना है। (19) ऐ किताब वालों, तुम्हारे पास हमारा सन्देष्टा आया है, वह तुमको स्पष्ट सूचनाएँ दे रहा है, सन्देष्टाओं के

एक अन्तराल के उपरान्त। ताकि तुम यह न कहो कि हमारे पास कोई शुभ सूचना देने वाला और भय सुनाने वाला नहीं आया। अतः अब तुम्हारे पास शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला आ गया है और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

(20) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो कि उसने तुम्हारे अन्दर सन्देष्टा पैदा किए। और तुमको शासक बनाया और तुमको वह दिया जो संसार में किसी को नहीं दिया था। (21) ऐ मेरी क़ौम, उस पवित्र भूमि में प्रविष्ट हो जाओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है। और अपनी पीठ की ओर न लौटो अन्यथा घाटे में पड़ जाओगे। (22) उन्होंने कहा कि ऐ मूसा, वहाँ एक ताक़तवर क़ौम रहती है। हम कदापि वहाँ न जायेंगे जब तक कि वह वहाँ से न निकल जायें। यदि वह वहाँ से निकल जायें तो हम प्रवेश करेंगे। (23) दो व्यक्ति जो अल्लाह से डरने वालों में से थे और उन दोनों को अल्लाह ने पुरस्कृत किया था, उन्होंने कहा कि तुम उन पर आक्रमण करके नगर के फाटक में दाख़िल हो जाओ। (24) जब तुम उसमें प्रवेश करोगे तो तुम ही वर्चस्व प्राप्त करोगे और अल्लाह पर भरोसा करो यदि तुम ईमान वाले हो। उन्होंने कहा कि ऐ मूसा, हम कदापि वहाँ प्रवेश न करेंगे जब तक वह लोग वहाँ हैं। अतः तुम और तुम्हारा पालनहार दोनों जाकर लड़ो, हम यहाँ बैठे हैं।

(25) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, अपने और अपने भाई के अतिरिक्त किसी पर मेरा अधिकार नहीं। अतः तू हमारे और इस कृतघ्न क़ौम के बीच अलगाव कर दे। (26) अल्लाह ने कहा : वह देश उन पर 40 वर्ष के लिए अवैध कर दिया गया। ये लोग पृथ्वी पर भटकते फिरेंगे। अतः तुम इस कृतघ्न क़ौम पर दुखी न हो।

(27) और उनको आदम के दो बेटों (हाबील, काबील) की कहानी सच्चाई के साथ सुनाओ। जबकि उन दोनों ने भेंट प्रस्तुत की तो उनमें से एक की भेंट स्वीकृत हुई और दूसरे की भेंट स्वीकृत न हुई। उसने कहा मैं तुझको मार डालूँगा। उसने उत्तर दिया कि अल्लाह तो मात्र डरने वालों से स्वीकार करता है। (28) यदि तुम मुझे हत्या करने के लिए हाथ उठाओगे तो मैं तुम्हारी

हत्या करने के लिए तुम पर हाथ नहीं उठाऊँगा। मैं डरता हूँ अल्लाह से जो सम्पूर्ण संसार का पालनहार है। (29) मैं चाहता हूँ कि मेरा और अपना पाप तू ही ले ले फिर तू आग वालों में सम्मिलित हो जाये। और यही दण्ड है अत्याचार करने वालों का।

(30) फिर उसके मन ने उसको अपने भाई की हत्या पर आमादा कर दिया और उसने उसकी हत्या कर डाली। फिर वह हानि उठाने वालों में सम्मिलित हो गया। (31) फिर अल्लाह ने एक कौवे को भेजा जो भूमि में कुरेदता था, ताकि वह उसको दिखाये कि वह अपने भाई के शव को किस तरह छिपाये। उसने कहा अफ़सोस मेरी दशा पर कि मैं इस कौवे जैसा भी न हो सका कि अपने भाई के शव को छिपा देता। अतः वह बहुत लज्जित हुआ।

(32) इसी कारण से हमने इस्राईल की सन्तान पर यह लिख दिया कि जो व्यक्ति किसी की हत्या करे बिना इसके कि उसने किसी की हत्या की हो अथवा पृथ्वी पर उपद्रव किया हो तो जैसे कि उसने सारी मानवता की हत्या कर ड़ाली और जिसने एक जान को बचाया, तो उसने सारी मानवता को बचा लिया। और हमारे सन्देष्टा उनके पास स्पष्ट निर्देश लेकर आये। इसके बावजूद उनमें से बहुत से लोग पृथ्वी पर अति (ज़ियादतियां) करते हैं। (33) जो लोग अल्लाह और उसके सन्देष्टा से लड़ते हैं और पृथ्वी पर उपद्रव करने के लिए दौड़ते हैं, उनका दण्ड यही है कि उनकी हत्या की जाये या वह सूली पर चढ़ाये जायें या उनके हाथ-पैर विपरीत दिशाओं से काटे जायें या उनको देश से बाहर निकाल दिया जाये। यह उनका अपमान संसार में है और परलोक में उनके लिए बड़ी यातना है। (34) परन्तु जो लोग तौबा कर लें तुम्हारे काबू पाने से पहले, तो जान लो कि अल्लाह क्षमा करने वाला दया करने वाला है।

(35) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो और उसकी निकटता तलाश करो और उसके मार्ग में संघर्ष करो ताकि तुम सफलता पाओ। (36) निस्सन्देह जिन लोगों ने अवज्ञा की है यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो पृथ्वी पर है और इतना ही और हो, ताकि वह उसको अर्थ-दण्ड के रूप में देकर क़यामत के दिन की यातना से छूट जायें, तब भी वह उनसे स्वीकार न किया जायेगा और उनके लिए पीड़ादायक यातना है। (37) वह चाहेंगे कि आग

से निकल जायें परन्तु वह इससे निकल न सकेंगे और उनके लिए एक स्थायी दण्ड है। (38) और चोरी करने वाले पुरुष और चोरी करने वाली स्त्रियाँ दोनो के हाथ काट दो। यह उनके लिए उनके किए का बदला है और अल्लाह की ओर से शिक्षाप्रद दण्ड। और अल्लाह शक्तिवान और विवेकशील है। (39) फिर जिसने अपने अत्याचार के बाद तौबा की और सुधार कर लिया तो अल्लाह निस्सन्देह उसकी ओर ध्यान देगा। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (40) क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह पृथ्वी और आकाशों के साम्राज्य का स्वामी है। वह जिसको चाहे दण्ड दे और जिसको चाहे क्षमा कर दे और अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है।

(41) ऐ पैग़म्बर, तुमको वह लोग चिन्ता में न डालें जो अवज्ञा के मार्ग में बड़ी तत्परता दिखा रहे हैं। चाहे वह उनमें से हों जो अपने मुँह से कहते हैं कि हम ईमान लाये, हालाँकि उनके दिल ईमान नहीं लाये, या उनमें से हों जो यहूदी हैं, झूठ के बड़े सुनने वाले, सुनने वाले दूसरे लोगों के लिए जो तुम्हारे पास नहीं आये। वह शब्दों को उसके स्थान से हटा देते हैं। वह लोगों से कहते है कि यदि तुमको यह आदेश मिले तो स्वीकार कर लेना और यह आदेश न मिले तो उससे बचकर रहना। और जिसको अल्लाह परीक्षा में डालना चाहे तो तुम अल्लाह के मुक़ाबले में उसके मामले में कुछ नहीं कर सकते। यही वह लोग हैं कि अल्लाह ने न चाहा कि वह उनके दिलों को पवित्र करे। उनके लिए संसार में अपमान है और परलोक में उनके लिए बड़ी यातना है।

(42) वह झूठ के बड़े सुनने वाले हैं, हराम (अनैतिकत तरीक़ों से कमाया धन) के बड़े खाने वाले हैं। यदि वह तुम्हारे पास आयें तो चाहे उनके बीच फ़ैसला करो या उनको टाल दो। यदि तुम उनको टाल दोगे तो वह तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते। और यदि तुम फ़ैसला करो तो उनके बीच न्याय के अनुसार फ़ैसला करो। (43) अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। वह कैसे तुमको पंच बनाते हैं, जबकि उनके पास तौरात है जिसमें अल्लाह का आदेश मौजूद है, और फिर वह उससे मुँह मोड़ रहे हैं। और ये लोग कदापि ईमान वाले नहीं हैं।

(44) निस्सन्देह हमने तौरात उतारी, जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश है।

उसी तौरात के अनुसार, अल्लाह के कृतज्ञ पैग़म्बर यहूदी लोगों का फ़ैसला करते थे, और उनके धर्मअधिकारी और शास्त्रवेत्ता भी। इसलिए कि वह अल्लाह की किताब पर संरक्षक नियुक्त किए गये थे। और वह इसके गवाह थे। फिर तुम इन्सानों से न डरो, मुझसे डरो और मेरी आयतों को निकृष्ट चीज़ के बदले में न बेचो। और जो कोई उसके आदेश अनुसार न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग अधर्मी हैं। (45) और हमने उस किताब (तौरात) में उन पर लिख दिया कि जान के बदले जान और आँख के बदले आँख और नाक के बदले नाक और कान के बदले कान और दाँत के बदले दाँत और घाव का बदला उनके बराबर। फिर जिसने उसको क्षमा कर दिया तो वह उसके लिए प्रायश्चित है। और जो व्यक्ति उसके आदेश अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा है तो वही लोग अत्याचारी हैं। (46) और हमने उनके पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजा पुष्टि करते हुए अपने से पहले की किताब तौरात की और हमने उसको इन्जील दी जिसमें मार्गदर्शन और प्रकाश है और वह पुष्टि करने वाली थी अपने से पूर्व किताब तौरात की और मार्गदर्शन और उपदेश डरने वालों के लिए।

(47) और चाहिए कि इन्जील वाले उसके अनुसार फ़ैसला करें जो अल्लाह ने उसमें उतारा है। और जो कोई उसके अनुसार फ़ैसला न करे जो अल्लाह ने उतारा तो वही लोग अकृतज्ञ हैं।

(48) और हमने तुम्हारी ओर किताब उतारी सच्चाई के साथ, पुष्टि करने वाली पिछली किताब की और संरक्षक उसके विषय की। अतः तुम उनके बीच फ़ैसला करो उसके अनुसार जो अल्लाह ने उतारा है। और जो सच्चाई तुम्हारे पास आई है उसको छोड़कर उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो। हमने तुममें से प्रत्येक के लिए एक धर्मविधान और एक कर्म-पथ निर्धारित किया है। और यदि अल्लाह चाहता तो तुमको एक ही समुदाय बना देता। परन्तु अल्लाह ने चाहा कि वह अपने दिये हुए आदेशों में तुम्हारी परीक्षा ले। अतः तुम भलाईयों की ओर दौड़ो। अन्ततः तुम सबको अल्लाह की ओर पलटकर जाना है। फिर वह तुमको सूचित कर देगा उस चीज़ से जिसमें तुम आपस में मतभेद कर रहे थे।

(49) और उनके बीच उसके अनुसार निर्णय करो जो अल्लाह ने उतारा है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो और उन लोगों से बचो कि कहीं वह तुमको फिसला दें, तुम्हारे ऊपर अल्लाह के भेजे हुए किसी आदेश से। अतः यदि वह फिर जायें तो जान लो कि अल्लाह उनको उनके कुछ पापों का दण्ड देना चाहता है। और सच्चाई यह है कि लोगों में से अधिक लोग अवज्ञाकारी हैं। (50) क्या यह लोग अज्ञानता का निर्णय चाहते हैं। और अल्लाह से बढ़ कर किसका निर्णय हो सकता है, उन लोगों के लिए जो विश्वास करना चाहें।

(51) ऐ ईमान वालों, यहूदियों और ईसाईयों को मित्र न बनाओ। वह एक दूसरे के मित्र हैं। और तुममें से जो व्यक्ति उनको अपना मित्र बनायेगा तो वह उन्हीं में से होगा। अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता। (52) तुम देखते हो कि जिनके दिलों में रोग है, वह उन्हीं की तरफ दौड़ रहे हैं। वह कहते हैं कि हमको यह आशंका है कि हम किसी विपत्ति में न फँस जायें। तो संभव है कि अल्लाह विजय प्रदान कर दे अथवा अपनी ओर से कोई विशेष बात प्रकट करे, तो यह लोग उस चीज़ पर जिसको यह अपने दिलों में छिपाए हुए हैं, लज्जित होंगे। (53) और उस समय ईमान वाले कहेंगे क्या यह वही लोग हैं जो ज़ोर-शोर से अल्लाह की क़समें खाकर विश्वास दिलाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं। उनके सम्पूर्ण कर्म नष्ट हो गये और वह घाटे में रहे।

(54) ऐ ईमान वालों, तुममें से जो व्यक्ति अपने दीन (धर्म) से फिर जाये तो अल्लाह शीघ्र ही ऐसे लोगों को उठायेगा जो अल्लाह को प्रिय होंगे और अल्लाह उनको प्रिय होगा। वह ईमान वालों के लिए कोमल होंगे और अवज्ञाकारियों के ऊपर कठोर होंगे। वह अल्लाह के मार्ग में जिहाद (धर्म के मार्ग में कड़ा संघर्ष) करेंगे और किसी भर्तसना करने वाले की भर्तसना से न डरेंगे। यह अल्लाह की कृपा है। वह जिसको चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह व्यापकता वाला और ज्ञान वाला है। (55) तुम्हारे मित्र तो केवल अल्लाह और उसका सन्देष्टा और वह ईमान वाले हैं जो नमाज़ स्थापित करते हैं और ज़कात देते हैं और वह अल्लाह के सामने झुकने वाले हैं। (56) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके सन्देष्टा और ईमान वालों को मित्र बनाये तो निस्सन्देह अल्लाह का दल ही वर्चस्व प्राप्त करने वाला है।

(57) ऐ ईमान वालों, उन लोगों को अपना मित्र न बनाओ जिन्होंने तुम्हारे दीन (धर्म) को उपहास और खेल बना लिया है, उन लोगों में से जिनको तुमसे पहले किताब दी गई और न अवज्ञाकारियों को। और अल्लाह से डरते रहो यदि तुम ईमान वाले हो। (58) और जब तुम नमाज़ के लिए पुकारते हो तो वह लोग उसको उपहास और खेल बना लेते हैं। इसका कारण यह है कि वह समझ नहीं रखते। (59) कहो कि ऐ किताब वालों, तुम हमसे मात्र इसलिए हठ रखते हो कि हम ईमान लाये अल्लाह पर और उस पर जो हमारी ओर उतारा गया और उस पर जो हमसे पहले उतारा गया। और तुममें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं। (60) कहो, क्या मैं तुमको बताऊँ वह जो अल्लाह के निकट परिणाम के अनुसार इससे भी अधिक बुरा है। वह जिस पर अल्लाह ने फटकार की और जिस पर उसका क्रोध हुआ। और जिनमें से बन्दर और सूअर बना दिये गये और उन्होंने शैतान की पूजा की। ऐसे लोग परिस्थिति के अनुसार अधिक बुरे और सन्मार्ग से बहुत दूर हैं।

(61) और जब वह तुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं कि हम ईमान लाये, हालाँकि वह अवज्ञाकारी बनकर आये थे और अवज्ञाकारी की दशा में ही चले गये। और अल्लाह भली-भाँति जानता है उस चीज़ को जिसे वह छिपा रहे हैं। (62) और तुम उनमें से अधिकतर को देखोगे कि वह पाप और अन्याय और हराम खाने पर दौड़ते हैं। कैसे बुरे कर्म हैं जो वह कर रहे हैं। (63) उनके धर्मज्ञाता और बड़े लोग उनको क्यों नहीं रोकते पाप की बात कहने से और हराम खाने से, कैसे बुरे कृत्य हैं जो वह कर रहे हैं।

(64) और यहूदी कहते हैं कि अल्लाह के हाथ बँधे हुए हैं। उन्हीं के हाथ बँध जायें और फटकार हो उन पर इस बात के कहने पर, बल्कि अल्लाह के दोनों हाथ खुले हुए हैं। वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। और तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार की ओर से जो कुछ उतरा है, वह उनमें से अधिकतर लोगों का विद्रोह और उनकी अवज्ञा बढ़ा रहा है। और हमने उनके मध्य शत्रुता और ईर्ष्या क़यामत तक के लिए डाल दी है। जब कभी वह लड़ाई की आग

भड़काते हैं तो अल्लाह उसको बुझा देता है। और वह पृथ्वी पर फ़साद फैलाने में सक्रिय हैं, जबकि अल्लाह फ़साद फैलाने वालों को पसन्द नहीं करता।

(65) और यदि किताब वाले ईमान लाते और अल्लाह से डरते तो हम अवश्य उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर देते और उनको नेमत के बाग़ों में प्रविष्ट करते। (66) और यदि वह तौरात और इन्जील का पालन करते और उसकी जो उन पर उनके पालनहार की ओर से उतारा गया है तो वह खाते अपने ऊपर से और अपने क़दमों के नीचे से। कुछ लोग उनमें सीधे रास्ते पर हैं। लेकिन अधिकांश उनमें ऐसे लोग हैं जो बहुत बुरा कर रहे हैं।

(67) ऐ पैग़म्बर, जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है तुम उसको पहुँचा दो। और यदि तुमने ऐसा न किया तो तुमने अल्लाह के सन्देश को नहीं पहुँचाया। और अल्लाह तुमको लोगों से बचायेगा। अल्लाह निश्चय ही अवज्ञाकारी लोगों को मार्ग नहीं देता।

(68) कह दो, ऐ किताब वालों तुम किसी चीज़ पर नहीं, जब तक तुम स्थापित न करो तौरात और इन्जील को और उसको जो तुम्हारे ऊपर उतरा है तुम्हारे पालनहार की ओर से। और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है, वह निश्चित रूप से उनमें से अधिकतर के विद्रोह और अवज्ञा को बढ़ायेगा। अतः तुम झुठलाने वालों के ऊपर पश्चाताप न करो। (69) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और जो लोग यहूदी हुए और साबी और नसरानी (इसाई), जो व्यक्ति भी ईमान लाये अल्लाह पर और परलोक के दिन पर और भले कर्म करे तो उनके लिए न कोई डर है और न वह दुखी होंगे।

(70) हमने इस्राइल की सन्तान से प्रण लिया और उनकी ओर बहुत से सन्देष्टा भेजे। जब कोई सन्देष्टा उनके पास ऐसी बात लेकर आया जिसको उनका जी न चाहता था तो कुछ को उन्होने झुठलाया और कुछ की हत्या कर दी। (71) और यह समझा कि कुछ बुराई न होगी। अतः वह अन्धे और बहरे बन गये। फिर अल्लाह ने उन पर दया-दृष्टि डाली। फिर उनमें से बहुत से अन्धे और बहरे बन गये। और अल्लाह देखता है जो कुछ वह कर रहे हैं।

(72) निश्चय ही उन लोगों ने अवज्ञा की जिन्होंने कहा कि अल्लाह तो यही

मरियम का बेटा मसीह है। हालाँकि मसीह ने कहा था कि ऐ इस्राइल की सन्तान, अल्लाह की इबादत करो जो मेरा रब है और तुम्हारा रब भी। जो व्यक्ति अल्लाह का साझीदार ठहरायेगा तो अल्लाह ने अवैध कर दी उस पर जन्नत और उसका ठिकाना आग है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं। (73) निश्चय ही उन लोगों ने अवज्ञा की जिन्होंने कहा कि अल्लाह तीन में का तीसरा है। हालाँकि कोई उपास्य नहीं सिवाय एक उपास्य के। और यदि वह न रुके उससे जो वह कहते हैं तो उनमें से अवज्ञा पर अटल रहने वालों को एक पीड़ादायक यातना पकड़ेगी। (74) यह लोग अल्लाह के सामने तौबा क्यों नहीं करते और उससे क्षमा क्यों नहीं चाहते। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (75) मरियम के बेटे मसीह तो मात्र एक सन्देष्टा हैं। उनसे पहले भी बहुत से सन्देष्टा गुज़र चुके हैं। और उनकी माँ सत्यवती महिला थीं। दोनों खाना खाते थे। देखो हम किस प्रकार उनके सामने तर्क बयान कर रहे हैं। पुनः देखो वह किधर उल्टे चले जा रहे हैं। (76) कहो, क्या तुम अल्लाह को छोड़कर ऐसी चीज़ की उपासना करते हो जो न तुम्हें हानि पहुँचा सकती है और न लाभ। और सुनने वाला और जानने वाला मात्र अल्लाह ही है।

(77) कहो, ऐ किताब वालों (यहूदी व ईसाई), अपने दीन (धर्म) में अनुचित अतिशयोक्ति न करो और उन लोगों के विचारों का अनुसरण न करो जो इससे पहले भटक गये और जिन्होंने बहुत से लोगों को पथभ्रष्ट किया। और वह सन्मार्ग से भटक गये।

(78) इस्राईल की सन्तान में से जिन लोगों ने अवज्ञा की, उन पर फटकार की गई दाऊद और मरियम के बेटे ईसा की भाषा (मुँह से) में। इसलिए कि उन्होंने अवज्ञा की और वह सीमा से आगे बढ़ जाते थे। (79) वह परस्पर एक दूसरे को रोकते नहीं थे बुराई से जो वह करते थे। अत्यन्त बुरा काम था जो वह कर रहे थे। (80) तुम उनमें बहुत से व्यक्ति देखोगे कि वह अवज्ञा करने वालों से मित्रता रखते थे। कैसी बुरी चीज़ है जो उन्होंने अपने लिए आगे भेजी है कि अल्लाह का क्रोध भड़का उन पर और वह सदैव यातना ग्रस्त रहेंगे। (81) यदि वह ईमान रखने वाले होते अल्लाह पर और सन्देष्टा पर और उस

पर जो उसकी ओर उतरा तो वह अवज्ञाकारियों को मित्र न बनाते। परन्तु उनमें से अधिकतर अवज्ञाकारी हैं।

(82) ईमान वालों के साथ शत्रुता में तुम सबसे बढ़ कर यहूदियों और बहुदेववादियों को पाओगे। और ईमान वालों के साथ मित्रता में तुम सबसे अधिक उन लोगों को पाओगे जो अपने को नसारा (ईसाई) कहते हैं। यह इसलिए कि उनमें विद्वान और राहिब (साधु-सन्त) हैं और इसलिए कि वह घमण्ड नहीं करते। (83) और जब वह इस वाणी को सुनते हैं जो सन्देष्टा पर उतारी गई है तो तुम देखोगे कि उनकी आँखों से आँसू जारी हैं, इस कारण से कि उन्होंने सत्य को पहचान लिया। वह पुकार उठते हैं कि ऐ हमारे पालनहार, हम ईमान लाये। अतः तू हमको गवाही देने वालों में लिख ले। (84) और हम क्यों न ईमान लायें अल्लाह पर और उस सच्चाई पर जो हमें पहुँची है जबकि हम यह अभिलाषा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमको सदाचारी लोगों के साथ सम्मिलित करे। (85) तो अल्लाह उनको इस कथन के बदले में ऐसे बाग़ देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वह उनमें सदैव रहेंगे। और यही बदला है भले कर्म करने वालों का। (86) और जिन्होंने अवज्ञा की और हमारी आयतों (वाणी) को झुठलाया तो वही लोग नरक वाले हैं।

(87) ऐ ईमान वालों, उन सुथरी चीज़ों को हराम (अवैध) न ठहराओ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल (वैध) की हैं और सीमा का उलंघन न करो। अल्लाह सीमा से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता। (88) और अल्लाह ने तुमको जो वैध चीज़ें दी हैं, उनमें से खाओ। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाये हो। (89) अल्लाह तुमसे तुम्हारी निरर्थक सौगन्धों पर पकड़ नहीं करता। परन्तु जिन सौगन्धों को तुमने दृढ़तापूर्वक लिया, उन पर वह अवश्य तुम्हारी पकड़ करेगा। ऐसी सौगन्ध का प्रायश्चित है दस वंचितों (ग़रीबों) को मध्यम श्रेणी का खाना खिलाना जो तुम अपने घर वालों को खिलाते हो या कपड़ा पहना देना या एक दास को मुक्त करना। और जिसको उपलब्ध न हो वह तीन दिन के रोज़े (व्रत) रखे। यह प्रायश्चित है तुम्हारी सौगन्धों का जबकि तुम सौगन्ध खा बैठो। और अपनी सौगन्धों की रक्षा किया करो। इस तरह

अल्लाह तुम्हारे लिए अपने आदेश बयान करता है ताकि तुम आभार व्यक्त करो।

(90) ऐ ईमान वालों, शराब और जुआ और (देव) थान और पाँसे सब गन्दे काम हैं शैतान के। अतः तुम इनसे बचो ताकि तुम सफलता प्राप्त करो। (91) शैतान तो यही चाहता है कि शराब और जुए के माध्यम से तुम्हारे मध्य शत्रुता और ईर्ष्या डाल दे और तुमको अल्लाह के स्मरण और नमाज़ से रोक दे। तो क्या तुम इनसे बचोगे। (92) और आज्ञापालन करो अल्लाह का और आज्ञापालन करो सन्देष्टा का और बचो। यदि तुम विमुख हुए तो जान लो कि हमारे सन्देष्टा का कर्त्तव्य मात्र स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है। (93) जो लोग ईमान लाये और भले कर्म किये, उन पर उस चीज़ में कोई पाप नहीं जो वह खा चुके। जबकि वह डरे और ईमान लाये और भले कर्म किए। फिर डरे और ईमान लाये फिर डरे और भले कर्म किए। और अल्लाह भले कर्म करने वालों के साथ स्नेह रखता है।

(94) ऐ ईमान वालों, अल्लाह तुम्हें उस शिकार के माध्यम से परीक्षा में डालेगा जो पूर्णतः तुम्हारे हाथों और तुम्हारे भालों की पहुंच में होगा। ताकि अल्लाह जाने कि कौन व्यक्ति उससे बिन देखे डरता है। तो जिसने उसके बाद अत्याचार किया तो उसके लिए पीड़ादायक यातना है। (95) ऐ ईमान वालों, शिकार को न मारो जबकि तुम इहराम (हज के समय का विशेष परिधान) की स्थिति में हो। और तुममें से जो व्यक्ति उसको जानबूझ कर मारे तो उसका बदला उसी तरह का जानवर है जैसा कि उसने मारा है जिसका निर्णय तुममें से दो न्यायप्रिय व्यक्ति करेंगे और यह भेंट काबा पहुँचायी जाये। या इसके प्रायश्चित के लिये कुछ वंचितों को खाना खिलाना होगा। या उसके बराबर रोज़े रखने होंगे, ताकि वह अपने किए का दण्ड चखे। अल्लाह ने क्षमा किया जो कुछ हो चुका। और जो व्यक्ति विमुख होगा तो अल्लाह उससे बदला लेगा। और अल्लाह शक्तिवाला है, बदला लेने वाला है।

(96) तुम्हारे लिए समुद्र का शिकार और उसका खाना वैध किया गया, तुम्हारे लाभ के लिए और क़ाफिलों के लिए और जब तक तुम इहराम में हो भूमि का शिकार तुम्हारे ऊपर अवैध किया गया। और अल्लाह से डरो

जिसके पास तुम प्रस्तुत किये जाओगे। (97) अल्लाह ने काबा, प्रतिष्ठा वाले घर, को लोगों के लिए क़ियाम (समर्थक अथवा थामने वाला) का आधार बनाया। और सम्मान वाले महीनों को और क़ुर्बानी के पशुओं को और गर्दन में पट्टे पड़े हुए जानवरों को भी। यह इसलिए कि तुम जान सको कि अल्लाह को ज्ञात है जो कुछ आकाशों में और जो कुछ पृथ्वी में है। और अल्लाह हर चीज़ से भिज्ञ है। (98) जान लो कि अल्लाह का दण्ड कठोर है और निस्सन्देह अल्लाह माफ़ करने वाला, दया करने वाला है। (99) सन्देष्टा पर मात्र पहुँचा देने का कर्त्तव्य है। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो और जो कुछ तुम छिपाते हो। (100) कहो कि अपवित्र और पवित्र समान नहीं हो सकते, यद्यपि अपवित्र की अधिकता तुमको प्रिय प्रतीत हो। अतः तुम अल्लाह से डरो ऐ बुद्धि वालों, ताकि तुम सफलता प्राप्त करो।

(101) ऐ ईमान वालों, ऐसी बातों के सम्बन्ध में प्रश्न न करो कि यदि वह तुम पर प्रकट कर दी जायें तो वह तुमको भारी लगें और यदि उनके सम्बन्ध में प्रश्न करोगे ऐसे समय में जब कि क़ुरआन अवतरित हो रहा है तो वह तुम पर प्रकट कर दी जायेगी। अल्लाह ने उनको क्षमा किया और अल्लाह क्षमाशील, और धैर्यवान है। (102) ऐसी ही बातें तुमसे पहले एक समूह ने पूछीं। फिर वह उनके झुठलाने वाले बन गये। (103) अल्लाह ने बुहैरा और साएबा और वसीला और हाम (मूर्तियों के नाम पर छोड़े हुए जानवर) नियत नहीं किये। परन्तु जिन लोगों ने अवज्ञा की वह अल्लाह पर झूठ बांधते हैं और उनमें से अधिकतर बुद्धि से काम नहीं लेते। (104) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ उतारा है, उसकी ओर आओ और सन्देष्टा की ओर आओ तो वह कहते हैं कि हमारे लिए वही पर्याप्त है जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया है। क्या यद्यपि उनके बड़े न कुछ जानते हों और न सन्मार्ग पर हों। (105) ऐ ईमान वालों, तुम अपनी चिन्ता करो। कोई भटका हुआ हो तो उससे तुम्हारी कुछ हानि नहीं यदि तुम सन्मार्ग पर हो। तुम सबको अल्लाह के पास लौट कर जाना है फिर वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे।

(106) ऐ ईमान वालों, तुम्हारे बीच गवाही वसीयत के समय, जबकि

तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाये, इस तरह है कि दो विश्वसनीय व्यक्ति तुममें से गवाह हों। अथवा यदि तुम यात्रा की स्थिति में हो और वहाँ मृत्यु की विपत्ति सामने आ जाये तो तुम्हारे अन्य लोगों में से दो गवाह ले लिये जायें। फिर यदि तुमको सन्देह हो जाये तो दोनों गवाहों को नमाज़ के पश्चात रोक लो और वह दोनों अल्लाह की सौगन्ध लेकर कहें कि हम किसी क़ीमत के बदले इसको नहीं बेचेंगे, चाहे कोई सम्बन्धी ही क्यों न हो। और न हम अल्लाह की गवाही को छिपायेंगे। यदि हम ऐसा करें तो निस्सन्देह हम पापी होंगे। (107) फिर यदि पता चले कि उन दोनों ने कोई अधिकार छीना है तो उनके स्थान पर दो और व्यक्ति उन लोगों में से खड़े हों जिनका अधिकार पिछले दो गवाहों ने छीनना चाहा था। वह अल्लाह की क़सम खायें कि हमारी गवाही उन दोनों की गवाही से अधिक सच्चाई पर है और हमने कोई अन्याय नहीं किया है। यदि हम ऐसा करें तो हम अत्याचारियों में से होंगे। (108) यह निकटतम विधि है कि लोग गवाही ठीक दें, या इससे डरें कि हमारी सौगन्ध उनकी सौगन्ध के बाद उल्टी पड़ेगी। और अल्लाह से डरो और सुनो। अल्लाह अवज्ञा करने वालों को सीधे रास्ते पर नहीं चलाता।

(109) जिस दिन अल्लाह पैग़म्बरों को एकत्र करेगा, फिर पूछेगा तुमको क्या उत्तर मिला था। वह कहेंगे हमे कुछ पता नहीं, छिपी हुई बातों को जानने वाला तू ही है। (110) जब अल्लाह कहेगा ऐ मरियम के बेटे ईसा, मेरे उस उपकार को याद करो जो मैंने तुम पर और तुम्हारी माँ पर किया जबकि मैंने पवित्र आत्मा से तुम्हारी सहायता की। तुम लोगों से बात करते थे गोद में भी और बड़ी आयु में भी। और जब मैंने तुमको किताब और हिक्मत (विवेक) और तौरात और इन्जील की शिक्षा दी। और जब तुम मिट्टी से पक्षी जैसी आकृति मेरे आदेश से बनाते थे फिर उसमें फूँक मारते थे तो वह मेरे आदेश से पक्षी बन जाती थी। और तुम अन्धे और कोढ़ी को मेरे आदेश से अच्छा कर देते थे। और जब तुम मुर्दों को मेरे आदेश से निकाल खड़ा करते थे। और जब मैंने इस्राईल की सन्तान को तुमसे रोका जबकि तुम उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आये तो उनके अवज्ञाकारियों ने कहा यह तो बस एक खुला हुआ जादू है।

(111) और जब मैंने हवारियों (हज़रत ईसा के साथियों) के दिल में डाल दिया कि मुझ पर ईमान लाओ और मेरे सन्देष्टा पर ईमान लाओ तो उन्होंने कहा कि हम ईमान लाये और तू गवाह रह कि हम आज्ञाकारी हैं। (112) जब साथियों ने कहा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा, क्या तुम्हारा पालनहार यह कर सकता है कि हम पर आसमान से एक थाल (वह थाल जिसमें स्वादिष्ट व्यंजन सजे हो) उतारे। ईसा ने कहा अल्लाह से डरो यदि तुम ईमान वाले हो। (113) उन्होंने कहा कि हम चाहते हैं कि हम उसमें से खायें और हमारे दिल सन्तुष्ट हों और हम यह जान लें कि तूने हमसे सच कहा और हम उस पर गवाही देने वाले बन जायें। (114) मरियम के बेटे ईसा ने दुआ की कि ऐ अल्लाह हमारे पालनहार, तू आसमान से हम पर एक थाल उतार जो हमारे लिए एक ईद (स्मृति) बन जाये हमारे अगलों के लिये और हमारे पिछलों के लिए और तेरी ओर से एक निशानी हो। और हमको प्रदान कर, तू ही सबसे अच्छा प्रदान करने वाला है। (115) अल्लाह ने कहा मैं यह थाल अवश्य तुम पर उतारूँगा। फिर उसके बाद तुममें से जो व्यक्ति झुठलायेगा, उसको मैं ऐसा दण्ड दूँगा जो संसार में किसी को न दिया होगा।

(116) और जब अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के बेटे ईसा, क्या तुमने लोगों से कहा था कि मुझको और मेरी माँ को अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य बना लो। वह उत्तर देंगे कि तू पवित्र है, मेरा यह कार्य न था कि मैं वह बात कहूँ जिसका मुझे कोई अधिकार नहीं। यदि मैंने यह कहा होगा तो तुझको अवश्य ज्ञात होगा। तू जानता है जो मेरे मन में है और मैं नहीं जानता जो तेरे मन में है, निस्सन्देह तू ही है छिपी बातों का जानने वाला। (117) मैंने उनसे वही बात कही जिसका तूने मुझे आदेश दिया था, यह कि अल्लाह की उपासना करो जो मेरा रब है और तुम्हारा भी। और मैं उन पर गवाह था जब तक मैं उनमें रहा। फिर जब तूने मुझको मृत्यु दे दी तो उन पर तू ही निरीक्षक था और तू हर चीज़ पर गवाह है। (118) यदि तू उनको दण्ड दे तो वह तेरे बन्दे हैं और यदि तू उनको क्षमा कर दे तो तू ही शक्तिशाली है, विवेकशील है। (119) अल्लाह कहेगा आज वह दिन है कि सच्चों को उनका सच काम आयेगा। उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उनमें वह सदैव

रहेंगे। अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह अल्लाह से राज़ी हुए। यही है बड़ी सफलता। (120) आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ उनमें है उन सबका आधिपत्य अल्लाह ही के लिए है और वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है।

6. सूरह अल-अनआम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया और अँधेरों और प्रकाश को बनाया। फिर भी अवज्ञाकारी लोग दूसरों को अपने पालनहार का समकक्ष ठहराते हैं। (2) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर एक अवधि नियत की और नियत अवधि उसी के ज्ञान में है। फिर भी तुम सन्देह करते हो। (3) और वही अल्लाह आकाशों में है और वही पृथ्वी में। वह तुम्हारे छिपे और खुले को जानता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(4) और उनके पालनहार की निशानियों में से जो निशानी भी उनके पास आती है, वह उससे विमुख होते हैं। (5) अतः जो सच्चाई उनके पास आई है, उसको भी उन्होंने झुठला दिया। अतः शीघ्र उनके पास उस चीज़ की सूचनायें आयेंगी जिसका वह उपहास किया करते थे। (6) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी क़ौमों को नष्ट कर दिया। उनको हमने पृथ्वी पर स्थापित कर दिया था जितना तुमको स्थापित नहीं किया और हमने उन पर आसमान से प्रचूर वर्षा की और हमने नहरें बहाईं जो उनके नीचे बहती थीं, फिर हमने उनको उनके पापों के कारण नष्ट कर डाला और उनके बाद हमने दूसरी क़ौमों को उठाया।

(7) और यदि हम तुम पर ऐसी किताब उतारते जो काग़ज़ पर लिखी हुई होती और वह उसको अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी अवज्ञाकारी यह कहते कि यह तो एक स्पष्ट जादू है। (8) और वह कहते हैं कि उस पर कोई फ़रिश्ता (देवदूत) क्यों नहीं उतारा गया। और यदि हम कोई फ़रिश्ता उतारते तो मामले का निर्णय हो जाता, फिर उन्हें कोई मोहलत (अवकाश) न मिलती।

(9) और यदि हम किसी फ़रिश्ते को सन्देष्टा बनाकर भेजते तो उसको भी मनुष्य बनाते और उनको उसी सन्देह में डाल देते जिसमें वह अब पड़े हुए हैं। (10) और तुमसे पहले भी सन्देष्टाओं का उपहास किया गया तो उनमें से जिन लोगों ने उपहास किया उनको उस चीज़ ने आ घेरा जिसका वह उपहास करते थे। (11) कहो, पृथ्वी पर चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम क्या हुआ।

(12) पूछो कि किसका है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है कहो सब कुछ अल्लाह का है। उसने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर लिया है। वह अवश्य तुमको एकत्र करेगा क़यामत (उठाये जाने) के दिन, इसमें कोई सन्देह नहीं। जिन लोगों ने अपने आप को घाटे में डाला, वही हैं जो इस पर ईमान नहीं लाते। (13) और अल्लाह ही का है जो कुछ ठहरता है रात में और जो कुछ दिन में। और वह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (14) कहो, क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को समर्थक बनाऊँ जो बनाने वाला है आकाशों और पृथ्वी का। और वह सबको खिलाता है और उसको कोई नहीं खिलाता। कहो मुझको आदेश मिला है कि मै सबसे पहले आज्ञापालन करने वाला बनूँ और तुम कदापि शिर्क (मूर्ति-पूजा) करने वालों में से न हो जाओ। (15) कहो, यदि मैं अपने पालनहार कि अवज्ञा करुँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ। (16) जिस व्यक्ति से वह यातना उस दिन हटा ली गई, उस पर अल्लाह ने बड़ी दया की और यही स्पष्ट सफलता है।

(17) और यदि अल्लाह तुझको कोई दुख पहुँचाये तो उसके अतिरिक्त कोई उसका दूर करने वाला नहीं। और यदि अल्लाह तुझको कोई भलाई पहुँचाये तो वह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। (18) और उसी का वश चलता है अपने बन्दों पर, वह सवर्ज्ञ, सर्वव्यापी है। (19) तुम पूछो कि सबसे बड़ा गवाह कौन है। कहो अल्लाह, वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाह है और मुझ पर यह क़ुरआन उतरा है, ताकि मैं तुमको इससे सूचित कर दूँ और वह भी सूचित करे जिसको यह क़ुरआन पहुँचे। क्या तुम इसकी गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ कुछ और उपास्य भी हैं। कहो, मैं इसकी गवाही नहीं देता। कहो, वह तो बस एक ही उपास्य है और मैं आरोप मुक्त हूँ तुम्हारे शिर्क (मूर्ति-पूजा) से।

(20) जिन लोगों को हमने किताब दी है, वह इसको पहिचानते हैं जैसा कि वह अपने बेटों को पहिचानते हैं। जिन लोगों ने अपने को घाटे में डाला वह इसको नहीं मानते। (21) और उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर आरोप लगाये या अल्लाह की निशानियों को झुठलाये। वास्तव में अत्याचारियों को सफलता नहीं मिलती। (22) और जिस दिन हम उन सबको एकत्र करेंगे, फिर हम कहेंगे उन साझीदार ठहराने वालों से कि तुम्हारे वह साझीदार कहाँ हैं जिनका तुमको दावा था। (23) फिर उनके पास कोई बहाना न रहेगा परन्तु यह कि वह कहेंगे कि अल्लाह अपने पालनहार की सौगन्ध, हम शिर्क करने वाले नहीं थे। (24) देखो यह किस तरह अपने आप पर झूठ बोले और खोई गयीं उनसे वह बातें जो वह बनाया करते थे।

(25) और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं और हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिये हैं कि वह इसको न समझें और उनके कानों में बोझ है यदि वह समस्त निशानियाँ देख लें तब भी वह इस पर ईमान न लायेंगे। यहाँ तक कि जब वह तुम्हारे पास तुमसे झगड़ने आते हैं तो वह अवज्ञाकारी कहते हैं कि ये तो बस पहले लोगों की कहानियाँ हैं। (26) वह लोगों को रोकते हैं और स्वंय भी इससे अलग रहते हैं। वह स्वंय अपने आप को नष्ट कर रहे हैं परन्तु वह नहीं समझते। (27) और यदि तुम उनको उस समय देखो जब वह आग पर खड़े किये जायेंगे और कहेंगे कि काश हम फिर भेज दिये जायें तो हम अपने पालनहार की निशानियों को न झुठलायें और हम ईमान वालों में से हो जायें। (28) अब उन पर वह चीज़ खुल गयी जिसको वह इससे पहले छिपाते थे। और यदि वह वापस भेज दिये जायें तो वह फिर वही करेंगे जिससे वह रोके गये थे और निस्सन्देह वह झूठे हैं।

(29) और वह कहते हैं कि जीवन तो बस यही हमारा सांसारिक जीवन है। और हम फिर उठाये जाने वाले नहीं। (30) और यदि तुम उस समय देखते जबकि वह अपने पालनहार के सामने खड़े किये जायेंगे। वह उनसे पूछेगाः क्या यह वास्तविकता नहीं है, वह उत्तर देंगे, हाँ, हमारे पालनहार की सौगन्ध, यह वास्तविकता है। अल्लाह कहेगा, अच्छा तो यातना चखो उस अवज्ञा के बदले जो तुम करते थे। (31) वास्तव में वह लोग घाटे में रहे जिन्होंने अल्लाह से

मिलने को झुठलाया। यहाँ तक कि जब वह घड़ी उन पर अचानक आयेगी तो वह कहेंगे हाय! अफ़सोस! इस मामले में हमने कैसी लापरवाही की और वह अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाये हुए होंगे। देखो, कैसा बुरा बोझ है जिसको वह उठायेंगे। (32) और संसार का जीवन तो बस खेल और तमाशा है और परलोक का घर अच्छा है उन लोगों के लिए जो डर रखते हैं, क्या तुम नहीं समझते।

(33) हमको ज्ञात है कि वह जो कुछ कहते हैं उससे तुमको दुखः होता है। यह लोग तुमको नहीं झुठलाते बल्कि यह अत्याचारी वास्तव में अल्लाह की निशानियों को झुठला रहे हैं। (34) और तुमसे पहले भी सन्देष्टाओं को झुठलाया गया तो उन्होंने झुठलाये जाने और कष्ट पहुँचाने पर धैर्य से काम लिया यहाँ तक कि उनको हमारी सहायता पहुँच गयी। और अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और पैग़म्बरों की कुछ सूचनाएँ तुमको पहुँच ही चुकी हैं। (35) और यदि उनकी विमुखता तुमको भारी प्रतीत हो रही है तो यदि तुममें कुछ सामर्थ्य है तो भूमि में कोई सुरंग ढूँढ़ो या आसमान में सीढ़ी लगाओ और उनके लिए कोई निशानी ले आओ। और यदि अल्लाह चाहता तो इन सबको सन्मार्ग पर एकत्र कर देता। तो तुम नादानों में से न बनो। (36) स्वीकार तो वही लोग करते हैं जो सुनते हैं और मृतकों को अल्लाह उठायेगा फिर वह उसी की ओर लौटाये जायेंगे।

(37) और वह कहते हैं कि सन्देष्टा पर कोई निशानी उसके पालनहार की ओर से क्यों नहीं उतारी गई। कहो, अल्लाह निस्सन्देह क्षमता रखता है कि कोई निशानी उतारे, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (38) और जो भी जीवधारी पृथ्वी पर चलता है और जो भी पक्षी अपने दोनों पंखो से उड़ता है, वह सब तुम्हारी ही तरह की प्रजातियां हैं। हमने लिखने में कोई चीज़ नहीं छोड़ी है। फिर सब अपने पालनहार के पास एकत्र किये जायेंगे। (39) और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया, वह बहरे और गूँगे हैं, अंधकार में पड़े हुए हैं। अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और जिसको चाहता है सीधे रास्ते पर लगा देता है।

(40) कहो, यह बताओ कि यदि तुम पर अल्लाह की यातना आये या

प्रलय आ जाये तो क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को पुकारोगे। बताओ यदि तुम सच्चे हो। (41) बल्कि तुम उसी को पुकारोगे। फिर वह दूर कर देता है उस विपत्ति को जिसके लिए तुम उसको पुकारते हो, यदि वह चाहता है। और तुम भूल जाते हो उनको जिन्हें तुम साझीदार ठहराते हो।

(42) और तुमसे पहले बहुत सी क़ौमों की ओर हमने सन्देष्टा भेजे। फिर हमने उनको पकड़ा कष्ट में और दुख में ताकि वह गिड़गिड़ाये। (43) तो जब हमारी ओर से उन पर कठिनाई आयी तो क्यों न वह गिड़गिड़ायें, बल्कि उनके दिल और कठोर हो गये। और शैतान उनके कर्मों को उनकी दृष्टि में मोहक बनाकर दिखाता रहा। (44) फिर जब उन्होंने उस उपदेश को भुला दिया जो उनको दिया गया था तो हमने उन पर हर चीज़ के द्वार खोल दिये। यहाँ तक कि जब वह उस चीज़ पर प्रसन्न हो गये जो उन्हे दी गई थी तो हमने अचानक उनको पकड़ लिया। उस समय वह निराश होकर रह गये। (45) अतः उन लोगों की जड़ काट दी गई जिन्होंने अत्याचार किया था और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है सम्पूर्ण संसारों का पालनहार।

(46) कहो, यह बताओ कि अल्लाह यदि छीन ले तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारे दिलों पर मुहर कर दे तो अल्लाह के अतिरिक्त कौन उपास्य है जो उसको वापस लाये। देखो हम क्यों कर भिन्न-भिन्न ढ़ंग से निशानियाँ बयान करते हैं, फिर भी वह विमुख होते हैं। (47) कहो, यह बताओ यदि अल्लाह की यातना तुम्हारे ऊपर अकस्मात या घोषित रूप से आ जाये तो अत्याचारियों के अतिरक्त और कौन नष्ट होगा। (48) और सन्देष्टाओं को हम मात्र शुभ सूचना देने वाले या डराने वाले की हैसियत से भेजते हैं। फिर जो ईमान लाया और अपना सुधार किया तो उनके लिए न कोई डर है और न वह दुखी होंगे। (49) और जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया तो उनको यातना पकड़ लेगी इसलिए कि वह अवज्ञा करते थे। (50) कहो, मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के खज़ाने हैं और न मैं ग़ैब (परोक्ष) को जानता हूँ और न मैं तुमसे कहता हूँ कि मैं देवदूत हूँ। मैं तो मात्र इस अल्लाह की वाणी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पास आयी है। कहो, क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों समान हो सकते हैं। क्या तुम चिन्तन नहीं करते।

(51) और तुम इस वही (अल्लाह की) वाणी के माध्यम से डराओ उन लोगों को जो भय रखते है इस बात से कि वह अपने पालनहार के पास एकत्र किये जायेंगे इस दशा में कि अल्लाह के अतिरिक्त उनका न कोई समर्थक होगा और न कोई अनुसंशा करने वाला, संभव है कि वह अल्लाह से डरे। (52) और तुम उन लोगों को अपने से दूर न करो जो सुबह और शाम अपने पालनहार को पुकारते हैं उसकी प्रसन्नता चाहते हुए। उनके हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ तुम पर नहीं और तुम्हारे हिसाब में से किसी चीज़ का बोझ उन पर नहीं कि तुम उनको अपने आप से दूर करके अन्याय करने वालों में से हो जाओ। (53) और इस तरह हमने उनमें से एक की दूसरे द्वारा परीक्षा ली है, ताकि वह कहें कि क्या यही वह लोग हैं जिन पर हमारे बीच अल्लाह कि कृपा हुई है। क्या अल्लाह कृतज्ञों से भली-भाँति भिज्ञ नहीं।

(54) और जब तुम्हारे पास वह लोग आयें जो हमारी आयतों (निशानियों) पर ईमान लाये हैं तो उनसे कहो कि तुम पर सलाम (शान्ति) हो। तुम्हारे पालनहार ने अपने ऊपर दया को अनिवार्य कर लिया है। निस्सन्देह तुममें से जो कोई भूलवश बुराई कर बैठे फिर उसके बाद वह तौबा करे और सुधार कर ले तो अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है। (55) और इस प्रकार हम अपनी निशानियों का स्पष्ट रूप से वर्णन करते हैं और ताकि अपराधियों की नीति स्पष्ट हो जाये।

(56) कहो, मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो। कहो मैं तुम्हारी इच्छाओं का अनुसरण नहीं कर सकता। यदि मैं ऐसा करूँ तो मैं पथभ्रष्ट हो जाऊँगा और मैं सन्मार्ग पाने वालों में से न रहूँगा। (57) कहो मैं अपने पालनहार की ओर से एक प्रकाशमय तर्क पर हूँ और तुमने उसको झुठला दिया है। वह चीज़ मेरे पास नहीं है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो। निर्णय का अधिकार मात्र अल्लाह को है। वही सत्य का वर्णन करता है और वह सबसे अच्छा निर्णय करने वाला है। (58) कहो यदि वह चीज़ मेरे अधिकार में होती जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे हो तो मेरे और तुम्हारे बीच मामले का निर्णय हो चुका होता, और अल्लाह भली प्रकार जानता है अत्याचारियों को। (59) और उसी के पास परोक्ष

की कुंजियाँ हैं, उसके अतिरिक्त इसको कोई नहीं जानता। अल्लाह जानता है जो कुछ जल और थल (धरती) और समुद्र में है। और वृक्ष से गिरने वाला कोई पत्ता नहीं जिसका उसको ज्ञान न हो और धरती के अँधेरों में कोई दाना नहीं गिरता और न कोई नम और सूखी चीज़ परन्तु सब एक स्पष्ट किताब में अंकित है।

(60) और वही है जो रात में तुमको मृत्यु (निद्रा) देता है। और दिन को जो कुछ तुम करते हो, उसको जानता है। फिर वह तुमको उठा देता है उसमें ताकि नियत अवधि पूर्ण हो जाये। फिर उसी की ओर तुम्हारी वापसी है। फिर वह तुमको सूचित कर देगा उससे जो तुम करते रहे। (61) और उसका वर्चस्व है अपने बन्दों के ऊपर और वह तुम्हारे ऊपर संरक्षक भेजता है यहाँ तक कि जब तुममें से किसी की मृत्यु का समय आ जाता है तो हमारे भेजे हुए फ़रिश्ते (देवदूत) उसका प्राण निकाल लेते हैं और वह बेपरवाही नहीं करते। (62) फिर सब अल्लाह, अपने वास्तविक स्वामी की ओर वापस लाये जायेंगे। सुन लो, आदेश उसी का है और वह अतिशीघ्र हिसाब लेने वाला है।

(63) कहो, कौन तुमको बचाता है धरती और समुद्र के अँधेरों से, तुम उसको पुकारते हो विनम्रता से और चुपके-चुपके कि यदि अल्लाह ने हमको बचा लिया इस विपत्ति से तो हम उसके कृतज्ञ बन्दों में से बन जायेंगे। (64) कहो अल्लाह ही तुमको बचाता है उससे और प्रत्येक दुख से, फिर भी तुम उसके साझेदार ठहराने लगते हो। (65) कहो, अल्लाह सामर्थ्यवान है इस पर कि वह तुम पर कोई यातना भेज दे तुम्हारे ऊपर से अथवा तुम्हारे पैरों के नीचे से, या तुमको समूह-समूह करके एक को दूसरे की शक्ति का स्वाद चखा दे। देखो, हम किस प्रकार तर्क का विभिन्न पहलुओं से वर्णन करते हैं ताकि वह समझें। (66) और तुम्हारी क़ौम ने उसको झुठला दिया है, अगर्चे कि वह सच है। कहो, मैं तुम्हारे ऊपर संरक्षक (दारोग़ा) नहीं हूँ। (67) प्रत्येक सूचना के लिए एक समय नियत है और तुम शीघ्र ही जान लोगे।

(68) और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों (वाणी) में कमी निकालते हैं तो उनसे अलग हो जाओ, यहाँ तक कि वह किसी और बात में लग जायें। और यदि कभी शैतान तुमको भुला दे तो याद आने के

बाद ऐसे अन्यायी लोगों के पास न बैठो। (69) और जो लोग अल्लाह से डरते हैं, उन पर उनके हिसाब में से किसी चीज़ का उत्तरदायित्व नहीं, परन्तु याद दिलाना है आशा है कि वह भी डरे। (70) उन लोगों को छोड़ो जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को खेल-तमाशा बना रखा है और जिनको सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा है। और क़ुरआन के माध्यम से उपदेश देते रहो ताकि कोई व्यक्ति अपने किये में गिरफ़्तार न हो जाये, इस दशा में कि अल्लाह से बचाने वाला कोई समर्थक और अनुसंशक उसके लिए न हो। यदि वह सम्पूर्ण पृथ्वी के तुल्य बदला दें तब भी वह स्वीकार न किया जाये। यही लोग हैं जो अपने किए में गिरफ़्तार हो गये। उनके लिए खौलता हुआ पानी पीने के लिए होगा और कष्टप्रद दण्ड होगा इसलिए कि वह अवज्ञा करते थे।

(71) कहो, क्या हम अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारें जो न हमको लाभ दे सकते हैं और न हमको हानि पहुँचा सकते हैं। और क्या हम उल्टे पाँव फिर जायें, इसके बाद कि अल्लाह हमको सीधा रास्ता दिखा चुका है, उस व्यक्ति की तरह जिसको शैतानों ने बंजर भूमि में भटका दिया हो और वह किं विक्षुब्ध होकर भटक रहा हो। उसके साथी उसको सीधे रास्ते की ओर बुला रहे हों कि हमारे पास आ जाओ। कहो कि मार्गदर्शन तो मात्र अल्लाह का मार्ग है और हमको आदेश मिला है कि हम अपने आपको संसार के पालनहार के हवाले कर दें। (72) और यह कि नमाज़ स्थापित करो और अल्लाह से डरो और वही है जिसकी ओर तुम समेटे जाओगे। (73) और वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को अधिकारपूर्वक बनाया है और जिस दिन वह कहेगा कि हो जा तो वह हो जायेगा। उसकी बात सत्य है और उसी की सत्ता होगी उस दिन जब (प्रलय का शंख) सूर फूँका जायेगा। वह परोक्ष और प्रत्यक्ष का जानने वाला और विवेकशील और ख़बर रखने वाला है।

(74) और जब इब्राहीम ने अपने पिता आज़र से कहा कि क्या तुम मूर्तियों को उपास्य मानते हो। मैं तुमको और तुम्हारी क़ौम को स्पष्ट पथभ्रष्टता में देखता हूँ। (75) और इसी तरह हमने इब्राहीम को दिखा दिया आकाशों और पृथ्वी की सत्ता, और ताकि उसको विश्वास हो जाये। (76) फिर जब रात ने उस पर

अँधेरा कर लिया, उसने एक तारे को देखा। कहा यह मेरा पालनहार है। फिर जब वह अस्त हो गया तो उसने कहा मैं अस्त हो जाने वालों को मित्र नहीं रखता।

(77) फिर जब उसने चाँद को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा पालनहार है, फिर जब वह अस्त हो गया तो उसने कहा यदि मेरा पालनहार मुझको मार्ग न दिखाये तो मैं पथभ्रष्ट लोगों में से हो जाऊँगा। (78) फिर जब उसने सूरज को चमकते हुए देखा तो कहा कि यह मेरा पालनहार है। यह सबसे बड़ा है। फिर जब वह अस्त हो गया तो उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ लोगों, मैं इस शिर्क से अलग हूँ जो तुम करते हो। (79) मैंने अपना चेहरा एकाग्र होकर उस हस्ती की ओर कर लिया जिसने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया है और मैं शिर्क (मूर्ति पूजा) करने वालों में से नहीं हूँ।

(80) और इब्राहीम की क़ौम उससे झगड़ने लगी। उसने कहा क्या तुम अल्लाह के सम्बन्ध में मुझसे झगड़ते हो, हालाँकि उसने मुझे मार्ग दिखा दिया है। और मैं उनसे नहीं डरता जिनको तुम अल्लाह का साझीदार ठहराते हो परन्तु यह कि कोई बात मेरा पालनहार ही चाहे। मेरे पालनहार का ज्ञान हर चीज़ पर छाया हुआ है, क्या तुम नहीं सोचते। (81) और मैं क्यों डरूँ तुम्हारे साझीदारों से जबकि तुम अल्लाह के साथ इन चीज़ों को उपास्य होने में साझीदार ठहराते हुए नहीं डरते जिनके लिए उसने तुम पर कोई प्रमाण नहीं उतारा। अब दोनों पक्षों में से निश्चिन्तता का अधिक अधिकारी कौन है, यदि तुम ज्ञान रखते हो। (82) जो लोग ईमान लाये और नहीं मिलाया उन्होंने अपने ईमान में कुछ उनुचित, उन्ही के लिए शान्ति (अमन) है और वही सन्मार्ग पर हैं। (83) यह है हमारा तर्क जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में दिया। हम जिसके स्तर चाहते हैं ऊँचा कर देते हैं। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार तत्वदर्शी और प्रभुत्वशाली है।

(84) और हमने इब्राहीम को इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किये, हर एक को हमने सन्मार्ग दिया और नूह को भी हमने सन्मार्ग दिया इससे पहले। और उसकी नस्ल में से दाऊद और सुलेमान और अय्यूब और यूसुफ़ और मूसा और हारुन को भी। और हम भले लोगों को इसी प्रकार बदला देते हैं। (85) और ज़करिया और यह्या और ईसा और इल्यास को भी, उनमें से

प्रत्येक सदाचारी था। (86) और इस्माईल और अल-यसअ और यूनुस और लूत को भी, और उनमें से प्रत्येक को हमने संसारवालों पर प्रधानता प्रदान की। (87) और उनके पूर्वजों और उनकी सन्तानों और उनके भाईयों में से भी, और उनको हमने चुन लिया और हमने सीधे रास्ते की ओर उनका मार्ग दर्शन किया। (88) यह अल्लाह का प्रदान किया हुआ है, वह इससे मार्गदर्शन करता है अपने बन्दों में से जिसको चाहता है। और यदि वह अल्लाह का साझी ठहराते, तो नष्ट हो जाता जो कुछ उन्होंने किया था। (89) यह लोग हैं जिनको हमने किताब और हिक्मत (विवेक) और पैग़म्बरी प्रदान की। अतः यदि यह मक्का वाले इसको झुठला दें तो हमने इसके लिए ऐसे लोग नियुक्त कर दिये हैं जो इसके झुठलाने वाले नहीं हैं। (90) यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने मार्ग-दर्शन प्रदान किया, तो तुम भी उनके मार्ग पर चलो। कह दो, मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। यह तो बस एक उपदेश है संसार वालों के लिए। (91) और उन्होंने अल्लाह का बहुत अनुचित अनुमान लगाया जब उन्होंने कहा कि अल्लाह ने किसी मनुष्य पर कोई चीज़ नहीं उतारी है। कहो कि वह किताब किसने उतारी थी जिसको लेकर मूसा आये थे, वह प्रकाशमय थी और मार्गदर्शन थी लोगों के लिए, जिसको तुमने खंड-खंड कर रखा है कुछ को प्रकट करते हो और बहुत कुछ छिपा जाते हो। और तुमको वह बातें सिखायीं जिनको न जानते थे तुम और न तुम्हारे बाप-दादा। कहो कि अल्लाह का उतारा हुआ है। फिर उनको छोड़ दो कि वह अपने कुतर्कों में खेलते रहें। (92) और यह एक किताब है जो हमने उतारी है, बरकत वाली है, पुष्टि करने वाली उनकी जो इससे पहले हैं। और ताकि तू डराये मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को। और जो परलोक पर विश्वास रखते हैं, वही इस पर ईमान लायेगें। और वह अपनी नमाज़ की रक्षा करने वाले हैं।

(93) और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ गढ़े या कहे कि मुझ पर अल्लाह की वाणी आयी है, जबकि उस पर कोई वाणी उतारी न गई हो। और कहे कि जैसी वाणी अल्लाह ने उतारी है मैं भी उतारुँगा। काश, तुम उस समय को देखो जबकि यह अत्याचारी मृत्यु की यातनाओं में होंगे और फ़रिश्ते (देवदूत) हाथ बढ़ा रहें होंगे कि लाओ अपने प्राण निकालो।

आज तुमको अपमानजनक यातना दी जायेगी इस कारण से कि तुम अल्लाह पर झूठी बातें कहते थे। और तुम अल्लाह की निशानियों से घमण्ड करते थे। (94) और तुम हमारे पास अकेले-अकेले आ गये जैसा कि हमने तुमको पहली बार पैदा किया था। और जो कुछ हमने तुम्हें प्रदान किया था, वह सब कुछ तुम पीछे छोड़ आये। और हम तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देखते जिनके सम्बन्ध में तुम समझते थे कि तुम्हारा काम बनाने में उनका भी योगदान है। तुम्हारा सम्बन्ध पूर्णतः टूट गया और तुमसे जाते रहे वह दावे जो तुम करते थे।

(95) निस्सन्देह, अल्लाह दाने और गुठली को फाड़ने वाला है। वह जानदार को निर्जीव से निकालता है और वही निर्जीव से जानदार को निकालने वाला है। वही तुम्हारा अल्लाह है फिर तुम किधर भटके चले जा रहे हो। (96) वही निकालने वाला है सुबह का और उसने रात को विश्राम का समय बनाया और सूरज और चाँद को हिसाब से रखा है। यह ठहराया हुआ है बड़ी सत्ता वाले का, बड़े ज्ञान वाले का। (97) और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये ताकि तुम उनके द्वारा धरती और समुद्र के अँधेरों में मार्ग पाओ। निस्सन्देह हमने निशानियों को स्पष्ट करके वर्णित कर दिया है उन लोगों के लिए जो जानना चाहें।

(98) और वही है जिसने तुमको पैदा किया एक जान से, फिर प्रत्येक के लिए एक ठिकाना है और प्रत्येक के लिए उसके सौंपे जाने की जगह। हमने निशानियों को स्पष्ट वर्णित कर दिया है उन लोगों के लिए जो समझें। (99) और वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया, फिर हमने उससे निकाली उगने वाली हर चीज़। फिर हमने उससे हरी-भरी शाखाएँ निकालीं जिससे हम एक पर एक दाने पैदा कर देते हैं। और खजूर के गाभों में से फल के गुच्छे झुके हुए और बाग़ अंगूर के और ज़ैतून के और अनार के, आपस में मिलते-जुलते और अलग-अलग भी। हर एक के फल को देखो जब वह फलता है। और उसके पकने को देखो जब वह पकता है। निस्सन्देह इनके अन्दर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान की चाहत रखते हैं।

(100) और उन्होंने जिन्नों को अल्लाह का साझीदार ठहराया, जबकि

अल्लाह ही ने उनको पैदा किया है। और उन्होंने बे जाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियाँ बनाये। पवित्र और महान है वह इन बातों से जो यह बयान करते हैं। (101) वह आकाशों और पृथ्वी का रचयिता है। उसका कोई बेटा कैसे हो सकता है जबकि उसकी कोई पत्नी नहीं। और उसने हर चीज़ को पैदा किया है और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (102) यह है अल्लाह तुम्हारा पालनहार। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वही हर चीज़ का रचयिता है, अतः तुम उसी की उपासना करो। और वह हर चीज़ का भार धारक है। (103) उसको आँखें नहीं पातीं, परन्तु वह आँखों को पा लेता है। वह अत्यन्त सूक्ष्मदर्शी और ख़बर रखने वाला है। (104) अब तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से आँख खोलने वाले प्रमाण का प्रकाश आ चुका है। अतः जो दृष्टि से काम लेगा वह अपने ही लिए, और जो अन्धा बनेगा वह स्वंय घाटा उठायेगा। और मैं तुम्हारे ऊपर कोई संरक्षक (रखवाला नियुक्त) नहीं हूँ।

(105) और इसी प्रकार हम अपने तर्क विभिन्न ढंग से बयान करते हैं और ताकि वह कहे कि तुमने पढ़ दिया और ताकि हम अच्छी तरह खोल दें उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (106) तुम बस उस चीज़ का अनुसरण करो जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर अवतरित की जा रही है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, और शिर्क (बहुदेववादी) करने वालों पर ध्यान न दो। (107) और यदि अल्लाह चाहता तो ये लोग उसका साझी न ठहराते। और हमने तुमको उनके ऊपर संरक्षक नहीं बनाया है और न तुम उन पर अधिकारी हो। (108) और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको ये लोग पुकारते हैं, उनको अपशब्द न कहो अन्यथा ये लोग सीमा से गुज़र कर अज्ञानता के कारण अल्लाह को अपशब्द कहने लगेंगे। इसी प्रकार हमने प्रत्येक समूह की दृष्टि में उसके कर्म को मोहक बना दिया है। फिर उन सबको अपने पालनहार की ओर लौटना है। उस समय अल्लाह उन्हें बता देगा जो वह करते थे।

(109) और यह लोग अल्लाह की सौगन्ध दृढ़तापूर्वक खाकर कहते हैं कि उनके पास कोई निशानी आ जाये तो वह अवश्य उस पर ईमान ले आयेंगे (विश्वास करेंगे)। कह दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं। और

तुम्हें क्या मालूम कि यदि निशानियाँ आ जायें तब भी ये ईमान नहीं लायेंगे। (110) और हम उनके दिलों और उनकी दृष्टि को फेर देंगे जैसा कि यह लोग उसके ऊपर पहली बार ईमान नहीं लाये (विश्वास नहीं किया)। और हम उनको उनकी अवज्ञा में भटकता हुआ छोड़ देंगे। (111) और यदि हम उन पर फ़रिश्ते उतार देते और मृतक उनसे बातें करते और हम समस्त वस्तुएँ उनके समक्ष एकत्र कर देते तब भी यह लोग ईमान लाने (विश्वास करने) वाले न थे। सिवाय यह कि अल्लाह चाहे, परन्तु इनमें से अधिकतर लोग अज्ञानता की बातें करते हैं।

(112) और इसी प्रकार हमने उपद्रवी मनुष्यों और उपद्रवी जिन्नों को प्रत्येक नबी (सन्देष्टा) का शत्रु बना दिया। वह एक दूसरे को छलपूर्ण बातें सिखाते हैं धोखा देने के लिए। और यदि तेरा पालनहार चाहता तो वह ऐसा न कर सकते। अतः तुम उन्हें छोड़ दो कि वह झूठ बाँधते रहें। (113) और ऐसा इसलिए है कि उसकी ओर उन लोगों के दिल झुके जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और ताकि वह इसको पसन्द करे और ताकि जो कमाई उन्हें करनी है वह कर लें।

(114) क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी और को न्यायाधीश बनाऊँ। हालाँकि उसने तुम्हारी ओर स्पष्ट किताब उतारी है। और जिन लोगों को हमने पहले किताब दी थी, वह जानते हैं कि यह तेरे पालनहार की ओर से उतारी गई है सच्चाई के साथ। अतः तुम न सम्मिलित हो जाना सन्देह करने वालों में। (115) और तुम्हारे पालनहार की बात पूर्णतः सच्ची है और न्याय की है, कोई बदलने वाला नहीं उसकी बात का और वह सुनने वाला, जानने वाला है। (116) और यदि तुम उनके बहुसंख्यक लोगों के कहने पर चलो जो धरती पर हैं तो वह तुमको अल्लाह के मार्ग से भटका देंगे। वह मात्र कल्पना का अनुसरण करते हैं और अनुमान लगाते हैं। (117) निस्सन्देह, तुम्हारा पालनहार भली प्रकार जानता है उनको जो उसके मार्ग से भटके हुए हैं और भली प्रकार जानता है उनको जो मार्ग पाये हुए हैं।

(118) अतः खाओ उस पशु में से जिस पर अल्लाह का नाम लिया जाये, यदि तुम उसकी आयतों (वाक्यों) पर विश्वास रखते हो। (119) और

क्या कारण है कि तुम उस पशु में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया है, हालाँकि अल्लाह ने विस्तारपूर्वक बयान कर दी है वह चीज़ें जिनको उसने तुम पर अवैध किया है, सिवाय इसके कि उसके लिए तुम विवश हो जाओ। और निश्चय ही बहुत से लोग अपनी इच्छाओं के आधार पर पथभ्रष्टता अपनाते हैं बिना किसी ज्ञान के। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार भली प्रकार जानता है सीमा से आगे निकल जाने वालों को। (120) और तुम पाप के प्रत्यक्ष पक्ष को भी छोड़ दो और उसके परोक्ष पक्ष को भी। जो लोग पाप कमा रहे हैं, उनको शीघ्र बदला मिल जायेगा उसका जो वह कर रहे थे। (121) और तुम उस पशु में से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। निश्चित रूप से यह अवज्ञा है और शैतान मन में डाल रहा है अपने सहयोगियों के ताकि वह तुमसे झगड़ें। और यदि तुम उनका कहा मानोगे तो तुम भी शिर्क करने वाले (साझी ठहराने वाले) हो जाओगे।

(122) क्या वह व्यक्ति जो निष्प्राण था फिर हमने उसको जीवन दिया और हमने उसको एक प्रकाश दिया कि उसके साथ वह लोगों में चलता है, वह उस व्यक्ति की भाँति हो सकता है जो अन्धकार में पड़ा हुआ है, वह उससे निकलने वाला नहीं। इसी प्रकार अवज्ञाकारियों की दृष्टि में उनके कर्म आर्कषक बना दिये गये हैं। (123) और इसी प्रकार प्रत्येक बस्ती में हमने बड़े-बड़े पापियों के सरदार रख दिये हैं कि वह वहाँ षडयन्त्र करे। हालाँकि वह जो षडयन्त्र करते हैं, वह अपने ही विरुद्ध करते हैं, परन्तु उन्हें उसकी समझ नहीं। (124) और जब उनके पास कोई आयत (निशानी) आती है तो वह कहते हैं कि हम कदापि न मानेंगे जब तक हमको भी वही न दिया जाये जो अल्लाह के पैग़म्बरों (सन्देष्टाओं) को दिया गया है। अल्लाह ही बेहतर जानता है कि वह अपनी पैग़म्बरी किसको प्रदान करे। जो लोग अपराधी हैं, अवश्य उनको अल्लाह के पास अपमान प्राप्त होगा और कठोर दण्ड भी, इस कारण से कि वह षडयन्त्र रचते थे।

(125) अल्लाह जिसको चाहता है कि मार्गदर्शन दे तो उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसको चाहता है कि भटका दे तो उसके सीने

को पूर्णतः संकुचित कर देता है, जैसे उसको आसमान में चढ़ना पड़ रहा हो। इस प्रकार अल्लाह गन्दगी डाल देता है उन लोगों पर जो ईमान नहीं लाते (आस्थावान नहीं बनते)। (126) और यही तुम्हारे पालनहार का सीधा रास्ता है। हमने स्पष्ट कर दी हैं निशानियाँ चिन्तन करने वालों के लिए। (127) उन्हीं के लिए शान्ति का घर है उनके पालनहार के पास। और वह उनका सहायक है उस कर्म के कारण से जो वह करते रहे हैं।

(128) और जिस दिन अल्लाह उन सबको एकत्र करेगा, ऐ जिन्नों के समूह, तुमने बहुत से ले लिये मनुष्यों में से। और मनुष्यों में से उनके साथी कहेंगे, ऐ हमारे पालनहार, हमने एक-दूसरे को प्रयोग किया और हम पहुँच गये अपने उस वादे को जो तूने हमारे लिए नियत किया था। अल्लाह कहेगा अब तुम्हारा ठिकाना आग है, तुम सदैव उसमें रहोगे परन्तु जो अल्लाह चाहे। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार विवेक वाला, ज्ञान वाला है। (129) और इसी प्रकार हम साथ मिला देंगे पापियों को एक-दूसरे से, उन कर्मों के कारण जो वह करते थे। (130) ऐ जिन्नों और इन्सानों के समूह, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से सन्देष्टा नहीं आये जो तुमको मेरी आयतें सुनाते थे और तुमको उस दिन के आने से डराते थे। वह कहेंगे हम स्वंय अपने विरुद्ध गवाह हैं। और उनको संसार के जीवन ने धोखे में रखा। और वह अपने विरुद्ध स्वंय गवाही देंगे कि निस्सन्देह हम अवज्ञाकारी थे। (131) यह इस कारण से कि तुम्हारा पालनहार बस्तियों को उनके अत्याचार पर इस स्थिति में नष्ट करने वाला नहीं कि वहाँ के लोग (सन्देश से) अनभिज्ञ हों।

(132) और प्रत्येक व्यक्ति के लिए दर्जे हैं उसके कर्म के अनुसार, और तुम्हारा पालनहार लोगों के कर्मों से अनभिज्ञ नहीं। (133) और तुम्हारा पालनहार निरपेक्ष है, दयावाला है। यदि वह चाहे तो तुम सबको उठा ले और तुम्हारे उपरान्त जिसको चाहे तुम्हारे स्थान पर ले आये। जिस प्रकार उसने तुमको पैदा किया दूसरों की पीढ़ी से। (134) जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है, वह आकर रहेगी और तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते। (135) कहो, ऐ लोगों, तुम कर्म करते रहो अपने स्थान पर, मैं भी कर्म कर रहा हूँ। तुम शीघ्र ही जान लोगे कि परिणाम किसके हित में है। निस्सन्देह अत्याचारी कभी सफलता नहीं पा सकते।

(136) और अल्लाह ने जो खेती और पशु पैदा किये, उसमें से उन्होंने अल्लाह का कुछ हिस्सा निर्धारित किया है। तो वह कहते हैं कि यह हिस्सा अल्लाह का है, उनकी कल्पना के अनुसार, और यह हिस्सा हमारे साझीदारों का है। फिर जो हिस्सा उनके साझीदारों का होता है, वह तो अल्लाह को नहीं पहुँचता और जो हिस्सा अल्लाह के लिए है, वह उनके साझीदारों को पहुँच जाता है। कैसा बुरा निर्णय है जो यह लोग करते हैं। (137) और इस तरह बहुत से साझीदार ठहराने वालों (शिर्क करने वालों) की दृष्टि में उनके साझीदारों ने अपनी सन्तान की हत्या को आकर्षक बना दिया है, ताकि उनको नष्ट करें और उन पर उनके धर्म को सन्दिग्ध बना दें। और यदि अल्लाह चाहता तो वह ऐसा न करते। अतः उनको छोड़ दो कि वह अपने मिथ्यारोपण में लगे रहें।

(138) और कहते हैं कि यह पशु और यह खेती निषिद्ध है, उन्हें कोई नहीं खा सकता सिवाय उसके जिसको हम चाहें, अपनी कल्पना के अनुसार। और अमुक पशु हैं कि उसकी पीठ हराम कर दी गई है और कुछ पशु हैं जिन पर वह अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उन्होंने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है। अल्लाह शीघ्र ही उनको इस मिथ्यारोपण का बदला देगा। (139) और कहते हैं कि जो अमुक प्रकार के पशुओं के पेट में है, वह हमारे पुरुषों के लिए विशेष है और वह हमारी महिलाओं के लिए अवैध है। यदि वह मृत हो तो उसमें सब हिस्सेदार हैं। अल्लाह शीघ्र उनके इस कथन का दण्ड देगा। निस्सन्देह अल्लाह विवेक वाला, ज्ञान वाला है। (140) वह लोग घाटे में पड़ गये जिन्होंने अपनी सन्तान की हत्या की नासमझी से बिना किसी ज्ञान के। और उन्होंने उस रोज़ी को अवैध कर लिया जो अल्लाह ने उनको दिया था, अल्लाह पर आरोप बाँधते हुए। वह भटक गये और वह सन्मार्ग प्राप्त करने वाले न बने।

(141) और वह अल्लाह ही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ जालियों पर चढ़ाये जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाये जाते हैं। और खजूर के वृक्ष और खेती कि उसके खाने की वस्तुएँ भिन्न होती हैं और ज़ैतून और अनार परस्पर मिलते-जुलते भी और एक-दूसरे से भिन्न भी। खाओ इनकी पैदावार जबकि वह फलें और अल्लाह का अधिकार अदा करो उसके काटने के दिन। और

अपव्यय न करो, निस्सन्देह अल्लाह अपव्यय करने वालों को पसन्द नहीं करता। (142) और उसने मवेशियों में बोझ उठाने वाले पैदा किये और भूमि से लगे हुए भी। खाओ उन वस्तुओं में से जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं। और शैतान का अनुसरण न करो, वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है।

(143) अल्लाह ने आठ जोड़े पैदा किये। दो भेड़ की जाति से और दो बकरी की जाति से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने अवैध किये हैं या दोनों मादा। या वह बच्चे जो भेड़ों और बकरियों के पेट में हैं। मुझे प्रमाण के साथ बताओ यदि तुम सच्चे हो। (144) और इसी प्रकार दो ऊँट की जाति से हैं और दो गाय की जाति से। पूछो कि दोनों नर अल्लाह ने अवैध किये हैं या दोनों मादा। या वह बच्चे जो ऊँटनी और गाय के पेट में हों। क्या तुम उस समय उपस्थित थे जब अल्लाह ने तुमको इसका आदेश दिया था। फिर उससे अधिक अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये ताकि वह लोगों को भ्रमित करे बिना ज्ञान के। निस्सन्देह, अल्लाह अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता। (145) कहो, मुझ पर जो श्रुति (वही) आयी है, उसमें तो मैं कोई ऐसी वस्तु नहीं पाता जो अवैध हो किसी खाने वाले पर सिवाय इसके कि वह मुर्दार हो या बहाया हुआ ख़ून हो या सूअर का मांस हो कि वह अपवित्र है, या अवैध रूप से ज़बह किया हुआ जानवर जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त किसी और का नाम पुकारा गया हो। परन्तु जो व्यक्ति भूख़ से अनियन्त्रित हो जाये, न अवज्ञा करे और न अति करे, तो तेरा पालनहार क्षमा करने वाला, दयावान है।

(146) और यहूदियों पर हमने सभी नाख़ून वाले जानवर अवैध किये थे और गाय और बकरी की चर्बी हराम की सिवाय इसके जो उनकी पीठ या अंतड़ियों से लगी हो या किसी हड्डी से मिली हुई हो। यह दण्ड दिया था हमने उनको उनके विद्रोह पर और निश्चित रूप से हम सच्चे हैं। (147) अतः यदि वह तुमको झुठलायें तो कह दो कि तुम्हारा पालनहार बहुत व्यापकता वाला दया वाला है। और उसका दण्ड अपराधी लोगों से टल नहीं सकता।

(148) जिन्होंने शिर्क किया (साझी ठहराया), वह कहेंगे कि यदि अल्लाह चाहता तो हम शिर्क न करते और न हमारे बाप-दादा शिर्क करते और न हम

किसी वस्तु को हराम (अवैध) कर लेते। इसी प्रकार झुठलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले हुए हैं। यहाँ तक कि उन्होंने हमारी यातना चखी। कहो क्या तुम्हारे पास कोई ज्ञान है जिसको तुम हमारे समक्ष प्रस्तुत करो। तुम तो मात्र कल्पना का अनुसरण कर रहे हो और मात्र अनुमान से काम लेते हो। (149) कहो कि सारे निर्णायक तर्क तो अल्लाह के हैं। और यदि अल्लाह चाहता तो वह तुम सबको सीधा मार्ग दिखा दे देता। (150) कहो कि अपने गवाहों को लाओ जो इस पर गवाही दें कि अल्लाह ने इन वस्तुओं को हराम (अवैध) ठहराया है। यदि वह झूठी गवाही दे भी दें तो तुम उनके साथ गवाही न देना, और तुम उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते और दूसरों को अपने पालनहार का समकक्ष ठहराते हैं।

(151) कहो, आओ मैं सुनाऊँ वह चीज़ें जो तुम्हारे पालनहार ने तुम पर हराम (अवैध) की हैं, यह कि तुम अल्लाह के साथ किसी वस्तु को साझी न करो और माता-पिता के साथ सद्व्यवहार करो और अपनी सन्तान को निर्धनता के सन्देह से हत्या न करो। हम तुमको भी जीविका देते हैं और उनको भी। और अश्लील कर्मों के निकट न जाओ चाहे व प्रत्यक्ष हो या परोक्ष और जिस प्राण को अल्लाह ने हराम (अवैध) ठहराया, उसकी हत्या न करो परन्तु सच्चाई के लिये पर। यह बातें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है ताकि तुम बुद्धि से काम लो।

(152) और अनाथ की सम्पत्ति के पास न जाओ परन्तु ऐसे ढंग से जो बेहतर हो यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाये। और नाप-तौल में पूरा न्याय करो। हम किसी के ज़िम्मे उतना ही बोझ डालते हैं जितनी उसमें क्षमता हो। और जब बोलो तो न्याय की बात बोलो चाहे मामला अपने सम्बन्धी ही का हो। और अल्लाह के प्रण को पूरा करो। यह चीज़ें हैं जिनका अल्लाह ने तुम्हें आदेश दिया है ताकि तुम ध्यान रखो। (153) और अल्लाह ने आदेश दिया कि यही मेरा सीधा मार्ग है अतः इसी पर चलो और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वह तुमको अल्लाह के रास्ते से विचलित कर देंगे। यह अल्लाह ने तुमको आदेश दिया है ताकि तुम बचते रहो।

(154) फिर हमने मूसा को किताब दी भले कर्म करने वालों पर अपना उपकार पूरा करने के लिए और हर बात की व्याख्या और मार्गदर्शन और कृपा, ताकि वह अपने पालनहार के मिलने का विश्वास करें। (155) और इसी प्रकार हमने यह किताब उतारी है, एक बरकत वाली (विभूतिपूर्ण) किताब। अतः इस पर चलो और अल्लाह से डरो ताकि तुम पर दया की जाये। (156) इसलिए कि तुम यह न कहने लगो कि किताब तो हमसे पहले के दो समूहों को दी गई थी और हम उनके पढ़ने पढ़ाने से अनभिज्ञ थे। (157) या कहो कि यदि हम पर किताब अवतरित की जाती तो हम उनसे श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले होते। अतः आ चुका तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक प्रकाशित प्रमाण और मार्गदर्शन और दया। तो उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की निशानियों को झुठलाये और उनसे मुँह मोड़े। जो लोग हमारी निशानियों से विमुख होते हैं हम उनको उनकी विमुखता के परिणाम स्वरूप बहुत बुरी यातना देंगे। (158) यह लोग क्या इसकी प्रतीक्षा में हैं कि इनके पास फ़रिश्ते आयें या तुम्हारा पालनहार आये या तुम्हारे पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी प्रकट हो। जिस दिन तुम्हारे पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी आ पहुँचेगी तो किसी व्यक्ति को उसका विश्वास कुछ लाभ न देगा जो पहले विश्वास न प्रकट कर चुका हो या अपने विश्वास में कुछ भलाई न की हो। कहो तुम भी प्रतीक्षा करो, हम भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

(159) जिन्होंने अपने धर्म में रास्ते निकाले और समूह-समूह बन गये, तुम्हारा उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। उनका मामला अल्लाह के हवाले है। फिर वही उनको बता देगा जो वह करते थे। (160) जो व्यक्ति भलाई लेकर आयेगा तो उसके लिए उसका दस गुना है। और जो व्यक्ति बुराई लेकर आयेगा तो उसको मात्र उसके समान बदला मिलेगा और उन पर अत्याचार नहीं किया जायेगा।

(161) कहो, मेरे पालनहार ने मुझको सीधा मार्ग बता दिया है। सही धर्म इब्राहीम के पंथ (सम्प्रदाय) की ओर जो एकाग्रित थे और मुश्रिक़ों (साझीदार ठहराने वालों) में से न थे। (162) कहो मेरी नमाज़ और मेरी क़ुर्बानी, मेरा

जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो पालनहार है सम्पूर्ण संसार का। (163) कोई उसका साझी नहीं। और मुझे इसी का आदेश मिला है और मैं सबसे पहला आज्ञाकारी हूँ। (164) कहो, क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त कोई और पालनहार तलाश करूँ जबकि वही हर चीज़ का पालनहार है और जो व्यक्ति भी कोई कमाई करता है, वह उसी पर रहता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठायेगा। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारी वापसी है। अतः वह तुम्हें बता देगा वह चीज़ जिसमें तुम मतभेद करते थे। (165) और वही है जिसने तुम्हें धरती पर एक-दूसरे का उत्तराधिकारी बनाया और तुममें से एक की प्रतिष्ठा दूसरे की तुलना में ऊँची की। ताकि वह परीक्षा ले तुम्हारी अपने दिये हुए में। तुम्हारा पालनहार शीघ्र दण्ड देने वाला है और निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला, दयावान है।

7. सूरह अल-आराफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. साद.। (2) यह किताब है जो तुम्हारी ओर उतारी गई है। अतः तुम्हारा हृदय उसके कारण तंग न हो, ताकि तुम इसके माध्यम से लोगों को सचेत करो, और यह ईमान वालों (दीन में आस्था रखने वाले) के लिए संस्मरण है। (3) जो उतरा है तुम्हारी ओर तुम्हारे पालन कर्त्ता की ओर से इसका पालन करो और इसके अतिरिक्त अन्य संरक्षकों का आज्ञापालन न करो। तुम बहुत कम उपदेश मानते हो। (4) और कितनी ही बस्तियाँ हैं जिनको हमने नष्ट कर दिया। उन पर हमारी यातना रात को आ पहुँची, या दोपहर को जबकि वह विश्राम कर रहे थे। (5) फिर जब हमारी यातना उन पर आयी तो वह इसके अतिरिक्त कुछ न कह सके कि वास्तव में हम अत्याचारी थे। (6) तो हमको अवश्य पूछना है उन लोगों से जिनके पास रसूल (सन्देष्टा) भेजे गये और हमको अवश्य पूछना है सन्देष्टाओं से। (7) फिर हम उनके समक्ष सब कुछ वर्णन कर देंगे ज्ञान के साथ और हम कहीं अनुपस्थित न थे। (8) उस दिन वज़नदार (प्रभावी) केवल सत्य होगा। अतः जिनकी तौलें भारी होंगी, वही

लोग सफल घोषित होंगे। (9) और जिनकी तौलें हल्की होंगी वही लोग हैं जिन्होने अपने आप को घाटे में डाला, क्योंकि वह हमारे प्रतीकों के साथ अन्याय करते थे।

(10) और हमने तुमको पृथ्वी पर स्थान दिया और हमने तुम्हारे लिए इसमें जीवन-सामग्री रखी, परन्तु तुम बहुत कम आभार प्रकट करते हो। (11) और हमने तुमको पैदा किया, फिर हमने तुम्हारा रूप बनाया। फिर फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो। अतः उन्होंने सजदा किया। परन्तु इबलीस सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ। (12) अल्लाह ने कहा कि तुझे किस चीज ने सजदा करने से रोका, जबकि मैंने तुझको आदेश दिया था। इबलीस ने कहा कि मैं इससे अच्छा हूँ। तूने मुझको आग से बनाया है और आदम को मिट्टी से। (13) अल्लाह ने कहा कि तू उतर यहाँ से। तुझे यह अधिकार नहीं कि तू इसमें घमण्ड करे। अतः निकल जा निश्चित रूप से तू अपमानित है। (14) इबलीस ने कहा कि उस दिन तक कि लिए तू मुझे अवसर दे जबकि सब लोग उठाये जायेंगे। (15) अल्लाह ने कहा कि तुझको अवसर दिया गया। (16) इबलीस ने कहा चूंकि तूने मुझे भटकाया है, मैं भी लोगों के लिए तेरे सीधे मार्ग पर बैठूँगा। (17) फिर उन पर आऊँगा उनके सामने से और उनके पीछे से और उनके दायें से और उनके बायें से और तू उनमें से अधिकतर को आभार व्यक्त करने वाला न पायेगा। (18) अल्लाह ने कहा कि निकल यहाँ से अपमानित और तिरस्कृत। जो कोई इनमें से तेरे मार्ग पर चलेगा तो मैं तुम सबसे नरक को भर दूंगा।

(19) और ऐ आदम, तुम और तुम्हारी पत्नी जन्नत में रहो और खाओ जहाँ से चाहो परन्तु इस वृक्ष के पास न जाना अन्यथा तुम घाटा उठाने वालों में से हो जाओगे। (20) फिर शैतान ने दोनों को भ्रमित किया ताकि वह खोल दे उनके वह लज्जा के स्थान जो उनसे छिपाये गये थे। उसने उनसे कहा कि तुम्हारे पालनकर्त्ता ने तुमको इस वृक्ष से मात्र इसलिए रोका है कि कहीं तुम दोनों फ़रिश्ता न बन जाओ अथवा तुमको सदैव का जीवन प्राप्त हो जाये। (21) और उसने सौगन्ध खाकर कहा कि मैं तुम दोनों का शुभचिन्तक हूँ।

(22) अतः उसने झुका लिया उनको धोखे से। फिर जब दोनो ने वृक्ष

का फल चखा तो उनके लज्जा के स्थान उन पर खुल गये। और वह अपने को बाग़ के पत्तों से ढाँकने लगे और उनके पालनहार ने उनको पुकारा कि क्या मैंने तुम्हें इस वृक्ष से मना नहीं किया था और यह नहीं कहा था कि शैतान तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है। (23) उन्होंने कहा, ऐ हमारे पालनहार, हमने अपने आप पर अत्याचार किया और यदि तू हमको क्षमा न करे और हम पर दया न करे तो हम घाटा उठाने वालों में से हो जायेंगे। (24) अल्लाह ने कहा, उतरो, तुम एक दूसरे के शत्रु रहोगे और तुम्हारे लिए धरती पर एक विशेष अन्तराल तक ठहरना और लाभ उठाना है। (25) अल्लाह ने कहा इसी में तुम जिओगे और इसी में तुम मरोगे और इसी से तुम निकाले जाओगे।

(26) ऐ आदम की सन्तान, हमने तुम पर वस्त्र (परिधान) उतारा है जो तुम्हारे शरीर के लज्जा योग्य अंगों को ढाँके और सौन्दर्य भी। और तक़्वा (धर्म-परायणता) का परिधान इससे भी अच्छा है। यह अल्लाह के प्रतीकों में से है ताकि लोग चिन्तन करें। (27) ऐ आदम की सन्तान, शैतान तुमको भ्रमित न कर दे जिस तरह उसने तुम्हारे माता-पिता को जन्नत से निकलवा दिया, उसने उनके वस्त्र उतरवाये ताकि उनको उनके समक्ष निर्वस्त्र कर दे। वह और उसके साथी तुमको ऐसे स्थान से देखते, हैं जहाँ से तुम उन्हें नहीं देखते हमने शैतानों को उन लोगों का मित्र बना दिया है जो आस्थावान नहीं बनते।

(28) और जब वह कोई अश्लीलता करते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने पूर्वजों को इसी तरह करते हुए पाया है और अल्लाह ने हमको इसी का आदेश दिया है। कहो, अल्लाह कभी बुरे कार्य का आदेश नहीं देता। क्या तुम अल्लाह से वह बात जोड़ते हो जिसका तुम्हें कोई ज्ञान नहीं। (29) कहो कि मेरे पालनहार ने न्याय का आदेश दिया है और यह कि प्रत्येक नमाज़ के समय अपना चेहरा सीधा रखो। और उसी को पुकारो उसी के लिये दीन (धर्म) को विशुद्ध करते हुए। जिस तरह उसने तुमको पहले पैदा किया, उसी तरह तुम दूसरी बार भी पैदा होगे। (30) एक समूह को उसने सन्मार्ग दिखा दिया और एक समूह है कि उस पर पथभ्रष्टता सिद्ध हो चुकी। उन्होने

अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को अपना मित्र बनाया और समझते यह हैं कि वह सन्मार्ग पर हैं।

(31) ऐ आदम की सन्तान, प्रत्येक नमाज़ के समय अपना वस्त्र पहनो और खाओ पिओ। और सीमा का उल्लंघन न करो। निस्सन्देह अल्लाह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता। (32) कहो अल्लाह के सौंन्दर्य को किसने हराम किया जो उसने अपने बन्दों के लिए निकाला था और खाने की पवित्र वस्तुओं को। कहो वह सांसारिक जीवन में भी आस्था रखने वालों के लिए हैं और परलोक में तो वह विशेष रूप से उन्हीं के लिए होंगी। इस प्रकार हम अपनी आयतें (निशानियाँ) खोल कर वर्णित करते हैं उन लोगों के लिए जो जानना चाहें। (33) कहो, मेरे पालनहार ने तो मात्र अश्लील बातों को हराम ठहराया है, वह खुली हों अथवा छिपी हों, और पाप को और अनाधिकृत अत्याचार को और इस बात को कि तुम अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराओ, जिसका उसने कोई प्रमाण नहीं उतरा और यह कि तुम अल्लाह से ऐसी बात जोड़ो जिसका तुम ज्ञान नहीं रखते।

(34) और प्रत्येक समुदाय के लिए एक समय नियत है। फिर जब उनका समय आ जायेगा तो वह न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (35) ऐ आदम की सन्तान, यदि (मनुष्य रचना के आरंभ में ही अल्लाह ने बता दिया था कि) तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक सन्देष्टा आये जो तुमको मेरी आयतें सुनाये तो जो व्यक्ति सचेत हुआ और जिसने सुधार कर लिया, उनके लिए न कोई भय होगा और न वह दुखी होंगे। (36) और जो लोग मेरी आयतों को झुठलायें और उनसे घमण्ड करें, वही लोग नरक वाले हैं। वह उसमें सदैव रहेंगे। (37) फिर उससे अधिक अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर मिथ्यारोपण करे लगाये या उसकी निशानियों को झुठलाये, उनके भाग्य का जो भाग लिखा हुआ है वह उन्हें चहुंचता रहेगा। यहाँ तक कि जब हमारे भेजे हुए फरिश्ते उनके प्राण लेने के लिए उनके पास पहुँचेंगे तो वह उनसे पूँछेगें कि अल्लाह के अतिरिक्त जिनको तुम पुकारते थे,

वह कहाँ हैं। वह कहेंगे कि वह सब हमसे खो गये। और वह अपने विरूद्ध स्वंय गवाही देंगे कि निस्सन्देह वह अवज्ञा करने वाले थे।

(38) अल्लाह कहेगा, प्रवेश करो आग में जिन्नों और मनुष्यों के उन समूहों के साथ जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं। जब भी कोई समूह नरक में प्रवेश करेगा वह अपने साथी समूह पर धिक्कार करेगा। यहाँ तक कि जब वह उसमें एकत्र हो जायेंगे तो उनके बाद वाले अपने पहले वालों के सम्बन्ध में कहेंगे, ऐ हमारे पालनहार, यही लोग हैं जिन्होंने हमको भटकाया, अतः तू इनको आग की दोगुनी यातना दे। अल्लाह कहेगा कि सबके लिए दोगुनी है परन्तु तुम नहीं जानते। (39) और उनके पहले वाले अपने बाद वालों से कहेंगे, तुमको हम पर कोई बड़ाई प्राप्त नहीं। अतः अपनी कमाई के परिणाम स्वरूप यातना का स्वाद चखो।

(40) निस्सन्देह जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे घमण्ड किया, उनके लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जायेंगे और न वह स्वर्ग में प्रवेश करेंगे जब तक कि ऊँट सूई के नाके में न घुस जाये। और हम अपराधियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं। (41) उनके लिए नरक का बिछौना होगा और उनके ऊपर उसी का ओढ़ना होगा। और हम अत्याचारियों को इसी प्रकार दण्ड देते हैं। (42) और जो लोग आस्थावान हुए और उन्होंने भले कर्म किये, हम किसी व्यक्ति पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालते हैं, यही लोग जन्नत वाले हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे। (43) और उनके सीने की प्रत्येक खटक को हम निकाल देंगे। उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और वह कहेंगे कि सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने हमको यहाँ तक पहुँचाया और हम मार्ग पाने वाले न थे यदि अल्लाह हमारा मार्गदर्शन न करता। हमारे पालनहार के सन्देष्टा सच्ची बात लेकर आये थे। और पुकारा जायेगा कि यह जन्नत है जिसके तुम उत्तराधिकारी घोषित किये गये हो अपने कर्मों के बदले।

(44) और जन्नत वाले नरक वालों को पुकारेंगे कि हमसे हमारे पालनहार ने जो प्रतिज्ञा की थी हमने उसको सच्चा पाया, क्या तुमने भी अपने पालनहार की प्रतिज्ञा को सच्चा पाया। वह कहेंगे हाँ। फिर एक पुकारने वाला दोनों के बीच पुकारेगा कि अल्लाह कि फटकार हो अत्याचारियों पर। (45) जो अल्लाह

के मार्ग से रोकते थे और उसमें टेढ़ ढूँढते थे और वह आख़िरत को झुठलाने वाले थे।

(46) और दोनों के बीच एक ओट (आड़) होगी। और आराफ़ के ऊपर कुछ लोग होंगे जो हर एक को उनके लक्षणों से पहचानेंगे और वह जन्नत वालों को पुकार कर कहेंगे कि तुम पर सलामती हो, वह अभी जन्नत में प्रवेश नहीं हुए होंगे परन्तु वह आशावान होंगे। (47) और जब नरक वालों की ओर उनकी नज़र फेरी जायेगी तो वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, हमको सम्मिलित न करना इन अत्याचारी लोगों के साथ। (48) और आराफ़ वाले उन लोगों को पुकारेंगे जिन्हें वह उनके लक्षणें से पहचानते होंगे। वह कहेंगे कि तुम्हारे काम न आया तुम्हारा समूह और न तुम्हारा अपने को बड़ा समझना। (49) क्या यह वही लोग हैं जिनके सम्बन्ध में तुम सौगन्ध खाकर कहते थे कि इन पर कभी अल्लाह अपनी दया-दृष्टि न करेगा। जन्नत में प्रवेश हो जाओ, अब न तुम पर कोई भय है और न तुम दुखी होगे।

(50) और नरक के लोग जन्नत वालों को पुकारेंगे कि कुछ पानी हम पर डाल दो या उसमें से जो अल्लाह ने तुम्हें खाने को दे रखा है। वह कहेंगे कि अल्लाह ने इन दोनों वस्तुओं को अवज्ञाकारियों के लिए अवैध कर दिया है। (51) वह जिन्होंने अपने दीन (धर्म) को खेल और तमाशा बना लिया था और जिनको सांसारिक जीवन ने धोखे में डाल रखा था। अतः आज हम उनको भुला देंगे जिस प्रकार उन्होंने अपने इस दिन की भेंट को भुला दिया था। और जैसा कि वह हमारी निशानियों को झुठलाते रहे।

(52) और हम इन लोगों के पास एक ऐसी किताब ले आये हैं जिसको हमने ज्ञान के आधार पर वर्णित किया है, मार्गदर्शन और दया बनाकर उन लोगों के लिए जो आस्थावान बने।

(53) क्या अब वह इसी की प्रतीक्षा में हैं कि उसका तथ्य (मूल तत्त्व) प्रकट हो जाये। जिस दिन उसका सच प्रकट हो जायेगा तो वह लोग जो इसको पहले भूले हुए थे बोल उठेंगे कि निस्सन्देह हमारे पालनहार के सन्देष्टा सच्चाई लेकर आये थे। तो अब क्या कोई हमारी सिफ़ारिश करने वाले हैं कि

वह हमारी सिफ़ारिश करें या हमको पुनः वापस ही भेज दिया जाये ताकि हम उससे भिन्न कर्म करें जो हम पहले कर रहे थे। उन्होंने अपने आप को घाटे में डाला और उनसे लुप्त हो गया वह जो वह गढ़ा करते थे।

(54) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार वही अल्लाह है जिसने आकाशों और पृथ्वी की रचना छः दिनों में की। फिर वह अर्श (सिंहासन) पर आसीन हुआ। वह ओढ़ाता है रात को दिन पर, दिन उसके पीछे लगा आता है दौड़ता हुआ। और उसने पैदा किये सूरज और चाँद और तारे, सब आज्ञाकारी हैं उसके आदेश के। याद रखो, उसी का काम है पैदा करना और आदेश करना। बड़ी बरकत (विभूति) वाला है अल्लाह जो पालनहार है समस्त संसार का। (55) अपने पालनहार को पुकारो गिड़गिड़ाते हुए और चुपके-चुपके। निस्सन्देह वह सीमा का उल्लंघन करने वालों को पसन्द नहीं करता। (56) और पृथ्वी पर बिगाड़ न करो उसके सुधार के उपरान्त और उसी को पुकारो भय के साथ और आशा के साथ। निस्सन्देह अल्लाह की कृपा भले कर्म करने वालों के निकट है।

(57) और वह अल्लाह ही है जो हवाओं को अपनी कृपा से आगे शुभ सूचना बनाकर भेजता है। फिर जब वह बोझल बादलों को उठा लेती हैं तो हम उसको किसी मृत भूमि की ओर हाँक देते हैं। फिर हम उसके माध्यम से पानी उतारते हैं। फिर हम उसके माध्यम से प्रत्येक प्रकार के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को निकालेंगे, ताकि तुम चिन्तन करो। (58) और जो भूमि अच्छी है उसकी उपज निकलती है उसके पालनहार के आदेश से और जो भूमि निकृष्ट (ख़राब) है उसकी उपज कम ही होती है। इसी प्रकार हम अपनी निशानियाँ विभिन्न पहलुओं से दिखाते हैं उनके लिए जो आभार प्रकट करने वाले हैं।

(59) हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा। नूह ने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की इबादत (उपासना) करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। मैं तुम पर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ। (60) उसकी क़ौम के बड़ों ने कहा कि हमको तो यह दिखाई देता है कि तुम एक स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त हो। (61) नूह ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मुझमें कोई पथभ्रष्टता नहीं है, बल्कि मैं भेजा हुआ हूँ सम्पूर्ण संसार के पालनहार का। (62) तुमको अपने

पालनहार के सन्देशों को पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा शुभचिंतक हूँ। और मैं अल्लाह की ओर से वह बात जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (63) क्या तुमको इस पर आश्चर्य हुआ कि तुम्हारे पालनहार का उपदेश तुम्हारे पास तुम ही में से एक व्यक्ति के माध्यम से आया ताकि वह तुमको सचेत करे और ताकि तुम बचो और ताकि तुम पर दया की जाये। (64) अतः उन्होंने उसको झुठला दिया। फिर हमने नूह को बचा लिया और उन लोगों को भी जो उसके साथ नौका में थे और हमने उन लोगों को डुबा दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। निश्चय ही वह लोग अन्धे थे।

(65) और आद की ओर हमने उनके भाई हूद को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। तो क्या तुम डरते नहीं। (66) उसकी क़ौम के बड़े जो झुठला रहे थे बोले, हम तो तुमको मूर्खता में लिप्त देखते हैं और हमारा विचार है कि तुम झूठे हो। (67) हूद ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मुझमें मूर्खता नहीं। बल्कि मैं संसार के पालनहार का सन्देशवाहक हूँ। (68) तुमको अपने पालनहार के सन्देश पहुँचा रहा हूँ और तुम्हारा शुभचिन्तक और विश्वस्त हूँ। (69) क्या तुमको इस पर आश्चर्य है कि तुम्हारे पास तुम ही में से एक व्यक्ति के माध्यम से तुम्हारे पालनहार का उपदेश आया ताकि वह तुमको सचेत करे। और याद करो जबकि उसने नूह की क़ौम के उपरान्त तुमको उसका उत्तराधिकारी बनाया और डील-डौल में तुमको फैलाव भी अधिक दिया। अतः अल्लाह के उपहारों को याद करो ताकि तुम सफलता प्राप्त करो।

(70) हूद की क़ौम ने कहा, क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम केवल एक अल्लाह की उपासना करें और उनको छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते आये हैं। तो तुम जिस यातना की धमकी हमको देते हो, उसको ले आओ यदि तुम सच्चे हो। (71) हूद ने कहा, तुम पर तुम्हारे पालनहार की ओर से अपवित्रता और क्रोध नियत हो चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों पर झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिये हैं। जिनका अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा। तो प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। (72) फिर हमने बचा लिया उसको और जो उसके साथ थे अपनी कृपा से,

और उन लोगों की जड़ काट दी जो हमारी निशानियों को झुठलाते थे और विश्वास न करते थे।

(73) और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उन्होंने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रतीक आ गया है। यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक प्रतीक (निशानी) के रूप में है। अतः इसको छोड़ दो कि वह खाये अल्लाह की धरती में। और इसको कोई कष्ट न पहुँचाना अन्यथा तुमको एक पीड़ादायक यातना पकड़ लेगी। (74) और याद करो जबकि अल्लाह ने आद के उपरान्त तुमको उनका उत्तराधिकारी बनाया और तुमको पृथ्वी में ठिकाना दिया, तुम उसके मैदानों में भवन बनाते हो और पहाड़ों को काटकर घर बनाते हो। अतः अल्लाह के उपहारों को याद करो और पृथ्वी पर बिगाड़ करते न फिरो।

(75) उनकी क़ौम के बड़े जिन्होंने घमण्ड किया, वह उन ईमान वालों (आस्थावान) से बोले जो कमज़ोर गिने जाते थे, क्या तुमको विश्वास है कि सालेह अपने पालनहार के भेजे हुए हैं। उन्होंने उत्तर दिया कि हम तो जो वह लेकर आये हैं, उस पर विश्वास रखते हैं। (76) वह घमण्डी लोग कहने लगे कि हम तो उस बात के इन्कार करने वाले हैं जिस पर तुम ईमान लाये हो। (77) फिर उन्होंने ऊँटनी को काट डाला और अपने पालनहार के आदेश से फिर गये। और उन्होंने कहा, ऐ सालेह, यदि तुम पैग़म्बर हो तो वह यातना हम पर ले आओ जिससे तुम हमको डराते थे। (78) फिर उन्हें भूकम्प ने आ पकड़ा और वह अपने घर में मुँह के बल पड़े रह गये। (79) और सालेह यह कहता हुआ उनकी बस्तियों से निकल गया कि ऐ मेरी क़ौम, मैंने तुमको अपने पालनहार का सन्देश पहुँचा दिया और मैंने तुम्हारी भलाई चाही परन्तु तुम शुभचिन्तकों को पसन्द नहीं करते।

(80) और हमने लूत को भेजा। जब उसने अपनी क़ौम से कहा। क्या तुम स्पष्ट निर्लज्जता के कर्म करते हो जो तुमसे पहले संसार में किसी ने नहीं किया। (81) तुम महिलाओं को छोड़कर पुरुषों से अपनी इच्छा पूर्ति करते हो। बल्कि तुम सीमा से आगे बढ़ने वाले लोग हो। (82) परन्तु उसकी क़ौम का

उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि इन्हें अपनी बस्ती से निकाल दो। यह लोग बड़े सदाचारी बनते हैं। (83) फिर हमने बचा लिया लूत को और उसके घर वालों को, अतिरिक्त उसकी पत्नी के जो पीछे रह जाने वालों में से बनी। (84) और हमने उन पर बर्षा की पत्थरों की, फिर देखो कि कैसा परिणाम हुआ अपराधियों का।

(85) और मदयन की ओर हमने उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से प्रमाण पहुँच चुका है। अतः नाप-तौल पूरी करो। और मत घटा कर दो लोगों को उनकी वस्तुएँ। और बिगाड़ न डालो धरती पर उसके सुधार के उपरान्त। यह तुम्हारे पक्ष में बेहतर है यदि तुम आस्थावान हो। (86) और रास्तों पर मत बैठो कि भयभीत करो और रोको अल्लाह के मार्ग से उन लोगों को जो उस पर ईमान ला चुके हैं (विश्वास व्यक्त कर चुके हैं) और उस मार्ग में टेढ़ न तलाश करो। और याद करो जबकि तुम बहुत थोड़े थे फिर तुमको बढ़ा दिया। और देखो बिगाड़ करने वालों का परिणाम क्या हुआ। (87) और यदि तुममें से एक समूह इस पर ईमान लाया है जो देकर मैं भेजा गया हूँ और एक समूह ईमान नहीं लाया है तो प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह हमारे बीच निर्णय कर दे और वह अच्छा निर्णय करने वाला है।

(88) क़ौम के बड़े जो घमण्ड करने वाले थे उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब हम तुमको और उन लोगों को जो तुम्हारे साथ ईमान लाये हैं अपनी बस्ती से निकाल देंगे या तुम हमारी क़ौम (मिल्लत) में वापस लौट आओ। शुऐब ने कहा क्या हम असन्तुष्ट हों तब भी। (89) हम अल्लाह पर झूठ गढ़ने वाले होंगे यदि हम तुम्हारी मिल्लत में लौट आयें इसके उपरान्त कि अल्लाह ने हमको उससे छुटकारा दे दिया। और हमसे यह सम्भव नहीं कि हम उस मिल्लत में लौट आयें परन्तु यह कि अल्लाह हमारा पालनहार ही ऐसा चाहे। हमारा पालनहार प्रत्येक वस्तु को अपने ज्ञान के घेरे में लिये हुए है। हमने अपने पालनहार पर भरोसा किया। ऐ हमारे पालनहार, हमारे और हमारी क़ौम के बीच सच्चाई के साथ निर्णय कर दे, तू अच्छा निर्णय करने वाला है। (90) और उन बड़ों

ने जिन्होंने उसकी क़ौम में से इन्कार किया था कहा कि यदि तुम शुऐब का अनुसरण करोगे तो तुम नष्ट हो जाओगे। (91) फिर उनको भूकम्प ने पकड़ लिया। तो वह अपने घरों में मुँह के बल पड़े रह गये। (92) जिन्होंने शुऐब को झुठलाया था मानो वह कभी उस बस्ती में बसे ही न थे, जिन्होंने शुऐब को झुठलाया वही घाटे में रहे। (93) उस समय शुऐब उनसे मुँह मोड़कर चला और कहा, ऐ मेरी क़ौम, मैं तुमको अपने पालनहार का सन्देश पहुँचा चुका और मैंने तम्हारा हित चाहा। अब मैं क्या पश्चाताप करूँ अवज्ञाकारियों पर।

(94) और हमने जिस बस्ती में भी कोई सन्देष्टा भेजा, उसके वासियों को हमने कठोरता और कष्ट में डाला ताकि वह गिड़गिड़ायें। (95) फिर हमने दुख को सुख से बदल दिया यहाँ तक कि उन्हें अत्याधिक सम्पन्नता प्राप्त हुई और वह कहने लगे कि दुख और सुख तो हमारे पूर्वजों को भी पहुँचता रहा है। फिर हमने उनको अकस्मात पकड़ लिया और वह इसकी कल्पना भी न करते थे। (96) और यदि बस्तियों वाले ईमान लाते और डरते तो हम उन पर आकाश और भूमि के उपहार खोल देते। परन्तु उन्होंने झुठलाया तो हमने उनको पकड़ लिया उनके कर्मों के बदले। (97) फिर क्या बस्ती वाले इससे निडर हो गए हैं कि उन पर हमारी यातना रात के समय आ पड़े जबकि वह सोते हों। (98) अथवा क्या बस्ती वाले इससे निड़र हो गए हैं कि हमारी यातना आ पहुँचे उन पर दिन चढ़े जब वह खेलते हों। (99) क्या ये लोग अल्लाह की युक्तियों से निडर हो गए हैं। तो अल्लाह की युक्तियों से वही लोग निडर होते हैं जो नष्ट होने वाले हों।

(100) क्या शिक्षा नहीं मिली उनको जो पृथ्वी के उत्तराधिकारी हुए हैं उसके पूर्ववासियों से कि यदि हम चाहें तो उनको पकड़ लें उनके पापों पर। और हमने उनके दिलों पर मुहर कर दी है, अतः वह नहीं समझते। (101) यह वह बस्तियाँ हैं जिनके कुछ वृत्तान्त हम तुमको सुना रहे हैं। उनके पास हमारे सन्देष्टा निशानियाँ लेकर आये तो कदापि न हुआ कि वह ईमान लायें उस बात पर जिसको वह पहले झुठला चुके थे। इस प्रकार अल्लाह झुठलाने वालों के दिलों पर मुहर कर देता है। (102) और हमने

उनके अधिकतर लोगों में वचन का निर्वाह न पाया और हमने उनमें से अधिकतर को अवज्ञाकारी पाया।

(103) फिर उनके पश्चात हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा फ़िरऔन और उसकी क़ौम के सरदारों के पास, परन्तु उन्होंने हमारी निशानियों के साथ अत्याचार किया। तो देखो कि बिगाड़ करने वालों का क्या परिणाम हुआ। (104) और मूसा ने कहा ऐ फ़िरऔन, मैं संसार के पालनहार की ओर से भेजा हुआ आया हूँ। (105) मेरा कर्त्तव्य है कि अल्लाह के नाम पर कोई बात सत्य के अतिरिक्त न कहूँ। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से स्पष्ट निशानी लेकर आया हूँ। तो तू मेरे साथ इस्राईल की सन्तान को जाने दे। (106) फ़िरऔन ने कहा, यदि तुम कोई निशानी लेकर आये हो तो उसको प्रस्तुत करो, यदि तुम सच्चे हो। (107) तब मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो अचानक वह एक प्रत्यक्ष अजगर बन गया। (108) और उसने अपना हाथ निकाला तो अचानक वह देखने वालों के सामने चमक रहा था। (109) फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा यह व्यक्ति बहुत कुशल जादूगर है। (110) वह चाहता है कि तुमको तुम्हारी भूमि से निकाल दे। (111) अब तुम्हारा क्या विचार है। उन्होंने कहा, मूसा को और उसके भाई को समय दो और नगरों में सन्देशवाहक भेजो। (112) वह तुम्हारे पास सारे कुशल जादूगर ले आयें।

(113) और जादूगर फ़िरऔन के पास आये। उन्होंने कहा, हमें पुरस्कार तो अवश्य मिलेगा यदि हम सफल रहे। (114) फ़िरऔन ने कहा, हाँ और अवश्य तुम हमारे निकटवर्तियों में सम्मिलित होगे। (115) जादूगरों ने कहा या तुम डालो या हम डालने वाले बनते हैं। (116) मूसा ने कहा तुम ही डालो। फिर जब उन्होंने डाला तो लोगों की आँखों पर जादू कर दिया और उन पर भय व्याप्त कर दिया और बहुत बड़ा करतब दिखाया। (117) हमने मूसा को आदेश भेजा कि अपनी लाठी डाल दो। तो अचानक वह निगलने लगा उसको जो उन्होंने गढ़ा था। (118) तो सत्य प्रकट हो गया और जो कुछ उन्होंने बनाया था वह झूठ होकर रह गया। (119) अतः वह लोग वहीं हार गये और अपमानित होकर रहे। (120) और जादूगर सजदे में

गिर पड़े। (121) उन्होंने कहा हम ईमान लाये समस्त संसारों के पालनहार पर। (122) जो पालनहार है मूसा और हारुन का।

(123) फ़िरऔन ने कहा, तुम लोगों ने मूसा पर विश्वास प्रकट किया इससे पूर्व कि मैं तुम्हें अनुमति दूँ। निश्चित रूप में यह एक षडयन्त्र है जो तुम लोगों ने नगर में इस उद्देश्य से रचा है कि तुम इसके वासियों को यहाँ से निकाल दो, तो तुम अतिशीघ्र जान लोगे। (124) मैं तुम्हारे हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से काटूँगा, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा दूँगा। (125) उन्होंने कहा हमको अपने पालनहार ही की ओर लौटना है। (126) तू हमको मात्र इस बात का दण्ड देना चाहता है कि हमारे पालनहार की निशानियाँ जब हमारे सामने आ गईं तो हम उन पर ईमान ले आये। ऐ पालनहार हम पर धैर्य उड़ेल दे और हमको मृत्यु प्रदान कर इस्लाम की दशा में।

(127) फ़िरऔन की क़ौम के सरदारों ने कहा, क्या तू मूसा और उसकी क़ौम को छोड़ देगा कि वह देश में बिगाड़ फैलायें और तुझको और तेरे देवताओं को छोड़ देंगे। फ़िरऔन ने कहा कि हम उनके बेटों की हत्या करेंगे और उनकी महिलाओं को जीवित रखेंगे। और हम उन पर पूर्णतः सक्षम हैं। (128) मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह से सहायता चाहो और धैर्य रखो। पृथ्वी अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है इसका उत्तराधिकारी बना देता है। और अन्तिम सफलता अल्लाह से डरने वालों ही के लिए है। (129) मूसा की क़ौम ने कहा, हम तुम्हारे आने से पहले भी सताये गये और तुम्हारे आने के बाद भी। मूसा ने कहा निकट है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे शत्रु को नष्ट कर दे और उनके स्थान पर तुमको इस भूभाग का स्वामी बना दे, फिर देखे कि तुम कैसे कर्म करते हो।

(130) और हमने फ़िरऔन वालों को अकाल और उपज की कमी में डाल दिया ताकि उनको शिक्षा मिले। (131) परन्तु जब उन पर सम्पन्नता आती तो वह कहते कि यह हमारे लिए है और यदि उन पर कोई विपत्ति आती तो उसको मूसा और उसके साथियों का दुर्भाग्य बताते। सुनो, उनका दुर्भाग्य तो अल्लाह के पास है परन्तु उनमें से अधिकतर नहीं जानते।

(132) और उन्होंने मूसा से कहा, हमको अपने जादू के प्रभाव में करने के लिए तुम चाहे कोई भी निशानी लाओ, हम तुम पर ईमान लाने वाले नहीं हैं।

(133) फिर हमने उनके ऊपर तूफ़ान भेजा और टिड्डी और जूएँ और मेंढक और ख़ून। यह सब निशानियाँ अलग-अलग दिखायीं। फिर भी उन्होने घमण्ड किया और वह अपराधी लोग थे। (134) और जब उन पर कोई यातना आती तो कहते ऐ मूसा, अपने पालनहार से हमारे लिए प्रार्थना करो जिसका उसने तुमसे वादा कर रखा है। यदि तुम हम पर से इस कष्ट को हटा दो तो हम अवश्य तुम पर आस्था प्रकट करेंगे और तुम्हारे साथ इसराईल की सन्तान को जाने देंगे। (135) फिर जब हम उनसे दूर कर देते विपत्ति को कुछ अवधि के लिए जहाँ अन्ततः उन्हें पहुँचना था तो उसी समय वह वचन को तोड़ देते।

(136) फिर हमने उनको दण्ड दिया और उनको समुद्र में डुबा दिया क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनसे बेपरवाह हो गये। (137) और जो लोग दुर्बल समझे जाते थे उनको हमने इस भू-भाग के पूर्व व पश्चिम का उत्तराधिकारी बना दिया जिसमे हमने बरकत (विभूति) रखी थी। और इसराईल की सन्तान पर तेरे पालनहार का अच्छा वचन पूरा हो गया इस कारण से कि उन्होंने धैर्य रखा और हमने फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ नष्ट कर दिया जो वह बनाते थे और जो वह चढ़ाते थे।

(138) और हमने इस्राईल की सन्तान को समुद्र के पार उतार दिया। फिर उनका सामना एक ऐसी क़ौम से हुआ जो पूजने में लगे रहे थे अपनी मूर्तियों को। उन्होंने कहा ऐ मूसा, हमारी उपासना के लिए भी एक मूर्ति बना दे जैसे उनकी मूर्तियाँ हैं। मूसा ने कहा, तुम बड़े अज्ञानी लोग हो। (139) यह लोग जिस कर्म में लिप्त हैं, वह नष्ट होने वाला है और यह लोग जो कुछ कर रहे हैं वह मिथ्या है। (140) उसने कहा, क्या मैं अल्लाह के अतिरिक्त कोई और उपास्य तुम्हारे लिए तलाश करूँ, हालाँकि उसने तुमको समस्त संसार के लोगों पर श्रेष्ठता दी है। (141) और जब हमने फ़िरऔन वालों से तुमको मुक्ति दी जो तुमको कठोर यातना में डाले हुए थे। वह तुम्हारे बेटों की हत्या करते और तुम्हारी महिलाओं को जीवित रहने देते और उसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारी बड़ी परीक्षा थी।

(142) और हमने मूसा से तीस रातों का वादा किया और उसको पूरा किया दस अतिरिक्त रातों से तो उसके पालनहार की अवधि चालीस रातों में पूरी हुई। और मूसा ने अपने भाई हारून से कहा, मेरे पीछे तुम मेरी क़ौम में मेरा प्रतिनिधित्व करना अतः सुधार करते रहना और बिगाड़ करने वालों के रास्ते पर न चलना। (143) और जब मूसा हमारे समय पर आ गया और उसके पालनहार ने उससे बात की तो उसने कहा, मुझे अपने को दिखा दे कि मै तुझको देखूँ। कहा, तुम मुझको कदापि नहीं देख सकते। हाँ, पहाड़ की ओर देखो, यदि वह अपने स्थान पर स्थिर रह जाये तो तुम भी मुझको देख सकोगे। फिर जब उसके पालनहार ने पहाड़ पर अपना प्रकाश डाला तो उसको खण्ड-खण्ड कर दिया। और मूसा मूर्छित होकर गिर पड़ा। फिर जब होश आया तो बोला, तू पवित्र है, मैं तेरी ओर लौटता हूँ और मैं सबसे पहले विश्वास करने वाला हूँ।

(144) अल्लाह ने कहा, ऐ मूसा, मैंने तुमको लोगों पर अपनी पैग़म्बरी और अपने वाक्यों (श्रुति) के माध्यम से चुन लिया। फिर अब लो जो कुछ मैंने तुमकों प्रदान किया है। और आभार प्रकट करने वालों में से बनो। (145) और हमने उसके लिए तख़्तियों पर हर प्रकार के उपदेश और प्रत्येक वस्तु का विवरण लिख दिया। तो इसको दृढ़तापूर्वक पकड़ो और अपनी क़ौम को आदेश दो कि उनके अच्छे भावार्थ का अनुसरण करे। शीघ्र ही मैं तुमको अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा।

(146) मैं अपनी निशानियों से उन लोगों को विमुख कर दूँगा जो पृथ्वी पर व्यर्थ में घमण्ड करते हैं। और यदि वह हर प्रकार की निशानियाँ देख लें तब भी उन पर विश्वास न करें। और यदि वह सन्मार्ग का रास्ता देखें तो उसको न अपनायेंगे और पथभ्रष्टता का रास्ता देखें तो उसको अपना लेंगे। यह इस कारण से है कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया और उनकी ओर से अपने को असावधान रखा। (147) और जिन्होंने हमारी निशानियों को और परलोक की भेंट को झुठलाया, उनके कर्म व्यर्थ हो गये और वह बदले में वही पायेंगे जो वह करते थे।

(148) और मूसा की क़ौम ने उसके पीछे अपने आभूषणों से एक बछड़ा बनाया, एक धड़ जिससे बैल की सी आवाज़ निकलती थी। क्या

उन्होंने नहीं देखा कि वह न उनसे बोलता है और न कोई मार्गदर्शन करता है। उसको उन्होंने अपना उपास्य बना लिया और वह बड़े अत्याचारी थे। (149) और जब उन्होंने पश्चाताप किया और उन्होंने महसूस किया कि वह पथभ्रष्टता में लिप्त हो गये थे तो उन्होंने कहा, यदि हमारे पालनहार ने हम पर दया न की और हमको क्षमा न किया तो निश्चित रूप से नष्ट हो जायेंगे। (150) और जब मूसा दुख और क्रोध में भरा हुआ अपनी क़ौम की ओर लौटा तो उसने कहा, तुमने मेरे बाद मेरा बहुत बुरा उत्तराधिकार निभाया। क्या तुमने अपने पालनहार के आदेश से पहले ही आतुरता दिखाई। और उसने तख़्तियाँ डाल दी और अपने भाई का सिर पकड़ कर उसको अपनी ओर खींचने लगा। हारून ने कहा, ऐ मेरी माँ के बेटे, लोगों ने मुझे दबा लिया और क़रीब था कि मुझे मार डाले। अतः तू शत्रुओं को मेरे ऊपर हँसने का अवसर न दे और मुझको अत्याचारियों के साथ सम्मिलित न कर। (151) मूसा ने कहा, ऐ मेरे पालनहार क्षमा कर दे मुझको और मेरे भाई को और हमको अपनी दयालुता में ले ले, तू सबसे अधिक दयावान है।

(152) निस्सन्देह जिन लोगों ने बछड़े को उपास्य बनाया, उनको उनके पालनहार का क्रोध पहुँचेगा और अपमान सांसारिक जीवन में। और हम ऐसा ही बदला देते हैं झूठ गढ़ने वालों को। (153) और जिन लोगों ने बुरे कर्म किए फिर उसके बाद तौबा की और ईमान लाये तो निस्सन्देह उसके बाद तेरा पालनहार क्षमा करने वाला, दयावान है।

(154) और जब मूसा का क्रोध ठण्डा हुआ तो उसने तख़्तियाँ उठाईं और जो उनमें लिखा हुआ था, उसमें मार्गदर्शन और कृपा थी उन लोगों के लिए जो अपने पालनहार से डरते हैं। (155) और मूसा ने अपनी क़ौम में से सत्तर व्यक्ति चुने हमारे निर्धारित किए हुए समय के लिए फिर जब उनको भूकम्प ने पकड़ा तो मूसा ने कहा ऐ पालनहार, यदि तू चाहता तो पहले ही इनको नष्ट कर देता और मुझको भी। क्या तू हमको ऐसे कर्म पर नष्ट करेगा जो हमारे अन्दर के मूर्खों ने किया। यह सब तेरी परीक्षा है, तू इससे जिसको चाहे भटका दे और जिसको चाहे सन्मार्ग प्रदान कर दे। तू ही हमारा संरक्षक है। अतः

हमको क्षमा कर दे और हम पर दया कर, तू सबसे अच्छा क्षमा करने वाला है। (156) और हमारे लिए इस संसार में भी भलाई लिख दे और परलोक में भी। हम तेरी ओर पलट आये। अल्लाह ने कहा मैं अपनी यातना उसी पर डालता हूँ जिसको चाहता हूँ और मेरी दयालुता छाई हुई है प्रत्येक वस्तु पर। अतः मैं इसको लिख दूँगा उनके लिए जो भय रखते हैं और ज़कात अदा करते हैं और हमारी निशानियों पर विश्वास करते हैं।

(157) जो लोग अनुकरण करेंगे इस सन्देष्टा का जो उम्मी (न पढ़ा हुआ) नबी है, जिसको वह अपने यहाँ तौरात और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं। वह उनको भलाई का आदेश देता है और उनको बुराई से रोकता है और उनके लिए पवित्र वस्तुएँ वैध ठहराता है और अपवित्र वस्तुएँ अवैध करता है, और उन पर से वह बोझ और वह प्रतिबन्ध उठाता है जो उन पर थे। अतः जिन लोगों ने उस पर विश्वास किया, और जिन्होंने उसका आदर किया और उसकी सहायता की और उस प्रकाश का अनुसरण किया जो उसके साथ अवतरित किया गया है तो वही लोग सफलता प्राप्त करने वाले हैं।

(158) कहो, ऐ लोगों, निस्सन्देह मैं अल्लाह का सन्देशवाहक हूँ तुम सबकी ओर जिसकी सत्ता है आकाशों और पृथ्वी पर। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, वही जीवन देता है और वही मृत्यु देता है। अतः ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके उम्मी सन्देष्टा और नबी पर जो विश्वास रखता है अल्लाह और उसके वाक्यों पर और उसका अनुसरण करो ताकि तुम सन्मार्ग पाओ। (159) और मूसा की क़ौम में एक समूह ऐसा भी है जो सत्य के अनुसार मार्गदर्शन करता है और उसी के अनुसार न्याय करता है।

(160) और हमने उनको बारह परिवारों में विभाजित करके उन्हें भिन्न-भिन्न समूह बना दिया। और जब मूसा की क़ौम ने पानी माँगा तो हमने मूसा को आदेश दिया कि अमुक चट्टान पर अपनी लाठी मारो तो उससे बारह स्त्रेत फूट निकले। प्रत्येक समुदाय ने अपना-अपना पानी पीने का स्थान पहचान लिया। और हमने उन पर बदलियों की छाया की और उन पर मन्न और सलवा उतारा। खाओ पवित्र वस्तुओं में से जो हमने तुमको प्रदान की हैं। और उन्होंने हमारा कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि वह स्वंय अपना ही घाटा करते रहे।

(161) और जब उनसे कहा गया कि उस बस्ती में जाकर बस जाओ। उसमें जहाँ से चाहो खाओ और कहो हमको क्षमा कर दे और द्वार में झुके हुए प्रवेश करो, हम तुम्हारे पाप क्षमा कर देंगे। हम भलाई करने वालों को और अधिक देते हैं। (162) फिर उनमें से अत्याचारियों ने बदल डाला दूसरा शब्द उसके अतिरिक्त जो उनसे कहा गया था। फिर हमने उन पर आसामान से यातना भेजी इसलिए कि वह अत्याचार करते थे।

(163) और उनसे उस बस्ती की दशा पूछो जो नदी के किनारे थी। जब वह सब्त (शनिवार) के सम्बन्ध में उल्लंघन करते थे। जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियाँ पानी के ऊपर आतीं और जिस दिन सब्त न होता तो न आतीं। उनकी परीक्षा हमने इस तरह की, इसलिए कि वह अवज्ञा कर रहे थे। (164) और जब उनमें से एक समूह ने कहा कि तुम ऐसे लोगों को क्यों उपदेश दिये जा रहे हो जिन्हें अल्लाह नष्ट करने वाला है या उनको कठोर यातना देने वाला है। उन्होंने कहा, तुम्हारे पालनहार के समक्ष आरोप उतारने के लिए और इसलिए कि सम्भवतः वह डरें।

(165) फिर जब उन्होंने भुला दी वह बातें जो उनको याद दिलायी गयी थीं तो हमने उन लोगों को बचा लिया जो बुराई से रोकते थे और उन लोगों को जिन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया, एक कठोर यातना में पकड लिया। इसलिए कि वह अवज्ञा करते थे। (166) फिर जब वह बढ़ने लगे उस कर्म में जिससे वह रोके गये थे तो हमने उनसे कहा कि अपमानित बन्दर बन जाओ।

(167) और जब तुम्हारे पालनहार ने घोषणा कर दी कि वह यहूदियों पर परलोक के दिन तक अवश्य ऐसे लोग भेजता रहेगा जो उनको अत्यन्त कष्टप्रद यातना दें। निस्सन्देह तेरा पालनहार शीघ्र दण्ड देनेवाला है और निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला, दयावान है। (168) और हमने उनको समूह-समूह करके धरती पर विभाजित कर दिया। उनमे कुछ भले हैं और उनमें कुछ इससे भिन्न। और हमने उनकी परीक्षा ली अच्छी परिस्थितियों और बुरी परिस्थितियों से कदाचित वह पलट आएं।

(169) फिर उनके पीछे ऐसी बुरी पीढ़ियाँ आईं जो किताब की उत्तराधिकारी होकर भी वह इसी संसार का सामान समेटते हैं और कहते

हैं कि हम को अवश्य क्षमा कर दिया जाएगा। और यदि ऐसा ही सामान उनके समक्ष फिर आये तो उसको ले लेंगे। क्या उनसे किताब में इसका वचन नहीं लिया गया है कि वह अल्लाह के नाम पर सत्य के अतिरिक्त कोई और बात न कहें। और उन्होंने पढ़ा है जो कुछ उसमें लिखा है। और परलोक का घर अच्छा है डरने वालों के के लिए, क्या तुम समझते नहीं। (170) और जो लोग अल्लाह की किताब को दृढ़तापूर्वक पकड़ते हैं और नमाज़ स्थापित करते हैं, निस्सन्देह हम सुधार करने वालों का बदला नष्ट नहीं करेंगे। (171) और जब हमने पहाड़ को उनके ऊपर उठाया मानो कि वह कोई छत्र हो। और उन्होंने समझा कि वह उन पर आ पड़ेगा। पकड़ों उस वस्तु को जो हमने तुमको दिया है दृढ़तापूर्वक, और याद रखो जो इसमें है ताकि तुम बचो।

(172) और जब तेरे पालनहार ने आदम के बेटों की पीठों से उनकी सन्तति को निकाला और उनको साक्षी ठहराया स्वंय उनके ऊपर। क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ। उन्होंने कहा हाँ, हम स्वीकार करते हैं। यह इसलिए हुआ कि कहीं तुम (परलोक में) उठाये जाने के दिन कहने लगो कि हमको तो इसकी सूचना न थी। (173) या कहो कि हमारे पूर्वजों ने पहले से शिर्क (साझी ठहराना) किया था और हम उनके बाद उनकी नस्ल में हुए। तो क्या तू हमको नष्ट करेगा उस कर्म पर जो बुरे कर्मों के करने वालों ने किया। (174) और इस तरह हम अपनी निशानियाँ स्पष्ट बयान करते हैं ताकि वह लौटें।

(175) और उनको उस व्यक्ति का हाल सुनाओ जिसको हमने अपनी आयतें (श्रुति) दी थीं तो वह उनसे निकल भागा। अतः शैतान उसके पीछे लग गया और वह पथभ्रष्टों में से हो गया। (176) और यदि हम चाहते तो उसको इन आयतों के माध्यम से ऊँचा उठा देते परन्तु वह तो भूमि का होकर रहा और अपनी इच्छाओं का अनुसरण करने लगा। अतः उसका उदाहरण कुत्ते जैसा है कि यदि तू उस पर बोझ लादे तब भी हाँफे और यदि छोड़ दे तब भी हाँफे। यह उदाहरण उन लोगों का है जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। अतः तुम यह विवरण उनको सुनाओ ताकि वह चिन्तन करें। (177) कैसा बुरा उदाहरण है उन लोगों का जिन्होंने हमारी निशानियों को झुटलाया वह अपनी

ही हानि करते रहे। (178) अल्लाह जिसको मार्ग दिखाये, वही मार्ग पाने वाला होता है और जिसको वह भटका दे तो वही घाटा उठाने वाले हैं।

(179) और हमने जिन्नों और मनुष्य में से बहुतों को नरक के लिए पैदा किया है। उनके दिल हैं जिनसे वह समझते नहीं, उनकी आँखें हैं जिनसे वह देखते नहीं, उनके कान हैं जिनसे वह सुनते नहीं। वह ऐसे हैं जैसे पशु, बल्कि उनसे भी अधिक मार्ग विहीन। यही लोग हैं निश्चेत (असावधान)। (180) और अल्लाह के लिए हैं सब अच्छे नाम। अतः उन्हीं से उसको पुकारो और उन लोगों को छोड़ दो, जो उसके नामों में टेढ़ापन करते हैं। वह बदला पाकर रहेंगे अपने कर्मों का। (181) और हमने जिनको पैदा किया है उनमें से एक समूह ऐसा भी है जो सच्चाई के अनुसार लोगों का मार्गदर्शन और उसी के अनुसार निर्णय करता है। (182) और जिन लोगों ने हमारी निशानियों को झुठलाया हम उनको क्रमशः पकड़ेंगे ऐसे स्थान से जहाँ से उनको पता (आभास) भी न होगा। (183) और मैं उनको ढील देता हूँ, निस्सन्देह मेरा दाव बहुत सशक्त है।

(184) क्या इन लोगों ने विचार नहीं किया कि उनके साथी (पैग़म्बर) को कोई जुनून (उन्माद) नहीं है वह तो स्पष्ट डराने (सचेत करने) वाला है। (185) क्या उन्होंने आकाशों और धरती की व्यवस्था पर दृष्टि नहीं डाली और जो वस्तुएँ अल्लाह ने उत्पन्न की हैं, उन पर, और इस बात पर कि संभवतः उनकी अवधि निकट आ गई हो। अतः उसके बाद वह किस बात पर ईमान लायेंगे। (186) जिसको अल्लाह मार्गविहीन कर दे, उसको कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं। और वह उनको अवज्ञा ही में भटकता हुआ छोड़ देता है। (187) वह तुमसे क़यामत (परलोक में उठाये जाने) के सम्बन्ध में पूछते हैं कि वह कब घटित होगी। कहो इसका ज्ञान तो मेरे पालनहार के पास है। वही उसके समय पर उसको प्रकट करेगा। वह भारी हो रही है आकाशों में और ध रती में। वह जब तुम पर आयेगी तो अचानक आ जायेगी। वह तुमसे पूछते हैं मानो कि तुम उसका ज्ञान प्राप्त कर चुके हो। कहो इसका ज्ञान तो मात्र अल्लाह ही के पास है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (188) कहो, मैं स्वामी नहीं अपने आप की भलाई का और न बुराई का परन्तु जो अल्लाह

चाहे। और यदि मैं परोक्ष को जानता तो मैं बहुत से लाभ अपने लिए प्राप्त कर लेता और मुझे कोई हानि न पहुँचती। मैं तो मात्र एक सचेत करने वाला, और शुभ सूचना सुनाने वाला हूँ उन लोगों के लिए जो मेरी बात मानें।

(189) वही है जिसने तुमको पैदा किया एक प्राण से और उसी से बनाया उसका जोड़ा ताकि तुम उसके पास सन्तुष्टि प्राप्त करो। फिर जब मर्द ने औरत को ढाँक लिया तो उसको एक हल्का सा गर्भ रह गया। फिर वह उसको लिए फिरती रही। फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने मिलकर अपने पालनहार अल्लाह से प्रार्थना की... यदि तूने हमें स्वस्थ सन्तान दी तो हम तेरे आभारी रहेंगे। (190) परन्तु जब अल्लाह ने उनको स्वस्थ सन्तान दे दी तो वह उसकी प्रदान की हुई वस्तु में दूसरों को उसका साझीदार ठहराने लगे। अल्लाह श्रेष्ठ है उन शिर्क की बातों से जो यह लोग करते हैं। (191) क्या वह साझीदार बनाते है ऐसों को जो किसी वस्तु को पैदा नहीं करते बल्कि वह स्वंय रचित हैं। (192) और वह न उनकी किसी प्रकार की सहायता कर सकते हैं और न अपनी ही सहायता कर सकते हैं। (193) और यदि तुम उनको मार्गदर्शन के लिए पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार पर न चलेंगे। समान है चाहे तुम उनको पुकारो या तुम चुप रहो। (194) जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, वह तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं। अतः तुम उनको पुकारो, वह तुम्हें उत्तर दें यदि तुम सच्चे हो।

(195) क्या उसके पास पैर हैं कि उनसे चलें। क्या उनके हाथ हैं कि उनसे पकड़ें। क्या उनके आँखें हैं कि उनसे देखें। क्या उनके कान हैं कि उनसे सुनें। कहो, तुम अपने साझीदारों को बुलाओ। फिर तुम लोग मैरे विरुद्ध षडयन्त्र करो और मुझे अवसर न दो। (196) निश्चय ही मेरा काम बनाने वाला अल्लाह है जिसने किताब उतारी है और वह काम बनाता है सदाचारी बन्दों का। (197) और जिनको तुम पुकारते हो उसके सिवा, वह न तुम्हारी सहायता कर सकते हैं और न अपनी ही सहायता कर सकते हैं। (198) और यदि तुम उनको मार्ग की ओर पुकारो तो वह तुम्हारी बात न सुनेंगे अतः तुम्हें महसूस होता है कि वह तुम्हारी ओर देख रहे हैं परन्तु वह कुछ नहीं देखते।

(199) क्षमा करो, भलाई का आदेश दो और अज्ञानियों से न उलझो।

(200) और यदि तुमको कोई वसवसा (सन्देह) शैतान की ओर से आये तो अल्लाह की शरण चाहो। निस्सन्देह वह सुनने वाला, जानने वाला है। (201) जो लोग डर रखते हैं, जब कभी शैतान के प्रभाव से कोई बुरा विचार उन्हें छू लेता है तो वह तुरन्त चौंक पड़ते हैं और फिर उसी समय उनको समझ आ जाती है। (202) और जो शैतान के भाई हैं वह उनको पथभ्रष्टता में खींचे चले जाते हैं, फिर वह कमी नहीं करते।

(203) और जब तुम उनके समक्ष कोई निशानी (चमत्कार) नहीं लाये तो वह कहते हैं कि क्यों न तुम छाँट लाये कुछ अपनी ओर से। कहो, मैं तो उसी का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पालनहार की ओर से मुझ पर उतारा जाता है। यह विवेक की बाते हैं तुम्हारे पालनहार की ओर से और सन्मार्ग और दया है उन लोगों के लिए जो आस्था रखते हैं। (204) और जब क़ुरआन पढ़ा जाये तो उसको ध्यानपूर्वक सुनो और चुप रहो, ताकि तुम पर दया की जाये। (205) और अपने पालनहार को सुबह और शाम स्मरण करो अपने हृदय में, गिड़गिड़ाहट और भय के साथ और धीमी आवाज़ से, और अचेतों में से न बनो। (206) जो (फ़रिश्ते) तेरे पालनहार के पास हैं, वह उसकी इबादत से घमण्ड नहीं करते और वह उस पवित्र हस्ती को याद करते हैं और उसी को सजदा करते हैं।

8. सूरह अल-अनफ़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) वह तुमसे अनफ़ाल (युद्ध में लूट का माल) के सम्बन्ध में पूछते हैं। कहो कि अनफ़ाल, अल्लाह और उसके रसूल (सन्देष्टा) के हैं। अतः तुम लोग अल्लाह से डरो और अपने परस्पर सम्बन्धों का सुधार करो और अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो, यदि तुम आस्था रखते हो। (2) ईमान वाले (आस्थावान) तो वह हैं कि जब अल्लाह का नाम लिया जाये तो उनके दिल दहल जायें और जब अल्लाह की आयतें (श्रुति) उनके सामने पढ़ी जायें तो वह उनका ईमान (विश्वास) बढ़ा देती हैं और वह अपने पालनहार पर भरोसा

रखते हैं। (3) वह नमाज़ स्थापित करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है, उसमें से ख़र्च करते हैं। (4) यही लोग वास्तव में मोमिन (आस्थावान) हैं। उनके लिए उनके पालनहार के पास ऊँचे दर्जे और क्षमा हैं और उनके लिए सम्मानित जीविका है।

(5) जैसा कि तुम्हारे पालनहार ने तुमको सच्चाई के साथ तुम्हारे घर से निकाला। और मोमिनों (आस्थावानों) में से एक समूह को यह पसन्द न था। (6) वह इस सच्चाई के सम्बन्ध में तुमसे विवाद कर रहे थे इसके उपरांत कि वह स्पष्ट हो चुकी थी, मानो कि वह मृत्यु की ओर हाँके जा रहे हैं आँखों देखते। (7) और जब अल्लाह तुमको वचन दे रहा था कि दो समूहो में से एक तुमको मिल जायेगा। और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा न लगे वह तुमको मिले। और अल्लाह चाहता था कि वह सत्य का सत्य होना सिद्ध कर दे अपने वाक्यों से और अवज्ञाकारियो की जड़ काट दे। (8) ताकि सत्य, सत्य होकर रहे और झूठ, झूठा होकर रह जाये, चाहे अपराधियों को वह कितना ही अप्रिय हो।

(9) जब तुम अपने पालनहार से प्रार्थना कर रहे थे तो उसने तुम्हारी प्रार्थना सुनी कि मैं तुम्हारी सहायता के लिए एक हज़ार फ़रिश्ते निरन्तर भेज रहा हूँ। (10) और यह अल्लाह ने मात्र इसलिए किया ताकि तुम्हारे लिए शुभ सूचना हो और ताकि तुम्हारे दिल इससे सन्तुष्ट हो जायें। और सहायता तो अल्लाह ही के पास से आती है। निश्चय ही अल्लाह शक्तिवान है, विवेकशील है। (11) जब अल्लाह ने तुम पर ऊँघ डाल दी अपनी ओर से तुम्हारी सन्तुष्टि के लिए और आसमान से तुम्हारे ऊपर पानी उतारा, कि उसके द्वारा वह तुम्हें पवित्र करे और तुमसे शैतान की अपवित्रता को दूर कर दे और तुम्हारे दिलों को सशक्त् कर दे और तम्हारे क़दमों को जमा दे। (12) जब तेरे पालनहार ने फ़रिश्तों को आदेश भेजा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम ईमान वालों (आस्थावानो) को जमाये रखो। मैं अवज्ञाकारियों के दिल में धाक डाल दूँगा। अतः तुम उनकी गर्दन के ऊपर मारो और उनके पोर-पोर पर चोट करो। (13) यह इस कारण से कि उन्होंने अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध किया। और जो कोई अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध करता है तो अल्लाह दण्ड देने में

कठोर है। (14) यह तो अब चखो और जान लो कि अवज्ञाकारियों के लिए आग की यातना है।

(15) ऐ ईमान वालों (आस्थावानों), जब तुम्हारी मुठभेड़ अवज्ञाकारियों से युद्ध क्षेत्र में हो तो उनसे पीठ मत फेरो। (16) और जिसने ऐसे अवसर पर पीठ फेरी, सिवाय इसके कि युद्ध रणनीति के रूप में हो या दूसरी सेना से जा मिलने के लिए, तो वह अल्लाह के क्रोध में आ जायेगा और उसका ठिकाना नरक है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

(17) अतः उनकी तुमने हत्या नहीं की बल्कि अल्लाह ने हत्या की। और जब तुमने उन पर मिट्टी फेंकी तो तुमने नहीं फेंकी अपितु अल्लाह ने फेंकी ताकि अल्लाह अपनी ओर से ईमान वालों पर भरपूर उपकार करे। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (18) यह तो हो चुका। और निस्सन्देह अल्लाह अवज्ञाकारियों की समस्त युक्तियों को निष्क्रिय करके रहेगा। (19) यदि तुम निर्णय चाहते थे तो निर्णय तुम्हारे सामने आ गया। और यदि तुम मान जाओ तो यह तुम्हारे पक्ष में अच्छा है। और यदि तुम पुनः वही करोगे तो हम भी पुनः वही करेंगे और तुम्हारी सेना तुम्हारे कुछ काम न आयेगी चाहे वह कितनी ही अधिक हो। और निस्सन्देह अल्लाह आस्थावानों के साथ है।

(20) ऐ ईमान वालों, अल्लाह और उसके रसूल का आज्ञापालन करो और उससे मुँह न मोड़ो, हालाँकि तुम सुन रहे हो। (21) और उन लोगों की तरह न हो जाओ जिन्होंने कहा कि हमने सुना, हालाँकि वह नहीं सुनते। (22) निश्चय ही अल्लाह के निकट सबसे बुरे पशु वह बहरे, गूँगे लोग हैं जो बुद्धि से काम नहीं लेते। (23) और यदि उनमें किसी भलाई का ज्ञान अल्लाह को होता तो वह अवश्य उन्हें सुनने का सामर्थ्य देता और यदि अब वह उन्हें सुनवा दे तो वह अवश्य मुँह मोड़ेंगे अनदेखी करते हुए।

(24) ऐ ईमान वालों (आस्थावानों), अल्लाह और रसूल की पुकार का उत्तर दो। जबकि रसूल (सन्देष्टा) तुमको उस चीज़ की ओर बुला रहा है जो तुमको जीवन देने वाली है। और जान लो अल्लाह मनुष्य और उसके हृदय के बीच बाधक हो जाता है। और यह कि उसी की ओर तुम्हारा एकत्र होना है। (25) और डरो उस परीक्षा से जो विशेष रूप से उन्ही लोगों पर घटित न होगी

जो तुममें से अत्याचार के भागी हुए हैं। और समझ लो कि अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है।

(26) और याद करो जबकि तुम थोड़े थे और धरती में दुर्बल समझे जाते थे। डरते थे कि लोग अचानक तुमको उचक न लें। फिर अल्लाह ने तुमको रहने का ठिकाना दिया और अपनी सहायता के माध्यम से तुम्हारा समर्थन किया और तुमको पवित्र जीविका दी ताकि तुम आभारी बनो। (27) ऐ ईमान वालों, विश्वासघात न करो अल्लाह और रसूल से और अपभोग न करो अपनी धरोहरों में हालाँकि तुम जानते हो। (28) और जान लो कि तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान एक परीक्षा हैं। और यह कि अल्लाह ही के पास है बड़ा बदला।

(29) ऐ ईमान वालों, यदि तुम अल्लाह से डरोगे तो वह तुम्हारे लिए फुरक़ान (सत्य-असत्य में भेद करने वाली कसौटी) प्रदान करेगा और तुमसे तुम्हारे पापों को दूर कर देगा और तुमको क्षमा प्रदान करेगा और अल्लाह बड़ा उपकार करने वाला है। (30) और जब अवज्ञाकारी तुम्हारे सम्बन्ध में युक्तियाँ सोच रहे थे कि वह तुमको बन्दी बना लें या तुम्हारी हत्या कर डालें या निर्वासित कर दें। वह अपनी युक्तियाँ कर रहे थे और अल्लाह अपनी युक्तियाँ कर रहा था और अल्लाह सबसे अच्छा युक्ति करने वाला है।

(31) और जब उनके सामने हमारी आयतें (श्रुति) पढ़ी जाती हैं तो वह कहते हैं हमने सुन लिया। यदि हम चाहें तो हम भी ऐसे ही वाक्य प्रस्तुत कर दें। यह तो बस पूर्वजों की कहानियाँ हैं। (32) और जब उन्होंने कहा कि ऐ अल्लाह, यदि यही सत्य है तेरे पास से तो हम पर आकाश से पत्थर बरसा दे या और कोई दुखद यातना हम पर ले आ। (33) और अल्लाह ऐसा करने वाला नहीं कि उनको यातना दे इस स्थिति में कि तुम उनके बीच उपस्थित हो और अल्लाह उन पर यातना लाने वाला नहीं जबकि वह पापों की क्षमा माँग रहे हों। (34) और अल्लाह उनको क्यों न यातना देगा हालाँकि वह मस्जिद-ए हराम (काबा) से रोकते हैं जबकि वह उसके संरक्षक नहीं। इसके संरक्षक तो केवल अल्लाह से डरने वाले हो सकते हैं। परन्तु उनमे से अधिकतर उसको नहीं जानते। (35) और अल्लाह के घर के पास उनकी नमाज़ सीटी बजाने

और ताली पीटने के अतिरिक्त और कुछ नहीं। अतः अब चखो दण्ड अपनी अवज्ञा का।

(36) जिन लोगों ने अवज्ञा की वह अपनी सम्पत्ति को इसलिए ख़र्च करते हैं कि लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकें। वह इसको ख़र्च करते रहेंगे फिर यह उनके लिए पश्चाताप बनेगा फिर वह परास्त किये जायेंगे। और जिन्होंने अवज्ञा की, उनको नरक की ओर एकत्र किया जायेगा। (37) ताकि अल्लाह अपवित्र को अलग कर दे पवित्र से और अपवित्र को एक पर एक रखे फिर उस ढेर को नरक में डाल दे, यही लोग हैं घाटे में पड़ने वाले।

(38) अवज्ञाकारियों से कहो कि यदि वह मान जायें तो जो कुछ हो चुका है उसे क्षमा कर दिया जायेगा। और यदि वह पुनः वही करेंगे तो हमारा हिसाब-किताब पूर्ववर्तियों के साथ हो चुका है। और उनसे युद्ध करो यहाँ तक कि उपद्रव शेष न रहे और धर्म सब अल्लाह के लिए हो जाये। फिर यदि वह मान जायें तो अल्लाह देखने वाला है उनके कर्म का। (40) और यदि उन्होंने विमुखता की तो जान लो कि अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है और क्या ही अच्छा संरक्षक है और क्या ही अच्छा सहायक।

(41) और जान लो कि जो कुछ माले-ग़नीमत (युद्ध में मिला हुआ माल) तुम्हें प्राप्त हो, उसका पाँचवाँ भाग अल्लाह और उसके सन्देष्टा के लिए और सम्बन्धियों और अनाथों और निर्धनों और यात्रियों के लिए है, यदि तुम विश्वास रखते हो अल्लाह पर और उस चीज़ पर जो हमने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर उतारी है निर्णय के दिन, जिस दिन कि दोनों समुदायों में मुठभेड़ हुई और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

(42) और जबकि तुम घाटी के निकटवर्ती किनारे पर थे और वह दूर के किनारे पर। और काफ़िला तुमसे नीचे की ओर था। और यदि तुम और वह समय निर्धारित करते तो अवश्य उस निर्धारण के सम्बन्ध में तुममें मतभेद हो जाता। परन्तु जो हुआ वह इसलिए हुआ ताकि अल्लाह उस बात का निर्णय कर दे जिसका होना पहले से नियत था, ताकि जिसको नष्ट होना है वह स्पष्ट प्रमाण के साथ नष्ट हो और जिसको जीवन मिलना है वह स्पष्ट प्रमाण के साथ जीवित रहे। निसस्ंदेह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (43)

जब अल्लाह तुम्हारे स्वप्न में उनको थोड़ा दिखाता रहा। यदि और वह उनको अधिक दिखा देता तो तुम लोग हिम्मत हार जाते और आपस में झगड़ने लगते, इस सम्बन्ध में। परन्तु अल्लाह ने तुमको बचा लिया। निश्चय ही वह दिलों तक की दशा जानता है। (44) और जब अल्लाह ने उन लोगों को तुम्हारी दृष्टि में कम करके दिखाया और तुमको उनकी दृष्टि में कम करके दिखाया ताकि अल्लाह इस मामले का निर्णय कर दे जिसका होना नियत था। और सारे मामले अल्लाह की ही ओर लौटते हैं।

(45) ऐ ईमान वालों, जब किसी दल (सेना) से तुम्हारा सामना हो तो तुम दृढ़ रहो और अल्लाह को बहुत याद करो ताकि तुम सफल हो। (46) और आज्ञापालन करो अल्लाह की और उसके सन्देष्टा की और परस्पर विवाद न करो, अन्यथा तुम्हारे अन्दर दुर्बलता आ जायेगी और तुम्हारी हवा उखड़ जायेगी और धैर्य रखो, निस्सन्देह अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है। (47) और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से अकड़ते हुए और लोगों को दिखाते हुए निकले और जो अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं। हालाँकि वह जो कुछ कर रहे हैं, अल्लाह उनको घेरे हुए है।

(48) और जब शैतान ने उन्हें उनके कर्म आकर्षक बनाकर दिखाये और कहा कि लोगों में से आज कोई तुमको परास्त करने वाला नहीं और मैं तुम्हारे साथ हूँ। परन्तु जब दोनों सेनाएँ आमने-सामने हुईं तो वह उल्टे पैर भागा और कहा कि मैं तुमसे बरी (विरक्त) हूँ, मैं वह कुछ देख रहा हूँ जो तुम लोग नहीं देखते। मैं अल्लाह से डरता हूँ और अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (49) जब कपटाचारी और जिनके हृदय में रोग है, वह कहते थे कि इन लोगों को इनके धर्म ने धोखे में डाल दिया है, अगर्चे जो अल्लाह पर भरोसा करे तो अल्लाह बड़ा शक्तिशाली और विवेकशील है।

(50) और यदि तुम देखते जबकि फ़रिश्ते उन अवज्ञाकारियों के प्राण निकालते हैं, मारते हुए उनके चेहरों और उनकी पीठों पर, और यह कहते हुए कि अब जलने की यातना चखो। (51) यह बदला है उसका जो तुमने अपने हाथों आगे भेजा था और अल्लाह कदापि बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं। (52) फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अल्लाह की

निशानियों को झुठलाया, तो अल्लाह ने उनके पापों पर उनको पकड़ लिया। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली है, कठोर दण्ड देने वाला है। (53) यह इस कारण से हुआ कि अल्लाह उस उपकार को जो वह किसी क़ौम पर करता है, उस समय तक नहीं बदलता जब तक कि वह उसको न बदल दे जो उनके अपने (दिलों) में है। और निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (54) फ़िरऔन वालों की तरह और जो उनसे पहले थे कि उन्होंने अपने पालनहार की निशानियों को झुठलाया फिर हमने उनके पापों के कारण उनको नष्ट कर दिया और हमने फ़िरऔन वालों को डुबा दिया और यह सब लोग अत्याचारी थे।

(55) निस्सन्देह सभी जीवधारियों में सबसे बुरे, अल्लाह की दृष्टि में वह लोग हैं जिन्होंने अवज्ञा की और वह ईमान (आस्था) नहीं लाते। (56) जिनसे तुमने वचन लिया, फिर वह अपना वचन प्रत्येक अवसर पर तोड़ देते हैं और वह डरते नहीं। (57) अतः यदि तुम उनको युद्ध में पाओ तो उनको ऐसा दण्ड दो कि जो उनके पीछे हैं वह भी देखकर भाग जायें, ताकि उन्हें शिक्षा प्राप्त हो। (58) और यदि तुमको किसी क़ौम से विश्वासघात का सन्देह हो तो उनकी सन्धि उनकी ओर फेंक दो, इस प्रकार कि तुम और वह समान हो जायें। निस्सन्देह अल्लाह विश्वासघात करने वालों को पसन्द नहीं करता।

(59) और अवज्ञाकारी यह न समझें कि वह निकल भागेंगे, वह कदापि अल्लाह को विवश नहीं कर सकते। (60) और उनके लिए जहाँ तक तुमसे हो सके तैयार रखो शक्ति और पले हुए घोड़े कि इससे तुम्हारा दबदबा रहे। अल्लाह के शत्रुओं पर और तुम्हारे शत्रुओं पर और उनके अतिरिक्त दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते। अल्लाह उनको जानता है। और जो कुछ तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करोगे, वह तुम्हें पूरा कर दिया जायेगा और तुम्हारे साथ कोई कमी न की जायेगी। (61) और यदि वह सन्धि के लिए झुकें तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ और अल्लाह पर भरोसा रखो। निस्सन्देह वह सुनने वाला, जानने वाला है। (62) और यदि वह तुमको धोखा देना चाहेंगे तो अल्लाह तुम्हारे लिए पर्याप्त है। वही है जिसने अपनी सहायता के माध्यम से और मोमिनों (आस्थावानों) के माध्यम से तुमको शक्ति प्रदान की। (63) और उनके दिलों में सहमति उत्पन्न कर दी। यदि तुम पृथ्वी में जो कुछ है वह सब

ख़र्च कर डालते, तब भी तुम उनके दिलों में सहमति उत्पन्न न कर सकते। परन्तु अल्लाह ने उनमें सहमति उत्पन्न कर दी, निस्सन्देह वह शक्तिशाली है, विवेकशील है।

(64) ऐ नबी (सन्देष्टा) तुम्हारे लिए अल्लाह पर्याप्त है और वह मोमिन (आस्थावान) जिन्होंने तुम्हारा साथ दिया है। (65) ऐ नबी, मोमिनों को युद्ध के लिए प्रेरित करो। यदि तुममें बीस व्यक्ति अटल निश्चय वाले होंगे तो वह दो सौ पर भारी होंगे और यदि तुममें सौ होंगे तो वह हज़ार अवज्ञाकारियों पर विजय प्राप्त करेंगे, इसलिए कि वह लोग समझ नहीं रखते। (66) अब अल्लाह ने तुम पर से बोझ हल्का कर दिया और उसने जान लिया कि तुममें कुछ दुर्बलता है। अतः यदि तुममें सौ अटल निश्चय वाले होंगे तो वह दो सौ पर भारी होंगे और यदि हज़ार होंगे तो वह अल्लाह के आदेश से दो हज़ार पर विजय प्राप्त करेंगे, और अल्लाह दृढ़ निश्चय रखने वालों के साथ है।

(67) किसी नबी (सन्देष्टा) के लिए उचित नहीं कि इसके पास बन्दी हों जब तक वह पृथ्वी में अच्छी तरह रक्तपात न कर ले। तुम संसार के संसाध ान चाहते हो और अल्लाह परलोक को चाहता है। और अल्लाह प्रभुत्वशाली, और तत्वदर्शी है। (68) और यदि अल्लाह का एक लिखा हुआ पहले से मौजूद न होता तो जो विधि तुमने अपनाई, उसके कारण तुमको कठोर यातना पहुँच जाती। (69) अतः जो सम्पत्ति तुमने ली है उसको खाओ, तुम्हारे लिए वैध और पवित्र है और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है।

(70) ऐ नबी, तुम्हारे हाथ (क़ब्ज़े) में जो बन्दी हैं, उनसे कह दो कि यदि अल्लाह तुम्हारे दिलों में कोई भलाई पायेगा तो जो कुछ तुमसे लिया गया है, उससे अच्छा वह तुम्हें दे देगा और तुमको क्षमा कर देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (71) और यदि यह तुमसे विश्वासघात करेंगे तो इससे पहले उन्होंने अल्लाह से विश्वासघात किया तो अल्लाह ने तुमको उन पर नियन्त्रण दे दिया और अल्लाह ज्ञान वाला, विवेक वाला है।

(72) जो लोग ईमान लाये (आस्थावान हुए) और जिन्होंने हिजरत (प्रवास) किया और अल्लाह के मार्ग में अपने प्राण और सम्पत्ति से जेहाद (युद्ध) किया। और वह लोग जिन्होंने शरण दी और सहायता की, वह

लोग एक-दूसरे के मित्र हैं और जो लोग ईमान लाये (आस्था प्रकट की) परन्तु उन्होंने हिजरत (प्रवास) नहीं किया तो उनसे तुम्हारी मित्रता का कोई सम्बन्ध नहीं जब तक कि वह प्रवास करके न आ जायें। और वह तुमसे दीन (धर्म) के सम्बन्ध में सहायता माँगे तो तुम पर उनकी सहायता करना अनिवार्य है, सिवाय यह कि सहायता किसी क़ौम के विरुद्ध हो जिसके साथ तुम्हारी सन्धि है। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (73) और जो लोग अवज्ञाकारी हैं, वह एक-दूसरे के मित्र हैं। यदि तुम ऐसा न करोगे तो पृथ्वी पर उपद्रव फैलेगा और बड़ा फ़सा‍द (बिगाड़) होगा।

(74) और जो लोग ईमान लाये (आस्था प्रकट की) और उन्होंने हिजरत (प्रवास) किया और अल्लाह के मार्ग में युद्ध किया और जिन लोगों ने शरण दी और सहायता की, यही लोग सच्चे मोमिन (आस्थावान) हैं उनके लिए क्षमा है और सबसे अच्छी जीविका है। (75) और जो लोग बाद में ईमान लाये (आस्था प्रकट की) और हिजरत (प्रवास किया) की और तुम्हारे साथ मिलकर युद्ध किया वह भी तुममें से हैं। और ख़ून के सम्बन्धी एक दूसरे के अधिक हक़दार हैं अल्लाह की किताब में। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

9. सूरह अत-तौबा

(1) विरक्ति की घोषणा है अल्लाह और उसके संन्देष्टा की ओर से उन बहुदेववादियों को जिनसे तुमने सन्धियाँ की थीं। (2) अतः तुम लोग देश में चार महीने चल फिर लो और सचेत रहो कि तुम अल्लाह को विवश नहीं कर सकते और यह कि अल्लाह अवज्ञाकारियों को अपमानित करने वाला है। (3) घोषणा है अल्लाह और उसके सन्देष्टा की ओर से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह और उसका सन्देष्टा बहुदेववादियों से मुक्त (बहुदेववादियों के दायित्व से भार मुक्त) हैं। अब यदि तुम लोग तौबा (क्षमा-याचना) करो तो तुम्हारे लिए बेहतर है। और यदि तुम विमुख होगे तो समझ लो तुम अल्लाह को विवश करने वाले नहीं हो। और अवज्ञा करने वालों को कठोर यातना की

शुभ सूचना दे दो। (4) परन्तु जिन मुश्रिक़ों (साझी ठहराने वालों) से तुमने समझौता किया था, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे विरुद्ध किसी की सहायता की तो उनका समझौता उनकी अवधि तक पूरा करो। निस्सन्देह अल्लाह सदाचारियों को पसन्द करता है।

(5) फिर जब हराम महीने (निषिद्ध) व्यतीत हो जायें तो बहुदेववादियों की हत्या करो जहाँ पाओ और उनको पकड़ो और उनको घेरो और बैठो प्रत्येक स्थान पर उनकी घात में। फिर यदि वह तौबा (क्षमा-याचना) कर लें और नमाज़ स्थापित करें और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (6) और यदि शिर्क करने वालों में से कोई व्यक्ति तुमसे शरण माँगे तो तुम उसको शरण दे दो, ताकि वह अल्लाह के वाक्य सुने फिर उसको उसके सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दो। यह इसलिए कि वह लोग ज्ञान नहीं रखते।

(7) उन मुश्रिक़ों (साझी ठहराने वालों) के लिए अल्लाह और उनके सन्देष्टा के ऊपर कोई समझौता कैसे रह सकता है, परन्तु जिन लोगों से तुमने समझौता किया था मस्जिद-ए हराम (काबा) के निकट, अतः जब तक वह तुमसे सीधे रहें, तुम भी उनसे सीधे रहो, निस्सन्देह अल्लाह सदाचारियों को पसन्द करता है। (8) कैसे समझौता रहेगा जबकि यह स्थिति है कि यदि वह तुम्हारे ऊपर नियन्त्रण पायें तो तुम्हारे विषय में न नातेदारी का सम्मान करें और न समझौते का। वह तुमको अपनी मुँह की बातों से सन्तुष्ट करना चाहते हैं परन्तु उनके दिल अवज्ञा करते हैं। और उनमें अधिकतर विश्वासघाती हैं। (9) उन्होंने अल्लाह की आयतों (श्रुति) को थोड़े मूल्य पर बेच दिया, फिर उन्होंने अल्लाह के मार्ग से रोका। बहुत बुरा है जो वह कर रहे हैं। (10) किसी मोमिन (आस्थावान) के मामले में न वह किसी रिश्ते का सम्मान करते हैं और न सन्धि का, यही लोग हैं अत्याचार करने वाले। (11) अतः यदि वह तौबा (क्षमा-याचना) करें और नमाज़ स्थापित करें और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करें तो वह तुम्हारे धार्मिक भाई हैं। और हम स्पष्ट बयान करते हैं आयतों को जानने वालों के लिए।

(12) और यदि सन्धि के बाद ये अपनी सौगन्धों को तोड़ डालें और

तुम्हारे धर्म में कमी निकालें तो अवज्ञाकारियों के इन सरदारों से युद्ध करो। निस्सन्देह उनकी सौगन्ध कुछ नहीं, ताकि वह रूक जायें। (13) क्या तुम न लड़ोगे ऐसे लोगों से जिन्होंने अपने समझौते को तोड़ दिया और सन्देष्टा को निकालने का दुस्सहास किया और वही हैं जिन्होंने तुमसे युद्ध में पहल की। क्या तुम उनसे डरोगे। अल्लाह अधिक हक़दार है कि तुम उससे डरो यदि तुम मोमिन (आस्थावान) हो। (14) उनसे युद्ध करो। अल्लाह तुम्हारे हाथों उनको दण्ड देगा और उनको अपमानित करेगा। और तुमको उन पर प्रभुत्व प्रदान करेगा और आस्थावान लोगों के सीने को ठण्डा करेगा और उनके दिल की ईर्ष्या को दूर कर देगा। (15) और अल्लाह क्षमा प्रदान करेगा जिसको चाहेगा और अल्लाह सर्वज्ञ है, तत्वदर्शी है।

(16) क्या तुमने यह कल्पना कर रखी है कि तुम छोड़ दिये जाओगे, हालाँकि अभी अल्लाह ने तुममें से उन लोगों को जाना ही नहीं जिन्होंने जेहाद किया और जिन्होंने अल्लाह और सन्देष्टा और मोमिनों के अतिरिक्त किसी को मित्र नहीं बनाया और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(17) मुशिरक़ों (बहुदेववादियों) का काम नहीं कि वह अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें। जबकि वह स्वंय अपने ऊपर अवज्ञा के गवाह हैं। उन लोगों के कर्म व्यर्थ गये और वह सदैव आग में रहने वाले हैं। (18) अल्लाह की मस्जिदों को तो वह आबाद करता है जो अल्लाह और परलोक के दिन पर विश्वास करे और नमाज़ स्थापित करे और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करे और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से न डरे। ऐसे लोग आशा है कि सन्मार्ग पाने वालों में से बनें। (19) क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिद-ए हराम (काबा) के बसाने को समान कर दिया उस व्यक्ति के जिसने अल्लाह और परलोक पर विश्वास किया और अल्लाह के मार्ग में जेहाद किया, अल्लाह के निकट ये दोनों समान नहीं हो सकते। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता। (20) जो लोग आस्थावान बनें और उन्होंने हिजरत की (प्रवास किया) और अल्लाह के मार्ग में अपने प्राण और सम्पत्ति से जेहाद किया, उनका स्तर अल्लाह के यहाँ बड़ा है और यही लोग सफल हैं। (21) उनका पालनहार उनको शुभ सूचना देता है अपनी दया और प्रसन्नता की और ऐसे

बाग़ों की जिनमें उनके लिए सदैव रहने वाली नेमत (स्वादिष्ट खाद्य) होगी। (22) उनमें वह सदैव रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह ही के पास बड़ा बदला है।

(23) ऐ ईमानवालो, अपने पिता और अपने भाईयों को मित्र न बनाओ यदि वह आस्था की तुलना में अवज्ञा को प्रिय रखें। और तुममें से जो उनको अपना मित्र बनायेंगे तो ऐसे ही लोग अत्याचारी हैं। (24) कहो कि यदि तुम्हारे पिता और तुम्हारे बेटे और तुम्हारे भाई और तुम्हारी पत्नियाँ और तुम्हारा परिवार और वह सम्पत्ति जो तुमने कमाई है और वह व्यापार जिसके बन्द होने से तुम डरते हो और वह घर जिनको तुम पसन्द करते हो, यह सब तुमको अल्लाह और उसके सन्देष्टा और उसके मार्ग में जेहाद करने से अधिक प्रिय हैं तो प्रतीक्षा करो यहाँ तक कि अल्लाह अपना आदेश भेज दे और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग प्रदान नहीं करता।

(25) निस्सन्देह अल्लाह ने बहुत से अवसरों पर तुम्हारी सहायता की है और हुनैन के दिन भी जब तुम्हारे बहुसंख्यक होने ने तुमको घमण्ड में ग्रसित कर दिया था। फिर वह तुम्हारे कुछ काम न आयी। और पृथ्वी अपनी विशालता के उपरांत भी तुम पर संकुचित हो गयी, फिर तुम पीठ फेर कर भागे। (26) इसके बाद अल्लाह ने अपने सन्देष्टा और मोमिनों (आस्थावानों) पर अपनी सकीनत (स्थिरता) उतारी और ऐसी सेना उतारी जिनको तुमने नहीं देखा और अल्लाह ने अवज्ञाकारियों को दण्डित किया और यही अवज्ञाकारियों का बदला है। (27) फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहे क्षमा याचना का सौभाग्य प्रदान करे और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (28) ऐ ईमानवालो, शिर्क करने वाले पूर्णतः अपवित्र हैं। अतः वह इस वर्ष के उपरान्त मस्जिद-ए हराम के पास न आयें और यदि तुमको निर्धनता का भय हो तो अल्लाह यदि चाहेगा तो अपनी कृपा से तुमको संपन्न कर देगा, अल्लाह ज्ञानी और विवेकशील है।

(29) इन किताब वालों से युद्ध करो जो न अल्लाह पर विश्वास रखते हैं और न परलोक के दिन पर और न अल्लाह और उसके सन्देष्टा के हराम (निषिद्ध) ठहराये हुए को हराम ठहराते हैं और न सत्यधर्म को अपना धर्म बनाते हैं, यहाँ तक कि वह अपने हाथ से (रक्षा-कर) दें और छोटे बनकर रहें। (30) और यहूदियों ने कहा कि उज़ैर अल्लाह के बेटे हैं और ईसाईयों ने कहा

कि मसीह अल्लाह के बेटे हैं। यह उनके अपने मुँह की बातें हैं। वह उन लोगों का अनुकरण कर रहे हैं जिन्होंने उनसे पहले अवज्ञा की। अल्लाह उनको नष्ट करे, वह किधर बहके जा रहे हैं। (31) उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अपने धर्मज्ञाताओं को और संसार के त्यागी साधु-सन्तों को पालनहार बना डाला और मरियम के बेटे मसीह को भी। हालाँकि उनको मात्र यह आदेश था कि वह एक उपास्य की उपासना करें। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह पवित्र है उससे जो वह साझी करते हैं।

(32) वह चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश को वह अपने मुँह से बुझा दें और अल्लाह अपने प्रकाश को पूर्ण किये बिना मानने वाला नहीं, चाहे अवज्ञाकारियों को यह कितना ही अप्रिय हो। (33) उसी ने अपने सन्देष्टा को भेजा है मार्गदर्शन और सच्चे धर्म के साथ ताकि उसको सारे धर्मो पर प्रभुता प्रदान करे चाहे यह बहुदेववादियों को कितना ही अप्रिय हो।

(34) ऐ ईमानवालो, किताब वालों के अधिकांश धर्मज्ञाता और संसार-त्यागी लोगों की सम्पत्ति अनुचित ढंग से खाते हैं और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और जो लोग सोना और चाँदी एकत्र करके रखते हैं और उनको अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते, उनको एक कष्टप्रद यातना की शुभ सूचना दे दो। (35) उस दिन उस सम्पत्ति को नरक की आग में तपाया जायगा। फिर उससे उनके ललाटों और उनकी बगलें और उनकी पीठों को दाग़ा जायगा। यही है वह जिसको तुमने अपने लिए एकत्र किया था। अतः अब चखो (उसका मज़ा) जो तुम एकत्र करते रहे।

(36) महीनों की संख्या अल्लाह के निकट बारह महीने हैं अल्लाह की किताब में, जिस दिन से उसनें आकाशों और पृथ्वी को बनाया, उनमें से चार हुरमत (निषेध) वाले हैं। यही है सीधा पंथ। अतः उनमें तुम अपने ऊपर अत्याचार न करो। और शिर्क करने वालों से सब मिलकर युद्ध करो जिस तरह वह सब मिलकर तुमसे युद्ध करते हैं और समझ लो कि अल्लाह डरने वालों के साथ है। (37) महीनों का हटा देना अवज्ञा में एक वृद्धि है। इससे अवज्ञा करने वाले पथभ्रष्टता में पड़ते हैं, वह किसी वर्ष हराम (निषिद्ध) महीने को हलाल (वैध) कर लेते हैं और किसी वर्ष उसको हराम कर देते हैं ताकि अल्लाह के

हराम किये हुए की गिनती पूरी करके उसके हराम किये हुए को हलाल कर लें। उनके बुरे कर्म उनके लिए आकर्षक बना दिये गये हैं और अल्लाह अवज्ञा करने वालों को मार्ग नहीं दिखाता।

(38) ऐ ईमानवालो, तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि अल्लाह के मार्ग में निकलो तो तुम भूमि से चिमट जाते हो। क्या तुम परलोक की तुलना में सांसारिक जीवन पर सन्तुष्ट हो गये। परलोक की तुलना में सांसारिक जीवन का सामान तो बहुत थोड़ा है। (39) यदि तुम न निकलोगे तो अल्लाह तुमको कष्टप्रद दण्ड देगा और तुम्हारे स्थान पर वह दूसरी क़ौम को ले आयेगा और तुम अल्लाह का कुछ भी न बिगाड़ सकोगे और अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ प्राप्त है। (40) यदि तुम सन्देष्टा की सहायता न करोगे तो अल्लाह स्वंय उसकी सहायता कर चुका है जबकि अवज्ञाकारियों ने उसको निकाल दिया था, वह मात्र दो में का दूसरा था। जब वह दोनों गुफा में थे। जब वह अपने साथी से कह रहा था कि चिन्ता न करो, अल्लाह हमारे साथ है। अतः अल्लाह ने उस पर अपनी सकीनत (सन्तुष्टि) उतारी और उसकी सहायता अपनी सेनाओं से की जो तुमको दिखाई न देते थे। और अल्लाह ने अवज्ञाकारियों की बात नीची कर दी और अल्लाह ही की बात तो ऊँची हैं और अल्लाह अत्यन्त शक्तिशाली है, तत्वज्ञ है।

(41) हल्के और बोझल और अपनी सम्पत्ति और अपने प्राण से अल्लाह के मार्ग में युद्ध करो, यह तुम्हारे लिए उत्तम है यदि तुम जानो। (42) यदि लाभ निकट होता और यात्रा हल्की होती तो वह अवश्य तुम्हारे पीछे हो लेते, परन्तु यह मंज़िल (दूरी के कारण) उन पर कठिन हो गई। अब वह सौगन्ध खायेंगे कि यदि हमसे हो सकता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ चलते। वह अपने आप को तबाही में डाल रहे हैं। और अल्लाह जानता है कि यह लोग निश्चित रूप से झूठे हैं।

(43) अल्लाह तुमको क्षमा करे, तुमने क्यों उन्हें अनुमति दे दी। यहाँ तक कि तुम पर स्पष्ट हो जाता कि कौन लोग सच्चे हैं और झूठों को भी तुम जान लेते। (44) जो लोग अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखते हैं, वह कभी तुमसे यह प्रार्थना न करेंगे कि वह अपनी सम्पत्ति और अपने

प्राण से जेहाद न करें, और अल्लाह डरने वालों को भली प्रकार जानता है। (45) तुमसे अनुमति तो वही लोग माँगते हैं जो अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास नहीं रखते और उनके दिल सन्देह में पड़े हुए हैं। अतः वह अपने सन्देह में भटक रहे हैं। (46) और यदि वह निकलना चाहते तो अवश्य वह उसका कुछ सामान कर लेते। परन्तु अल्लाह ने उनका उठना पसन्द न किया इसलिए उन्हें जमा रहने दिया और कह दिया गया कि बैठने वालों के साथ बैठे रहो।

(47) यदि यह लोग तुम्हारे साथ निकलते तो वह तुम्हारे लिए बुराई ही बढ़ाने का कारण बनते और वह तुम्हारे बीच उपद्रव के लिए दौड़-धूप करते और तुम में उनकी सुनने वाले लोग हैं और अल्लाह अत्याचारियों से भली प्रकार भिज्ञ है। (48) यह पहले भी उपद्रव का प्रयास कर चुके हैं और वह तुम्हारे लिए कार्यो का उलट-फेर करते रहे हैं। यहाँ तक कि सत्य आ गया और अल्लाह का आदेश प्रकट हो गया और वह अप्रसन्न ही रहे।

(49) और उनमें वह भी हैं जो कहते हैं कि मुझे छूट दे दीजिए और मुझे परीक्षा में न डालिए। सुन लो, वह तो परीक्षा में पड़ चुके। और निस्सन्देह नरक अवज्ञाकारियों को घेरे हुए है। (50) यदि तुम्हें कोई भलाई मिलती है तो इनको दुख होता है और यदि तुमको कोई कष्ट पहुँचता है तो वह कहते हैं हमने पहले ही अपना बचाव कर लिया था और वह प्रसन्न होकर लौटते हैं। (51) कहो, हमें मात्र वही चीज़ पहुँचेगी जो अल्लाह ने हमारे लिए निर्धारित कर दी है। वह हमारा काम बनाने वाला है और ईमान वालों (आस्थावानों) को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए। (52) कहो, तुम हमारे लिए मात्र दो भलाईयों में से एक भलाई की प्रतीक्षा में हो। परन्तु हम तुम्हारे पक्ष में इस प्रतीक्षा में हैं कि अल्लाह तुमको दण्ड दे अपनी ओर से या हमारे हाथों से। अतः तुम प्रतीक्षा करो हम भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हैं।

(53) कहो, तुम प्रसन्नता से ख़र्च करो या अप्रसन्नता से, तुमसे कदापि स्वीकार न किया जायेगा। निस्सदेह तुम अवज्ञाकारी लोग हो। (54) और वह अपने ख़र्च के स्वीकार होने से मात्र इसलिए वंचित हुए कि उन्होंने अल्लाह और उसके सन्देष्टा को झुठलाया, और यह लोग नमाज़ के लिए आते हैं तो

आलस्य के साथ आते हैं और ख़र्च करते हैं तो अनिच्छा के साथ। (55) तुम उनकी सम्पत्ति और सन्तान को कुछ महत्व न दो। अल्लाह तो यह चाहता है कि उसके द्वारा उन्हें सांसारिक जीवन में यातना दे और उनके प्राण इस हाल में निकलें कि वह अवज्ञाकारी हों। (56) वह अल्लाह की सौगन्ध खाकर कहते हैं कि वह तुममें से हैं हालाँकि वह तुममें से नहीं। बल्कि वह ऐसे लोग हैं जो तुमसे डरते हैं। (57) यदि वह कोई शरण का स्थान पायें या कोई गुफा या छिपकर बैठने का स्थान तो वह भागकर उसमें जा छिपें।

(58) और उनमें ऐसे भी हैं जो तुम पर सद्क़ों (दान) के (वितरण) सम्बन्ध में आरोप लगाते हैं। यदि उसमें से उन्हें दे दिया जाये तो सन्तुष्ट रहते हैं और यदि न दिया जाये तो असन्तुष्ट हो जाते हैं। (59) क्या अच्छा होता कि अल्लाह और सन्देष्टा ने जो कुछ उन्हें दिया था, उस पर वह सन्तुष्ट रहते और कहते कि अल्लाह हमारे लिए पर्याप्त हैं। अल्लाह अपनी कृपा से हमको और भी देगा और उसका सन्देष्टा भी, हमको तो अल्लाह ही चाहिए। (60) सद्का (ज़कात) तो वास्तव में निर्धनों और कमज़ोरों के लिए हैं और उन कार्यकर्त्ताओं के लिए जो ज़कात के कार्यों पर नियुक्त हैं। और उनके लिए जिनके दिलों को जोड़ना वांछित है। इसके अतिरिक्त बन्दियों को छुड़ाने में, और जो अर्थदण्ड भरें, और अल्लाह के मार्ग में, और यात्री की सहायता में। यह एक आदेश है अल्लाह की ओर से और अल्लाह ज्ञान वाला, विवेक वाला है।

(61) और उनमें वह लोग भी हैं जो नबी (सन्देष्टा) को दुख देते हैं और कहते हैं कि यह व्यक्ति तो कान (सबकी सुनता) है। कहो कि वह तुम्हारी भलाई के लिए कान (सबकी सुनता) है। वह अल्लाह पर ईमान (आस्था) रखता है और ईमान वालों पर भरोसा करता है और वह दया है उनके लिए जो तुममें ईमानवाले हैं। और जो लोग अल्लाह के सन्देष्टा को दुख देते हैं उनके लिए कष्टप्रद दण्ड है। (62) वह तुम्हारे समक्ष अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं ताकि तुमको राज़ी कर लें। हालाँकि अल्लाह और उसका सन्देष्टा अधिक हक़दार हैं कि वह उसको प्रसन्न करें यदि वह मोमिन (आस्थावान) हैं। (63) क्या इनको ज्ञात नहीं कि जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध करे उसके लिए नरक की आग है जिसमें वह सदैव रहेगा। यह बहुत बड़ा अपमान है। (64)

कपटाचारी डरते हैं कि कहीं मोमिनों (आस्थावानो) पर ऐसी सूरह अवतरित न हो जाये जो इनको उनके दिलों के भेदों से अवगत कर दे। कहो कि उपहास कर लो, अल्लाह निश्चित रूप से उसको प्रकट कर देगा जिससे तुम डरते हो। (65) और यदि तुम उनसे पूछो तो वह कहेंगे कि हम तो हँसी और दिल्लगी कर रहे थे। कहो, क्या तुम अल्लाह से और उसकी आयतों से और उसके सन्देष्टा से हँसी, दिल्लगी कर रहे थे। (66) बहाने मत बनाओ तुमने ईमान लाने (आस्था प्रकट करने) के बाद अवज्ञा की है। और हम तुममें से एक दल को क्षमा कर देंगे तो दूसरे दल को तो अवश्य दण्ड देंगे क्योंकि वह अपराधी हैं।

(67) कपटाचारी पुरुष और कपटाचारी महिलाएँ सब एक ही प्रकार के हैं। वह बुराई का आदेश देते हैं और भलाई से रोकते हैं और अपने हाथों को बन्द रखते हैं। उन्होंने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी उनको भुला दिया। निस्सन्देह कपटचारी बहुत अवज्ञाकारी हैं। (68) कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी महिलाओं और झुठलाने वालों से अल्लाह ने नरक की आग का वादा कर रखा है जिसमें वह सदैव रहेंगे, यही उनके लिए पर्याप्त है। उन पर अल्लाह की फटकार और उनके लिए स्थायी रहने वाली यातना है। (69) जिस प्रकार तुमसे पहले के लोग, वह शक्ति में तुमसे अधिक थे और सम्पत्ति और सन्तान में भी तुमसे बढ़े हुए थे तो उन्होंने अपनी भागीदारी से लाभ उठाया और तुमने भी अपनी भागीदारी से लाभ उठाया, जैसा कि तुम्हारे पहले के लोगों ने अपनी भागीदारी से लाभ उठाया था। (70) और तुमने भी वही तर्क-वितर्क किए जैसे तर्क-वितर्क उन्होंने किए थे। यही वह लोग हैं जिनके कर्म संसार और परलोक में नष्ट हो गए और यही लोग घाटे में पड़ने वाले हैं। क्या उन्हें उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जो उनसे पहले गुज़रे। नूह और आद और समूद और इब्राहीम की क़ौम और मदयन के लोगों और उल्टी हुई बस्तियों की। उनके पास उनके सन्देष्टा प्रमाणों के साथ आये, तो ऐसा न था कि अल्लाह उन पर अत्याचार करता, परन्तु वह स्वंय अपने आप पर अत्याचार करते रहे।

(71) और मोमिन (आस्थावान) पुरुष और मोमिन महिलाएँ एक-दूसरे

के सहायक हैं। वह भलाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं और नमाज़ स्थापित करते हैं और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करते हैं और अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करते हैं। यही लोग हैं जिन पर अल्लाह दया करेगा। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली है, और तत्वदर्शी है। (72) मोमिन (आस्थावान) पुरुषों और मोमिन महिलाओं से अल्लाह का वादा है बाग़ों का कि उनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह सदैव रहेंगे। और वादा है, सुथरे घरों का सदैव रहने वाले बाग़ों में और अल्लाह की प्रसन्नता जो सबसे बढ़ कर है। यही बड़ी सफलता है। (73) ऐ नबी (सन्देष्टा), अवज्ञाकारियों और कपटाचारियों से जेहाद करो और उन पर कठोर बन जाओ। और उनका ठिकाना नरक है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (74) वह अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा। हालाँकि उन्होंने अवज्ञा की बात कही और वह इस्लाम के बाद अवज्ञाकारी हो गये और उन्होंने वह चाहा जो उन्हें प्राप्त न हो सका। और यह मात्र इसका बदला था कि उनको अल्लाह और सन्देष्टा ने अपनी कृपा से सम्पन्न कर दिया। यदि वह तौबा (क्षमा-याचना) करें तो उनके लिए बेहतर है और यदि वह विमुखता का व्यवहार करे तो अल्लाह उनको कष्टप्रद यातना देगा संसार में भी और परलोक में भी। और पृथ्वी में उनका न कोई समर्थक होगा और न कोई सहायक।

(75) और उनमें वह भी हैं जिन्होंने अल्लाह को वचन दिया कि यदि उसने हमको अपनी कृपा से दिया तो हम अवश्य दान करेंगे और हम सदाचारी बनकर रहेंगे। (76) फिर जब अल्लाह ने उनको अपनी कृपा से प्रदान किया तो वह कृपणता करने लगे और खिन्नता से उन्होंने मुँह फेर लिया। (77) अतः अल्लाह ने उनके दिलों में कपट बैठा दिया उस दिन तक के लिए जबकि वह उससे मिलेंगे, इस कारण से कि उन्होंने अल्लाह से किये हुए वादे की अवहेलना की और इस कारण से कि वह झूठ बोलते रहे। (78) क्या उन्हें सूचना नहीं कि अल्लाह उनके भेद और उनकी कानाफूसी को जानता है और अल्लाह सभी छिपी हुई बातों को जानने वाला है। (79) वह लोग जो व्यंग करते हैं उन मोमिनों (आस्थावानों) पर जो दिल खोलकर दान देते हैं और जो मात्र अपने परिश्रम और मजदूरी से दान करते हैं, वह

उनका उपहास करते हैं। अल्लाह उन उपहास करने वालों का उपहास करता है और उनके लिए कष्टप्रद दण्ड है। (80) तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या न करो, यदि तुम सत्तर बार उन्हें क्षमा करने की प्रार्थना करोगे तो अल्लाह उनको क्षमा करने वाला नहीं। यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और सन्देष्टा को झुठलाया और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता।

(81) पीछे रह जाने वाले अल्लाह के सन्देष्टा से पीछे बैठ रहने पर बहुत प्रसन्न हुए और उनको भारी लगा कि वह अपनी सम्पत्तियों और प्राणों से अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। और उन्होंने कहा कि गर्मी में न निकलो। कह दो नरक की आग इससे अधिक गर्म है, काश! इन्हें समझ होती। (82) अतः वह हँसें कम और रोयें अधिक, उसके बदले में जो वह करते थे। (83) अतः यदि अल्लाह तुमको उनमें से किसी समूह की ओर वापस लाये और वह तुमसे युद्ध के लिए निकलने की अनुमति माँगें तो कह देना कि तुम मेरे साथ कभी नहीं चलोगे और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लड़ोगे। तुमने पहली बार भी बैठ रहने को पसन्द किया था, अतः पीछे रहने वालों के साथ बैठे रहो। (84) और उनमें से जो कोई मर जाए, उस पर तुम कभी नमाज़ न पढ़ो और न उसकी क़ब्र पर खड़े हो। निस्सन्देह उन्होंने अल्लाह और उसके सन्देष्टा को झुठलाया और वह इस दशा में मरे कि वह अवज्ञाकारी थे।

(85) और उनकी सम्पत्ति और उनकी सन्तान तुमको आश्चर्य में न डालें। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि इसके माध्यम से उनको संसार में दण्ड दे और उनके प्राण इस स्थिति में निकले कि वह अवज्ञाकारी हों। (86) और जब कोई सूरह अवतरित होती है कि अल्लाह पर ईमान लाओ (आस्थावान बनो) और उसके सन्देष्टा के साथ जेहाद (युद्ध) करो तो उनके क्षमता रखने वाले तुमसे छूट माँगने लगते हैं और कहते हैं कि हमको छोड़ दीजिए कि हम यहाँ ठहरने वालों के साथ रह जाएँ। (87) उन्होंने इसको पसन्द किया कि पीछे रहने वाली महिलाओं के साथ रह जाएँ। और इनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है, अतः वह कुछ नहीं समझते। (88) परन्तु सन्देष्टा और जो लोग उसके साथ ईमान लाये (आस्थावान बने) हैं, उन्होंने अपनी सम्पत्ति और प्राण से जेहाद किया और उन्हीं के लिए हैं अच्छाइयाँ और वही सफलता पाने वाले हैं।

(89) उनके लिए अल्लाह ने ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती हैं। उनमें वह सदैव रहेंगे। यहीं बड़ी सफलता है।

(90) बदवी (देहाती) अरबवालों में से भी बहाना करने वाले आये कि उन्हें अनुमति मिल जाये और जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा से झूठ बोले, वह बैठ रहे। उनमें से जिन्होंने अवज्ञा की उनको एक कष्टप्रद यातना पकड़ेगी। (91) कोई पाप दुर्बलों पर नहीं है और न रोगियों पर और न उन पर जो ख़र्च़ करने को कुछ नहीं पाते जबकि वह अल्लाह और उसके सन्देष्टा के साथ भलाई की इच्छा करें। भले कर्म करने वालों पर कोई आरोप नहीं और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (92) और न उन लोगों पर कोई आरोप है कि जब वह तुम्हारे पास आये कि तुम उनको सवारी दो। तुमने कहा कि मेरे पास कोई चीज़ नहीं कि तुमको उस पर सवार कर दूँ तो वह इस दशा में वापस हुए कि उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे इस दुख में कि उन्हें कुछ उपलब्ध नहीं जो वह ख़र्च करें। (93) आरोप तो बस उन लोगों पर है जो तुमसे अनुमति माँगते हैं हालाँकि वह सम्पन्न हैं। वह इस पर सन्तुष्ट हो गए कि पीछे रहने वाली महिलाओं के साथ रह जाएँ और और अल्लाह ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी, अतः वह नहीं जानते।

(94) तुम जब उनकी ओर पलटोगे तो वह तुम्हारे सामने बहाने प्रस्तुत करेंगे। कह दो कि बहाने न बनाओ। हम कदापि तुम्हारी बात न मानेंगे। निस्सन्देह अल्लाह ने हमको तुम्हारी परिस्थितियाँ बता दी हैं। अब अल्लाह और सन्देष्टा तुम्हारे कर्म को देखेंगे। फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो खुले और छिपे का जानने वाला है, वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम कर रहे थे। (95) यह लोग तुम्हारी वापसी पर तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समे खायेंगे ताकि तुम उनको जाने दो। अतः तुम उनको छोड़ दो, निस्सन्देह वह अपवित्र हैं और उनका ठिकाना नरक है बदले में उसके जो वह करते रहे। (96) वह तुम्हारे समक्ष सौगन्ध खायेंगे कि तुम उनसे प्रसन्न हो जाओ। यदि तुम उनसे प्रसन्न हो भी जाओ तो अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों से प्रसन्न होने वाला नहीं।

(97) देहातवाले अवज्ञा और कपटाचार में अधिक कठोर हैं और वह इसी योग्य हैं कि अल्लाह ने अपने सन्देष्टा पर जो कुछ उतारा है उसकी

सीमाओं से अनभिज्ञ रहें। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, विवेक वाला है। (98) और देहातियों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के मार्ग में ख़र्च को एक दण्ड (जुर्माना) समझते हैं और तुम्हारे लिए बुरे समय की प्रतीक्षा में हैं। बुरा समय स्वंय उन्हीं पर है और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है। (99) और देहातियों में वह भी हैं जो अल्लाह पर और परलोक के दिन पर ईमान (आस्था) रखते हैं और जो कुछ ख़र्च करते हैं, वह उसको अल्लाह के यहाँ निकटता का और सन्देष्टा की दुआएँ लेने का माध्यम बनाते हैं। हाँ, निस्सन्देह वह उनके लिए निकटता प्राप्त करने का माध्यम है। अल्लाह उनको अपनी दया में प्रवेश करेगा। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

(100) और मुहाजिरीन (प्रवासी) और अन्सार (सहायता करने वालों) में जो लोग पूर्ववर्ती हैं और जिन्होंने अच्छाई के साथ इनका अनुसरण किया, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वह उससे राज़ी हुए। और अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। वह उनमें सदैव रहेंगे। यही है बड़ी सफलता। (101) और तुम्हारे आस-पास जो देहाती हैं, उनमें कपटाचारी हैं और मदीने वालों में भी कपटाचारी हैं। वह कपटाचार पर दृढ़ हो गए हैं। तुम उनको नहीं जानते, हम उनको जानते हैं। हम उनको दोहरी यातना देंगे। फिर वह एक बड़ी यातना की ओर भेजे जायेंगे।

(102) कुछ और लोग हैं जिन्होंने अपनी ग़लतियों को स्वीकार कर लिया है। उन्होंने मिले-जुले कर्म किए थे, कुछ भले और कुछ बुरे। आशा है कि अल्लाह उन पर ध्यान दे। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (103) तुम उनकी सम्पत्तियों में से दान लो, इससे तुम उनको पवित्र करोगे और उनका सुधार करोगे। और तुम उनके लिए दुआ करो। निस्सन्देह तुम्हारी दुआ उनके लिए सन्तुष्टि का कारण होगी, अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है। (104) क्या वह नहीं जानते कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है। और वही दान को स्वीकार करता है। और अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला, दयावान है। (105) कहो कि कर्म करो अल्लाह और उसके सन्देष्टा और ईमानवाले तुम्हारे कर्म को देखेंगे और तुम शीघ्र उसके पास लौटाये जाओगे जो समस्त खुले और छिपे को जानता है। वह तुमको बता देगा जो कुछ तुम

कर रहे थे। (106) कुछ दूसरे लोग हैं जिनका मामला अभी अल्लाह का आदेश आने तक रुका हुआ है, या वह उनको दण्ड देगा या उनकी तौबा स्वीकार करेगा, और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है।

(107) और उनमें ऐसे भी हैं जिन्होंने एक मस्जिद बनाई हानि पहुँचाने के लिए और अवज्ञा के लिए और ईमान वालों के बीच फूट डालने के लिए और इसलिए ताकि घात लगाने की जगह के रूप में प्रयोग करें उस व्यक्ति के लिए जो पहले से अल्लाह और उसके सन्देष्टा से युद्ध कर रहा है। और यह लोग सौगन्ध खायेंगे कि हमने तो मात्र भलाई चाही थी और अल्लाह गवाह है कि वह झूठे हैं। (108) तुम इस भवन में कभी खड़े न होना। हाँ, जिस मस्जिद का आधार पहले ही दिन से ईश परायणता पर रखा गया है, वह इस योग्य है कि तुम उसमें खड़े हो। इसमें ऐसे लोग हैं जो पवित्र रहने को पसन्द करते हैं और अल्लाह पवित्र रहने वालों को पसन्द करता है। (109) क्या वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसने अपने भवन की आधारशिला अल्लाह के भय पर और अल्लाह की प्रसन्नता पर रखी, या वह व्यक्ति श्रेष्ठ है जिसने अपने भवन की आधारशिला एक खाई के किनारे पर रखी जो गिरने को है। फिर वह भवन उसको लेकर नरक की आग में गिर पड़ा। और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता। (110) और यह भवन जो उन्होंने बनाया, वह सदैव उनके दिलों में सन्देह का आधार बना रहेगा सिवाय इसके कि उनके दिल ही टुकड़े हो जायें। और अल्लाह ज्ञान वाला और विवेक वाला है।

(111) निस्सन्देह अल्लाह ने मोमिनों (आस्थावानों) से उनके प्राण और उनकी सम्पत्ति को ख़रीद लिया है जन्नत के बदले में। वह अल्लाह के मार्ग में युद्ध करते हैं। फिर मारते हैं और मारे जाते हैं। यह अल्लाह पर एक सच्चा वादा है, तौरात में और इन्जील में और क़ुरआन में। और अल्लाह से बढ़ कर अपने वचन को पूरा करने वाला कौन है। अतः तुम खुशियां मनाओ इस मामले पर जो तुमने अल्लाह से किया है। और यही है सबसे बड़ी सफलता। (112) वह तौबा (क्षमा-याचना) करने वाले हैं। इबादत (उपासना) करने वाले हैं। गुणगान करने वाले हैं। अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करने वाले हैं। झुकने वाले हैं। सजदा करने वाले हैं। भलाई का आदेश देने वाले हैं। बुराई से रोकने

वाले हैं। अल्लाह की सीमाओं का ध्यान रखने वाले हैं। और मोमिनों को शुभ सूचना दे दो।

(113) सन्देष्टा को और उन लोगों को जो ईमान लाये (आस्थावान बने) हैं। उचित नहीं कि वह शिर्क करने वालों के लिए क्षमा की दुआ करें, चाहे वह उनके सम्बन्धी ही हों जबकि उन पर स्पष्ट हो चुका कि यह नरक में जाने वाले लोग हैं। (114) और इब्राहीम का अपने पिता के लिए क्षमा की दुआ माँगना मात्र उस वादे के कारण से था जो उसने उनसे कर लिया था। फिर जब उस पर स्पष्ट हो गया कि वह अल्लाह का शत्रु है तो वह उससे अलग हो गया। निस्सन्देह इब्राहीम बड़ा कोमल हृदय और सहनशील था। (115) और अल्लाह किसी क़ौम को सन्मार्ग प्रदान करने के उपरान्त पथभ्रष्ट नहीं करता जब तक उनको साफ़-साफ़ वह चीज़ें बता न दे जिनसे उन्हें बचना है, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखता है। (116) अल्लाह ही की सत्ता है आकाशों में और पृथ्वी पर, वही जीवन प्रदान करता है और वही मृत्यु देता है। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा न कोई मित्र है और न सहायक।

(117) अल्लाह ने सन्देष्टा पर और मुहाजरीन (प्रवासी) और अन्सार (सहायता करने वाले) पर ध्यान दिया। जिन्होंने कठिनाई के समय सन्देष्टा का साथ दिया, इसके बाद कि उनमें से कुछ लोगों के दिल टेढ़ की ओर प्रवृत्त हो चुके थे। फिर अल्लाह ने उन पर दया की। निस्सन्देह अल्लाह उन पर कृपाशील है, दया करने वाला है। (118) और उन तीनों पर भी उसने ध्यान दिया जिनका मामला निलम्बित रखा गया था। यहाँ तक कि जब पृथ्वी अपने फैलाव के बावजूद उन पर संकुचित हो गयी और वह स्वंय अपने आप से तंग आ गये और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए स्वंय अल्लाह के अतिरिक्त कोई शरण नहीं फिर अल्लाह उनकी ओर पलटा ताकि वह उसकी ओर पलट आयें। निस्सन्देह अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला, दया करने वाला है

(119) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो और सच्चे लोगों के साथ रहो। (120) मदीना वालों और और आस-पास के देहातियों के लिए उचित न था कि वह अल्लाह के सन्देष्टा को छोड़ कर पीछे बैठ रहें और न यह

कि अपने प्राण को उनके प्राण से अधिक प्रिय रखें। यह इसलिए कि जो प्यास और थकान और भूख़ भी उनको अल्लाह के मार्ग में लगती है और जो क़दम भी वह अवज्ञाकारियों को दुख पहुँचाने वाला उठाते हैं और जो चीज़ भी वह शत्रु से छीनते हैं, उनके बदले में उनके लिए एक भलाई लिख दी जाती है। अल्लाह भलाई करने वालों का बदला नष्ट नहीं करता। (121) और जो छोटा या बड़ा ख़र्च उन्होंने किया और जो मैदान उन्होंने तय किए, वह सब उनके लिए लिखा गया है ताकि अल्लाह उनके कर्म का अच्छे से अच्छा बदला दे। (122) और यह सम्भव न था कि ईमानवाले (आस्थावान) सब के सब निकल खड़े हों। तो ऐसा क्यों न हुआ कि उनके प्रत्येक समूह में से एक वर्ग निकल कर आता, ताकि वह धर्म में गहरी समझ पैदा करता और वापस जाकर अपनी क़ौम के लोगों को सचेत करता ताकि वह भी अल्लाह से डरने वाले बनते।

(123) ऐ ईमान वालों, इन अवज्ञाकारियों से युद्ध करो जो तुम्हारे आस-पास हैं और चाहिए कि वह तुम्हारे अन्दर कठोरता पायें और जान लो कि अल्लाह डरनेवालों के साथ है। (124) और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं कि इसने तुममें से किसका ईमान (आस्था) अधिक कर दिया अतः जो ईमान वाले हैं, उनका इसने ईमान अधिक कर दिया और वह प्रसन्न हो रहे हैं। (125) और जिन लोगों के दिलों में रोग है तो उसने बढ़ा दी उनकी गन्दगी पर गन्दगी। और वह मृत्यु तक अवज्ञाकारी ही रहे। (126) क्या यह लोग देखते नहीं कि वह प्रतिवर्ष एक बार या दो बार परीक्षा में डाले जाते हैं, फिर भी वह न तौबा करते हैं और न शिक्षा प्राप्त करते हैं। (127) और जब कोई सूरह उतारी जाती है तो यह लोग एक-दूसरे को देखते हैं कि कोई देखता तो नहीं, फिर चल देते हैं। अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया इस कारण से कि ये समझ से काम लेने वाले लोग नहीं हैं।

(128) तुम्हारे पास एक सन्देष्टा आया है जो स्वंय तुममें से है। तुम्हारा घाटे में पड़ना उस पर कष्टकर है। वह तुम्हारी भलाई का अभिलाषी है। ईमान वालों पर अत्यन्त स्नेह करने वाला और दयावान है। (129) फिर भी यदि वह

मुँह फेरें तो कह दो कि अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। इसी पर मैंने भरोसा किया। और वही स्वामी है उच्चतम अर्श (सिंहासन) का।

10. सूरह यूनुस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बहुत कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. रा., यह विवेकपूर्ण पुस्तक की आयतें (श्रुति) हैं। (2) क्या लोगों को इस पर आश्चर्य है कि हमने उन्हीं में से एक व्यक्ति पर वह्य (श्रुति) भेजी कि लोगों को डराओ और जो ईमान लायें उनको शुभ सूचना सुना दो कि उनके लिए उनके पालनहार के पास सच्ची प्रतिष्ठा है। अवज्ञाकारियों ने कहा कि यह व्यक्ति तो स्पष्ट जादूगर है।

(3) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार अल्लाह है जिसने आकाशों और धरती की छः दिनों (छः समय-अवधि) में रचना की, फिर वह सिंहासन पर स्थापित हुआ। वही मामलों की व्यवस्था करता है। उसकी अनुमति के बिना कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है अतः तुम उसी की उपासना करो, क्या तुम सोचते नहीं। (4) उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना है, यह अल्लाह का पक्का वादा है। निस्सन्देह वह रचना को प्रारम्भ करता है, फिर वही पुनः रचना करेगा ताकि जो लोग ईमान लाये (विश्वास किया), और उन्होंने भले कर्म किये, उनको न्यायपूर्वक बदला दे। और जिन्होंने अवज्ञा की उनकी अवज्ञा के बदले उनके लिए खौलता हुआ पानी और कष्टप्रद यातना है।

(5) अल्लाह ही है जिसने सूरज को चमकता बनाया और चाँद को प्रकाश प्रदान किया और उसकी मंज़िलें निर्धारित कर दीं ताकि तुम वर्षों की गिनती और हिसाब ज्ञात करो। अल्लाह, ने यह सब कुछ निरुद्देश्य नहीं बनाया है, वह निशानियाँ खोल कर बयान करता है उनके लिए जो बुद्धि रखते हैं। (6) निश्चित रूप से रात और दिन के उलट-फेर में और अल्लाह ने जो कुछ

आसमानों और पृथ्वी में पैदा किया है, उनमें उन लोगों के लिए निशानियाँ हैं जो डरते हैं।

(7) निस्सन्देह जो लोग हमसे भेंट की आशा नहीं रखते और संसार के जीवन पर प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं और जो हमारी निशानियों से असावधान हैं। (8) उनका ठिकाना नरक होगा उस कारण से जो वह करते थे। (9) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये (आस्थावान बने) और भले कर्म किए, अल्लाह उनकी आस्था के कारण उनको पहुँचा देगा, उनके नीचे नहरें बहती होंगी, नेमत के बाग़ों में। (10) उसमें उनका कथन होगा कि ऐ अल्लाह, तू पवित्र है। और भेंट उनकी सलाम होगी। और उनकी अन्तिम बात यह होगी कि सम्पूर्ण प्रंशसा अल्लाह के लिए है जो पालनहार है सम्पूर्ण संसार का। (11) यदि अल्लाह लोगों के लिए यातना उसी प्रकार शीघ्र पहुँचा दे जिस प्रकार वह उनके साथ दया में शीघ्रता करता है तो उनकी अवधि समाप्त कर दी गई होती। परन्तु हम उन लोगों को जो हमारी भेंट की आशा नहीं रखते, उनकी अवज्ञा में भटकने के लिए छोड़ देते हैं। (12) और मनुष्य को जब कोई कष्ट पहुँचता है तो वह खड़े और बैठे और लेटे हमको पुकारता है। फिर जब हम उससे उसके कष्ट को दूर कर देते हैं तो वह ऐसा हो जाता है मानो उसने कभी अपने किसी बुरे समय पर हमको पुकारा ही न था। ऐसे उलंधनकारियों के लिए उनके कर्म आर्कषक बना दिये गए हैं।

(13) और हमने तुमसे पहले क़ौमों को नष्ट किया जबकि उन्होंने अत्याचार किया। और उनके सन्देष्टा उनके पास स्पष्ट प्रमाणों के साथ आये और वह ईमान लाने वाले (आस्थावान) न बने। हम ऐसा ही बदला देते हैं अपराधी लोगों को। (14) फिर हमने उनके बाद तुमको देश में उत्तराधिकारी बनाया ताकि हम देखें कि तुम कैसा कर्म करते हो।

(15) और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन लोगों को हमारे पास आने का खटका (भय) नहीं है, वह कहते हैं कि इसके अतिरिक्त कोई और क़ुरआन लाओ या इसको बदल दो। कहो कि मेरा यह काम नहीं कि मैं अपनी इच्छा से इसको बदल दूँ। मैं तो मात्र इस वह्य (श्रुति) का अनुसरण करता हूँ जो मेरे पास आती है। यदि मैं अपने पालनहार

की अवज्ञा करूँ तो मैं एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ। (16) कहो कि अल्लाह यदि चाहता तो मैं इसको तुम्हें न सुनाता और न अल्लाह इससे तुम्हें सूचित करता। मैं इससे पहले तुम्हारे बीच एक जीवनकाल व्यतीत कर चुका हूँ, फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते। (17) उससे बढ़ कर अत्याचारी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठा आरोप लगाये या उसकी निशानियों को झुठलाये। निश्चित रूप से अपराधियों को सफलता प्राप्त नहीं होती।

(18) और वह अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की उपासना करते हैं जो उनको न हानि पहुँचा सकें और न लाभ पहुँचा सकें। और वह कहते हैं कि ये अल्लाह के पास हमारे सिफ़ारिशी हैं। कहो, क्या तुम अल्लाह को ऐसी बात की सूचना देते हो जो उसको आसमानों और धरती में ज्ञात नहीं। वह पवित्र और श्रेष्ठ है उससे जिसको वह साझीदार बनाते हैं। (19) और लोग एक ही उम्मत (समुदाय) थे। फिर उन्होंने मतभेद किया। और यदि तुम्हारे पालनहार की ओर से एक बात पहले से न ठहर चुकी होती तो उनके बीच उस मामले का निर्णय कर दिया जाता जिसमें वह मतभेद कर रहे हैं।

(20) और वह कहते हैं कि सन्देष्टा पर उसके पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई, कहो कि परोक्ष की सूचना तो अल्लाह ही को है। तुम लोग प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में से हूँ। (21) और जब कोई कष्ट पड़ने के बाद हम लोगों को अपनी दया का स्वाद चखाते हैं तो वह तुरन्त हमारी निशानियों के मामले में बहाने (हीले) बनाने लगते हैं। कहो कि अल्लाह अपने बहानों (हीलों) में उनसे भी अधिक तीव्र है। निश्चय ही हमारे फ़रिश्ते तुम्हारे बहानों (हीलों) को लिख रहे हैं।

(22) वह अल्लाह ही है जो तुमको थल और जल में चलाता है। अतः जब तुम नाव में होते हो और नावें लोगों को लेकर अनुकूल हवा से चल रही होती हैं और लोग इससे प्रसन्न होते हैं कि सहसा तीव्र हवा आती है और उन पर प्रत्येक दिशा से लहरे उठने लगती हैं और वह कल्पना कर लेते हैं कि हम घिर गये। उस समय वह अपनी अपनी निष्ठा को मात्र अल्लाह ही के लिए विशुद्ध करके उसको पुकारने लगते हैं कि यदि तूने हमें इससे बचा लिया तो हम निश्चित रूप से आभार व्यक्त करने वाले बन्दे बनेंगे। (23) फिर जब वह

उनको बचा लेता है तो तुरन्त ही वह धरती पर अन्याय संगत विद्रोह करने लगते हैं। ऐ लोगों, तुम्हारा विद्रोह तुम्हारे अपने ही विरुद्ध पड़ रहा है, वर्तमान जीवन का लाभ उठा लो, फिर तुमको हमारी ओर लौट कर आना है, फिर हम बता देंगे जो कुछ तुम कर रहे थे।

(24) सांसारिक जीवन का उदाहरण ऐसा है जैसे पानी कि हमने उसको आसमान से बरसाया तो पृथ्वी की वनस्पतियाँ भरपूर निकलीं जिसको मनुष्य खाते हैं और जिसको मवेशी खाते हैं। यहाँ तक कि जब भूमि पूर्णतः लहलहा गई और सँवर उठी और धरती वालों ने समझ लिया कि अब यह हमारे नियन्त्रण में है तो अचानक उस पर हमारा आदेश रात को या दिन को आ गया, फिर हमने उसको काटकर ढेर कर दिया, मानो कल यहाँ कुछ था ही नहीं। इस तरह हम निशानियाँ स्पष्ट रूप से बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं।

(25) और अल्लाह शान्ति के घर की ओर बुलाता है और वह जिसको चाहता है सीधा रास्ता दिखा देता है। (26) जिन लोगों ने भलाई की, उनके लिए भलाई है और उस पर अतिरिक्त भी। और उनके चेहरों पर न कालापन छायेगा और न अपमान। यही स्वर्ग वाले लोग हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे। (27) और जिन्होंने बुराईयाँ कमाईं तो बुराई का बदला उसके समान है। और उन पर अपमान छाया हुआ होगा। कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला न होगा। मानो कि उनके चेहरे अधेरी रात के टुकड़ों से ढाँक दिये गये हैं। यही लोग नरक वाले हैं वह उसमें सदैव रहेंगे।

(28) और जिस दिन हम उन सबको एकत्र करेंगे, फिर हम शिर्क (साझीदार) करने वालों से कहेंगे कि ठहरो तुम भी और तुम्हारे बनाये हुए साझीदार भी। फिर हम उनके बीच अलगाव कर देंगे और उनके साझीदार कहेंगे कि तुम हमारी उपासना तो नहीं करते थे। (29) अल्लाह हमारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है। हम तुम्हारी उपासना से पूर्णत अनभिज्ञ थे। (30) उस समय प्रत्येक व्यक्ति अपने उस कर्म का सामना करेगा जो उसने किया था और लोग अपने वास्तविक स्वामी अल्लाह की ओर लौटाये जायेंगे और जो झूठ उन्होंने गढ़े थे, वह सब उनसे जाते रहेंगे।

(31) कहो कि कौन तुमको आकाश और धरती से जीविका देता है, या कौन है जो कान पर और आँखों पर नियन्त्रण रखता है। और कौन निर्जीव में से जीव को और जीव में से निर्जीव को निकालता है। और कौन मामलों की व्यवस्था कर रहा है। वह कहेंगे कि अल्लाह। कहो कि फिर क्या तुम डरते नहीं। (32) अतः वही अल्लाह तुम्हारा वास्तविक पालनहार है। मार्गदर्शन के अतिरिक्त और क्या है केवल भटकना, तुम किधर फिरे जाते हो। (33) इसी तरह तेरे पालनहार की बात विद्रोह करने वालों के पक्ष में पूरी हो कर रही कि वह ईमान न लायेंगे।

(34) कहो, क्या तुम्हारे ठहराये हुए साझीदारों में कोई है जो पहली बार पैदा करता हो, फिर वह दूसरी बार भी पैदा करे। कहो, अल्लाह ही पहली बार भी पैदा करता है फिर वही दूसरी बार भी पैदा करेगा। फिर तुम कहाँ भटके जाते हो। (35) कहो, क्या तुम्हारे साझीदारों में कोई है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता हो, कह दो कि अल्लाह ही सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है। फिर जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है, वह अनुसरण किए जाने का हक़दार है या वह जिसको स्वंय ही मार्ग न मिलता हो बल्कि उसे रास्ता बताया जाये। तुमको क्या हो गया है। तुम कैसा निर्णय करते हो। (36) उनमें से अधिकतर मात्र कल्पनाओं का अनुसरण कर रहे हैं। और कल्पना सत्य बात में कुछ भी काम नहीं देती। अल्लाह को भली प्रकार ज्ञात है जो कुछ वह करते हैं।

(37) और यह क़ुरआन ऐसा नहीं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई इसको गढ़ ले। बल्कि यह पुष्ठि करती है उन भविष्यवाणियों की जो इससे पहले से मौजूद हैं। और व्याख्या है किताब की, इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह जगत के स्वामी की ओर से हैं। (38) क्या लोग कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि तुम इसके जैसी कोई सूरह ले आओ। और अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिनको बुला सको बुला लो, यदि तुम सच्चे हो। (39) बल्कि यह लोग उस चीज़ को झुठला रहे हैं जो उनके ज्ञान की परिधि में नहीं आती। और जिसकी वास्तविकता अभी उन पर प्रकट नहीं हुई। इसी प्रकार उन लोगों ने भी झुठलाया जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं, अतः देखो कि अत्याचारियों का अन्त क्या हुआ।

(40) और उनमें से वह भी हैं जो क़ुरआन पर ईमान (आस्था) ले आयेंगे और वह भी हैं जो उस पर ईमान नहीं लायेंगे। और तेरा पालनहार उपद्रवियों को भली प्रकार जानता है। (41) और यदि वह तुमको झुठलाते हैं तो कह दो कि मेरा कर्म मेरे लिए है और तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए। तुम उससे बरी (विरक्त) हो जो मैं करता हूँ और मैं उससे बरी (विरक्त) हूँ जो तुम करते हो। (42) और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे जबकि वह समझ से काम नहीं ले रहे हों। (43) और उनमें से कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर देखते हैं, तो क्या तुम अन्धों को रास्ता दिखाओगे यद्यपि उन्हें दिखाई न दे रहा हो। (44) अल्लाह लोगों पर कुछ भी अत्याचार नहीं करता, परन्तु लोग स्वंय ही अपने आप पर अत्याचार करते हैं। (45) और जिस दिन अल्लाह इनको एकत्र करेगा, मानो कि वह मात्र दिन की एक घड़ी संसार में थे। वह एक-दूसरे को पहचानेंगे। निस्सन्देह अत्यन्त घाटे में रहे वह लोग जिन्होंने अल्लाह से मिलने को झुठलाया और वह सन्मार्ग पर न आये। (46) हम तुमको उसका कोई भाग दिखा दें जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं या तुम्हें मृत्यु दे दें, प्रत्येक स्थिति में उनको हमारी ही ओर लौटना है। फिर अल्लाह गवाह है उस पर जो कुछ वह कर रहे हैं। (47) और प्रत्येक उम्मत (समुदाय) के लिए एक सन्देष्टा है। फिर जब उनका सन्देष्टा आ जाता है तो उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जाता है और उन पर कोई अत्याचार नहीं होता।

(48) और वह कहते हैं कि यह वादा कब पूरा होगा यदि तुम सच्चे हो। (49) कहो, मैं अपने लिए भी बुरे और भले का स्वामी नहीं, परन्तु जो अल्लाह चाहे। प्रत्येक उम्मत (समुदाय) के लिए एक समय है। जब उनका समय आ जाता है तो फिर न वह एक घड़ी पीछे होता है और न आगे। (50) कहो कि बताओ, यदि अल्लाह की यातना तुम पर रात को आ पड़े या दिन को आ जाये तो अपराधी लोग उनसे पहले क्या कर लेंगे। (51) फिर क्या जब यातना घटित हो चुकेगी तब उस पर विश्वास करोगे। अब स्वीकार किया और तुम तो इसी की माँग करते थे। (52) फिर अत्याचारियों से कहा जायेगा कि अब

सदा की यातना चखो। यह उसी का बदला मिल रहा है जो कुछ तुम कमाते थे।

(53) और वह तुमसे पूछते हैं कि क्या यह बात सच है। कहो कि हाँ मेरे पालनहार की सौगन्ध, यह सच है और तुम उसकी पकड़ से बाहर न जा सकोगे। (54) और यदि प्रत्येक अत्याचारी के पास वह सब कुछ हो जो पृथ्वी पर है तो वह उसको अर्थदण्ड के रूप में दे देना चाहेगा। और जब वह यातना को देखेंगे तो अपने दिल में पछतायेंगे। और उनके बीच न्यायपूर्वक निर्णय कर दिया जायेगा और उन पर अत्याचार न होगा। (55) याद रखो, जो कुछ आकाशों और धरती में है सब अल्लाह का है, याद रखो, अल्लाह का वादा सच्चा है परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (56) वही जीवित करता है और वही मृत्यु देता है और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।

(57) ऐ लोगों, तुम्हारे पास तुम्हारे पालनहार की ओर से उपदेश आ गया और उसके लिए रोग निवारण जो सीनों में होता है और ईमान वालों (आस्थावानों) के लिए मार्गदर्शन और दया। (58) कहो कि यह अल्लाह की कृपा और उसकी दया से है। अब चाहिए कि लोग प्रसन्न हों, यह उससे उत्तम है जिसको वह एकत्र कर रहे हैं। (59) कहो, यह बताओ कि अल्लाह ने तुम्हारे लिए जो जीविका उतारी थी, फिर तुमने स्वंय उसमें से कुछ को अवैध ठहराया और कुछ को वैध। कहो, क्या अल्लाह ने तुमको इसका आदेश दिया है या तुम अल्लाह पर झूठ लगा रहे हो। (60) और प्रलय के दिन के सम्बन्ध में उन लोगों का क्या विचार है जो अल्लाह पर झूठ लगा रहे हैं। निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है, परन्तु अधिकतर लोग आभार व्यक्त नहीं करते। (61) और तुम जिस स्थिति में भी होते हो और क़ुरआन में से जो भाग भी सुना रहे हो और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हारे ऊपर गवाह रहते हैं जिस समय तुम उसमें लीन होते हो। और तेरे पालनहार से कण के बराबर भी कोई चीज़ छिपी नहीं, न धरती में और न आकाश में और न उससे छोटी और न बड़ी, परन्तु वह एक स्पष्ट पुस्तक में है। (62) सुन लो, अल्लाह के मित्रों के लिए न कोई भय होगा और न वह दुखी होंगे। (63) ये वह लोग हैं जो ईमान लाये और डरते रहे। (64) उनके लिए शुभ सूचना है संसार के जीवन में भी और

परलोक में भी। अल्लाह की बातों में कोई परिवर्तन नहीं, यही बड़ी सफलता है। (65) और तुमको उनकी बात चिन्ता में न डाले। सारा प्रभुत्व अल्लाह ही के लिए है, वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(66) सुनो, जो आकाशों में है और जो पृथ्वी में है सब अल्लाह ही के हैं। और जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त साझीदारों को पुकारते हैं वह किस चीज़ का अनुसरण कर रहे हैं। वह मात्र कल्पना का अनुसरण कर रहे हैं और वह मात्र अटकल दौड़ा रहे हैं। (67) वह अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम शान्ति प्राप्त करो। और दिन को प्रकाशमान बनाया। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

(68) कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। वह नितांत है, पवित्र है। उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण नहीं। क्या तुम अल्लाह पर ऐसी बात गढ़ते हो जिसका तुम ज्ञान नहीं रखते। (69) कहो, जो लोग अल्लाह पर झूठ बाँधते हैं, वह सफल नहीं होंगे। (70) उनके लिए मात्र संसार में थोड़ा लाभ उठा लेना है। फिर हमारी ही ओर उनका लौटना है। फिर उनको हम इस अवज्ञा के बदले कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे।

(71) और इनको नूह का वृत्तान्त सुनाओ। जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, यदि मेरा खड़ा होना और अल्लाह की आयतों (श्रुति) से उपदेश करना तुम पर भारी हो गया है तो मैंने अल्लाह पर भरोसा किया। तुम सर्वसम्मत से अपना निर्णय कर लो और अपने साझीदारों को भी साथ ले लो, ताकि तुमको अपने निर्णय में सन्देह शेष न रहे। फिर तुम लोग मेरे साथ जो कुछ करना चाहते हो, वह कर डालो और मुझको अवसर न दो। (72) यदि तुम विमुखता का व्यवहार करोगे तो मैंने तुमसे कोई बदला नहीं माँगा है। मेरा बदला तो अल्लाह पर है। और मुझको आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञाकारियों में से बनूँ। (73) फिर उन्होंने उसको झुठला दिया तो हमने नूह को और जो लोग उसके साथ नाव में थे, बचा लिया और उनको उत्तराधि ाकारी बनाया। और उन लोगों को डुबा दिया जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया था। देखो कि क्या परिणाम हुआ उनका जिनको डराया गया था।

(74) फिर हमने नूह के बाद कितने सन्देष्टा भेजे, उनकी क़ौमों की ओर। वह उनके पास खुले-खुले प्रमाण लेकर आये, परन्तु वह उस पर ईमान लाने वाले न बने जिसको वह पहले झुठला चुके थे। इसी तरह हम सीमा से निकल जाने वालों के दिलों पर मुहर लगा देते हैं।

(75) फिर हमने उनके बाद मूसा और हारुन को फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास अपनी निशानियाँ देकर भेजा परन्तु उन्होंने घमण्ड किया और वह अपराधी लोग थे। (76) फिर जब उनके पास हमारी ओर से सच्ची बात पहुँची तो उन्होंने कहा। यह तो खुला हुआ जादू है। (77) मूसा ने कहा कि क्या तुम सत्य को जादू कहते हो जबकि वह तुम्हारे पास आ चुका है। क्या यह जादू है, हालाँकि जादूवाले कभी सफलता नहीं पाते। (78) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको उस रास्ते से फेर दो जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और इस देश में तुम दोनों की श्रेष्ठता स्थापित हो जाये, और हम कभी तुम दोनों की बात मानने वाले नहीं हैं।

(79) और फ़िरऔन ने कहा कि सभी कुशल जादूगरों को मेरे पास ले आओ। (80) जब जादूगर आये तो मूसा ने उनसे कहा कि जो कुछ तुम्हें डालना है डालो। (81) फिर जब जादूगरों ने डाला तो मूसा ने कहा कि जो कुछ तुम लाए हो वह जादू है। निस्सन्देह अल्लाह उसको रद्द (खंडित) कर देगा, अल्लाह निश्चित रूप से उपद्रवियों के काम को सुधरने नहीं देता। (82) और अल्लाह अपने आदेश से सत्य को सत्य कर दिखाता है, चाहे अपराधियों को वह कितना ही अप्रिय हो। (83) फिर मूसा को उसकी क़ौम में से कुछ युवकों के अतिरिक्त किसी ने न माना, फ़िरऔन के डर से और स्वंय अपनी क़ौम के बड़े लोगों के डर से कि कहीं वह उनको किसी परीक्षा में न डाल दे, निस्सन्देह फ़िरऔन पृथ्वी पर प्रभुत्व रखता था और वह उन लोगों में से था जो सीमा से निकल जाते हैं। (84) और मूसा ने कहा ऐ मेरी क़ौम, यदि तुम अल्लाह पर विश्वास रखते हो तो उसी पर विश्वास करो, यदि तुम वास्तव में आज्ञाकारी हो। (85) उन्होंने कहा, हमने अल्लाह पर भरोसा किया, ऐ हमारे पालनहार, हमें अत्याचारी लोगों के लिए परीक्षा न बना। (86) और अपनी दया से हमको अवज्ञाकारी लोंगो से बचा ले।

(87) और हमने मूसा और उसके भाई की ओर प्रकाशना की कि अपनी क़ौम के लिए मिस्र में कुछ घर नियत कर लो और अपने उन घरों को क़िब्ला (केन्द्र) बनाओ और नमाज़ स्थापित करो। और ईमान वालों को शुभ सूचना दे दो।

(88) और मूसा ने कहा, ऐ हमारे पालनहार, तुने फ़िरऔन को और उसके सरदारों को सांसारिक जीवन में शोभा सामग्री और धन दिया है। ऐ हमारे पालनहार, इसलिए कि वह तेरे मार्ग से लोगों को भटकायें। ऐ हमारे पालनहार, इनकी सम्पत्ति को नष्ट कर दे और इनके दिलों को कठोर कर दे कि वह ईमान न लाएँ यहाँ तक कि कष्टदायक यातना को देख लें। (89) अल्लाह ने फ़रमाया, तुम दोनों की प्रार्थना स्वीकार की गयी। अब तुम दोनो धैर्य रखो और उन लोगों के मार्ग का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते।

(90) और हमने ईस्राइल की सन्तान को समुद्र पार करा दिया तो फ़िरऔन और उसकी सेना ने उनका पीछा किया, विद्रोह और अत्याचार के उद्देश्य से। यहाँ तक कि जब फ़िरऔन डूबने लगा तो उसने कहा कि मैं ईमान लाया कि कोई उपास्य नहीं, परन्तु वह जिस पर ईस्राइल की सन्तान के लोग ईमान लाये। और मैं उसके आज्ञाकारियों में हूँ। (91) क्या अब, और इससे पहले तू अवज्ञा करता रहा और तू बिगाड़ फैलाने वालों में से था (92) अतः आज हम तेरे शरीर को बचायेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए निशानी बने, और निस्सन्देह बहुत से लोग हमारी निशानियों से बेपरवाह (असावधान) रहते हैं।

(93) और हमने ईस्राइल की सन्तान को अच्छा ठिकाना दिया और उनको सुथरी वस्तुएँ खाने के लिए दीं। फिर उन्होंने मतभेद किया परन्तु उस समय जबकि ज्ञान उनके पास आ चुका था। वास्तव में तेरा पालनहार क़यामत के दिन उनके बीच उस चीज़ का निर्णय कर देगा जिसमें वह मतभेद करते रहे।

(94) अतः यदि तुमको उस चीज़ के सम्बन्ध में सन्देह है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है तो उन लोगों से पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं। निस्सन्देह यह तुम पर सच आया है तुम्हारे पालनहार की ओर से, फिर तुम सन्देह करने वालों में से न बनो। (95) और तुम उन लोगों में सम्मिलित न हो

जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया है, अन्यथा तुम घाटा उठाने वालों में से होगे।

(96) निस्सन्देह जिन लोगों पर तेरे पालनहार की बात पूरी हो चुकी है, वह ईमान नहीं लायेंगे। (97) चाहे उनके पास सभी निशानियाँ आ जायें जब तक कि वह कष्टप्रद यातना को सामने आता न देख लें। (98) अतः क्यों न हुआ कि कोई बस्ती ईमान लाती कि उसका ईमान उसको लाभ देता, यूनुस की क़ौम के अतिरिक्त। जब वह ईमान लाये तो हमने उनसे सांसारिक जीवन में अपमान की यातना टाल दी और उनको एक अवधि तक सुख भोगने का अवसर दिया।

(99) और यदि तेरा पालनहार चाहता तो पृथ्वी पर जितने लोग हैं सब के सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को विवश करोगे कि वह मोमिन (आस्थावान) हो जायें। (100) और किसी व्यक्ति के लिए सम्भव नहीं कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना ईमान ला सके। और अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो बुद्धि से काम नहीं लेते।

(101) कहो कि आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है, उसे देखो। और निशानियाँ और डरावे उन लोगों को लाभ नहीं पहुँचाते जो ईमान नहीं लाते। (102) वह तो मात्र इस प्रकार के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं जिस प्रकार के दिन उनसे पहले गुज़रे हुए लोगों को सामने आये। कहो, प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। (103) फिर हम बचा लेते हैं अपने सन्देष्टाओं को और उन लोगों को जो ईमान लाये। इसी प्रकार हमने इसको अपने ऊपर अनिवार्य कर लिया है कि हम ईमान वालों को बचा लेंगे।

(104) कहो, ऐ लोगों, यदि तुम मेरे धर्म के सम्बन्ध में सन्देह में हो तो मैं उनकी उपासना नहीं करता जिनकी उपासना तुम करते हो अल्लाह के अतिरिक्त। बल्कि मैं उस अल्लाह की उपासना करता हूँ जो तुमको मृत्यु देता है और मुझको आदेश मिला है कि मैं ईमान वालों में से बनूं। (105) और यह कि अपना चेहरा एकाग्र होकर धर्म की ओर करूँ। और शिर्क करने वालों में से न बनूँ। (106) और अल्लाह के अतिरिक्त उनको न पुकारो जो तुमको न लाभ पहुँचा सकते हैं और न हानि। फिर यदि तुम ऐसा करोगे

तो निश्चय ही तुम अत्याचारियों में से हो जाओगे। (107) और यदि अल्लाह तुमको किसी कष्ट में पकड़ ले तो उसके अतिरिक्त कोई नहीं जो उसको दूर कर सके। और यदि वह तुमको कोई भलाई पहुँचाना चाहे तो उसकी कृपा को कोई रोकने वाला नहीं। वह अपनी कृपा अपने बन्दों में से जिसको चाहता है प्रदान करता है और वह क्षमा देने वाला, दयावान है।

(108) कहो, ऐ लोगों, तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास सत्य आ गया है। जो मार्गदर्शन स्वीकार करेगा, वह अपने ही लिए करेगा और जो भटकेगा तो उसका कष्ट उसी पर आयेगा, और मैं तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हूँ। (109) और तुम इसका अनुसरण करो जो प्रकाशना तुम पर की गई है और धैर्य रखो। यहाँ तक कि अल्लाह निर्णय कर दे और वह सर्वोत्तम निर्णय करने वाला है।

11. सूरह हूद

अल्लाह के नाम से जो बहुत कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. रा. यह किताब है जिसकी आयतें पहले दृढ़ की गईं फिर एक सर्वव्यापी सर्वज्ञ हस्ती की ओर से उनकी व्याख्या की गई। (2) कि तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी और की उपासना न करो। मैं तुमको उसकी ओर से डराने वाला और शुभ सूचना देने वाला हूँ। (3) और यह कि तुम अपने पालनहार से क्षमा चाहो और उसकी ओर पलट आओ, वह तुमको एक अवधि तक अच्छा जीवन व्यतीत कराएगा और प्रत्येक अधिक हकदार को अपनी ओर से अधिक प्रदान करेगा। और यदि तुम फिर जाओ तो मैं तुम्हारे पक्ष में एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ। (4) तुम सबको अल्लाह की ओर पलटना है और उसको हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

(5) देखो, यह लोग अपने सीनों को लपेटते हैं ताकि उससे छिप जायें। सचेत रहो, जब वह कपड़ों से अपने आप को ढ़ाँकते हैं, अल्लाह जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो वह प्रकट करते हैं। वह दिलों तक की बात का जानने वाला है।

(6) और धरती पर कोई चलने वाला ऐसा नहीं जिसकी जीविका अल्लाह के ज़िम्मे न हो। और वह जानता है जहाँ कोई ठहरता है और जहाँ वह सौंपा जाता है। सब कुछ एक स्पष्ट किताब में दर्ज है।

(7) और वही है जिसने आकाशों और धरती की छः दिनों में रचना की। और उसका सिंहासन पानी पर था, ताकि तुम्हारी परीक्षा ले कि कौन तुममें अच्छा काम करता है। और यदि तुम कहो कि मरने के बाद तुम लोग उठाये जाओगे तो झुठलाने वाले कहते हैं यह तो खुला हुआ जादू है। (8) और यदि हम कुछ समय तक उनके दण्ड को रोक दें तो कहते हैं कि क्या चीज़ उसको रोके हुए है। सचेत रहो, जिस दिन वह उन पर आ पड़ेगा तो वह उनसे वापस न किया जा सकेगा और उनको घेरेगी वह चीज़ जिसका वह उपहास कर रहे थे।

(9) और यदि हम मनुष्य को अपनी कोई कृपा प्रदान करते है फिर उससे उसको वंचित कर देते हैं तो वह निराश और कृतघ्न हो जाता है। (10) और यदि किसी दुख के बाद जो उसको पहुँचा था, उसको हम उपकृत करते हैं तो वह कहता है कि समस्त विपत्तियाँ मुझसे दूर हो गयीं, वह इतराने वाला और अकड़ने वाला बन जाता है। (11) परन्तु जो लोग धैर्य रखने वाले और भले कर्म करने वाले हैं, उनके लिए माफ़ी है और बड़ा प्रतिदान है।

(12) कहीं ऐसा न हो कि तुम उस चीज़ का कुछ भाग छोड़ दो जो तुम्हारी ओर वह्य की गई है। और तुम इस बात पर संकुचित हृदय हो कि वह कहते हैं कि इस पर कोई ख़ज़ाना (कोष) क्यों नहीं उतारा गया या इसके साथ कोई फ़रिश्ता (देवदूत) क्यों नहीं आया। तुम तो मात्र डराने वाले हो और अल्लाह हर चीज़ का ज़िम्मेदार है। (13) क्या वह कहते हैं कि सन्देष्टा ने इस किताब को गढ़ लिया है। कहो, तुम भी ऐसी ही दस सूरह बना कर ले आओ और अल्लाह के अतिरिक्त जिसको बुला सको बुला लो, यदि तुम सच्चे हो। (14) अतः यदि वह तुम्हारा कहा पूरा न कर सकें तो समझ लो कि ये अल्लाह के ज्ञान से उतारा गया है और यह कि उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, फिर क्या तुम आदेश मानते हो।

(15) जो लोग सांसारिक जीवन और उसका सौन्दर्य चाहते हैं, हम उनके

कर्मों का बदला संसार ही में दे देते हैं। और उसमें उनके साथ कोई कमी नहीं की जाती। (16) यही लोग हैं जिनके लिए परलोक में आग के अतिरिक्त कुछ नहीं है। उन्होंने संसार में जो कुछ बनाया था वह नष्ट हुआ और व्यर्थ गया जो उन्होंने कमाया।

(17) तो एक व्यक्ति जो अपने पालनहार की ओर से एक प्रमाण पर है, उसके बाद अल्लाह की ओर से उसके लिए एक गवाह भी आ गया, और उससे पूर्व मूसा की किताब मार्गदर्शक और कृपा के रूप में मौजूद थी, ऐसे ही लोग इस पर ईमान लाते हैं और समूहों में से जो कोई इसको झुठलाये तो उसके वादे की जगह आग है। तो तुम इसके सम्बन्ध में किसी सन्देह में न पड़ो। यह सत्य है तुम्हारे पालनहार की ओर से परन्तु अधिकतर लोग नहीं मानते।

(18) और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन है जो अल्लाह पर झूठ गढ़े। ऐसे लोग अपने पालनहार के समक्ष प्रस्तुत होंगे और गवाही देने वाले कहेंगे कि यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार पर झूठ गढ़ा था। सुनो, अल्लाह की फ़टकार है अत्याचारियों के ऊपर। (19) उन लोगों के ऊपर जो अल्लाह के मार्ग से लोगों को रोकते हैं और उसमें टेढ़ ढूँढते हैं। यही लोग परलोक को झुठलाने वाले हैं। (20) वह लोग पृथ्वी पर अल्लाह को विवश करने वाले नहीं और न अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई सहायक है, उन पर दुगनी यातना होगी। वह न सुन सकते थे और न देखते थे। (21) यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला। और वह सब कुछ उनसे खो गया। जो उन्होंने गढ़ रखा था। (22) इसमें सन्देह नहीं कि यही लोग परलोक में सबसे अधिक घाटे में रहेंगे।

(23) जो लोग ईमान (आस्था) लाये और जिन्होंने भले कर्म किये और अपने पालनहार के समक्ष नम्रता प्रकट की, वही लोग स्वर्ग वाले हैं। वह उसमें सदैव रहेंगे। (24) उन दोनों पक्षों का उदाहरण ऐसा है जैसे एक अन्धा और बहरा हो और दूसरा देखने और सुनने वाला। क्या ये दोनों समान हो जायेंगे। क्या तुम विचार नहीं करते।

(25) और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा कि मैं तुमको स्पष्ट

डराने वाला हूँ। (26) यह कि तुम अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। मुझे तम्हारे विषय में एक कष्टप्रद यातना के दिन का भय है। (27) उसकी क़ौम के सरदारों ने कहा, जिन्होंने झुठलाया था कि हम तो तुमको मात्र अपने जैसा एक मनुष्य देखते हैं। और हम नहीं देखते कि कोई तुम्हारा आज्ञाकारी हुआ हो सिवाय उनके जो हममे निम्न स्तरीय है, नासमझ बुद्धिहीन। और हम नहीं देखते कि तुमको हमारे ऊपर कोई श्रेष्ठता प्राप्त हो, बल्कि हम तो तुमको झूठा समझते हैं।

(28) नूह ने कहा ऐ मेरी क़ौम, बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक खुले प्रमाण पर हूँ और उसने मुझ पर अपने पास से दयालुता भेजी है, परन्तु वह तुमको दिखाई नहीं दी तो क्या हम इसको तुम पर चिपका सकते हैं जबकि तुम इससे विमुख हो। (29) और ऐ मेरी क़ौम, मैं इस पर तुमसे कुछ सम्पत्ति नहीं माँगता। मेरा बदला तो मात्र अल्लाह के पास है और मैं कदापि उनको अपने से दूर करने वाला नहीं जो ईमान (आस्था) लाये हैं। इन लोगों को अपने पालनहार से मिलना है। परन्तु मैं देखता हूँ तुम लोग अज्ञानता में ग्रस्त हो। (30) और ऐ मेरी क़ौम, यदि मैं उन लोगों को अपने से दूर कर दूँ तो अल्लाह के अतिरिक्त कौन मेरी सहायता करेगा। क्या तुम चिन्तन नहीं करते। (31) और मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने (कोष) हैं। और न मैं परोक्ष की सूचना रखता हूँ। और न यह कहता हूँ कि मैं फ़रिश्ता हूँ। और मैं यह भी नहीं कह सकता कि जो लोग तुम्हारी दृष्टि में नीच हैं, उनको अल्लाह कोई भलाई नहीं देगा। अल्लाह भली प्रकार जानता है जो कुछ उनके दिलों में है। यदि मैं ऐसा कहूँ तो मैं ही अत्याचारी हूँगा।

(32) उन्होंने कहा कि ऐ नूह, तुमने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा कर लिया। अब वह चीज़ ले आओ जिसका तुम हमसे वादा करते रहे हो, यदि तुम सच्चे हो। (33) नूह ने कहा उसको तो तुम्हारे ऊपर अल्लाह ही लायेगा यदि वह चाहेगा और तुम उसके नियन्त्रण से बाहर न जा सकोगे। (34) और मेरा उपदेश तुमको लाभ नहीं देगा यदि मैं तुमको उपदेश करना चाहूँ जबकि अल्लाह यह चाहता हो कि वह तुमको भटका दे। वही तुम्हारा पालनहार है और उसी की ओर तुमको लौट कर जाना है।

(35) क्या वह कहते हैं कि सन्देष्टा ने इसको गढ़ लिया है। कहो कि यदि मैंने इसको गढ़ा है तो मेरा अपराध मेरे ऊपर है और जो अपराध तुम कर रहे हो, उससे मैं मुक्त हूँ।

(36) और नूह की ओर वह्य की गयी कि अब तुम्हारी क़ौम में से कोई ईमान नहीं लायेगा, सिवाय इसके जो ईमान ला चुका है। अतः तुम उन कर्मों पर दुखी न हो जो वह कर रहे हैं। (37) और हमारे समक्ष और हमारे आदेश से तुम नाव बनाओ और अत्याचारियों के पक्ष में मुझसे बात न करो, निस्सन्देह यह लोग डूबेंगे। (38) और नूह नाव बनाने लगा। और जब उसकी क़ौम का कोई सरदार उस पर गुज़रता तो वह उसका उपहास करता, उसने कहा यदि तुम हम पर हँसते हो तो हम भी तुम पर हँसेंगे। (39) तुम शीघ्र जान लोगे कि वह कौन हैं जिन पर वह प्रकोप आता है जो उसको अपमानित कर दे और जिस पर वह प्रकोप उतरता है वह टाला नहीं जा सकता।

(40) यहाँ तक कि जब हमारा आदेश आ पहुँचा और तूफ़ान उबल पड़ा तो हमने नूह से कहा कि हर प्रकार के जानवरों का एक-एक जोड़ा नाव में रख लो और अपने घर वालों को भी, सिवाय उन लोगों के जिनके सम्बन्ध में पहले कहा जा चुका है और सभी ईमान वालों (आस्थावानों) को भी। और थोड़े ही लोग थे जो नूह के साथ ईमान लाये थे। (41) और नूह ने कहा कि नाव में सवार हो जाओ, अल्लाह के नाम से इसका चलना है और इसका ठहरना भी। निस्सन्देह मेरा पालनहार क्षमाशील, दयावान है। (42) और नाव पहाड़ जैसी लहरों के बीच उनको लेकर चलने लगी। और नूह ने अपने बेटे को पुकारा जो उससे अलग था। ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा और अवज्ञाकारियों के साथ मत रह। (43) उसने कहा कि मैं किसी पहाड़ की शरण ले लूँगा जो मुझको पानी से बचा लेगा। नूह ने कहा कि आज कोई अल्लाह के आदेश से बचाने वाला नहीं, परन्तु वह जिस पर अल्लाह दया करे। और दोनो के बीच लहर बाधक हो गयी और वह डूबने वालों में सम्मिलित हो गया। (44) और कहा गया कि ऐ धरती, अपना पानी निगल ले और ऐ आसमान थम जा। और पानी सुखा दिया गया। और मामले का निर्णय हो गया और नाव जूदी पहाड़ पर ठहर गयी और कह दिया गया दूर हो अत्याचारियों की क़ौम।

(45) और नूह ने अपने पालनहार को पुकारा और कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरा बेटा मेरे घरवालों में से है, और निस्सन्देह तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बड़ा शासक है। (46) अल्लाह ने कहा ऐ नूह, वह तेरे घरवालों में नहीं। उसके कर्म बुरे हैं। अतः मुझसे उस चीज़ के लिए प्रार्थना न करो जिसका तुम्हें ज्ञान नहीं। मैं तुमको उपदेश करता हूँ कि तुम अज्ञानियों में से न बनो। (47) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मैं तेरा शरण चाहता हूँ कि तुझसे वह चीज़ माँगू जिसका मुझे ज्ञान नहीं। और यदि तू मुझे क्षमा न करे और मुझ पर दया न करे तो मैं नष्ट हो जाऊँगा।

(48) कहा गया कि ऐ नूह, उतरो, हमारी ओर से सुरक्षित, और सलामती (कृपा) के साथ, तुम पर और उन समूहों पर जो तुम्हारे साथ हैं। और (उनसे उत्पन्न होने वाले) समूह कि हम उनको लाभ देंगे, फिर उनको हमारी ओर से एक कष्टप्रद यातना पकड़ लेगी। (49) यह परोक्ष की सूचनाएँ हैं जिनको हम तुम्हारी ओर भेज रहे हैं। इससे पहले न तुम इनको जानते थे और न तुम्हारी क़ौम। अतः धैर्य रखो निस्सन्देह अन्तिम परिणाम डरने वालों के लिए है।

(50) और आद की ओर हमने उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। तुमने मात्र झूठ गढ़ रखे हैं। (51) ऐ मेरी क़ौम, मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो उस पर है जिसने मुझे पैदा किया है। क्या तुम नहीं समझते। (52) और ऐ मेरी क़ौम, अपने पालनहार से क्षमा चाहो, फिर उसकी ओर पलटो। वह तुम्हारे ऊपर प्रचूर वर्षा करेगा। वह तुम्हारी शक्ति पर शक्ति की अभिविद्धि करेगा। और तुम अपराधी होकर विमुखता न करो।

(53) उन्होंने कहा कि ऐ हूद, तुम हमारे पास कोई स्पष्ट निशानी लेकर नहीं आये हो, और हम तुम्हारे कहने से अपने उपास्यों को छोड़ने वाले नहीं हैं। और हम कदापि तुम लोगों को मानने वाले नहीं हैं। (54) हम तो मात्र यही कहेंगे कि तुम्हारे ऊपर हमारे उपास्यों में से किसी की मार पड़ गयी है। हूद ने कहा, मैं अल्लाह को गवाह ठहराता हूँ और तुम भी गवाह रहो कि मैं बरी हूँ उनसे जिनको तुम साझी करते हो। (55) उसके अतिरिक्त। अतः तुम सब मिलकर मेरे विरुद्ध षडयन्त्र करो, फिर मुझको अवसर न दो। (56) मैंने

अल्लाह पर भरोसा किया जो मेरा पालनहार है और तुम्हारा पालनहार भी। कोई जीवधारी ऐसा नहीं जिसकी चोटी उसके हाथ में न हो। निस्सन्देह, मेरा पालनहार सीधे मार्ग पर है।

(57) यदि तुम विमुखता करते हो तो मैंने तुमको वह सन्देश पहुँचा दिया जिसको देकर मुझे तुम्हारी ओर भेजा गया था। और मेरा पालनहार तुम्हारे स्थान पर तुम्हारे अतिरिक्त किसी और समूह को उत्तराधिकारी (ख़लीफा) बनायेगा। तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे। निस्सन्देह मेरा पालनहार हर चीज़ पर संरक्षक है। (58) और जब हमारा आदेश आ पहुँचा, हमने अपनी दया से बचा लिया हूद को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे। और हमने उनको एक कठोर यातना से बचा लिया। (59) और यह आद थे कि उन्होंने अपने पालनहार की निशानियों को झुठलाया। और उसके सन्देष्टाओं को न माना और प्रत्येक विद्रोही और विरोधी की बात का अनुसरण किया। (60) और उनके पीछे लानत (धिक्कार) लगा दी गई इस संसार में और परलोक के दिन। सुन लो, आद ने अपने पालनहार को झुठलाया। सुन लो, दूरी है आद के लिए जो हूद की क़ौम थी।

(61) और समूद की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा। उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। उसी ने तुमको धरती से बनाया, और उसमें तुमको बसाया। अतः क्षमा चाहो, फिर उसकी ओर पलटो। निस्सन्देह मेरा पालनहार निकट है, स्वीकार करने वाला है। (62) उन्होंने कहा कि ऐ सालेह, इससे पहले हमको तुमसे आशा थी। क्या तुम हमको उनकी उपासना से रोकते हो जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते थे। और जिस चीज़ की ओर तुम हमको बुलाते हो, उसके सम्बन्ध में हमको बहुत सन्देह है और हम बड़ी दुविधा में हैं। (63) उसने कहा ऐ मेरी क़ौम, बताओ यदि मैं अपने पालनहार की ओर से, एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने मुझको अपने पास से दयालुता दी है तो मुझको अल्लाह से कौन बचायेगा यदि मैं उसकी अवज्ञा करूँ। अतः तुम कुछ नहीं बढ़ाओगे सिवाय घाटे के।

(64) और ऐ मेरी क़ौम, यह अल्लाह की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी

है। अतः इसको छोड़ दो कि वह अल्लाह की भूमि में खाये। और इसको कोई कष्ट न पहुँचाओ, अन्यथा अतिशीघ्र तुमको यातना पकड़ लेगी। (65) फिर उन्होंने उसके पाँव काट डाले। तब सालेह ने कहा कि तीन दिन और अपने घरों में लाभ उठा लो। यह एक वादा है जो झूठा न होगा। (66) फिर जब हमारा आदेश आ गया तो हमने अपनी दया से सालेह को और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाये थे बचा लिया और उस दिन के अपमान से (सुरक्षित रखा)। निस्सन्देह तेरा पालनहार ही सर्वश्रेष्ठ और बड़ा शक्तिशाली है। (67) और जिन लोगों ने अत्याचार किया था, उनको एक भयानक आवाज़ ने पकड़ लिया। फिर सुबह को वह अपने घरों में औंधे पड़े रह गये। (68) जैसे कि वह कभी उनमें बसे ही नहीं। सुनो, समूद ने अपने पालनहार से अवज्ञा की। सुनो, फटकार है समूद के लिए।

(69) और इब्राहीम के पास हमारे फ़रिश्ते शुभ सूचना लेकर आये। कहा तुम पर सलामती हो। इब्राहीम ने कहा तुम पर भी सलामती हो। फिर अधिक समय न व्यतीत हुआ कि इब्राहीम एक भुना हुआ बछड़ा ले आया। (70) फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की ओर नहीं बढ़ रहे हैं तो वह खटक गया और दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम लूत की क़ौम की ओर भेजे गये हैं। (71) और इब्राहीम की पत्नी खड़ी थी, वह हँस पड़ी। अतः हमने उसको इस्हाक़ की शुभ सूचना दी और इस्हाक़ के आगे याक़ूब की। (72) उसने कहा, हाय मेरा हतभाग्य, क्या मैं बच्चे को जन्म दूँगी, जबकि मैं बूढ़ी हूँ और यह मेरा पति भी बूढ़ा है। यह तो बड़े आश्चर्य की बात है। (73) फ़रिश्तों ने कहा क्या तुम अल्लाह के आदेश पर आश्चर्य करती हो। इब्राहीम के घरवालो, तुम पर अल्लाह की कृपा और दयालुता है। निस्सन्देह अल्लाह अत्यन्त प्रशंसनीय और बड़ा वैभवशाली है।

(74) फिर जब इब्राहीम का भय दूर हुआ और उसको शुभ सूचना मिली तो वह हमसे लूत की क़ौम के बारे में झगड़ने लगा। (75) निस्सन्देह इब्राहीम बड़ा सहनशील और कोमल हृदय था और लीन (अल्लाह की ओर) था। (76) ऐ इब्राहीम, उसको छोड़ो। तुम्हारे पालनहार का आदेश आ चुका है और उन पर एक ऐसी यातना आने वाली है जो लौटायी नहीं जा सकती।

(77) और जब हमारे फ़रिश्ते लूत के पास पहुँचे तो वह घबराया और उनके आने से दिल संकुचित हुआ। उसने कहा आज का दिन बड़ा कठोर है। (78) और उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए उसके पास आये। और वह पहले से बुरे कर्म कर रहे थे। लूत ने कहा ऐ मेरी क़ौम, यह मेरी बेटियाँ हैं, वह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र हैं। अतः तुम अल्लाह से डरो और मुझको मेरे अतिथियों के समक्ष अपमानित न करो। क्या तुममें कोई भला व्यक्ति नहीं है। (79) उन्होंने कहा, तुम जानते हो कि हमको तुम्हारी बेटियों से कोई सरोकार नहीं, और तुम जानते हो कि हम क्या चाहते हैं।

(80) लूत ने कहा, काश मेरे पास तुमसे लड़ने की क्षमता होती या मैं जा बैठता किसी दृढ़ शरण में। (81) फ़रिश्तों ने कहा कि ऐ लूत, हम तेरे पालनहार के भेजे हुए हैं। वह कदापि तुमतक न पहुँच सकेंगे। अतः तुम अपने लोगों को लेकर कुछ रात रहते निकल जाओ। और तुममें से कोई मुड़कर न देखे, परन्तु तुम्हारी पत्नी कि उस पर वही कुछ घटित होने वाला है जो उन लोगों पर घटेगा। उनके लिए सुबह का समय नियत है, क्या सुबह का समय निकट नहीं। (82) फिर जब हमारा आदेश आया तो हमने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उस पर पत्थर बरसाये कंकड के, लगातार। (83) तुम्हारे पालनहार के पास से निशान लगाये हुए। और वह बस्ती इन अत्याचारियों से कुछ दूर नहीं।

(84) और मदियन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तुमको अच्छी स्थिति में देख रहा हूँ, और मैं तुम पर एक घेर लेने वाले दिन की यातना से डरता हूँ। (85) और ऐ मेरी क़ौम, नाप और तौल को पूरा करो न्याय के साथ। और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो। और धरती पर उपद्रव न मचाओ। (86) जो अल्लाह का दिया हुआ बच रहे, वह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम मोमिन (आस्थावान) हो। और मैं तुम्हारे ऊपर संरक्षक नहीं हूँ।

(87) उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, क्या तुम्हारी नमाज़ तुमको यह सिखाती है कि हम उन चीज़ों को छोड़ दें जिनकी उपासना हमारे पूर्वज (बाप-दादा)

करते थे। या अपनी सम्पत्ति का अपनी इच्छा के अनुसार उपभोग करना छोड़ दें। बस तुम ही एक सत्यवादी और सदाचारी व्यक्ति हो।

(88) शोएब ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, बताओ, यदि मैं अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट प्रमाण पर हूँ और उसने अपनी ओर से मुझको अच्छी जीविका भी दी। और मैं नहीं चाहता कि मैं स्वंय वही काम करूँ जिससे मैं तुमको रोक रहा हूँ। मैं तो मात्र सुधार चाहता हूँ जहाँ तक हो सके। और मुझे सामर्थ्य तो अल्लाह ही से मिलेगा। उसी पर मैंने भरोसा किया है। और उसी की ओर मैं पलटता हूँ। (89) और ऐ मेरी क़ौम, ऐसा न हो कि मेरे विरूद्ध तुम्हारी हठधर्मी कहीं तुम पर वह विपित्ति न ले आए जो नूह की क़ौम या हूद की क़ौम या सालेह की क़ौम पर आयी थी, और लूत कि क़ौम तो तुमसे दूर भी नहीं। (90) और अपने पालनहार से क्षमा माँगो फिर उसकी ओर पलट आओ। निस्सन्देह मेरा पालनहार दयावान और स्नेहवाला है।

(91) उन्होंने कहा कि ऐ शुऐब, जो तुम कहते हो, उसका बहुत सा भाग हमारी समझ में नहीं आता। और हम तो देखते हैं कि तू हममे अशक्त है। और यदि तेरी बिरादरी न होती तो हम तुमको संगसार (पत्थरों से मार डालते) कर देते। और तुमको हम पर कुछ श्रेष्ठता नहीं। (92) शोएब ने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, क्या मेरी बिरादरी तुम पर अल्लाह से अधिक शक्तिशाली है। और अल्लाह को तुमने पीछे छोड़ दिया। निस्सन्देह मेरे पालनहार के नियन्त्रण में है जो कुछ तुम करते हो। (93) और ऐ मेरी क़ौम, तुम अपने रीति के अनुसार कर्म किये जाओ और मैं अपनी रीति पर काम करता रहूँगा। शीघ्र ही तुमको ज्ञात हो जायेगा कि किसके ऊपर अपमानित करने वाली यातना आती है और कौन झूठा है। और प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। (94) और जब हमारा आदेश आया हमने शुऐब को और जो उसके साथ ईमान लाये थे, अपनी दया से बचा लिया। और जिन लोगों ने अत्याचार किया था, उनको कड़क ने पकड़ लिया। अतः वह अपने घरों में मुँह के बल पड़े रह गये। (95) मानों कि वह कभी उनमें बसे न थे। सुनो, फटकार है मदयन को जैसे फटकार हुई थी समूद को।

(96) और हमने मूसा को अपनी निशानियों और स्पष्ट प्रमाण के साथ

भेजा। (97) फ़िरऔन और उसके सरदारों की ओर। फिर वह फ़िरऔन के आदेश पर चले, अगर्चे फ़िरऔन का आदेश उचित न था। (98) कियामत (उठाये जाने) के दिन वह अपनी क़ौम के आगे होगा और वह उनको आग पर पहुँचायेगा। और कैसा बुरा घाट है जिस पर वह पहुँचेंगे। (99) और इस संसार में उनके पीछे फटकार लगा दी गयी और कियामत के दिन भी। कैसा बुरा पुरस्कार है जो उनको मिला।

(100) यह बस्तियों के कुछ विवरण हैं जो हम तुमको सुना रहे हैं। उनमें से कुछ बस्तियाँ अब तक मौजूद हैं और कुछ मिट गयीं। (101) और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि उन्होंने स्वंय अपने ऊपर अत्याचार किया। फिर जब तेरे पालनहार का आदेश आ गया तो उनके उपास्य उनके कुछ काम न आये जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे। और उन्होंने उनके पक्ष में विनाश के अतिरिक्त और कुछ नहीं बढ़ाया।

(102) और तेरे पालनहार की पकड़ ऐसी ही है जबकि वह बस्तियों को उनके अत्याचार पर पकड़ता है। निस्सन्देह उसकी पकड़ कष्टप्रद और कठोर है। (103) इसमें इन लोगों के लिए निशानी है जो परलोक की यातना से डरें। वह एक ऐसा दिन है जिसमें सब लोग एकत्र होंगे। और वह उपस्थिति का दिन होगा। (104) और हम इसको एक अवधि के लिए टाल रहे हैं जो निर्धारित है। (105) जब वह दिन आयेगा तो कोई व्यक्ति उसकी अनुमति के बिना बात न कर सकेगा। अतः उनमें कुछ अभागे होंगे और कुछ भाग्यवान।

(106) अतः जो लोग अभागे हैं वह आग में होंगे। उनको वहाँ चीखना और चिल्लाना है। (107) वह उसमें रहेंगे जब तक आकाश और पृथ्वी मौजूद है, परन्तु जो तेरा पालनहार चाहे। निस्सन्देह तेरा पालनहार कर डालता है जो चाहता है। (108) और जो लोग भाग्यवान है। वह स्वर्ग में होंगे, वह उसमें रहेंगे जब तक आकाश और पृथ्वी मौजूद है, परन्तु जो तेरा पालनहार चाहे, कृपा है अन्तहीन। (109) अतः तू उन वस्तुओं से सन्देह में न रह जिनकी यह लोग उपासना कर रहे हैं। यह तो बिलकुल उसी प्रकार उपासना कर रहे हैं जिस प्रकार उनसे पहले उनके बाप-दादा इबादत कर रहे थे। और हम उनका हिस्सा उन्हें पूरा-पूरा देंगे बिना किसी कमी के।

(110) और हमने मूसा को किताब दी। फिर उसमें फूट पड़ गयी। और यदि तेरे पालनहार की ओर से पहले ही एक बात न आ चुकी होती तो उनके बीच निर्णय कर दिया जाता। और उनको उसमें सन्देह है जो उन्हें सन्तुष्ट होने नहीं देता। (111) और निश्चित रूप से तेरा पालनहार प्रत्येक को उसके कर्मों का पूरा बदला देगा। वह भिज्ञ है उससे जो वह कर रहे हैं।

(112) तो तुम दृढ़ रहो जैसा कि तुमको आदेश दिया गया है और वह भी जिन्होंने तुम्हारे साथ क्षमा-याचना की है और सीमा से न बढ़ो, निस्सन्देह वह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। (113) और उनकी ओर न झुको जिन्होंने अत्याचार किया, अन्यथा तुमको आग पकड़ लेगी और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई सहायक नहीं, फिर तुम कहीं सहायता न पाओगे। (114) और नमाज़ स्थापित करो दिन के दोनों हिस्सों में और रात के कुछ हिस्से में। निस्सन्देह भलाईयाँ दूर करती हैं बुराइयों को। यह संस्मरण है संस्मरण स्वीकार करने वालों के लिए। (115) और धैर्य रखो, अल्लाह भलाई करने वालों का बदला नष्ट नहीं करता।

(116) अतः क्यों न ऐसा हुआ कि तुमसे पहले की क़ौमों में ऐसे भलाई करने वाले होते जो लोगों को पृथ्वी पर उपद्रव करने से रोकते। ऐसे थोड़े लोग निकले जिनको हमने उनमें से बचा लिया। और अत्याचारी लोग तो उसी विलासता में रहे जो उन्हें प्राप्त थी और वह अपराधी थे। (117) और तेरा पालनहार ऐसा नहीं कि वह बस्तियों को अन्यायपूर्वक नष्ट कर दे, जबकि उसके वासी सुधार करने वाले हों।

(118) और यदि तेरा पालनहार चाहता तो लोगों को एक ही सम्प्रदाय (समूह) बना देता, परन्तु वह सदैव मतभेद में रहेंगे। (119) सिवाय उनके जिन पर तेरा पालनहार कृपा करे। और उसने इसीलिए उनको पैदा किया है। और तेरे पालनहार की बात पूरी हुई कि मैं नरक को जिन्नों और मनुष्यों से एकत्र करके भर दूँगा।

(120) और हम सन्देष्टाओं के विवरण में से सब बातें तुम्हें सुना रहे हैं, जो तुम्हारे दिल को दृढ़ करे। और उसमें तुम्हारे पास सत्य आया है और मोमिनों (आस्थावानों) के लिए उपदेश और संस्मरण। (121) और जो लोग

ईमान नहीं लाये उनसे कहो कि तुम अपनी रीति पर करते रहो और हम अपनी रीति पर कर रहे हैं। (122) और प्रतीक्षा करो हम भी प्रतीक्षा में हैं। (123) और आसमानों और पृथ्वी की छुपी हुई बात अल्लाह के पास है और सभी मामलात उसी की ओर पलटेंगे। अतः तुम उसी की उपासना करो और उसी पर भरोसा रखो और तुम्हारा पालनहार उससे अनभिज्ञ नहीं जो तुम कर रहे हो।

12. सूरह यूसुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. रा.। यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं। (2) हमने इसको अरबी क़ुरआन बनाकर उतारा है ताकि तुम समझो। (3) हम तुमको श्रेष्ठतम वृत्तान्त सुनाते हैं इस क़ुरआन के माध्यम से जो हमने तुम्हारी ओर वह्य (श्रुति) भेजी। इससे पहले निस्सन्देह तू अनभिज्ञ लोगों में था।

(4) जब यूसुफ़ ने अपने बाप (याक़ूब) से कहा कि अब्बाजान (पिताश्री), मैंने स्वप्न में ग्यारह तारे और सूरज और चाँद देखे हैं। मैंने उनको देखा कि वह मुझको सजदा कर रहे हैं। (5) उसके पिता ने कहा कि ऐ मेरे बेटे, तुम अपना यह स्वप्न अपने भाईयों को न सुनाना कि वह तुम्हारे विरुद्ध कोई षड़यन्त्र करने लगें। निस्सन्देह शैतान मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है। (6) और इसी प्रकार तेरा पालनहार तुझको चुन लेगा और तुझे बातों के तथ्य तक पहुँचना सिखायेगा और तुम पर और याक़ूब की सन्तान पर अपने उपकार पूर्ण करेगा जिस प्रकार वह इससे पहले तुम्हारे पूर्वजों-इब्राहीम और इस्हाक़ पर अपने उपकार पूरे कर चुका है। निस्सन्देह तेरा पालनहार ज्ञान वाला और विवेक वाला है।

(7) वास्तविकता यह है कि यूसुफ़ और उसके भाईयों में पूछने वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। (8) जब उसके भाइयों ने आपस में कहा कि यूसुफ़ और उसका भाई हमारे पिता को हमसे अधिक प्रिय हैं। हालाँकि हम एक पूरा जत्था (समूह) हैं। निश्चित रूप से हमारा पिता एक स्पष्ट भूल में लिप्त है। (9) यूसुफ़ की हत्या कर दो या इसको किसी स्थान पर फेंक दों ताकि तुम्हारे पिता का ध्यान केवल तुम्हारी ओर हो जाये। और उसके बाद तुम पूर्णतः

सदाचारी हो जाना। (10) उसमें से एक कहने वाले ने कहा कि यूसुफ़ की हत्या न करो। यदि तुम कुछ करने ही वाले हो तो इसको किसी अन्धे कुएँ में डाल दो। कोई यात्री काफ़िला इसको निकाल ले जायेगा।

(11) उन्होंने अपने पिता से कहा, ऐ हमारे पिता, क्या बात है कि आप यूसुफ़ के मामले में हम पर विश्वास नहीं करते। हालाँकि हम तो उसके शुभचिन्तक हैं। (12) कल उसको हमारे साथ भेज दीजिए, खाये और खेले, और हम उसके संरक्षक हैं। (13) पिता ने कहा मैं इससे दुखी होता हूँ कि तुम इसको ले जाओ और मुझको डर है कि कोई भेड़िया खा जाये जबकि तुम उससे असावधान हो। (14) उन्होंने कहा कि यदि उसको भेड़िया खा गया जबकि हम एक पूरा समूह हैं तो हम बड़े घाटे वाले सिद्ध होंगे।

(15) फिर जब वह उसको ले गये और तय कर लिया कि उसको एक अन्धे कुएँ में डाल दें और हमने यूसुफ़ को वह्य (सन्देश) किया कि तू उनको उनका यह काम जतायेगा और वह तुझको न जानेंगे। (16) और वह सायं को अपने पिता के पास रोते हुए आये। (17) उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पिता, हम दौड़ में मुक़ाबला करने लगे और यूसुफ़ को अपने सामान के पास छोड़ दिया फिर उसको भेडिया खा गया और आप हमारी बात का विश्वास न करेंगे चाहे हम सच्चे हों। (18) और वह यूसुफ़ की कमीज़ पर झूठा ख़ून लगाकर ले आये। पिता ने कहा नहीं, बल्कि तुम्हारे मन ने तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब धैर्य ही उचित है। और जो बात तुम प्रकट कर रहे हो, उस पर अल्लाह ही से सहायता माँगता हूँ।

(19) और एक क़ाफ़िला आया तो उन्होंने अपना पानी भरने वाला भेजा। उसने अपना डोल लटका दिया। उसने कहा, शुभ सूचना हो, यह तो एक लड़का है। और उसको व्यापारिक माल समझकर सुरक्षित कर लिया। और अल्लाह भली-भाँति जानता था जो वह कर रहे थे। (20) और उन्होंने उसको थोड़े से मूल्य पर, कुछ दिरहमों के बदले बेच दिया। और वह उससे रुचि न रखते थे।

(21) और मिस्र के लोगों में से जिस व्यक्ति ने उसको ख़रीदा, उसने अपनी पत्नी से कहा कि इसको उचित ढंग से रखो आशा है कि वह हमारे लिए लाभदायक हो या हम इसको बेटा बना लें। और इस प्रकार हमने यूसुफ़

को उस देश में स्थान प्रदान किया। और ताकि हम उसको बातों के परिणाम से अवगत करायें। और अल्लाह को हर कार्य पर प्रभुत्व प्राप्त है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (22) और जब वह आपनी प्रौढ़ता पर पहुँचा। हमने उसको तत्वदर्शिता और ज्ञान प्रदान किया। और भलाई करने वालों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

(23) और यूसुफ़ जिस महिला के घर में था, वह उसको फुसलाने लगी और एक दिन उस औरत ने दरवाज़े बन्द कर दिए और बोली कि आ जा। यूसुफ़ ने कहा अल्लाह की शरण चाहता हूँ। वह मेरा स्वामी है, उसने मुझको भली प्रकार रखा है। निस्सन्देह अत्याचारी लोग कभी सफल नहीं होते। (24) और औरत ने इसका संकल्प (इरादा) कर लिया और वह भी झुक जाता यदि वह अपने पालनहार का प्रमाण (संकेत) न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम उससे बुराई और अश्लीलता को दूर कर दें। निस्सन्देह वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था।

(25) और दोनों दरवाज़े की ओर भागे। और औरत ने यूसुफ़ का कुर्ता पीछे से फाड़ दिया। और दोनों ने उसके पति को दरवाज़े पर पाया। महिला बोली कि जो तेरी घरवाली के साथ बुराई का इरादा करे, उसका दण्ड इसके अतिरिक्त क्या है कि उसे क़ैद किया जाये या उसे कठोर यातना दी जाये। (26) यूसुफ़ बोला कि इसी ने मुझे फुसलाने का प्रयास किया। और महिला के परिवार वालों में से एक व्यक्ति ने गवाही दी कि यदि उसका कुर्ता आगे से फटा हुआ हो तो महिला सच्ची है और वह झूठा है। (27) और यदि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ हो तो महिला झूठी है और वह सच्चा है। (28) फिर जब अज़ीज़ ने देखा कि उसका कुर्ता पीछे से फटा हुआ है तो उसने कहा कि निस्सन्देह यह तुम महिलाओं की चाल है। और तुम्हारी चालें बहुत बड़ी होती हैं। (29) यूसुफ़, इसे क्षमा करो। और ऐ महिला, तू अपने अपराध की क्षमा माँग। निस्सन्देह तू ही अपराधी थी।

(30) और नगर की महिलाएँ कहने लगीं कि अज़ीज़ की पत्नी अपने युवक दास के पीछे पड़ी हुई है। वह उसके प्रेम में मुग्ध है। हम देखते हैं कि वह खुली ग़लती पर है। (31) फिर जब उसने उनकी प्रवंचना सुनी तो

उसने उनको आमन्त्रित किया। और उनके लिए एक समारोह आयोजित किया और उनमें से प्रत्येक को एक-एक छुरी दी और यूसुफ़ से कहा कि तुम इनके सामने आओ। फिर जब महिलाओं ने उसको देखा तो वह चकित रह गयीं। और उन्होंने अपने हाथ काट लिए। और उन्होंने कहा, अल्लाह की शरण, यह मनुष्य नहीं है, यह तो कोई बुज़ुर्ग फ़रिश्ता है। (32) उसने कहा यह वही है जिसके सम्बन्ध में तुम मेरी निन्दा कर रहीं थीं और मैंने इसको रिझाने का प्रयास किया था परन्तु वह बच गया। और यदि इसने वह नहीं किया जो मैं इससे कह रही हूँ तो वह कारागार में पड़ेगा और अवश्य ही अपमानित होगा। (33) यूसुफ़ ने कहा, ऐ मेरे पालनहार, कारागार मुझको इस चीज़ से अधिक प्रिय है जिसकी ओर ये मुझे बुला रही हैं। और यदि तुने इनके षड़यन्त्र से मुझको न बचाया तो मैं उनकी ओर झुक जाऊँगा और अज्ञानियों में से हो जाऊँगा। (34) अतः उसके पालनहार ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उनके षड़यन्त्र से उसको बचा लिया। निस्सन्देह वह सुनने वाला और जानने वाला है।

(35) फिर निशानियाँ देख लेने के बाद उन लोगों की समझ में आया कि एक अवधि के लिए उसको क़ैद कर दें। (36) और कारागार में उसके साथ दो और युवकों ने प्रवेश किया। उनमें से एक ने (एक दिन) कहा कि मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं शराब निचोड़ रहा हूँ और दूसरे ने कहा कि मैं स्वप्न में देखता हूँ कि मैं अपने सिर पर रोटी उठाये हुए हूँ जिसमें से चिड़ियाँ खा रही हैं। हमको इसका अर्थ बताओ। हम देखते हैं कि तुम भले लोगों में से हो।

(37) यूसुफ़ ने कहा, जो भोजन तुमको मिलता है, उसके आने से पहले मैं तुम्हें इन सपनों का अर्थ बता दूँगा। यह उस ज्ञान में से है जो मैरे पालनहार ने मुझे सिखाया है। मैंने उन लोगों के धर्म को छोड़ा जो अल्लाह पर ईमान (आस्था) नहीं लाते और वह लोग परलोक में विश्वास नहीं रखते हैं। (38) और मैंने अपने पूर्वजों इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब के धर्म का अनुसरण किया। हमको यह अधिकार नहीं कि हम किसी चीज़ को अल्लाह का साझीदार ठहरायें। यह अल्लाह की कृपा है हमारे ऊपर और सब लोगों के ऊपर परन्तु अधिकतर लोग आभार व्यक्त नहीं करते। (39) ऐ मेरे कारागार के साथियो, क्या अलग-अलग अनेक उपास्य श्रेष्ठ हैं या अल्लाह अकेला

शक्तिशाली। (40) तुम उसके अतिरिक्त नहीं पूजते हो परन्तु कुछ नामों को जो तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने रख लिए हैं। अल्लाह ने इसके लिए कोई प्रमाण नहीं उतारा। सत्ता मात्र अल्लाह के लिए है। उसने आदेश दिया है कि उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। यही सीधा धर्म है। परन्तु बहुत लोग नहीं जानते।

(41) ऐ मेरे कारागार के साथियो, तुममें से एक अपने स्वामी को शराब पिलायेगा। और जो दूसरा है, उसको सूली पर चढ़ाया जायेगा। फिर पक्षी उसके सिर में से खायेंगे। उस मामले का निर्णय हो चुका जिसके सम्बन्ध में तुम पूछ रहे थे। (42) और यूसुफ़ ने उस व्यक्ति से कहा जिसके सम्बन्ध में उसने अनुमान किया था कि वह बच (छुट) जायेगा कि अपने स्वामी के पास मेरा उल्लेख करना। फिर शैतान ने उसको अपने स्वामी से उल्लेख करना भुला दिया। अतः वह कारागार में अनेक वर्षो पड़ा रहा।

(43) और राजा ने कहा कि मैं स्वप्न में देखता हूँ कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात हरी बालियाँ हैं और अन्य सात सूखी बालियाँ, ऐ दरबारियो, मेरे स्वप्न का अर्थ मुझे बताओ यदि तुम स्वप्न का अर्थ जानते हो। (44) वह बोले यह काल्पनिक स्वप्न हैं। और हमको ऐसे सपनों का अर्थ ज्ञात नहीं।

(45) उन दोनों क़ैदियों में से जो बच गया था और उसको एक अवधि के बाद याद आया, उसने कहा कि मैं तुम लोगों को इसका अर्थ बताऊँगा अतः मुझको (यूसुफ के पास) जाने दो।

(46) यूसुफ़ ऐ सच्चे, मुझे इस स्वप्न का अर्थ बता कि सात मोटी गायें हैं जिनको सात दुबली गायें खा रही हैं और सात बालियाँ हरी हैं और अन्य सात सूखी। ताकि मैं उन लोगों के पास जाऊँ कि वह जान लें। (47) यूसुफ़ ने कहा कि तुम सात वर्षों तक निरन्तर खेती करोगे। तो जो फ़सल तुम काटो, उसको उसकी बालियों में छोड़ दो परन्तु थोड़ा सा जो तुम खाओ। (48) परन्तु इसके बाद सात कठोर वर्ष आयेंगे। उस अवधि में वह अनाज़ खा लिया जायेगा जो तुम उस समय के लिए एकत्र करोगे, सिवाय थोड़ा सा जो तुम सुरक्षित कर

लोगे। (49) फिर उसके बाद एक वर्ष आयेगा जिसमें लोगों पर मेघ बरसेगा। और वह उसमें रस निचोड़ेंगे।

(50) और राजा ने कहा कि उसको मेरे पास लाओ। फिर जब सन्देशवाहक उसके पास आया तो उसने कहा कि तुम अपने स्वामी के पास वापस जाओ और उससे पूछो कि उन महिलाओं का क्या मामला है जिन्होंने अपने हाथ काट लिये थे। मेरा पालनहार तो उनके षड़यन्त्र से भली-भाँति अवगत है। (51) राजा ने पूछा, तुम्हारा क्या मामला है जब तुमने यूसुफ़ को फुसलाने की चेष्टा की थी। उन्होंने कहा कि अल्लाह की शरण, हमने उसमें कोई बुराई नहीं पायी। अज़ीज़ की पत्नी ने कहा अब सत्य स्पष्ट हो गया। मैंने ही उसको फुसलाने की चेष्टा की थी और निस्सन्देह वह सच्चा है।

(52) यह इसलिए कि (मिस्र का राजा) यह जान ले कि मैंने छुपकर विश्वासघात नहीं किया। और निस्सन्देह अल्लाह विश्वासघात करने वालों के षडयन्त्र को चलने नहीं देता। (53) और मैं अपने आप को बरी (अलग) नहीं समझता। मन तो बुराई ही सिखाता है, सिवाय यह कि मेरा पालनहार कृपा प्रदान करे। निस्सन्देह मेरा पालनहार क्षमा करने वाला दयावान है।

(54) और राजा ने कहा, उसको मेरे पास लाओ। मैं उसको विशेष रूप से अपने लिए रखूँगा। फिर जब यूसुफ़ ने उससे बात की तो राजा ने कहा, आज से तुम हमारे यहाँ सम्मानित और विश्वस्त हुए। (55) यूसुफ़ ने कहा कि मुझको देश के ख़ज़ानों (कोष और संसाधनों) पर नियुक्त कर दो। मैं संरक्षक हूँ और जानने वाला हूँ। (56) और इस तरह हमने यूसुफ़ को देश में अधिकार प्राप्त बना दिया। वह उसमें जहाँ चाहे स्थान बनाये। हम जिस पर चाहे अपना उपकार प्रदान कर दें। और हम भलाई करने वालों का बदला नष्ट नहीं करते। (57) और परलोक का बदला कही अधिक श्रेष्ठ है, ईमान और ईशपरायण लोगों के लिए।

(58) और यूसुफ़ के भाई मिस्र आये, फिर वह उसके पास पहुँचे, अतः यूसुफ़ ने उनको पहचान लिया। (59) और उन्होंने यूसुफ़ को नहीं पहचाना। और जब उसने उनका सामान तैयार कर दिया तो कहा कि अपने सौतेले भाई को भी मेरे पास ले आना। तुम देखते नहीं हो कि मैं अनाज भी पूरा नाप कर

देता हूँ और बेहतरीन आतिथ्य करने वाला भी हूँ। (60) और यदि तुम उसको मेरे पास न लाए तो न मेरे पास तुम्हारे लिए अनाज है और न तुम मेरे पास आना। (61) उन्होंने कहा कि हम उसके सम्बन्ध में उसके पिता को सहमत करने का प्रयास करेंगे और हमको यह कार्य करना है।

(62) और उसने अपने कर्मचारियों से कहा कि उनका दिया हुआ माल उनके सामान में रख दो, ताकि जब वह अपने घर पहुँचें तो उसको पहचान लें, सम्भवत वह फिर आयें। (63) फिर जब वह अपने पिता के पास लौटे तो कहा कि ऐ अब्बा, हमसे अनाज रोक दिया गया, अतः हमारे भाई (बिन यामीन) को हमारे साथ जाने दें कि हम अनाज लायें और हम इसके संरक्षक हैं। (64) याक़ूब ने कहा, क्या मैं इसके सम्बन्ध में तुम्हारा वैसा ही विश्वास करूँ जैसा कि इससे पहले इसके भाई के सम्बन्ध में तुम्हारा विश्वास कर चुका हूँ। तो अल्लाह सर्वश्रेष्ठ संरक्षक है और वह सब कृपालुओं से बड़ा कृपालु है।

(65) और जब उन्होंने अपना सामान खोला तो देखा कि उनकी पूँजी भी उनको लौटा दी गई है। उन्होंने कहा, ऐ हमारे अब्बा, और हमको क्या चाहिए। यह हमारी पूँजी हमको लौटा दी गई है। अब हम जायेंगे और अपने परिवार वालों के लिए खाद्य्य सामग्री लायेंगे। और अपने भाई की रक्षा करेंगे। और एक ऊँट का बोझ अनाज और अधिक लायेंगे। यह अनाज तो थोड़ा है। (66) याक़ूब ने कहा, मैं इसको तुम्हारे साथ कदापि न भेजूँगा जब तक तुम मुझसे अल्लाह के नाम पर यह प्रतिज्ञा न करो कि तुम इसको अवश्य मेरे पास ले आओगे, सिवाय यह कि तुम सब घिर जाओ। फिर जब उन्होंने उसको अपना दृढ़ वचन दे दिया, उसने कहा कि जो हम कह रहे हैं, उस पर अल्लाह निरिक्षक (गवाह) है।

(67) और याक़ूब ने कहा कि ऐ मेरे बेटो, तुम सब एक ही दरवाज़े से प्रवेश न करना बल्कि अलग-अलग दरवाज़ों से प्रवेश करना। और मैं तुमको अल्लाह की किसी बात से नहीं बचा सकता। आदेश तो बस अल्लाह का है। मैं उसी पर भरोसा रखता हूँ और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए। (68) और जब उन्होंने प्रवेश किया जहाँ से उनके पिता ने उनको निर्देश दिया था, वह उनको नहीं बचा सकता था

अल्लाह की किसी बात से। वह मात्र याक़ूब के हृदय में एक विचार था जो उसने पूरा किया। निस्सन्देह वह हमारी दी हुई शिक्षा से ज्ञानी था परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(69) और जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने भाई को अपने पास रखा। कहा कि मैं तुम्हारा भाई (यूसुफ) हूँ। अतः दुखी न हो उससे जो वह कर रहे हैं। (70) फिर जब उनका सामान तैयार करा दिया तो पीने का प्याला अपने भाई के सामान में रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने पुकारा कि ऐ क़ाफ़िले वालों, तुम लोग चोर हो। (71) उन्होंने उनको सम्बोधित करके कहा, तुम्हारी क्या चीज़ खोई है। (72) उन्होंने कहा, हम राज्य का पैमाना (नाप) नहीं पा रहे हैं। और जो उसको लायेगा उसके लिए एक ऊँट के बोझ के बराबर अनाज है और मैं इसका ज़िम्मा लेता हूँ। (73) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध, तुमको ज्ञात है कि हम लोग इस देश में उपद्रव करने के लिए नहीं आये और न हम कभी चोर थे। (74) उन्होंने कहा यदि तुम झूठे निकले तो उस चोरी करने वाले का दण्ड क्या है। (75) उन्होंने कहा, उसका दण्ड यह है कि जिस व्यक्ति के सामान में वह मिले, तो वही व्यक्ति अपना दण्ड है। हम लोग अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड दिया करते हैं। (76) फिर उसने उसके (छोटे) भाई से पहले उनके थैलों की तलाशी लेना शुरू किया। फिर उसके भाई के थैले से उसको निकाल लिया। इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए युक्ति की। वह राजा के क़ानून के अनुसार अपने भाई को नहीं ले सकता था परन्तु यह कि अल्लाह चाहे। हम जिसके पद चाहते हैं, उच्च कर देते हैं। और समस्त ज्ञान वाले से उच्चतर एक ज्ञान वाला है।

(77) उन्होंने कहा यदि यह चोरी करे तो इससे पहले इसका एक भाई भी चोरी कर चुका है। अतः यूसुफ़ ने इस बात को अपने हृदय में रखा, और उसको उन पर व्यक्त न किया। उसने अपने मन में कहा, तुम स्वंय ही बुरे लोग हो, और जो कुछ तुम वर्णन कर रहे हो, अल्लाह उसको भली-भाँति जानता है। (78) उन्होंने कहा कि ऐ अज़ीज़ (हे राजन) इसका एक बहुत बूढ़ा बाप है, अतः आप इसके स्थान पर हममें से किसी को रख लें। हम आपको बहुत भला देख रहे हैं। (79) उसने कहा, अल्लाह की शरण (इस बात से) कि हम उसके अतिरिक्त

किसी को पकड़ें जिसके पास हमने अपना सामान पाया है। उस स्थिति में हम अवश्य अत्याचारी ठहरेंगे। (80) जब वह उससे निराश हो गये तो वह अलग होकर परस्पर परामर्श करने लगे। उनके बड़े ने कहा क्या तुमको ज्ञात नहीं कि तुम्हारे पिता ने अल्लाह के नाम दृढ़ वचन लिया और इससे पहले यूसुफ़ के मामले में जो अत्याचार तुम कर चुके हो, वह भी तुमको ज्ञात है। अतः मैं इस स्थान से कदापि न टलूँगा जब तक मेरा पिता मुझे अनुमति न दे या अल्लाह, मेरे लिए कोई निर्णय कर दे। और वह सबसे बड़ा निर्णय करने वाला है। (81) तुम लोग अपने पिता के पास जाओ और कहो कि ऐ हमारे बाप, आपके बेटे ने चोरी की और हम वही बात कह रहे हैं जो हमको ज्ञात हुई और हम परोक्ष के संरक्षक नहीं। (82) और आप उस नगर के लोगों से पूछ लें जहाँ हम थे और उस काफिले से पूछ लें जिसके साथ हम आये हैं। और हम पूर्णतः सच्चे हैं।

(83) पिता ने कहा, बल्कि तुमने अपने दिल से एक बात बना ली है, अतः मैं धैर्य रखूँगा। आशा है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास लायेगा। वह सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है। (84) और उसने चेहरा फेर लिया और कहा, हाय यूसुफ़, और दुख से उसकी आँखें सफेद पड़ गयीं। वह घुटा-घुटा रहने लगा। (85) उन्होंने कहा, अल्लाह की सौगन्ध, आप यूसुफ़ ही की याद में रहेंगे। यहाँ तक कि घुल जायें अथवा मृत्यु प्राप्त करने वालों में हो जायें। (86) उसने कहा, मैं अपने कष्ट और अपने पीड़ा की शिकायत मात्र अल्लाह से करता हूँ और मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (87) ऐ मेरे बेटो, जाओ यूसुफ़ और उसके भाई की तलाश करो और अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। अल्लाह की दयालुता से मात्र अवज्ञाकारी ही निराश होते हैं।

(88) फिर जब वह यूसुफ़ के पास पहुँचे, उन्होंने कहा, ऐ अज़ीज (राजन्) हमको और हमारे घरवालों को बहुत कष्ट पहुँच रहा है और हम थोड़ी पूँजी लेकर आये हैं, आप हमको पूरा अनाज़ दें और हमको दान भी दें। निस्सन्देह अल्लाह दान करने वालों को उसका बदला देता है। (89) उसने कहा, क्या तुमको ज्ञात है कि तुमने यूसुफ़ और उसके भाई के साथ क्या किया जबकि तुमको समझ न थी। (90) उन्होंने कहा, क्या वास्तव में आप ही यूसुफ़ हैं। उसने कहा हाँ,

मैं यूसुफ़ हूँ और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हम पर कृपा की। जो व्यक्ति डरता है और धैर्य रखता है तो अल्लाह भले कर्म करने वालों का बदला नष्ट नहीं करता।

(91) भाईयों ने कहा, अल्लाह की सौगन्ध, अल्लाह ने तुमको हमारे ऊपर श्रेष्ठता प्रदान की, और निस्सन्देह हम कुमार्ग पर थे। (92) यूसुफ़ ने कहा, आज तुम पर कोई आरोप नहीं, अल्लाह तुमको क्षमा करे और वह सब कृपालुओं से बड़ा कृपालु है। (93) तुम मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसको मेरे पिता के चेहरे पर डाल दो, उनकी रोशनी वापस आयेगी और तुम अपने घरवालों के साथ मेरे पास आ जाओ।

(94) और जब क़ाफ़िला (मिस्र से) चला तो उसके पिता ने (कनआन में) कहा कि यदि तुम मुझको बुढ़ापे में बहकी-बहकी बातें करने वाला न समझो तो मैं यूसुफ़ की सुगन्ध पा रहा हूँ। (95) लोगों ने कहा, अल्लाह की सौगन्ध, आप तो अभी तक अपनी पुरानी भ्रान्तियों में ग्रस्त हैं। (96) अतः जब शुभ सूचना देने वाला आया, उसने कुर्ता याक़ूब के चेहरे पर डाल दिया, अतः उसकी रोशनी लौट आयी। उसने कहा, क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूँ जो तुम नहीं जानते। (97) यूसुफ़ के भाईयों ने कहा, ऐ हमारे बाप, हमारे पापों की क्षमा की प्रार्थना कीजिए। निस्सन्देह हम अपराधी थे। (98) याक़ूब ने कहा, मैं अपने पालनहार से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करूँगा। निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(99) अतः जब वह सब यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उसने अपने माता-पिता को अपने पास बैठाया। और कहा कि मिस्र में इन्शा अल्लाह शान्तिपूर्वक रहिए। (100) और उसने अपने माता-पिता को सिंहासन पर बैठाया और सब उसके लिए सजदे में झुक गये। और यूसुफ़ ने कहा ऐ अब्बाजान, यह है मेरे स्वप्न का अर्थ जो मैंने पहले देखा था। मेरे पालनहार ने उसको सच्चा कर दिया और उसने मेरे साथ उपकार किया कि उसने मुझे कारागार से निकाला और आप सबको देहात से यहाँ लाया, इसके पश्चात कि शैतान ने मेरे और मेरे भाईयों के बीच फ़साद (वैमनस्य) डाल दिया था। निस्सन्देह मेरा पालनहार

जो कुछ चाहता है वह उसके लिये सक्ष्म उपाय कर लेता है, वह जानने वाला है, विवेक वाला है।

(101) ऐ मेरे पालनहार, तूने मुझको सत्ता में से हिस्सा दिया और मुझको बातों का अर्थ जानना सिखाया। ऐ आकाशों और पृथ्वी के सृष्टा, तू मेरा काम बनाने वाला है, संसार में भी और परलोक में भी। मुझको आज्ञाकारी की दशा में मृत्यु दे और मुझको भले लोगों में सम्मिलित कर ले। (102) यह परोक्ष की सूचनाओं में से है जो हम तुम पर वह्य (सन्देश) कर रहे हैं और तुम उस समय उनके पास उपस्थित न थे, जब यूसुफ़ के भाईयों ने अपना विचार दृढ़ किया और वह षड़यन्त्र कर रहे थे। (103) और तुम चाहे कितना ही चाहो, अधिकतर लोग ईमान (आस्था) लाने वाले नहीं। (104) और तुम इस पर उनसे कोई मुआवज़ा (प्रतिकार) नहीं माँगते। यह तो मात्र एक उपदेश है सभी संसार वालों के लिए।

(105) और आकाशों और धरती में कितनी ही निशानियाँ हैं जिन पर वह गुज़रते रहते हैं और वह उन पर ध्यान नहीं देते। (106) और अधिकतर लोग जो अल्लाह को मानते हैं, वह उसके साथ दूसरों को साझीदार भी ठहराते हैं। (107) क्या ये लोग इस बात से सन्तुष्ट हैं कि उन पर अल्लाह की यातना की कोई आपदा आ पड़े या अचानक उन पर प्रलय आ जाये और वह इससे अनभिज्ञ हों। (108) कहो यह मेरा मार्ग है, मैं अल्लाह की ओर बुलाता हूँ स्पष्ट ज्ञान के साथ, मैं भी और वह लोग भी जिन्होंने मेरा अनुसरण किया है। और अल्लाह पवित्र है और मैं साझी ठहराने वालों में से नहीं हूँ।

(109) और हमने तुमसे पहले विभिन्न बस्ती वालों में से जितने सन्देष्टा भेजे, सब मनुष्य ही थे। हम उनकी ओर वह्य (श्रुति सन्देश) करते थे। क्या यह लोग पृथ्वी पर चले फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का अन्त क्या हुआ जो इनसे पहले थे और परलोक का घर उन लोगों के लिए उत्तम है जो ड़रते हैं, क्या तुम समझते नहीं। (110) यहाँ तक कि जब सन्देष्टा निराश हो गये और वह विचार करने लगे कि उनसे झूठ कहा गया था तो उनको हमारी सहायता आ पहुँची। अतः क्षमा मिली जिसको हमने चाहा और अपराधी लोगों से हमारी यातना टाली नहीं जा सकती।

(111) इन क़िस्सों में बड़ी शिक्षा है बुद्धि रखने वालों के लिए। यह कोई गढ़ी हुई बात नहीं बल्कि पुष्टि है उस वस्तु की जो इससे पहले मौजूद है। और व्याख्या है हर चीज़ की। और दयालुता और मार्गदर्शन है ईमान वालों के लिए।

13. सूरह अर-रअ्द

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. रा.। यह अल्लाह की किताब की आयतें हैं और जो कुछ तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार की ओर से उतरा है वह सत्य है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं मानते। (2) अल्लाह ही है जिसने आकाश को ऊँचा किया बिना ऐसे खम्भों के जो तुम्हें दिखाई दें। फिर वह अपने सिंहासन पर आसीन हुआ और उसने सूरज और चाँद को एक नियम का पाबन्द बनाया, प्रत्येक एक –एक नियत समय पर चलता है। अल्लाह ही प्रत्येक कार्य की व्यवस्था करता है। वह निशानियों का स्पष्ट रूप से वर्णन करता है ताकि तुम अपने पालनहार से मिलने का विश्वास करो।

(3) और वही है जिसने धरती को फैलाया। और उसमें पहाड़ और नदियाँ रख दीं और प्रत्येक प्रकार के फलों के जोड़े उसमें उत्पन्न किए। वह रात को दिन पर ओढ़ा देता है। निस्सन्देह इन चीज़ों में निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करें।

(4) और पृथ्वी पर पास-पास विभिन्न भू-भाग हैं और अंगूरों के बाग़ हैं और खेती है और खजूरें हैं, उनमें से कुछ इकहरे हैं और कुछ दुहरे। सब एक ही पानी से सिंचित होते हैं और हम एक को दूसरे पर उपज में श्रेष्ठता प्रदान करते हैं। निस्सन्देह इनमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करें।

(5) और यदि तुम आश्चर्य करो तो आश्चर्य के योग्य उनका यह कहना है कि जब वह मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से पैदा किये जायेंगे। यह वह लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार को झुठलाया और यह वह लोग हैं जिनकी गर्दनों में पट्टे पड़े हुए हैं वह आग वाले लोग हैं, वह उसमें सदैव रहेंगे।

(6) वह भलाई से पहले बुराई के लिए जल्दी कर रहे हैं। हालाँकि इनसे पहले उदाहरण आ चुके हैं और तुम्हारा पालनहार लोगों के अत्याचार के बावजूद उनको क्षमा करने वाला है। और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार कठोर दण्ड देने वाला है।

(7) और जिन लोगों ने झुठलाया, वह कहते हैं कि इस व्यक्ति पर इसके पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं अवतरित हुई। तुम तो मात्र सचेत कर देने वाले हो। और प्रत्येक क़ौम के लिए एक मार्गदर्शक है।

(8) अल्लाह जानता है प्रत्येक मादा के गर्भ को। और जो कुछ गर्भ में घटता और बढ़ता है उसको भी। और प्रत्येक वस्तु का उसके यहाँ एक अनुमान (पैमाना) है। (9) और वह परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाला है, वह सबसे बड़ा है सर्वश्रेष्ठ है। (10) तुममें से कोई व्यक्ति चुपके से बात कहे और जो पुकार कर कहे और जो रात में छिपा हुआ हो और जो दिन में चल रहा हो, अल्लाह के लिए सब समान हैं।

(11) प्रत्येक व्यक्ति के आगे और पीछे उसके निरीक्षक हैं जो अल्लाह के आदेश से उसकी देख-भाल कर रहे हैं। निस्सन्देह अल्लाह किसी क़ौम की दशा को नहीं बदलता जब तक कि वह उसको न बदल डालें जो उनके मन में है। और जब अल्लाह किसी क़ौम पर कोई आपदा लाना चाहता है तो फिर उसके हटने का कोई उपाय नहीं और अल्लाह के अतिरिक्त उसकी तुलना में कोई इनका सहायक नहीं।

(12) वही है जो तुमको बिजली दिखाता है जिससे भय भी उत्पन्न होता है और आशा भी। और वही है जो पानी से लदे हुए बादल उठाता है। (13) और बिजली की गरज उसकी प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन करती है और फ़रिश्ते भी उसके भय से (उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं) और वह बिजलियाँ भेजता है, फिर जिस पर चाहे उन्हें गिरा देता है और वह लोग अल्लाह के सम्बन्ध में झगड़ते हैं, हालाँकि वह सर्वश्रेष्ठ है, शक्तिशाली है।

(14) सच्ची पुकार मात्र अल्लाह के लिए है। और उसके अतिरिक्त जिनको लोग पुकारते हैं, वह उनकी उससे अधिक तृप्त नहीं कर सकते, जितना पानी उस व्यक्ति की करता है जो अपने दोनों हाथ पानी की ओर फैलाये हुए हो

ताकि वह उसके मुँह तक पहुँच जाये और वह उसके मुँह तक पहुँचने वाला नहीं। और अवज्ञाकारियों की पुकार पूर्णतः लाभहीन है।

(15) और आकाशों और धरती में जो भी हैं सब अल्लाह ही को सजदा करते हैं, प्रसन्नता से अथवा विवशता से और उनकी परछाईयाँ भी सुबह और सायं। (16) कहो, आकाशों और धरती का पालनहार कौन है। कह दो कि अल्लाह। कहो, क्या फिर भी तुमने उसके अतिरिक्त ऐसे सहायक बना रखे हैं जो स्वंय अपने आप के लाभ और हानि की भी क्षमता नहीं रखते। कहो, क्या अन्धा और आँखों वाला दोनों समान हो सकते हैं और अँधेरा और उजाला दोनों समान हो जायेंगे। क्या उन्होंने अल्लाह के ऐसे साझीदार ठहराये हैं जिन्होंने भी पैदा किया है जैसा कि अल्लाह ने पैदा किया, फिर सृष्टि उनकी दृष्टि में संदिग्ध हो गयी। कहो, अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला है और वही है अकेला, सर्वशक्तिमान।

(17) अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा। फिर नाले अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार बह निकले। फिर बाढ़ ने उभरते झाग को उठा लिया और उसी प्रकार का झाग उन चीज़ों में भी उभर आता है जिनको लोग आभूषण या सामान बनाने के लिए आग में पिघलाते हैं। इस तरह अल्लाह सत्य और झूठ के उदाहरण बयान करता है। अतः झाग तो सूख कर समाप्त हो जाता है और जो चीज़ मनुष्यों को लाभ पहुँचाने वाली है, वह पृथ्वी पर ठहर जाती है। अल्लाह इसी प्रकार उदाहरण बयान करता है।

(18) जिन लोगों ने अपने पालनहार की पुकार को स्वीकार कर लिया है, उनके लिए भलाई है और जिन लोगों ने उसकी पुकार को न माना, यदि उनके पास वह सब कुछ हो जो पृथ्वी में है, और उसके बराबर और भी तो वह सब अपनी मुक्ति के लिए दे डालें। उन लोगों का हिसाब कठोर होगा और उनका ठिकाना नरक होगा। और वह कैसा बुरा ठिकाना है।

(19) जो व्यक्ति यह जानता है कि जो कुछ तुम्हारे पालनहार की ओर से उतारा गया है वह सत्य है, क्या वह उसके समान हो सकता है जो अन्धा है। उपदेश तो बुद्धि वाले लोग ही स्वीकार करते हैं।

(20) वह लोग जो अल्लाह के वादे को पूरा करते हैं और उसके वादे को

नहीं तोड़ते। (21) और जो उसको जोड़ते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है और वह अपने पालनहार से डरते हैं और वह सख़्त हिसाब का भय रखते हैं। (22) और जिन्होंने अपने पालनहार की प्रसन्नता के लिए धैर्य रखा और नमाज़ स्थापित की। और हमारे दिये में से छिपे और खुले ख़र्च किया। और जो बुराई को भलाई से रोकते हैं। परलोक का घर उन्हीं लोगों के लिए हैं। (23) सदैव रहने के बाग़ जिनमें वह प्रवेश करेंगे। और वह भी जो उसके योग्य बनें, उनके पूर्वज और उनकी पत्नियों और उनकी सन्तानों में से। और फ़रिश्ते प्रत्येक द्वार से उनके पास आयेंगे। (24) कहेंगे तुम लोगों पर सलामती हो उस धैर्य के बदले जो तुमने किया। तो क्या ही अच्छा है यह परलोक का घर।

(25) और जो लोग अल्लाह की प्रतीज्ञा को दृढ़ करने के पश्चात तोड़ते हैं और उसको काटते हैं जिसको अल्लाह ने जोड़ने का आदेश दिया है और पृथ्वी पर बिगाड़ करते हैं, ऐसे लोगों पर फ़टकार है और उनके लिए बुरा घर है। (26) अल्लाह जिसको चाहता है जीविका अधिक देता है और जिसके लिए चाहता है संकुचित कर देता है। और वह सांसारिक जीवन पर प्रसन्न है। और सांसारिक जीवन परलोक की तुलना में एक तुच्छ सामान के अतिरिक्त और कुछ नहीं।

(27) और जिन्होंने झुठलाया, वह कहते हैं कि इस व्यक्ति पर इसके पालनहार की ओर से कोई निशानी क्यों नहीं उतारी गई। कहो कि अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और वह अपना मार्ग उसको दिखाता है जो उसकी ओर ध्यान करे। (28) वह लोग जो ईमान (आस्था) लाये और जिनके दिल अल्लाह की याद से सन्तुष्ट होते हैं। सुनो, अल्लाह की याद ही से दिलों को सन्तुष्टि प्राप्त होती है। (29) जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने भले कर्म किये, उनके लिए शुभ सूचना है और अच्छा ठिकाना है।

(30) इसी तरह हमने तुमको भेजा है, एक उम्मत (क़ौम) में जिससे पहले बहुत सी उम्मतें (क़ौमे) गुज़र चुकी हैं, ताकि तुम लोगों को वह सन्देश सुना दो जो हमने तुम्हारी ओर भेजा है। और वह दयावान अल्लाह को झुठला रहे

है। कहो कि वही मेरा पालनहार है, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर लौटना है।

(31) और यदि ऐसा क़ुरआन उतरता जिससे पहाड़ चलने लगते, या उससे पृथ्वी टुकड़े हो जाती या उससे मुर्दे बोलने लगते। बल्कि सम्पूर्ण अधिकार अल्लाह ही के लिए है। क्या ईमान लाने वालों को इससे सन्तुष्टि नहीं कि यदि अल्लाह चाहता तो सभी लोगों को मार्गदर्शन प्रदान कर देता। और झुठलाने वालों पर कोई न कोई विपत्ति आती रहती है, उनके कर्मों के कारण, या उनकी बस्ती के निकट कहीं उतरती रहेगी, यहाँ तक कि अल्लाह का वादा आ जाये। निश्चित रूप से अल्लाह अपने वचन के विरुद्ध नहीं करता। (32) और तुमसे पहले भी सन्देष्टताओं का उपहास किया गया तो मैंने अवज्ञा करने वालों को ढील दी, फिर मैंने उनको पकड़ लिया। तो देखो कैसा था मेरा दण्ड।

(33) फिर क्या जो प्रत्येक व्यक्ति से उसके कर्म का हिसाब लेने वाला है। (और वह जो किसी चीज़ पर सामर्थ्य नहीं रखते, समान हैं), और लोगों ने अल्लाह के साझीदार बना लिये हैं। कहो कि उनका नाम लो। क्या तुम अल्लाह को ऐसी चीज़ की सूचना दे रहे हो जिसको वह ज़मीन में नहीं जानता। या तुम ऊपर ही ऊपर बातें कर रहे हो, बल्कि झुठलाने वालों को उनका छल आकर्षक बना दिया गया है। और वह रास्ते से रोक दिये गये हैं। और अल्लाह जिसको भटकाये, उसको कोई मार्ग बताने वाला नहीं। (34) उनके लिए सांसारिक जीवन में भी यातना है और परलोक का दण्ड तो बहुत कठोर है। कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला नहीं।

(35) और जन्नत का उदाहरण जिसका परहेज़गारों से वादा किया गया है, यह है कि उसके नीचे नहरें बहती होंगी। उसका फल और छाया सदैव रहेगा। यह परिणाम उन लोगों का है जो अल्लाह से डरें और अवज्ञाकारियो का परिणाम आग है।

(36) जिन लोगों को हमने किताब दी थी, वह उस चीज़ पर प्रसन्न हैं जो तुम पर उतारा गया है। और उन समुदायों में ऐसे लोग भी हैं जो इसके कुछ भाग को झुठलाते हैं। कहो कि मुझे आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह

की उपासना करूँ और किसी को उसका साझीदार न ठहराऊँ। मैं उसी की ओर बुलाता हूँ और उसी की ओर मेरा लौटना है। (37) और इस प्रकार हमने इसको एक आदेश की हैसियत से अरबी (भाषा) में उतारा है। और यदि तुम उनकी इच्छाओं का अनुसरण करो इसके बाद कि तुम्हारे पास ज्ञान आ चुका है तो अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारा न कोई सहायक होगा और न कोई बचाने वाला।

(38) और हमने तुमसे पहले कितने सन्देष्टा भेजे और हमने उनको पत्नियाँ और सन्तान प्रदान किये और किसी सन्देष्टा के लिए यह सम्भव नहीं कि वह अल्लाह कि अनुमति के बिना कोई प्रतीक ले आये। प्रत्येक वादा लिखा हुआ है। (39) अल्लाह जिसको चाहे मिटाता है और जिसको चाहे बचाये रखता है। और उसी के पास है मूल किताब।

(40) और जिसका हम उनसे वादा कर रहे हैं उसका कुछ भाग हम तुमको दिखा दें या हम तुमको मृत्यु दे दें, तो तुम्हारे ऊपर मात्र पहुँचा देना है और हमारे ऊपर है हिसाब लेना। (41) क्या वह देखते नहीं कि हम पृथ्वी को उसके किनारों से कम करते चले आ रहे हैं। और अल्लाह निर्णय करता है, कोई उसके निर्णय को हटाने वाला नहीं और वह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (42) जो इनसे पहले थे, उन्होंने भी युक्तियाँ कीं परन्तु सम्पूर्ण युक्तियाँ अल्लाह के अधिकार में हैं। वह जानता है कि प्रत्येक क्या कर रहा है, और अवज्ञाकारी शीघ्र जान लेंगे कि परलोक का घर किसके लिए है।

(43) और अवज्ञाकारी कहते हैं कि तुम अल्लाह के भेजे हुए नहीं हो, कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह की गवाही काफ़ी है। और उसकी गवाही जिसके पास किताब का ज्ञान है।

14. सूरह इब्राहीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. रा.। यह किताब है जिसको हमने तुम्हारी ओर उतरा है, ताकि तुम लोगों को अँधेरों से निकाल कर प्रकाश की ओर लाओ, उनके

पालनहार के आदेश से प्रभुत्वशाली और प्रशंसित अल्लाह के मार्ग की ओर। (2) उस अल्लाह की ओर कि आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है, सब उसी का है और अवज्ञाकारियों के लिए एक अत्यंत विनाश कारी यातना है। (3) जो कि परलोक की तुलना में सांसारिक जीवन को पसन्द करते हैं और अल्लाह के मार्ग से रोकते हैं और उसमें टेढ़ निकालना चाहते हैं। यह लोग मार्ग से भटक कर दूर जा पड़े हैं।

(4) और हमने जो सन्देष्टा भी भेजा उसकी क़ौम की भाषा में भेजा, ताकि वह उनसे बयान कर दे, फिर अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और जिसको चाहता है सन्मार्ग प्रदान करता है। वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है।

(5) और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा कि अपनी क़ौम को अँधेरों से निकाल कर प्रकाश में लाओ और उनको अल्लाह के दिनों की याद दिलाओ। निस्सन्देह उनके अन्दर बड़ी निशानियाँ हैं प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य रखने वाला और आभार प्रकट करने वाला हो।

(6) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि अपने ऊपर अल्लाह के उस उपकार को याद करो जबकि उसने तुमको फ़िरऔन की क़ौम से छुडाया जो तुमको कठोर कष्ट पहुँचाते थे और जो तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी महिलाओं को जीवित रखते थे और उसमें तुम्हारे पालनहार की ओर से बड़ी परीक्षा थी। (7) और जब तुम्हारे पालनहार ने तुमको सचेत कर दिया कि यदि तुम कृतज्ञता करोगे तो मैं तुमको अधिक दूँगा। और यदि तुम कृतघ्नता करोगे तो मेरी यातना अत्यंत कठोर है। (8) और मूसा ने कहा कि यदि तुम अवज्ञा करो और पृथ्वी के समस्त लोग भी अवज्ञाकारी हो जायें तो अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसनीय है।

(9) क्या तुमको उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, नूह और आद और समूद की क़ौम, और जो लोग उनके बाद हुए हैं, जिनको अल्लाह के अतिरिक्त कोई नहीं जानता। उनके सन्देष्टा उनके पास प्रमाण लेकर आये तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुँह पर रख दिये और कहा कि जो तुमको देकर भेजा गया है हम उसको नहीं मानते और जिस चीज़ की

ओर तुम हमको बुलाते हो हम उसके सम्बन्ध में बड़े दुविधाजनक सन्देह में पड़े हुए हैं।

(10) उनके सन्देष्टाओं ने कहा, क्या अल्लाह के सम्बन्ध में सन्देह है जो आकाशों और पृथ्वी को अस्तित्व में लाने वाला है। वह तुमको बुला रहा है कि तुम्हारे पाप क्षमा कर दे और तुमको एक निर्धारित अवधि तक छूट दे। उन्होंने कहा कि तुम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि हमारे जैसे एक मनुष्य हो। तुम चाहते हो कि हमको उन चीज़ों की उपासना से रोक दो जिनकी उपासना हमारे पूर्वज करते थे। तुम हमारे सामने कोई स्पष्ट प्रमाण ले आओ।

(11) उनके सन्देष्टाओं ने उनसे कहा, हम इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि तुम्हारे ही जैसे मनुष्य हैं, परन्तु अल्लाह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है अपना उपकार करता है और यह हमारे अधिकार में नहीं कि हम तुमको कोई चमत्कार दिखायें बिना अल्लाह के आदेश के। और ईमान (आस्था) वालों को अल्लाह ही पर विश्वास करना चाहिए। (12) और हम क्यों न अल्लाह पर विश्वास करें जबकि उसने हमको हमारे मार्ग बताये। और जो कष्ट तुम हमे दोगे हमें उस पर धैर्य ही करेंगे। और भरोसा करने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

(13) और झुठलाने वालों ने अपने सन्देष्टाओं से कहा कि या तो हम तुमको अपनी भूमि से निकाल देंगे या तुमको हमारी मिल्लत (क़ौम) में वापस आना होगा। तो सन्देष्टाओं के पालनहार ने उन पर वह्य (श्रुति) भेजी कि हम उन अत्याचारियों को नष्ट कर देंगे। (14) और उनके पश्चात तुमको पृथ्वी पर बसायेंगे। यह उस व्यक्ति के लिए है जो मेरे समक्ष खड़े होने से डरे और जो मेरी चेतावनी से डरे।

(15) और उन्होंने निर्णय चाहा और प्रत्येक दुराग्रही, हठधर्मी असफल हुआ। (16) उसके आगे नरक है और उसको पीप (पीब) जैसा पानी पीने को मिलेगा। (17) वह उसको घूँट-घूँट पियेगा और उसको गले से कठिनाई के साथ उतारेगा। मृत्यु प्रत्येक दिशा से उस पर छायी हुई होगी, परन्तु वह किसी प्रकार नहीं मरेगा और उसके सामने कठोर यातना होगी।

(18) जिन लोगों ने अपने पालनहार को झुठलाया, उनके कर्म उस राख

की तरह हैं जिसको एक तूफ़ानी दिन की आँधी ने उड़ा दिया हो। वह अपने किये में से कुछ भी न पा सकेंगे। यही दूर की पथभ्रष्टता है। (19) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाशों और धरती को पूर्णतः ठीक-ठीक पैदा किया है यदि वह चाहे तो तुम लोगों को ले जाये और एक नयी रचना ले आये। (20) और यह अल्लाह के लिए कुछ कठिन भी नहीं।

(21) और अल्लाह के समक्ष सभी प्रस्तुत होंगे। फिर निर्बल लोग उन लोगों से कहेंगे जो बड़ाई वाले थे, हम तुम्हारे अधीन थे तो क्या तुम अल्लाह की यातना से कुछ हमको बचाओगे। वह कहेंगे कि यदि अल्लाह हमको कोई मार्ग दिखाता तो हम तुमको भी अवश्य वह मार्ग दिखा देते। अब हमारे लिए समान है कि हम व्याकुल हों या धैर्य रखें, हमारे बचने का कोई उपाय नहीं।

(22) और जब मामले का निर्णय हो जायेगा तो शैतान कहेगा कि अल्लाह ने तुमसे सच्चा वादा किया था और मैंने तुमसे वादा किया तो मैंने उसके प्रतिकूल किया। और मेरा तुम्हारे ऊपर कोई वश न था, परन्तु यह कि मैंने तुमको बुलाया तो तुमने मेरी बात को मान लिया, अतः तुम मुझको आरोप न दो, और तुम अपने आप को आरोप दो। न मैं तुम्हारा सहायक हो सकता हूँ और न तुम मेरे सहायक हो सकते हो। मैं स्वंय उससे विरक्त हूँ कि तुम इससे पहले मुझको साझीदार ठहराते थे। निस्सन्देह अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना है।

(23) और जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे कर्म किये वह ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। उनमें वह अपने पालनहार के आदेश से सदैव रहेंगे। उसमें उनका अभिवादन एक-दूसरे पर सलामती होगी।

(24) क्या तुमने नहीं देखा, किस प्रकार मिसाल बयान की अल्लाह ने कलिम-ए तैय्यिबा (उत्तम वाक्य) की। वह एक पवित्र वृक्ष के समान है, जिसकी जड़ भूमि में जमी हुई है और जिसकी शाखाएँ आकाश तक पहुँची हुई हैं। (25) वह प्रत्येक समय पर अपना फल देता है अपने पालनहार के आदेश से। और अल्लाह लोगों के लिए उदाहरण बयान करता है ताकि वह मार्गदर्शन प्राप्त करें। (26) और कलिम-ए ख़बीसा (अशुद्ध वाक्य) का उदाहरण एक बुरे वृक्ष

की है जो भूमि के ऊपर से ही उखाड़ लिया जाये। उसको कोई स्थायित्व प्राप्त न हो।

(27) अल्लाह ईमान (आस्था) वालों को एक पक्की बात के द्वारा संसार और परलोक में दृढ़ता प्रदान करता है। और अल्लाह अत्याचारियों को भटका देता है। और अल्लाह करता है जो वह चाहता है।

(28) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के उपकारों के बदले अवज्ञा की और जिन्होंने अपनी क़ौम को विनाश के घर, अर्थात नरक, में पहुँचा दिया। (29) वह उसमें डाले जाएंगे और वह कैसा बुरा ठिकाना है। (30) और उन्होंने अल्लाह के समकक्ष ठहराये, ताकि वह लोगों को अल्लाह के मार्ग से भटका दें। कहो कि कुछ दिन लाभ उठा लो, अन्ततः तुम्हारा ठिकाना नरक है।

(31) मेरे जो बन्दे ईमान (आस्था) लाये हैं, उनसे कह दो कि वह नमाज़ स्थापित करें और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से खुले और छिपे ख़र्च करें, इससे पहले कि वह दिन आये जिसमें न क्रय-विक्रय होगा और न मित्रता काम आयेगी।

(32) अल्लाह वह है जिसने आकाश और पृथ्वी बनाये और आकाश से पानी उतारा। फिर उससे विभिन्न प्रकार के फल निकाले तुम्हारी जीविका के लिए और नौकाओं को तुम्हारे वश में दे दिया कि समुद्र में उसके आदेश से चले और उसने नदियों को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया। (33) और उसने सूरज और चाँद को तुम्हारे अधिकार में दिया कि वह निरन्तर चले जा रहे हैं और उसने रात और दिन को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया। (34) और उसने तुमको हर उस चीज़ में से दिया जो तुमने माँगा। यदि तुम अल्लाह के उपकारों को गिनो तो तुम गिन नहीं सकते। निस्सन्देह मनुष्य अत्यन्त अन्यायी और बड़ा कृतघ्न है।

(35) और जब इब्राहीम ने कहा, ऐ मेरे पालनहार, इस नगर (मक्का) को शान्ति वाला नगर बना दे। और मुझको और मेरी सन्तान को इससे दूर रख कि हम मूर्तियों की उपासना करें। (36) ऐ हमारे पालनहार, इन बुतों (मूर्तियों)

ने बहुत लोगों को पथभ्रष्ट कर दिया। अतः जिसने मेरा अनुसरण किया वह मेरा है। और जिसने मेरा कहा न माना तो तू क्षमा करने वाला, दयावान है।

(37) ऐ हमारे पालनहार, मैंने अपनी सन्तान को एक बंजर घाटी (जो कृषि-योग्य नहीं) में तेरे सम्मानित घर (काबा) के निकट बसाया है। ऐ हमारे पालनहार, ताकि वह नमाज़ स्थापित करें। अतः तू लोगों के दिल उनकी ओर आकृष्ट कर दे और उनको फलों की जीविका प्रदान कर, ताकि वह आभार प्रकट करें।

(38) ऐ हमारे पालनहार, तू जानता है जो कुछ हम छिपाते हैं और जो कुछ हम प्रकट करते हैं। और अल्लाह से कोई चीज़ छिपी नहीं, न पृथ्वी में और न आकाश में । (39) शुक्र है उस अल्लाह का जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इस्हाक़ दिये। निस्सन्देह मेरा पालनहार प्रार्थना का सुनने वाला है। (40) ऐ मेरे पालनहार, मुझे नमाज़ स्थापित करने वाला बना, और मेरी सन्तान में भी। ऐ हमारे पालनहार, मेरी प्रार्थना स्वीकार कर। (41) ऐ हमारे पालनहार, मुझे क्षमा कर और मेरे माता-पिता को और मोमिनों (आस्थावानों) को, उस दिन जबकि हिसाब का मामला होगा।

(42) और कदापि न समझो कि अल्लाह उससे अनभिज्ञ है, जो अत्याचारी लोग कर रहे हैं। वह उनको उस दिन के लिए ढील दे रहा है जिस दिन आँखें पथरा जायेंगी। (43) वह सिर उठाये हुए भाग रहे होंगे, उनकी दृष्टि उनकी ओर हट कर न आयेगी और उनके दिल व्याकुल होंगे।

(44) और लोगों को उस दिन से सचेत कर दो जिस दिन उन पर प्रकोप आ जायेगा। उस समय अत्याचारी लोग कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, हमको थोड़ा समय और दे दे, हम तेरा आमन्त्रण स्वीकार कर लेंगे और सन्देष्टाओं का अनुकरण करेंगे। क्या तुमने इससे पहले सौगन्धें नहीं खायी थीं कि तुम पर कुछ पतन आना नहीं है। (45) और तुम उन लोगों की बस्तियों में आबाद थे जिन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया। और तुम पर स्पष्ट हो चुका था कि हमने उनके साथ क्या किया और हमने तुमसे मिसालें बयान कीं। (46) और उन्होंने अपनी सारी चालें चलीं और उनकी समस्त चालें अल्लाह की दृष्टि में थीं। यद्यपि उनकी चालें ऐसी थीं कि उनसे पहाड़ भी टल जायें।

(47) अतः तुम अल्लाह को अपने सन्देष्टाओं से किये हुए वादे के विरुद्ध करने वाला न समझो। निस्सन्देह अल्लाह प्रभुत्वशाली है, बदला लेने वाला है। (48) जिस दिन यह पृथ्वी दूसरी पृथ्वी से बदल दी जायेगी और आसमान भी। और सभी एक प्रभुत्वशाली अल्लाह के समक्ष प्रस्तुत होंगे। (49) और तुम उस दिन अपराधियों को बेड़ियों में जकड़ा हुआ देखोगे। (50) उनके वस्त्र तारकोल के होंगे। और उनके चेहरों पर आग छायी हुई होगी। (51) ताकि अल्लाह प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्रं हिसाब लेने वाला है। (52) यह लोगों के लिए एक घोषणा है और ताकि इसके माध्यम से वह सचेत कर दिये जायें। और ताकि वह जान लें कि वही एक उपास्य है और ताकि बुद्धिमान लोग शिक्षा प्राप्त करें।

15. सूरह अल-हिज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. रा.। यह आयतें हैं किताब की और एक स्पष्ट क़ुरआन की। (2) वह समय आयेगा जब झुठलाने वाले लोग कामना करेंगे कि काश वह मानने वाले बने होते। (3) इनको छोड़ो कि वह खाएँ और लाभ उठायें और काल्पनिक आशा इनको भुलावे में डाले रखे, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे। (4) और हमने जिस बस्ती को भी नष्ट किया है, उसका एक नियत समय लिखा हुआ था। (5) कोई क़ौम न अपने नियत समय से आगे बढ़ती और न पीछे हटती।

(6) और ये लोग कहते हैं कि ऐ वह व्यक्ति जिस पर मार्गदर्शन अवतरित हुआ है तू निस्सन्देह दीवाना है। (7) (वह कहते हैं कि) यदि तू सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आता। (8) हम फ़रिश्तों को मात्र निर्णय के लिए उतारते हैं और उस समय लोगों को अवकाश नहीं दिया जाता।

(9) यह अनुस्मरण (क़ुरआन) हम ही ने उतारा है और हम ही इसके संरक्षक हैं। (10) और हम तुमसे पहले गुज़री हुई क़ौमों में सन्देष्टा भेज चुके हैं। (11) और जो सन्देष्टा भी उनके पास आया वह उसका उपहास करते

रहे। (12) इसी तरह हम यह (उपहास) अपराधियों के दिलों में डाल देते हैं। (13) वह इस पर ईमान (आस्था) नहीं लायेंगे। और यह ढंग गुज़रे हुए लोगों से होता आया है। (14) और यदि हम उन पर आसमान का कोई द्वार खोल देते जिस पर वह चढ़ने लगते। (15) तब भी वह कह देते कि हमारी आँखों को धोखा हो रहा है, बल्कि हम पर जादू कर दिया गया है।

(16) और हमने आसमान में बुर्ज (तारा-मण्डल) बनाये और देखने वालों के लिए उसे सुसज्जित भी किया। (17) और उसको प्रत्येक धिक्कारे हुए शैतान से सुरिक्षत किया। (18) यदि कोई चोरी छिपे सुनने के लिए कान लगाता है तो एक चमकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है। (19) और हमने पृथ्वी को फैलाया और इस पर हमने पहाड रख दिये और उसमें प्रत्येक चीज़ एक नपे-तुले ढंग से उगायी। (20) और हमने तुम्हारे लिए इसमें जीविका (रोज़ी) के संसाधन बनाये और वह जीवजंतु जिनको तुम जीविका नहीं देते।

(21) और कोई चीज़ ऐसी नहीं जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों और हम उसको एक निर्धारित पैमाने के साथ उतारते हैं। (22) और हम ही हवाओं को बोझल (वर्षा करने वाली) बनाकर चलाते हैं। फिर हम आसमान से पानी बरसाते हैं फिर उस पानी से तुमको सिंचित करते हैं। और तुम्हारे वश में न था कि तुम इसका भण्डार एकत्र करके रखते।

(23) और निस्सन्देह हम ही जीवित करते हैं और हम ही मारते हैं। और हम ही शेष रह जायेंगे। (24) और हम तुम्हारे पूर्वजों को भी जानते हैं और तुम्हारे बाद में आने वाले लोगों को भी जानते हैं। (25) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार उन सबको एकत्र करेगा। वह सर्वज्ञ है, तत्वदर्शी है।

(26) और हमने मनुष्य को गुँधे हुए गारे की खनखनाती मिट्टी से पैदा किया। (27) और इससे पूर्व जिन्नों को हमने आग की लपट से पैदा किया।

(28) और जब तेरे पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं गुँधे हुए गारे की सूखी मिट्टी से एक मनुष्य पैदा करने वाला हूँ। (29) जब मैं उसको पूरा बना लूँ और उसमें अपनी आत्मा में से फूँक दूँ तो तुम उसके लिए सजदे में गिर पड़ना। (30) तो सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया। (31) परन्तु

इब्लीस, कि उसने सजदा करने वालों का साथ देने से मना कर दिया। (32) अल्लाह ने कहा ऐ इब्लीस, तुझको क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ। (33) इब्लीस ने कहा कि मैं ऐसा नहीं कि मनुष्य को सजदा करुँ जिसको तूने गुँधे हुए गारे की सूखी मिट्टी से पैदा किया है।

(34) अल्लाह ने कहा तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि तू धिक्कारा हुआ है। (35) और निस्सन्देह तुझ पर बदले के दिन तक धिक्कार है। (36) इब्लीस ने कहा ऐ मेरे पालनहार, तू मुझे उस दिन तक के लिए अवकाश दे जिस दिन लोग उठाये जायेंगे। (37) अल्लाह ने कहा, तुझको अवकाश दिया गया। (38) उस नियत समय के दिन तक।

(39) इब्लीस ने कहा, ऐ मेरे पालनहार, जैसा तूने मुझको भटकाया है, उसी प्रकार धरती में इनके लिए सुसज्जित करुँगा और सबको पथभ्रष्ट दूँगा। (40) अतिरिक्त उनके जो तेरे चुने हुए (चयनित) बन्दे हैं।

(41) अल्लाह ने फ़रमाया, यह एक सीधा मार्ग है जो मुझ तक पहुँचता है। (42) निस्सन्देह जो मेरे बन्दे हैं, उन पर तेरा वश नहीं चलेगा। सिवाय उनके जो भटके हुए लोगों में से तेरा अनुसरण करें। (43) और उन सब के लिए नरक का वादा है। (44) उसके सात दरवाज़े हैं। प्रत्येक दरवाज़े के लिए उन लोगों के अलग-अलग हिस्से हैं।

(45) निस्सन्देह डरने वाले बाग़ों और स्रोतों (फ़व्वारों) में होंगे। (46) प्रवेश हो जाओ इनमें सलामती और शान्ति के साथ। (47) और उनके सीनों के द्वेष हम निकाल देंगे, सब भाई-भाई की तरह रहेंगे, आसनों पर आमने-सामने। (48) वहाँ उनको कोई कष्ट नहीं पहुँचेगा और न वह वहाँ से निकाले जायेंगे। (49) मेरे बन्दों को सूचना दे दो कि मैं क्षमा करने वाला, दया करने वाला हूँ। (50) और मेरा दण्ड कष्टदायक दण्ड है।

(51) और उनको इब्राहीम के अतिथियों के वृत्तान्त के माध्यम से सचेत करो। (52) जब वह उसके पास आये फिर उन्होंने सलाम किया। इब्राहीम ने कहा कि हमें तुम लोगों से डर लग रहा है। (53) उन्होंने कहा कि डरो नहीं, हम तुमको एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं। जो बड़ा ज्ञानी होगा। (54) इब्राहीम ने कहा, क्या तुम इस बुढ़ापे में मुझको सन्तान की शुभ सूचना

देते हो। तो तुम किस प्रकार की शुभ सूचना मुझको दे रहे हो। (55) उन्होंने कहा कि हम तुम्हें सच्चाई के साथ शुभ सूचना देते हैं। अतः तू निराश होने वालों में से न बनो। (56) इब्राहीम ने कहा कि अपने पालनहार की कृपा से भटके हुए लोगों के अतिरिक्त और कौन निराश हो सकता है।

(57) कहा ऐ भेजे हुए फ़रिश्तो, अब तुम्हारा अभियान क्या है। (58) उन्होंने कहा कि हम एक अपराधी क़ौम की ओर भेजे गये हैं। (59) परन्तु लूत के घरवाले, कि हम उन सबको बचा लेंगे। (60) अतिरिक्त उसकी पत्नी के कि हमने ठहरा लिया है कि वह अवश्य अपराधी लोगों में रह जायेगी।

(61) फिर जब भेजे हुए फ़रिश्ते लूत के परिवार के पास आये। (62) उन्होंने कहा कि तुम लोग अपरिचित प्रतीत होते हो। (63) उन्होंने कहा कि नहीं, बल्कि हम तुम्हारे पास वह चीज़ लेकर आये हैं जिसमें यह लोग सन्देह करते हैं। (64) और हम तुम्हारे पास सच्चाई (सत्य) के साथ आये हैं, और हम पूर्णतः सच्चे हैं। (65) अतः तुम कुछ रात (शेष) रहे अपने घरवालों के साथ निकल जाओ। और तुम उनके पीछे चलो और तुममें से कोई पीछे मुड़कर न देखे और वहाँ चले जाओ जहाँ तुमको जाने का आदेश है। (66) और हमने लूत के पास आदेश भेजा कि भोर होते ही इन लोगों की जड़ कट जायेगी।

(67) और नगर के लोग प्रसन्न होकर आये। (68) उसने कहा ये लोग मेरे अतिथि हैं, तुम लोग मुझको अपमानित न करो।

(69) और तुम अल्लाह से डरो और मुझको लज्जित न करो। (70) उन्होंने कहा क्या हमने तुमको समस्त संसार के लोगों से मना नहीं कर दिया। (71) उसने कहा कि यह मेरी बेटियाँ हैं यदि तुमको करना है।

(72) तेरे प्राणों की सौगन्ध, वह अपनी मस्ती में अचेत थे। (73) अतः सूर्योदय के समय ही उनको चिंघाड़ ने पकड़ लिया। (74) फिर हमने उस नगर को तलपट कर दिया और उन लोगों पर कंकड़ के पत्थर की वर्षा कर दी। (75) निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं ध्यान करने वालों के लिए। (76) और यह नगर एक सार्वजनिक मार्ग पर स्थित है। (77) निस्सन्देह इसमें निशानी है ईमान वालों (आस्थावानों) के लिए।

(78) और ऐका (तबूक बस्ती का प्राचीन नाम) वाले निश्चित रूप से अत्याचारी थे। (79) तो हमने उनसे बदला (प्रतिशोध) लिया। और यह दोनों नगर खुले मार्ग पर स्थित हैं। (80) और हिज्र वालों ने भी सन्देष्टाओं को झुठलाया। (81) और हमने उनको अपनी निशानियाँ दीं। परन्तु वह उससे मुँह फेरते रहे। (82) और वह पहाड़ों को काट कर उनमें घर बनाते थे कि वह शान्तिपूर्वक उनमें रहें। (83) तो उनको सुबह के समय एक भयानक आवाज़ ने पकड़ लिया। (84) अतः उनका किया हुआ उनके कुछ काम न आया।

(85) और हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच है, निरूद्देश्य नहीं बनाया और निस्सन्देह कियामत आने वाली है। अतः तुम क्षमा और भले व्यवहार से काम लो। (86) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार सबका सृष्टा है, जानने वाला है।

(87) और हमने तुमको सात मसानी और महान क़ुरआन प्रदान किया है। (88) तुम उस सांसारिक संसाधनों की ओर आँख उठाकर न देखो जो हमने उनमें से विभिन्न लोगों को दी हैं और उन पर दुख न करो और ईमान वालों पर अपने स्नेह की बाँहें झुका दो। (89) और कहो कि मैं एक स्पष्ट डराने वाला हूँ। (90) उसी तरह हमने उन विभाजित करने वालों पर भी उतारा था। (91) जिन्होंने अपने क़ुरआन को खंड-खंड कर दिया। (92) अतः तेरे पालनहार की सौगन्ध हम उन सबसे अवश्य पूछेंगे। (93) जो कुछ वह करते थे।

(94) अतः जिस चीज़ का तुमको आदेश मिला है, उसको स्पष्ट सुना दो और मुशिरक़ों (सत्य में मिलावट करने वालों) से मुँह मोड़ लो। (95) हम तुम्हारी ओर से उन उपहास करने वालों के लिए काफ़ी हैं। (96) जो अल्लाह के साथ दूसरे उपास्य को साझी बनाते हैं। तो शीघ्र ही वह जान लेंगे। (97) और हम जानते हैं कि जो कुछ वह कहते हैं, उससे तुम्हारा दिल संकुचित होता है। (98) अतः तुम अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उसका गुणगान करो। और सजदा करने वालों में से बनो। (99) और अपने पालनहार की उपासना करो। यहाँ तक कि तुम्हारे पास निश्चित (यक़ीनी) बात आ जाये।

16. सूरह अन-नह्ल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) आ गया अल्लाह का फ़ैसला (निर्णय), अतः उसकी जल्दी न करो। वह पवित्र है और उच्चतर है उससे जिसको वह अल्लाह के समकक्ष ठहराते हैं। (2) वह फ़रिश्तों को अपने आदेश वह्य के साथ उतारता है अपने उपासकों में से जिस पर चाहता है कि लोगों को सचेत कर दो कि मेरे अतिरिक्त कोई उपासना के योग्य नहीं। तो तुम मुझसे ड़रो। (3) उसने आकाशों और पृथ्वी को उद्देश्य पूर्वक पैदा किया है। वह उच्चतर है उस शिर्क (अल्लाह के साझीदार ठहराने) से जो वह कर रहे हैं।

(4) उसने मनुष्य को एक बूँद (वीर्य) से बनाया। फिर वह अचानक खुल्लम-खुल्ला झगड़ने लगा। (5) और उसने मवेशियों (पशुओं) को बनाया, उनमें तुम्हारे लिए परिधान भी है और भोजन-सामग्री भी और दूसरे लाभ भी, और उनमें से तुम खाते भी हो। (6) और उनमें तुम्हारे लिए सौन्दर्य है, जबकि सायं के समय तुम उनको लाते हो और जब प्रातःकाल छोड़ते हो। (7) और वह तुम्हारे बोझ ऐसे स्थानों तक पहुँचाते हैं जहाँ तुम कठोर परिश्रम के बिना नहीं पहुँच सकते थे। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार बहुत करूणामय, दयावान है। (8) और उसने घोड़े और खच्चर और गधे पैदा किये ताकि तुम उन पर सवार हो और सौन्दर्य के लिए भी और वह ऐसी चीज़ें पैदा करता है जो तुम नहीं जानते।

(9) और अल्लाह तक पहुँचता है सीधा मार्ग। और कुछ मार्ग टेढ़े भी हैं और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको सन्मार्ग प्रदान कर देता।

(10) वही है जिसने आसमान से पानी उतारा, तुम उसमें से पीते हो और उसी से वृक्ष होते हैं जिनमें तुम चराते हो। (11) वह उसी से तुम्हारे लिए खेती और ज़ैतून और खजूर और अंगूर और प्रत्येक प्रकार के फल उगाता है। निस्सन्देह इसके अन्दर निशानी है उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं।

(12) और उसने तुम्हारे काम में लगा दिया रात को और दिन को और सूर्य को और चन्द्रमा को और तारे भी उसके आदेश से कार्यरत हैं। निश्चय

ही इसमें निशानियाँ हैं बुद्धिमान लोगों के लिए। (13) और भूमि में जो वस्तुएँ भिन्न-भिन्न प्रकार की तुम्हारे लिए फैलायीं निस्सन्देह उसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो शिक्षा प्राप्त करें।

(14) और वही है जिसने समुद्र को तुम्हारे अधीन कर दिया, ताकि तुम उसमें से ताज़ा माँस खाओ और उससे आभूषण निकालो जिसको तुम पहनते हो और तुम नौकाओं को देखते हो कि उसमें चीरती हुई चलती हैं और ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता अपनाओ।

(15) और उसने पृथ्वी में पहाड़ रख दिये ताकि वह तुमको लेकर डगमगाने न लगे और उसने नदियाँ और दिशाएं बनायीं ताकि तुम मार्ग प्राप्त करो। (16) और बहुत से अन्य मार्ग चिन्ह भी हैं, और लोग तारों से भी मार्ग ज्ञात करते हैं।

(17) फिर क्या जो पैदा करता है वह समान है उसके जो कुछ पैदा नहीं कर सकता, क्या तुम सोचते नहीं। (18) यदि तुम अल्लाह के उपहारों को गिनो तो तुम उनको गिन न सकोगे, निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (19) और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो।

(20) और जिनको लोग अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हैं, वह किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते और वह स्वंय पैदा किए हुए हैं। (21) वह मृत हैं उनमें प्राण नहीं और वह नहीं जानते कि वह कब (जीवित करके) उठायें जायेंगे। (22) तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य है, परन्तु जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते, उनके दिल अवज्ञाकारी हैं और वह घमण्ड करते हैं। (23) अल्लाह निश्चित रूप से जानता है जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह प्रकट करते हैं। निस्सन्देह वह घमण्ड करने वालों को पसन्द नहीं करता।

(24) और जब उनसे कहा जाये कि तुम्हारे पालनहार ने क्या चीज़ उतारी है तो वह कहते हैं कि गुज़रे हुए लोगों की कहानियाँ हैं। (25) ताकि वह उठाये जाने के दिन अपने बोझ भी पूरे उठायें और उन लोगों के बोझ में से भी जिनको वह बिना किसी ज्ञान के पथभ्रष्ट कर रहे हैं। याद रखो, बहुत बुरा है वह बोझ जिसको वह उठा रहे हैं।

(26) इनसे पहले वालों ने भी युक्तियाँ कीं। फिर अल्लाह उनके भवन पर बुनियादों से आ गया। तो छत ऊपर से उनके ऊपर गिर पड़ी और उन पर यातना वहाँ से आ गयी जहाँ से उनको कल्पना भी न थी। (27) फिर क़यामत (उठाये जाने) के दिन अल्लाह उनको अपमानित करेगा और कहेगा कि वह मेरे साझीदार कहाँ हैं जिनके लिए तुम झगड़ा किया करते थे। जिनको ज्ञान प्रदान किया गया था वह कहेंगे कि आज अपमान और यातना अवज्ञाकारियों पर है।

(28) जिन लोगों को फ़रिश्ते इस दशा में मृत्यु देंगे कि वह अपने आप पर अत्याचार कर रहे होंगे तो उस समय वह हथियार डाल देंगे कि हम तो कोई बुरा काम न करते थे, हाँ निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते थे। (29) अब नरक के दरवाज़ों में प्रवेश हो जाओ। उसमें सदैव-सदैव रहो। तो कैसा बुरा ठिकाना है घमण्ड करने वालों का।

(30) और जो तक़्वा (अल्लाह का डर) वाले हैं उनसे कहा गया कि तुम्हारे पालनहार ने क्या चीज़ उतारी है तो उन्होंने कहा कि भली बात। जिन लोगों ने भलाई की, उनके लिए इस संसार में भी भलाई है और परलोक का घर श्रेष्ठ है और क्या अच्छा घर है डरने वालों का। (31) सदैव रहने के बाग़ हैं जिनमें वह प्रवेश करेंगे, उनके नीचे नहरे बहती होंगी। उनके लिए वहाँ सब कुछ होगा जो वह चाहें, अल्लाह परहेज़गारों (संयमी लोग) को ऐसा ही बदला देगा। (32) जिनके प्राणों को फ़रिश्ते इस दशा में निकालते हैं कि वह पवित्र हैं। फ़रिश्ते कहते हैं तुम पर सलामती हो, जन्नत में प्रवेश करो अपने कर्मों के बदले में।

(33) क्या यह लोग इसकी प्रतीक्षा में हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आयें या तुम्हारे पालनहार का आदेश आ जाये। ऐसा ही इनसे पहले वालों ने किया। और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वह स्वंय ही अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे। (34) फिर उनको उनके बुरे कर्म के दण्ड मिले। और जिस चीज़ का वह उपहास करते थे, उसने उनको घेर लिया।

(35) और जिन लोगों ने शिर्क (अल्लाह के साझीदार) किया वह कहते हैं, यदि अल्लाह चाहता तो हम उसके अतिरिक्त किसी वस्तु की उपासना न

करते, न हम और न हमारे पूर्वज, और न हम उसके बिना किसी वस्तु को अवैध ठहराते। ऐसा ही उनसे पहले वालों ने किया था, अतः सन्देष्टाओं का दायित्व तो मात्र स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

(36) और हमने प्रत्येक उम्मत (समुदाय) में एक सन्देष्टा भेजा कि अल्लाह की उपासना करो और ताग़ूत (शैतान) से बचो, तो उनमें से कुछ को अल्लाह ने सन्मार्ग प्रदान किया और किसी पर पथभ्रष्टता सिद्ध हो कर रही। अतः धरती पर चल-फिर कर देखो कि झुठलाने वालों का परिणाम क्या हुआ। (37) यदि तुम (संदेष्टा) उसके मार्गदर्शन के अभिलाषी हो तो अल्लाह जिसको भटका देता है उसको मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता और उनका कोई सहायक नहीं।

(38) और यह लोग अल्लाह की क़समें खाते हैं, कठोर क़समें, कि जो व्यक्ति मर जायेगा अल्लाह उसको नहीं उठायेगा। हाँ, यह उसके ऊपर एक पक्का वादा है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (39) ताकि उनके समक्ष उस चीज़ को स्पष्ट कर दें जिसमें वह मतभेद कर रहे हैं और अवज्ञा करने वाले लोग जान लें कि वह झूठे थे। (40) जब हम किसी चीज़ का संकल्प करते हैं तो इतना ही हमारा कहना होता है कि हम उसको कहते हैं कि हो जा तो वह हो जाती है।

(41) और जिन लोगों ने अल्लाह के लिए अपना देश छोड़ा, इसके बाद कि उन पर अत्याचार किया गया, हम उनको संसार में भी अवश्य अच्छा ठिकाना देंगे और परलोक का पुण्य तो बहुत बड़ा है, काश वह जानते। (42) वह ऐसे हैं जो धैर्य रखते हैं और अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं।

(43) और हमने तुमसे पहले भी मनुष्यों को ही संन्देष्टा बनाकर भेजा, जिनकी ओर हम वह्य (श्रुति भेजते) करते थे, अतः ज्ञान वालों से पूछ लो यदि तुम नहीं जानते। (44) हमने भेजा था उनको प्रमाणों और किताबों के साथ। और हमने तुम पर भी अनुस्मरण उतारा ताकि तुम लोगों पर उस चीज़ को स्पष्ट कर दो जो उनकी ओर उतारी गई है और ताकि वह चिन्तन करें।

(45) क्या वह लोग जो बुरी युक्तियाँ कर रहे हैं, वह इस बात से निश्चिन्त हैं कि अल्लाह उनको भूमि में धँसा दे या उन पर यातना वहाँ से आ जाये

जहाँ से उनको कल्पना भी न हो। (46) या उनको चलते-फिरते पकड़ ले तो वह लोग अल्लाह को विवश नहीं कर सकते। (47) या उनको भय की दशा में पकड़ ले। अतः तुम्हारा पालनहार स्नेहपूर्ण और कृपाशील है।

(48) क्या वह नहीं देखते कि अल्लाह ने जो चीज़ भी पैदा की है उसकी परछाइयाँ दायीं ओर और बायीं ओर झुक जाती हैं, अल्लाह को सजदा करते हुए, और वह सब विनम्र हैं। (49) और अल्लाह ही को सजदा करती हैं जितनी चीज़ें गतिशील हैं आकाशों और धरती में। और फ़रिश्ते भी और वह घमण्ड नहीं करते। (50) वह अपने ऊपर अपने पालनहार से डरते हैं और वही करते हैं जिसका उनको आदेश मिलता है।

(51) और अल्लाह ने आदेश दिया कि दो उपास्य मत बनाओ। वह एक ही उपास्य है, तो मुझ ही से डरो। (52) और उसी का है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है। और उसी का आज्ञापालन है सदैव। तो क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों से डरते हो।

(53) और तुम्हारे पास जो नेमत (उपकार) भी है, वह अल्लाह ही की ओर से है। फिर जब तुमको कष्ट पहुँचता है तो उससे फ़रियाद (सहायता की गुहार) करते हो। (54) फिर जब वह तुमसे कष्ट दूर कर देता है तो तुममें से एक समूह अपने पालनहार का साझी ठहराने लगता है। (55) ताकि वह अवज्ञाकारी हो जायें उस चीज़ से जो हमने उनको प्रदान की है। अतः कुछ दिन लाभ उठा लो। शीघ्र ही तुम जान लोगे। (56) और यह लोग हमारी दी हुई चीज़ों में से उनका हिस्सा लगाते हैं जिनके विषय में इनको कुछ ज्ञान नहीं। अल्लाह की सौगन्ध, जो झूठा आरोप तुम लगा रहे हो, उसकी तुमसे अवश्य पूछ होगी।

(57) और वह अल्लाह के लिए बेटियाँ ठहराते हैं, अल्लाह इससे पवित्र है, और अपने लिए वह जो दिल चाहता है। (58) और जब उनमें से किसी को बेटी की शुभ सूचना दी जाये तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है। और वह अपने आप में घुटता रहता है। (59) जिस चीज़ की उसको शुभ सूचना दी गई है, उसके अपमान से लोगों से छिपता फिरता है। उसको अपमान के साथ रख छोड़े या उसको मिट्टी में दबा दे। क्या ही बुरा निर्णय है जो वह करते हैं।

(60) बुरी मिसाल है उन लोगों के लिए जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और अल्लाह के लिए श्रेष्ठ मिसालें हैं। वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

(61) और यदि अल्लाह लोगों को उनके अत्याचार पर पकड़ता तो पृथ्वी पर किसी जीवधारी को न छोड़ता। परन्तु वह एक निर्धारित समय तक लोगों को अवकाश देता है। फिर जब उनका नियत समय आ जायेगा तो वह न एक घड़ी पीछे हट सकेंगे और न आगे बढ़ सकेंगे। (62) और वह अल्लाह के लिए वह चीज़ ठहराते हैं जिसको अपने लिए पसन्द नहीं करते हैं और उनके मुँह झूठ बोलते हैं कि उनके लिए भलाई है। निश्चित रूप से उनके लिए नरक है और वह अवश्य उसमें पहुँचा दिये जायेंगे।

(63) अल्लाह की सौगन्ध, हमने तुमसे पहले विभिन्न क़ौमों की ओर सन्देष्टा भेजे। फिर शैतान ने उनके कर्म उनको सुन्दर करके दिखाये। अतः वही आज उनका साथी है और उनके लिए एक कष्टप्रद यातना है। (64) और हमने तुम पर किताब मात्र इसलिए अवतरित की है कि तुम उनको वह चीज़ स्पष्ट रूप से सुना दो जिसमें वह विभेद कर रहे हैं, और वह मार्गदर्शन और दयालुता है उन लोगों के लिए जो ईमान लायें।

(65) और अल्लाह ने आसमान से पानी उतरा । फिर उससे भूमि को उसके मृत होने के उपरान्त जीवित कर दिया। निस्सन्देह इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (66) और निस्सन्देह तुम्हारे लिए मवेशियों (पशुओं) में शिक्षा है। हम उनके पेटों के अन्दर के गोबर और ख़ून के बीच से तुमको शुद्ध दूध पिलाते हैं, जो अत्यन्त प्रिय है पीने वालों के लिए। (67) और खजूर और अंगूर के फलों से भी। तुम उनसे मादक वस्तुएँ भी बनाते हो और खाने की अच्छी वस्तुएँ भी। निस्सन्देह इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं।

(68) और तुम्हारे पालनहार ने मधुमक्खी पर वह्य (सन्देश) किया कि पहाड़ों और वृक्षों और जहाँ टट्टियाँ बाँधते हैं, उनमें घर बना। (69) फिर हर प्रकार के फलों का रस चूस और अपने पालनहार के निर्धारित किये हुए रास्तों पर चल। उसके पेट से पीने की चीज़ निकलती है, उसके रंग भिन्न हैं, उसमें

लोगों के लिए आरोग्य है। निस्सन्देह इसमें निशानी है उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं।

(70) और अल्लाह ने तुमको पैदा किया, फिर वही तुमको मृत्यु देता है। और तुममें से कुछ वह हैं जो (बुढ़ापे की) निकृष्टम अवस्था तक पहुँचाये जाते हैं कि जानने के बाद वह कुछ न जाने। निस्सन्देह अल्लाह सर्वज्ञ है, बड़ा सामर्थ्यवान है।

(71) और अल्लाह ने तुममें से कुछ को कुछ पर जीविका में श्रेष्ठता दे दी। अतः जिनको श्रेष्ठता दी गई है वह अपनी जीविका अपने दासों को नहीं दे देते कि वह उसमें समान हो जायें। फिर क्या वह अल्लाह के उपकारों को झुठलाते हैं।

(72) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम ही में से पत्नियाँ बनाईं और तुम्हारी पत्नियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किये, और तुमको सुथरी वस्तुएँ खाने के लिए दीं। फिर क्या यह असत्य के मानने वाले हैं और अल्लाह के उपकारों को झुठलाते हैं। (73) और वह अल्लाह के अतिरिक्त उन वस्तुओं की उपासना करते हैं जो न उनके लिए आकाश से किसी जीविका पर अधिकार रखती हैं और न भूमि से, और न वह सामर्थ्य रखती हैं। (74) अतः तुम अल्लाह के लिए मिसालें (उदाहरण) न बयान करो। निस्सन्देह अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते।

(75) और अल्लाह मिसाल (उदाहरण) बयान करता हैं। एक ऐसे दास की जो किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखता, और एक व्यक्ति है जिसको हमने अपने पास से अच्छी जीविका दी है, वह उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करता है। क्या ये समान होंगे। सम्पूर्ण प्रसंशा अल्लाह के लिए है, परन्तु इनमें अधिकतर लोग नहीं जानते।

(76) और अल्लाह एक और मिसाल बयान करता है कि दो व्यक्ति हैं जिसमें से एक गूगाँ है, कोई काम नहीं कर सकता और वह अपने स्वामी पर एक बोझ है। वह उसको जहाँ भेजता है, वह कोई काम उचित ढ़ंग से करके नहीं लाता। क्या वह और ऐसा व्यक्ति समान हो सकते हैं जो न्याय की शिक्षा देता है और वह एक सीधे मार्ग पर है।

(77) और आसमानों और पृथ्वी के रहस्यों का संबन्ध अल्लाह ही से

है। और क़ियामत (उठाये जाने का दिन) बस ऐसा होगा जैसे आँख झपकना, बल्कि इससे भी शीघ्रं निस्सन्देह अल्लाह को हर चीज़ की सामर्थ्य प्राप्त है।

(78) और अल्लाह ने तुमको तुम्हारी माँओं के पेट से निकाला, तुम किसी चीज़ को न जानते थे। और उसने तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाये ताकि तुम आभार व्यक्त करो।

(79) क्या लोगों ने पक्षियों को नहीं देखा कि वह आसमान के वायुमण्डल में विचरण कर रहे हैं। उनको मात्र अल्लाह थामे हुए है। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाये हैं। (80) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को शान्ति का स्थान बनाया और तुम्हारे लिए पशुओं की खाल के घर बनाये जिनको तुम अपनी यात्रा के दिन और ठहरने के दिन हल्का पाते हो। और उनके ऊन और उनके रोयें और उनके बालों से घर का सामान और लाभ की वस्तुएँ एक अवधि तक के लिए बनायीं।

(81) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा की हुई चीज़ों की छाया बनायी और तुम्हारे लिए पहाड़ों में छिपने का स्थान बनाया और तुम्हारे लिए ऐसे वस्त्र बनाये जो तुमको गर्मी से बचाते हैं और ऐसे वस्त्र बनाये जो युद्ध में तुमको बचाते हैं। इसी प्रकार अल्लाह तुम पर अपने उपकारों को पूर्ण करता है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो।

(82) अतः यदि वह मुँह मोड़ें तो तुम्हारे ऊपर मात्र स्पष्ट रूप से पहुँचा देने का दायित्व है। (83) वह लोग अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं फिर वह उसको झुठलाने वाले बन जाते हैं और उनमें अधिकतर लोग अकृतज्ञ हैं।

(84) और जिस दिन हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) में से एक गवाह खड़ा करेंगे। फिर झुठलाने वालों को मार्गदर्शन न दिया जायेगा। और न उनसे क्षमा-याचना स्वीकार की जायेगी। (85) और जब अत्याचारी लोग यातना को देखेंगे तो वह यातना न उनसे हल्की की जायेगी और न उन्हें अवकाश दिया जायेगा।

(86) और जब शिर्क (साझीदार) करने वाले लोग अपने साझीदारों को देखेंगे तो कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, यही हमारे वह साझीदार हैं जिनको हम तुझे छोड़ कर पुकारते थे। तब वह बात उनके ऊपर डाल देंगे कि तुम झूठे हो।

(87) और उस दिन वह अल्लाह के आगे झुक जायेंगे और जो कुछ वह गढ़ा करते थे उनसे खो जायेंगे। (88) जिन्होंने झुठलाया और लोगों को अल्लाह के मार्ग से रोका, हम उनकी यातना पर यातना को बढ़ायेंगे, उस बिगाड़ के कारण जो वह पैदा करते थे।

(89) और जिस दिन हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) में एक गवाह उन्हीं में से उन पर उठायेंगे और तुमको उन लोगों पर गवाह बनाकर लायेंगे और हमने तुम पर किताब उतारी है प्रत्येक चीज़ को स्पष्ट कर देने के लिए। वह मार्गदर्शन और दया है और शुभ सूचना है आज्ञाकारियों के लिए।

(90) निस्सन्देह अल्लाह आदेश देता है न्याय का और उपकार का और रिश्तेदारों को देने का। और अल्लाह रोकता है अश्लीलताओं से और बुराईयों से और विद्रोह से। अल्लाह तुमको उपदेश देता है, ताकि तुम अनुस्मरण प्राप्त करो।

(91) और तुम अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो जबकि तुम परस्पर प्रतीज्ञा कर लो। और सौगन्धों को पक्का करने के बाद न तोड़ो। और तुम अल्लाह को अपने ऊपर ज़मानतदार भी बना चुके हो। निस्सन्देह अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (92) और तुम उस महिला के जैसे न बनो जिसने अपना श्रमपूर्वक काता हुआ सूत टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ दिया। तुम अपनी सौगन्धों को परस्पर बिगाड़ पैदा करने का माध्यम बनाते हो, केवल इस कारण से कि एक समुदाय दूसरे समुदाय से बढ़ जाये। और अल्लाह इसके माध्यम से तुम्हारी परीक्षा लेता है और वह क़ियामत (उठाये जाने) के दिन उस चीज़ को भली प्रकार तुम पर प्रकट कर देगा जिसमें तुम मतभेद कर रहे हो।

(93) और यदि अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक ही उम्मत बना देता, परन्तु वह पथहीन कर देता है जिसको चाहता है और मार्गदर्शन दे देता है जिसको चाहता है, और अवश्य तुमसे तुम्हारे कर्मों की पूछ होगी।

(94) और तुम अपनी सौगन्धों को परस्पर धोखे का माध्यम न बनाओ कि कोई क़दम जमने के बाद फिसल जाये और तुम इस बात का दण्ड चखो कि तुमने अल्लाह के मार्ग से रोका और तुम्हारे लिए एक बड़ी यातना है।

(95) और अल्लाह की प्रतीज्ञा को थोड़े लाभ के लिए न बेचो। जो कुछ अल्लाह के पास है, वह तुम्हारे लिए श्रेष्यकर है यदि तुम जानो।

(96) जो कुछ तुम्हारे पास है वह समाप्त हो जायेगा और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह हमेशा रहने वाला है। और जो लोग धैर्य रखेंगे, हम उनके अच्छे कर्मों का बदला उनको अवश्य देंगे। (97) जो व्यक्ति कोई भला कर्म करेगा, चाहे वह मर्द हो या औरत, शर्त यह है कि वह मोमिन (आस्थावान) हो तो हम उसको जीवन प्रदान करेंगे, एक भला जीवन, और जो कुछ वह करते रहे, उसका हम उनको बेहतरीन बदला देंगे।

(98) अतः जब तुम क़ुरआन को पढ़ो तो धिक्कारे हुए शैतान से अल्लाह की शरण माँगो। (99) उसका वश उन लोगों पर नहीं चलता जो ईमान वाले हैं और अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं। (100) उसका वश मात्र उन लोगों पर चलता है जो उससे सम्बन्ध रखते हैं, और जो अल्लाह के साथ शिर्क करते हैं।

(101) और जब हम एक आयत के स्थान पर दूसरी आयत बदलते हैं, और अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ वह उतारता है, तो वह कहते हैं कि तुम गढ़ लाये हो। बल्कि उनमें अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते। (102) कहो कि इसको पवित्र आत्मा (जिब्रील) ने तुम्हारे पालनहार की ओर से तथ्यों के साथ उतारा है, ताकि वह ईमान वालों को दृढ़ रखे और वह मार्गदर्शन और शुभ सूचना हो आज्ञाकारियों के लिए।

(103) और हमको ज्ञात है कि यह लोग कहते हैं कि इसको तो एक मनुष्य सिखाता है। जिस व्यक्ति की ओर वह संकेत करते हैं, उसकी भाषा अजमी (ग़ैर-अरबी) है। और यह क़ुरआन स्पष्ट अरबी भाषा में है। (104) निस्सन्देह जो लोग अल्लाह की आयतों पर आस्था प्रकट नहीं करते, अल्लाह उनको कभी मार्ग नहीं दिखायेगा और उनके लिए कष्टदायक दण्ड हैं। (105) झूठ तो वह लोग गढ़ते हैं जो अल्लाह की आयतों पर विश्वास नहीं रखते और यही लोग झूठे हैं।

(106) जो व्यक्ति विश्वास करने के पश्चात अल्लाह से विमुख हो जायेगा, इसके अतिरिक्त कि जिसको विवश किया गया हो शर्त यह है कि उसका दिल

ईमान पर जमा हुआ हो, परन्तु जो व्यक्ति दिल खोलकर अवज्ञाकारी हो जाये तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का प्रकोप होगा और उनको बड़ा दण्ड दिया जायेगा। (107) यह इस कारण से कि उन्होंने परलोक की तुलना में सांसारिक जीवन को पसन्द किया और अल्लाह अवज्ञाकारियों को मार्ग नहीं दिखाता। (108) यह वह लोग हैं कि अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनके कानों पर और उनकी आँखों पर मुहर लगा दी है। और यह लोग पूर्णतः निश्चेत हैं (109) निश्चय ही परलोक में यही लोग घाटे में रहेंगे।

(110) फिर तेरा पालनहार उन लोगों के लिए जिन्होंने परीक्षा में डाले जाने के बाद हिजरत (प्रवास) की, फिर संघर्ष किया और दृढ़ रहे, तो इन बातों के बाद निस्सन्देह तेरा पालनहार क्षमा करने वाला, कृपाशील है। (111) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपने ही पक्ष में बोलता हुआ आयेगा। और प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा बदला मिलेगा और उन पर अत्याचार न किया जायेगा।

(112) और अल्लाह एक बस्ती वालों की मिसाल बयान करता है कि वह सुख-शान्ति में थे। उनको उनकी जीविका प्रचुरता के साथ प्रत्येक दिशा से पहुँच रही थी। फिर उन्होंने अल्लाह के उपकारों के साथ कृतघ्नता की तो अल्लाह ने उनको उनके कर्मों के कारण भूख़ और भय का स्वाद चखाया। (113) और उनके पास एक सन्देष्टा उन्हीं में से आया तो उन्होंने उसको झूठा बताया, फिर उनको यातना ने पकड़ लिया और वह अत्याचारी थे।

(114) अतः जो चीज़ें अल्लाह ने तुमको वैध और पवित्र दी हैं, उनमें से खाओ और अल्लाह के उपकार का आभार प्रकट करो, यदि तुम उसकी उपासना करते हो। (115) उसने तो तुम पर मात्र मुर्दार को अवैध किया है और ख़ून को और सूअर के माँस को और जिस पर अल्लाह के अतिरिक्त दूसरों का नाम लिया गया हो। फिर जो व्यक्ति विवश हो जाये शर्त यह है कि वह न इच्छुक हो और न सीमा से बढ़ने वाला हो, तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(116) और अपने मुँह के गढ़े हुए झूठ के आधार पर यह न कहो कि यह वैध है और यह अवैध है कि तुम अल्लाह पर झूठा आरोप लगाओ।

जो लोग अल्लाह पर झूठा आरोप लगायेंगे, वह सफलता प्राप्त नहीं करेंगे (117) वह थोड़ा लाभ उठा लें, और उनके लिए कष्टप्रद यातना है।

(118) और यहूदियों पर हमने वह चीज़ें अवैध कर दी थीं जो हम इससे पहले तुमको बता चुके हैं। और हमने उन पर कोई अत्याचार नहीं किया बल्कि वह स्वंय अपने ऊपर अत्याचार करते रहे।

(119) फिर तुम्हारा पालनहार उन लोगों के लिए जिन्होंने अज्ञानतावश बुराई कर ली, उसके बाद तौबा (पश्चाताप करते हुए क्षमा याचना) की और अपना सुधार किया तो तुम्हारा पालनहार इसके बाद क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(120) निस्सन्देह, इब्राहीम एक अलग उम्मत (समुदाय) था, अल्लाह का आज्ञाकारी, और उसकी ओर एकाग्रचित्र, और वह शिर्क (मूर्ति-पूजा) करने वालों में न था। (121) वह उसकी नेमतों का आभार प्रकट करने वाला था। अल्लाह ने उसको चुन लिया। और सीधे रास्ते की ओर उसका मार्गदर्शन किया। (122) और हमने उसको संसार में भी भलाई प्रदान की और परलोक में भी वह अच्छे लोगों में से होगा। (123) फिर हमने तुम्हारी ओर वह्य (सन्देश) भेजी कि इब्राहीम के पंथ का अनुसरण करो जो एकाग्र था और वह शिर्क करने वालों में से न था।

(124) सब्त (शनिवार का नियम) उन्हीं लोगों पर लागू किया गया था जिन्होंने उसमें मतभेद किया था। और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार क़ियामत (उठाये जाने) के दिन उनके बीच निर्णय कर देगा जिस बात में वह मतभेद कर रहे थे।

(125) अपने पालनहार के मार्ग की ओर विवेक और सदुपदेश के साथ बुलाओ और उनसे अच्छे ढंग से वार्ता करो। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार भली प्रकार जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटका हुआ है और वह उनको भी भली-भाँति जानता है जो मार्ग पर चलने वाले हैं।

(126) और यदि तुम बदला लो तो उतना ही बदला लो जितना तुम्हें कष्ट पहुंचा हो। और यदि तुम धैर्य रखो तो धैर्य रखने वालों के लिए अधिक श्रेयष्कर है। (127) और धैर्य रखो और तुम्हारा धैर्य रखना अल्लाह ही

की कृपा से है और तुम उन पर अफ़सोस न करो और जो कुछ युक्तियाँ वह कर रहे हैं, उससे दिल छोटा न करो। (128) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों के साथ है जो संयमी हैं और जो भलाई करने वाले हैं।

17. सूरह बनी इसराईल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) पवित्र है वह जो ले गया एक रात अपने बन्दे (मुहम्मद सल्ल0) को मस्जिद-ए हराम (काबा) से दूरवर्ती उस मस्जिद (बैतुल-मक़्दिस) जिसके वातावरण को हमने बरकत (विभूति) वाला बनाया है, ताकि हम उसको अपनी कुछ निशानियाँ दिखायें। निस्सन्देह वह सुनने वाला, देखने वाला है।

(2) और हमने मूसा को किताब दी और उसको इस्राईल की सन्तान के लिए मार्गदर्शन बनाया कि मेरे अतिरिक्त किसी को अपना कार्य-साधक न ठहराओ। (3) तुम उन लोगों की सन्तान हो जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था, निस्सन्देह वह एक कृतज्ञ बन्दा था।

(4) और हमने इस्राईल की सन्तान को किताब में बता दिया था कि तुम दो बार भूमि (सीरिया) में बुराई करोगे और अत्यधिक विद्रोह का प्रदर्शन करोगे। (5) फिर जब इनमें से पहला वादा आया तो हमने तुम पर अपने बन्दे भेजे, अत्यन्त सामर्थ्यवान। वह घरों में घुस पड़े और वादा पूरा होकर रहा। (6) फिर हमने तुम्हारी बारी उन पर लौटा दी और सम्पत्ति और सन्तान के माध्यम से तुम्हारी सहायता की और तुमको बहुसंख्यक दल बना दिया।

(7) यदि तुम भला कर्म करोगे तो तुम अपने लिए भला करोगे, और यदि तुम बुरा कर्म करोगे तब भी अपने लिए बुरा करोगे। फिर जब दूसरे वादे का समय आया तो हमने और बन्दे भेजे कि वह तुम्हारे चेहरे को बिगाड़ दें और मस्जिद (बैतुल-मक़्दिस) में घुस जायें जिस तरह वह उसमें पहली बार घुसे थे, और जिस चीज़ पर उनका वश चले उसको नष्ट कर दें। (8) दूर नहीं कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे ऊपर दया करे। और यदि तुम पुनः वही करोगे तो

हम भी वही करेंगे और हमने नरक को अवज्ञाकारियों के लिए कारागार बना दिया है।

(9) निस्सन्देह यह क़ुरआन वह मार्ग दिखाता है जो पूर्णतः सीधा है, और वह शुभ सूचना देता है ईमान वालों को जो भले कर्म करते हैं कि उनके लिए बड़ा बदला है। (10) और यह कि जो लोग परलोक को नहीं मानते, उनके लिए हमने एक दुखद यातना तैयार कर रखी है।

(11) और मनुष्य बुराई माँगता है जिस प्रकार उसको भलाई माँगनी चाहिए और मनुष्य बड़ा ही उतावला है। (12) और हमने रात और दिन को दो निशानियाँ बनाया। फिर हमने रात की निशानी को मिटा दिया और दिन की निशानी को हमने प्रकाशमय बना दिया, ताकि तुम अपने पालनहार की कृपा तलाश करो, और ताकि तुम वर्षों की गणना और हिसाब मालूम करो। और हमने हर चीज़ का भली प्रकार स्पष्ट विवरण दे दिया है।

(13) और हमनें प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसके गले के साथ बाँध दिया है। और हम क़ियामत (उठाये जाने) के दिन उसके लिए एक किताब निकालेंगे जिसको वह खुला हुआ पायेगा। (14) पढ़ अपनी किताब। आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वंय ही पर्याप्त है। (15) जो व्यक्ति सन्मार्ग पर चलता है तो वह अपने ही लिए चलता है, और जो व्यक्ति पथभ्रष्टता अपनाता है, वह भी स्वंय ही के घाटे के लिए पथभ्रष्ट होता है। और कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठायेगा। और हम कभी दण्ड नहीं देते जब तक हम किसी सन्देष्टा को न भेजें।

(16) और जब हम किसी नगर को नष्ट करना चाहते हैं तो उसके सुखभोगी लोगों को आदेश देते हैं, फिर वह उसमें अवज्ञा करते हैं। तब उन पर वचन सिद्ध हो जाता है। फिर हम उस नगर को नष्ट कर देते हैं। (17) और नूह के बाद हमने कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर दिया। और तेरा पालनहार पर्याप्त है अपने बन्दों के पापों को जानने के लिए और उनको देखने के लिए।

(18) जो व्यक्ति आजिला (शीघ्र प्राप्त होने वाला सांसारिक सुख) को चाहता हो, उसको हम उसमें से दे देते हैं, जितना भी हम जिसको देना चाहें। फिर हमने उसके लिए नरक निश्चित कर दी है, वह उसमें प्रवश करेगा, तिरस्कृत

और ठुकराया हुआ बनकर। (19) और जिसने परलोक को चाहा और उसके लिए संधर्ष किया जो कि उसका संघर्ष है और वह मोमिन हो तो ऐसे लोगों का प्रयास स्वीकार्य होगा।

(20) और हम हर एक को तेरे पालनहार की प्रदान की हुई वस्तुओं में से पहुँचाते हैं, उनको भी और इनको भी। और तेरे पालनहार की प्रदान की हुई वस्तुएँ किसी के ऊपर बन्द नहीं। (21) देखो हमने उनके एक को दूसरे पर किस प्रकार श्रेष्ठता प्रदान की हैं। और निश्चित रूप से परलोक और भी अधिक बड़ा है, दर्जा के अनुसार और श्रेष्ठता के अनुसार।

(22) तो अल्लाह के साथ किसी और को उपास्य न बना, अन्यथा तू निन्दित और असहाय होकर रह जायेगा। (23) और तेरे पालनहार ने आदेश कर दिया है कि तुम उसके अतिरिक्त किसी और की उपासना न करो, और माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करो। यदि वह तेरे सामने बुढ़ापे को पहुँच जायें, उनमें से एक या दोनों, तो उनको न उफ़्फ़ कहो और न उनको झिड़को, और उनसे सम्मानपूर्वक बात करो। (24) और उनके सामने विनम्रतापूर्वक स्नेह की बाँहें झुका दो। और कहो कि ऐ पालनहार, इन दोनों पर दया कर जैसा कि इन्होंने मुझे बचपन में पाला। (25) तुम्हारा पालनहार भली प्रकार जानता है कि तुम्हारे दिलों में क्या है। यदि तुम सदाचारी रहोगे तो वह तौबा करने वालों को क्षमा कर देने वाला है।

(26) और सम्बन्धी को उसका अधिकार दो और निर्धन को और यात्री को। और अपव्यय न करो। (27) निस्सन्देह अपव्यय करने वाले शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने पालनहार का अत्यन्त कृतघ्न हैं। (28) और यदि तुमको अपने पालनहार की कृपा की प्रतीक्षा में जिसकी तुम्हें आशा है, उनसे बचना पड़े तो तुम उनसे विनम्रता की बात कहो।

(29) और न तो अपना हाथ गले से बाँध लो और न उसको पूर्णतः खुला छोड़ दो कि तुम निन्दित और असहाय बनकर रह जाओ। (30) निस्सन्देह तेरा पालनहार जिसको चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है। और जिसके लिए चाहता है सीमित कर देता है। निस्सन्देह वह अपने बनदों को जानने वाला, देखने वाला है।

(31) और अपनी सन्तान की निर्धनता के भय से हत्या न करो, हम उनको भी जीविका देते हैं और तुमको भी। निस्सन्देह उनकी हत्या करना बड़ा पाप है। (32) और व्यभिचार के निकट न जाओ, वह अश्लीलता है और बुरा मार्ग है।

(33) और जिस प्राण को अल्लाह ने सम्मानित बनाया है उसकी हत्या न करो परन्तु न्याय पर। और जिस व्यक्ति की अन्यायपूर्वक हत्या की जाये तो हमने उसके उत्तराधिकारी को (ख़ून के बदले का) अधिकार दिया है। तो वह हत्या में सीमा का उल्लंघन न करे, उसकी सहायता की जायेगी।

(34) और तुम अनाथ की पूँजी के निकट न जाओ परन्तु जिस प्रकार कि उचित हो। यहाँ तक कि वह अपनी युवावस्था को पहुँच जाये। और प्रतीज्ञा को पूरा करो निस्सन्देह प्रतीज्ञा की पूछ होगी। (35) और जब नाप कर दो तो पूरा नापो और ठीक तराज़ू से तौल कर दो। यह बेहतर विधि है और इसका परिणाम भी अच्छा है।

(36) और ऐसी चीज़ के पीछे न लगो जिसका तुमको ज्ञान नहीं। निस्सन्देह कान और आँख और दिल सबकी मनुष्य से पूछ होगी। (37) और पृथ्वी पर अकड़कर न चलो। तुम भूमि को फाड़ नहीं सकते और न तुम पहाड़ों की ऊँचाई को पहुँच सकते हो। (38) यह समस्त बुरे कर्म तेरे पालनहार के निकट अप्रीय हैं।

(39) यह वह बातें हैं जो तुम्हारे पालनहार ने हिक्मत तत्त्वज्ञान में से तुम्हारी ओर वह्य (सन्देश के रूप में) की है। और अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बनाना, अन्यथा तुम नरक में डाल दिये जाओगे। निन्दित और तिरस्कृत हो कर।

(40) क्या तुम्हारे पालनहार ने तुमको बेटे चुनकर दिये और अपने लिए फ़रिश्तों में से बेटियाँ बना लीं। निस्सन्देह तुम अत्यन्त कठोर बात कहते हो। (41) और हमने इस क़ुरआन में भिन्न-भिन्न प्रकार से वर्णन किया है ताकि वह अनुस्मरण प्राप्त करें। लेकिन उनकी विमुखता बढ़ती ही जाती है। (42) कहो कि यदि अल्लाह के साथ और भी उपास्य होते जैसा कि लोग कहते हैं, तो वह सिंहासन वाले की ओर अवश्य मार्ग निकालते।

(43) अल्लाह पवित्र और श्रेष्ठ है उससे जो यह लोग कहते हैं। (44) सातों आसमान और पृथ्वी और जो इनमें है, सभी उसकी पवित्रता का वर्णन करते हैं। और कोई चीज़ ऐसी नहीं जो प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता का वर्णन न करती हो। परन्तु तुम उनकी स्तुति को नहीं समझते। निस्सन्देह वह सहनशील है, क्षमा करने वाला है।

(45) और जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो तो हम तुम्हारे और उन लोगों के बीच एक गुप्त पर्दा (आवरण) डाल देते हैं जो परलोक को नहीं मानते। (46) और हम उनके दिलों पर पर्दा रख देते हैं कि वह उसको न समझें और उनके कानों में भारीपन पैदा कर देते हैं और जब तुम क़ुरआन में अकेले अपने पालनहार की चर्चा करते हो तो वह घृणा से पीठ फेर लेते हैं।

(47) और हम जानते हैं कि जब वह तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो वह किस लिए सुनते हैं और जबकि वह परस्पर कानाफूसी करते हैं। ये अत्याचारी कहते हैं कि तुम लोग तो बस एक जादूगर व्यक्ति के पीछे चल रहे हो। (48) देखो तुम्हारे ऊपर वह कैसी-कैसी मिसालें चस्पा कर रहे हैं। यह लोग भटक गये, वह मार्ग नहीं पा सकते।

(49) और वह कहते हैं कि क्या जब हम हड्डी और चुरा हो जायेंगे तो क्या हम फिर नये सिरे से उठाये जायेंगे। (50) कहो कि तुम पत्थर या लोहा हो जाओ। (51) या और कोई चीज़ जो तुम्हारी कल्पना में इनसे भी अधिक कठोर हो। फिर वह कहेंगे कि वह कौन है जो हमको पुनः जीवित करेगा। तुम कहो कि वही जिसने तुमको प्रथम बार पैदा किया है। फिर वह तुम्हारे आगे अपना सिर हिलायेंगे और कहेंगे कि यह कब होगा, कहो कि आश्चर्य नहीं कि उसका समय निकट आ पहुँचा हो। (52) जिस दिन अल्लाह तुमको पुकारेगा तो तुम उसकी प्रशंसा करते हुए उसकी पुकार पर चले आओगे और तुम सोचोगे कि तुम अत्यन्त थोड़ी अवधि तक रहे।

(53) और मेरे बन्दों से कहो कि वही बात कहें जो उपयुक्त हो। शैतान उनके बीच बिगाड़ पैदा करता है। निस्सन्देह शैतान मनुष्य का प्रत्यक्ष शत्रु है।

(54) तुम्हारा पालनहार तुमको भली प्रकार जानता है, यदि वह चाहे तो तुम पर दया करे या यदि वह चाहे तो तुमको दण्ड दे। और हमने तुमको इनका

ज़िम्मेदार (उत्तरदायी) बनाकर नहीं भेजा। (55) और तुम्हारा पालनहार भली-भाँति जानता है उनको जो आसमानों और पृथ्वी में हैं। और हमने कुछ सन्देष्टाओं को कुछ पर श्रेष्ठता प्रदान की है और हमने दाऊद को ज़बूर (किताब) प्रदान की।

(56) कहो कि उनको पुकारो जिनको तुमने अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य समझ रखा है। वह न तुमसे किसी विपत्ति को दूर करने का सामर्थ्य रखते हैं और न वह उसको बदल सकते हैं। (57) जिनको यह लोग पुकारते हैं वह स्वंय अपने पालनहार का सामिप्य ढूँढते हैं कि उनमें से कौन सबसे अधिक निकट हो जाये। और वह अपने पालनहार की कृपा के प्रत्याशी हैं। और वह उसके दण्ड से डरते हैं। वास्तव में तुम्हारे पालनहार का दण्ड डरने ही की चीज़ है।

(58) और कोई नगर ऐसा नहीं जिसको हम क़ियामत (उठाये जाने) से पहले नष्ट न करें या कठोर यातना न दे। यह बात किताब में लिखी हुई है।

(59) और हमको निशानियाँ भेजने से नहीं रोका परन्तु उस चीज़ ने कि अगलों ने या पूर्वजों ने उनको झुठलाया। और हमने समूद को ऊँटनी प्रदान की उनको समझाने के लिए फिर उन्होंने उस पर अत्याचार किया। और निशानियाँ हम केवल डराने के लिए भेजते हैं।

(60) और जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे पालनहार ने लोगों को घेरे में ले लिया है। और वह स्वप्न जो हमने तुमको दिखाया वह मात्र लोगों की जाँच के लिये था, और उस वृक्ष को भी जिसकी क़ुरआन में निन्दा की गई है। और हम उनको डराते हैं, परन्तु उनके विद्रोह की सीमा बढ़ती ही जा रही है।

(61) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो उन्होंने सजदा किया परन्तु इब्लीस ने सजदा नहीं किया। उसने कहा क्या मैं ऐसे व्यक्ति को सजदा करूँ जिसको तूने मिट्टी से बनाया है। (62) उसने कहा, तनिक देख, यह व्यक्ति जिसको तूने मुझ पर वरीयता प्रदान की है यदि तू मुझको क़ियामत के दिन तक अवकाश दे तो मैं थोड़े लोगों के अतिरिक्त इनकी सम्पूर्ण सन्तान को खा जाऊँगा (वश में कर लूंगा)।

(63) अल्लाह ने कहा कि जा, इनमें से जो भी तेरा साथी बना तो नरक तुम सब का पूरा-पूरा बदला है। (64) और उनमें से जिस पर तेरा बस चले,

तू अपनी ध्वनि से उनके क़दम उखाड़ दे और उन पर अपने घुड़सवार और पैदल सेना चढ़ा ला और उनकी सम्पत्ति और सन्तान में उनका साझीदार बन जा और उनसे प्रतिज्ञाएँ कर। और शैतान की प्रतिज्ञा एक धोखे के अतिरिक्त और कुछ नहीं। (65) निस्सन्देह जो मेरे (सच्चे) बन्दे हैं, उन पर तेरा वश नहीं चलेगा और तेरा पालनहार काम बनाने के लिए काफ़ी है।

(66) तुम्हारा पालनहार वह है जो तुम्हारे लिए समुद्र में नौका चलाता है ताकि तुम उसकी कृपा (जीविका) तलाश करो। निस्सन्देह वह तुम्हारे ऊपर कृपाशील है। (67) और जब समुद्र में तुम पर कोई आपदा आती है, तो तुम उन उपास्यों को भूल जाते हो जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते थे। फिर जब वह तुमको सूखी भूमि की ओर बचा लाता है तो तुम पुनः फिर जाते हो। और मनुष्य बड़ा ही कृतघ्न है।

(68) क्या तुम इससे निडर हो गये कि अल्लाह तुमको सूखी भूमि (स्थल) की ओर लाकर भूमि में धँसा दे। या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आँधी भेज दे, फिर तुम किसी को अपना कार्य-साधक न पाओ। (69) या तुम इससे निडर हो गये कि वह तुमको पुनः समुद्र में ले जाये, फिर तुम पर हवा का प्रचण्ड तूफ़ान भेज दे और तुमको तुम्हारी अवज्ञा के कारण डुबा दे। फिर तुम उस पर कोई हमारा पीछा करने वाला न पाओ।

(70) और हमने आदम की सन्तान को सम्मान प्रदान किया और हमने उनको भूमि और समुद्र में सवारी दी और उनको पवित्र वस्तुओं की जीविका प्रदान की और हमने उनको अपनी बहुत सी रचनाओं पर श्रेष्ठता प्रदान की।

(71) जिस दिन हम प्रत्येक समूह को उसके नायक के साथ बुलायेंगे। अतः जिसका कर्म-पत्र उसके दायें हाथ में दिया जायेगा वह लोग अपना कर्म-पत्र पढ़ेंगे और उनके साथ तनिक भी अन्याय नहीं किया जायेगा। (72) और जो व्यक्ति इस संसार में अन्धा रहा, वह परलोक में भी अन्धा रहेगा और वह बहुत दूर पड़ा होगा रास्ते से।

(73) और निकट था कि यह लोग परीक्षा में डाल कर तुमको उससे हटा दें जो हमने तुम पर वह्य (सन्देश) के रूप में भेजा है, ताकि तुम उसके अतिरिक्त हमारी ओर असत्य बात का सम्बन्ध जोड़ो और तब वह तुमको

अपना मित्र बना लेते। (74) और यदि हमने तुमको जमाये न रखा होता तो निकट था कि तुम उनकी ओर कुछ झुक पड़ो। (75) फिर हम तुमको जीवन और मृत्यु दोनो की दोहरी यातना चखाते। इसके बाद तुम हमारे मुक़ाबले में अपना कोई सहायक न पाते।

(76) और यह लोग इस भू-भाग से तुम्हारे क़दम उखाड़ने लगे थे ताकि वह तुमको मक्का से निकाल दें। और यदि ऐसा हुआ तो तुम्हारे बाद ये भी बहुत कम ठहर पाते। (77) जैसा कि उन सन्देष्टाओं के सम्बन्ध में हमारा नियम रहा है जिनको हमने तुमसे पहले भेजा था और तुम हमारे नियम में परिवर्तन न पाओगे।

(78) नमाज़ स्थापित करो सूरज ढ़लने के बाद से रात के अँधेरे तक। और विशेष रूप से की क़िराअत (क़ुरआन पढ़ना)। निस्सन्देह सुबह की क़िराअत में ध्यानमग्नता होती है।

(79) और रात को तहज्जुद (प्रभात पूर्व नमाज़) पढ़ो, यह नफ़्ल (अतिरिक्त नमाज़) है तुम्हारे लिए। आशा है कि तुम्हारा पालनहार तुमको एक प्रशंसित स्थान पर खड़ा करे।

(80) और कहो कि ऐ मेरे पालनहार, मुझको प्रविष्ट कर सच्चा प्रवेश करना और मुझको निकाल सच्चा निकालना। और मुझको अपने पास से सहायक प्रदान कर। (81) और कहो कि सत्य आ गया और असत्य मिट गया। निस्सन्देह असत्य मिटने ही के लिए था।

(82) और हम क़ुरआन में से उतारते हैं जिसमें निदान और दया है ईमान वालों के लिए, और अत्याचारियों के लिए इससे घाटे के अतिरिक्त और कुछ नहीं बढ़ता।

(83) और मनुष्य पर जब हम उपकार करते हैं तो वह विमुखता करता है और पीठ मोड़ लेता है। और जब उसको कष्ट पहुँचता है तो वह निराश हो जाता है। (84) कहो कि प्रत्येक अपनी इच्छा के अनुरूप कार्य कर रहा है। अब तुम्हारा पालनहार ही भली-भांति जानता है कि कौन अधिक उचित मार्ग पर है।

(85) और वह तुमसे आत्मा के सम्बन्ध में पूछते हैं। कहो कि आत्मा मेरे पालनहार के आदेश से है। और तुमको बहुत कम ज्ञान दिया गया है। (86) और यदि हम चाहें तो वह सब कुछ तुमसे छीन लें जो हमने वह्य (प्रकाशना) के माध्यम से तुमको दिया है, फिर तुम उसके लिए हमारी तुलना में कोई समर्थक (हिमायती) न पाओ। (87) परन्तु यह मात्र तुम्हारे पालनहार की दया है, निस्सन्देह तुम्हारे ऊपर उसकी बड़ी कृपा है। (88) कहो कि यदि समस्त मनुष्य और जिन्न एकत्र हो जायें कि ऐसा क़ुरआन बना लायें तब भी वह इसके जैसा न ला सकेंगे, यद्यपि वह एक-दूसरे के सहायक बन जायें।

(89) और हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में प्रत्येक प्रकार का विषय भिन्न-भिन्न ढ़ंग से बयान किया है, फिर भी अधिकतर लोग अवज्ञा ही पर जमे रहे। (90) और वह कहते हैं कि हम कदापि तुम पर ईमान (आस्था) न लायेंगे जब तक तुम हमारे लिए भूमि से कोई स्रोत (फ़व्वारा) जारी न कर दो। (91) या तुम्हारे पास ख़जूरों और अंगूरो का कोई बाग़ हो जाये, फिर तुम उस बाग़ के बीच में बहुत सी नदियां प्रवाहित कर दो। (92) या जैसा कि तुम कहते हो, हमारे ऊपर आसमान से टुकड़े गिरा दो या अल्लाह और फ़रिश्तों को लाकर हमारे सामने खड़ा कर दो। (93) अथवा तुम्हारे पास स्वर्ण का कोई घर हो जाये अथवा तुम आसमान पर चढ़ जाओ और हम तुम्हारे चढ़ने को भी न मानेंगे जब तक तुम वहाँ से हम पर कोई किताब न उतार दो जिसे हम पढ़ें। कहो कि मेरा पालनहार पवित्र है, मैं तो मात्र एक मनुष्य हूँ, अल्लाह का सन्देष्टा।

(94) और जब उनके पास मार्गदर्शन आ गया तो लोगों को ईमान लाने से इसके अतिरिक्त और कोई चीज़ रुकावट नहीं बनी कि उन्होंने कहा कि क्या अल्लाह ने मनुष्य को सन्देष्टा बनाकर भेजा है। (95) कहो कि यदि पृथ्वी पर फ़रिश्ते होते कि वह इस पर शान्तिपूर्वक चलते-फिरते तो हाँ हम उन पर आसमान से फ़रिश्ते को सन्देष्टा बनाकर भेजते। (96) कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है। निस्सन्देह वह अपने बन्दों को जानने वाला, देखने वाला है।

(97) अल्लाह जिसको मार्ग दिखाये वही मार्ग पाने वाला है। और जिसको वह भटका दे तो तुम उसके लिए अल्लाह के अतिरिक्त किसी को सहायक न पाओगे। और हम क़ियामत के दिन उनको उनके मुँह के बल अन्धे और गूँगे और बहरे एकत्र करेंगे। उनका ठिकाना नरक है। जब उसकी आग धीमी होगी। हम उसको अधिक भड़का देंगे। (98) यह है उनका बदला इस कारण से कि उन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। और कहा कि जब हम हड्डी और चूरा-चूरा हो जायेंगे तो क्या हम नये सिरे से पैदा करके उठाये जायेंगे।

(99) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया, वह इसकी सामर्थ्य रखता है कि इनके जैसे एक बार फिर पैदा कर दे और उसने इनके लिए एक अवधि निर्धारित कर रखी है, इसमें कोई सन्देह नहीं। इस पर भी अत्याचारी लोग अवज्ञा किये बिना न रहे।

(100) कहो कि यदि तुम लोग मेरे पालनहार कि दया के 3 के मालिक होते तो उस दशा में तुम व्यय हो जाने के डर से अवश्य हाथ रोक लेते और मनुष्य बड़ा ही तंग हृदय है।

(101) और हमने मूसा को नौ निशानियाँ स्पष्ट प्रदान कीं। तो इसराईल की सन्तान से पूछ लो जबकि वह उनके पास आया तो फ़िरऔन ने उससे कहा कि ऐ मूसा, मेरे विचार में तो अवश्य तुम पर किसी ने जादू कर दिया है। (102) मूसा ने कहा कि तू भली-भाँति जानता है कि उनको आकाशों और धरती के पालनहार ने उतारा है, आँखें खोल देने के लिए और मेरा विचार है कि ऐ फ़िरऔन, तू अवश्य विनष्ट होने वाला व्यक्ति है। (103) फिर फ़िरऔन ने चाहा कि उनको उस भू-भाग से उखाड़ दे। तो हमने उसको और जो उसके साथ थे सबको डूबा दिया। (104) और हमने इसराईल की सन्तान से कहा कि तुम इस भू-भाग पर रहो। फिर जब परलोक का वादा आ जायेगा तो हम तुम सबको एकत्र करके लायेंगे।

(105) और हमने क़ुरआन को सच्चाई के साथ उतारा है और वह तथ्यों के साथ ही उतारा गया है। और हमने तुमको मात्र शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (106) और हमने क़ुरआन को थोड़ा-थोड़ा करके

उतारा, ताकि तुम इसको लोगों के समक्ष ठहर-ठहर कर पढ़ो। और इसको हमने क्रमशः उतारा है।

(107) कहो कि तुम इस पर ईमान लाओ या ईमान न लाओ, वह लोग जिनको इससे पहले ज्ञान दिया गया था, जब वह उनके समक्ष पढ़ा जाता है तो वह ठुडढ़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं। (108) और कहते हैं कि हमारा पालनहार पवित्र है। निस्सन्देह हमारे पालनहार का वादा अवश्य पूरा होता है। (109) और वह ठुडढ़ियों के बल रोते हुए गिरते हैं। और क़ुरआन उनकी विनम्रता को बढ़ा देता है।

(110) कहो कि चाहे अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे नाम हैं। और तुम अपनी नमाज़ न बहुत पुकार कर पढ़ो और न पूर्णतः चुपके-चुपके पढ़ो। और दोनों के बीच की रीति अपनाओ। (111) और कहो कि सारी प्रशंसा उस अल्लाह के लिए है जो न सन्तान रखता है और न सत्ता में कोई उसका साझीदार है। और न शक्ति की कमी के कारण कोई उसका सहायक है। और तुम भली प्रकार उसकी श्रेष्ठता का वर्णन करो।

18. सूरह अल-कह्फ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर किताब उतारी, और उसमें कोई टेढ़ नहीं रखी। (2) पूर्णतः उचित, ताकि वह अल्लाह की ओर से एक कठोर यातना से सचेत कर दे। और ईमान (आस्था) वालों को शुभ सूचना दे दे जो भले कर्म करते हैं कि उनके लिए अच्छा बदला है। (3) वह उसमें सदैव रहेंगे। (4) और उन लोगों को डरा दे जो कहते हैं कि अल्लाह ने बेटा बनाया है। (5) उनको इस बात का कोई ज्ञान नहीं और न उनके बाप-दादा को। यह बहुत भारी बात है जो उनके मुँह से निकल रही है, वह मात्र झूठ कहते हैं।

(6) संभवतः तुम उनके पीछे दुख से अपने आप को नष्ट कर डालोगे,

यदि वह इस बात पर ईमान (आस्था) न लाये। (7) जो कुछ पृथ्वी पर है उसको हमने पृथ्वी का सौन्दर्य बनाया है, ताकि हम लोगों को जाँचें कि उनमें कौन अच्छे कर्म करने वाला है। (8) और हम पृथ्वी की सम्पूर्ण वस्तुओं को एक चटियल मैदान बना देंगे।

(9) क्या तुम समझते हो कि गुफा और रक़ीम वाले हमारी निशानियों में से अत्यन्त अद्भुत निशानी थे। (10) जब उन युवकों ने गुफा में शरण ली, फिर उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालनहार, हमको अपने पास से दयालुता प्रदान कर, और हमारे मामले को ठीक कर दे। (11) अतः हमने गुफा में उनके कानों पर वर्षों तक के लिए (नींद का पर्दा) डाल दिया। (12) फिर हमने उनको उठाया, ताकि हम मालूम करें कि दोनों समूहों में से कौन ठहरने की अवधि की अधिक सही गणना करता है।

(13) हम तुमको उनका वास्तविक वृत्तान्त सुनाते हैं। वह कुछ युवक थे जो अपने पालनहार पर ईमान (आस्था) लाये और हमने उनके मार्गदर्शन में और अधिक विकास प्रदान किया। (14) और हमने उनके दिलों को दृढ़ कर दिया जबकि वह उठे और कहा कि हमारा पालनहार वही है जो आकाशों और धरती का पालनहार है। हम उसके अतिरिक्त किसी अन्य पूज्य को न पुकारेंगे। यदि हम ऐसा करें तो हम अत्यन्त अनुचित बात करेंगे। (15) यह हमारी क़ौम के लोगों ने उसके अतिरिक्त दूसरे उपास्य बना रखे हैं। यह उनके पक्ष में स्पष्ट प्रमाण क्यों नहीं लाते। फिर उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी और कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे।

(16) और जब तुम इन लोगों से अलग हो गये हो और उनके उपास्यों से भी जिनकी वह अल्लाह के अतिरिक्त उपासना करते हैं तो अब चलकर गुफा में शरण लो, तुम्हारा पालनहार तुम्हारे ऊपर अपनी कृपा करेगा। और तुम्हारे काम के लिए सामग्री उपलब्ध करेगा।

(17) और तुम सूरज को देखते कि जब वह उदय होता है तो उनकी गुफा से दायीं ओर को बचा रहता है और डूबता है तो उनसे बायीं ओर को कतरा जाता है और वह गुफा के अन्दर एक विस्तृत स्थान में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है। जिसको अल्लाह मार्गदर्शन प्रदान करे, वही मार्ग पाने

वाला है और जिसको अल्लाह भटका दे तो तुम उसके लिए कोई सहायक मार्ग बताने वाला न पाओगे।

(18) और तुम उन्हें देखकर यह समझते कि वह जाग रहे हैं, हालाँकि वह सो रहे थे। हम उनको दाये और बायें करवट बदलवाते रहते थे और उनका कुत्ता गुफा के मुँह पर दोनों हाथ फैलाये हुए बैठा था। यदि तुम उनको झाँक कर देखते तो उनसे पीठ फेर कर भाग खड़े होते और तुम्हारे अन्दर उनका भय बैठ जाता।

(19) और इसी प्रकार हमने उनको जगाया ताकि वह परस्पर पूछ-गछ करें। उनमें से एक कहने वाले ने कहा, तुम कितनी देर यहाँ ठहरे। उन्होंने कहा कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे। वह बोले कि अल्लाह ही बेहतर जानता है कि तुम कितनी देर यहाँ रहे। अतः अपने लोगों में से किसी को यह चाँदी का सिक्का देकर शहर भेजो, तो वह देखे कि पवित्र खाना कहाँ मिलता है और तुम्हारे लिए उसमें से कुछ खाना लाये। और वह सावधानी से जाये और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे। (20) यदि वह तुम्हारी ख़बर पा जायेंगे तो तुमको पत्थरों से मार डालेंगे या तुमको अपने धर्म में लौटा लेंगे और फिर तुम कभी सफलता न पाओगे।

(21) और इस प्रकार हमने उन पर लोगों को सूचित कर दिया, ताकि लोग जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है। और यह कि क़ियामत में कोई सन्देह नहीं। जब लोग परस्पर उनके मामले में झगड़ रहे थे। फिर कहने लगे कि उनकी गुफा पर एक भवन बना दो। उनका पालनहार उनको भली-भाँति जानता है। जो लोग उनके मामले में वर्चस्व प्राप्त करने वाले हुए, उन्होंने कहा कि हम उनकी गुफा पर एक उपासना स्थल बनायेंगे।

(22) कुछ लोग कहेंगे कि वह तीन थे, और चौथा उनका कुत्ता था। और कुछ लोग कहेंगे कि वह पाँच थे और छठा उनका कुत्ता था, ये लोग अनभिज्ञता की बात कह रहे हैं, और कुछ लोग कहेंगे कि वह सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता था। कहो कि मेरा पालनहार भली-भांति जानता है कि वह कितने थे। कम ही लोग उनको जानते हैं। अतः तुम सामान्य बात से अधिक उनके मामले में वार्त्ता न करो। और न उनके सम्बन्ध में उनमें से किसी से पूछो।

(23) और तुम किसी कार्य के सम्बन्ध में इस प्रकार न कहो कि मैं इसको कल कर दूँगा। (24) परन्तु यह कि अल्लाह चाहे। और जब तुम भूल जाओ तो अपने पालनहार को याद करो। और कहो कि आशा है कि मेरा पालनहार मुझको भलाई का इससे अधिक निकट मार्ग दिखा दे।

(25) और वह लोग अपनी गुफा में तीन सौ वर्ष रहे (कुछ लोग अवधि की गिनती में) नौ वर्ष और बढ़ गये हैं। (26) कहो कि अल्लाह उनके रहने की अवधि को अधिक जानता है। आकाशों और पृथ्वी का परोक्ष (छिपा हुआ) उसके ज्ञान में है, क्या ही अच्छा है वह देखने वाला और सुनने वाला। अल्लाह के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नहीं और न अल्लाह किसी को अपनी सत्ता में साझी करता है।

(27) और तुम्हारे पालनहार की जो किताब तुम पर उतारी जा रही है उसको सुनाओ, अल्लाह की बातों को कोई बदलने वाला नहीं। और इसके अतिरिक्त तुम कोई शरण नहीं पा सकते। (28) और अपने आप को उन लोगों के साथ जमाये रखो जो सुबह और सायं अपने पालनहार को पुकारते हैं। वह उसकी प्रसन्नता के अभिलाषी हैं। और तुम्हारी आँखें सांसारिक जीवन के सौन्दर्य के लिए उनसे हटने न पायें। और तुम ऐसे व्यक्ति का कहना न मानो जिसके दिल को हमने अपनी याद से बेपरवाह कर दिया है। और वह अपने मन की इच्छा का अनुसरण करता है और उसका मामला सीमा से आगे बढ़ गया है।

(29) और कहो कि यह सत्य है तुम्हारे पालनहार की ओर से, अतः जो व्यक्ति चाहे इसे माने और जो व्यक्ति चाहे न माने। हमने अत्याचारियों के लिए ऐसी अग्नि तैयार कर रखी है जिसकी लपटें उनको अपने घेरे में ले लेंगी। और यदि वह पानी के लिए याचना करेंगे तो उनकी याचना ऐसे पानी से पूरी की जायेगी जो तेल की तलछट के समान होगा। वह चेहरों को भून डालेगा। क्या बुरा पानी होगा और कैसा बुरा ठिकाना।

(30) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये तो हम ऐसे लोगों का बदला नष्ट नहीं करेंगे। (31) जो अच्छे कर्म करें, उनके लिए सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वहाँ उनको सोने के

कंगन पहनाये जायेंगे। और वह महीन और गफ़ रेशम के हरे कपड़े पहनेंगे, तख़्तों पर टेक लगाये हुए। क्या अच्छा बदला है और कैसा अच्छा ठिकाना।

(32) तुम उनके सामने एक मिसाल (उदाहरण) प्रस्तुत करो। दो व्यक्ति थे। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिये। और उनके चारों ओर खजूर के पेड़ों का घेरा बना दिया और दोनों के बीच खेती रख दी। (33) दोनों बाग़ अपना पूरा फल लाये, उनमें कुछ कमी न की। और दोनों बाग़ों के बीच हमने नहर जारी कर दी। (34) और उसको प्रचूर फल मिला तो उसने अपने साथी से बात करते हुए कहा कि मैं तुझसे सम्पत्ति में अधिक हूँ और संख्या में भी अधिक सामर्थ्यवाला हूँ। (35) उसने अपने बाग़ में प्रवेश किया और वह अपने आप पर अत्याचार कर रहा था। उसने कहा कि मैं नहीं समझता कि यह बाग़ कभी नष्ट हो जायेगा। (36) और मैं नहीं समझता कि क़ियामत (महाप्रलय) कभी आयेगी। और यदि मैं अपने पालनहार की ओर लौटा दिया गया तो अवश्य इससे अधिक अच्छा स्थान मुझको मिलेगा।

(37) उसके साथी ने बात करते हुए कहा, क्या तुम उस हस्ती की अवज्ञा कर रहे हो जिसने तुमको मिट्टी से बनाया, फिर पानी की एक बूँद से। फिर तुमको पूरा मनुष्य बना दिया। (38) लेकिन मेरा पालनहार तो वही अल्लाह है और मैं अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं ठहराता। (39) और जब तुम अपने बाग़ में गये तो तुमने क्यों न कहा कि जो अल्लाह चाहता है वही होता है, अल्लाह के बिना किसी में कोई क्षमता नहीं। यदि तुम देखते हो कि मैं सम्पत्ति और सन्तान में तुमसे कम हूँ। (40) तो आशा है कि मेरा पालनहार मुझको तुम्हारे बाग़ से अच्छा बाग़ दे दे। और तुम्हारे बाग़ पर आसमान से कोई आपदा भेज दे जिससे वह बाग़ चटियल मैदान होकर रह जाये। (41) या उसका पानी सूख जाये, फिर तुम उसको किसी तरह न पा सको।

(42) और उसके फल पर विपत्ति आयी तो जो कुछ उसने उस पर ख़र्च किया था, उस पर वह हाथ मलता रह गया। और वह बाग अपनी टूट्टियों पर गिरा हुआ पड़ा था। और वह कहने लगा कि ऐ काश! मैं अपने पालनहार के साथ किसी को साझी न ठहराता। (43) और उसके पास कोई जत्था न था जो अल्लाह के अतिरिक्त उसकी सहायता करता और न वह स्वंय बदला लेने

वाला बन सका। (44) यहाँ सारा अधिकार केवल परमसत्य अल्लाह ही को प्राप्त है। वह सबसे अच्छा बदला देनेवाला है और सबसे अच्छे परिणाम वाला है।

(45) और उनको संसार के जीवन का उदाहरण सुनाओ। जैसे कि पानी जिसको हमने आकाश से उतारा है। फिर उससे जब भूमि की वनस्पतियाँ भली-भाँति घनी हो गयीं, फिर वह चूरा-चूरा हो गयीं, जिसको हवायें उड़ाती फिरती हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है। (46) सम्पत्ति और सन्तान सांसारिक जीवन के सौन्दर्य हैं। और बाक़ी रहने वाले भले कर्म तुम्हारे पालनहार के निकट पुण्य के अनुसार बेहतर हैं।

(47) और जिस दिन हम पहाड़ों को चलायेंगे। और तुम देखोगे पृथ्वी को पूर्णतः खुली हुई। और हम उन सबको इकट्ठा करेंगे। फिर हम उनमें से किसी को न छोड़ेंगे। (48) और सभी लोग तेरे पालनहार के समक्ष पंक्तियों में प्रस्तुत किये जायेंगे। तुम हमारे पास आ गये जिस प्रकार हमने तुमको पहली बार पैदा किया था, बल्कि तुमने यह अनुमान किया कि हम तुमारे लिए कोई वादे का समय निर्धारित नहीं करेंगे।

(49) और पंजिका रखी जायेगी तो तुम अपराधियों को देखोगे कि उसमें जो कुछ है वह उससे डरते होंगे और कहेंगे कि हाय! विनाश। कैसी है यह पंजिका कि इसने न कोई छोटी बात पंजीकृत करने से छोड़ी है और न कोई बड़ी बात। और जो कुछ उन्होंने किया है, वह सब सामने पायेंगे। और तेरा पालनहार किसी के ऊपर अत्याचार न करेगा।

(50) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो उन्होंने सजदा किया परन्तु इब्लीस ने सजदा न किया, वह जिन्नों में से था। अतः उसने अपने पालनहार के आदेश की अवज्ञा की। अब क्या तुम उसको और उसकी सन्तान को मेरे अतिरिक्त अपना मित्र बनाते हो, जबकि वह तुम्हारे शत्रु हैं। यह पापियों का बड़ा ही बुरा विकल्प है जिसे वह अपना रहे हैं।

(51) मैंने इनको न आकाशों और पृथ्वी पैदा करने के समय बुलाया और न स्वंय इनके पैदा करने के समय बुलाया। और मैं ऐसा नहीं कि पथभ्रष्ट करने वालों को अपना सहायक बनाऊँ।

(52) और जिस दिन अल्लाह कहेगा कि जिनको तुम मेरा साझीदार समझते थे उनको पुकारो। अतः वह उनको पुकारेंगे परन्तु वह उनको कोई उत्तर न देंगे। और हम उनके बीच (शत्रुता की) रुकावट डाल देंगे। (53) और अपराधी लोग आग को देखेंगे और समझ लेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और वह उससे बचने का कोई मार्ग न पायेंगे।

(54) और हमने इस क़ुरआन में लोगों के मार्गदर्शन के लिए प्रत्येक प्रकार के उदाहरण बयान किये हैं और मनुष्य सबसे अधिक झगड़ालू हैं। (55) और लोगों को पश्चात इसके कि उनको मार्गदर्शन पहुँच चुका, ईमान लाने से और अपने पालनहार से क्षमा माँगने से नहीं रोका अतिरिक्त उस चीज़ ने कि अगलों का मामला उनके लिए भी प्रकट हो जाये, या यातना उनके समक्ष आ खड़ी हो।

(56) और सन्देष्टाओं को हम मात्र शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजते हैं। और अवज्ञाकारी लोग असत्य बातें लेकर झूठा झगड़ा करते हैं, ताकि उसके माध्यम से सत्य को नीचा कर दें और उन्होंने मेरी निशानियों को और जो डर सुनाये गये, उनका उपहास किया। (57) उससे बड़ा अत्याचारी कौन होगा जिसको उसके पालनहार की आयतों के माध्यम से अनुस्मरण काराया जाये तो वह उससे मुँह मोड़ ले और अपने हाथों के कर्म को भूल जाये। हमने उनके दिलों पर परदे डाल दिये हैं कि वह इसको न समझें और उनके कानों में डाट है। और यदि तुम उनको सन्मार्ग की ओर बुलाओ तो वह कभी मार्ग पर आने वाले नहीं हैं।

(58) और तुम्हारा पालनहार क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। यदि वह उनके किये पर उन्हें पकड़े तो शीघ्र उन पर यातना भेज दे, परन्तु उनके लिए एक निर्धारित अवधि हैं और वह उसके मुक़ाबले में कोई शरण का स्थान न पायेंगे। (59) और ये नगर हैं जिनको हमने नष्ट कर दिया जबकि वह अत्याचारी हो गये। और हमने उनके विनाश का एक समय निर्धारित किया था।

(60) और जब मूसा ने अपने शिष्य से कहा कि मैं चलता रहूँगा, यहाँ तक कि या तो दो नदियों के मिलने के स्थान पर पहुँच जाऊँ या इसी प्रकार

वर्षों तक चलता रहूँ। (61) अतः जब नदियों के मिलने के स्थान पर पहुँचे तो वह अपनी मछली को भूल गये। और मछली ने नदी में अपना रास्ता पकड़ा। (62) फिर जब वह आगे बढ़े तो मूसा ने अपने शिष्य से कहा कि हमारा खाना लाओ, हमारी इस यात्रा से हमको बहुत थकावट हो गयी।

(63) शिष्य ने कहा, क्या आपने देखा, जब हम उस पत्थर के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल गया। और मुझको शैतान ने भुला दिया कि मैं उसकी चर्चा करता। और मछली आश्चर्यजनक ढंग से निकल कर नदी में चली गयी। (64) मूसा ने कहा, उसी अवसर की तो हमें तलाश थी। अतः दोनों अपने क़दमों के निशान देखते हुए वापस लौटे। (65) तो उन्होंने वहाँ हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसको हमने अपने पास से दया प्रदान की थी और जिसको अपने पास से एक ज्ञान सिखाया था।

(66) मूसा ने उससे कहा, क्या मैं आपके साथ रह सकता हूँ, ताकि आप मुझे उस ज्ञान में से सिखा दें, जो आपको सिखाया गया है। (67) उसने कहा कि तुम मेरे साथ धैर्य नहीं रख सकते। (68) और तुम उस चीज़ पर कैसे धैर्य रख सकते हो जो तुम्हारे ज्ञान की परिधि से बाहर है। (69) मूसा ने कहा, यदि अल्लाह चाहे तो आप मुझको धैर्य रखने वाला पायेंगे और मैं किसी बात में आपकी अवज्ञा नहीं करुँगा। (70) उसने कहा कि यदि तुम मेरे साथ चलते हो तो मुझसे कोई बात न पूछना जब तक कि मैं स्वंय तुमसे उसका ज़िक्र (चर्चा) न कर दूँ।

(71) फिर दोनों चले। यहाँ तक कि जब वह नौका में सवार हुए तो उस व्यक्ति ने नौका में छेद कर दिया। मूसा ने कहा, क्या आपने इस नाव में इसलिए छेद किया है कि नाव वालों को डुबा दें। यह तो आपने बहुत कठोर काम कर डाला। (72) उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे। (73) मूसा ने कहा कि मेरी भूल पर मुझको न पकड़िये और मेरे मामले में कठोरता से काम न लीजिए। (74) फिर वह दोनों चले, यहाँ तक कि वह एक लड़के से मिले तो उस व्यक्ति ने उसको मार डाला। मूसा ने कहा, क्या आपने एक निर्दोष को मार डाला हालाँकि उसने किसी का ख़ून नहीं बहाया था। यह तो आपने बड़ा ही अनुचित कृत्य कर दिया।

(75) उस व्यक्ति ने कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम मेरे साथ धैर्य न रख सकोगे। (76) मूसा ने कहा कि इसके बाद यदि मैं आपसे किसी चीज़ के सम्बन्ध में पूछूँ तो आप मुझको साथ न रखें आप मेरी ओर से आपत्ति की सीमा को पहुँच गये। (77) फिर दोनों चले, यहाँ तक कि जब वह एक गाँव वालों के पास पहुँचे तो वहाँ वालों से खाने को माँगा। उन्होंने उनका आतिथ्य करने से मना कर दिया। फिर उनको वहाँ एक दीवार मिली जो गिरने ही वाली थी, तो उसने उसको सीधा कर दिया। मूसा ने कहा यदि आप चाहते तो इस पर कुछ पारिश्रमिक ले लेते। (78) उसने कहा अब यह मेरे और तुम्हारे बीच अलगाव है। मैं तुमको उन चीज़ों की वास्तविकता बताऊँगा जिस पर तुम धैर्य न रख सके।

(79) नाव का मामला यह है कि वह कुछ निर्धन लोगों का था जो नदी में परिश्रम करते थे, तो मैंने चाहा कि उसमें दोष पैदा कर दूँ, कियोंकि उनके आगे एक राजा था जो प्रत्येक नाव को बलपूर्वक छीन कर ले लेता था।

(80) और लड़के का मामला यह है कि उसके माता-पिता ईमानदार थे। हमको सन्देह हुआ कि वह बड़ा होकर अपने विद्रोह और अवज्ञा से उनको कष्ट पहुँचायेगा। (81) अतः हमने चाहा कि उनका पालनहार उनको इसके स्थान पर ऐसी सन्तान दे जो पवित्रता में इससे श्रेष्ठ हो और स्नेह करने वाली हो।

(82) और दीवार का मामला यह है कि वह नगर के दो अनाथ लड़कों की थी। और इस दीवार के नीचे उनका एक ख़ज़ाना दफ़न था और उनका बाप एक भला मनुष्य था, अतः तुम्हारे पालनहार ने चाहा कि वह दोनों अपनी युवावस्था को पहुँचें और अपना ख़ज़ाना निकालें। यह तुम्हारे पालनहार की कृपा से हुआ। और मैंने इसको अपनी इच्छा से नहीं किया। यह है वास्तविकता उन बातों की जिन पर तुम धैर्य न रख सके।

(83) और वह तुमसे ज़ुलक़रनैन का वृत्तान्त पूँछते हैं। कहो कि मैं उसका कुछ वृत्तान्त तुम्हारे सामने बयान करूँगा। (84) हमने उसको पृथ्वी पर सत्ता प्रदान की थी। और हमने उसको हर प्रकार के संसाधन दिये थे।

(85) फिर ज़ुलक़रनैन एक मार्ग के पीछे चला। (86) यहाँ तक कि वह सूर्यास्त होने के स्थान तक पहुँच गया। उसने सूरज को देखा कि वह एक

काले पानी में डूब रहा था। और वहाँ उसको एक क़ौम मिली। हमने कहा कि ज़ुल-क़रनैन, तुम चाहो तो इनको दण्ड दो और चाहो तो उनके साथ अच्छा व्यवहार करो। (87) उसने कहा कि जो इनमें से अत्याचार करेगा। हम उसको दण्ड देंगे। फिर वह अपने पालनहार के पास पहुँचाया जायेगा, फिर वह उसको कठोर यातना देगा। (88) और जो व्यक्ति ईमान लायेगा और भले कर्म करेगा, उसके लिए अच्छा बदला है और हम भी उसके साथ सरल मामला करेंगे।

(89) फिर वह एक मार्ग पर चला। (90) यहाँ तक कि जब वह सूर्योदय के स्थान पर पहुँचा तो उसने सूरज को एक ऐसी क़ौम पर उदय होते हुए पाया जिनके लिए हमने उनके और सूरज के बीच कोई आड़ नहीं रखी थी। (91) यह इसी प्रकार है। और हम ज़ुलक़रनैन के मामलात से भिज्ञ हैं।

(92) फिर वह एक मार्ग पर चला। (93) यहाँ तक कि जब वह दो पहाड़ों के बीच पहुँचा तो उनके पास उसने एक क़ौम को पाया जो कोई बात समझ नहीं पाती थी। (94) उन्होंने कहा कि ऐ ज़ुलक़रनैन, याजूज और माजूज हमारे देश में अव्यवस्था फैलाते हैं। तो क्या हम तुमको कोई कर इसके लिए निर्धारित कर दें कि तुम हमारे और उनके बीच कोई रोक बना दो।

(95) ज़ुलक़रनैन ने उत्तर दिया कि जो कुछ मेरे पालनहार ने मुझे दिया है वह बहुत है। तुम श्रम से मेरी सहायता करो। मैं तुम्हारे और उनके बीच एक दीवार बना दूँगा। (96) तुम लोहे के तख़्ते लाकर मुझे दो। यहाँ तक कि जब उसने दोनों के बीच के रिक्त स्थान को भर दिया तो लोगों से कहा कि आग दहकाओ, यहाँ तक कि जब उसको आग कर दिया तो कहा कि लाओ अब मैं इस पर पिघला हुआ ताँबा डाल दूँ। (97) तो याजूज और माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न वह उसमें छेद कर सकते थे। (98) ज़ुल-क़रनैन ने कहा कि यह मेरे पालनहार की कृपा है, फिर जब मेरे पालनहार का वादा आयेगा तो वह इसको ढ़ाकर सपाट कर देगा और मेरे पालनहार का वादा सच्चा है।

(99) और उस दिन हम लोगों को छोड़ देंगे। तो लहरों की तरह वह एक-दूसरे में घुसेंगे। और सूर (महाशंख) फूँका जायेगा तो हम सबको एक साथ एकत्र करेंगे। (100) और उस दिन हम नरक को अवज्ञाकारियों के समक्ष

लायेंगे। (101) जिनकी आँखों पर हमारे अनुस्मरण से परदा पड़ा रहा और वह कुछ सुनने के लिए तैयार न थे।

(102) क्या झुठलाने वाले यह समझते हैं कि वह मेरे अतिरिक्त मेरे बन्दों को अपना कार्य-साधक बनायें। हमने अवज्ञाकारियों के आतिथ्य के लिए नरक तैयार कर रखी है।

(103) कहो, क्या मैं तुमको बता दूँ कि अपने कर्मों के अनुसार सबसे अधिक घाटे में कौन लोग हैं। (104) वह लोग जिनके प्रयास सांसारिक जीवन में व्यर्थ हो गये और वह समझते रहे कि वह बहुत अच्छे कर्म कर रहें हैं। (105) यही लोग हैं जिन्होंने अपने पालनहार की निशानियों को और उससे मिलने को झुठलाया। अतः उनका किया हुआ नष्ट हो गया। (106) फिर क़ियामत (उठाये जाने) के दिन हम उनको कोई महत्व न देंगे। नरक उनका बदला है, इसलिए कि उन्होंने झुठलाया और मेरी निशानियों और मेरे सन्देष्टाओं का उपहास किया।

(107) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किये, उनके लिए स्वर्ग के बाग़ों का आतिथ्य है। (108) उसमें वह सदैव रहेंगे। वह वहाँ से कभी निकलना न चाहेंगे।

(109) कहो कि यदि समुद्र मेरे पालनहार की निशानियों को लिखने के लिए स्याही हो जाये तो समुद्र समाप्त हो जायेगा इससे पहले कि मेरे पालनहार की बातें समाप्त हों, यद्यपि हम इसके साथ इसी प्रकार और समुद्र मिला दें।

(110) कहो कि मैं तुम्हारी ही तरह एक मनुष्य हूँ। मुझ पर वह्य (श्रुति) आती है कि तुम्हारा उपास्य मात्र एक ही उपास्य है। अतः जिसको अपने पालनहार से मिलने की आशा हो, उसको चाहिए कि वह भले कर्म करे और अपने पालनहार की उपासना में किसी को साझी न ठहराये।

19. सूरह मरियम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) काफ0 हा. या. ऐन. साद.। (2) यह उस दयालुता का वर्णन है जो तेरे पालनहार ने अपने बन्दे ज़करिया पर की। (3) जब उसने अपने पालनहार को छिपी आवाज़ से पुकारा।

(4) ज़करिया ने कहा, ऐ मेरे पालनहार, मेरी हड्डियां निर्बल हो गयी हैं और सिर में बालों की सफेदी फैल गयी है। और ऐ मेरे पालनहार, तुझसे माँगकर मैं कभी वंचित नहीं रहा। (5) और मैं अपने बाद अपने सम्बन्धियों की ओर से आशंकित हूँ। और मेरी पत्नी बाँझ है, अतः मुझको अपने पास से एक उत्तराधिकारी प्रदान कर। (6) जो मेरा स्थान ग्रहण करे और याक़ूब की सन्तान का भी। और ऐ मेरे पालनहार, उसको अपना प्रिय बना।

(7) ऐ ज़करिया, हम तुमको एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं। जिसका नाम यह्या होगा। हमने इससे पहले इस नाम का कोई व्यक्ति नहीं बनाया। (8) उसने कहा, ऐ मेरे पालनहार, मेरे यहाँ लड़का कैसे होगा जबकि मेरी पत्नी बाँझ है। और मैं बुढ़ापे के अन्तिम छोर को पहुँच चुका हूँ।

(9) उत्तर मिला कि ऐसा ही होगा। तेरा पालनहार फ़रमाता है कि यह मेरे लिए सहज है। मैंने इससे पहले तुमको पैदा किया, जबकि तुम कुछ भी न थे। (10) ज़करिया ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरे लिए कोई निशानी निर्धारित कर दे। फ़रमाया कि तुम्हारी निशानी यह है कि तुम तीन रात और दिन लोगों से बात न कर सकोगे, जबकि तुम स्वस्थ होगे। (11) फिर ज़करिया उपासना स्थल से निकलकर लोगों के पास आया और उनसे संकेत में कहा कि तुम सुबह और सायं अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करो।

(12) ऐ यह्या, किताब को दृढ़तापूर्वक पकड़ो। और हमने उसको बचपन ही में दीन (धर्म) की समझ प्रदान की। (13) और अपनी ओर से उसको (हृदय की) कोमलता और पवित्रता प्रदान की। (14) और वह परहेज़गार (संयमी) और अपने माता-पिता की सेवा करने वाला था। और वह विद्रोही और अवज्ञाकारी

न था। (15) और उस पर सलामती है जिस दिन वह पैदा हुआ और जिस दिन वह मरेगा और जिस दिन वह जीवित करके उठाया जायेगा।

(16) और किताब में मरियम का वर्णन करो जबकि वह अपने लोगों से अलग होकर पूर्वी घर में चली गयीं। (17) फिर उसने अपने आप को उनसे परदे में कर लिया फिर हमने उसके पास अपना फ़रिश्ता भेजा जो उसके सामने एक पूरा मनुष्य बनकर प्रकट हुआ। (18) मरियम ने कहा, मैं तुझसे कृपालु अल्लाह की शरण माँगती हूँ यदि तू अल्लाह से डरने वाला है। (19) उसने कहा, मैं तुम्हारे पालनहार का भेजा हुआ हूँ, ताकि मैं तुमको एक पवित्र लड़का दूँ। (20) मरियम ने कहा कि मेरे यहाँ कैसे लड़का होगा, जबकि मुझको किसी मनुष्य ने नहीं छुआ और न मैं बदचलन हूँ। (21) फ़रिश्ते ने कहा कि ऐसा ही होगा। तेरा पालनहार फ़रमाता है कि यह मेरे लिए सरल है। और ताकि हम उसको लोगों के लिए निशानी बना दें और अपनी ओर से एक दयालुता। और यह एक नियत बात है।

(22) अतः मरियम ने उसका गर्भ उठा लिया और वह उसको लेकर एक दूरवर्ती स्थान पर चली गयीं। (23) फिर प्रसव पीड़ा उसको खजूर के वृक्ष की ओर ले गया। उसने कहा, काश मैं इससे पहले मर जाती और भूली-बिसरी चीज़ हो जाती।

(24) फिर मरियम को उसने उसके नीचे से आवाज़ दी कि दुखी न हो। तेरे पालनहार ने तेरे नीचे एक स्रोत जारी कर दिया है। (25) और तुम खजूर के तने को अपनी ओर हिलाओ। उससे तुम्हारे ऊपर पकी हुई खजूरें गिरेंगी। (26) अतः खाओ और पिओ और आँखें ठण्डी करो। फिर यदि तुम कोई मनुष्य देखो तो उससे कह दो कि मैंने रहमान (ईश्वर) का व्रत मान रखा है तो आज मैं किसी मनुष्य से नहीं बोलूँगी।

(27) फिर वह उसको गोद में लिए हुए अपनी जाति के लोगों के पास आयी। लोगों ने कहा, ऐ मरियम, तूने बड़ा अनर्थ कर डाला। (28) ऐ हारुन की बहन, न तुम्हारा बाप कोई बुरा व्यक्ति था और न तुम्हारी माँ बदचलन थी।

(29) फिर मरियम ने उसकी ओर संकेत किया। लोगों ने कहा, हम इससे

किस प्रकार बात करें जो कि गोद का बच्चा है। (30) बच्चा बोला, मैं अल्लाह का बन्दा हूँ। उसने मुझको किताब दी और मुझको सन्देष्टा बनाया। (31) और मैं जहाँ कहीं भी हूँ उसने मुझको बरकत (विभूति) वाला बनाया है। और उसने मुझको नमाज़ और ज़कात (अनिवार्य दान) का आदेश दिया है। जब तक मैं जीवित रहूँ। (32) और मुझको मेरी माँ का सेवा करने वाला बनाया है। और मुझको विद्रोही, अभागा नहीं बनाया है। (33) और मुझ पर सलामती है जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मैं मरुँगा और जिस दिन मैं जीवित करके उठाया जाऊँगा।

(34) ये हैं मरियम के बेटे ईसा, सच्ची बात जिसमें लोग झगड़ रहे हैं। (35) अल्लाह ऐसा नहीं कि वह कोई सन्तान बनाये। वह पवित्र है। जब वह किसी कार्य का निर्णय करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाता है।

(36) और निस्सन्देह अल्लाह मेरा पालनहार है और तुम्हारा पालनहार भी, अतः तुम उसी की उपासना करो, यही सीधा मार्ग है। (37) फिर उनके सम्प्रदायों ने परस्पर मतभेद किया। अतः अवज्ञा करने वालों के लिए आने वाले एक बड़े दिन में विनाश है। जिस दिन यह लोग हमारे पास आयेंगे। (38) वह भली-भाँति सुनते और भली-भाँति देखते होंगे, परन्तु आज यह अत्याचारी स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

(39) और इन लोगों को उस पश्चाताप के दिन से डरा दो जब मामले का निर्णय कर दिया जायेगा, और वह अचेतना की स्थिति में पड़े हुए हैं। और वह ईमान नहीं ला रहे हैं। (40) निस्सन्देह हम ही पृथ्वी के रहने वालों के उत्तराधिकारी होंगे और लोग हमारी ही ओर लौटाये जायेंगे।

(41) और किताब में इब्राहीम का वर्णन करो। निस्सन्देह वह सच्चा था और सन्देष्टा था। (42) जब उसने अपने पिता से कहा कि ऐ मेरे पिता, ऐसी चीज़ की उपासना क्यों करते हो जो न सुने और न देखे, और न तुम्हारे कुछ काम आ सके। (43) ऐ मेरे पिता, मेरे पास ऐसा ज्ञान आया है जो तुम्हारे पास नहीं है तो तुम मेरे कहने पर चलो। मैं तुमको सीधा मार्ग दिखाऊँगा। (44) ऐ मेरे पिता, शैतान की उपासना न कर, निस्सन्देह शैतान दयालु अल्लाह की अवज्ञा करने वाला है। (45) ऐ मेरे पिता, मुझको सन्देह है कि तुमको

दयावान अल्लाह की कोई यातना पकड़ ले और तुम शैतान के सहयोगी बनकर रह जाओ।

(46) पिता ने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या तुम मेरे उपास्यों से विमुख हो गये हो। यदि तुम बाज़ न आये तो मैं तुमको पत्थरों से मार डालूँगा। और तुम मुझसे सदैव के लिए दूर हो जाओ। (47) इब्राहीम ने कहा, तुम पर सलामती हो। मैं अपने पालनहार से तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करुँगा, निस्सन्देह वह मुझ पर मेहरबान है। (48) और मैं तुम लोगों को छोड़ता हूँ और उनको भी जिन्हें तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो। और मैं अपने पालनहार ही को पुकारुँगा। आशा है कि मैं अपने पालनहार को पुकार कर वंचित नहीं रहूँगा।

(49) अतः जब वह लोगों से अलग हो गया। और उनसे जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त पूजते थे तो हमने उसको इस्हाक़ और याक़ूब प्रदान किये और हमने उनमें से प्रत्येक को सन्देष्टा बनाया। (50) और उनको अपनी दयालुता का हिस्सा दिया और हमने उनका नाम सच्चरित्र और ख्यातिपूर्ण बनाया।

(51) और किताब में मूसा का वर्णन करो। निस्सन्देह वह चुना हुआ था और सन्देष्टा था। (52) और हमने उसको तूर पहाड़ के दाहिनी ओर पुकारा और उसको हमने रहस्य की बातें करने के लिए समीप किया। (53) और अपनी दयालुता से हमने उसके भाई हारुन को सन्देष्टा बनाकर (सहायक के रुप में) उसे प्रदान किया।

(54) और किताब में इस्माईल का वर्णन करो। वह वादे का सच्चा था और सन्देष्टा था। (55) वह अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात (अनिवार्य दान) का आदेश देता था। और वह अपने पालनहार के निकट पसन्दीदा था। (56) और किताब में इदरीस का वर्णन करो। निस्सन्देह वह सच्चा था और सन्देष्टा था। (57) और हमने उसको उच्च प्रतिष्ठा तक पहुँचाया।

(58) यह वह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने पैग़म्बरों में से अपनी कृपा की। आदम की सन्तान में से और उन लोगों में से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया था। और इब्राहीम और इस्राईल के वंश से और उन लोगों में से जिनको हमने सन्मार्ग प्रदान किया और उनको (अपने लिए) स्वीकार्य बनाया।

जब उनको कृपालु अल्लाह की आयतें सुनाई जातीं तो वह सजदा करते हुए और रोते हुए गिर पड़ते।

(59) फिर उनके बाद ऐसे बुरे लोग उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने नमाज़ को नष्ट कर दिया और वह इच्छाओं के पीछे पड़ गये। (60) अतः शीघ्र वह अपने विनाश को देखेंगे, परन्तु जिसने पश्चाताप किया और ईमान ले आया और अच्छे कर्म किये तो यही लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और उन पर तनिक भी अत्याचार नहीं किया जायेगा।

(61) उनके लिए सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनका रहमान ने अपने बन्दों से परोक्षतः वादा कर रखा है। और यह वादा पूरा होकर रहना है। (62) उसमें वह लोग कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे सिवाय सलाम (शांति) के। और उसमें उनकी जीविका सुबह और सायं मिलेगी। (63) यह वह जन्नत है जिसका उत्तराधिकारी हम अपने बन्दों में से उनको बनायेंगे जो अल्लाह से डरने वाले हों।

(64) और हम (फ़रिश्ते) नहीं अवतरित होते परन्तु तुम्हारे पालनहार के आदेश से। उसी का है जो हमारे आगे है और जो हमारे पीछे है और जो इसके बीच में है। और तुम्हारा पालनहार भूलने वाला नहीं। (65) वह पालनहार है आकाशों का और पृथ्वी का और जो उनके बीच में है, अतः तुम उसी की उपासना करो और उसी की उपासना पर दृढ़ रहो। क्या तुम उसके समकक्ष गुणों वाला जानते हो।

(66) और मनुष्य कहता है, क्या जब मैं मर जाऊँगा तो फिर जीवित करके निकाला जाऊँगा। (67) क्या मुनष्य को याद नहीं आता कि हमने उसको इससे पहले पैदा किया और वह कुछ भी न था। (68) अतः तेरे पालनहार की सौगन्ध हम अवश्य इनको एकत्र करेंगे और शैतानों को भी, फिर उनको नरक के पास इस प्रकार उपस्थित करेंगे कि वह घुटनों के बल गिरे होंगे।

(69) फिर हम प्रत्येक समूह में से उन लोगों को अलग करेंगे। जो रहमान के मुक़ाबले में सबसे अधिक विद्रोही बने हुए थे। (70) फिर हम ऐसे लोगों को भली-भाँति जानते हैं जो नरक में डाले जाने के अधिक हक़दार हैं। (71) और तुममें से कोई नहीं जिसका उस पर से गुज़र न हो, यह तेरे पालनहार

के ऊपर अनिवार्य है जो पूरा होकर रहेगा। (72) फिर हम उन लोगों को बचा लेंगे जो डरते थे और अत्याचारियों को उसमें गिरा हुआ छोड़ देंगे।

(73) और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें सुनाई जाती हैं तो अवज्ञा करने वाले ईमान लाने वालों से कहते हैं कि दोनों समूहों में से कौन उत्तम स्थिति में है और किसकी बैठक अधिक अच्छी है। (74) और इनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें नष्ट कर दीं जो इनसे अधिक संसाधन वाली और इनसे अधिक वैभवशाली थीं। (75) कहो कि जो व्यक्ति पथभ्रष्टता में होता है तो रहमान उसको ढील दिया करता है, यहाँ तक कि जब वह देख लेंगे उस चीज़ को जिसका इनसे वादा किया जा रहा है, (सांसारिक) यातना या क़ियामत (प्रलय का दिन), तो इनको ज्ञात हो जायेगा कि किसकी दशा बुरी है और किसका जत्था निर्बल।

(76) और अल्लाह उपदेश पकड़ने वालों के मार्गदर्शन में वृद्धि करता है। और शेष रहने वाले पुण्य तुम्हारे पालनहार के निकट बदले के अनुसार श्रेष्ठ हैं और परिणाम के अनुसार भी श्रेष्ठ।

(77) क्या तुमने उसको देखा जिसने हमारी आयतों को झुठलाया और कहा कि मुझको सम्पत्ति और सन्तान मिल कर रहेंगे। (78) क्या उसने परोक्ष में झाँक कर देखा है या उसने अल्लाह से कोई वचन ले लिया है। (79) कदापि नहीं, जो कुछ वह कहता है उसको हम लिख लेंगे और उसके दण्ड में वृद्धि करेंगे। (80) और जिन चीज़ों का वह दावेदार है, उसके उत्तराधिकारी हम बनेंगे और वह हमारे पास अकेला आयेगा।

(81) और उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य बनाये हैं ताकि वह उनके लिए सहायक बनें। (82) कदापि नहीं वह उनकी उपासना का इन्कार करेंगे और उनके विरोधी बन जायेंगे।

(83) क्या तुमने नहीं देखा कि हमने अवज्ञाकारियों पर शैतानों को छोड़ दिया है, वह उनको अत्यधिक उकसा रहे हैं। (84) अतः तुम उनके लिए जल्दी न करो। हम उनकी गिनती पूरी कर रहे हैं। (85) जिस दिन हम डरने वालों को रहमान की ओर अतिथि बनाकर एकत्र करेंगे। (86) और अपराधियों को

नरक की ओर प्यासा हाँकेंगे। (87) किसी को सिफ़ारिश का अधिकार न होगा, परन्तु उसको जिसने रहमान के पास से अनुमति ली हो।

(88) और यह लोग कहते हैं कि रहमान ने किसी को बेटा बनाया है। (89) यह तुमने बहुत गम्भीर बात कही है। (90) निकट है कि इससे आकाश फट पड़े और पृथ्वी टुकड़े-टुकड़े हो जाये और पहाड़ टूट कर गिर पड़ें। (91) इस पर कि लोग रहमान की ओर सन्तान का सम्बन्ध जोड़ते हैं। (92) जबकि रहमान की गरिमा के यह प्रतिकूल है कि वह सन्तान अपनाये।

(93) आकाशों और पृथ्वी में कोई नहीं जो रहमान का बन्दा होकर न आये। (94) उसके पास इनकी गणना है और उसने इनको ठीक-ठीक रखा है। (95) और इनमें से प्रत्येक क़ियामत के दिन उसके सामने अकेला आयेगा। (96) परन्तु जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे कर्म किये, उनके लिए अल्लाह प्रेम उत्पन्न कर देगा।

(97) अतः हमने इस क़ुरआन को तुम्हारी भाषा में इसलिए सरल कर दिया है कि तुम परहेजग़ारों (अल्लाह से डरने वाले) को शुभ सूचना सुना दो। और हठधर्म लोगों को डरा दो। (98) और इनसे पहले हम कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं। क्या तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनकी कोई आहट सुनते हो?

20. सूरह ता.हा.

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ता.हा. (2) हमने क़ुरआन तुम पर इसलिए नहीं उतारा कि तुम कष्ट में पड़ जाओ (3) बल्कि उपदेश है ऐसे व्यक्ति के लिए जो डरता हो। (4) यह उसकी ओर से उतारा गया है जिसने पृथ्वी को और ऊँचे आकाशों को पैदा किया है। (5) वह दयालुता वाला है, सिंहासन पर स्थापित है। (6) उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो पृथ्वी पर है और जो इन दोनों के बीच है। और जो कुछ धरती के नीचे है।

(7) और तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो, वह चुपके से कही हुई

बात को जानता है। और इससे अधिक धीमी बात को भी। (8) वह अल्लाह है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। सभी अच्छे नाम उसी के हैं।

(9) और क्या तुमको मूसा की बात पहुँची है। (10) जबकि उसने एक आग देखी तो अपने घरवालों से कहा कि ठहरो, मैंने एक आग देखी है, संभवतः मैं उसमें से तुम्हारे लिए एक अंगारा लाऊँ या उस आग के पास मुझे रास्ते का पता मिल जाये।

(11) फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो आवाज़ दी गयी कि ऐ मूसा। (12) मैं ही तुम्हारा पालनहार हूँ, अतः तुम अपने जूते उतार दो, क्योंकि तुम तुवा की पवित्र घाटी में हो। (13) और मैंने तुमको चुन लिया है। अतः जो वह्य प्रकाशना की जा रही है उसको सुनो। (14) मैं ही अल्लाह हूँ। मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। अतः तुम मेरी ही उपासना करो। और मेरी याद के लिए नमाज़ स्थापित करो। (15) निस्सन्देह क़ियामत आने वाली है। मैं उसको छिपाये रखना चाहता हूँ ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का बदला मिले। (16) अतः इससे तुमको वह व्यक्ति असावधान न कर दे जो इस पर ईमान (विश्वास) नहीं रखता और अपनी इच्छाओं का अनुसरण करता है कि तुम विनष्ट हो जाओ।

(17) और यह तुम्हारे हाथ में क्या है ऐ मूसा। (18) उसने कहा, यह मेरी लाठी है। मैं इस पर टेक लगाता हूँ और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूँ। इसमें मेरे लिए दूसरे काम भी हैं। (19) फ़रमाया कि ऐ मूसा, इसको ज़मीन पर डाल दो। (20) उसने उसको डाल दिया तो अचानक वह एक दौड़ता हुआ साँप बन गया। (21) फ़रमाया कि इसको पकड़ लो और मत डरो, हम पुनः इसको इसकी पहली दशा पर लौटा देंगे।

(22) और तुम अपना हाथ अपनी बग़ल से मिला लो, वह चमकता हुआ निकलेगा बिना किसी ऐब (विकार) के। यह दूसरी निशानी है। (23) ताकि हम बड़ी निशानियों में से कुछ निशानियाँ तुम्हें दिखायें। (24) तुम फ़िरऔन के पास जाओ। वह सीमा से बाहर निकल गया है।

(25) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरे सीने को मेरे लिए खोल दे। (26) और मेरे काम को मेरे लिए सरल कर दे। (27) और मेरी ज़बान

की गाँठ खोल दे। (28) ताकि लोग मेरी बात समझें। (29) और मेरे परिवार से मेरे लिए एक सहायक नियुक्त कर दे। (30) हारुन को जो मेरा भाई है। (31) उसके माध्यम से मेरी कमर को दृढ़ कर दे। (32) और उसको मेरे काम में साझी कर दे। (33) ताकि हम दोनों बहुत अधिक तेरी पवित्रता का वर्णन करें। (34) और बहुत अधिक तेरा चर्चा करें। (35) निस्सन्देह तू हमको देख रहा है। (36) फ़रमाया गया कि दे दिया गया तुमको ऐ मूसा जो तुमने माँगा।

(37) और हमने तुम्हारे ऊपर एक बार और उपकार किया है। (38) जबकि हमने तुम्हारी माँ की ओर वह्य की (सन्देश भेजा) जो वह्य की जा रही है। (39) कि मूसा को सन्दूक़ में रखो, फिर इसको नदी में डाल दो, फिर नदी इसको किनारे पर डाल दे। इसको एक व्यक्ति उठा लेगा जो मेरा भी शत्रु है और इसका भी शत्रु है। और मैंने अपनी ओर से तुम पर एक स्नेह डाल दिया। और ताकि तुम मेरे संरक्षण में पालन-पोषण प्राप्त करो। (40) जबकि तुम्हारी बहन चलती हुई आई, फिर वह कहने लगी, क्या मैं तुम लोगों को उसका पता बता दूँ जो इस बच्चे का पालन-पोषण भली प्रकार करे। अतः हमने तुमको तुम्हारी माँ की ओर लौटा दिया, ताकि उसकी आँख ठण्डी हो और उसको दुख न रहे। और तुमने एक व्यक्ति की हत्या कर दी फिर हमने तुमको इस दुख से छुटकारा दिलाया। और हमने तुमको भली-भाँति परखा। फिर तुम कई वर्षों मदयन वालों में रहे। फिर तुम एक अन्दाज़े (गुणों का विशेष स्तर) पर आ गये, ऐ मूसा।

(41) और मैंने तुमको अपने लिए चुना। (42) जाओ तुम और तुम्हारे भाई मेरी निशानियों के साथ। और तुम दोनों मेरी याद में आलस्य न करना। (43) तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ कि वह विद्रोही हो गया है। (44) अतः उससे विनम्रतापूर्वक बात करना, संभवतः वह उपदेश स्वीकार करे अथवा डर जाये।

(45) दोनों ने कहा कि ऐ हमारे पालनहार, हमको डर है कि वह हम पर अत्याचार करे या विद्रोह करने लगे। (46) फ़रमाया कि तुम भय न करो। मैं तुम दोनों के साथ हूँ, सुन रहा हूँ और देख रहा हूँ। (47) अतः तुम उसके पास जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे पालनहार के भेजे हुए हैं, अतः तू

इस्राईल की सन्तान को हमारे साथ जाने दे। और उनको यातना न दे। हम तेरे पालनहार के पास से एक निशानी भी लाये हैं। और सलामती उस व्यक्ति के लिए है जो सन्मार्ग का अनुसरण करे। (48) हम पर यह वह्य (श्रुति) की गई है कि उस व्यक्ति पर यातना होगी जो झुठलाये और मुँह फेरे।

(49) फ़िरऔन ने कहा, तो तुम दोनों का पालनहार कौन है, ऐ मूसा। (50) मूसा ने कहा, हमारा पालनहार वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसका रूप प्रदान किया, फिर मार्गदर्शन किया। (51) फ़िरऔन ने कहा फिर पहले की क़ौमों की क्या स्थिति है। (52) मूसा ने कहा इसका ज्ञान मेरे पालनहार के पास एक पंजिका में है। मेरा पालनहार न त्रुटि करता है और न भूलता है।

(53) वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी का फ़र्श बनाया। और उसमें तुम्हारे लिए मार्ग निकाले और आकाश से पानी उतारा। फिर हमने उसके माध्यम से भिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ पैदा कीं। (54) खाओ और अपने पशुओं को चराओ। इसके अन्दर बुद्धिमान लोगों के लिए निशानियाँ हैं। (55) इसी से हमने तुमको पैदा किया है और इसी में हम तुमको लौटायेंगे और इसी से हम तुमको पुनः निकालेंगे।

(56) और हमने फ़िरऔन को अपनी समस्त निशानियाँ दिखायीं तो उसने झुठलाया और अवज्ञा की। (57) उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम इसलिए हमारे पास आये हो कि अपने जादू से हमको हमारे देश से निकाल दो। (58) तो हम तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसा ही जादू लायेंगे। अतः तुम हमारे और अपने बीच एक वादा निर्धारित कर लो, न हम उसके विरुद्ध करें और न तुम। यह मुक़ाबला एक समतल मैदान में हो।

(59) मूसा ने कहा, तुम्हारे लिए वादे का दिन मेले वाला दिन है, और यह कि लोग दिन चढ़ने तक एकत्र किये जायें। (60) फ़िरऔन वहाँ से हटा, फिर अपने सभी दाव एकत्र किये, इसके बाद वह मुक़ाबले पर आया। (61) मूसा ने कहा कि तुम्हारा बुरा हो, अल्लाह पर झूठ न बाँधो कि वह तुमको किसी विपत्ति द्वारा नष्ट कर दे। और जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा, वह असफल हुआ।

(62) फिर उन्होंने अपने मामले में परस्पर मतभेद किया। और उन्होंने

चुपके-चुपके आपस में परामर्श किया। (63) उन्होंने कहा ये दोनों निश्चित रूप से जादूगर हैं, वह चाहते हैं कि अपने जादू की शक्ति से तुमको तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारी आदर्श प्रणाली का अन्त कर दें। (64) अतः तुम अपनी युक्तियाँ एकत्र करो। फिर एकजुट होकर आओ और वही जीत गया जो आज प्रभावी रहा।

(65) उन्होंने कहा कि ऐ मूसा, या तो तुम डालो अथवा हम पहले डालने वाले बनें। (66) मूसा ने कहा कि तुम ही पहले डालो, तो अचानक उनकी रस्सियाँ और उनकी लाठियाँ उनके जादू की ताक़त से उसको इस प्रकार दिखाई दीं मानों की वह दौड़ रही हैं। (67) अतः मूसा अपने दिल में कुछ डर गया। (68) हमने कहा कि तुम डरो नहीं, तुम्हीं प्रभावी रहोगे। (69) और जो तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसको डाल दो वह उसको निगल जायेगा जो उन्होंने बनाया है। यह जो कुछ उन्होंने बनाया है, यह जादूगर का धोखा है। और जादूगर कभी सफल नहीं होता, चाहे वह कैसे भी आये। (70) अतः जादूगर सजदे में गिर पड़े। उन्होंने कहा कि हम हारुन और मूसा के पालनहार पर ईमान लाये।

(71) फ़िरऔन ने कहा कि तुमने इसको मान लिया इससे पूर्व कि मैं तुमको अनुमति देता। वही तुम्हारा बड़ा है जिसने तुमको जादू सिखाया है। तो अब मैं तुम्हारे हाथ और पैर विपरीत दिशाओं से कटवाऊँगा। और मैं तुमको खजूर के तनों पर फांसी दूँगा। और तुम जान लोगे कि हममें से किसका दण्ड अधिक पीड़ादायक है और अधिक स्थायी है।

(72) जादूगरों ने कहा कि हम तुझको कदापि उन प्रमाणों पर प्राधानता नहीं देंगे जो हमारे पास आये हैं। और उस हस्ती पर जिसने हमको पैदा किया है, अतः तुझको जो कुछ करना है उसे कर डाल। तुम जो कुछ कर सकते हो, इसी संसारिक जीवन में कर सकते हो। (73) हम अपने पालनहार पर ईमान लाये ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और इस जादू को भी जिस पर तुमने हमें विवश किया। और अल्लाह सर्वश्रेष्ठ है और बाक़ी (स्थायी) रहने वाला है।

(74) निस्सन्देह जो व्यक्ति अपराधी बनकर अपने पालनहार के समक्ष उपस्थित होगा तो उसके लिए नरक है, उसमें वह न मरेगा और न जियेगा।

(75) और जो व्यक्ति अपने पालनहार के पास मोमिन (आस्थावान) होकर आयेगा जिसने भले कर्म किये हों, तो ऐसे लोगों के लिए बड़े ऊँचे दर्जे हैं। (76) उनके लिए सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। वह उनमें सदैव रहेंगे। और यह बदला है उस व्यक्ति का जो पवित्रता अपनाये।

(77) और हमने मूसा को वह्य (प्रकाशना) की कि रात के समय मेरे बन्दों को लेकर निकलो फिर उनके लिए समुद्र में सूखा मार्ग बना लो, तुम न पीछा करने से डरो और न किसी और चीज़ से डरो। (78) फिर फ़िरऔन ने अपनी सेनाओं के साथ उनका पीछा किया फिर उनको समुद्र के पानी ने ढाँप लिया जैसा कि ढाँप लिया। (79) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को भटकाया और उसको उचित मार्ग न दिखाया।

(80) ऐ इस्राईल की सन्तान, हमने तुमको तुम्हारे शत्रु से मुक्ति दी और तुमसे तूर के दायीं ओर वादा ठहराया। और हमने तुम्हारे ऊपर मन्न और सलवा उतारा। (81) खाओ हमारी दी हुई पवित्र जीविका और उसमें विद्रोह न करो कि तुम्हारे ऊपर मेरा प्रकोप अवतरित हो। और जिस पर मेरा प्रकोप अवतरित हुआ वह नष्ट हुआ। (82) हाँ, जो तौबा करे और ईमान लाये और भला कर्म करे और सन्मार्ग पर रहे तो उसके लिए मैं बहुत अधिक क्षमा करने वाला हूँ।

(83) और ऐ मूसा, अपनी क़ौम को छोड़कर शीघ्र आने पर तुमको किस चीज़ ने प्ररित किया। (84) मूसा ने कहा, वह लोग भी मेरे पीछे ही हैं। और मैं ऐ मेरे पालनहार, तेरी ओर शीघ्र आ गया ताकि तू प्रसन्न हो। (85) फ़रमाया, तो हमने तुम्हारी क़ौम को तुम्हारे बाद एक परीक्षा में डाल दिया। और सामरी ने उनको पथभ्रष्ट कर दिया।

(86) फिर मूसा अपनी क़ौम की ओर क्रोध और दुख में भरे हुए लौटे। उन्होंने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, क्या तुमसे तुम्हारे पालनहार ने एक अच्छा वादा नहीं किया था। क्या तुम पर लम्बा समय बीत गया। या तुमने चाहा कि तुम्हारे ऊपर तुम्हारे पालनहार का क्रोध उतरे, इसलिए तुमने अपना वचन तोड़ा।

(87) उन्होंने कहा कि हमने अपनी इच्छा से आपके साथ विश्वासघात नहीं किया, बल्कि क़ौम के आभूषणों का बोझ हमसे उठवाया गया था तो

हमने उसको फेंक दिया। फिर इस प्रकार सामरी ने ढाल लिया। (88) अतः उसने उनके लिए एक बछड़ा निर्मित कर दिया, एक ऐसी मूर्ति जिससे बैल जैसी आवाज़ निकलती थी। फिर उन्होंने कहा कि यह तुम्हारा उपास्य है और मूसा का उपास्य भी, मूसा इसे भूल गये। (89) क्या वह देखते न थे कि न वह किसी बात का उत्तर देता है और न कोई लाभ या हानि पहुँचा सकता है।

(90) और हारुन ने उनसे पहले ही कहा था कि ऐ मेरी क़ौम, तुम इस बछड़े के माध्यम से भटक गये हो और तुम्हारा पालनहार तो रहमान है। अतः मेरा अनुसरण करो और मेरा आज्ञापालन करो। (91) उन्होंने कहा कि हम तो इसी की पूजा में लगे रहेंगे जब तक कि मूसा हमारे पास लौट न आयें।

(92) मूसा ने कहा कि ऐ हारुन, जब तूने देखा कि वह भटक गये हैं तो तुमको किस चीज़ ने रोका कि तुम मेरे आदेश का पालन करो। (93) क्या तुमने मेरे कहने के विरुद्ध किया। (94) हारुन ने कहा कि ऐ मेरी माँ के बेटे, तुम मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सिर। मुझे ये डर था कि तुम कहोगे कि तुमने इस्राईल के बेटों के बीच फूट डाल दी और मेरी बात का ध्यान न रखा।

(95) मूसा ने कहा कि ऐ सामरी, तुम्हारा क्या मामला है। (96) उसने कहा कि मुझको वह चीज़ दिखाई दी जो दूसरों को दिखाई नहीं दी तो मैंने सन्देष्टा के पदचिन्ह से एक मुठ्ढ़ी उठाई और इसमें डाल दी। मेरे मन ने मुझको ऐसा ही समझाया। (97) मूसा ने कहा कि दूर हो। अब तेरे लिए जीवन भर यह है कि तू कहे कि मुझको न छूना। और तेरे लिए एक और वादा यह है जो तुझसे टलने वाला नहीं। और तू अपने इस उपास्य को देख जिस पर तू निरन्तर रीझा हुआ जमा बैठा रहता था, हम उसको जलायेंगे फिर इसको नदीं में बिखेर कर बहा देंगे। (98) तुम्हारा उपास्य तो मात्र अल्लाह है उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसका ज्ञान प्रत्येक वस्तु पर छाया हुआ है।

(99) इसी प्रकार हम तुमको उनके वृत्तान्त सुनाते हैं जो पहले गुज़र चुके। और हमने तुमको अपने पास से एक मार्गदर्शन की किताब दी है। (100) जो इससे विमुख होगा, वह क़ियामत के दिन एक भारी बोझ उठायेगा। (101) वह उसमें सदैव रहेंगे और यह बोझ क़ियामत के दिन उनके लिए बहुत बुरा सिद्ध

होगा। (102) जिस दिन सूर (महाशंख) में फूँक मारी जायेगी और अपराधियों को उस दिन हम इस दशा में एकत्र करेंगे कि भय से उनकी आँखें नीली होंगी। (103) आपस में चुपके-चुपके कहते होंगे कि तुम मात्र दस दिन रहे होंगे। (104) हम भली-भाँति जानते हैं जो कुछ वह कहेंगे। जबकि उनका सबसे अधिक समझ रखने वाला व्यक्ति कहेगा कि तुम मात्र एक दिन ठहरे।

(105) और लोग तुमसे पहाड़ों के सम्बन्ध में पूछते हैं। कहो कि मेरा पालनहार इनको उड़ा कर बिखेर देगा। (106) फिर पृथ्वी को समतल साफ़ मैदान बनाकर छोड़ देगा। (107) तुम उसमें न कोई टेढ़ देखोगे और न कोई ऊँचाई-नीचाई। (108) उस दिन सब लोग पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे। तनिक भी कोई टेढ़ न होगी। सभी आवाज़ें रहमान के आगे दब जायेगी। तुम एक सरसराहट के अतिरिक्त कुछ न सुनोगे।

(109) उस दिन सिफ़ारिश लाभ न देगी, परन्तु ऐसा व्यक्ति जिसको रहमान ने अनुमति दी हो और उसके लिए बोलना पसन्द किया हो। (110) वह सबके अगले और पिछले वृत्तान्त को जानता है। और उनका ज्ञान उसको परिधि में नहीं ले सकता। (111) और सभी चेहरे उस जीवंत शाशवत सत्ता के समक्ष झुके होंगे। और ऐसा व्यक्ति असफल रहेगा जो अन्याय लेकर आया होगा। (112) और जिसने भले कर्म किये होंगे और वह ईमान (आस्था) भी रखता होगा तो उसको न किसी ज़्यादती का डर होगा और न किसी कमी का।

(113) और इसी प्रकार हमने अरबी का क़ुरआन उतारा है और इसमें हमने भिन्न-भिन्न ढंग से चेतावनियाँ बयान की हैं ताकि लोग डरें या वह उनके दिल में कुछ सोच डाल दे। (114) तो श्रेष्ठ है अल्लाह, वास्तविक शासक। और तुम क़ुरआन के लेने में शीघ्रता न करो जब तक उसकी वह्य (श्रुति) पूर्णता को न पहुँच जाये। और कहो कि ऐ मेरे पालनहार, मेरा ज्ञान बढ़ा दे।

(115) और हमने आदम को इससे पूर्व आदेश दिया था तो वह भूल गया और हमने उसमें दृढ़ संकलप न पाया। (116) और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि आदम को सजदा करो तो उन्होंने सजदा किया परन्तु इबलीस, कि उसने अवज्ञा किया। (117) फिर हमने कहा कि ऐ आदम, यह निस्सन्देह तुम्हारा

और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है तो कहीं वह तुम दोनों को जन्नत से निकलवा न दे, फिर तुम वंचित होकर रह जाओ।

(118) यहाँ तुम्हारे लिए यह है कि तुम न भूखे रहोगे और न तुम नंगे होगे। (119) और तुम यहाँ न प्यासे होगे, और न तुमको धूप लगेगी। (120) फिर शैतान ने उनको बहकाया। उसने कहा कि ऐ आदम, क्या मैं तुमको सदैव रहने वाला वृक्ष बताऊँ। और ऐसा राज्य जिसका कभी पतन न हो। (121) अतः उन दोनों ने उस वृक्ष का फल खा लिया तो उन दोनो के छिपाने के अंग एक-दूसरे के सामने खुल गये। और दोनों अपने आप को जन्नत (बाग़) के पत्तों से ढ़ाँकने लगे। और आदम ने अपने पालनहार के आदेश की अवमानना की तो भटक गये। (122) फिर उसके पालनहार ने उस पर कृपा की। फिर उसकी तौबा स्वीकार की और उसको मार्गदर्शन प्रदान किया।

(123) अल्लाह ने कहा कि तुम दोनों यहाँ से उतरो। तुम एक दूसरे के शत्रु होगे। फिर यदि तुम्हारे पास मेरी ओर से मार्गदर्शन आये तो जो व्यक्ति मेरे मार्गदर्शन का अनुसरण करेगा, वह न भटकेगा और न वंचित रहेगा। (124) और जो व्यक्ति मेरे उपदेश से मुँह मोड़ेगा तो उसके लिए विपन्नता का जीवन होगा। और क़ियामत के दिन हम उसको अन्धा उठायेंगे। (125) वह कहेगा कि ऐ मेरे पालनहार, तूने मुझे अन्धा क्यों उठाया, मैं तो आँखों वाला था। (126) कहा जायेगा कि इसी प्रकार तुम्हारे पास हमारी निशानियाँ आयीं तो तुमने उन पर तनिक ध्यान न दिया तो उसी प्रकार आज तुम्हारे ऊपर कुछ ध्यान नहीं दिया जायेगा। (127) और इसी प्रकार हम बदला देंगे उसको जो सीमा से आगे बढ़ जाये और अपने पालनहार की निशानियों पर ईमान न लाये। और परलोक की यातना बहुत कठोर है और सदा रहने वाली है।

(128) क्या लोगों को इस बात से शिक्षा नहीं मिली कि इनसे पहले हमने कितने समूह नष्ट कर दिये। ये उनके नगरों में चलते हैं। निस्सन्देह इसमें बुद्धि वालों के लिए बड़ी निशानियाँ हैं। (129) और यदि तुम्हारे पालनहार की ओर से एक बात पहले नियत न हो चुकी होती और अवकाश की एक अवधि निर्धारित न होती तो अवश्य इनका निर्णय चुका दिया जाता। (130) अतः जो कुछ ये लोग कहते हैं, उस पर धैर्य रखो। और अपने पालनहार

की प्रशंसा के साथ उसकी स्तुति करो, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले, और रात की घड़ियों में भी स्तुति करो। और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम सन्तुष्ट हो जाओ।

(131) और कदापि उन चीज़ों की ओर आँख उठाकर भी न देखो जिनको हमने उनके कुछ समुदायों को उनकी परीक्षा के लिए उन्हें संसार का सौन्दर्य दे रखा है। और तुम्हारे पालनहार की जीविका अधिक श्रेष्ठ है और शेष रहने वाली है। (132) और अपने लोगों को नमाज़ का आदेश दो। और उसको नियमित रुप से अपनाओ। हम तुमसे कोई जीविका नहीं माँगते। जीविका तो तुमको हम देंगे। और श्रेष्ठ परिणाम तो तक़्वा (धैर्य रखने वालों) ही के लिए है।

(133) और लोग कहते हैं कि ये अपने पालनहार के पास से हमारे लिए कोई निशानी क्यों नहीं लाते। क्या उनको पिछली किताबों के प्रमाण नहीं पहुँचे। (134) और यदि हम उनको इससे पहले किसी यातना से नष्ट कर देते तो वह कहते कि ऐ हमारे पालनहार, तूने हमारे पास सन्देष्टा क्यों न भेजा कि हम अपमानित और लज्जित होने से पहले तेरी निशानियों का अनुसरण करते। (135) कहो कि हर एक प्रतीक्षा है तो तुम भी प्रतीक्षा करो। भविष्य में तुम जान लोगे कि कौन सीधे मार्ग वाला है। और कौन मंज़िल तक पहुँचा।

21. सूरह अल-अम्बिया

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) लोगों के लिए उनका हिसाब निकट आ पहुँचा और वह अचेतना में पड़े हुए मुँह मोड़ रहे हैं। (2) उनके पालनहार की ओर से जो भी नया उपदेश उनके पास आता है, वह उसका उपहास करते हुए सुनते हैं। (3) उनके दिल अचेतना में पड़े हुए हैं। और अत्याचारियों ने परस्पर यह कानाफूसी की कि यह व्यक्ति तो तुम्हारे ही जैसा एक मनुष्य है। फिर तुम क्यों आँखों देखे इसके जादू में फँसते हो। (4) सन्देष्टा ने कहा कि मेरा पालनहार प्रत्येक बात को जानता है, चाहे वह आसमान में हो या धरती में। और वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(5) बल्कि वह कहते हैं, ये तो भ्रांतिपूर्ण स्वप्न हैं। बल्कि इसको उन्होंने स्वंय गढ़ लिया है। बल्कि वह एक कवि हैं। उनको चाहिए कि वह हमारे पास इस प्रकार की कोई निशानी लायें जिस प्रकार की निशानियों के साथ पिछले सन्देष्टा भेजे गये थे। (6) इनसे पहले किसी नगर के लोग भी जिनको हमने नष्ट किया, ईमान नहीं लाये तो क्या यह लोग ईमान लायेंगे।

(7) और तुमसे पहले भी जिसको हमने सन्देष्टा बनाकर भेजा, मनुष्यों ही में से भेजा। हम उनकी ओर वह्य (श्रुति) भेजते थे। अतः तुम किताब वालों से पूछ लो, यदि तुम नहीं जानते। (8) और हमने उन सन्देष्टाओं को ऐसे शरीर नहीं दिये कि वह खाना न खाते हों। और न ही वह सदैव रहने वाले थे। (9) फिर हमने उनके साथ किये हुए वादे को सच्चा कर दिखाया। अतः उनको और जिस-जिस को हमने चाहा, बचा लिया। और हमने सीमा से बढ़ने वालों को नष्ट कर दिया।

(10) हमने तुम्हारी ओर एक किताब उतारी है जिसमें तुम्हारा अनुस्मरण है, फिर क्या तुम समझते नहीं। (11) और कितने ही अत्याचारी लोगों के नगर हैं जिनको हमने पीस डाला। और उनके बाद दूसरी क़ौम को उठाया। (12) अतः जब उन्होंने हमारा प्रकोप आते देखा तो वह उससे भागने लगे। (13) भागो मत। अपनी जीवन सामग्री की ओर और अपने घरों की ओर वापस चलो, ताकि तुमसे पूछा जाये। (14) उन्होंने कहा, हाय हमारा दुर्भाग्य, निस्सन्देह हम लोग अत्याचारी थे। (15) तो वह यही पुकारते रहे। यहाँ तक कि हमने उनको ऐसा कर दिया जैसे खेती कट गयी हो और आग बुझ गयी हो।

(16) और हमने आकाश और धरती को और जो कुछ इनके बीच है खेल के रूप में नहीं बनाया। (17) यदि हम कोई खेल बनाना चाहते तो इसको हम अपने पास से बना देते, यदि हमको यह करना होता। (18) बल्कि हम सत्य को झूठ पर मारेंगे तो वह उसका सिर तोड़ देगा तो वह अचानक जाता रहेगा और तुम्हारे लिए विनाश उन बातों के कारण जो तुम बयान करते हो।

(19) और उसी के हैं जो आकाशों और धरती में हैं। और जो उसके पास

हैं, वह उसकी उपासना से मुँह नहीं मोड़ते और न आलस्य करते हैं। (20) वह रात-दिन उसको याद करते हैं, वह कभी नहीं थकते।

(21) क्या उन्होंने धरती में से उपास्य ठहराये हैं, जो किसी को जीवित करते हों। (22) यदि इन दोनों में अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य होते तो दोनों की व्यवस्था अस्त व्यस्त हो जाती। अतः अल्लाह, सिंहासन का स्वामी, उन बातों से पवित्र है जो यह लोग बयान करते हैं। (23) वह जो कुछ करता है, उस पर वह पूछा न जायेगा और इनसे पूछ होगी।

(24) क्या इन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त अन्य उपास्य बनाये हैं। इनसे कहो कि तुम अपना प्रमाण लाओ। यही बात उन लोगों की है जो मेरे साथ हैं और यही बात उन लोगों की है जो मुझसे पहले हुए। बल्कि इनमें से अधिकतर सच्चाई को नहीं जानते। अतः मुँह मोड़ रहे हैं। (25) और हमने तुमसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसकी ओर हमने यह वह्य (श्रुति) न की हो कि मेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, अतः तुम मेरी उपासना करो।

(26) और वह कहते हैं कि रहमान ने सन्तान बनायी है, वह उससे पवित्र है, बल्कि (फ़रिश्ते) तो सम्मानित बन्दे हैं। (27) वह उससे आगे बढ़ कर बात नहीं करते। और वह उसी के आदेशअनुसार कार्य करते हैं। (28) अल्लाह इनके अगले और पिछले वृत्तान्त को जानता है। और वह सिफ़ारिश नहीं कर सकते, परन्तु उसके लिए जिसको अल्लाह पसन्द करे। और वह उसके भय से डरते रहते हैं। (29) और उनमें से जो व्यक्ति कहेगा कि उसके अतिरिक्त मैं उपास्य हूँ तो हम उसको नरक का दण्ड देंगे। हम अत्याचारियों को ऐसा ही दण्ड देते हैं।

(30) क्या अवज्ञा करने वालों ने नहीं देखा कि आकाश और धरती दोनों बन्द थे, फिर हमने उनको खोल दिया। और हमने पानी से प्रत्येक जीवित वस्तु को बनाया। क्या फिर भी वह ईमान नहीं लाते।

(31) और हमने धरती में पहाड़ बनाये कि वह उनको लेकर झुक न जाये और उसमें हमने चौड़े रास्ते बनाये ताकि लोग मार्ग प्राप्त करें। (32) और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत बनाया। और वह उसकी

निशानियों से मुँह मोड़े हुए हैं। (33) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चाँद बनाये। सब एक-एक कक्षा में तैर रहे हैं।

(34) और हमने तुमसे पहले भी किसी मनुष्य को सदैव का जीवन प्रदान नहीं किया तो क्या यदि तुमको मृत्यु आ जाये तो वह सदैव रहने वाले हैं। (35) प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। और हम तुमको बुरी परिस्थिति और अच्छी परिस्थिति से आज़माते हैं परखने के लिए और तुम सब हमारी ओर लौटाये जाओगे।

(36) और अवज्ञाकारी लोग जब तुमको देखते हैं तो वह सब तुम्हारा उपहास करते हैं। क्या यही है जो तुम्हारे उपास्यों की चर्चा किया करता है। और स्वंय यह लोग रहमान के उल्लेख का इन्कार करते हैं।

(37) मनुष्य जल्दबाज़ी (उतावलेपन) के ख़मीर से पैदा हुआ है। मैं तुमको शीघ्र ही अपनी निशानियाँ दिखाऊँगा तो तुम मुझसे जल्दी न करो। (38) और लोग कहते हैं कि यह वादा कब आयेगा, यदि तुम सच्चे हो। (39) काश (क्या ही अच्छा होता) इन अवज्ञाकारियों को उस समय की सूचना होती जबकि वह आग को न अपने सामने से रोक सकेंगे और न अपने पीछे से। और न उनको सहायता पहुँचेगी। (40) बल्कि वह अकस्मात उन पर आ जायेगी, तो वह उनको बदहवास (हताश) कर देगी। फिर वह न उसको रोक सकेंगे और न उनको अवकाश दिया जायेगा। (41) और तुमसे पहले भी सन्देष्टाओं का उपहास किया गया। फिर जिन लोगों ने उनमें से उपहास किया था, उनको उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वह उपहास करते थे।

(42) कहो कि कौन है जो रात और दिन में रहमान की पकड़ से तुमको बचाता है। बल्कि वह लोग अपने पालनहार के अनुस्मरण से मुँह मोड़ रहे हैं। (43) क्या उनके लिए हमारे अतिरिक्त कुछ उपास्य हैं जो उनको बचा लेते हैं। वह स्वंय अपनी रक्षा का सामर्थ्य नहीं रखते। और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ दे सकता हैं।

(44) बल्कि हमने उनको और उनके बाप-दादा को सांसारिक सामग्री दी। यहाँ तक कि इसी दशा में उन पर लम्बी अवधि व्यतीत हो गयी। क्या वह

नहीं देखते कि हम पृथ्वी को उसके किनारों से घटाते चले जा रहे हैं। फिर क्या यही लोग प्रभावशाली रहने वाले है।

(45) कहो कि मैं मात्र वह्य (श्रुति) के माध्यम से उनको डराता हूँ। और बहरे पुकार को नहीं सुनते जबकि उनको डराया जाये। (46) और यदि तेरे पालनहार की यातना का झोंका उन्हे छू जाये तो वह कहने लगेंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य, निस्सन्देह हम अत्याचारी थे।

(47) और हम क़ियामत के दिन न्याय के तराज़ू रखेंगे। तो किसी जीव पर तनिक भी अत्याचार न होगा। और यदि राई के दाने के बराबर भी किसी का कर्म होगा तो हम उसको उपस्थित कर देंगे। और हम हिसाब लेने के लिए पर्याप्त हैं।

(48) और हमने मूसा और हारुन को फ़ुरकान (सत्य और असत्य में भेद करने वाला) और प्रकाश और उपदेश प्रदान किया है अल्लाह से डरने वालों के लिए। (49) जो बिन देखे अपने पालनहार से डरते हैं और वह क़ियामत का भय रखने वाले हैं। (50) और यह एक बरकत वाला (कल्याणकारी) अनुस्मरण है जो हमने उतारा है, तो क्या तुम इसको झुठलाते हो।

(51) और हमने इससे पहले इब्राहीम को उसका मार्गदर्शन प्रदान किया। और हम उसको भली-भाँति जानते थे। (52) जब उसने अपने पिता और अपनी क़ौम से कहा कि यह क्या मूर्तियाँ हैं जिन पर तुम जमे बैठे हो। (53) उन्होंने कहा कि हमने अपने बाप-दादा को इनकी उपासना करते हुए पाया है। (54) इब्राहीम ने कहा कि निस्सन्देह तुम और तुम्हारे बाप-दादा एक स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त रहे।

(55) उन्होंने कहा, क्या तुम हमारे पास सच्ची बात लाये हो या तुम मज़ाक़ कर रहे हो। (56) इब्राहीम ने कहा, बल्कि तुम्हारा पालनहार वह है जो आकाशों और धरती का पालनहार है जिसने इनको पैदा किया। और मैं इस बात की गवाही देने वालों में हूँ। (57) और अल्लाह की सौगन्ध, मैं तुम्हारे बुतों के साथ एक युक्ति करुँगा जबकि तुम पीठ फेर कर चले जाओगे। (58) अतः उसने उनको खण्ड-खण्ड कर दिया सिवाय उनके एक बड़े के, ताकि वह उसकी ओर रुजू करें (पूछने के लिए लौटें)।

(59) उन्होंने कहा कि किसने हमारे मूर्तियों के साथ ऐसा किया है। निस्सन्देह वह बड़ा अत्याचारी है। (60) लोगों ने कहा कि हमने एक युवक को उनके विषय में कुछ कहते हुए सुना था जिसको इब्राहीम कहा जाता है। (61) उन्होंने कहा कि उसको सभी लोगों के सामने उपस्थित करो, ताकि वह देखें। (62) उन्होंने कहा कि ऐ इब्राहीम, क्या हमारे उपास्यों के साथ तुमने ऐसा किया है। (63) इब्राहीम ने कहा, बल्कि उनके उस बड़े ने ऐसा किया है तो उनसे पूछ लो यदि ये बोलते हों।

(64) फिर उन्होंने अपने मन में सोचा, फिर वह परस्पर एक-दूसरे से कहने लगे कि वास्तव में तुम ही असत्य पर हो। (65) फिर अपने सिरों को झुका लिया। ऐ इब्राहीम, तुम जानते हो कि ये बोलते नहीं। (66) इब्राहीम ने कहा, क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी चीज़ों की उपासना करते हो जो तुमको न कोई लाभ पहुँचा सके और न कोई हानि (67) खेद है तुम पर भी और उन चीज़ों पर भी जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त उपासना करते हो। क्या तुम समझते नहीं।

(68) उन्होंने कहा कि इसको आग में जला दो और अपने उपास्यों की सहायता करो, यदि तुमको कुछ करना है। (69) हमने कहा कि ऐ आग, तू इब्राहीम के लिए ठण्डक और शांत और सुरक्षित बन जा। (70) और उन्होंने उसके साथ बुराई करना चाहा तो हमने उन्हीं लोगों को असफल बना दिया।

(71) और हम उसको और लूत को उस धरती की ओर बचा कर ले गये जिसमें हमने संसार वालों के लिए कल्याण (ईश्वर कृपा) रखा है। (72) और हमने उसको इस्हाक़ दिया और तत्पश्चात याक़ूब। और हमने इन सबको सदाचारी बनाया। (73) और हमने उनको नायक बनाया और जो हमारे आदेश से मार्गदर्शन करते थे। और हमने उनको भले कर्म और नमाज़ और ज़कात की अदायगी का आदेश भेजा और वह हमारी उपासना करने वाले थे।

(74) और लूत को हमने विवेक और ज्ञान प्रदान किया। और उसको उस नगर से मुक्ति दी जो बुरे कर्म करती थी। निस्सन्देह वह बहुत बुरे, दुराचारी लोग थे। (75) और हमने उसको अपनी दयालुता में प्रविष्ट किया। निस्सन्देह वह भले लोगों में से था।

(76) और नूह को जबकि इससे पहले उसने पुकारा तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। अतः हमने उसको और उसके लोगों को बहुत बड़े दुख से छुटकारा दिया। (77) और उन लोगों के मुक़ाबले में उसकी सहायता की जिन्होंने हमारी निशानियों को झुठलाया। निस्सन्देह वह बहुत बुरे लोग थे। अतः हमने उन सबको डुबा दिया।

(78) और दाऊद और सुलेमान को जब वह दोनों खेत के सम्बन्ध में निर्णय कर रहे थे, जबकि उसमें कुछ लोगों की बकरियाँ रात के समय जा पड़ीं। और हम उनके इस निर्णय को देख रहे थे। (79) अतः हमने सुलेमान को इसकी समझ दे दी। और हमने दोनों को विवेक और ज्ञान प्रदान किया था। और हमने दाऊद के अधीन बना दिया था पहाड़ों को कि वह उसके साथ स्तुति करते थे और पक्षियों को भी। और हम ही करने वाले थे। (80) और हमने उसको तुम्हारे लिए एक युद्ध वस्त्र का उद्योग सिखाया, ताकि वह तुमको युद्ध में सुरक्षित रखे। फिर क्या तुम आभार व्यक्त करने वाले हो।

(81) और हमने सुलेमान के लिए तिव्र हवा को वश में कर दिया जो उसके आदेश से उस भू-भाग की ओर चलती थी। जिसमें हमने विभूतियाँ रखी थीं। और हम प्रत्येक चीज़ को जानने वाले हैं। (82) और शैतानों में से भी हमने उसका आज्ञाकारी कर दिया था जो उसके लिए ग़ोता लगाते थे। और इसके अतिरिक्त दूसरे काम करते थे और हम ही उनको संभालने वाले थे।

(83) और अय्यूब को जबकि उसने अपने पालनहार को पुकारा कि मुझको बीमारी लग गयी है और तू सभी दया करने वालों से अधिक दयावान है। (84) तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसको जो कष्ट था, उसे दूर कर दिया। और हमने उसको उसका परिवार प्रदान किया और उसी के साथ उसके बराबर और भी, अपनी ओर से दया और उपदेश, उपासना करने वालों के लिए।

(85) और इस्माईल और इदरीस और जुल-किफ़्ल को, ये सब धैर्य रखने वालों में से थे। (86) और हमने इनको अपनी दया में प्रवेश दिया। निस्सन्देह वह भले कर्म करने वालों में से थे।

(87) और मछली वाले (यूनुस) को, जबकि वह अपनी क़ौम से क्रुद्ध

होकर चला गया। फिर उसने यह समझा कि हम उसको न पकड़ेंगे, फिर उसने अँधेरे में पुकारा कि तेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, तू पवित्र है। निस्सन्देह मैं ही दोषी हूँ। (88) तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की। और उसको दुख से ठुकरा दिया। और इसी प्रकार हम ईमान वालों को बचा लिया करते हैं।

(89) और ज़करिया को, जबकि उसने अपने पालनहार को पुकारा कि ऐ मेरे पालनहार, तू मुझको अकेला न छोड़। और तू श्रेष्ठतम उत्तराधिकारी है। (90) तो हमने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और उसको यह्या प्रदान किया। और उसकी पत्नी को उसके लिए ठीक कर दिया। यह लोग भले कर्मों में दौड़ते थे और हमको आशा और भय के साथ पुकारते थे। और हमारे आगे झुके हुए थे।

(91) और वह महिला जिसने अपने सतीत्व को बचाया तो हमने उसके अन्दर अपनी आत्मा फूँक दी और उसको और उसके बेटे को संसार वालों के लिए एक निशानी बना दिया।

(92) और यह तुम्हारी उम्मत (समुदाय) एक ही उम्मत है और मैं ही तुम्हारा पालनहार हूँ तो तुम मेरी उपासना करो। (93) और उन्होंने अपना धर्म अपने लोगों के बीच टुकड़े-टुकड़े कर डाला। सब हमारे पास आने वाले हैं। (94) अतः जो व्यक्ति भले कर्म करेगा और वह ईमान वाला होगा तो उसके कर्मों की उपेक्षा न की जाएगी, और हम उसको लिख लेते हैं।

(95) और जिस नगर वालों के लिए हमने विनाश नियत कर दिया है, उनके लिए अवैध है कि वह वापस लौटें। (96) यहाँ तक कि जब याजूज और माजूज खोल दिये जायेंगे और वह प्रत्येक ऊँचाई से निकल पड़ेंगे। (97) और सच्चा वादा निकट आ लगेगा तो अचानक उन लोगों की निगाहें फटी रह जायेंगी जिन्होंने झुठलाया था। हाय हमारा दुर्भाग्य, हम इससे अचेतना में पड़े रहे। बल्कि हम अत्याचारी थे।

(98) निस्सन्देह तुम और जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पूजते थे, सभी नरक का ईंधन हैं। वहीं तुमको जाना है। (99) यदि ये वास्तव में उपास्य होते तो वह उसमें न पड़ते। और सभी उसमें सदैव रहेंगे। (100) उसमें उनके लिए चिल्लाना है और वह उसमें इसके अतिरिक्त कुछ न

सुनेंगे। (101) निस्सन्देह जिनके लिए हमारी ओर से भलाई का पहले निर्णय हो चुका है, वह उससे दूर रखे जायेंगे। (102) वह उसकी आहट भी न सुनेंगे। और वह अपनी पसन्दीदा चीज़ों में सदैव रहेंगे। (103) उनको बड़ी घबराहट दुख में न डालेगी। और फ़रिश्ते उनका स्वागत करेंगे। यह है तुम्हारा वह दिन जिसका तुमसे वादा किया गया था।

(104) जिस दिन हम आसमान को लपेट देंगे जिस प्रकार पंजिका में पन्ने लपेट दिये जाते हैं। जिस प्रकार पहले हमने सृष्टि का प्रारम्भ किया था, उसी प्रकार हम उसकी पुनरावृति करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे वादा है और हम इसको करके रहेंगे। (105) और जबूर में हम उपदेश के बाद लिख चुके हैं कि धरती के उत्तराधिकारी हमारे सदाचारी बन्दे होंगे। (106) इसमें एक बड़ी सूचना है उपासना करने वाले लोगों के लिए।

(107) और हमने तुमको तो मात्र संसार वालों के लिए दया बनाकर भेजा है। (108) कहो कि मेरे पास जो वह्य (श्रुति) आती है वह यह है कि तुम्हारा उपास्य केवल एक उपास्य है, तो क्या तुम आज्ञाकारी बनते हो। (109) अतः यदि वह मुँह मोड़ें तो कह दो कि मैं तुमको स्पष्ट रूप से सूचित कर चुका हूँ। और मैं नहीं जानता कि वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है, निकट है या दूर। (110) निस्सन्देह वह खुली हुई बात को भी जानता है और उस बात को भी जिसको तुम छिपाते हो। (111) और मुझको ज्ञात नहीं संभवतः वह तुम्हारे लिए परीक्षा हो और लाभ उठा लेने का एक अवकाश हो। (112) पैग़म्बर ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, सच्चाई के साथ निर्णय कर दे। और हमारा पालनहार रहमान है, उसी से हम उन बातों पर सहायता माँगते हैं जो तुम बयान करते हो।

22. सूरह अल-हज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ लोगों, अपने पालनहार से डरो। निस्सन्देह क़ियामत का भूचाल बड़ी भारी चीज़ है। (2) जिस दिन तुम उसे देखोगे, प्रत्येक दूध पिलाने

वाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जायेगी। और प्रत्येक गर्भवाली अपना गर्भ डाल देगी। और लोग तुमको मूर्छित दिखाई देंगे जबकि वह मूर्छित न होंगे, बल्कि अल्लाह की यातना अत्यन्त कठोर है। (3) और लोगों में कोई ऐसा भी है। जो ज्ञान के बिना अल्लाह के सम्बन्ध में झगड़ता है। (4) और प्रत्येक विद्रोही शैतान का अनुसरण करने लगता है। उसके सम्बन्ध में यह लिख दिया गया है कि जो व्यक्ति उसको मित्र बनायेगा, वह उसको पथभ्रष्ट कर देगा और उसको नरक की यातना का मार्ग दिखायेगा।

(5) ऐ लोगों! यदि तुम पुनः जी उठने के सम्बन्ध में सन्देह में हो तो हमने तुमको मिट्टी से पैदा किया है, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर माँस की बोटी से, रूप वाली और बिना रूप वाली भी, ताकि हम तुम पर स्पष्ट करें। और हम गर्भों में ठहरा देते हैं जो चाहते हैं एक निर्धारित अवधि तक। फिर हम तुमको बच्चा बनाकर बाहर लाते हैं। फिर ताकि तुम अपनी पूरी युवावस्था तक पहुँच जाओ। और तुममें से कोई व्यक्ति पहले ही मर जाता है और कोई व्यक्ति जीर्ण आयु तक पहुँचा दिया जाता है ताकि वह जान लेने के बाद फिर कुछ न जाने। और तुम धरती को देखते हो कि सूखी पड़ी है, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह ताज़ा हो गयी और उभर आयी और वह भिन्न-भिन्न प्रकार की आकर्षक चीज़ें उगाती है। (6) यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह निर्जीवों में प्राण डालता है, और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (7) और यह कि क़ियामत आने वाली है, उसमें कोई सन्देह नहीं और अल्लाह अवश्य उन लोगों को उठायेगा जो क़ब्रों में हैं।

(8) और लोगों में कोई व्यक्ति है जो अल्लाह की बात में झगड़ता है, बिना किसी ज्ञान और मार्गदर्शन और प्रकाशवान किताब के। (9) घमण्ड करते हुए ताकि वह अल्लाह के मार्ग से भटका दे। उसके लिए संसार में अपमान है और कियामत के दिन हम उसको जलती हुई आग की यातना चखायेंगे। (10) यह तुम्हारे हाथ के किए हुए कामों का बदला है और अल्लाह अपने बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं।

(11) और लोगों में कोई है जो किनारे पर (बे मन से) रहकर अल्लाह की उपासना करता है। अतः यदि उसको कोई लाभ पहुँचा तो

वह उस उपासना पर क़ायम हो गया। और यदि कोई परीक्षा आ पड़ी तो उल्टा फिर गया। उसने संसार भी खो दिया और परलोक भी, यही स्पष्ट घाटा है।

(12) वह अल्लाह के अतिरिक्त ऐसी चीज़ को पुकारता है जो न उसको हानि पहुँचा सकती है और न उसको लाभ पहुँचा सकती है। यह चरम सीमा की पथभ्रष्टता है। (13) वह ऐसी चीज़ को पुकारता है जिसकी हानि उसके लाभ से अधिक निकट है। कैसा बुरा काम बनाने वाला है और कैसा बुरा मित्र। (14) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाये और भले कर्म किये, ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। अल्लाह करता है जो वह चाहता है।

(15) जो व्यक्ति यह समझता हो कि अल्लाह संसार और परलोक में उसकी सहायता नहीं करेगा तो उसको चाहिए कि वह एक रस्सी आसमान तक ताने। फिर उसको काट डाले और देखे कि क्या उसकी युक्ति उसके क्रोध को दूर करने वाली बनती है। (16) और इस प्रकार हमने क़ुरआन को स्पष्ट प्रमाणों के साथ उतारा है। और निस्सन्देह अल्लाह जिसे चाहता है मार्गदर्शन प्रदान करता है।

(17) इसमें कोई सन्देह नहीं कि जो लोग ईमान लाये और जिन्होंने यहूदी धर्म अपनाया और साबी और नसारा (ईसाई) और मजूस (अग्निपूजक) और जिन्होंने शिर्क (मूर्ति-पूजा) किया, अल्लाह उन सबके बीच क़ियामत के दिन निर्णय करेगा। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

(18) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ही के आगे सजदा करते हैं जो आसमानों में हैं और जो धरती में हैं। और सूरज और चाँद और तारे और पहाड़ और वृक्ष और पशु और बहुत से मनुष्य। और बहुत से ऐसे हैं जिन पर यातना सिद्ध हो चुकी है। और जिसको अल्लाह अपमानित कर दे तो उसको कोई सम्मान प्रदान करने वाला नहीं। निस्सन्देह अल्लाह करता है जो वह चाहता है।

(19) ये दो पक्ष हैं जिन्होंने अपने पालनहार के सम्बन्ध में झगड़ा किया। तो जिन्होंने इन्कार किया, उनके लिए आग के वस्त्र काटे जायेंगे। उनके सिरों के ऊपर से खौलता हुआ पानी डाला जायेगा। (20) उससे उनके पेट की चीज़ें

तक गल जायेंगी और खालें भी। (21) और उनके लिए वहाँ लोहे के हथौड़े होंगे। (22) जबकि वह घबराकर उससे बाहर निकलना चाहेंगे तो वह फिर उसमें ढकेल दिये जायेंगे, और चखते रहो जलने की यातना।

(23) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और भले कर्म किये, अल्लाह उनको ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें जारी होंगी। उनको वहाँ सोने के कंगन और मोती पहनाये जायेंगे और वहाँ उनका परिधान रेशम होगा। (24) और उनको पवित्र कथन का मार्गदर्शन प्रदान किया गया था। और उनको प्रशंसित अल्लाह का मार्ग दिखाया गया था।

(25) निस्सन्देह जिन लोगों ने अवज्ञा की और वह लोगों को अल्लाह के मार्ग से और मस्जिद-ए हराम से रोकते हैं, जिसको हमने लोगों के लिए बनाया है, जिसमें स्थानीय वासी और बाहर से आने वाले समान हैं। और जो इस मस्जिद में सन्मार्ग से हटकर अत्याचार का मार्ग अपनायेगा, उसको हम कष्टप्रद यातना का स्वाद चखायेंगे।

(26) और जब हमने इब्राहीम को अल्लाह के घर का स्थान बता दिया, कि मेरे साथ किसी चीज़ को साझी न बनाना और मेरे घर को पवित्र रखना, तवाफ़ (परिक्रमा) करने वालों के लिए और ठहरने वालों के लिए और रुकू (झुकने) और सजदा करने वालों के लिए।

(27) और लोगों में हज की घोषणा कर दो, वह तुम्हारे पास आयेंगे। पैरों से चलकर और दुबले ऊँटों पर सवार होकर जो कि दूरवर्ती मार्गों से आयेंगे। (28) ताकि वह अपने लाभ के स्थान पर पहुँचें और गिने हुए ज्ञात दिनों में उन मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें प्रदान किये हैं। अतः उसमें से खाओ और विपत्ति में पड़े वंचित को खिलाओ। (29) तो चाहिए कि वह अपना मैल-कुचैल समाप्त कर दें। और अपनी मन्नतें पूरी करें। और इस प्राचीन घर की परिक्रमा करें।

(30) यह बात हो चुकी और जो व्यक्ति अल्लाह की निर्धारित की हुई मर्यादाओं का सम्मान करेगा तो वह उसके पक्ष में उसके पालनहार के निकट श्रेयष्कर है और तुम्हारे लिए मवेशी वैध कर दिये गये हैं, अतिरिक्त उनके जो

तुमको पढ़कर सुनाये जा चुके हैं, तो तुम मूर्तियों की गन्दगी से बचो और झूठी बात से बचो।

(31) अल्लाह की ओर एकाग्रचित्र रहो, उसके साथ साझी न ठहराओ। और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ शिर्क (साझी) करता है तो मानो वह आसमान से गिर पड़ा। फिर पक्षी उसको उचक लें। अथवा हवा उसको किसी दूरवर्ती स्थान पर ले जाकर डाल दे।

(32) यह बात हो चुकी। और जो व्यक्ति अल्लाह के निर्देशों का पूरा ध्यान रखेगा तो यह दिलों की परहेज़गारी (संयत होना) की बात है। (33) तुमको इनसे एक नियत समय तक लाभ उठाना है। फिर इनको क़ुर्बानी के लिए प्राचीन घर की ओर ले जाना है।

(34) और हमने प्रत्येक उम्मत (सम्प्रदाय) के लिए क़ुर्बानी करना अनिवार्य किया है ताकि वह उन पशुओं पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उनको प्रदान किये हैं। अतः तुम्हारा उपास्य एक ही उपास्य हैं तो तुम उसी के होकर रहो। और विनम्रता करने वालों को शुभ सूचना दो। (35) जिनकी स्थिति यह है कि जब अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल काँप उठते हैं। और जो उन पर पड़े, उसको वह सहने वाले और नमाज़ की पाबन्दी करने वाले और जो कुछ हमने उनको दिया है वह उसमें से ख़र्च करते हैं।

(36) और क़ुर्बानी के ऊँटों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह के प्रतीकों में से बनाया है। उनमें तुम्हारे लिए भलाई है। अतः उनको खड़ा करके उन पर अल्लाह का नाम लो। फिर जब वह करवट के बल गिर पड़ें तो उनमें से खाओ और न माँगने वाले निर्धन को और माँगने वाले को खिलाओ। इस प्रकार हमने उन पशुओं को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया ताकि तुम आभार प्रकट करो। (37) और अल्लाह को न उनका माँस पहुँचता है और न उनका रक्त बल्कि अल्लाह को मात्र तुम्हारा तक़्वा (अल्लाह के लिये निष्ठा) पहुँचता है इस प्रकार अल्लाह ने उनको तुम्हारे लिए वश में कर दिया है, ताकि तुम अल्लाह के प्रदान किये हुए मार्गदर्शन पर उसकी बड़ाई करो और भलाई करने वालों को शुभ सूचना दे दो।

(38) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों को बचाता है जो ईमान लाये। निस्सन्देह

अल्लाह विश्वासघाती और कृतघ्न लोगों को पसन्द नहीं करता। (39) अनुमति दे दी गई है उन लोगों को जिनसे युद्ध किया जा रहा है इस कारण से कि उन पर अत्याचार किया गया है। और निस्सन्देह अल्लाह उनकी सहायता का सामर्थ्य रखता है। (40) वह लोग जो अपने घरों से अकारण निकाले गये। मात्र इसलिए कि वह कहते हैं कि हमारा पालनहार अल्लाह है। और यदि अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के माध्यम से पराजित न करता रहे तो ख़ानक़ाहें (आश्रमों) और गिरजा और उपासनाघर और मस्जिदें जिनमें अल्लाह का नाम अधिक से अधिक लिया जाता है, ढा दिये जाते। और अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा जो अल्लाह की सहायता करे। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा बलवान, प्रभुत्वशाली है।

(41) ये वह लोग हैं जिनको यदि हम धरती पर प्रभुत्व प्रदान करें तो वह नमाज़ क़ायम करेंगे और ज़कात (अनिवार्य कर) अदा करेंगे और भलाई का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे और सभी कार्यों का परिणाम अल्लाह ही के अधिकार में है।

(42) और यदि वह तुम्हें झुठलायें तो इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और समूद झुठला चुके हैं। (43) और इब्राहीम की क़ौम और लूत की क़ौम। (44) और मदयन के लोग भी। और मूसा को झुठलाया गया। फिर मैंने अवज्ञाकारियों को ढील दी। फिर मैंने उनको पकड़ लिया। तो कैसी हुई मेरी यातना।

(45) तो कितने ही नगर हैं जिनको हमने नष्ट कर दिया और वह अत्याचारी थे। अतः अब वह अपनी छतों पर उल्टे पड़ें हैं। और कितने ही बेकार कूएँ और कितने पक्के महल जो निर्जन पड़े हुए हैं। (46) क्या यह लोग धरती पर चले फिरे नहीं कि उनके दिल ऐसे हो जाते कि वह उनसे समझते या उनके कान ऐसे हो जाते कि वह उनसे सुनते, क्योंकि आँखें अन्धी नहीं होतीं बल्कि वह दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में हैं।

(47) और यह लोग तुमसे यातना के लिए जल्दी किए हुए हैं और अल्लाह कदापि अपने वादे के विरुद्ध करने वाला नहीं है। और तेरे पालनहार के यहाँ का एक दिन तुम्हारी गिनती के अनुसार एक हज़ार वर्ष के बराबर होता है।

(48) और कितने ही नगर हैं जिनको मैंने ढील दी और वह अत्याचारी थे। फिर मैंने उनको पकड़ लिया। और मेरी ही ओर लौट कर आना है।

(49) कहो कि ऐ लोगों, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट डराने वाला हूँ। (50) अतः जो लोग ईमान लाये और अच्छे कर्म किये उनके लिए क्षमा है और सम्मान की जीविका। (51) और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए दौड़े, वही नरक वाले हैं।

(52) और हमने तुमसे पहले जो भी सन्देष्टा और पैग़म्बर भेजा तो जब उसने कुछ पढ़ा तो शैतान ने उसके पढ़ने में मिला दिया। फिर अल्लाह शैतान के डाले हुए को मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पक्का कर देता है। और अल्लाह ज्ञान वाला, विवेक वाला है। (53) ताकि जो कुछ शैतान ने मिलाया है, उससे वह उन लोगों को जाँचे जिनके दिलों में रोग है और जिनके दिल कठोर हैं। और अत्याचारी लोग विरोध में बहुत दूर निकल गये हैं। (54) और ताकि वह लोग जिनको ज्ञान मिला है, वह जान लें कि यह वास्तव में तेरे पालनहार की ओर से है, फिर वह उस पर विश्वास करें। और उनके दिल उसके आगे झुक जायें। और अल्लाह ईमान लाने वालों को अवश्य सीधा मार्ग दिखाता है।

(55) और झुठलाने वाले लोग सदैव उसकी ओर से सन्देह में पड़े रहेंगे, यहाँ तक कि अचानक उन पर क़ियामत (परलय) आ जाये, या एक अशुभ दिन की यातना आ जाये। (56) उस दिन सारा अधिकार मात्र अल्लाह का होगा। वह उनके बीच निर्णय करेगा। अतः जो लोग ईमान लाये और अच्छे कर्म किये, वह नेमत के बाग़ों में होंगे। (57) और जिन्होंने अवज्ञा की और हमारी आयतों को झुठलाया तो उनके लिए अपमानजनक यातना है।

(58) और जिन लोगों ने अल्लाह के मार्ग में अपना घर बार छोड़ा, फिर उनकी हत्या कर दी गयी या वह मर गये, अल्लाह अवश्य उनको अच्छी जीविका देगा। (59) और निस्सन्देह अल्लाह ही सबसे अच्छी जीविका देने वाला है। वह उनको ऐसे स्थान पर पहुँचायेगा जिससे वह सन्तुष्ट होंगे। और निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, सहनशील है।

(60) यह हो चुका। और जो व्यक्ति बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ

किया गया था, और फिर उस पर अत्याचार किया जाये तो अल्लाह अवश्य उसकी सहायता करेगा। निस्सन्देह अल्लाह क्षमाशील और नर्मी से काम लेने वाला है।

(61) यह इसलिए कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश करता है और दिन को रात में प्रवेश करता है। और अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (62) यह इसलिए कि अल्लाह ही सत्य है और वह सब असत्य हैं जिन्हें अल्लाह को छोड़कर लोग पुकारते हैं। और निस्सन्देह अल्लाह ही सबसे ऊपर है, सबड़े बड़ा है।

(63) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी बरसाया। फिर धरती हरी-भरी हो गयी। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी है, ख़बर रखने वाला है। (64) उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी पर है। निस्सन्देह अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसनीय है।

(65) क्या तुम देखते नहीं कि अल्लाह ने धरती की चीज़ों को तुम्हारी सेवा में लगा रखा है और नौका को भी, वह उसके आदेश से समुद्र में चलती है। और अल्लाह आसमान को पृथ्वी पर गिरने से थामे हुए है, परन्तु यह कि उसके आदेश से। निस्सन्देह अल्लाह लोगों के लिए करुणाशील, दयावान है। (66) और वही है जिसने तुमको जीवन प्रदान किया, फिर वह तुमको मृत्यु देता है। फिर वह तुमको जीवित करेगा। निस्सन्देह मनुष्य अत्यन्त कृतघ्न है।

(67) और हमने प्रत्येक उम्मत (सम्प्रदाय) के लिए एक पद्धति निध ाीरित की कि वह उसका अनुसरण करते थे। अतः वह इस मामले में तुमसे झगड़ा न करें। और तुम अपने पालनहार की ओर बुलाओ। निश्चित रूप से तुम सीधे मार्ग पर हो। (68) यदि वह तुमसे झगड़ा करें तो कहो कि अल्लाह भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। (69) अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे बीच उस चीज़ का निर्णय कर देगा जिसमें तुम मतभेद करते रहे हो। (70) क्या तुम नहीं जानते कि आसमान और पृथ्वी की हर चीज़ अल्लाह के ज्ञान में है। सब कुछ एक किताब में है। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है।

(71) और वह अल्लाह के अतिरिक्त उनकी उपासना करते हैं जिनके पक्ष में अल्लाह ने कोई प्रमाण नहीं उतारा और न उनके सम्बन्ध में उनको कोई

ज्ञान है। और अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं। (72) और जब तुमको हमारी स्पष्ट आयतें पढ़ कर सुनाई जाती हैं तो तुम अवज्ञाकारियों के चेहरे पर बुरे लक्षण देखते हो। मानो कि वह उन लोगों पर आक्रमण कर देंगे जो उनको हमारी आयतें पढ़ कर सुना रहे हैं। कहो कि क्या मैं तुमको बताऊँ कि इससे बुरी चीज़ क्या है। वह आग है। उसका अल्लाह ने उन लोगों से वादा किया है। जिन्होंने अवज्ञा की और वह बहुत बुरा ठिकाना है।

(73) ऐ लोगों, एक मिसाल (उदाहरण) का वर्णन किया जाता है तो इसको ध्यान से सुनो, तुम लोग अल्लाह के अतिरिक्त जिस चीज़ को पुकारते हो, वह एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते। यद्यपि सब के सब इसके लिए एकत्र हो जायें। और यदि मक्खी उनसे कुछ छीन ले तो वह उसको उससे छुड़ा नहीं सकते। सहायता चाहने वाले भी बलहीन और जिनसे सहायता चाही गयी वह भी बलहीन। (74) उन्होंने अल्लाह का मोल न पहचाना जैसा कि उसको पहचानना चाहिए। निस्सन्देह अल्लाह बलवान है, प्रभुत्वशाली है। (75) अल्लाह फ़रिश्तों में से अपना सन्देश पहुँचाने वाला चुनता है, और मनुष्यों में से भी। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, देखने वाला है। (76) वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है। और अल्लाह ही की ओर लौटते हैं सभी मामले।

(77) ऐ ईमानवालो, रुकूअ (झुको) और सजदा करो। और अपने पालनहार की उपासना करो और भलाई के कर्म करो ताकि तुम सफल हो। (78) और अल्लाह के मार्ग में संघर्ष करो जैसा कि संघर्ष करना चाहिए। उसी ने तुमको चुना है। और उसने धर्म के मामले में तुम पर कोई कठोरता नहीं रखी, तुम्हारे बाप इब्राहीम का धर्म। उसी ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा। इससे पहले और इस क़ुरआन में भी ताकि सन्देष्टा तुम पर गवाह हो और तुम लोगों पर गवाह बनो। अतः नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (अनिवार्य कर) अदा करो। और अल्लाह को दृढ़ता से पकड़ो, वही तुम्हारा स्वामी है। अतः कैसा अच्छा स्वामी है और कैसा अच्छा समर्थक।

23. सूरह अल-मोमिनून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) निश्चित रूप से सफलता पायी ईमान वालों (आस्थावान लोगों) ने। (2) जो अपनी नमाज़ में झुकने वाले हैं। (3) और जो व्यर्थ बातों से बचते हैं। (4) और जो ज़कात (अनिवार्य कर) अदा करने वाले हैं। (5) और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले हैं (6) सिवाय अपनी पत्नियों के और उन महिलाओं के जो उनके स्वामित्व में हों कि इन पर वह निन्दनीय नहीं। (7) हाँ जो इसके अतिरिक्त चाहें तो यही लोग सीमा का उल्लघन करने वाले हैं। (8) और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतिज्ञा का ध्यान रखने वाले हैं। (9) और जो अपनी नमाज़ों की रक्षा करते हैं। (10) यही लोग उत्तराधिकार प्राप्त करने वाले हैं जो स्वर्ग के उत्तराधिकारी होंगे (11) वह उसमें सदैव रहेंगे।

(12) और हमने मनुष्य को मिट्टी के निचोड़ (सार) से पैदा किया है। (13) फिर हमने पानी की एक बूँद के रूप में उसको एक सुरक्षित ठिकाने में रखा। (14) फिर हमने पानी की बूँद को एक भ्रूण का रूप दिया। फिर भ्रूण को माँस का एक लोथड़ा बनाया। फिर लोथड़े के अन्दर हाियाँ पैदा कीं। फिर हमने हाियों पर माँस चढ़ा दिया। फिर हमने उसको एक नये रूप में बना खड़ा किया। बड़ा ही महिमावान है अल्लाह, श्रेष्ठतम सृजनकर्ता। (15) फिर इसके बाद तुमको अवश्य मरना है। (16) फिर तुम क़ियामत के दिन उठाये जाओगे।

(17) और हमने तुम्हारे ऊपर सात मार्ग बनाये। और हम सृष्टि से अनभिज्ञ नहीं हुए। (18) और हमने आकाश से पानी बरसाया एक नियमित ढंग से। फिर हमने उसको धरती में ठहरा दिया। और हम उसको वापस लेने पर सामर्थ्यवान हैं। (19) फिर हमने उससे तुम्हारे लिए खजूर और अंगूर के बाग़ पैदा किए। तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं। और तुम उनमें से खाते हो। (20) और हमने वह वृक्ष पैदा किया जो सीना पर्वत से निकलता है, वह तेल लिए हुए उगता है। और खाने वालों के लिए सालन भी। (21) और तुम्हारे लिए मवेशियों में शिक्षा है। हम तुमको उनके पेट की चीज़ से

पिलाते हैं। और तुम्हारे लिए उनमें अनेक लाभ हैं। और तुम उनको खाते हो। (22) और तुम उन पर और नौकाओं पर सवारी करते हो।

(23) और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा तो उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम अल्लाह की उपासना करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। क्या तुम डरते नहीं। (24) तो उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने अवज्ञा की थी, उन्होंने कहा कि यह तो बस तुम्हारे जैसा एक मनुष्य है। वह चाहता है कि तुम्हारे ऊपर श्रेष्ठता प्राप्त करे। और यदि अल्लाह चाहता तो वह फ़रिश्ते भेजता। हमने यह बात अपने पिछले बड़ो में नहीं सुनी। (25) यह तो बस एक व्यक्ति है जिसको उन्माद हो गया है। अतः एक समय तक इसकी प्रतीक्षा करो।

(26) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, तू मेरी सहायता कर कि इन्होंने मुझे झुठला दिया। (27) तो हमने उसको वह्य (श्रुति-सन्देश) भेजी कि तुम नाव तैयार करो हमारे संरक्षण में और हमारे मार्गदर्शन के अनुसार। तो जब हमारा आदेश आ जाये और धरती से पानी उबल पड़े तो प्रत्येक क़िस्म के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर उसमें सवार हो जाओ। और अपने घरवालों को भी, सिवाय उनके जिनके सम्बन्ध में पहले निर्णय हो चुका है। और जिन्होंने अत्याचार किया है, उनके मामले में मुझसे बात न करना। निस्सन्देह उनको डूबना है।

(28) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठ जायें तो कहो कि प्रशंसा है अल्लाह की जिसने हमको अत्याचारी लोगों से छुटकारा दिलाया। (29) और कहो कि ऐ मेरे पालनहार, तू मुझे उतार बरकत का उतारना और तू श्रेष्ठतम उतारने वाला है। (30) निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं और निस्सन्देह हम बन्दों की परीक्षा लेते हैं।

(31) फिर हमने उनके पश्चात दूसरा समूह पैदा किया। (32) फिर उनमें से एक सन्देष्टा उन्हीं में से भेजा, कि तुम अल्लाह की उपासना करो। उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई उपास्य नहीं। क्या तुम डरते नहीं। (33) और उसकी क़ौम के सरदारों ने, जिन्होंने अवज्ञा की और परलोक की भेंट को झुठलाया, और उनको हमने सांसारिक जीवन में सम्पन्नता प्रदान की थी, कहा यह तो

हमारे ही जैसा एक व्यक्ति है। वही खाता है जो तुम खाते हो, और वही पीता है जो तुम पीते हो। (34) और यदि तुमने अपने ही जैसे एक व्यक्ति की बात मानी तो तुम बड़े घाटे में रहोगे।

(35) क्या यह व्यक्ति तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और हडि्डयाँ हो जाओगे तो फिर तुम निकाले जाओगे। (36) बहुत ही दूर और बहुत ही दूर है जो बात तुमसे कही जा रही है। (37) जीवन तो यही हमारा सांसारिक जीवन है। यहीं हम मरते हैं और जीते हैं। और हम पुनः उठाये जाने वाले नहीं हैं। (38) यह तो बस एक ऐसा व्यक्ति है जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है। और हम इसको मानने वाले नहीं।

(39) सन्देष्टा ने कहा, ऐ मेरे पालनहार मेरी सहायता कर कि इन्होंने मुझको झुठला दिया। (40) फ़रमाया कि यह लोग जल्द ही पछतायेंगे। (41) अतः उनको एक भयानक आवाज़ ने न्याय संगत पकड़ लिया। फिर हमने उनको कूड़ा करकट बनाकर रख दिया। अतः दूर हो अत्याचारी क़ौम।

(42) फिर हमने उनके बाद अन्य क़ौमें पैदा कीं। (43) कोई क़ौम न अपने वादे से आगे जाती और न उससे पीछे रहती। (44) फिर हमने निरन्तर अपने सन्देष्टा भेजे। जब भी किसी क़ौम के पास उसका सन्देष्टा आया तो उन्होंने उसको झुठलाया। तो हमने एक के बाद एक सबको नष्ट कर दिया। और हमने उनको किस्से-कहानियाँ बना दिया। अतः दूर हों वह लोग जो विशवास नहीं करते।

(45) फिर हमने मूसा और उसके भाई हारुन को भेजा अपनी निशानियों और खुले हुए प्रमाण के साथ। (46) फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास, तो उन्होंने घमण्ड किया और वह घमण्डी लोग थे। (47) अतः उन्होंने कहा क्या हम अपने जैसे दो मनुष्यों की बात मान लें, जबकि इनकी क़ौम के लोग हमारे दास हैं। (48) फिर उन्होंने उनको झुठला दिया, फिर वह नष्ट कर दिये गये। (49) और हमने मूसा को किताब दी ताकि वह मार्ग पायें।

(50) और हमने मरियम के बेटे को और उसकी माँ को एक निशानी बनाया और हमने उनको एक ऊँची भूमि पर किठाना दिया। जो शान्ति का स्थान थी। और वहाँ स्रोत बह रहा था।

(51) ऐ पैग़म्बरो, सुथरी चीज़ें खाओ और भले कर्म करो मैं जानता हूँ जो कुछ तुम करते हो। (52) और यह तुम्हारा धर्म एक ही धर्म है। और मैं तुम्हारा पालनहार हूँ, तो तुम मुझसे डरो। (53) फिर लोगों ने अपने धर्म को परस्पर टुकड़े-टुकड़े कर लिया। प्रत्येक समूह के पास जो कुछ है, उसी पर वह मगन हैं। (54) अतः उनको उनकी अचेतना में कुछ दिन छोड़ दो। (55) क्या वह समझते हैं कि हम उनको जो सम्पत्ति और सन्तान दिये जा रहे हैं। (56) तो हम उनको लाभ पहुँचाने में सक्रिय हैं, बल्कि वह बात को नहीं समझते।

(57) निस्सन्देह जो लोग अपने पालनहार के प्रकोप से डरते हैं। (58) और जो लोग अपने पालनहार की आयतों पर विश्वास रखते हैं। (59) और जो अपने पालनहार के साथ किसी को साझी नहीं करते। (60) और जो लोग देते हैं जो कुछ कि वह देते हैं और उनके दिल काँपते हैं कि वह अपने पालनहार की ओर लौटने वाले हैं। (61) ये लोग भलाईयों के मार्ग में स्पर्धा कर रहे हैं। और वह उन पर पहुँचने वाले हैं सबसे आगे। (62) और हम किसी पर उसकी क्षमता से अधिक बोझ नहीं डालते। और हमारे पास एक किताब है जो बिल्कुल ठीक बोलती है और उन पर अत्याचार न होगा।

(63) बल्कि उनके दिल उसकी ओर से अचेतना में हैं। और उनके कुछ कर्म इसके अतिरिक्त हैं, वह उनको करते रहेंगे। (64) यहाँ तक कि जब हम उनके सम्पन्न लोगों को यातना में पकड़ेंगे तो वह याचना करने लगेंगे। (65) अब याचना न करो अब हमारी ओर से तुमको कोई सहायता न पहुँचेगी। (66) तुमको मेरी आयतें सुनाई जाती थीं तो तुम पीठ फेर कर भागते थे। (67) इससे घमण्ड करके। मानो किसी कहानी कहने वाले को छोड़ रहे हो।

(68) फिर क्या इन्होंने इस वाणी पर विचार नहीं किया। या इनके पास ऐसी चीज़ आयी है जो इनके अगले बाप-दादा के पास नहीं आयी। (69) या इन्होंने अपने सन्देष्टा को पहचाना नहीं। इस कारण से वह इसको नहीं मानते। (70) या वह कहते हैं कि इसको जुनून है। बल्कि वह इनके पास सत्य लेकर आया है। और इनमें से अधिकतर को सत्य बात बुरी लगती है। (71) और यदि सत्य इनकी इच्छाओं के अधीन होता तो आकाश और धरती

और जो इनमें है सब नष्ट हो जाते, बल्कि हमने इनके पास उनका निर्देशा भेजा है तो वह अपने निर्देशा से मुँह मोड़ रहे हैं।

(72) क्या तुम उनसे कोई पूँजी माँग रहे हो तो तुम्हारे पालनहार की पूँजी तुम्हारे लिए श्रेष्ठ है। और वह श्रेष्ठ जीविका देने वाला है। (73) और निश्चित रूप से तुम इनको एक सीधे मार्ग की ओर बुलाते हो। (74) और जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते, वह मार्ग से हट गये हैं।

(75) और यदि हम इन पर दया करें और इन पर जो कष्ट है, उसको दूर कर दें तब भी वह अपने विद्रोह में लगे रहेंगे भटके हुए। (76) और हमने इनको यातना में पकड़ा, परन्तु न वह अपने पालनहार के आगे झुके और न इन्होंने विनम्रता दिखाई। (77) यहाँ तक कि जब हम इन पर कठोर यातना का द्वार खोल देंगे तो उस समय वह चकित रह जायेंगे।

(78) और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाये। तुम बहुत कम आभार प्रकट करते हो। (79) और वही है जिसने तुमको धरती में फैलाया और तुम उसी की ओर एकत्र किये जाओगे। (80) और वही है जो जीवित करता है और मारता है और उसी के अधिकार में है रात और दिन का बदलना। तो क्या तुम समझते नहीं।

(81) बल्कि उन्होंने वही बात कही जो अगलों ने कही थी। (82) उन्होंने कहा कि क्या जब हम मर जायेंगे और हम मिट्टी और हड्डियाँ हो जायेंगे तो क्या हम पुनः उठाये जायेंगे। (83) उसका वादा हमको और इससे पहले हमारे बाप दादा को भी दिया गया। यह मात्र अगलों की कहानियाँ हैं।

(84) कहो कि पृथ्वी और जो कुछ इसमें है यह किसका है, यदि तुम जानते हो। (85) वह कहेंगे कि अल्लाह का है। कहो कि फिर तुम सोचते नहीं। (86) कहो कि कौन स्वामी है सात आसमानों का और कौन स्वामी है महान सिंहासन का। (87) वह कहेंगे कि सब अल्लाह का है। कहो, फिर क्या तुम डरते नहीं। (88) कहो कि कौन है जिसके हाथ में हर चीज का अधिकार है और वह शरण देता है और उसके मुक़ाबले में कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम जानते हो। (89) वह कहेंगे कि यह अल्लाह के लिए है। कहो कि फिर कहाँ से तुम वशीभूत किये जाते हो।

(90) बल्कि हम इनके पास सत्य लाये हैं और निश्चय ही वह झूठे हैं। (91) अल्लाह ने कोई बेटा नहीं बनाया और उसके साथ कोई और उपास्य नहीं। ऐसा होता तो प्रत्येक उपास्य अपनी सृष्टि को लेकर अलग हो जाता और एक दूसरे पर चढ़ाई करता। अल्लाह पवित्र है उससे जो वह बयान करते हैं। (92) वह खुले और छिपे का जानने वाला है। वह बहुत उच्च है उससे जिसको यह साझी बनाते हैं।

(93) कहो कि ऐ मेरे पालनहार, यदि तू मुझको वह दिखा दे जिसका इनसे वादा किया जा रहा है। (94) तो ऐ मेरे पालनहार, मुझको अत्याचारी लोगों में सम्मिलित न कर। (95) निश्चय हम सामर्थ्य रखते हैं कि हम इनसे जो वादा कर रहे हैं वह तुमको दिखा दें।

(96) तुम बुराई को उस ढंग से रोको जो उत्तम हो। हम भली प्रकार जानते हैं जो ये लोग कहते हैं। (97) और कहो कि ऐ मेरे पालनहार, मैं शरण माँगता हूँ शैतानों के वसवसे (बुरे विचार) से। (98) और ऐ मेरे पालनहार, मैं तुझसे शरण माँगता हूँ कि वह मेरे पास आयें।

(99) यहाँ तक कि जब उनमें से किसी पर मृत्यु आती है तो वह कहता है कि ऐ मेरे पालनहार, मुझको वापस भेज दे। (100) ताकि जिसको मैं छोड़ आया हूँ उसमें कुछ पुण्य कमाऊँ। कदापि नहीं, यह मात्र एक बात है जिसको वह कहता है, और उनके आगे एक पर्दा है उस दिन तक के लिए जबकि वह उठाये जायेंगे। (101) फिर जब सूर फूँका जायेगा तो फिर उनके बीच न कोई रिश्ता रहेगा और न कोई किसी को पूछेगा। (102) तो जिनके पलड़े भारी होंगे वही लोग सफल होंगे। (103) और जिनके पलड़े हल्के होंगे तो यही लोग हैं जिन्होंने अपने आप को घाटे में डाला, वह नरक में सदैव रहेंगे। (104) उनके चेहरों को आग झुलस देगी और वह उसमें कुरुप हो रहे होंगे।

(105) क्या तुमको मेरी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं तो तुम उनको झुठलाते थे। (106) वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, हमारे दुर्भाग्य ने हमको घेर लिया था और हम भटके हुए लोग थे। (107) ऐ हमारे पालनहार हमको इससे निकाल ले, फिर यदि हम पुनः ऐसा करें तो निस्सन्देह हम अत्याचारी हैं। (108) अल्लाह कहेगा कि दूर हो, इसी में पड़े रहो और मुझसे बात न करो।

(109) मेरे बन्दों में एक समूह था जो कहता था कि ऐ हमारे पालनहार, हम ईमान लाये, अतः तू हमको क्षमा कर दे। और हम पर दया कर और तू सबसे बड़ा दया करने वाला है। (110) अतः तुमने उनको मज़ाक बना लिया, यहाँ तक कि उनके पीछे तुमने हमारी याद भुला दी और तुम उन पर हँसते रहे। (111) मैंने उनको आज उनके धैर्य का बदला दिया कि वही हैं सफल होने वाले।

(112) कहा जायेगा कि वर्षों की गिनती से तुम कितनी देर पृथ्वी पर रहे। (113) वह कहेंगे हम एक दिन रहे अथवा एक दिन से भी कम। तो गिनती वालों से पूछ लीजिए। (114) कहा जायेगा कि तुम अल्प अवधि ही रहे। काश (क्या ही अच्छा होता कि) तुम जानते होते।

(115) तो क्या तुम यह समझते हो कि हमने तुमको उद्देश्यहीन पैदा किया है और तुम हमारे पास नहीं लाये जाओगे। (116) तो बहुत ऊँचा है अल्लाह, सच्चा बादशाह, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वह स्वामी है महान सिंहासन का। (117) और जो व्यक्ति अल्लाह के साथ किसी और उपास्य को पुकारे, जिसके पक्ष में उसके पास कोई प्रमाण नहीं, तो उसका हिसाब उसके पालनहार के पास है। निश्चय ही अवज्ञाकारियों को सफलता न होगी। (118) और कहो कि ऐ मेरे पालनहार, मुझे क्षमा कर दे और मुझ पर दया कर, तू सबसे अच्छा दया करने वाला है।

24. सूरह अन-नूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) यह एक सूरह है जिसको हमने उतरी है और इसको हमने अनिवार्य किया है। और इसमें हमने स्पष्ट आयतें उतारा हैं, ताकि तुम याद रखो। (2) व्यभिचारिणी महिला और व्यभिचारी पुरुष दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो। और तुमको इन दोनों पर अल्लाह के दीन (धर्म) के मामले में दया नहीं आनी चाहिए, यदि तुम अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखते हो। और चाहिए कि दोनों को दण्ड देने के समय मुसलमानों का एक समूह

उपस्थित रहे। (3) व्यभिचारी निकाह (विवाह) न करे सिवाय व्यभिचारिणी के साथ अथवा मुश्रिक महिला के साथ। और व्यभिचारिणी के साथ विवाह न करे सिवाय व्यभिचारी अथवा मुश्रिक (मूर्तिपूजक)। और यह अवैध कर दिया गया ईमान वालों पर।

(4) और जो लोग पवित्र चरित्रवाली महिलाओं पर दोषारोपण करें, फिर चार गवाह न ले आयें, उनको अस्सी कोड़े मारो और उनकी गवाही कभी स्वीकार न करो। यही लोग अवज्ञाकारी हैं। (5) परन्तु जो लोग इसके बाद तौबा करें और सुधार कर लें तो अल्लाह क्षमाशील, दयावान है।

(6) और जो लोग अपनी पत्नियों पर आरोप लगायें और उनके पास उनके अपने सिवाय और गवाह न हों तो ऐसे व्यक्ति की गवाही का रूप यह है कि वह चार बार अल्लाह की सौगन्ध खाकर कहे कि निस्सन्देह वह सच्चा है। (7) और पाँचवीं बार यह कहे कि अल्लाह की फटकार हो यदि वह झूठा हो। (8) और महिला से दण्ड इस प्रकार टल जायेगा कि वह चार बार अल्लाह की सौगन्ध खाकर कहे कि यह व्यक्ति झूठा है। (9) और पाँचवीं बार यह कहे कि मुझ पर अल्लाह का क्रोध हो यदि यह व्यक्ति सच्चा हो। (10) और यदि तुम लोगों पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती और यह कि अल्लाह तौबा स्वीकार करने वाला विवेक वाला है, (तो तुम उसकी पकड़ में आ जाते)।

(11) जिन लोगों ने यह तूफ़ान उठाया वह तुम्हारे अन्दर ही का एक समूह है। तुम उसको अपने पक्ष में बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए बेहतर है। इनमें से प्रत्येक व्यक्ति के लिए वह है जितना उसने पाप कमाया। और जिसने उसमें सबसे बड़ा भाग लिया उसके लिए बड़ी यातना है।

(12) जब तुम लोगों ने इसको सुना तो ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली महिलाओं ने एक-दूसरे के सम्बन्ध में अच्छा विचार (कल्पना) क्यों न किया। और क्यों न कहा कि यह स्पष्ट रूप से झूठा आरोप है। (13) यह लोग इस पर चार गवाह क्यों न लाये। तो जब वह गवाह नहीं लाये तो अल्लाह के निकट वही झूठे हैं।

(14) और यदि तुम लोगों पर संसार और परलोक में अल्लाह की कृपा

और उसकी दया न होती तो जिन बातों में तुम पड़ गये थे, उसके कारण तुम पर कोई बड़ी विपत्ति आ जाती। (15) जबकि तुम इसका अपने मुँह से उल्लेख कर रहे थे। और अपने मुँह से ऐसी बात कह रहे थे जिसका तुम्हें कोई ज्ञान न था और तुम इसको एक साधारण बात समझ रहे थे। जबकि वह अल्लाह के निकट बहुत भारी बात है। (16) और जब तुमने इसको सुना तो इस तरह क्यों न कहा कि हमारे लिये उचित नहीं कि हम ऐसी बात मुँह से निकालें। अल्लाह की शरण, यह बहुत बड़ा झूठा आरोप है। (17) अल्लाह तुमको उपदेश देता है कि फिर कभी ऐसा न करना यदि तुम मोमिन (आस्थावान) हो। (18) अल्लाह तुम्हें स्पष्ट आदेश देता है। और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है।

(19) निस्सन्देह जो लोग यह चाहते हैं कि मुसलमानों में अश्लीलता की चर्चा हो, उनके लिए संसार और परलोक में कष्टप्रद यातना है। और अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (20) और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती और यह कि अल्लाह करुणामय है, दया करने वाला है।

(21) ऐ ईमानवालो, तुम शैतान के पदचिन्हों पर न चलो। और जो व्यक्ति शैतान के पदचिन्हों का अनुसरण करेगा तो वह उसको अश्लीलता और बुराई ही का काम करने को कहेगा। और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो तुममें से कोई व्यक्ति पवित्र न हो सकता। लेकिन अल्लाह ही जिसे चाहता है पवित्र कर देता है। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

(22) और तुममें से जो लोग सामर्थ्य वाले और सम्पन्न हैं, वह इस बात की सौगन्ध न खायें कि वह अपने नातेदारों और निर्धनों और अल्लाह के मार्ग में हिजरत (प्रवास) करने वालों को न देंगे। और चाहिए कि वह क्षमा कर दें और छोड़ दें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुमको क्षमा करे। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

(23) निस्सन्देह जो लोग पवित्र चरित्रवाली, भोली-भाली, ईमानवाली महिलाओं पर झूठा आरोप लगाते हैं, उन पर संसार और परलोक में निन्दा

(फटकार) की गयी। और उनके लिए बड़ी यातना है। (24) उस दिन जबकि उनके मुँह उनके विरुद्ध गवाही देंगे और उनके हाथ और उनके पैर भी उन कर्मों की जो कि यह लोग करते थे। (25) उस दिन अल्लाह इनको अनिवार्य बदला पूरा-पूरा देगा। और वह जान लेंगे कि अल्लाह ही सत्य है, खोलने वाला है।

(26) व्यभिचारी महिलाएँ व्यभिचारी मर्दो के लिए हैं और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारी औरतों के लिए हैं। और पवित्र चरित्रवाली महिलाएँ पवित्र चरित्र वाले पुरुषों के लिए हैं और पवित्र चरित्र वाले पुरुष पवित्र चरित्रवाली महिलाओं के लिए। वह लोग बरी (मुक्त) हैं उन बातों से जो यह कहते हैं। उनके लिए क्षमा है और सम्मानजनक जीविका है।

(27) ऐ ईमान वालों, तुम अपने घरों के अतिरिक्त अन्य घरों में प्रवेश न करो जब तक अनुमति न प्राप्त कर लो और घर वालों को सलाम न कर लो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है ताकि तुम याद रखो। (29) फिर यदि वहाँ किसी को न पाओ तो उनमें प्रवेश न करो जब तक तुमको अनुमति न दे दी जाये। और यदि तुमसे कहा जाये कि लौट जाओ तो तुम लौट जाओ। यह तुम्हारे लिए बेहतर है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (29) तुम पर इसमें तनिक गुनाह नहीं कि तुम उन घरों में प्रवेश करो जिनमें कोई न रहता हो। उनमें तुम्हारे लिए लाभ की कोई चीज़ हो और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम प्रकट करते हो। और जो कुछ तुम छिपाते हो।

(30) मोमिन आस्थावान पुरुषों से कहो कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें। यह उनके लिए पवित्र है। निस्सन्देह अल्लाह भिज्ञ है उससे जो वह करते हैं।

(31) और मोमिन (आस्थावान) महिलाओं से कहो कि वह अपनी निगाहें नीची रखें और अपने गुप्तांगों की रक्षा करें और अपने सौन्दर्य को प्रकट न करें, अतिरिक्त उसके जो सामान्यत प्रकट हो जाये। और अपने दुपट्टे (ओढ़नी) अपने सीनों पर डाले रहें। और अपने सौन्दर्य को प्रकट न करें परन्तु अपने पतियों पर अथवा अपने पिता पर अथवा अपने पति के पिता पर अथवा अपने बेटों अथवा अपने पति के बेटों पर अथवा अपने भाईयों पर अथवा अपने

भाईयों के बेटों पर अथवा अपनी बहनों के बेटों पर अथवा अपनी महिलाओं पर अथवा अपने दास पर अथवा अधीन पुरुषों पर जो कुछ इच्छा नहीं रखते। अथवा ऐसे लड़को पर जो महिलाओं के परदे की बातों से अभी अनभिज्ञ हों। वह अपने पैर जोर से न मारें की कि उनका छिपा हुआ सौन्दर्य प्रकट हो जाये, और ऐ ईमान वालों, तुम सब मिलकर अल्लाह की ओर लौटो ताकि तुम सफलता प्राप्त करो।

(32) और तुममें जो बिना निकाह (अविवाहित) हों, उनका निकाह कर दो। और तुम्हारे दासों और दासियों में से जो निकाह के योग्य हो उनका भी। यदि वह निर्धन होंगे तो अल्लाह उनको अपनी कृपा से ग़नी (सन्तुष्ट) कर देगा। और अल्लाह व्यापकता वाला, जानने वाला है। (33) और जो निकाह का अवसर न पायें, उनको चाहिए कि वह आत्मनियन्त्रण करें यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उनको सम्पन्न कर दे। और तुम्हारे ममलूकों (जिन पर तुम्हें स्वामित्व प्राप्त हो) में से जो मुकातब (वह दास जो धन या किसी निर्धारित सेवा के बदले अपने स्वामी से मुक्ति प्राप्त करना चाहता हो) होने के इच्छुक हों तो उनको मुकातब बना लो। यदि तुम उनमें योग्यता पाओ। और उनको उस धन में से दो जो अल्लाह ने तुम्हें प्रदान किया है। और अपनी दासियों को पेशे पर विवश न करो जब कि वह पवित्र चरित्रवाली रहना चाहती हों, मात्र इसलिए कि सांसारिक जीवन का कुछ लाभ तुमको प्राप्त हो जाये। और जो व्यक्ति उनको विवश करेगा तो अल्लाह उस बाध्यता के बाद क्षमा करने वाला, कृपाशील है। (34) और निस्सन्देह हमने तुम्हारी ओर प्रकाशपूर्ण आयतें उतारी हैं और उन लोगों की मिसालें (उदाहरण) भी जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं और डरने वालों के लिए उपदेश भी।

(35) अल्लाह आकाशों और पृथ्वी का प्रकाश है। उसके प्रकाश का उदाहरण ऐसा है जैसे एक ताक़ उसमें एक दीपक है। दीपक एक फ़ानूस के अन्दर है। फ़ानूस ऐसा है जैसे एक चमकरदार तारा। वह ज़ैतून के एक ऐसे विभूतिपूर्ण वृक्ष के तेल से जलाया जाता है। जो न पूर्वी है और न पश्चिमी। उसका तेल ऐसा है मानो आग के छुये बिना ही वह स्वंय जल उठेगा। प्रकाश के ऊपर प्रकाश। अल्लाह अपने प्रकाश का मार्ग दिखाता है जिसको चाहता

है। और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बयान करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(36) ऐसे घरों में जिनके सम्बन्ध में अल्लाह ने आदेश दिया है कि वह ऊँचे किये जाएँ और उनमें उसके नाम का गुणगान किया जाये, उनमें सुबह एवं सायं अल्लाह की याद करते हैं। (37) वह लोग जिनको व्यापार और क्रय-विक्रय अल्लाह की याद से निश्चेत नहीं करता और न नमाज़ की स्थापना से और न ज़कात (दान) के देने से। वह उस दिन से डरते हैं जिसमें दिल और आँखें उलट जायेगी। (38) कि अल्लाह उन्हे उनके कर्म का सबसे अच्छा बदला दे और उनको और अधिक अपनी कृपा से प्रदान करे। और अल्लाह जिसको चाहता है बेहिसाब देता है।

(39) और जिन लोगों ने अवज्ञा की उनके कर्म ऐसे हैं जैसे चटियल मैदान में मृग-मरीचिका (भ्रांतिजनक वस्तु)। प्यासा आदमी उसको पानी समझता है। यहाँ तक कि जब वह उसके पास आया तो कुछ न पाया। और उसने वहाँ अल्लाह को उपस्थित पाया, तो उसने उसका हिसाब चुका दिया। और अल्लाह शीघ्र हिसाब चुकाने वाला है। (40) अथवा जैसे एक गहरे समुद्र में अँधेरा हो, लहर के ऊपर लहर उठ रही हो, ऊपर से बादल छाये हुए हों, ऊपर तले बहुत से अँधेरे, यदि कोई अपना हाथ निकाले तो वह उसको भी न देख पाये। और जिसको अल्लाह प्रकाश न प्रदान करे तो उसके लिए कोई प्रकाश नहीं।

(41) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह की पवित्रता बयान करते हैं वह जो आकाशों और पृथ्वी में हैं और पक्षी भी पंखों को फैलाये हुए हैं। प्रत्येक अपनी नमाज़ को और अपनी स्तुति को जानता है। और अल्लाह को ज्ञात है जो कुछ वह करते हैं। (42) और अल्लाह ही की सत्ता है आकाशों और पृथ्वी में और अल्लाह ही की ओर है सबकी वापसी।

(43) क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह बादलों को चलाता है। फिर उनको परस्पर मिला देता है। फिर उनको तह पर तह कर देता है। फिर तुम वर्षा को देखते हो कि उसके बीच से निकलती है और वह आसमान से- उसके अन्दर के पहाड़ों (जैसे बादलों) से- ओले बरसाता है। फिर उनको जिस पर चाहता है गिरा देता है। और जिससे चाहता है उनको हटा देता है। उसकी बिजली की

चमक से ऐसा प्रतीत होता है कि निगाहों को उचक ले जायेगी। (44) अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। निस्सन्देह इसमें शिक्षा है आँख वालों के लिए।

(45) और अल्लाह ने प्रत्येक जीवधारी को पानी से पैदा किया। फिर उनमें से कोई अपने पेट के सहारे चलता है। और उनमें से कोई दो पैरों पर चलता है। और उनमें से कोई चार पैरों पर चलता है। अल्लाह पैदा करता है जो वह चाहता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है। (46) हमने खोल कर बताने वाली आयतें उतारी हैं। और अल्लाह जिसको चाहता है सीधा मार्ग दिखा देता है।

(47) और वह कहते हैं कि हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाये और हमने आज्ञापालन किया। परन्तु उनमें से एक समूह इसके बाद फिर जाता है। और ये लोग ईमान लाने वाले नहीं हैं। (48) और जब उनको अल्लाह और सन्देष्टा की ओर बुलाया जाता है, ताकि अल्लाह का सन्देष्टा उनके बीच निर्णय करे तो उनमें से एक समूह मुँह मोड़ लेता है। (49) और यदि अधिकार उनको मिलने वाला हो तो वह उसकी ओर आज्ञाकारी बनकर आ जाते हैं। (50) क्या उनके दिलों में रोग है या वह सन्देह में पड़े हुए हैं। अथवा उनको यह डर है कि अल्लाह और उसका सन्देष्टा उनके साथ अन्याय करेंगे। बल्कि यह लोग अत्याचारी हैं।

(51) ईमान वालों का कथन तो यह है कि जब वह अल्लाह और उसके सन्देष्टा की ओर बुलाये जायें ताकि सन्देष्टा उनके बीच निर्णय करे तो वह कहें कि हमने सुना और हमने माना। और यही लोग सफलता पाने वाले हैं। (52) और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करे और वह अल्लाह से डरे और उसके विरोध से बचे तो यही लोग हैं जो सफल होंगे।

(53) और वह अल्लाह की सौगन्ध खाते हैं, अत्यन्त गम्भीर सौगन्धें, कि यदि तुम उनको आदेश दो तो वह अवश्य निकलेंगे। कहो कि सौगन्धें न खाओं, नियम के अनुसार आज्ञापालन चाहिए। निस्सन्देह अल्लाह को ज्ञात है जो तुम करते हो। (54) कहो कि अल्लाह का आज्ञापालन करो और सन्देष्टा का आज्ञापालन करो। फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो सन्देष्टा पर वह भार है

जो उस पर डाला गया है। और तुम पर वह भार है जो तुम पर डाला गया है। और यदि तुम उसका आज्ञापालन करोगे तो सन्मार्ग पाओगे। और सन्देष्टा का दायित्व मात्र स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है।

(55) अल्लाह ने वादा किया है तुममें से उन लोगों के साथ जो ईमान लायें और अच्छे कर्म करें कि वह उनको पृथ्वी में सत्ता प्रदान करेगा, जैसा कि उनसे पहले लोगों को सत्ता प्रदान की गई थी। और उनके लिए उनके दीन (धर्म) को जमा देगा जिसको उनके लिए पसन्द किया है। और उनके भय की दशा के बाद उसको शान्ति से बदल देगा। वह मात्र मेरी उपासना करेंगे और किसी चीज़ को मेरा साझीदार न बनायेंगे और जो इसके बाद अवज्ञा करे तो ऐसे ही लोग अवज्ञाकारी हैं।

(56) और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो और सन्देष्टा का आज्ञापालन करो। ताकि तुम पर दया की जाये। (57) जो लोग झुठला रहे हैं उनके सम्बन्ध में यह न समझो कि वह धरती में अल्लाह को विवश कर देंगे। और उनका ठिकाना आग है और वह अत्यन्त बुरा ठिकाना है।

(58) ऐ ईमान वालों, तुम्हारे ममलूकों (जिन पर तुम्हें स्वामित्व प्राप्त हो) को और तुममें जो प्रौढ़ता को नहीं पहुँचे, उनके लिए तीन समय ऐसे हैं जिनमें उन्हें अनुमति लेनी चाहिए- फ़ज्र की नमाज़ से पहले, और दोपहर को जब तुम अपने कपड़े उतारते हो, और ईशा की नमाज़ के बाद। ये तीन समय तुम्हारे लिए पर्दे के हैं। उनके बाद न तुम पर कोई पाप है और न उन पर। तुम एक-दूसरे के पास अधिकता से आते-जाते रहते हो। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है। और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (59) और जब तुम्हारे बच्चे बुद्धि की सीमा को पहुँच जायें तो वह भी उसी प्रकार अनुमति लें जिस प्रकार उनके अगले अनुमति लेते रहे हैं। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों को स्पष्ट करता है और अल्लाह ज्ञान वाला और विवेक वाला है। (60) और बड़ी बूढ़ी महिलाएँ जो निकाह की आशा नहीं रखतीं, उन पर कोई पाप नहीं यदि वह अपनी चादरें उतार कर रख दें, शर्त यह है कि वह सौन्दर्य का प्रदर्शन करने वाली न हों।

और यदि वह भी सावधानी बरतें तो उनके लिए बेहतर है। और अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

(61) अन्धे पर कोई रोक नहीं और लँगड़े पर कोई रोक नहीं और रोगी पर कोई रोक नहीं और न तुम लोगों पर कोई रोक है कि तुम अपने घरों से खाओ अथवा अपने बाप-दादा के घरों से, अथवा अपनी माँओं के घरों से, अथवा अपने भाईयों के घरों से, अथवा अपनी बहनों के घरों से, अथवा अपने चाचाओं के घरों से, अथवा अपनी फूफियों के घरो से, अथवा अपने मामा लोगों के घरों से, अथवा अपनी ख़ाला (मौसी) लोगों के घरों से अथवा जिस घर की कुँजियों के तुम स्वामी हो अथवा अपने मित्रों के घरों से, तुम पर कोई पाप नहीं कि तुम लोग मिल कर खाओ अथवा अलग-अलग। फिर जब तुम घरों में प्रवेश करो तो अपने लोगों को सलाम करो जो अभिवादन और पवित्र दुआ है अल्लाह की ओर से। इस प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए आयतों को स्पष्ट करता है ताकि तुम समझो।

(62) ईमान वाले वह हैं जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा पर विश्वास व्यक्त करें। और जब वह किसी सामूहिक कार्य के अवसर पर सन्देष्टा के साथ हैं तो जब तक तुमसे अनुमति न ले लें वहाँ से न जाएँ। जो लोग तुमसे अनुमति लेते हैं, वही अल्लाह और उसके सन्देष्टा पर आस्था रखते हैं। अतः जब वह अपने किसी कार्य के लिए तुमसे अनुमति माँगे तो उनमें से जिसको चाहो, इसकी अनुमति दे दो। और उनके लिए अल्लाह से क्षमा माँगो। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(63) तुम लोग सन्देष्टा के बुलाने को इस प्रकार का बुलाना न समझो जिस प्रकार तुम परस्पर एक-दूसरे को बुलाते हो। अल्लाह तुममें से उन लोगों को जानता है जो एक-दूसरे की आड़ लेते हुए चुपके से चले जाते हैं। अतः जो लोग उसके आदेश का उल्लंघन करते हैं, उनको डरना चाहिए कि उन पर कोई परीक्षा आ जाए। या उनको एक कष्टप्रद यातना पकड़ ले। (64) याद रखो कि जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है, सब अल्लाह का है। अल्लाह उस दशा को जानता है जिसमें तुम हो। और जिस दिन वे उसकी ओर लाये जायेंगे

तो जो कुछ उन्होंने किया था, वह उससे उनको सूचित कर देगा। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

25. सूरह अल-फ़ुरक़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अत्यन्त बरकत वाली (विभूतिपूर्ण) है वह हस्ती जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद) पर फ़ुरक़ान (कसौटी) उतारा ताकि वह संसार वालों के लिए डराने वाला हो। (2) वह जिसके लिए आकाशों और पृथ्वी की बादशाही है। और उसने कोई बेटा नहीं बनाया और बादशाही में कोई उसका साझीदार नहीं। और उसने हर चीज़ को पैदा किया और उसका एक पैमाना निर्धारित किया। (3) और लोगों ने उसके सिवा ऐसे उपास्य बनाये जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते, वह स्वंय पैदा किये जाते हैं। और वह स्वंय अपने लिए न किसी हानि का अधिकार रखते हैं और न किसी लाभ का। और न वह किसी की मृत्यु का अधिकार रखते हैं और न किसी के जीवन का, और न मरने के बाद पुनः जीवित करने का।

(4) और अवज्ञाकारी लोग कहते हैं कि यह मात्र एक झूठ है जिसको इसने गढ़ा है। और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें इसकी सहायता की है। तो यह लोग अत्याचार और झूठ के दोषी हुए। (5) और वह कहते हैं कि ये अगलों की प्रमाणहीन बाते हैं जिनको इसने लिखवा लिया है। अतः वह इसको सुबह एवं सायं सुनाई जाती हैं। (6) कहो कि इसको उसने उतारा है जो आकाशों और धरती के भेद को जानता है। निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(7) और वह कहते हैं कि यह कैसा सन्देष्टा है जो खाना खाता है और बाज़ारों में चलता-फिरता है। क्यों न इसके पास कोई फ़रिश्ता भेजा गया कि वह इसके साथ रहकर डराता। (8) अथवा इसके लिए कोई ख़ज़ाना (कोष) उतारा जाता। अथवा इसके लिए कोई बाग़ होता जिससे वह खाता। और अत्याचारियों ने कहा कि तुम लोग एक जादू से प्रभावित व्यक्ति का अनुसरण

कर रहे हो। (9) देखो वह कैसी-कैसी उक्तियाँ तुम्हारे लिए बयान कर रहे हैं। अतः वह भटक गये हैं, फिर वह मार्ग नहीं पा सकते।

(10) अत्यन्त बरकत वाला (विभूतिपूर्ण) है वह। यदि वह चाहे तो तुमको इससे भी बेहतर चीज़ प्रदान कर दे। ऐसे बाग़ जिनके नीचे नहरें बहती हों, और तुमको बहुत से महल प्रदान कर दे। (11) बल्कि उन्होंने क़ियामत को झुठला दिया है, और हमने ऐसे व्यक्ति के लिए जो क़ियामत को झुठलाये नरक तैयार कर रखी है। (12) जब वह उनको दूर से देखेगी तो वह उसका विफरना और दहाड़ना सुनेंगे। (13) और जब वह उसके किसी संकुचित स्थान में बाँध कर डाल दिये जायेंगे तो वह वहाँ मृत्यु को पुकारेंगे। (14) आज एक मृत्यु न पुकारो, बल्कि अनेकों मृत्यु को पुकारो। (15) कहो क्या यह बेहतर है, अथवा सदैव रहने वाली जन्नत जिसका वादा अल्लाह से डरने वालों के लिए किया गया है, वह उनके लिए बदला और ठिकाना होगी। (16) उसमें उनके लिए वह सब होगा जो वह चाहेंगे, वह उसमें सदैव रहेंगे। यह तेरे पालनहार के जिम्मे एक वादा है। जिसका पूरा होना अनिवार्य है।

(17) और जिस दिन वह उनको एकत्र करेगा और उनको भी जिनकी वह अल्लाह के सिवा उपासना करते हैं, फिर वह कहेगा, क्या तुमने मेरे उन बन्दों को भटकाया या वह स्वंय मार्ग से भटक गये। (18) वह कहेंगे कि पवित्र है तेरी हस्ती। हमारे लिए यह उचित न था कि तेरे सिवा दूसरों को काम बनाने वाला प्रस्तावित करें। परन्तु तूने उनको और उनके बाप-दादा को संसार का सामान दिया, यहाँ तक कि वह उपदेश को भूल गये और नष्ट होने वाले बने। (19) अतः उन्होंने तुमको तुम्हारी बातों में झूठा ठहरा दिया। अब न तुम स्वंय टाल सकते हो और न कोई सहायता पा सकते हो। और तुममें से जो व्यक्ति अत्याचार करेगा, हम उसको एक बड़ी यातना चखायेंगे।

(20) और हमने तुमसे पहले जितने पैग़म्बर भेजे, सब खाना खाते थे और बाज़ारों में चलते-फिरते थे। और हमने तुमको एक-दूसरे के लिए परीक्षा बनाया है। क्या तुम धैर्य रखते हो। और तुम्हारा पालनहार सब कुछ देखता है।

(21) और जो लोग हमारे समक्ष उपस्थित होने का डर नहीं रखते, वह कहते हैं कि हमारे ऊपर फ़रिश्ते क्यों नहीं उतारे गये या हम क्यों अपने पालनहार को

नहीं देख लेते। उन्होंने अपने मन में अपने को बहुत बड़ा समझा और वह सीमा से आगे बढ़ गये हैं विद्रोह में। (22) जिस दिन वह फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन अपराधियों के लिए कोई शुभ सूचना न होगी। और वह कहेंगे कि शरण, शरण। (23) और हम उनके प्रत्येक कर्म की ओर बढ़ेंगे जो उन्होंने किया था। और फिर उसको उड़ती हुई धूल बना देंगे। (24) जन्नत वाले उस दिन बेहतर ठिकानों में होंगे और अत्यन्त अच्छे विश्रामस्थल में।

(25) और जिस दिन आसमान बादल सा फट जायेगा। और फ़रिश्ते लगातार उतारे जायेंगे। (26) और उस दिन वास्तविक बादशाही केवल रहमान की होगी। और वह दिन अवज्ञाकारियों पर अत्यन्त कठोर होगा। (27) और जिस दिन अत्याचारी अपने हाथों को काटेगा, वह कहेगा काश, मैंने सन्देष्टा के साथ मार्ग अपनाया होता। (28) हाय मेरा दुर्भाग्य, काश मैं अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाता। (29) उसने मुझको मार्ग से भटका दिया इसके उपरांत कि वह (चेतावनी) मेरे पास आ चुकी थी। और शैतान है ही मनुष्य को धोखा देने वाला। (30) और सन्देष्टा कहेगा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को पूर्णतः छोड़ दिया। (31) और इसी प्रकार हमने अपराधियों में से प्रत्येक सन्देष्टा के शत्रु बनाये। और तुम्हारा पालनहार काफ़ी है, मार्गदर्शन के लिए और सहायता करने के लिए।

(32) और अवज्ञा करने वालों ने कहा कि इसके ऊपर पूरा क़ुरआन क्यों नहीं उतारा गया ऐसा इसलिए है ताकि क़ुरआन के माध्यम से हम तुम्हारे दिल को दृढ़ करें और हमने इसको ठहर-ठहर कर उतारा है। (33) और यह लोग कैसा ही विचित्र प्रश्न तुम्हारे समक्ष लायें, परन्तु हम उसका उपयुक्त उत्तर और सबसे अच्छा स्पष्टीकरण तुम्हें बता देंगे। (34) जो लोग अपने मुँह के बल नरक की ओर ले जाये जायेंगे। उन्हीं का बुरा ठिकाना है। और वही हैं मार्ग से बहुत भटके हुए।

(35) और हमने मूसा को पुस्तक प्रदान की। और उसके साथ उसके भाई हारुन को सहायक बनाया। (36) फिर हमने उनसे कहा कि तुम दोनों इन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठला दिया है। फिर हमने उनको पूर्णतः नष्ट कर दिया। (37) और नूह की क़ौम को भी हमने डुबा दिया जबकि

उन्होंने सन्देष्टाओं को झुठलाया और हमने उनको लोगों के लिए एक निशानी बना दिया। और हमने अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना तैयार कर रखी है। (38) और आद और समूद को और अल-रस्स वालों को और उनके बीच बहुत सी क़ौमों को। (39) और हमने उनमें से प्रत्येक को उदाहरण सुनाये और हमने प्रत्येक को पूर्णतः नष्ट कर दिया। (40) और ये लोग उस नगर से गुज़रे हैं जिन पर बुरी तरह पत्थर बरसाये गये। क्या वह उसको देखते नहीं रहे हैं। बल्कि वह लोग पुनः उठाये जाने की आशा नहीं रखते।

(41) और वह जब तुमको देखते हैं तो वह तुम्हारा उपहास करने लगते हैं। क्या यही है जिसको अल्लाह ने सन्देष्टा बनाकर भेजा है। (42) उसने तो हमको हमारे उपास्यों से हटा ही दिया होता, यदि हम उन पर जमे न रहते। और शीघ्र ही उनको ज्ञात हो जायेगा जब वह यातना को देखेंगे कि सबसे अधिक मार्गविहीन कौन है।

(43) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छाओं को अपना उपास्य बना रखा है। तो क्या तुम उसका दायित्व ले सकते हो। (44) अथवा तुम समझते हो कि इनमें से अधिकतर सुनते और समझते हैं। वह तो मात्र पशुओं की भाँति हैं बल्कि वह उनसे भी अधिक मार्गविहीन हैं।

(45) क्या तुमने अपने पालनहार की ओर नहीं देखा कि वह किस प्रकार छाया को फैला देता है। और यदि वह चाहता तो वह उसको ठहरा देता। फिर हमने सूरज को इस पर प्रमाण बनाया। (46) फिर हमने धीरे-धीरे उसको अपनी ओर समेट लिया। (47) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को पर्दा और नींद को विश्राम का सुख बनाया और दिन को जी उठने का समय बनाया। (48) और वही है जो अपनी दया से पूर्व हवाओं को शुभ सूचक बनाकर भेजता है। और हम आसमान से पवित्र पानी उतारते हैं। (49) ताकि उसके माध्यम से मृत धरती में जीवन डाल दें। और उसको पिलायें अपनी सृष्टियों में से बहुत से पशुओं और मनुष्यों को।

(50) और हमने इसको उनके बीच भिन्न-भिन्न प्रकार से बयान किया है ताकि वह विचार करें। फिर भी अधिकतर लोग कृतघ्नता किये बिना नहीं रहते। (51) और यदि हम चाहते तो प्रत्येक नगर में एक डराने वाला भेज

देते। (52) अतः तुम अवज्ञाकारियों की बात न मानो और इसके माध्यम से उनके साथ बड़ा जिहाद (कड़ा संघर्ष) करो।

(53) और वही है जिसने दो समुद्रों को मिलाया। यह मीठा है प्यास बुझाने वाला और यह नमकीन है कड़वा। और उसने इनके बीच एक पर्दा रख दिया और एक दृढ़ रोक। (54) और वही है जिसने मनुष्य को पानी से पैदा किया। फिर उसको परिवार वाला और ससुराल वाला बनाया। और तुम्हारा पालनहार बहुत सामर्थ्य वाला है।

(55) और वह अल्लाह को छोड़ कर उन चीज़ों की उपासना करते हैं जो उनको न लाभ पहुँचा सकती हैं और न हानि। और अवज्ञाकारी तो अपने पालनहार के विरुद्ध सहायक बना हुआ है। (56) और हमने तुमको मात्र शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (57) तुम कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई मजदूरी नहीं माँगता परन्तु यह कि जो चाहे वह अपने पालनहार का मार्ग पकड़ ले।

(58) और जीवित अल्लाह पर, जो कभी मरने वाला नहीं, भरोसा रखो और उसकी प्रशंसा के साथ उसकी स्तुति करो। और वह अपने बन्दों के पापों से भिज्ञ रहने के लिए पर्याप्त है। (59) जिसने पैदा किया आसमानों और पृथ्वी को और जो कुछ उनके मध्य है, छः दिन में। फिर वह सिंहासन पर आसीन हुआ। रहमान, अतः उसको पूछो किसी जानने वाले से। (60) और जब उनसे कहा जाता है कि रहमान को सजदा करो तो वह कहते हैं कि रहमान क्या है। क्या हम उसको सजदा करें जिसको तू हमसे कहे। और उनका बिदकना और बढ़ जाता है।

(61) अत्यन्त बरकतवाला (विभूतिपूर्ण) है वह हस्ती जिसने आकाश में बुर्ज बनाये और उसमें एक दीपक (सूरज) और एक चमकता हुए चाँद रखा। (62) और वही है जिसने रात और दिन को एक के बाद एक आने वाला बनाया, उस व्यक्ति के लिए जो शिक्षा लेना चाहे और कृतज्ञ बनना चाहे।

(63) और रहमान के बन्दे वह हैं जो धरती में नम्रतापूर्वक चलते हैं। और जब अज्ञानी लोग उनसे बात करते हैं तो वह कह देते हैं कि तुमको सलाम। (64) और जो अपने पालनहार के समक्ष सजदा और क़याम

(खड़े होने) में रातें व्यतीत करते हैं। (65) और जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार, नरक की यातना को हमसे दूर रख। निस्सन्देह उसकी यातना सम्पूर्ण विनाश है। (66) निस्सन्देह वह बुरा ठिकाना है और बुरा स्थान है। (67) और वह लोग कि जब वह ख़र्च करते हैं तो न अपव्यय करते हैं और न कृपणता करते हैं। और उनका व्यय इसके बीच सन्तुलन पर होता है।

(68) और जो लोग अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य उपास्य को नहीं पुकारते हैं। और वह अल्लाह की अवैध की हुई किसी जान की हत्या नहीं करते परन्तु विधि सम्मत होने पर। और वह व्यभिचार नहीं करते। और जो व्यक्ति ऐसे कृत्य करेगा तो वह दण्ड का भागीदार होगा। (69) क़ियामत के दिन उसकी यातना बढ़ती चली जायेगी। और वह उसमें सदैव अपमानित होकर रहेगा। (70) परन्तु जो व्यक्ति तौबा करे और ईमान लाये और अच्छे कर्म करे तो अल्लाह ऐसे लोगों की बुराईयों को भलाईयों से बदल देगा। और अल्लाह क्षमा करने वाला, कृपाशील है। (71) और जो व्यक्ति तौबा करे और अच्छे कर्म करे तो वह वास्तव में अल्लाह की ओर लौट रहा है।

(72) और जो लोग झूठ कर्मों में सम्मिलित नहीं होते। और जब किसी अश्लील चीज़ से उनका गुज़र होता है तो वह गम्भीरतापूर्वक गुज़र जाते हैं। (73) और वह ऐसे हैं कि जब उनको उनके पालनहार की आयतों के माध्यम से उपदेश दिया जाता है तो वह उन पर बहरे और अन्धे होकर नहीं गिरते। (74) और जो कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार, हमको हमारी पत्नी और हमारी सन्तान की ओर से आँखों की ठण्डक प्रदान कर दे और हमको परहेज़गारों का नायक बना।

(75) यह लोग हैं कि इनको उच्च भवन मिलेंगे इसलिए कि इन्होंने धैर्य रखा। और उनमें इनका स्वागत दुआ और सलाम के साथ होगा। (76) वह उनमें सदैव रहेंगे। वह क्या ही स्थान है ठहरने का और क्या ही स्थान है आवास का। (77) कहो कि मेरा पालनहार तुम्हारी परवाह नहीं रखता, यदि तुम उसको न पुकारो। अतः तुम झुठला चुके तो वह चीज़ शीघ्र ही घटित होकर रहेगी।

26. सूरह अश-शुअरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ता. सीन. मीम. (2) यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं। (3) संभवतः तुम अपने को नष्ट कर डालोगे इस बात पर कि वह ईमान नहीं लाते। (4) यदि हम चाहें तो उन पर आसमान से निशानी उतार दें। फिर उनकी गरदनें उसके आगे झुक जायें। (5) उनके पास रहमान की ओर से कोई भी नया उपदेश ऐसा नहीं आता जिससे वह मुँह न मोड़ते हों। (6) अतः उन्होंने झुठला दिया। तो अब शीघ्र ही उनको उस चीज़ की वास्तविकता ज्ञात हो जायेगी। जिसका वह उपहास करते थे।

(7) क्या उन्होंने धरती को नहीं देखा कि हमने इसमें कितनी भाँति-भाँति की उत्तम चीज़ें उगायी हैं। (8) निस्सन्देह इसमें निशानी है और उनमें से अधिकतर लोग ईमान नहीं लाते। (9) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार प्रभुत्वशाली है, दया करने वाला है।

(10) और जब तुम्हारे पालनहार ने मूसा को पुकारा कि तुम अत्याचारी क़ौम के पास जाओ। (11) फ़िरऔन की क़ौम के पास, क्या वह नहीं डरते। (12) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनहार, मुझको डर है कि वह मुझे झुठला देंगे। (13) और मेरा सीना संकुचित होता है और मेरी ज़बान नहीं चलती। अतः तू हारुन के पास सन्देश भेज दे। (14) और मेरे ऊपर उनका एक अपराध भी है अतः मैं डरता हूँ कि वह मेरी हत्या कर देंगे।

(15) फ़रमायाः कभी नहीं। अतः तुम दोनों हमारी निशानियों के साथ जाओ, हम तुम्हारे साथ सुनने वाले हैं। (16) अतः तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम सारे विश्व के स्वामी अल्लाह के सन्देष्टा हैं। (17) कि तू इस्राईल की सन्तान को हमारे साथ जाने दे। (18) फ़िरऔन ने कहा, क्या हमने तुमको बचपन में अपने अन्दर नहीं पाला। और तुमने अपनी आयु के कई वर्ष हमारे यहाँ व्यतीत किए। (19) और तुमने अपना वह कर्म किया जो किया। और तुम कृतघ्नों में से हो।

(20) मूसा ने कहा। उस समय मैंने किया था और मुझसे अपराध हो

गया। (21) फिर मुझे तुम लोगों से डर लगा तो मैं तुमसे भाग गया, फिर मुझको मेरे पालनहार ने ज्ञान प्रदान किया और मुझे सन्देष्टाओं में से बना दिया। (22) और यह उपकार है जो तुम मुझको जता रहे हो कि तुमने इस्राईल की सन्तान को दास बना लिया।

(23) फ़िरऔन ने कहा कि समस्त संसार का पालनहार (रब्बुल आलमीन) क्या चीज़ है। (24) मूसा ने कहा, आकाशों और पृथ्वी का पालनहार और उन सबका पालनहार जो इनके मध्य हैं, यदि तुम विश्वास करने वाले हो। (25) फ़िरऔन ने अपने आसपास वालों से कहा, क्या तुम सुनते नहीं हो। (26) मूसा ने कहा वह तुम्हारा भी पालनहार है। और तुम्हारे अगले पूर्वजों का भी। (27) फ़िरऔन ने कहा तुम्हारा यह सन्देष्टा जो तुम्हारी ओर भेजा गया है दीवाना है। (26) मूसा ने कहा, पूर्व व पश्चिम का पालनहार और जो कुछ उनके मध्य है, यदि तुम बुद्धि रखते हो। (29) फ़िरऔन ने कहा, यदि तुमने मेरे अतिरिक्त किसी को उपास्य बनाया तो मैं तुमको बन्दी बना दूँगा। (30) मूसा ने कहा क्या अगर मैं कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करुँ तब भी। (31) फ़िरऔन ने कहा तो उसको प्रस्तुत करो यदि तुम सच्चे हो। (32) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो अचानक वह एक स्पष्ट अजगर था। (33) और उसने अपना हाथ बाहर खींचा तो अचानक वह देखने वालों के लिए चमक रहा था। (34) फ़िरऔन ने आस-पास के सरदारों से कहा, वास्तव में यह व्यक्ति एक कुशल जादूगर है। (35) वह चाहता है कि वह अपने जादू से तुमको तुम्हारे देश से निकाल दे। तो तुम क्या परामर्श देते हो।

(36) दरबारियों ने कहा कि इसको और इसके भाई को अवकाश दीजिए। और नगरों में सन्देशवाहक भेजिये। (37) कि वह आपके पास समस्त कुशल जादूगरों को लायें। (38) अतः जादूगर एक दिन निर्धारित समय पर एकत्र किये गये। (39) और लोगों से कहा गया कि क्या तुम लोग एकत्रित होंगे। (40) ताकि हम जादूगरों का साथ दें यदि वह प्रभावशाली रहने वाले हों। (41) फिर जब जादूगर आये तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा, क्या हमारे लिए कोई पुरस्कार है यदि हम विजयी रहे। (42) उसने कहा हाँ, और तुम उस स्थिति में समीपवर्ती लोगों में सम्मिलित हो जाओगे।

(43) मूसा ने उनसे कहा कि तुमको जो कुछ डालना हो डालो। (44) अतः उन्होंने अपनी रस्सियाँ और लाठियाँ डालीं। और कहा कि फ़िरऔन के प्रताप की सौगन्ध, हम ही विजयी रहेंगे। (45) फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो अचानक वह उस जादू को निगलने लगा जो उन्होंने बनाया था। (46) फिर जादूगर सजदे में गिर पड़े। (47) उन्होंने कहा हम ईमान लाये समस्त संसार के पालनहार पर। (48) जो मूसा और हारुन का पालनहार है।

(49) फ़िरऔन ने कहा, तुमने इसको मान लिया इससे पहले कि मैं तुमको अनुमति दूँ। निस्सन्देह वही तुम्हारा गुरु है जिसने तुमको जादू सिखाया है। अतः अब तुमको ज्ञात हो जायेगा। मैं तुम्हारे एक ओर के हाथ और दूसरी ओर के पैर काटूँगा और तुम सबको सूली पर चढ़ाऊँगा। (50) उन्होंने कहा कि कुछ चिंता नहीं। हम अपने स्वामी के पास पहुँच जायेंगे। (51) हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनहार हमारे पापों को क्षमा कर देगा। इसलिए कि हम पहले ईमान लाने वाले बने।

(52) और हमने मूसा को वह्य (श्रुति-सन्देश) भेजी कि मेरे बन्दों को लेकर रात को निकल जाओ। निश्चय ही तुम्हारा पीछा किया जायेगा। (53) अतः फ़िरऔन ने नगरों में दूत भेजे। (54) यह लोग छोटा सा समूह हैं। (55) और इन्होंने हमको क्रोध दिलाया है। (56) और हम एक सचेत रहने वाले दल हैं। (57) अतः हमने उनको बाग़ों और स्रोतों से निकाला। (58) और ख़ज़ानों और अच्छे घरों से। (59) यह हुआ। और हमने इस्राईल की सन्तान को इन चीज़ो का उत्तराधिकारी बना दिया।

(60) अतः उन्होंने सूरज निकलते समय उनका पीछा किया। (61) फिर जब दोनों समूह आमने सामने हुए तो मूसा के साथियों ने कहा कि हम तो पकड़े गये। (62) मूसा ने कहा कि कदापि नहीं, निस्सन्देह मेरा पालनहार मेरे साथ है। वह मुझको मार्ग बतायेगा। (63) फिर हमने मूसा को प्रकाशना की कि अपनी लाठी नदी पर मारो। अतः वह फट गया और प्रत्येक भाग ऐसा हो गया जैसे बड़ा पहाड़। (64) और हमने दूसरे पक्ष को भी उसके निकट पहुँचा दिया। (65) और हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया। (66) फिर दूसरों को डुबा दिया। (67) निस्सन्देह इसके अन्दर निशानी

है। और उनमें से अधिकतर मानने वाले नहीं हैं। (68) और निस्सन्देह तेरा पालनहार प्रभुत्त्वशाली है, दयावान है।

(69) और इनको इब्राहीम का क़िस्सा सुनाओ। (70) जबकि उसने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की उपासना करते हो। (71) उन्होंने कहा कि हम मूर्तियों की उपासना करते हैं और हम निरन्तर इस पर जमे रहेंगे। (72) इब्राहीम ने कहा, क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम इनको पुकारते हो। (73) या वह तुमको लाभ-हानि पहुँचाते हैं। (74) उन्होंने कहा बल्कि हमने अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते हुए पाया है।

(75) इब्राहीम ने कहा, क्या तुमने उन चीज़ों को देखा भी जिनकी तुम उपासना करते हो। (76) तुम भी और तुम्हारे बड़े भी। (77) ये सब मेरे शत्रु हैं अतिरिक्त एक संसार के स्वामी के। (78) जिसने मुझे पैदा किया, फिर वही मेरा मार्गदर्शन करता है। (79) और जो मुझको खिलाता है और पिलाता है। (80) और जब मैं रोगी होता हूँ तो वही मुझको स्वास्थ्य प्रदान करता है। (81) और जो मुझको मृत्यु प्रदान करेगा वही मुझको जीवित करेगा। (82) और वह जिससे मैं आशा रखता हूँ कि बदले के दिन मेरी ग़लतियों को क्षमा करेगा।

(83) ऐ मेरे पालनहार, मुझको विवेक प्रदान कर और मुझको सदाचारी लोगों में सम्मिलित कर। (84) और मेरा वचन सच्चा रख बाद के आने वालों में। (85) और मुझे बाग़ की नेमत के उत्तराधिकारियों में से बना (86) और मेरे पिता को क्षमा कर, निस्सन्देह वह पथभ्रष्ट लोगों में से है। (87) और मुझको उस दिन अपमानित न कर जबकि लोग उठाये जायेंगे। (88) जिस दिन न सम्पत्ति काम आयेगी और न सन्तान। (89) परन्तु वह जो अल्लाह के पास निष्कपट हृदय लेकर आये।

(90) और जन्नत डरने वालों के निकट लायी जायेगी। (91) और नरक भटके हुए लोगों के लिए प्रकट की जायेगी। (92) और उनसे कहा जायेगा, कहाँ हैं वह जिनकी तुम उपासना करते थे। (93) अल्लाह के अतिरिक्त। क्या वह तुम्हारी सहायता करेंगे, या वह अपना बचाव कर सकते हैं। (94) फिर उसमें औंधे मुँह डाल दिये जायेंगे। (95) वह और भटके हुए लोग और इबलीस की सेना, सब के सब। (96) वह उसमें परस्पर झगड़ते हुए कहेंगे।

(97) अल्लाह की सौगन्ध, हम स्पष्ट पथभ्रष्टता में थे। (98) जबकि हम तुमको संसार के स्वामी के समान करते थे। (99) और हमको तो बस अपराधियों ने मार्ग से भटकाया। (100) अतः अब हमारा कोई सिफ़ारिश करने वाला नहीं। (101) और न कोई शुभचिन्तक मित्र।

(102) अतः काश हमको फिर वापस जाना हो कि हम ईमान वालों में से बनें। (103) निस्सन्देह इसमें निशानी है। और उनमें अधिकतर लोग ईमान लाने वाले नहीं। (104) और निस्सन्देह तेरा पालनहार शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(105) नूह की क़ौम ने सन्देष्टाओं को झुठलाया। (106) जबकि उनके भाई नूह ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं हो। (107) मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय सन्देष्टा हूँ। (108) अतः तुम लोग अल्लाह से डरो, और मेरी बात मानो। (109) और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला तो मात्र अल्लाह जो कि समस्त संसार का पालनहार है के जिम्मे है।

(110) अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (111) उन्होंने कहा क्या हम तुमको मान लें, हालाँकि तुम्हारा आज्ञापालन निम्न स्तरीय लोगों ने किया है। (112) नूह ने कहा मुझको क्या मालूम जो वह करते रहे हैं। (113) इनका हिसाब तो मेरे पालनहार के पास है, यदि तुम समझो। (114) और मैं मोमिनों (आस्थावानों) को दूर करने वाला नहीं हूँ। (115) मैं तो मात्र एक स्पष्ट डराने वाला हूँ।

(116) उन्होंने कहा कि ऐ नूह यदि तुम बाज न आये तो अवश्य पत्थरों से मार दिये जाओगे। (117) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरी क़ौम ने मुझे झुठला दिया। (118) अतः तू मेरे और उनके मध्य स्पष्ट निर्णय कर दे। और मुझको और जो मोमिन मेरे साथ हैं उनको बचा ले। (119) फिर हमने उसको और उसके साथियों को एक भरी हुई नाव में बचा लिया। (120) फिर इसके बाद हमने शेष लोगों को डुबा दिया। (121) निश्चित रूप से इसके अन्दर निशानी है, और इनमें से अधिकतर लोग मानने वाले नहीं। (122) और निस्सन्देह तेरा पालनहार वही शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(123) आद ने सन्देष्टाओं को झुठलाया। (124) जबकि उनके भाई

हूद ने उनसे कहा कि क्या तुम लोग डरते नहीं। (125) मैं तुम्हारे लिए एक विश्वसनीय सन्देष्टा हूँ। (126) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (127) और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला मात्र संसार के स्वामी के पास है। (128) क्या तुम प्रत्येक ऊँची भूमि पर व्यर्थ एक स्मारक बनाते हो। (129) और बड़े-बड़े महल बनाते हो। मानो तुम्हें सदैव रहना है। (130) और जब किसी पर हाथ डालते हो तो पूर्णत निर्दय अत्याचारी बनकर डालते हो। (131) अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (132) और उस अल्लाह से डरो जिसने उन चीज़ों से तुम्हें सहायता पहुँचायी जिनको तुम जानते हो। (133) उसने तुम्हारी सहायता की पशुओं और सन्तान से। (134) और बाग़ों और स्रोतों से। (135) मैं तुम्हारे ऊपर एक बड़े दिन की यातना से डरता हूँ।

(136) उन्होंने कहा हमारे लिए समान है, चाहे तुम हमको उपदेश दो चाहे उपदेश देने वालों में से न बनो। (137) यह तो बस अगले लोगों की एक आदत है। (138) और हम पर कदापि प्रकोप आने वाला नहीं है। (139) अतः उन्होंने उसको झुठला दिया, फिर हमने उनको नष्ट कर दिया, निस्सदेह इसके अन्दर निशानी है। और इनमें से अधिकतर लोग मानने वाले नहीं हैं। (140) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार वह शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(141) समूद ने सन्देष्टाओं को झुठलाया। (142) जब उनके भाई सालेह ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। (143) मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त सन्देष्टा हूँ। (144) अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (145) और मैं तुमसे इस पर कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला मात्र विश्व के स्वामी अल्लाह के पास है। (146) क्या तुमको उन चीज़ों में निश्चिन्त रहने दिया जायेगा जो यहाँ हैं। (147) बाग़ों और स्रोतों में। (148) और खेतों और रस भरे गुच्छों वाली खजूरों में। (149) और तुम पर्वतों को काट-काट कर गर्व करते हुए घर बनाते हो। (150) तो अल्लाह से डरो मेरी बात मानो। (151) और सीमा से आगे बढ़ जाने वालों की बात न मानो। (152) जो धरती में बिगाड़ करते हैं और सुधार नहीं करते।

(153) उन्होंने कहा, तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (154) तुम

मात्र हमारे जैसे एक मनुष्य हो, अतः तुम कोई निशानी लाओ यदि तुम सच्चे हो। (155) सालेह ने कहा यह एक ऊँटनी है। इसके लिए पानी पीने की एक बारी है। और एक निर्धारित दिन की बारी तुम्हारे लिए है। (156) और इसको बुराई के साथ मत छेड़ना अन्यथा एक बड़े दिन की यातना तुमको पकड़ लेगी। (157) फिर उन्होंने उस ऊँटनी को मार डाला, फिर वह अपमानित होकर रह गये। (158) फिर उनको यातना ने पकड़ लिया। निस्सन्देह इसमें निशानी है और उनमें से अधिकतर मानने वाले नहीं। (159) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार वह शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(160) लूत की क़ौम ने सन्देष्टाओं को झुठलाया। (161) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा, क्या तुम डरते नहीं। (162) मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त सन्देष्टा हूँ। (163) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानो। (164) मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता, मेरा बदला तो संसार के स्वामी अल्लाह के पास है। (165) क्या तुम संसार वालों में से पुरुषों के पास जाते हो। (166) और तुम्हारे पालनहार ने तुम्हारे लिए जो पत्नियाँ पैदा की हैं उनको छोड़ते हो, बल्कि तुम सीमा का उल्लंघन करने वाले लोग हो।

(167) उन्होंने कहा कि ऐ लूत, यदि तुम बाज़ न आये तो अवश्य तुम निकाल दिये जाओगे। (168) उसने कहा मैं तुम्हारे कर्मों से पूर्णतः विरक्त हूँ। (169) ऐ मेरे पालनहार, तू मुझको और मेरे घर वालों को इनके कर्म से मुक्ति प्रदान कर। (170) अतः हमने उसको और उसके सभी घर वालों को बचा लिया। (171) परन्तु एक बुढ़िया कि वह रहने वालों में रह गयी। (172) फिर हमने दूसरों को नष्ट कर दिया। (173) और हमने उन पर बरसाया एक मेघ जो उन पर बरसा जिनको डराया गया था। (174) निस्सन्देह इस में निशानी है। और उन में से अधिकतर मानने वाले नहीं। (175) और निस्सन्देह तेरा पालनहार वह शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(176) ऐका के लोगों ने सन्देष्टाओं को झुठलाया। (177) जब शोऐब ने उनसे कहा क्या तुम डरते नहीं। (178) मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त सन्देष्टा हूँ। (179) अतः अल्लाह से डरो और मेरी बात मानों (180) और मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता। मेरा बदला संसार के स्वामी अल्लाह के पास

है। (181) तुम लोग पूरा-पूरा नापो और घटा कर देने वालों में से न बनो। (182) और सीधे तराज़ू से तौलो। (183) और लोगों को उनकी चीज़ें घटाकर न दो। और धरती में बिगाड़ न फैलाओ। (184) और उस हस्ती से डरो जिसने तुमको पैदा किया है और पिछली पीढ़ियों को भी।

(185) उन्होंने कहा तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (186) और तुम हमारे ही जैसे एक मनुष्य हो। और हम तो तुमको झूठे लोगों में से समझते हैं। (187) अतः हमारे ऊपर आसमान से कोई टुकड़ा गिराओ यदि तुम सच्चे हो। (188) शुऐब ने कहा मेरा पालनहार भली-भाँति जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो। (189) तो उन्होंने उसको झुठला दिया। फिर उनको बादल वाले दिन के प्रकोप ने पकड़ लिया। (190) निस्सन्देह वह एक बड़े दिन का प्रकोप था। निस्सन्देह इसमें निशानी है। और उनमें से अधिकतर मानने वाले नहीं। (191) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार शक्तिशाली है, दयालुता वाला है।

(192) और निस्सन्देह यह संसार के स्वामी अल्लाह की उतारी हुई वाणी है। (193) इसको अमानतदार विश्वसनीय फ़रिश्ता लेकर उतरा है। (194) तुम्हारे हृदय पर ताकि तुम डराने वालों में से बनो। (195) स्पष्ट अरबी भाषा में। (196) और इसका उल्लेख अगले लोगों की किताबों में है। (197) और क्या इनके लिए यह निशानी नहीं है कि इसको इस्राईल के वंश के उलमा (विद्वान) जानते हैं।

(198) और यदि हम इसको किसी अजमी (ग़ैर अरबवासी) पर अवतरित करते। (199) फिर वह उनको पढ़कर सुनाता तो वह इस पर ईमान लाने वाले न बनते। (200) इसी प्रकार हमने ईमान न लाने को अपराधियों के हृदय में डाल रखा है। (201) यह लोग ईमान न लायेंगे जब तक भयंकर प्रकोप न देख लें। (202) अतः वह उन पर अचानक आ जायेगा और इनको सूचना भी न होगी। (203) फिर वह कहेंगे कि क्या हमको कुछ अवकाश मिल सकता है।

(204) क्या वह हमारे प्रकोप को शीघ्र माँग रहे हैं। (205) बताओ कि यदि हम इनको कुछ वर्षों तक लाभ पहुँचाते रहें। (206) फिर उन पर वह चीज़ आ जाये जिससे इन्हे डराया जा रहा है। (207) तो फिर यह लाभ इनके किस काम आयेगा। (208) और हमने किसी नगर को भी नष्ट नहीं किया परन्तु

उसके लिए डराने वाले थे। (209) अनुस्मरण के लिए, और हम अत्याचारी नहीं हैं। (210) और इसको शैतान लेकर नहीं उतरे हैं। (211) न वह इसके योग्य है। और न वह ऐसा कर सकते हैं। (212) वह इसको सुनने से रोक दिये गये हैं।

(213) अतः तुम अल्लाह के साथ किसी अन्य उपास्य को न पुकारो कि तुम भी दण्ड पाने वालों में से हो जाओ। (214) और अपने निकटवर्ती सम्बन्धियों को डराओ। (215) और उन लोगों के लिए अपनी बाँहें झुकाये रखो जो मोमिनों (आस्थावानों) में सम्मिलित होकर तुम्हारा अनुसरण करें। (216) अतः यदि वह तुम्हारी अवज्ञा करें तो कहो कि जो कुछ तुम कर रहे हो, मैं उससे विरक्त हूँ। (217) और शक्तिशाली और कृपालु अल्लाह पर भरोसा रखो। (218) जो देखता है तुमको जबकि तुम उठते हो। (219) और तुम्हारी गतिविधियाँ नमाज़ियों के साथ। (220) निस्सन्देह वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(221) क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि शैतान किस पर उतरते हैं। (222) वह प्रत्येक झूठे पापी पर उतरते हैं। (223) वह कान लगाते हैं और उनमें से अधिकतर झूठे हैं। (224) और कवियों के पीछे मार्गविहीन लोग चलते हैं। (225) क्या तुम नहीं देखते कि वह प्रत्येक घाटी में भटकते हैं। (226) और वह कहते हैं जो वह करते नहीं। (227) परन्तु जो लोग ईमान लाये और अच्छे कर्म किये और उन्होंने अल्लाह को अधिकता से याद किया और उन्होंने बदला लिया इसके बाद कि उन पर अत्याचार हुआ। और अत्याचार करने वालों को शीघ्र ज्ञात हो जायेगा कि उनको कैसे स्थान पर लौट कर जाना है।

27. सूरह अन-नम्ल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ता. सीन.। ये आयतें हैं क़ुरआन की और एक स्पष्ट किताब की। (2) मार्गदर्शन और शुभ सूचना ईमान वालों के लिए (3) जो नमाज़ स्थापित करते हैं और ज़कात (अनिवार्य दान) देते हैं और वह परलोक पर विश्वास

रखते हैं। (4) जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते, उनके कर्मों को हमने उनके लिए शोभायमान बना दिया है, अतः वह भटक रहे हैं। (5) ये लोग हैं जिनके लिए बुरा दण्ड है और वे परलोक में अत्यन्त घाटे में होंगे। (6) और निस्सन्देह क़ुरआन तुमको एक विवेकशील और ज्ञान वाले की ओर से दिया जा रहा है।

(7) जब मूसा ने अपने घर वालों से कहा कि मैंने एक आग देखी है। मैं वहाँ से कोई सूचना लाता हूँ अथवा आग का कोई अंगारा लाता हूँ ताकि तुम तापो। (8) फिर जब वह उसके पास पहुँचा तो पुकारा गया कि मुबारक है वह है जो आग में है और उसके पास है। और पवित्र है अल्लाह जो पालनहार है पूरे जगत का।

(9) ऐ मूसा, यह मैं हूँ अल्लाह, शक्तिशाली और विवेकशील। (10) और तुम अपनी लाठी डाल दो। फिर जब उसने उसको इस प्रकार चलते हुए देखा जैसे वह साँप हो तो वह पीछे को मुड़ा और पलटकर न देखा। ऐ मूसा, डरो नहीं, मेरे समक्ष पैग़म्बर डरा नहीं करते हैं। (11) परन्तु जिसने अत्याचार किया। फिर उसने बुराई के पश्चात उसको भलाई से बदल दिया, तो मैं क्षमा करने वाला, कृपाशील हूँ। (12) और तुम अपना हाथ अपने गिरेबान में डालो, वह किसी कमी के बिना सफेद निकलेगा। ये दोनो मिलकर नौ निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसकी क़ौम के पास जाओ। निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी लोग हैं। (13) अतः जब उनके पास हमारी स्पष्ट निशानियाँ आयीं, उन्होंने कहा यह खुला हुआ जादू है। (14) और उन्होंने झुठलाया, यद्यपि उनके दिलों ने उसका विश्वास कर लिया था, अत्याचार और घमण्ड के कारण से। अतः देखो कैसा बुरा परिणाम हुआ बिगाड़ करने वालों का।

(15) और हमने दाऊद और सुलेमान को ज्ञान प्रदान किया। और उन दोनों ने कहा कि आभार है अल्लाह के लिए जिसने हमको अपने बहुत से ईमान वाले बन्दों पर श्रेष्ठता प्रदान की। (16) और दाऊद का उत्तराधिकारी सुलेमान हुआ। और कहा कि ऐ लोगों, हमको पक्षियों की बोली सिखाई गयी है, और हमको हर प्रकार की वस्तु दी गई। निस्सन्देह यह स्पष्ट कृपा है।

(17) और सुलेमान के लिए उसकी सेना एकत्र की गयी, जिन्न और

मनुष्य और पक्षी, फिर उनके दल बनाये जाते। (18) यहाँ तक कि जब वह चींटियों की घाटी पर पहुँचे। एक चींटी ने कहा, ऐ चींटियों अपने बिलों में प्रवेश कर जाओ, कहीं सुलेमान और उसकी सेना तुमको कुचल डाले। और उनको इसका आभास भी न हो। (19) अतः सुलेमान उसकी बात पर मुस्कुराते हुए हँस पड़ा और कहा, ऐ मेरे पालनहार, मुझे सामर्थ्य प्रदान कर कि मैं तेरी कृपा का आभार प्रकट करुँ जो तूने मुझ पर और मेरे माता-पिता पर किया है और यह कि मैं भले कर्म करुँ जो तुझको पसन्द हो और अपनी कृपा से तू मुझको अपने सदाचारी बन्दों में सम्मिलित कर।

(20) और सुलेमान ने पक्षियों का निरीक्षण किया तो कहा, क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूँ। (21) क्या वह कहीं लुप्त हो गया है। मैं उसको कठोर दण्ड दूँगा। या उसकी हत्या कर दूँगा अथवा मेरे सामने कोई स्पष्ट तर्क लाये। (22) अधिक समय व्यतीत नहीं हुआ था कि उसने आकर कहा, कि मैं एक चीज़ की सूचना लाया हूँ जिसकी सूचना आपको न थी। और मैं सबा नामक देश से एक विश्वसनीय सूचना लेकर आया हूँ। (23) मैंने पाया कि एक महिला उन पर राज करती है और उसको सब चीज़ मिली है। और उसका एक बड़ा सिंहासन है। (24) मैंने उसको और उसकी क़ौम को पाया कि वह सूरज को सजदा करते हैं अल्लाह के अतिरिक्त। और शैतान ने उनके कर्म उनके लिए आकर्षक बना दिये, फिर उनको मार्ग से रोक दिया। अतः वह मार्ग नहीं पाते। (25) कि वह अल्लाह को सजदा करें जो आकाशों और पृथ्वी की छिपी हुई चीज़ को निकालता है और वह जानता है जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो। (26) अल्लाह, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, स्वामी महान सिंहासन का।

(27) सुलेमान ने कहा, हम देखेंगे कि तुमने सच कहा या तुम झूठों में से हो। (28) मेरा यह पत्र लेकर जाओ फिर इसको उन लोगों की ओर डाल दो। फिर उनसे हट जाना। फिर देखना कि वह क्या प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। (29) सबा की रानी ने कहा कि ऐ दरबार वालों, मेरी ओर एक प्रतिष्ठित पत्र डाला गया है। (30) वह सुलेमान की ओर से है। और वह है- प्रारम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान और कृपाशील है।

(31) कि तुम मेरे मुक़ाबले में विद्रोह न करो और आज्ञाकारी बनकर मेरे पास आ जाओ। (32) रानी ने कहा कि ऐ दरबारियो, मेरे मामले में मुझे परामर्श दो। मैं किसी मामले का निर्णय नहीं करती जब तक तुम लोग उपस्थित न हो। (33) उन्होंने कहा, हम लोग ताक़तवर हैं। और हमें बड़ी युद्ध क्षमता प्राप्त है। और निर्णय आपके अधिकार में हैं। अतः आप देख लें कि आप क्या आदेश देती हैं। (34) रानी ने कहा कि राजा लोग जब किसी नगर में प्रवेश करते हैं तो उसको विनष्ट कर देते हैं और उसके सम्मानित लोगों को अपमानित कर देते हैं। और यही यह लोग करेंगे। (35) और मैं उनकी ओर एक उपहार भेजती हूँ, फिर देखती हूँ कि दूत क्या उत्तर लाते हैं।

(36) फिर जब दूत सुलेमान के पास पहुँचा, उसने कहा क्या तुम लोग सम्पत्ति से मेरी सहायता करना चाहते हो। तो अल्लाह ने जो कुछ मुझे दिया है वह उससे उत्तम है जो उसने तुमको दिया है। बल्कि तुम ही अपने उपहार से प्रसन्न हो। (37) उनके पास वापस जाओ। हम उन पर ऐसी सेनाएँ लेकर आयेंगे जिनका सामना वह न कर सकेंगे और हम उनको वहाँ से अपमानित करके निकाल देंगे। और वह तिरस्कृत होंगे।

(38) सुलेमान ने कहा कि ऐ दरबार वालों, तुममें से कौन उसका सिंहासन मेरे पास लाता है इससे पूर्व कि वह लोग आज्ञाकारी बनकर मेरे पास आयें। (39) जिन्नों में से एक एक देव ने कहा, मैं उसको आपके पास ले आऊँगा इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें, और मैं इस पर सामर्थ्य रखने वाला, अमानतदार (विश्वसनीय) हूँ। (40) जिसके पास किताब का एक ज्ञान था उसने कहा, मैं आपके पलक झपकने से पूर्व उसको ला दूँगा। फिर जब उसने सिंहासन को अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, यह मेरे पालनहार की कृपा है। ताकि वह मुझे जाँचे कि मैं कृतज्ञता करता हूँ अथवा कृतघ्नता। और जो व्यक्ति कृतज्ञता करे तो वह अपने ही लिए कृतज्ञता करता है। और जो व्यक्ति कृतघ्नता करे तो मेरा पालनहार निस्पृह है, दया करने वाला है।

(41) सुलेमान ने कहा कि उसके सिंहासन का रूप बदल दो, देखें वह समझ पाती है अथवा वह उन लोगों में से हो जाती है जिनको समझ नहीं। (42) अतः जब वह आयी तो कहा गया क्या तुम्हारा सिंहासन ऐसा ही है।

उसने कहा, जैसे कि यह वही है। और हमको इससे पूर्व ज्ञात हो चुका था। और हम आज्ञाकारियों में थे। (43) और उसको रोक रखा था उन चीज़ों ने जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त पूजती थी। वह अवज्ञाकारी लोगों में से थी। (44) उससे कहा गया कि महल में प्रवेश करो। तो जब उसने उसको देखा तो उसको समझा कि वह गहरा पानी है और अपनी दोनों पिण्डलियाँ खोल (अपना कपड़ा ऊंचा कर लिया) दीं। सुलेमान ने कहा, यह तो एक महल है जो काँच से बनाया गया है। उसने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मैंने अपने आप पर अत्याचार किया। और मैं सुलेमान के साथ होकर समस्त संसार के पालनहार अल्लाह पर ईमान लायी।

(45) और हमने समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा, कि अल्लाह की उपासना करो, फिर वह दो पक्ष बनकर आपस में झगड़ने लगे। (46) उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों, तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचा रहे हो। तुम अल्लाह से क्षमा क्यों नहीं चाहते कि तुम पर दया की जाये। (47) उन्होंने कहा, हम तो तुमको और तुम्हारे साथ वालों को अशुभ समझते हैं। उसने कहा कि तुम्हारा बुरा भाग्य अल्लाह के पास है बल्कि तुम तो परीक्षा में डाले जा रहे हो।

(48) और नगर में नौ व्यक्ति थे जो धरती में बिगाड़ करते थे और वह सुधार का काम न करते थे। (49) उन्होंने कहा कि तुम लोग अल्लाह की क़सम खाओ कि हम उसको और उसके लोगों को चुपके से नष्ट कर देंगे। फिर उसके अभिभावक से कह देंगे कि हम इसके घर वालों की मृत्यु के समय उपस्थित न थे। और निस्सन्देह हम सच्चे हैं। (50) और उन्होंने एक युक्ति की और हमने भी एक युक्ति की और उनको ख़बर भी न हुई। (51) अतः देखो कैसा हुआ उनकी युक्ति का परिणाम। हमने उनको और उनकी पूरी क़ौम को नष्ट कर दिया। (52) अतः ये हैं उनके घर वीरान (खंडहर) पड़े हुए उनके अत्याचार के कारण से। निस्सन्देह इसमें शिक्षा है उन लोगों के लिए जो जानें। (53) और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाये और जो डरते थे।

(54) और लूत को जब उसने अपनी क़ौम से कहा, क्या तुम अश्लीलता करते हो और तुम देखते हो। (55) क्या तुम पुरुषों के साथ वासना तृप्ति करते

हो, महिलाओं को छोड़कर, बल्कि तुम लोग नासमझ हो। (56) फिर उसकी क़ौम का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा, लूत के घरवालों को अपने नगर से निकाल दो, यह लोग बहुत पवित्र बनते हैं।

(57) फिर हमने उसको और उसके लोगों को बचा लिय अतिरिक्त उसकी पत्नी के जिसका पीछे रह जाना हमने निश्चित कर दिया था। (58) और हमने उन पर बरसाया एक भयानक बरसाना। फिर कैसी बुरी बर्षा थी उन पर जिनको सचेत किया जा चुका था। (59) कहो प्रशंसा है अल्लाह के लिए और सलाम उसके उन बन्दों पर जिनको उसने चुना। क्या अल्लाह बेहतर है या वह जिनको वह साझी करते हैं।

(60) भला वह कौन है जिसने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया। और तुम्हारे लिए आसमान से पानी उतारा। फिर हमने उससे सौन्दर्य वाले बाग़ उगाये। तुम्हारे बस में न था कि तुम उन वृक्षों को उगा सकते। क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है। बल्कि वह मार्ग से विचलित करने वाले लोग हैं। (61) भला किसने पृथ्वी को ठहरने योग्य बनाया और उसके मध्य नदियाँ जारी कीं। और इसके लिए उसने पहाड़ बनाये। और समुद्रों के बीच पर्दा डाल दिया। क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है, बल्कि उनके अधिकतर लोग नहीं जानते।

(62) कौन है जो बेबस (विकल) की पुकार को सुनता है और उसके दुख को दूर कर देता है। और तुमको पृथ्वी का उत्तराधिकारी बनाता है। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई और उपास्य है। तुम बहुत कम उपदेश पकड़ते हो। (63) कौन है जो तुमको धरती और समुद्र के अँधेरों में मार्ग दिखाता है। और कौन अपनी दयालुता के आगे हवाओं को शुभ सूचना बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है। अल्लाह बहुत श्रेष्ठ है उससे जिनको वह साझी ठहराते हैं। (64) कौन है जो सृष्टि का प्रारम्भ करता है और फिर उसकी पुनरावृत्ति करता है। और कौन तुमको आकाश और पृथ्वी से जीविका प्रदान करता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और उपास्य है। कहो कि अपना प्रमाण लाओ यदि तुम सच्चे हो।

(65) कहो कि अल्लाह के अतिरिक्त, आकाशों और धरती में कोई परोक्ष

का ज्ञान नहीं रखता। और वह नहीं जानते कि वह कब उठाये जायेंगे। (66) बल्कि परलोक के सम्बन्ध में उनका ज्ञान उलझ गया है। बल्कि वह इसकी ओर से सन्देह में हैं। बल्कि वह उससे अन्धे हैं। (67) और अवज्ञा करने वालों ने कहा, क्या जब हम मिट्टी हो जायेंगे और हमारे बाप-दादा भी, तो क्या हम पृथ्वी से निकाले जायेंगे। (68) उसका वादा हमें भी दिया गया और उससे पूर्व हमारे बाप दादा को भी। यह मात्र अगलों की कहानियाँ हैं। (69) कहो कि पृथ्वी में चलो फिरो, फिर देखो कि अपराधियों का क्या परिणाम हुआ।

(70) और उन पर दुख न करो और न हृदय तंग न हो उन युक्तियों पर जो वह कर रहे हैं। (71) और वह कहते हैं कि ये वादा कब है यदि तुम सच्चे हो। (72) कहो कि जिस चीज़ की जल्दी मचा रहे हो शायद उसमें से कुछ तुम्हारे पास आ लगा हो। (73) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार लोगों पर बड़ी कृपा वाला है। परन्तु उनमें से अधिकतर कृतज्ञता नहीं करते। (74) और निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार भली-भाँति जानता है कि जो उनके सीने छुपाये हुए हैं और जो वह प्रकट करते हैं। (75) और आकाशों और पृथ्वी की कोई छिपी हुई चीज़ नहीं है जो एक स्पष्ट किताब में दर्ज न हो।

(76) निस्सन्हे यह क़ुरआन ईस्राईल की सन्तान पर बहुत सी चीज़ों को स्पष्ट कर रहा है जिनमें वह मतभेद रखते हैं। (77) और वह मार्गदर्शन और दयालुता है ईमान वालों के लिए। (78) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार अपने आदेश के माध्यम से उनके बीच निर्णय करेगा और वह शक्तिशाली है, जानने वाला है। (79) अतः अल्लाह पर भरोसा करो। निस्सन्देह तुम स्पष्ट रूप से सच्चाई पर हो। (80) तुम मृतकों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो। जबकि वह पीठ फेर कर चले जायें। (81) और न तुम अन्धों को उनकी पथभ्रष्टता से बचाकर मार्ग दिखाने वाले हो। तो तुम मात्र उनको सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं, फिर आज्ञाकारी बन जाते हैं।

(82) और जब उन पर बात आ पड़ेगी तो हम उनके लिए धरती से एक दाब्बः (एक अमानवीय प्राणी) निकालेंगे जो उनसे बात करेगा, कि लोग हमारी आयतों पर विश्वास नहीं रखते थे। (83) और जिस दिन

हम प्रत्येक उम्मत (समुदाय) में से एक समूह उन लोगों का एकत्र करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे, फिर उनका वर्गीकरण किया जायेगा। (84) यहाँ तक कि जब वह आ जायेंगे तो अल्लाह कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को झुठलाया जबकि तुम्हारा ज्ञान उनको अपनी परिधि में न ले सका, या बोलो कि तुम क्या करते थे। (85) और उन पर बात पूरी हो जायेगी इस कारण से कि उन्होंने अत्याचार किया, अतः वह कुछ न बोल सकेंगे। (86) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हमने रात बनाई ताकि लोग उसमें विश्राम करें। और दिन कि वह उसमें देखें। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास करते हैं।

(87) और जिस दिन सूर निरीसंधा फूँका जायेगा तो घबरा उठेंगे जो आकाशों में हैं और जो धरती में हैं। परन्तु वह जिसको अल्लाह चाहे। और सब चले आयेंगे उसके आगे विनम्रता से। (88) और तुम पहाड़ों को देखकर समझते हो कि वह जमे हुए हैं, और वह चलेंगे जैसे बादल चलें। यह अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर चीज़ को दृढ़ किया है। निस्सन्देह वह जानता है जो तुम करते हो। (89) जो व्यक्ति भलाई लेकर आयेगा तो उसके लिए उससे बेहतर है, और वह उस दिन घबराहट से सुरक्षित होंगे। (90) और जो व्यक्ति बुराई लेकर आया तो ऐसे लोग मुँह के बल आग में डाल दिये जायेंगे। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे।

(91) मुझको यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर (मक्का) के पालनहार की उपासना करुँ जिसने इसको प्रतिष्ठित ठहराया और हर चीज़ उसी की है। और मुझे आदेश दिया गया है कि मैं आज्ञापालन करने वालों में से बनूँ। (92) और यह कि क़ुरआन को सुनाऊँ। फिर जो व्यक्ति मार्ग पर आयेगा तो वह अपने लिए मार्ग पर आयेगा और जो पथभ्रष्ट हुआ तो कह दो कि मैं तो मात्र डराने वालों में से हूँ। (93) और कहो कि सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, वह तुमको अपनी निशानियाँ दिखायेगा तो तुम उनको पहचान लोगे, और तुम्हारा पालनहार उससे अनभिज्ञ नहीं जो तुम करते हो।

28. सूरह अल-क़सस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ता. सीन. मीम. (2) यह स्पष्ट किताब की आयतें हैं। (3) हम मूसा और फ़िरऔन का कुछ वृत्तान्त तुमको ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाये हैं। (4) निस्सन्देह फ़िरऔन ने धरती में विद्रोह किया। और उसने उसके वासियों को वर्गो में बाँट दिया। उनमें से एक वर्ग को उसने कमज़ोर कर रखा था। वह उनके लड़को की हत्या करता था और उनकी महिलाओं को जीवित रखता था। निस्सन्देह वह बिगाड़ करने वालों में से था। (5) और हम चाहते थे कि उन लोगों पर उपकार करें जो धरती में कमज़ोर कर दिये गये थे। और उनको नायक बनायें और उनको उत्तराधिकारी बना दें। (6) और उनको धरती में सत्ता प्रदान करें। और फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाओं को उनसे वही दिखा दें जिससे वह डरते थे।

(7) और हमने मूसा की माँ को इल्हाम (प्रकाशना) किया कि उसको दूध पिलाओ। फिर जब तुमको उसके सम्बन्ध में डर हो तो उसको नदी में डाल दो। और न सन्देह करो और न दुखी हो। हम उसको तुम्हारे पास लौटा कर लायेंगे। और उसको पैग़म्बरों में से बनायेंगे। (8) फिर उसको फ़िरऔन के घर वालों ने उठा लिया, ताकि वह उनके लिए शत्रु हो और दुख का कारण बने। निस्सन्देह फ़िरऔन और हामान और उनकी सेनाएँ पापी थे। (9) और फ़िरऔन की पत्नी ने कहा कि यह आँख की ठण्डक है, मेरे लिए और तुम्हारे लिए। इसकी हत्या न करो। कदाचित यह हमको लाभ दे अथवा हम इसको बेटा बना लें। और वह समझते न थे।

(10) और मूसा की माँ का हृदय व्याकुल हो गया। निकट था कि वह उसको प्रकट कर दे यदि हम उसके दिल को न सँभालते कि वह विशवास करने वालों में से रहे। (11) और उसने उसकी बहन से कहा कि तू इसके पीछे-पीछे जा। तो वह उसको अजनबी बनकर देखती रही और उन लोगों को ख़बर नहीं हुई। (12) और हमने पहले ही मूसा से दाईयों को रोक रखा था। तो लड़की ने कहा, क्या मैं तुमको ऐसे घर वालों का पता दूँ जो तुम्हारे लिए

इसका पालन-पोषण करें और वह इसके शुभचिन्तक हों। (13) अतः हमने उसको उसकी माँ की ओर लौटा दिया ताकि उसकी आँखें ठण्डी हों। और वह दुखी न हो। और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (14) और जब मूसा अपनी परोढ़ अवस्था को पहुँचा और पूरा हो गया तो हमने उसको विवेक और ज्ञान प्रदान किया। और हम इसी प्रकार बदला देते हैं भलाई करने वालों को।

(15) और नगर में वह ऐसे समय प्रवेश हुआ जबकि नगर वाले बेपरवाह थे तो उसने वहाँ दो व्यक्तियों को लड़ते हुए पाया। एक उसकी अपनी क़ौम का था और दूसरा शत्रुओं में से था। तो जो उसकी क़ौम में से था, उसने उसके विरुद्ध सहायता माँगी जो उसके शत्रुओं में से था। तो मूसा ने उसको घूसा मारा। फिर उसका काम तमाम कर दिया। मूसा ने कहा कि यह शैतान के काम में से है। निस्सन्देह वह शत्रु है, स्पष्ट भटकाने वाला। (16) उसने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मैंने अपने आप पर अत्याचार किया है। अतः तू मुझको क्षमा प्रदान कर दे तो अल्लाह ने उसको क्षमा कर दिया। निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला दया करने वाला है। (17) उसने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, जैसा तूने मेरे ऊपर कृपा की तो मैं कभी अपराधियों का सहायक नहीं बनूँगा।

(18) फिर सुबह को वह नगर में उठा डरता हुआ, टोह लेता हुआ। तो देखा कि वही व्यक्ति जिसने कल सहायता माँगी थी वही आज फिर उसको सहायता के लिए पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, निस्सन्देह तू स्पष्ट भटका हुआ है। (19) फिर जब उसने चाहा कि वह उसको पकड़े जो उन दोनों का शत्रु था तो उसने कहा कि ऐ मूसा, क्या तुम मेरी हत्या करना चाहते हो जिस तरह तुमने कल एक व्यक्ति की हत्या की। तुम तो धरती में अत्याचारी बनकर रहना चाहते हो। तुम सुधार करने वालों में से बनना नहीं चाहते। (20) और एक व्यक्ति नगर के किनारे से दौड़ता हुआ आया। उसने कहा ऐ मूसा, दरबार वाले परामर्श कर रहे हैं कि वह तुमको मार डालें। अतः तुम निकल जाओ, मैं तुम्हारे शुभचिन्तको में से हूँ। (21) फिर वह वहाँ से निकला डरता हुआ, टोह लेता हुआ। उसने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मुझे अत्याचारी लोगों से मुक्ति प्रदान कर।

(22) और जब उसने मदियन की ओर यात्रा का निर्णय किया तो उसने

कहा, आशा है कि मेरा पालनहार मुझको सीधा मार्ग दिखा दे। (23) और जब वह मदियन के पानी पर पहुँचा तो वहाँ उसने लोगों के एक समूह को पानी पिलाते हुए पाया। और उनसे अलग एक ओर दो महिलाओं को देखा कि वह अपनी बकरियों को रोके हुए खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या मामला है। उन्होंने कहा कि हम पानी नहीं पिलाते जब तक चरवाहे अपनी बकरियाँ हटा न लें। और हमारे पिता बूढ़े हैं। (24) तो उसने उनके पशुओं को पानी पिलाया। फिर छाये की ओर हट गया। फिर कहा कि ऐ मेरे पालनहार, तू जो भली चीज़ भी मेरी ओर उतारे, मैं उसका मोहताज हूँ।

(25) फिर उन दोनों में से एक लड़की आयी लज्जापूर्वक चलती हुई। उसने कहा कि मेरे पिता आपको बुला रहे हैं कि आपने हमारे लिए जो पानी पिलाया उसका आपको बदला दें। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारा वृत्तान्त बयान किया तो उसने कहा कि भय न करो। तुमने अत्याचारियों से मुक्ति पायी। (26) उनमें से एक ने कहा कि ऐ पिताजी, इसको काम पर रख लीजिए। बेहतरीन व्यक्ति जिसे आप काम पर रखें वही है जो शक्तिशाली और अमानतदार हो। (27) उसने कहा कि मैं चाहता हूँ कि अपनी इन दो बेटियों में से एक का विवाह तुम्हारे साथ कर दूँ। इस शर्त पर कि तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो। फिर यदि तुम दस वर्ष पूरे कर दो तो वह तुम्हारी ओर से है। और मैं तुम पर कष्ट डालना नहीं चाहता। यदि अल्लाह चाहे तो तुम मुझको भला व्यक्ति पाओगे। (28) मूसा ने कहा कि यह बात मेरे और आपके बीच तय है। इन दोनों अवधियों में से जो भी मैं पूरी करूँ तो मुझ पर कोई बाध्यता न होगी। और अल्लाह हमारे कथन और समझौते पर गवाह है।

(29) फिर जब मूसा ने अवधि पूरी कर दी और उसने अपने घरवालों के साथ प्रस्थान किया तो उसने तूर की ओर से एक आग देखी। उसने अपने घरवालों से कहा कि तुम ठहरो, मैंने एक आग देखी है। संभवतः मैं वहाँ से कोई सूचना ले आऊँ अथवा आग का अंगारा ताकि तुम तापो। (30) फिर जब वह वहाँ पहुँचा तो घाटी के दाहिने किनारे से बरकत (विभूति) वाले क्षेत्र में वृक्ष से पुकारा गया कि ऐ मूसा, मैं अल्लाह हूँ, समस्त संसार का स्वामी। (31) और यह कि तुम अपनी लाठी डाल दो। तो जब उसने उसको

हिलते हुए देखा कि मानो साँप हो, तो वह पीठ फेर कर भागा और उसने मुड़ कर न देखा। ऐ मूसा, आगे आओ और न डरो, तुम पूर्णतः सुरक्षित हो। (32) अपना हाथ गिरेबान में डालो, वह चमकता हुआ निकलेगा बिना किसी रोग के, और भय के लिए अपनी बाँह अपनी ओर मिला लो। अतः यह तुम्हारे पालनहार की ओर से दो प्रमाण हैं फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास जाने के लिए। निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी लोग हैं।

(33) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनहार, मैंने उनमें से एक व्यक्ति की हत्या की है तो मैं डरता हूँ कि वह मुझे मार डालेंगे। (34) और मेरा भाई हारुन वह मुझसे अधिक व्याख्यान है भाषा में, अतः तू उसको मेरे साथ सहायक की हैसियत से भेज कि वह मेरा समर्थन करे। मैं डरता हूँ कि वह लोग मुझे झुठला देंगे। (35) फ़रमाया कि हम तुम्हारे भाई द्वारा तुम्हारे हाथ को शक्ति प्रदान कर देंगे। और हम तुम दोनों को ओजस्व प्रदान कर देंगे तो वह तुम लोगों तक न पहुँच सकेंगे। हमारी निशानियों के साथ, तुम दोनों और तुम्हारा अनुसरण करने वाले ही प्रभवकारी रहेंगे।

(36) फिर जब मूसा उन लोगों के पास हमारी स्पष्ट निशानियों के साथ पहुँचा, उन्होंने कहा कि यह मात्र गढ़ा हुआ जादू है। और यह बात हमने अपने अगले बाप-दादा में नहीं सुनी। (37) और मूसा ने कहा, मेरा पालनहार भली-भाँति जानता है उसको जो उसकी ओर से मार्गदर्शन लेकर आया है और जिसको परलोक का घर मिलेगा। निस्सन्देह अत्याचारी सफलता न पायेंगे। (38) और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ दरबार वालों, मैं तुम्हारे लिए अपने अतिरिक्त किसी उपास्य को नहीं जानता। तो ऐ हामान, मेरे लिए मिट्टी को आग दे, फिर मेरे लिए एक ऊँचा भवन बना, ताकि मैं मूसा के पालनहार को झाँक कर देखूँ, और मैं तो इसको एक झूठा व्यक्ति समझता हूँ।

(39) और उसने और उसकी सेनाओं ने धरती में अनाधिकृत रूप से घमण्ड किया और उन्होंने समझा कि उनको हमारी ओर लौट कर आना नहीं है। (40) तो हमने उसको और उसकी सेनाओं को पकड़ा। फिर उनको समुद्र में फेंक दिया, तो देखो कि अत्याचारियों का क्या परिणाम हुआ। (41) और हमने उनको सरदार बनाया कि वह आग की ओर बुलाते हैं। और क़ियामत

के दिन उनको सहायता नहीं मिलेगी। (42) और हमने इस संसार में उनके पीछे निन्दा लगा दी। और क़ियामत के दिन वह बदहाल (दुर्दशा ग्रस्त) लोगों में से होंगे। (43) और हमने अगली उम्मतों को नष्ट करने के बाद मूसा को किताब दी। लोगों के लिए विवेक का सामान, और मार्गदर्शन और दयालुता ताकि वह उपदेश पकड़ें।

(44) और तुम पहाड़ के पश्चिमी किनारे पर उपस्थित न थे जबकि हमने मूसा को आदेश दिये और न तुम दर्शकों (देखने वालों) में सम्मिलित थे। (45) लेकिन हमने बहुत सी पीढ़ियाँ पैदा कीं फिर उन पर बहुत युग बीत गये। और तुम मदियन वालों में भी न रहते थे। कि उनको हमारी आयतें सुनाते। परन्तु हम हैं पैग़म्बर भेजने वाले। (46) और तुम तूर के किनारे न थे जब हमने मूसा को पुकारा, परन्तु यह तुम्हारे पालनहार का दयालुता है, ताकि तुम एक ऐसी क़ौम को डराओ जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया ताकि वह नसीहत पकड़ें।

(47) और (हम सन्देष्टा न भेजते) यदि ऐसा न होता कि उन पर उनके कर्मों के कारण कोई विपत्ति आयी तो वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, तूने हमारी ओर कोई सन्देष्टा क्यों नहीं भेजा कि हम तेरी आयतों का अनुसरण करते और हम ईमान वालों में से होते। (48) फिर जब उनके पास हमारी ओर से सत्य आया तो उन्होंने कहा कि क्यों न इसको वैसा मिला जैसा कि मूसा को मिला था, उन्होंने कहा कि दोनों जादू हैं एक दूसरे के सहायक, और उन्होंने कहा कि हम दोनों को झुठलाते हैं।

(49) कहो कि तुम अल्लाह के पास से कोई किताब ले आओ जो मार्गदर्शन करने में इन दोनों से उत्तम हो, मैं उसका अनुसरण करूँगा यदि तुम सच्चे हो। (50) अतः यदि ये लोग तुम्हारा कहा न कर सकें तो समझ लो कि वह मात्र अपनी इच्छा का अनुसरण कर रहे हैं। और उससे अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह के मार्गदर्शन के बिना अपनी इच्छा का अनुसरण करे। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्ग नहीं दिखाता। (51) और हमने उन लोगों के लिए एक के बाद एक अपनी वाणी भेजी ताकि वह उपदेश पकड़ें। (52) जिन लोगों को हमने इससे पूर्व किताब दी है वह इस (क़ुरआन) पर ईमान

लाते हैं। (53) और जब वह उनको सुनाया जाता है तो वह कहते हैं कि हम इस पर ईमान लाये। निस्सन्देह यह सत्य है हमारे पालनहार की ओर से, हम तो पहले ही से इसको मानने वाले हैं। (54) ये लोग हैं कि इनको इनका बदला दुगना दिया जायेगा, इस पर कि इन्होंने धैर्य रखा। और वह बुराई को भलाई से रोकते हैं और हमने जो कुछ उनको प्रदान किया है उसमें से वह ख़र्च करते हैं। (55) और जब वह व्यर्थ बात सुनते हैं तो वह उससे बचते हैं और कहते हैं कि हमारे लिए हमारे कर्म हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे कर्म। तुमको सलाम, हम अज्ञानी लोगों से उलझना नहीं चाहते। (56) तुम जिसको चाहो मार्गदर्शन नहीं दे सकते। बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है मार्गदर्शन देता है। और वही भली प्रकार जानता है जो सन्मार्ग स्वीकार करने वाले हैं।

(57) और वह कहते हैं कि यदि हम तुम्हारे साथ होकर इस उपदेश पर चलने लगे तो हम अपने भू-भाग से उचक लिये जायेंगे। क्या हमने इनको शान्ति वाले हरम (मक्का) में स्थान नहीं दिया। जहाँ प्रत्येक प्रकार के फल खिंचे चले आते हैं, हमारी ओर से जीविका के रूप में, परन्तु उनमे से अधिकतर लोग नहीं जानते। (58) और हमने कितने ही नगर नष्ट कर दिये जो अपने आर्थिक संसाधनों पर गर्व करते थे। अतः ये हैं उनके नगर जो उनके बाद आबाद नहीं हुए परन्तु बहुत कम, और हम ही उनके उत्तराधिकारी हुए। (59) और तेरा पालनहार नगरों को नष्ट करने वाला न था जब तक उनके बड़े नगर में किसी पैग़म्बर को न भेज दे जो उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाये और हम कदापि नगरों को नष्ट करने वाले नहीं परन्तु जबकि वहाँ के लोग अत्याचारी हों।

(60) और जो चीज़ भी तुमको दी गई है तो वह मात्र सांसारिक जीवन का साधन और उसका सौन्दर्य है। और जो कुछ अल्लाह के पास है, वह उत्तम है और शेष रहने वाला है। फिर क्या तुम समझते नहीं। (61) भला वह व्यक्ति जिससे हमने अच्छा वादा किया है फिर वह उसको पाने वाला है, क्या उस व्यक्ति जैसा हो सकता है जिसको हमने केवल सांसारिक जीवन का लाभ प्रदान किया है, फिर क़ियामत के दिन वह प्रस्तुत किये जाने वालों में से है।

(62) और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे वह साझीदार जिनका तुम दावा करते थे। (63) जिन पर बात सिद्ध हो चुकी

होगी वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, यह लोग हैं जिन्होंने हमको भटकाया। हमने इनको उसी प्रकार भटकाया जिस प्रकार हम स्वंय भटके थे। हम इनसे बरी (विरक्त) होने की घोषणा करते हैं। ये लोग हमारी उपासना नहीं करते थे।

(64) और कहा जायेगा कि अपने साझीदारों को बुलाओ तो वह उनको पुकारेंगे तो वह उनको उत्तर न देंगे और वह यातना को देखेगे। काश, वह सन्मार्ग अपनाने वाले होते। (65) और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा और फ़रमायेगा कि तुमने सन्देश पहुँचाने वालों को क्या उत्तर दिया था। (66) फिर उस दिन उनकी सभी बातें लुप्त हो जायेंगी, तो वह आपस में भी न पूछ सकेंगे। (67) हाँ जिसने तौबा की और ईमान लाया और अच्छे कर्म किये तो आशा है कि वह सफलता पाने वालों में से होगा।

(68) और तेरा पालनहार पैदा करता है जो चाहे और वह पसन्द करता है जिसको चाहे। उनके हाथ में नहीं है पसन्द करना। अल्लाह पवित्र और श्रेष्ठ है उससे जिसको वह साझी ठहराते हैं। (69) और तेरा पालनहार जानता है जो कुछ उनके सीने छिपाते हैं और जो कुछ वह प्रकट करते हैं। (70) और वही अल्लाह है, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसी के लिए प्रशंसा है संसार में और परलोक में। और निर्णय उसी का है और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।

(71) कहो कि बताओ, यदि अल्लाह क़ियामत के दिन तक तुम पर सदैव के लिए रात कर दे तो अल्लाह के अतिरिक्त कौन उपास्य है जो तुम्हारे लिए प्रकाश ले आये। तो क्या तुम लोग सुनते नहीं। (72) कहो कि बताओ यदि अल्लाह क़ियामत तक तुम पर सदैव के लिए दिन कर दे तो अल्लाह के अतिरिक्त कौन उपास्य है जो तुम्हारे लिए रात को ले आये जिसमें तुम विश्राम प्राप्त करते हो। क्या तुम लोग देखते नहीं। (73) और उसने अपनी दयालुता से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया ताकि तुम उसमें विश्राम प्राप्त करो और ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो और ताकि तुम कृतज्ञता प्रकट करो।

(74) और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा फिर कहेगा कि कहाँ हैं मेरे साझीदार जिन पर तुम गर्व करते थे। (75) और हम प्रत्येक उम्मत (सम्प्रदाय)

में से एक गवाह (साक्षय) निकालकर लायेंगे। फिर लोगों से कहेंगे कि अपना प्रमाण लाओ, तब वह जान लेंगे कि सत्य अल्लाह की ओर है। और वह बातें उनसे लुप्त हो जायेंगी जो वह गढ़ते थे।

(76) क़ारून, मूसा की क़ौम में से था। फिर वह उनके विरुद्ध विद्रोही हो गया। और हमने उसको इतने ख़जाने दिये थे कि उनकी कुँजियाँ उठाने से अनेक बलवान पुरुष थक जाते थे। जब उसकी क़ौम ने उससे कहा कि अभिमान न करो, अल्लाह अभिमान करने वालों को पसन्द नहीं करता। (77) और जो कुछ अल्लाह ने तुमको दिया है, उसमें परलोक के इच्छुक बनो। और संसार में से अपने हिस्से को न भूलो। और लोगों के साथ भलाई करो जिस प्रकार अल्लाह ने तुम्हारे साथ भलाई की है। और पृथ्वी पर बिगाड़ के इच्छुक न बनो अल्लाह बिगाड़ करने वालों को पसन्द नहीं करता।

(78) उसने कहा, यह सम्पत्ति मुझको एक ज्ञान के आधार पर मिली है जो मेरे पास है। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितने समूहों को नष्ट कर चुका है जो उससे अधिक शक्ति और संख्या रखते थे। और अपराधियों से उनके पाप पूछे नहीं जाते।

(79) अतः वह अपनी क़ौम के समक्ष अपने पूरे साज-सज्जा के साथ निकला। जो लोग सांसारिक जीवन के इच्छुक थे उन्होंने कहा, काश हमको भी वही मिलता जो क़ारून को दिया गया है, निस्सन्देह वह बड़ा भाग्यवान है। (80) और जिन लोगों को ज्ञान मिला था उन्होंने कहा, तुम्हारा बुरा हो अल्लाह का बदला बेहतर है उस व्यक्ति के लिए जो ईमान लाये और अच्छे कर्म करे। और यह उन्हीं को मिलता है जो धैर्य रखने वाले हैं।

(81) फिर हमने उसको और उसके घर को धरती में धँसा दिया। फिर उसके लिए कोई समूह न उठा जो अल्लाह के मुक़ाबले में उसकी सहायता करता। और न वह स्वंय ही अपने आप को बचा सका। (82) और जो लोग कल उसके जैसा होने की कामना कर रहे थे, वह कहने लगे कि अफ़सोस, निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दो में से जिसके लिए चाहता है जीविका फैलाकर देता है और जिसके लिए चाहता है कमी कर देता है। यदि अल्लाह ने हम पर

उपकार न किया होता तो हमको भी धरती में धँसा देता। अफ़सोस, निस्सन्देह इन्कार करने वाले सफलता नहीं पायेंगे।

(83) यह परलोक का घर हम उन लोगों को देंगे जो धरती में न बड़ा बनना चाहते हैं और न बिगाड़ करना। और अन्तिम परिणाम डरने वालों के लिए है। (84) जो व्यक्ति भलाई लेकर आयेगा, उसके लिए उससे बेहतर है, और जो व्यक्ति बुराई लेकर आयेगा तो जो लोग बुराई करते हैं, उनको वही मिलेगा जो उन्होंने किया।

(85) निस्सन्देह जिसने तुम पर क़ुरआन का दायित्व डाला है, वह तुमको एक अच्छे परिणाम तक पहुँचा कर रहेगा। कहो कि मेरा पालनहार भली-भाँति जानता है कि कौन मार्गदर्शन लेकर आया है और कौन खुली हुई पथभ्रष्टता में है। (86) और तुमको यह आशा न थी कि तुम पर किताब उतारी जायेगी, परन्तु तुम्हारे पालनहार की कृपा से। अतः तुम अवज्ञाकारियों के सहायक न बनो। (87) और वह तुमको अल्लाह की आयतों से रोक न दें जबकि वह तुम्हारी ओर अवतरित की जा चुकी हैं। और तुम अपने पालनहार की ओर बुलाओ और शिर्क करने वालों में से न बनो। (88) और अल्लाह के साथ किसी दूसरे उपास्य को न पुकारो। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। हर चीज़ नष्ट होने वाली है सिवाय उसकी हस्ती के। निर्णय उसी के लिए है और तुम लोग उसी की ओर लौटाये जाओगे।

29. सूरह अल-अन्कबूत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. (2) क्या लोग यह समझते हैं कि वह मात्र यह कहने पर छोड़ दिये जायेंगे कि हम ईमान लाये और उनको जाँचा न जायेगा। (3) और हमने उन लोगों को जाँचा है जो इनसे पहले थे, अतः अल्लाह उन लोगों को जानकर रहेगा जो सच्चे हैं और वह झूठों को भी अवश्य जान लेगा।

(4) क्या जो लोग दुष्कर्म कर रहे हैं, वह समझते हैं कि वह हमसे बच जायेंगे। बहुत बुरा निर्णय है जो वह कर रहे हैं। (5) जो व्यक्ति अल्लाह से

मिलने की आशा रखता है तो अल्लाह का वादा अवश्य आने वाला है। और वह सुनने वाला है, जानने वाला है। (6) और जो व्यक्ति परिश्रम करे तो वह अपने ही लिए परिश्रम करता है। निस्सन्देह अल्लाह निस्प्रह है संसार वालों से। (7) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किये तो हम उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर देंगे और उनको उनके कर्म का उचित बदला देंगे।

(8) और हमने मनुष्य को सचेत किया की कि वह अपने माता-पिता के साथ अच्छा व्यवहार करे। और यदि वह तुझपर दबाव डालें कि तू ऐसी चीज़ को मेरा साझी ठहराये जिसका तुझको कोई ज्ञान नहीं तो उनका कहा न मान। तुम सबको मेरे पास लौट कर आना है, फिर मैं तुमको बता दूँगा जो कुछ तुम करते थे। (9) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये तो हम उनको नेक बन्दों में सम्मिलित करेंगे।

(10) और लोगों में कोई ऐसा है जो कहता है कि हम अल्लाह पर ईमान लाये। फिर जब अल्लाह के मार्ग में उसको सताया जाता है तो वह लोगों के सताने को अल्लाह की यातना जैसा समझ लेता है। और यदि तुम्हारे पालनहार की ओर से कोई सहायता आ जाये तो वह कहेंगे कि हम तो तुम्हारे साथ थे। क्या अल्लाह उससे भली प्रकार भिज्ञ नहीं जो लोगों के दिलों में है। (11) और अल्लाह अवश्य मालूम करेगा उन लोगों को जो ईमान लाये और वह अवश्य मालूम करेगा कपटाचारियों को।

(12) और अवज्ञाकारी लोग ईमान वालों से कहते हैं कि तुम हमारे मार्ग पर चलो और हम तुम्हारे पाप को उठा लेंगे। और वह उनके पाप में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं। निस्सन्देह वह झूठे हैं। (13) और वह अपने बोझ उठायेंगे, और अपने बोझ के साथ कुछ और बोझ भी। और ये लोग जो झूठी बातें बनाते हैं। क़ियामत के दिन उनके सम्बन्ध में उनसे पूछ होगी।

(14) और हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर भेजा तो वह उनके अन्दर पचास वर्ष कम एक हज़ार वर्ष रहा। फिर उनको तूफ़ान ने पकड़ लिया और वह अत्याचारी थे। (15) फिर हमने नूह को और नाव वालों को बचा लिया। और हमने इस घटना को संसार वालों के लिए एक निशानी बना दिया।

(16) और इब्राहीम को जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि अल्लाह

की उपासना करो और उससे डरो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो। (17) तुम लोग अल्लाह को छोड़कर मात्र मूर्तियों को पूजते हो और तुम झूठी बातें गढ़ते हो। अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिनकी उपासना करते हो वह तुमको जीविका देने का अधिकार नहीं रखते। अतः तुम अल्लाह के पास रोज़ी तलाश करो। और उसकी उपासना करो और उसका आभार प्रकट करो। उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे। (18) और यदि तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहले बहुत सी क़ौमें झुठला चुकी हैं। और सन्देष्टा पर स्पष्ट पहुँचा देने के अतिरिक्त कोई दायित्व नहीं।

(19) क्या लोंगो ने नहीं देखा कि अल्लाह किस प्रकार सृष्टि को प्रारंभ करता है, फिर वह उसको दुहरायेगा। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है। (20) कहो कि धरती पर चलो फिरो, फिर देखो कि अल्लाह ने किस प्रकार सृष्टि को प्रारम्भ किया, फिर वह उसको पुनः उठायेगा। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है। (21) वह जिसको चाहेगा यातना देगा और जिस पर चाहेगा दया करेगा। और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे। (22) और तुम न धरती में विवश करने वाले हो और न आकाश में, और तुम्हारे लिए अल्लाह के अतिरिक्त न कोई काम बनाने वाला है और न कोई सहायक। (23) और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का और उससे मिलने का इन्कार किया तो वही मेरी दयालुता से वंचित हुए और उनके लिए कष्टप्रद यातना है।

(24) फिर उसकी क़ौम का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उन्होंने कहा कि इसकी हत्या कर दो या इसको जला दो, तो अल्लाह ने उसको आग से बचा लिया। निस्सन्देह इसके अन्दर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लायें। (25) और उसने कहा कि तुमने अल्लाह के अतिरिक्त जो मूर्तिया बनायी हैं, वह मात्र तुम्हारे आपसी सांसारिक सम्बन्धों के कारण से है, फिर क़ियामत के दिन तुममें से हर एक-दूसरे का इन्कार करेगा और एक-दूसरे पर फ़टकार करेगा। और आग तुम्हारा ठिकाना होगी और कोई तुम्हारा समर्थक न होगा। (26) फिर लूत ने उसको माना और कहा कि मैं अपने पालनहार की ओर लौटता हूँ। निस्सन्देह वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है। (27) और हमने प्रदान किये उसको इस्हाक़ और याक़ूब और उसकी संतति में पैग़म्बरी

और किताब रख दी। और हमने संसार में उसको बदला दिया और परलोक में निश्चित रूप से वह अच्छे लोगों में से होगा।

(28) और लूत को जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा कि तुम ऐसी अश्लीलता का काम करते हो कि तुमसे पहले संसार वालों में से किसी ने नहीं किया। (29) क्या तुम पुरुषों के पास जाते हो और पथघ्न करते हो और अपनी बैठकों में बुरे कर्म करते हो। अतः उसकी क़ौम का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि उसने कहा कि यदि तुम सच्चे हो तो हमारे ऊपर अल्लाह का प्रकोप लाओ। (30) लूत ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, बिगाड़ करने वाले लोगों के मुक़ाबले में मेरी सहायता कर।

(31) और जब हमारे भेजे हुए इब्राहीम के पास शुभ सूचना लेकर पहुँचे, उन्होंने कहा कि हम उस नगर के लोगों का नाश करने वाले हैं निस्सन्देह उसके लोग अत्यन्त अत्याचारी हैं। (32) इब्राहीम ने कहा कि उसमें तो लूत भी हैं। उन्होंने कहा कि हम भली-भाँति जानते हैं कि वहाँ कौन है। हम उसको और उसके घरवालों को बचा लेंगे परन्तु उसकी बीबी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। (33) फिर जब हमारे भेजे हुए लूत के पास आये तो वह उनसे परेशान हुआ और हृदय संकुचित हुआ। और उन्होंने कहा कि तुम न डरो और न दुख करो। हम तुमको और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे, परन्तु तुम्हारी पत्नी कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी। (34) हम इस नगर के वासियों पर आकाश से एक आपदा उनके बुरे कर्मों के दण्ड के रूप में उतारने वाले हैं। (35) और हमने इस नगर के कुछ स्पष्ट निशान बाक़ी रहने दिये हैं उन लोगों की शिक्षा के लिए जो बुद्धि रखते हैं।

(36) और मदियन की ओर उनके भाई शोऐब को। उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, अल्लाह की उपासना करो। और परलोक के दिन की आशा रखो और धरती में फसाद फैलाने वाले न बनो। (37) तो उन्होंने उसको झुठला दिया। अतः भूकम्प ने उनको आ पकड़ा। फिर वह अपने घरों में मुँह के बल पड़े रह गये।

(38) और आद और समूद को, और तुम पर रहस्य प्रकट हो चुका है उनके घरों से। और उनके कर्मों को शैतान ने उनके लिए शोभायमान बना दिया। फिर उनको मार्ग से रोक दिया यद्यपि वह होशियार लोग थे।

(39) और क़ारून को और फ़िरऔन को और हामान को और मूसा उनके पास खुली निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने धरती पर घमण्ड किया और वह हमसे भाग जाने वाले न थे। (40) अतः हमने प्रत्येक को उसके पाप में पकड़ा। फिर उनमें से कुछ पर हमने पथराव करने वाली हवा भेजी। और उनमें से कुछ को कड़क ने आ पकड़ा। और उनमें से कुछ को हमने धरती में धँसा दिया। और उनमें से कुछ को हमने डुबा दिया। और अल्लाह उन पर अत्याचार करने वाला न था परन्तु वह स्वंय अपने आप पर अत्याचार कर रहे थे।

(41) जिन लोगों ने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे साधन बनाये हैं, उनका उदाहरण मकड़ी जैसा है। उसने एक घर बनाया। और निस्सन्देह सभी घरों से अधिक कमज़ोर घर मकड़ी का घर है। काश कि लोग जानते। (42) निस्सन्देह अल्लाह जानता है उन चीज़ों को जिनको वह उसके अतिरिक्त पुकारते हैं। और वह शक्तिशाली है, तत्वदर्शी है। (43) और ये उदहारण हैं जिनको हम लोगों के लिए बयान करते रहे हैं और उनको वही लोग समझते हैं जो ज्ञान वाले हैं। (44) अल्लाह ने आकाशों और धरती को सत्य पर पैदा किया है। निस्सन्देह इसमें निशानी है ईमान वालों के लिए।

(45) तुम इस किताब को पढ़ो जो तुम पर उतारी गई है। और नमाज़ स्थापित करो। निस्सन्देह नमाज़ निर्ल्लजता से और बुरे कर्मों से रोकती है। और अल्लाह की याद बहुत बड़ी चीज़ है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(46) और तुम किताब वालों (यहूदियों व ईसाईयों) से तर्क-वितर्क न करो परन्तु उस ढंग से जो उचित है, परन्तु जो उनमें अनाचारी हैं। और कहो कि हम ईमान लाये उस चीज़ पर जो हमारी ओर भेजी गयी है। और उस पर जो तुम्हारी ओर भेजी गयी है। हमारा उपास्य और तुम्हारा उपास्य एक है और हम उसी का आज्ञापालन करने वाले हैं।

(47) और इसी प्रकार हमने तुम्हारे ऊपर किताब उतारी है। तो जिन लोगों को हमने किताब दी है वह इस पर ईमान लाते हैं और उन लोगों में से भी कुछ ईमान लाते हैं। और हमारी आयतों का इन्कार मात्र अवज्ञाकारी

ही करते हैं। (48) और तुम इससे पहले कोई किताब नहीं पढ़ते थे और न उसको अपने हाथ से लिखते थे। ऐसी स्थिति में असत्य को पूजने वाले लोग सन्देह में पड़ते। (49) बल्कि ये स्पष्ट आयतें हैं उन लोगों के सीनों में जिनको ज्ञान प्रदान किया गया है। और हमारी आयतों को नहीं झुठलाते परन्तु वह जो अत्याचारी हैं।

(50) और वह कहते हैं कि इस पर इसके पालनहार की ओर से निशानियाँ क्यों नहीं उतारी गयीं। कहो कि निशानियाँ तो अल्लाह के पास हैं और मैं मात्र खुला हुआ डराने वाला हूँ। (51) क्या इनके लिए यह पर्याप्त नहीं है कि हमने तुम पर किताब उतारी जो उनको पढ़कर सुनाई जाती है। निस्सन्देह इसमें दयालुता और अनुस्मरण है उन लोगों के लिए जो ईमान लाये हैं। (52) कहो कि अल्लाह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है। वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है और जो लोग असत्य पर ईमान लाये और जिन्होंने अल्लाह का इन्कार किया, वही घाटे में रहने वाले हैं।

(53) और यह लोग तुमसे यातना शीघ्र माँग रहे हैं। और यदि एक समय निर्धारित न होता तो इन पर प्रकोप आ जाता। और निश्चित रूप से वह उन पर अचानक आयेगा और उनको सूचना भी न होगी। (54) वह तुमसे प्रकोप शीघ्र माँग रहे हैं। और नरक अवज्ञाकारियों को घेरे हुए है। (55) जिस दिन प्रकोप उनको ऊपर से ढाँक लेगा और पैरों के नीचे से भी, और कहेगा कि चखो इसको जो तुम करते थे।

(56) ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाये हो, निस्सन्देह मेरी पृथ्वी व्यापक है तो तुम मेरी ही उपासना करो। (57) प्रत्येक जीव को मृत्यु का स्वाद चखना है। फिर तुम हमारी ओर लौटाये जाओगे। (58) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किये, उनको हम स्वर्ग के ऊँचे महलों में स्थान देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वह उनमें सदैव रहेंगे। (59) क्या ही अच्छा बदला है कर्म करने वालों का जिन्होंने धैर्य रखा और जो अपने पालनहार पर भरोसा रखते हैं। (60) और कितने जीवधारी हैं जो अपनी जीविका उठाये नहीं फिरते। अल्लाह उनको जीविका देता है और तुमको भी। और वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(61) और यदि तुम इनसे पूछो कि किसने पैदा किया आकाशों और धरती को और वशीभूत किया सूरज को और चाँद को, तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर वह कहाँ से फेर दिये जाते हैं। (62) अल्लाह ही अपने बन्दों में से जिसकी चाहता है जीविका बढ़ा कर देता है और जिसकी चाहता है कम कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है। (63) और यदि तुम इनसे पूछो कि किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उससे भूमि को जीवित किया उसके मर जाने के बाद, तो अवश्य वह कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अधिकतर लोग नहीं समझते।

(64) और यह कि सांसारिक जीवन कुछ नहीं है, परन्तु एक खेल और मन का बहलावा। और परलोक का घर ही वास्तविक जीवन का स्थान है, काश कि वह जानते। (65) अतः जब वह नाव में सवार होते हैं तो अल्लाह को पुकारते हैं, उसी के लिए दीन (धर्म) को विशुद्ध करते हुए, फिर जब वह उनको बचाकर सूखी धरती की ओर ले जाता है तो वह तुरन्त साझी ठहराने लगते हैं। (66) ताकि हमने जो उपकार उन पर किया है उसकी कृतघ्नता करें और कुछ दिन लाभ उठायें, तो वह शीघ्र ही जान लेंगे।

(67) क्या वह देखते नहीं कि हमने एक शान्तिपूर्ण हरम बनाया, और उनके आस-पास लोग उचक लिये जाते हैं। तो क्या वह असत्य को मानते हैं और अल्लाह की कृपा की नाशुक्री (कृतघ्नता) करते हैं। (68) और उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे अथवा सत्य को झुठलाये जबकि वह उसके पास आ चुका। क्या अवज्ञाकारियों का ठिकाना नरक में न होगा। (69) और जो लोग हमारे लिए सश्रम कष्ट उठायेंगे, उनको हम अपने मार्ग दिखायेंगे और निश्चित रूप से अल्लाह भलाई करने वालों के साथ है।

30. सूरह अर-रूम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. (2) रुम के लोग निकटवर्ती क्षेत्र में पराजित हो गये। (3) और वह अपनी पराजय के उपरान्त शीघ्र ही विजयी होंगे। (4) कुछ वर्षों में। अल्लाह के हाथ में सभी कार्य हैं, पहले भी और पीछे भी। और उस दिन ईमानवाले प्रसन्न होंगे। (5) अल्लाह की सहायता से। वह जिसकी चाहता है सहायता करता है। और वह शक्तिशाली है, दयालुता वाला है। (6) अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता। परन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते। (7) वह सांसारिक जीवन के मात्र प्रत्यक्ष को जानते हैं, और वह परलोक से अनभिज्ञ हैं।

(8) क्या उन्होंने अपने मन में विचार नहीं किया, अल्लाह ने आसमानों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है सत्य पर पैदा किया है। और मात्र एक निर्धारित अवधि के लिए। और लोगों में बहुत से हैं जो अपने पालनहार से भेंट का इन्कार करने वाले हैं। (9) क्या वह धरती पर चले फिरे नहीं कि वह देखते कि कैसा अन्त हुआ उन लोगों का जो इनसे पूर्व थे। वह इनसे अधिक शक्तिशाली थे। और उन्होंने धरती को जोता और उसको इससे अधिक आबाद किया जितना इन्होंने आबाद किया है। और इनके पास इनके सन्देष्टा स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये। अतः अल्लाह उन पर अत्याचार करने वाला न था। परन्तु वह स्वंय ही अपने आप पर अत्याचार कर रहे थे। (10) फिर जिन लोगों ने बुरा कर्म किया था उनका अन्त बुरा हुआ, इस कारण से कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया। और वह उनका उपहास करते थे।

(11) अल्लाह सृष्टि को पहली बार पैदा करता है, फिर वही पुनः इसको पैदा करेगा। फिर तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे। (12) और जिस दिन कियामत होगी, उस दिन अपराधी लोग आश्चर्यचकित रह जायेंगे। (13) और उनके साझीदारों में से उनका कोई सिफ़ारिशी न होगा और वह अपने साझीदारों के इन्कार करने वाले हो जायेंगें। (14) और जिस दिन कियामत होगी, उस दिन सभी लोग अलग-अलग हो जायेंगे। (15) अतः जो

ईमान लाये और जिन्होंने भले कर्म किये, वह एक बाग़ में प्रसन्नचित होंगे। (16) और जिन लोगों ने झुठलाया हमारी आयतों को और झुठलाया परलोक के घटित होने को तो वह यातना में पड़े हुए होंगे। (17) अतः तुम पवित्र अल्लाह का स्मरण करो जब तुम सायं करते हो और जब तुम सुबह करते हो। (18) और आकाशों और धरती में उसी के लिए प्रशंसा है और तीसरे पहर और जब तुम ज़ुहर (दोपहर) करते हो।

(19) वह जीवित को मृत से निकालता है और मृत को जीवित से निकालता है। और वह धरती को उसके मृत हो जाने के उपरांत जीवित करता है और इसी प्रकार तुम लोग निकाले जाओगे। (20) और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया है, फिर यकाएकी तुम मनुष्य बनकर फैल जाते हो। (21) और उसकी निशानियों में से यह है कि उसने तुम्हारे ही सहजाति से तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किये, ताकि तुम उनसे सन्तुष्टि प्राप्त करो। और उसने तुम्हारे बीच प्रेम और दया रख दी। निस्सन्देह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं।

(22) और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी बोलियों और तुम्हारे रंगों की भिन्नता है। निस्सन्देह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं ज्ञान वालों के लिए। (23) और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन में सोना और तुम्हारा उसकी कृपा (जीविका) को तलाश करना है। निस्सन्देह इसमें बहुत सी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं। (24) और उसकी निशानियों में से यह है कि वह तुमको बिजली दिखाता है भय के साथ और आशा के साथ। और वह आसमान से पानी उतारता है। फिर उससे धरती को जीवित करता है उसके मृत हो जाने के पश्चात। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं।

(25) और उसकी निशानियों में से यह है कि आकाश और धरती उसके आदेश से क़ायम हैं। फिर जब वह तुमको एक बार पुकारेगा तो तुम उसी समय धरती से निकल पड़ोगे। (26) और आकाशों और धरती में जो भी है उसी का है। सब उसी के आज्ञाकारी हैं। (27) और वही है जो पहली बार पैदा करता है फिर वही पुनः पैदा करेगा। और यह उसके लिए

अधिक आसान है। और आकाशों और धरती में उसी के लिए सबसे श्रेष्ठ गुण है। और वह शक्तिशाली है, विवेक वाला है।

(28) वह तुम्हारे लिए स्वंय तुम्हारे व्यक्तित्व से एक मिसाल (उदाहरण) बयान करता है। क्या तुम्हारे दासों में कोई तुम्हारी उस पूँजी में साझीदार है जो हमने तुमको प्रदान किया है कि तुम और वह उसमें समान हों। और जिस प्रकार तुम अपनों का ध्यान रखते हो, उसी प्रकार उनका भी ध्यान रखते हो। इस प्रकार हम आयतें स्पष्ट करके बयान करते हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि से काम लेते हैं। (29) बल्कि अपनी जानों पर अत्याचार करने वालों ने बिना प्रमाण के अपने विचारों का अनुसरण कर रखा है तो उसको कौन मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है जिसको अल्लाह ने भटका दिया हो। और कोई उनका सहायक नहीं।

(30) अतः तुम एकाग्रचित्र होकर अपना चेहरा इस धर्म की ओर रखो, अल्लाह की प्रकृति जिस पर उसने लोगों को बनाया है। उसके बनाये हुए को बदलना नहीं। यही सीधा धर्म है। परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (31) उसी की ओर एकाग्र होकर और उसी से डरो और नमाज़ स्थापित करो और शिर्क करने वालों में से न बनो। (32) जिन्होंने अपने धर्म को टुकड़े-टुकड़े कर लिया। और बहुत से समूह हो गये। प्रत्येक समूह अपने तरीक़े पर प्रसन्न हैं जो उसके पास है।

(33) और जब लोगों को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने पालनहार को पुकारते हैं उसी की ओर एकाग्र मन से। फिर जब वह अपनी ओर से उनको दया का स्वाद चखाता है तो उनमें से एक समूह अपने पालनहार का साझीदार ठहराने लगता है। (34) कि जो कुछ हमने उनको प्रदान किया है, उसके नकारने वाले बन जायें। तो कुछ दिन लाभ उठा लो, शीघ्र ही तुमको ज्ञात हो जायेगा। (35) क्या हमने उन पर कोई प्रमाण उतारा है कि वह उनको अल्लाह के साथ साझी ठहराने को कह रहा है।

(36) और जब हम लोगों को दयालुता का स्वाद चखाते हैं तो वह उससे प्रसन्न हो जाते हैं। और यदि उनके कर्मों के कारण उनको कोई कष्ट पहुँचता है तो एकाएकी वह निराश हो जाते हैं। (37) क्या वह देखते नहीं कि अल्लाह

जिसको चाहे अधिक जीविका देता है और जिसको चाहे कम। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं। (38) अतः रिश्तेदार को उसका अधिकार दो और निर्धन को और यात्री को। यह उचित है उन लोगों के लिए जो अल्लाह की प्रसन्नता चाहते हैं और वही लोग सफलता पाने वाले हैं। (39) और जो ब्याज तुम देते हो ताकि लोगों की पूँजी में सम्मिलित होकर वह बढ़ जाये, तो अल्लाह के पास वह नहीं बढ़ता। और जो ज़कात (अनिवार्य दान) तुम दोगे, अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए तो यही लोग हैं जो अल्लाह के पास अपनी पूँजी को बढ़ाने वाले हैं।

(40) अल्लाह ही है जिसने तुमको पैदा किया है। फिर उसने तुमको जीविका प्रदान की, फिर वह तुमको मृत्यु देता है। फिर वह तुमको जीवित करेगा। क्या तुम्हारे साझीदारों में से कोई ऐसा है जो इनमें से कोई काम करता हो। वह पवित्र है और श्रेष्ठ है उस शिर्क से जो यह लोग करते हैं। (41) थल और जल में बिगाड़ फैल गया लोगों के अपने हाथों की कमाई से, ताकि अल्लाह स्वाद चखाये उनको उनके कुछ कर्मों का, संभवतः वह रुक जायें। (42) कहो कि धरती में चलो फिरो, फिर देखो कि उन लोगों का अन्त क्या हुआ जो इससे पहले गुज़रे हैं। उनमें से अधिकतर लोग शिर्क (साझी ठहराना) करने वाले थे।

(43) अतः अपना चेहरा दीन-ए क़य्यूम (सत्य धर्म) की ओर सीधा रखो, इससे पहले कि अल्लाह की ओर से ऐसा दिन आ जाये जिसके लिए वापसी नहीं है। उस दिन लोग अलग-अलग हो जायेंगे। (44) जिसने अवज्ञा की तो उसकी अवज्ञा उसी पर पड़ेगी और जिसने भला कर्म किया तो वह लोग अपने ही लिए साधन एकत्र कर रहे हैं। (45) ताकि अल्लाह ईमान लाने वालों को और अच्छा कर्म करने वालों को अपनी कृपा से बदला दे। निस्सन्देह अल्लाह अवज्ञाकारियों को पसन्द नहीं करता।

(46) और उसकी निशानियों में से यह है कि वह हवायें भेजता है शुभ सूचना देने के लिए, और ताकि वह तुमको अपनी दयालुता का रसास्वादन कराये और ताकि नौकायें उसके आदेश से चलें, और ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो, और ताकि तुम उसका आभार प्रकट करो। (47) और हमने तुमसे पहले सन्देष्टाओं को भेजा उसकी क़ौम की ओर। अतः वह उनके पास स्पष्ट

निशानियाँ लेकर आये तो हमने उन लोगों से प्रतिशोध लिया। जिन्होंने अपराध किया था। और हम पर यह अधिकार था कि हम मोमिनों (आस्थावानों) की सहायता करें।

(48) अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। अतः वह बादल को उठाती हैं। फिर अल्लाह उनको अकाश में फैला देता है। जिस प्रकार चाहता है। और वह उनको परत-परत करता है। फिर तुम मेंह को देखते हो कि उसके अन्दर से निकलता है। फिर जब वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उसे पहुँचा देता है तो अचानक वह प्रसन्न हो जाते हैं। (49) अगर्चे कि वह उसके अवतरित किये जाने से पूर्व निराश थे। (50) अतः अल्लाह की कृपा के संकेतों को देखो वह किस प्रकार धरती को जीवित कर देता है उसके मृत हो जाने के उपरान्त। निस्सन्देह वही मृतकों को जीवित करने वाला है। और वह हर चीज पर सामर्थ्य रखता है। (51) और यदि हम एक हवा भेज दें, फिर वह खेती को पीली हुई देखें तो उसके बाद वह इन्कार करने लगेंगे। (52) तो तुम मृतकों को नहीं सुना सकते और न तुम बहरों को अपनी पुकार सुना सकते जबकि वह पीठ फेर कर चले जा रहे हो। (53) और न तुम अन्धों को उनकी पथभ्रष्टता से निकाल कर मार्ग पर ला सकते हो। तुम मात्र उसको सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाने वाला हो। अतः यही लोग आज्ञापालन करने वाले हैं।

(54) अल्लाह ही है जिसने तुमको दुर्बल पैदा किया फिर दुर्बलता के उपरांत सशक्त किया। फिर शक्ति के बाद दुर्बलता और बुढ़ापे की दशा लाया। वह जो चाहता है पैदा करता है। और वह ज्ञान वाला, सामर्थ्य वाला है। (55) और जिस दिन क़ियामत आयेगी, अपराधी लोग सौगन्ध खाकर कहेंगे कि वह एक घड़ी से अधिक नहीं रहे। इस प्रकार वह फेरे जाते थे। (56) और जिन लोगों को ज्ञान और आस्था मिली थी, वह कहेंगे कि अल्लाह की किताब में तो तुम एकत्र होने के दिन तक पड़े रहे। अतः यह एकत्र होने का दिन है, परन्तु तुम जानते न थे। (57) अतः उस दिन अत्याचारियों को उनका कोई बहाना काम न आयेगा और न उनसे क्षमा माँगने के लिए कहा जायेगा।

(58) और हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए प्रत्येक क़िस्म के उदाहरण

बयान किये हैं। और यदि तुम उनके पास कोई निशानी लेकर आओ तो जिन लोगों ने अवज्ञा की है वह यही कहेंगे कि तुम सब असत्य पर हो। (59) इस प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है उन लोगों के दिलों पर जो नहीं जानते। (60) अतः तुम धैर्य रखो। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। और तुमको असहनशील न बनायें वह लोग जो विश्वास नहीं रखते।

31. सूरह लुक़मान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. (2) यह विवेकपूर्ण किताब की आयतें हैं। (3) मार्गदर्शन और दयालुता भलाई करने वालों के लिए। (4) जो कि नमाज़ स्थापित करते हैं और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करते हैं। और वह परलोक पर विश्वास रखते हैं। (5) यह लोग अपने पालनहार के सीधे रास्ते पर हैं और यही लोग सफलता पाने वाले हैं।

(6) और लोगों में कोई ऐसा है जो इन बातों का ख़रीदार बनता है जो पथभ्रष्ट करने वाली हैं, ताकि अल्लाह के मार्ग से विचलित कर दे, बिना किसी ज्ञान के। और वह उसका उपहास करें। ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है। (7) और जब उनको हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह घमण्ड करता हुआ मुँह मोड़ लेता है, जैसे उसने सुना ही नहीं, जैसे उसके कानों में बहरापन है। तो उसको एक कष्टप्रद यातना की शुभ सूचना दे दो। (8) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये, उनके लिए नेमत के बाग़ हैं। (9) उनमें वह सदैव रहेंगे। यह अल्लाह का पक्का वादा है और वह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है।

(10) अल्लाह ने आसमानों को पैदा किया, ऐसे स्तम्भों के बिना जो तुमको दिखाई दें। और उसने धरती में पहाड़ रख दिये कि वह तुमको लेकर झुक न जायें। और उसने हर प्रकार के जीवधारी फैला दिये। और हमने आकाश से पानी उतारा, फिर धरती में हर प्रकार की अच्छी वस्तुएँ उगायी। (11) यह

अल्लाह की रचना, तो तुम मुझको दिखाओ कि उसके अतिरिक्त जो हैं उन्होंने क्या पैदा किया है। बल्कि अत्याचारी लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

(12) और हमने लुक़मान को विवेक प्रदान किया कि अल्लाह का आभार प्रकट करो। और जो व्यक्ति आभार प्रकट करेगा। तो वह अपने ही लिए आभार प्रकट करेगा और जो कृतघ्नता करेगा तो अल्लाह निस्पृह है, विशेषताओं वाला है। (13) और जब लुक़मान ने अपने बेटे को उपदेश देते हुए कहा कि ऐ मेरे बेटे, अल्लाह के साथ साझीदार न ठहराना, निस्सन्देह शिर्क (साझी ठहराना) बहुत बड़ा अत्याचार है।

(14) और हमने मनुष्य को उसके माँ-बाप के सम्बन्ध में सचेत किया। उसकी माँ ने दुख पर दुख उठाकर उसको पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छुड़ाना हुआ कि तू मेरा आभार प्रकट कर और अपने माता-पिता का। मेरी ही ओर लौट कर आना है। (15) और यदि वह दोनों तुझ पर दबाब डालें कि तू मेरे साथ ऐसी चीज़ को साझीदार ठहराये जो तुमको ज्ञात नहीं तो उनकी बात न मानना। और संसार में उनके साथ अच्छा व्यवहार करना। और तुम उस व्यक्ति के मार्ग का अनुसरण करना जो मेरी ओर झुका हुआ है। फिर तुम सबको मेरे पास आना है। फिर मैं तुमको बता दूँगा जो कुछ तुम करते रहे।

(16) ऐ मेरे बेटे, कोई भला कर्म यदि राई के दाने के बराबर हो फिर वह किसी पत्थर के अन्दर हो या आकाशों में हो या धरती पर हो अल्लाह उसको उपस्थित कर देगा। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी है, भिज्ञ है। (17) ऐ मेरे बेटे, नमाज़ स्थापित करो, अच्छे काम का उपदेश करो और बुराई से रोको और जो विपत्ति तुम पर आये उस पर धैर्य रखो। निस्सन्देह यह साहसिक कार्यों में से है। (18) और लोगों से अपना मुँह न फेर। और धरती पर अकड़ कर न चल। निस्सन्देह अल्लाह किसी अकड़ने वाले और अभिमान करने वाले को पसन्द नहीं करता। (19) और अपनी चाल में मध्यम चाल अपनाओ और अपनी आवाज़ को नर्म रखो। निस्सन्देह सबसे बुरी आवाज़ गधे की आवाज़ है।

(20) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने तुम्हारी सेवा में लगा दिया है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और उसने अपनी प्रत्यक्ष और परोक्ष नेमतें तुम पर पूरी कर दीं। और लोगों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह के

सम्बन्ध में झगड़ते हैं, किसी ज्ञान और किसी मार्गदर्शन और किसी प्रकाशमय किताब के बिना। (21) और जब इनसे कहा जाता है कि तुम उस चीज़ का अनुसरण करो जो अल्लाह ने अवतरित की है तो वह कहते हैं कि नहीं। हम उस चीज़ का अनुसरण करेंगे जिस पर हमने अपने बाप-दादा को पाया है। क्या यदि शैतान उनको आग की यातना की ओर बुला रहा हो तब भी।

(22) और जो व्यक्ति अपना चेहरा अल्लाह की ओर झुका दे और वह अच्छा कर्म करने वाला भी हो तो उसने मज़बूत रस्सी पकड़ ली। और अल्लाह की ही ओर है सभी मामलों का अंतिम परिणाम। (23) और जिसने अवज्ञा की तो उनकी अवज्ञा तुमको दुखी न करे। हमारी ही ओर है उनकी वापसी। तो हम उनको बता देंगे जो कुछ उन्होंने किया। निस्सन्देह अल्लाह दिलों की बात से भी भिज्ञ है। (24) इनको हम थोड़ी अवधि तक लाभ देंगे। फिर उनको एक कठोर यातना की ओर खींच लायेंगे।

(25) और यदि तुम इनसे पूछो कि आसमानों और पृथ्वी को किसने पैदा किया, तो वह अवश्य कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है। बल्कि उनमें से अधिकतर नहीं जानते। (26) अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में है और धरती में, निस्सन्देह अल्लाह निस्पृह है, विशेषताओं वाला है। (27) और यदि धरती में जो वृक्ष हैं वह क़लम बन जायें और समुद्र, सात अन्य समुद्रों के साथ स्याही बन जायें, तब भी अल्लाह की बातें समाप्त न हों। निस्सन्देह अल्लाह सर्वशक्तिमान है, विवेक वाला है।

(28) तुम सब का पैदा करना और जीवित करना बस ऐसा ही है जैसा एक व्यक्ति का। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला देखने वाला है। (29) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में प्रवेश करता है और दिन को रात में प्रवेश करता है। और उसने सूरज और चाँद को काम में लगा दिया है। प्रत्येक चलता है एक निर्धारित समय तक। और यह कि जो कुछ तुम करते हो, अल्लाह उससे भिज्ञ है। (30) यह इस कारण से है कि अल्लाह ही सत्य है। और उसके अतिरिक्त जिन चीज़ों को वह पुकारते हैं वह असत्य हैं और निस्सन्देह अल्लाह श्रेष्ठ है, बड़ा है।

(31) क्या तुमने देखा नहीं कि नौका समुद्र में अल्लाह की कृपा से चलती

है, ताकि वह तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं प्रत्येक धैर्य रखने वाले के लिए, कृतज्ञता करने वाले के लिए। (32) और जब लहर उनके सिर पर बादल की तरह छा जाती है, वह अल्लाह को पुकारते हैं उसके लिए धर्म को विशुद्ध करते हुए। फिर जब वह उनको बचा कर थल की ओर ले आता है तो उनमें से कुछ सन्तुलन पर रहते हैं। और हमारी निशानियों को वही लोग झुठलाते हैं जों वादे के विरुद्ध करने वाले हैं और कृतघ्न हैं।

(33) ऐ लोगों, अपने पालनहार से डरो और उस दिन से डरो जबकि कोई पिता अपने बेटे की ओर से बदला न दे और न कोई बेटा अपने पिता की ओर से कुछ बदला देने वाला होगा। निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है, तो सांसारिक जीवन तुम्हें धोखे में न डाले और न धोखोबाज़ तुमको अल्लाह के बारे में धोखा देने पाये। (34) निस्सन्देह अल्लाह ही को क़ियामत का ज्ञान है और वही बारिश बरसाता है और वह जानता है जो कुछ गर्भ में है। और कोई व्यक्ति नहीं जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा। और कोई व्यक्ति नहीं जानता कि वह किस धरती में मरेगा। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, भिज्ञ है।

32. सूरह अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अलिफ़. लाम. मीम. (2) यह उतारी हुई किताब है, इसमें कोई सन्देह नहीं, संसार के स्वामी की ओर से है। (3) क्या वह कहते हैं कि इस व्यक्ति ने इसको स्वंय गढ़ लिया है। बल्कि यह सत्य है तुम्हारे पालहार की ओर से, ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पास तुमसे पहले कोई डराने वाला नहीं आया, ताकि वह मार्ग पर आ जायें।

(4) अल्लाह ही है जिसने पैदा किया है आकाशों और पृथ्वी को और जो उनके मध्य हैं छः दिनों में फिर वह सिंहासन पर क़ायम (आसीन) हुआ। उसके अतिरिक्त न तुम्हारा कोई सहायक है और न कोई सिफ़ारिश करने वाला। तो क्या तुम ध्यान नहीं करते। (5) वह आकाश से धरती तक सभी मामलों का

नियन्त्रण करता है। फिर वह उसकी ओर लौटते हैं एक ऐसे दिन में जिसकी लम्बाई तुम्हारी गिनती के अनुसार हज़ार वर्ष के बराबर है। (6) वही है परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाला। प्रभुत्वशाली है, दयालुता वाला है। (7) उसने जो चीज़ भी बनाई भली प्रकार बनाई। और उसने मनुष्य की रचना का प्रारम्भ मिट्टी से किया। (8) फिर उसका वंश निकृष्ट पानी के निचोड़ से चलाया। (9) फिर उसके अंग ठीक किये। और उसमें अपनी रुह (आत्मा) फूँकी। तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बनाये। तुम लोग बहुत कम आभार मानते हो।

(10) और उन्होंने कहा कि क्या जब हम धरती में लुप्त हो जायेंगे तो हम फिर नये सिरे से पैदा किये जायेंगे। बल्कि वह अपने पालनहार की भेंट का इन्कार करते हैं। (11) कहो कि मृत्यु का फ़रिश्ता तुम्हारे प्राण निकालता है जो तुम पर नियुक्त किया गया है। फिर तुम अपने पालनहार की ओर लौटाये जाओगे। (12) और काश तुम देखो जबकि ये अपराधी लोग अपने पालनहार के समक्ष सिर झुकाये होंगे। ऐ हमारे पालनहार, हमने देख लिया और हमने सुन लिया तो हमको वापस भेज दे कि हम अच्छे कर्म करें। हम विश्वास करने वाले बन गये। (13) और यदि हम चाहते तो प्रत्येक व्यक्ति को उसका मार्गदर्शन प्रदान कर देते। परन्तु मेरी बात सिद्ध हो चुकी कि मैं नरक को जिन्नों और मनुष्यों से भरुँगा। (14) तो अब स्वाद चखो इस बात का कि तुमने उस दिन की भेंट को भुला दिया। हमने भी तुमको भुला दिया। और अपने कर्मों के कारण सदैव रहने वाली यातना का स्वाद चखो।

(15) हमारी आयतों पर वही लोग ईमान लाते हैं कि जब उनको उनके माध्यम से अनुस्मरण कराया जाता है तो वह सजदे में गिर पड़ते हैं और अपने पालनहार की प्रशंसा के साथ उसकी स्तुति करते हैं। और वह घमण्ड नहीं करते। (16) उनकी पीठें बिस्तरों से अलग रहती हैं। वह अपने पालनहार को पुकारते हैं भय से और आशा से। और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया है वह उसमें से ख़र्च करते हैं। (17) तो किसी को ज्ञान नहीं कि इन लोगों के लिए इनके कर्मों के बदले में आँखों की क्या ठण्डक छिपा रखी है।

(18) तो क्या जो मोमिन (आस्थावान) है वह उस व्यक्ति जैसा होगा जो आज्ञाकारी नहीं है। दोनों समान नहीं हो सकते। (19) जो लोग ईमान

लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये उनके लिए जन्नत के विश्राम स्थल हैं, आतिथ्य उन कर्मों के कारण जो वह करते थे। (20) और जिन लोगों ने अवज्ञा की तो उनका ठिकाना आग है, वह लोग जब उससे निकलना चाहेंगे तो फिर वह उसी में ढकेल दिये जायेंगे। और उनसे कहा जायेगा कि आग की यातना चखो जिसको तुम झुठलाते थे। (21) और हम उनको बड़ी यातना से पहले छोटी यातना चखायेंगे संभवतः वह सँभल जायें। (22) और उस व्यक्ति से बड़ा अत्याचारी कौन होगा जिसको उसके पालनहार की आयतों के माध्यम से उपदेश दिया जाये, फिर वह उससे मुँह मोड़े। हम ऐसे अपराधियों से अवश्य बदला लेंगे।

(23) और हमने मूसा को किताब दी। तो तुम उसके मिलने में कुछ सन्देह न करो। और हमने उसको इस्राईल के वंश के लिए मार्गदर्शन बनाया। (24) और हमने उनमें नायक बनाये जो हमारे आदेश से लोगों का मार्गदर्शन करते थे, जबकि उन्होंने धैर्य रखा। और वह हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे। (25) निस्सन्देह तेरा पालनहार क़ियामत के दिन उनके बीच मामलों में निर्णय कर देगा जिनमें वह आपस में मतभेद करते थे। (26) क्या उनके लिए यह चीज़ मार्गदर्शन वाली न बनी कि उनसे पहले हमने कितनी क़ौमों को नष्ट कर दिया। जिनकी बस्तियों में ये लोग आते जाते हैं। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं, क्या यह लोग सुनते नहीं।

(27) क्या इन्होंने नहीं देखा कि हम पानी को चटियल मैदान की ओर हाँक कर ले जाते हैं। फिर हम उससे खेती निकालते हैं जिससे उनके पशु खाते हैं और वह स्वंय भी। फिर क्या वह देखते नहीं। (28) और वह कहते हैं कि यह निर्णय कब होगा यदि तुम सच्चे हो। (29) कहो कि निर्णय के दिन उन लोगों का ईमान लाभ न देगा जिन्होंने अवज्ञा की। और न उनको अवकाश दिया जायेगा। (30) तो उनसे मुँह मोड़ लो और प्रतीक्षा करो यह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

33. सूरह अल-अहज़ाब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ सन्देष्टा, अल्लाह से डरो और अवज्ञाकारियों और कपटाचारियों का आज्ञापालन न करो, निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (2) और उसका अनुसरण करो जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम पर उतारा जा रहा है, निस्सन्देह अल्लाह भिज्ञ है उससे जो तुम लोग करते हो। (3) और अल्लाह पर भरोसा रखो, और वह अल्लाह काम बनाने के लिए पर्याप्त है।

(4) अल्लाह ने किसी व्यक्ति के सीने में दो दिल नहीं रखे। और न तुम्हारी पत्नियों को जिनसे तुम ज़िहार (माँ की पीठ कहना) करते हो, तुम्हारी माँ बनाया और न तुम्हारे मुँहबोले बेटों को तुम्हारा बेटा बना दिया। यह सब तुम्हारे अपने मुँह की बातें हैं। और अल्लाह सत्य बात कहता है और वह सीधा मार्ग दिखाता है। (5) मुँहबोले बेटों को उनके पिता के सम्बन्ध से पुकारो, यह अल्लाह के निकट अधिक न्यायपूर्ण बात है। फिर यदि तुम उनके पिता को न जानो तो वह तुम्हारे दीनी (धार्मिक) भाई हैं और तुम्हारे मित्र हैं। और जिस चीज़ में तुमसे भूल-चूक हो जाये तो उसका तुम पर कुछ पाप नहीं परन्तु जो चीज़ तुम दिल से संकल्प करके करो। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयालुता वाला है।

(6) और सन्देष्टा का अधिकार मोमिनों (आस्थावानो) पर उनके अपने प्राणों से भी अधिक है, और सन्देष्टा की पत्नियाँ उनकी माँये हैं। और सम्बन्धी (नातेदार) अल्लाह की किताब में, दूसरे मोमिनों और मुहाजिरों (प्रवासियों) की तुलना में, एक दूसरे से अधिक सम्बन्ध रखते हैं। परन्तु यह कि तुम अपने मित्रों से कुछ सद्व्यवहार करना चाहो। यह किताब में लिखा हुआ है।

(7) और जब हमने सन्देष्टाओं से उनकी प्रतिज्ञा ली और तुमसे और नूह से और इब्राहीम और मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से। और हमने उनसे दृढ़ प्रतिज्ञा ली। (8) ताकि अल्लाह सच्चे लोगों से उनकी सच्चाई के सम्बन्ध में प्रश्न करे और अवज्ञाकारियों के लिए उसने कष्टदायक यातना तैयार कर रखी है।

(9) ऐ लोगों जो ईमान लाये हो, अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो, जब तुम पर सेनाएँ चढ़ आयीं तो हमने उन पर एक आँधी भेजी और ऐसी सेना जो तुमको दिखाई न देती थी। और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो। (10) जबकि वह तुम पर चढ़ आये, तुम्हारे ऊपर की ओर से और तुम्हारे नीचे की ओर से। और जब आँखें पथरा गयीं और हृदय गले तक पहुँच गये और तुम अल्लाह के साथ भाँति-भाँति के गुमान (विचार) करने लगे। (11) उस समय ईमान वाले परीक्षा में डाले गये और बुरी तरह हिला दिये गये।

(12) और जब कपटाचारी और वह लोग जिनके दिलों में रोग है, वह कहते थे कि अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने जो वादा हमसे किया था। वह मात्र धोखा था। (13) और जब उनमें से एक समूह ने कहा कि ऐ यसरिब वालों, तुम्हारे लिए ठहरने का अवसर नहीं, तो तुम लौट चलो। और उनमे से एक समूह सन्देष्टा से अनुमति माँगता था, वह कहता था कि हमारे घर असुरक्षित हैं, और वह असुरक्षित नहीं। (14) वह मात्र भागना चाहते थे। और यदि मदीने के आस-पास से उन पर कोई घुस आता और उनको परीक्षा का निमन्त्रण देता तो वह मान लेते और वह उसमें बहुत कम देर करते। (15) और उन्होंने इससे पहले अल्लाह से प्रतिज्ञा की थी कि वह पीठ न फेरेंगे। और अल्लाह से की हुई प्रतीज्ञा की पूछ होगी। (16) कहो कि यदि तुम मृत्यु से अथवा हत्या से भागो तो यह भागना तुम्हारे कुछ काम न आयेगा। और उस स्थिति में तुमको मात्र थोड़े दिनों लाभ उठाने का अवसर मिलेगा। (17) कहो, कौन है जो तुमको अल्लाह से बचाये यदि वह तुमको हानि पहुँचाना चाहे, अथवा वह तुम पर दया करना चाहे। और वह अपने लिए अल्लाह की तुलना में कोई समर्थक और सहायक न पायेंगे।

(18) अल्लाह तुममें से उन लोगों को जानता है जो तुममें से रोकने वाले हैं और जो अपने भाईयों से कहते हैं कि हमारे पास आ जाओ। और वह युद्ध में कम ही आते हैं। (19) वह तुमसे कंजूसी करते हैं। अतः जब भय का सामना होता है तो तुम देखते हो कि वह तुम्हारी ओर इस तरह देखने लगते हैं कि उनकी आँखें उस व्यक्ति की आँखों की तरह चलने लग रही हैं जैसे

मृत्यु की बेहोशी छा रही हो। फिर जब ख़तरा दूर हो जाता है तो वह दौलत के लालच में तुमसे वाकपटुता से मिलते हैं। यह लोग विश्वास नहीं करते तो अल्लाह ने उनके कर्म व्यर्थ कर दिए। और यह अल्लाह के लिए सरल है। (20) वह समझते हैं कि सेनाएँ अभी गयी नहीं हैं। और यदि सेनाएँ आ जायें तो यह लोग यही पसन्द करेंगे कि काश वह बद्दुओं के साथ देहात में हों, तुम्हारी सूचनाएँ पूछते रहे। और यदि वह तुम्हारे साथ होते तो लड़ाई में कम ही भाग लेते। (21) तुम्हारे लिए अल्लाह के सन्देष्टा में उत्तम आदर्श था, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो और अधिकता से अल्लाह को याद करे। (22) और जब ईमान वालों ने सेनाओं को देखा, वह बोले यह वही है जिसका अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने हमसे वादा किया था और अल्लाह और उसके सन्देष्टा ने सच कहा। और उसने उनके ईमान और अज्ञापालन में वृद्धि कर दी। (23) ईमान वालों में ऐसे लोग भी हैं जिन्होंने अल्लाह से की हुई प्रतिज्ञा को पूरा कर दिखाया। अतः उनमें से कोई अपना दायित्व पूरा कर चुका और उनमें से कोई प्रतीक्षा में है। और उन्होंने तनिक भी परिवर्तन नहीं किया। (24) ताकि अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला दे और कपटाचारियों को यातना दे यदि चाहे अथवा उनकी तौबा स्वीकार करे। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

(25) और अल्लाह ने अवज्ञाकारियों को उनके क्रोध सहित फेर दिया कि उनकी तनिक भी अभिलाषा पूरी न हुई और मोमिनों की ओर से लड़ने के लिए अल्लाह पर्याप्त हो गया। अल्लाह सामर्थ्यवाला, शक्तिशाली है। (26) और अल्लाह ने उन किताब वालों को जिन्होंने आक्रमणकारियों का साथ दिया उनके क़िलों से उतारा। और उनके दिलों में उसने रोग डाल दिया। तुम उनके एक समूह की हत्या कर रहे हो और एक समूह को क़ैद कर रहे हो। (27) और उसमें उनकी भूमि और उनके घरों और उनके सम्पत्तियों का तुमको उत्तराधिकारी बना दिया। और ऐसी भूमि का भी जिस पर तुमने क़दम नहीं रखा। और अल्लाह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखने वाला है।

(28) ऐ सन्देष्टा, अपनी पत्नियों से कहो कि यदि तुम सांसारिक जीवन और उसका सौन्दर्य चाहती हो तो आओ, मैं तुमको कुछ सम्पत्ति और

साधन प्रदान कर भलाई के साथ विदा कर दूँ। (29) और यदि तुम अल्लाह और उसके सन्देष्टा और परलोक के घर को चाहती हो तो अल्लाह ने तुममें से अच्छे चरित्रों के लिए बड़ा बदला तय्यार कर रखा है। (30) ऐ सन्देष्टा की पत्नियो, तुममें से जो किसी खुली अश्लीलता में लिप्त होगी, उसको दोहरी यातना दी जायेगी। और यह अल्लाह के लिए सरल है।

(31) और तुममें से जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करेगी और भला कर्म करेगी तो हम उसका दोहरा बदला देंगे। और हमने उसके लिए सम्मानजनक जीविका तैयार कर रखी है। (32) ऐ सन्देष्टा की पत्नियों, तुम सामान्य महिलाओं की भाँति नहीं हो। यदि तुम अल्लाह से डरो तो तुम बोली में नरमी न अपनाओ कि जिसके हृदय में रोग है वह लालच में पड़ जाये बल्कि साफ़-सीधी बात करो।

(33) और तुम अपने घर में शान्तिपूर्वक रहो और पूर्व अज्ञानता की भाँति दिखावा करती न फिरों और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करो और अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करो। अल्लाह तो चाहता है कि तुम सन्देष्टा के घरवालों से गंदगी को दूर करे और तुमको पूर्ण रूप से पवित्र कर दे। (34) और तुम्हारे घरों में अल्लाह की आयतों और विवेक की जो शिक्षा दी जाती है उसको याद रखो। निस्सन्देह अल्लाह सूक्ष्मदर्शी है, ख़बर रखने वाला है।

(35) निस्सन्देह निष्ठावान पुरुष और निष्ठावान महिलाएँ, और ईमान लाने वाले पुरुष और ईमान लाने वाली महिलाएँ, और आज्ञापालन करने वाले पुरुष और आज्ञापालन करने वाली महिलाएँ। और सन्मार्ग पर चलने वाले पुरुष और सन्मार्ग पर चलने वाली महिलाएँ। और धैर्य रखने वाले पुरुष और धैर्य रखने वाली महिलायें, और अल्लाह का भय रखने वाले पुरुष और अल्लाह का भय रखने वाली महिलायें और दान देने वाले पुरुष और दान देने वाली महिलाएँ। और रोज़ा (व्रत) रखने वाले पुरुष और रोज़ा रखने वाली महिलाएँ, और अपने गुप्तांगों की रक्षा करने वाले पुरुष और रक्षा करने वाली महिलाएँ, और अल्लाह को अधिकता से याद करने वाले पुरुष और याद करने वाली महिलाएँ- इनके लिए अल्लाह ने माफ़ी और बड़ा बदला तय्यार कर रखा है।

(36) किसी ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली महिला के लिए यह गुंजाइश नहीं है कि जब अल्लाह और उसका सन्देष्टा किसी मामले का निर्णय कर दे तो फिर उनके लिए उसमें अधिकार बाक़ी रहे। और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके सन्देष्टा की अवज्ञा करेगा तो वह स्पष्ट पथभ्रष्टता में लिप्त हो गया।

(37) और जब तुम उस व्यक्ति से कह रहे थे जिस पर अल्लाह ने उपकार किया और तुमने उपकार किया कि तुम अपनी पत्नी को रोके रखो और अल्लाह से डरो। और तुम अपने हृदय में वह बात छिपाये हुए थे जिसको अल्लाह प्रकट करने वाला था। और तुम लोगों से डर रहे थे और अल्लाह को अधिक अधिकार है कि तुम उससे डरो। फिर जब ज़ैद उससे अपनी इच्छा पूर्ति कर चुका, हमने तुमसे उसका विवाह कर दिया ताकि ईमान वालों पर अपने मुँहबोले बेटों की पत्नियों के बारे में कोई संकोच न रहे। जबकि वह उनसे अपनी आवश्यकतापूर्ति कर लें। और अल्लाह का आदेश होने वाला ही था।

(38) सन्देष्टा के लिए इसमे कोई हानि नहीं जो अल्लाह ने उसके लिए निर्धारित कर दिया हो। यही अल्लाह की सुन्नत (रीति) उन पैग़म्बरों के मामले में रही है जो पहले गुज़र चुके हैं। और अल्लाह का आदेश एक अन्तिम निर्णय होता है। (39) वह अल्लाह के सन्देशों को पहुँचाते थे और उसी से डरते थे और अल्लाह के अतिरिक्त किसी से नहीं डरते थे। और अल्लाह हिसाब लेने के लिए पर्याप्त है। (40) मुहम्मद तुम्हारे पुरुषों में से किसी के पिता नहीं हैं, परन्तु वह अल्लाह के सन्देष्टा और सन्देष्टाओं पर मुहर लगाने वाले (अन्तिम) हैं। और अल्लाह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।

(41) ऐ ईमान वालों, अल्लाह को अत्यधिक याद करो। (42) और उसकी स्तुति करो सुबह और सायं। (43) वही है जो तुम पर दयालुता भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी ताकि तुमको अन्धकारों से निकाल कर प्रकाश में लाये। और वह मोमिनों पर बहुत दयावान है। (44) जिस दिन वह उससे मिलेंगे, उनका स्वागत सलाम से होगा और उसने उनके लिए सम्मानजनक बदला तैयार कर रखा है।

(45) ऐ सन्देष्टा, हमने तुमको गवाही देने वाला और शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (46) और अल्लाह की

ओर उसकी अनुमति से आमन्त्रित करने वाला और एक प्रज्वल्लित दीप। (47) और ईमान वालों को शुभ सूचना दे दो कि उनके लिए अल्लाह की ओर से बहुत बड़ी कृपा है। (48) और तुम अवज्ञाकारियों और कपटाचारियों की बात न मानो और उनके सताने को अनदेखा करो और अल्लाह पर भरोसा रखो। और अल्लाह भरोसे के लिए पर्याप्त है। (49) ऐ ईमान वालों, जब तुम मोमिन महिलाओं से विवाह करो, फिर उनको हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो उनके सम्बन्ध में तुम पर कोई इद्दत अनिवार्य नहीं है जिसकी तुम गिनती करो। अतः उनको कुछ जीवन साधन दो और भलाई के साथ उनको विदा कर दो।

(50) ऐ सन्देष्टा, हमने तुम्हारे लिए वैध कर दीं तुम्हारी वह पत्नियाँ जिनका महर तुम दे चुके हो और वह महिलाएँ भी जो तुम्हारे स्वामित्व में हैं जो अल्लाह ने ग़नीमत में तुमको दी हैं और तुम्हारे चाचा की बेटियाँ और तुम्हारी फूफियों की बेटियाँ और तुम्हारे मामा की बेटियाँ और तुम्हारी मौसियों की बेटियाँ जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत (प्रवास) किया हो। और उस ईमान वाली महिला को भी जो अपने आप को सन्देष्टा को दे दे, शर्त यह है कि पैग़म्बर उसको निकाह (विवाह) में लाना चाहे, यह विशेष रूप से तुम्हारे लिए है, ईमान वालों से भिन्न। हमको ज्ञात है जो हमने उन पर उनकी पत्नियों और उनकी दासियों के सम्बन्ध में अनिवार्य किया है, ताकि तुम पर कोई संकोच न रहे और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

(51) तुम उनमें से जिस-जिस को चाहो दूर रखो और जिसको चाहो अपने पास रखो। और जिनको दूर किया था उनमें से फिर किसी को बुलाओ तब भी तुम पर कोई पाप नहीं। इसमें अधिक आशा है कि उनकी आँखें ठण्डी रहेंगी, और वह दुखी न होंगी। और वह उस पर सन्तुष्ट रहें जो तुम उन सबको दो। और अल्लाह जानता है जो तुम्हारे दिलों में है। और अल्लाह जानने वाला है, सहनशील है। (52) उनके अतिरिक्त और महिलाएँ तुम्हारे लिए वैध नहीं हैं। और न यह उचित है कि तुम उनके स्थान पर दूसरी पत्नियाँ कर लो, यद्यपि उनका रूप तुमको अच्छा लगे, परन्तु जो तुम्हारी दासी हों। और अल्लाह हर चीज़ पर संरक्षक है।

(53) ऐ ईमान वालों, सन्देष्टा के घरो में मत जाया करो परन्तु जिस समय तुमको खाने के लिए अनुमति दी जाये, ऐसे ढंग से कि इसकी तय्यारी की प्रतीक्षा में न रहो। परन्तु जब तुमको बुलाया जाये तो प्रवेश करो। फिर जब तुम खा चुको तो उठ कर चले जाओ और बातों में लगे हुए बैठे न रहो। इस बात से सन्देष्टा को नागवारी होती है। परन्तु वह तुम्हारा लिहाज करते हैं। और अल्लाह सच्ची बात कहने में किसी का लिहाज नहीं करता। और जब तुम सन्देष्टा की पत्नियों से कोई चीज़ माँगो तो पर्दे की ओट से माँगो। यह तरीक़ा तुम्हारे दिलों के लिए अधिक पवित्र है और उनके दिलों के लिए भी। और तुम्हारे लिए वैध नहीं कि तुम अल्लाह के सन्देष्टा को कष्ट दो और न यह वैध है कि तुम उनके बाद उनकी पत्नियों से कभी निकाह (विवाह) करो। यह अल्लाह के निकट बहुत गम्भीर बात है। (54) तुम किसी चीज़ को प्रकट करो या उसको छिपाओ तो अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है।

(55) सन्देष्टा की पत्नियों पर अपने पिता के सम्बन्ध में कोई पाप नहीं है। और न अपने बेटों के सम्बन्ध में और न अपने भाईयों के सम्बन्ध में और न अपने भतीजों के सम्बन्ध में और न अपने भान्जों के सम्बन्ध में और न अपनी महिलाओं के सम्बन्ध में और न अपनी दासियों के सम्बन्ध में। और तुम अल्लाह से डरती रहो, निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ पर दृष्टि रखता है।

(56) अल्लाह और उसके फ़रिश्ते सन्देष्टा पर दयालुता (रहमत) भेजते हैं। ऐ ईमान वालों, तुम भी उस पर दरुद (दयालुता) और सलाम भेजो। (57) जो लोग अल्लाह और उसके सन्देष्टा को कष्ट देते हैं। अल्लाह ने उन पर संसार और परलोक में फटकार की और उनके लिए अपमानित करने वाली यातना तैयार कर रखी है। (58) और जो लोग मोमिन (आस्थावान) पुरुषों और मोमिन महिलाओं को कष्ट देते हैं बिना इसके कि उन्होंने कुछ किया हो तो उन्होंने आरोप का और स्पष्ट पाप का बोझ उठाया।

(59) ऐ सन्देष्टा, अपनी पत्नियों से कहो और अपनी बेटियों से और मुसलमानों की महिलाओं से कि नीचे कर लिया करें अपने ऊपर थोड़ी सी अपनी चादरें, इससे शीघ्र पहचान हो जायेगी तो वह सतायी न जायेंगी।

और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (60) कपटाचारी और वह लोग जिनके दिलों में रोग है और जो मदीने में झूठी सूचनाएँ फैलाने वाले हैं, यदि वह न मानें तो हम तुमको उनके पीछे लगा देंगे। फिर वह तुम्हारे साथ मदीने में बहुत कम रहने पायेंगे। (61) फटकारे हुए, जहाँ पाये जायेंगे पकड़े जायेंगे और बुरी तरह मारे जायेंगे। (62) यह अल्लाह का विधान है उन लोगों के सम्बन्ध में जो पहले गुज़र चुके हैं। और तुम अल्लाह के विधान में कोई परिवर्तन न पाओगे।

(63) लोग तुमसे क़ियामत के बारे में पूछते हैं। कहो कि उसका ज्ञान तो मात्र अल्लाह के पास है। और तुमको क्या मालूम, संभवतः क़ियामत निकट आ गयी हो। (64) निस्सन्देह अल्लाह ने अवज्ञाकारियों को दयालुता से दूर कर दिया है। और उनके लिए भड़कती हुइ आग तैयार कर रखी है। (65) उसमें वह सदैव रहेंगे। वह न कोई समर्थक पायेंगे और न कोई सहायक। (66) जिस दिन उनके चेहरे आग में उलट-पलट किये जायेंगे। वह कहेंगे, ऐ काश, हमने अल्लाह का आज्ञापालन किया होता और हमने सन्देष्टा का आज्ञापालन किया होता। (67) और वह कहेंगे ऐ हमारे पालनहार, हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहना माना तो उन्होंने हमको मार्ग से भटका दिया। (68) ऐ हमारे पालनहार, उनको दोहरी यातना दे और उन पर भारी फटकार कर।

(69) ऐ ईमान वालों, तुम उन लोगों की तरह न बनो, जिन्होंने मूसा को कष्ट पहुँचाया फिर अल्लाह ने उसको उन लोगों की बातों से बरी (विरक्त) सिद्ध किया। और वह अल्लाह के निकट सम्मानित था। (70) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो और उचित बात कहो। (71) वह तुम्हारे कर्म सुधारेगा और तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा। और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करे, उसने बड़ी सफलता प्राप्त कर ली।

(72) हमने अमानत (धरोहर) को आकाशों और पृथ्वी और पहाड़ों के समक्ष प्रस्तुत किया तो उन्होंने उसको उठाने से इन्कार किया और वह उससे डर गये, और मनुष्य ने उसको उठा लिया, निस्सन्देह वह अत्याचारी और अज्ञानी था। (73) ताकि अल्लाह कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी महिलाओं को और मूर्ति पूजा करने वाले पुरुषों और मूर्ति पूजा करने वाली महिलाओं को दण्ड

दे। और मोमिन (आस्थावान) पुरुषों और मोमिन महिलाओं पर ध्यान दे। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

34. सूरह सबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों में है और जो कुछ धरती में है और उसी की प्रशंसा है परलोक में और वह विवेक वाला, जानने वाला है। (2) वह जानता है जो कुछ धरती के अन्दर प्रवेश होता है और जो कुछ उससे निकलता है, और जो आसमान से उतरता है और जो उसमें चढ़ता है। और वह दयालुता वाला, क्षमा करने वाला है।

(3) और जिन्होंने अवज्ञा की, वह कहते हैं कि हम पर क़ियामत नहीं आयेगी। कहो कि क्यों नहीं। सौगन्ध है मेरे पालनहार की जो परोक्ष को जानने वाला है, वह अवश्य तुम पर आयेगी। उससे कण समान भी कोई चीज़ छिपी नहीं, न आसमानों में और न धरती में। और न कोई चीज़ उससे छोटी और न बड़ी, परन्तु वह एक स्पष्ट पुस्तक में है। (4) ताकि वह उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाये और भले कर्म किये। यही लोग हैं जिनके लिए क्षमा है और सम्मानजनक जीविका। (5) और जिन लोगों ने हमारी आयतों (निशानियों) को विवश करने का प्रयास किया, उसके लिए कठोरता की कष्टदायक यातना है। (6) और जिनको ज्ञान दिया गया है, वह उस चीज़ को जो तुम्हारे पालनहार की ओर से तुम्हारे पास भेजा गया है, जानते हैं कि वह सत्य है और वह शक्तिशाली और प्रशंसित अल्लाह का मार्ग दिखाता है।

(7) और जिन्होंने अवज्ञा की वह कहते हैं, क्या हम तुमको एक ऐसा व्यक्ति बतायें जो तुमको सूचना देता है कि जब तुम पूर्णतः कण-कण हो जाओगे तो फिर तुमको नये सिरे से बनना है। (8) क्या उसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है या उसको किसी तरह की दीवानगी है। बल्कि जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते, वही यातना में और दूर की पथभ्रष्टता में लिप्त हैं। (9) तो क्या उन्होंने आकाश और धरती की ओर दृष्टि नहीं डाली जो उनके

आगे है और उनके पीछे भी। यदि हम चाहें तो उनको धरती में धँसा दें अथवा उन पर आसमान से टुकड़े गिरा दें। निस्सन्देह इसमें निशानी है प्रत्येक उस बन्दे के लिए जो ध्यान देने वाला हो।

(10) और हमने दाऊद को अपनी ओर से बड़ी नेमतें दीं। ऐ पहाड़ों, तुम भी उसके साथ स्तुति में सम्मिलित रहो। और इसी प्रकार पक्षियों को भी आदेश दिया। और हमने लोहे को उसके लिए कोमल कर दिया। (11) कि तुम बड़े कवच बनाओ और कड़ियों को माप के अनुसार जोड़ो और अच्छे कर्म करो। जो कुछ तुम करते हो उसको मैं देख रहा हूँ।

(12) और सुलेमान के लिए हमने हवा को वशीभूत कर दिया, उसकी सुबह की मंज़िल एक महीने की होती और उसकी सायं की मंज़िल एक महीने की। और हमने उसके लिए ताँबे का स्रोत बहा दिया। और जिन्नो में से ऐसे थे जो उसके पालनहार के आदेश से उसके समक्ष काम करते थे। और उनमें से जो कोई हमारे आदेश से फिरे तो हम उसको आग की यातना चखायेंगे। (13) वह उसके लिए बनाते जो वह चाहता, भवन और चित्र और हौज़ (तालाब) जैसे लगन और जमी हुइ देगें- ऐ दाऊद की सन्तान कृतज्ञता के साथ कर्म करो और मेरे बन्दो में कम ही कृतज्ञ हैं।

(14) फिर जब हमने उस पर मृत्यु का निर्णय लागू किया तो किसी चीज़ ने उनको उसके मरने की सूचना नहीं दी परन्तु धरती के कीड़े ने, वह उसकी लाठी को खाता था। तो जब वह गिर पड़ा तब जिन्नों पर स्पष्ट हुआ कि यदि वह परोक्ष को जानते तो इस अपमान की विपत्ति में न रहते।

(15) सबा के लिए उनके अपने आवास में निशानी थी। दो बाग़ दायें और बायें अपने पालनहार की जीविका से खाओ और उसका आभार प्रकट करो। अच्छा नगर और क्षमा करने वाला पालनहार। (16) अतः उन्होंने अवज्ञा की तो हमने उन पर बाँध का सैलाब (बाढ़) भेज दिया और उनके बाग़ो को दो ऐसे बाग़ो से बदल दिया जिनमें बुरे स्वाद वाले फल और झाऊ के वृक्ष और कुछ थोड़े से बेर। (17) यह हमने उनकी कृतघ्नता का बदला दिया और ऐसा बदला हम उसी को देते हैं जो कृतघ्न हो।

(18) और हमने उनके और उनके नगरों के बीच, जहाँ हमने बरकत

रखी थी, ऐसे नगर बसाये जो दिखायी देती थीं। और हमने उनके बीच यात्रा की मंज़िलें निर्धारित कर दीं। उनमें रात-दिन शान्तिपूर्वक चलो। (19) फिर उन्होने कहा कि ऐ हमारे पालनहार हमारी यात्रओं के बीच दूरी डाल दे। और उन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया तो हमने उनको कहानियां बना दिया और हमने उनको पूर्णतः तितर-बितर कर दिया। निस्सन्देह इसमें निशानी है प्रत्येक धैर्य रखने वाले, कृतज्ञता करने वाले के लिए।

(20) और इबलीस ने उनके ऊपर अपना गुमान सच कर दिखाया। अतः उन्होंने उसका अनुसरण किया, परन्तु ईमान वालों का एक समूह। (21) और इबलीस को उनके ऊपर कोई अधिकार न था, परन्तु यह कि हम जान लें उन लोगों को जो परलोक पर विश्वास रखते हैं, उन लोगों से (अलग करके जो उसकी ओर से सन्देह में हैं) और तुम्हारा पालनहार हर चीज़ पर संरक्षक है।

(22) कहो कि उनको पुकारो जिनको तुमने अल्लाह के अतिरिक्त उपास्य समझ रखा है, वह न आकाशों में कण के बराबर भी अधिकार रखते हैं और न धरती पर और न इन दोनों में उनकी कोई साझीदारी है। और न इनमें से कोई उसका सहायक है। (23) और उसके समक्ष कोई सिफ़ारिश काम नहीं आती परन्तु उसके लिए जिसके लिए वह अनुमति दे, यहाँ तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर होगी तो वह पूछेंगे कि तुम्हारे पालनहार ने क्या कहा। वह कहेंगे कि सत्य बात का आदेश दिया। और वह सबसे ऊपर है, सबसे बड़ा है।

(24) कहो कि कौन तुमको आकाशों और धरती से रोज़ी देता है। कहो कि अल्लाह। और हममें और तुममें से कोई एक सन्मार्ग पर है अथवा खुली हुई पथभ्रष्टता में। (25) कहो कि जो अपराध हमने किया उसकी कोई पूछ तुमसे न होगी। और जो कुछ तुम कर रहे हो उसके सम्बन्ध में हमसे नहीं पूछा जायेगा। (26) कहो कि हमारा पालनहार हमको एकत्र करेगा, फिर हमारे बीच वह सत्य के अनुसार, निर्णय करेगा। और वह निर्णय करने वाला है। (27) कहो, मुझे उनको दिखाओ जिनको तुमने साझीदार बनाकर अल्लाह के साथ मिला रखा है। कदापि नहीं, बल्कि वह अल्लाह अत्यन्त शक्तिशाली है, विवेक वाला है।

(28) और हमने तुमको समस्त मनुष्यों के लिए शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (29) और वह कहते हैं कि यह वादा कब होगा यदि तुम सच्चे हो। (30) कहो कि तुम्हारे लिए एक विशेष दिन का वादा है कि उससे न एक क्षण पीछे हट सकते और न आगे बढ़ सकते।

(31) और जिन लोगों ने अवज्ञा की, वह कहते हैं कि हम कदापि न इस क़ुरआन को मानेंगे और न उसको जो उसके आगे है। और यदि तुम उस समय को देखो जबकि यह अत्याचारी अपने पालनहार के समक्ष खड़े किये जायेंगे। एक-दूसरे पर बात डालता होगा। जो लोग निर्बल समझे जाते थे वह बड़े बनने वालों से कहेंगे कि यदि तुम न होते तो हम अवश्य ईमान वाले होते। (32) बड़े बनने वाले निर्बल लोगों को उत्तर देंगे। क्या हमने तुमको सन्मार्ग से रोका था। जबकि वह तुमको पहुँच चुकी थी, बल्कि तुम स्वंय अपराधी हो। (33) और दुर्बल लोग बड़े लोगों से कहेंगे, नहीं बल्कि तुम्हारी रात दिन की युक्तियों से, जबकि तुम हमसे कहते थे कि हम अल्लाह के साथ अवज्ञा करें और उसके साथ साझीदार ठहरायें। और वह अपने पश्चाताप को छिपायेंगे जबकि वह यातना देखेंगे। और हम इन्कार करने वालों की गर्दन में तौक़ (लोहे के पट्टे) डालेंगे। वह वही बदला पायेंगे जो वह करते थे।

(34) और हमने जिस नगर में भी कोई डराने वाला (सचेतकर्ता) भेजा तो उसके सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि हम तो उसके इन्कार करने वाले हैं जो देकर तुम भेजे गये हो। (35) और उन्होंने कहा कि हम सम्पत्ति और सन्तान में अधिक हैं, और हम कभी दण्ड पाने वाले नहीं। (36) कहो कि मेरा पालनहार जिसको चाहता है अधिक जीविका प्रदान करता है और जिसको चाहता है कम कर देता है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (37) और तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान वह चीज़ नहीं जो पद में तुमको हमारा निकटवर्ती बना दे, हाँ जो ईमान लाया और उसने अच्छे कर्म किये, ऐसे लोगों के लिए उनके कर्म का दो गुना बदला है। और वह ऊँचे घरों में सन्तोषपूर्वक रहेंगे। (38) और जो लोग हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सक्रिय हैं, वह यातना में प्रवेश किये जायेंगे।

(39) कहो कि मेरा पालनहार अपने बन्दों में से जिसको चाहता है विस्तृत जीविका प्रदान करता है और जिसको चाहता है संकुचित कर देता है। और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे तो वह उसका बदला देगा। और वह अच्छी जीविका देने वाला है।

(40) और जिस दिन वह उन सबको एकत्र करेगा फिर वह फ़रिश्तों से पूछेगा, क्या यह लोग तुम्हारी उपासना करते थे। (41) वह कहेंगे पवित्र है तेरी हस्ती, हमारा सम्बन्ध तुझसे है न कि उन लोगों से, बल्कि ये जिन्नों की उपासना करते थे। उनमें से अधिकतर लोग उन्हीं के मोमिन (आस्थावान) थे। (42) अतः आज तुममें से कोई एक दूसरे को न लाभ पहुँचा सकता है और न हानि। और हम अत्याचारियों से कहेंगे कि आग की यातना चखो जिसको तुम झुठलाते थे।

(43) और जब उनको हमारी खुली हुई आयतें सुनायी जाती हैं तो वह कहते हैं कि यह तो मात्र एक व्यक्ति है जो चाहता है कि तुमको उनसे रोक दे जिनकी तुम्हारे बाप-दादा उपासना करते थे। और उन्होंने कहा, यह तो मात्र एक झूठ है गढ़ा हुआ। और उन अवज्ञाकारियों के समक्ष जब सत्य आया तो उन्होंने कहा कि यह तो मात्र खुला हुआ जादू है। (44) और हमने उनको किताबें नहीं दी थीं जिनको वह पढ़ते हों। और हमने तुमसे पहले उनके पास कोई डराने वाला नहीं भेजा। (45) और इनसे पहले वालों ने भी झुठलाया और यह उसके दसवें भाग को भी नहीं पहुँचे जो हमने उनको प्रदान किया था। अतः उन्होंने मेरे सन्देष्टाओं को झुठलाया, तो कैसी थी उन पर मेरी यातना

(46) कहो, मैं तुमको एक बात का उपदेश करता हूँ, यह कि तुम अल्लाह के लिए खड़े हो जाओ, दो-दो और एक-एक, फिर विचार करो कि तुम्हारे मित्र को उन्माद नहीं है। वह तो मात्र एक कठोर यातना से पूर्व तुमको डराने वाला है। (47) कहो कि मैंने तुमसे कुछ बदला मांगा हो तो वह तुम्हारा ही है। मेरा बदला तो मात्र अल्लाह पर है। और वह हर चीज़ पर गवाह है।

(48) कहो कि मेरा पालनहार सत्य को (झूठ पर) मारेगा, वह छिपी चीज़ों को जानने वाला है। (49) कहो कि सत्य आ गया और झूठ न प्रारम्भ करता

है और न पुनरावृत्ति ही करता है। (50) कहो कि यदि मैं पथभ्रष्टता पर हूँ तो मेरी पथभ्रष्टता की विपत्ति मुझ पर है और यदि मैं सन्मार्ग पर हूँ तो यह उस वह्य (श्रुति) के बल पर है जो मेरा पालनहार मेरी ओर से भेज रहा है। निस्सन्देह वह सुनने वाला है, निकट है।

(51) और यदि तुम देखो, जबकि जब ये घबराये हुए होंगे। अतः वह भाग न सकेंगे और निकट ही से पकड़ लिये जायेंगे। (52) और वह कहेंगे कि हम उस पर ईमान लाये। और इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहाँ। (53) और इससे पहले उन्होंने इसको झुठलाया। और बिन देखे दूरवर्ती स्थान से बातें बनाते रहे। (54) और उनकी और उनकी अभिलाषा के बीच ओट कर दी जायेगी, जैसा कि इससे पहले इनके सहपंथियों के साथ किया गया। वह बड़े उलझन वाले सन्देह में पड़े रहे।

35. सूरह अल-फ़ातिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) प्रशंसा अल्लाह के लिए है, आकाशों और पृथ्वी की रचना करने वाला, फ़रिश्तों को सन्देशवाहक बनाने वाला जिनके पंख हैं दो-दो और तीन-तीन और चार-चार। वह रचना में जो चाहे अधिक कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (2) अल्लाह जो दयालुता लोगों के लिए खोले तो कोई उसका रोकने वाला नहीं। और जिसको वह रोक ले तो कोई उसको खोलने वाला नहीं। और वह शक्तिशाली है, विवेक वाला है।

(3) ऐ लोगों, अपने ऊपर अल्लाह के उपकार को याद करो। क्या अल्लाह के अतिरिक्त कोई और रचियता है जो तुमको आकाश और धरती से जीविका प्रदान करता है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। तो तुम कहाँ से धोखा खा रहे हो। (4) और यदि यह लोग तुमको झुठलायें तो तुमसे पहले भी बहुत से सन्देष्टा झुठलाये जा चुके हैं। और समस्त मामले अल्लाह ही की ओर लौटने वाले हैं।

(5) ऐ लोगों, निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। तो संसार का जीवन

तुम्हें धोखे में न डाले। और न वह बड़ा धोखा देनेवाला तुमको अल्लाह के सम्बन्ध में धोखा देने पाये। (6) निस्सन्देह शैतान तुम्हारा शत्रु है तो तुम उसको शत्रु ही समझो, वह तो अपने समूह को इसीलिए बुलाता है कि वह नरक वालों में से हो जायें। (7) जिन लोगों ने अवज्ञा की, उनके लिए कठोर दण्ड है। और जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किए, उनके लिए क्षमा है और बड़ा बदला है।

(8) क्या ऐसा व्यक्ति जिसको उसका बुरा कर्म अच्छा करके दिखाया गया, फिर वह उसको अच्छा समझने लगा, तो अल्लाह जिसको चाहता है भटका देता है और जिसको चाहता है मार्गदर्शन देता है। अतः उन पर दुखी होकर तुम अपने को व्यथित न करो। अल्लाह को ज्ञात है जो कुछ वह करते हैं।

(9) और अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है। फिर वह बादल को उठाती हैं। फिर हम उसको एक मृत देश की ओर ले जाते हैं। अतः हमने उससे धरती को उसके मृत हो जाने के पश्चात फिर जीवित कर दिया। इसी प्रकार होगा दूसरी बार का जी उठना। (10) जो व्यक्ति सम्मान चाहता हो तो संपूर्ण सम्मान अल्लाह के लिए है। उसकी ओर पवित्र कलाम (वाक्य) चढ़ता है और अच्छा कर्म उसको ऊपर उठाता है और जो लोग बुरी युक्तियाँ कर रहे हैं, उनके लिए कठोर दण्ड है और उनकी युक्तियाँ व्यर्थ होकर रहेंगी।

(11) और अल्लाह ने तुमको मिट्टी से पैदा किया। फिर पानी की बूँद से, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया। और कोई महिला न गर्भवती होती है और न जन्म देती है परन्तु उसके ज्ञान से। और न कोई आयु वाला दीघार्यु प्राप्त करता है और न किसी की आयु घटती है परन्तु वह एक पंजिका में दर्ज है। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है।

(12) और दोनों समुद्र समान नहीं। यह मीठा है, प्यास बुझाने वाला, पीने में अच्छा लगने वाला। और यह नमकीन खारा है। और तुम दोनों से ताज़ा माँस खाते हो और सौन्दर्य की वस्तुएँ निकालते हो जिसको तुम पहनते हो। और तुम देखते हो जहाजों को कि वह उसमें फाड़ते हुए चलते हैं। ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो और ताकि तुम आभार प्रकट करो। (13) वह प्रवेश करता है रात को दिन में और वह प्रवेश करता है दिन को रात में। और उसने

सूरज और चाँद को वशीभूत कर दिया है। प्रत्येक चलता है एक निर्धारित अवधि के लिए। यह अल्लाह ही तुम्हारा पालनहार है, उसी के लिए बादशाही है। और उसके अतिरिक्त तुम जिन्हे पुकारते हो, वह खजूर की गुठली के एक छिलके के भी स्वामी नहीं। (14) यदि तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार नहीं सुनेंगे। और यदि वह सुनें तो वह तुम्हारी पुकार के उत्तर में कुछ नहीं कर सकते। और वह क़ियामत के दिन तुम्हारे शिर्क (साझी ठहराने) का इन्कार करेंगे। और एक भिज्ञ की भाँति कोई तुमको नहीं बता सकता।

(15) ऐ लोगों, तुम अल्लाह के मोहताज हो और अल्लाह तो निस्पृह (बेमोहताज) है, प्रशंसा वाला है। (16) यदि वह चाहे तो तुमको ले जाये और एक नयी रचना ले आये। (17) और यह अल्लाह के लिए कुछ कठिन नहीं। (18) और कोई उठाने वाला दूसरे का बोझ न उठायेगा। और यदि कोई भारी बोझ वाला अपना बोझ उठाने के लिए पुकारे तो उसमें से तनिक भी न उठाया जायेगा, यद्यपि वह निकट सम्बन्ध वाला क्यों न हो। तुम तो मात्र उन्हीं लोगों को डरा सकते हो। जो बिन देखे अपने पालनहार से डरते हैं और नमाज़ स्थापित करते हैं। और जो व्यक्ति पवित्र होता है, वह अपने लिए पवित्र होता है और अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है।

(19) और अन्धा और आँखों वाला समान नहीं। (20) और न अँधेरा और न उजाला। (21) और न छाया और न धूप। (22) और जीवित और मृत्यु समान नहीं हो सकते। निस्सन्देह अल्लाह सुनाता है जिसको वह चाहता है। और तुम उनको सुनाने वाले नहीं बन सकते जो कब्रो में हैं। (23) तुम तो मात्र एक चेतावनी देने वाले हो। (24) हमने तुमको सत्य के साथ भेजा है। शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर। और कोई उम्मत (क़ौम) ऐसी नहीं जिसमें कोई डराने वाला न आया हो। (25) और यदि यह लोग तुमको झुठलाते हैं तो इनसे पहले जो लोग हुए हैं, उन्होंने भी झुठलाया गया। उनके पास उनके सन्देष्टा प्रत्यक्ष प्रमाण और सहीफे और प्रकाशमय पुस्तक लेकर आये। (26) फिर जिन लोगों ने न माना उनको मैंने पकड़ लिया, तो देखो कि कैसी हुई उनके ऊपर मेरी यातना।

(27) क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा

फिर हमने उससे विभिन्न रंगों के फल पैदा कर दिये। और पहाड़ों में भी सफेद और लाल, विभिन्न रंगों के टुकड़े हैं। और गहरे काले भी। (28) और इसी प्रकार मनुष्यों और जीवधारियों और मवेशियों में भी भिन्न रंग के हैं। अल्लाह से उसके बन्दों में से मात्र वही लोग डरते हैं जो ज्ञान वाले हैं। निस्सन्देह अल्लाह शक्तिशाली है, क्षमा करने वाला है।

(29) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और नमाज़ स्थापित करते हैं और जो कुछ हमने उनको प्रदान किया है उसमें से छिपे और खुले ख़र्च करते हैं, वह ऐसे व्यापार के प्रत्याशी हैं जिसमें कभी मन्दी नहीं आयेगी। (30) ताकि अल्लाह उनको उनका पूरा बदला दे। और उनके लिए अपनी कृपा से और अधिक प्रदान कर दे। निस्सन्देह वह क्षमा करने वाला है और गुणग्राही है। (31) और हमने तुम्हारी ओर जो पुस्तक वह्य की (भेजी) है वह सत्य है, उसकी पुष्टि करने वाली है जो इसके पहले से मौजूद है। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों की ख़बर रखने वाला है, देखने वाला है।

(32) फिर हमने किताब का उत्तराधिकारी बनाया उन लोगों को जिनको हमने अपने बन्दों में से चुन लिया। अतः उनमें से कुछ अपने आप पर अत्याचार करने वाले हैं और उनमें से कुछ मध्य मार्ग (बीच के मार्ग) पर हैं। और उनमें से कुछ अल्लाह की कृपा से भलाईयों में आगे जाने वाले हैं। यही सबसे बड़ी कृपा है। (33) सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनमें यह लोग प्रवेश होंगे, वहाँ उनको सोने के कंगन और मोती पहनाये जायेंगे, और वहाँ उनका परिधान रेशम होगा। (34) और वह कहेंगे, शुक्र है अल्लाह का उसने हमसे दुख को दूर किया। निस्सन्देह हमारा पालनहार क्षमा करने वाला गुणग्राही है। (35) जिसने हमको अपनी कृपा से वास करने के घर में उतारा, उसमें हमको न कोई कष्ट पहुँचेगा और न कभी थकान लगेगी।

(36) और जिन्होंने अवज्ञा की, उनके लिए नरक की आग है, न उनको मृत्यु आयेगी न उनका अन्त होगा और न नर्क की यातना ही उनसे हल्की की जायेगी। हम प्रत्येक अवज्ञाकारी को ऐसा ही दण्ड देते हैं। (37) और वह लोग उसमें चिल्लायेंगे ऐ हमारे पालनहार, हमको निकाल ले। हम अच्छा कर्म करेंगे, उससे भिन्न जो हम किया करते थे। क्या हमने तुमको इतनी आयु न

दी कि जिसको समझना होता, वह समझ सकता। और तुम्हारे पास डराने वाला आया। अब चखो कि अत्याचारियों का कोई सहायक नहीं।

(38) अल्लाह आकाशों और पृथ्वी के परोक्ष को जानने वाला है। निस्सन्देह वह हृदय की बातों से भी भिज्ञ है। (39) वही है जिसने तुमको धरती पर आबाद किया। तो जो व्यक्ति इन्कार करेगा उसका इन्कार उसी पर पड़ेगा। और अवज्ञाकारियों के लिए उनका इन्कार, उनके पालनहार के निकट, क्रोध ही के बढ़ने का कारण होता है। और अवज्ञाकारियों के लिए उनका इन्कार उनके घाटे ही में वृद्धि करेगा। (40) कहो, तनिक तुम देखो अपने उन साझीदारों को जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, मुझको दिखाओ कि उन्होंने धरती में से क्या बनाया है। अथवा उनकी आकाशों में कोई हिस्सेदारी है। अथवा हमने उनको कोई पुस्तक प्रदान की है तो वह उसके किसी प्रमाण पर हैं, बल्कि यह अत्याचारी एक दूसरे से मात्र धोखे की बातों का वादा कर रहे हैं। (41) निस्सन्देह अल्लाह ही आकाशों और धरती को थामे हुए है कि वह टल न जायें। और यदि वह टल जायें तो उसके अतिरिक्त कोई और उनको थाम नहीं सकता। निस्सन्देह वह सहनशील है, क्षमा करने वाला है।

(42) और उन्होंने अल्लाह की पक्की क़समें खायी थीं कि यदि उनके पास कोई डराने वाला आया तो वह प्रत्येक उम्मत से अधिक मार्गदर्शन स्वीकार करने वाले होंगे। फिर जब उनके पास एक डराने वाला आया तो मात्र उनकी दूरी ही में वृद्धि हुई। (43) पृथ्वी पर अपने को बड़ा समझना, और बुरी युक्तियाँ करना। और बुरी युक्तियों की विपत्ति तो बुरी युक्तियाँ करने वालों ही पर पड़ती है। तो क्या यह उसी विधान की प्रतीक्षा में हैं जो अगले लोगों के सम्बन्ध में प्रकट हुआ। अतः तुम अल्लाह के विधान में न कोई परिवर्तन पाओगे और न अल्लाह के विधान को टलता हुआ पाओगे। (44) क्या यह लोग धरती पर चले फिरे नहीं कि वह देखते कि कैसा हुआ अन्त उन लोगों का जो इनसे पहले आ चुके हैं, और वह शक्ति में इनसे बढ़े हुए थे। और अल्लाह ऐसा नहीं कि कोई चीज़ उसको विवश कर दे, न आसमानों में और न धरती में। निस्सन्देह वह ज्ञान वाला है, सामर्थ्यवाला है।

(45) और यदि लोगों के कर्मों पर अल्लाह उनको पकड़ता तो धरती पर

वह एक जीवधारी को भी न छोड़ता, परन्तु वह उनको एक निर्धारित अवधि तक अवकाश देता है। फिर जब उनकी अवधि पूरी हो जायेगी तो अल्लाह अपने बन्दों को स्वंय देखने वाला है।

36. सूरह या.सीन.

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) या. सीन. (2) सौगन्ध है विवेकपूर्ण क़ुरआन की। (3) निस्सन्देह तुम सन्देष्टाओं में से हो। (4) अत्यन्त सीधे मार्ग पर। (5) यह सर्वशक्तिमान और दयावान अल्लाह की ओर से उतारा गया है। (6) ताकि तुम उन लोगों को डरा दो जिनके पूर्वजों को नहीं डराया गया। अतः वह अनभिज्ञ हैं।

(7) उनमें से अधिकतर लोगों पर बात सिद्ध हो चुकी है तो वह ईमान नहीं लायेंगे। (8) हमने उनकी गर्दनों में तौक़ (पट्टे) डाल दिये हैं। जो ठोढ़ियों तक हैं, अतः उनके सिर ऊँचे हो रहे हैं। (9) और हमने एक ओट उनके सामने कर दी है और एक ओट उनके पीछे कर दी है। फिर हमने उनको ढाँक दिया तो उनको दिखाई नहीं देता। (10) और उनके लिए समान है, तुम उनको डराओ अथवा न डराओ, वह ईमान नहीं लायेंगे। (11) तुम तो मात्र उस व्यक्ति को डरा सकते हो जो उपदेश पर चले और अल्लाह से डरे बिन देखे। तो ऐसे व्यक्ति को क्षमा की और सम्मानपूर्ण पुण्य की शुभ सूचना दे दो।

(12) निश्चय ही हम मुर्दों को जीवित करेंगे। और हम लिख रहे हैं जो उन्होंने आगे भेजा और जो उन्होंने पीछे छोड़ा। और हर चीज़ हमने दर्ज कर ली है एक खुली हुई किताब में। (13) और उदाहरण के रूप में इनको बस्ती वालों का वृत्तान्त सुनाओ, जबकि उसमें सन्देष्टा आये। (14) जबकि हमने उनके पास दो सन्देष्टा भेजे तो उन्होंने दोनों को झुठलाया, फिर हमने तीसरे से उनकी सहायता की, उन्होंने कहा कि हम तुम्हारे पास भेजे गये हैं। (15) लोगों ने कहा कि तुम तो हमारे ही जैसे मनुष्य हो और रहमान ने कोई चीज़ नहीं उतारी है, तुम मात्र झूठ बोलते हो। (16) उन्होंने कहा कि हमारा पालनहार जानता है कि हम निश्चित रुप से तुम्हारे पास भेजे गये हैं।

(17) और हमारे ज़िम्मे तो केवल स्पष्ट रूप से पहुँचा देना है। (18) लोगों ने कहा कि हम तो तुमको अशुभ समझते हैं, यदि तुम लोग नहीं माने तो हम तुमको पत्थरों से मार डालेंगे और तुमको हमारी ओर से कठोर कष्ट पहुँचेगा। (19) उन्होंने कहा कि तुम्हारा अपशकुन तुम्हारे साथ है, क्या इतनी बात पर कि तुमको उपदेश दिया गया। बल्कि तुम सीमा से निकल जाने वाले लोग हो।

(20) और नगर के दूरवर्ती स्थान से एक व्यक्ति दौड़ता हुआ आया। उसने कहा, ऐ मेरी क़ौम, सन्देष्टाओं का अनुसरण करो। (21) इन लोगों का अनुसरण करो जो तुमसे कोई बदला नहीं माँगते और वह उचित मार्ग पर हैं।

(22) और मैं क्यों न उपासना करूँ उस हस्ती की जिसने मुझको पैदा किया और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे। (23) क्या मैं उसके अतिरिक्त दूसरों को उपास्य बनाऊँ। यदि रहमान मुझको कोई कष्ट पहुँचाना चाहे तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम न आयेगी और न वह मुझको छुड़ा सकेंगे। (24) निस्सन्देह उस समय मैं एक स्पष्ट पथभ्रष्टता में हूँगा। (25) मैं तुम्हारे पालनहार पर ईमान लाया तो तुम भी मेरी बात सुन लो। (26) इरशाद हुआ कि जन्नत मैं प्रवेश हो जाओ। उसने कहा, काश, मेरी क़ौम जानती। (27) कि मेरे पालनहार ने मुझको क्षमा प्रदान कर दी और मुझको सम्मानित लोगों में सम्मिलित कर दिया।

(28) और उसके बाद उसकी क़ौम पर हमने आकाश से कोई सेना नहीं उतारी, और हम सेना नहीं उतारा करते। (29) बस एक धमाका हुआ तो अचानक वह सब बुझ कर रह गये। (30) अफ़सोस है बन्दों के ऊपर, जो सन्देष्टा भी उनके पास आया, वह उसका उपहास ही करते रहे। (31) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने उनसे पहले कितनी ही क़ौमें नष्ट कर दीं। अब वह उनकी ओर वापस आने वाले नहीं। (32) और उनमें से कोई ऐसा नहीं जो एकत्र होकर हमारे पास उपस्थित न किया जाये।

(33) और एक निशानी उनके लिए मृत भूमि है। उसको हमने जीवित किया और उससे हमने अनाज निकाला। अतः वह उसमें से खाते हैं। (34) और उसमें हमने खजूर के और अंगूर के बाग़ बनाये। और उसमें हमने स्रोत जारी किये। (35) ताकि लोग उसके फल खायें। और उसको

उनके हाथों ने नहीं बनाया। तो क्या वह आभार प्रकट नहीं करते। (36) पवित्र है वह हस्ती जिसने समस्त चीज़ों के जोड़े बनाये। उनमें से भी जिनको धरती उगाती है और स्वंय उनके अन्दर से भी। और उनमें से भी जिनको वह नहीं जानते।

(37) और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उससे दिन को खींच लेते हैं तो वह अँधेरे में रह जाते हैं। (38) और सूरज, वह अपने स्थिर मार्ग पर चलता रहता है। यह सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ का बाँधा हुआ पैमाना है। (39) और चाँद के लिए हमने उसकी मंज़िलें निर्धारित कर दीं। यहाँ तक कि वह ऐसा रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी शाख़ा। (40) न सूरज के वश में है कि वह चाँद को पकड़ ले और न रात, दिन से पहले आ सकती है। और सब एक-एक कक्ष में तैर रहे हैं।

(41) और एक निशानी इनके लिए यह है कि हमने इनकी नस्ल को भरी हुई नाव में सवार किया। (42) और हमने उनके लिए उसी जैसी और चीज़ें पैदा कीं जिन पर सवार होते हैं। (43) और यदि हम चाहें तो इनको डुबा दें, फिर न कोई इनकी पुकार सुनने वाला हो और न वह बचाये जा सकें। (44) परन्तु यह हमारी दयालुता है और उनको एक निर्धारित समय तक लाभ देना है।

(45) और जब उनसे कहा जाता है कि उससे डरो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है ताकि तुम पर दया की जाये। (46) और उनके पालनहार की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आती जिससे वह मुँह न मोड़ते हों। (47) और जब उनसे कहा जाता है कि अल्लाह ने जो कुछ तुमको प्रदान किया है, उसमें से ख़र्च करो तो जिन लोगों ने इन्कार किया, वह ईमान लाने वालों से कहते हैं कि हम ऐसे लोगों को खिलायें जिनको अल्लाह चाहता हो तो वह उनको खिला देता। तुम लोग तो स्पष्ट पथभ्रष्टता में हो। (48) और वह कहते हैं कि यह वादा कब होगा यदि तुम सच्चे हो। (49) यह लोग बस एक चिंघाड़ का रास्ता देख रहे हैं जो इनको आ पकड़ेगी। और वह झगड़ते ही रह जायेंगे। (50) फिर वह न कोई वसीयत कर पायेंगे और न अपने लोगों की ओर लौट सकेंगे। (51) और सूर (महाशंख) फूँका जायेगा तो अचानक वह क़ब्रों से अपने

पालनहार की ओर चल पड़ेंगे। (52) वह कहेंगे, हाय हमारा दुर्भाग्य, हमारी क़ब्र से किसने हमको उठाया- यह वही है जिसका रहमान ने वादा किया था और पैग़म्बरों ने सच कहा था। (53) बस वह एक चिंघाड़ होगी, फिर अचानक सभी एकत्र होकर हमारे पास उपस्थित कर दिये जायेंगे।

(54) अतः आज के दिन किसी व्यक्ति पर कोई अत्याचार न होगा, और तुमको वही बदला मिलेगा जो तुम करते थे। (55) निस्सन्देह जन्नत के लोग आज अपने मश्ग़लों (गतिविधियों) में प्रसन्न होंगे। (56) वह और उनकी पत्नियाँ, छाया में तख़्तों पर तकिया लगाये हुए बैठे होंगे। (57) उनके लिए वहाँ फल होंगे और उनके लिए वह सब कुछ होगा जो वह माँगेंगे। (58) उनको सलाम कहलाया जायेगा दयावान पालनहार की ओर से।

(59) और ऐ अपराधियो, आज तुम अलग हो जाओ। (60) ऐ आदम की सन्तान, क्या मैंने तुमको ताकीद (सचेत) नहीं कर दी थी। कि तुम शैतान की उपासना न करना। निस्सन्देह वह तुम्हारा खुला हुआ शत्रु है। (61) और यह कि तुम मेरी ही उपासना करना, यही सीधा मार्ग है। (62) और उसने तुममें से एक बड़े समूह को भटका दिया। तो क्या तुम समझते नहीं थे। (63) यह है नरक, जिसका तुम से वादा किया जाता था। (64) अब अपनी अवज्ञा के बदले इसमें प्रवेश हो जाओ। (65) आज हम इनके मुँह पर मुहर लगा देंगे और इनके हाथ हमसे बोलेंगे और इनके पैर गवाही देंगे जो कुछ यह लोग करते थे। (66) और यदि हम चाहते तो उनकी आँखों को मिटा देते, फिर वह मार्ग की ओर दौड़ते तो इनको कहाँ दिखाई देता। (67) और यदि हम चाहते तो इनके स्थान पर ही इनके रूप परिवर्तित कर देते तो वह न आगे बढ़ सकते और न पीछे लौट सकते। (68) और हम जिसकी आयु अधिक कर देते हैं, उसको उसकी आकृति में पीछे लौटा देते हैं तो क्या वह समझते नहीं।

(69) और हमने इसको शेअर (कविता) नहीं सिखाया और न यह इसके योग्य है। यह तो मात्र एक उपदेश है और स्पष्ट क़ुरआन है। (70) ताकि वह उस व्यक्ति को सचेत कर दे जो जीवित हो और इन्कार करने वालों पर तर्क स्थापित हो जाये।

(71) क्या उन्होंने नहीं देखा कि हमने अपने हाथ की बनायी हुई

चीज़ों में से उनके लिए मवेशी पैदा किये, तो वह उनके स्वामी हैं। (72) और हमने उनको उनका अधीन कर दिया, तो उनमें से कोई उनकी सवारी है और किसी को वह खाते हैं। (73) और उनके लिए उनमें लाभ हैं और पीने की ची़जे भी, तो क्या वह आभार प्रकट नहीं करते। (74) और उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त दूसरे उपास्य बनाये कि संभवतः उनकी सहायता की जाये। (75) वह उनकी सहायता न कर सकेंगे, और वह उनकी सेना बन कर उपस्थित किये जायेंगे। (76) तो उनकी बात तुमको दुखी न करे, हम जानते हैं जो कुछ वह छिपाते हैं और जो कुछ वह प्रकट करते हैं।

(77) क्या मनुष्य ने नहीं देखा कि हमने उसको एक बूँद से पैदा किया, फिर वह स्पष्ट झगड़ालू बन गया। (78) और वह हमारे लिये उदाहरण बयान करता है और वह अपनी रचना को भूल गया। वह कहता है कि हड्डियों को कौन जीवित करेगा जबकि वह चूर-चूर हो गयी हों। (79) कहो, उनको वही जीवित करेगा जिसने इनको पहली बार पैदा किया। और वह हर प्रकार से पैदा करना जानता है। (80) वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे वृक्ष से आग पैदा कर दी। फिर तुम उससे आग जलाते हो। (81) क्या जिसने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया, वह इस पर सामर्थ्य नहीं रखता कि इन जैसों को पैदा कर दे। हाँ वह सामर्थ्य रखता है। और वही है वास्तविक पैदा करने वाला, जानने वाला। (82) उसका मामला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का निश्चय करता है तो कहता है कि हो जा तो वह हो जाती है। (83) अतः पवित्र है वह हस्ती जिसके हाथ में प्रत्येक चीज़ का अधिकार है और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।

37. सूरह अस-साफ़्फ़ात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है क़तार दर क़तार पंक्तिबद्ध फ़रिश्तों की। (2) फिर डाँटने वालों की झिड़क कर (3) फिर उनकी जो उपदेश सुनाने वाले हैं। (4) कि तुम्हारा उपास्य एक ही है। (5) आकाशों और धरती का पालनहार

और जो कुछ उनके मध्य है और समस्त पूर्व दिशाओं का पालनहार। (6) हमने संसार के आकाश को तारों से सुशोभित किया है। (7) और प्रत्येक शैतान विद्रोही से उसको सुरक्षित किया है।

(8) वह सर्वोच्च दरबार की ओर कान नहीं लगा सकते और वह प्रत्येक दिशा से मारे जाते हैं। (9) भगाने के लिए, और उनके लिए एक अन्तहीन यातना है। (10) परन्तु जो शैतान कोई बात उचक ले तो एक दहकता हुआ अंगारा उसका पीछा करता है।

(11) अतः इनसे पूछो कि इनकी रचना अधिक कठिन है या उन चीज़ों की जिनकी रचना हमने की है। हमने उनको चिपकती हुई मिट्टी से रचा है। (12) बल्कि तुम आश्चर्य करते हो और वह उपहास कर रहे हैं। (13) और जब उनको समझाया जाता है तो वह समझते नहीं। (14) और जब वह कोई निशानी देखते हैं तो वह उसको हँसी में टाल देते हैं। (15) और कहते हैं कि यह तो मात्र स्पष्ट जादू है। (16) क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और ह‍ाियाँ बन जायेंगे तो फिर हम उठाये जायेंगे। (17) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी। (18) कहो कि हाँ, और तुम अपमानित भी होगे।

(19) तो वह तो एक झिड़की होगी, फिर उसी समय वह देखने लगेंगे। (20) और वह कहेंगे कि हाय हमारा दुर्भाग्य, यह तो बदले का दिन है। (21) यह वही निर्णय का दिन है जिसको तुम झुठलाते थे। (22) एकत्र करो उनको जिन्होंने अत्याचार किया और उनके साथियों को और उन उपास्यों को। (23) जिनकी वह अल्लाह के अतिरिक्त उपासना करते थे; फिर उन सबको नरक का मार्ग दिखाओ। (24) और उनको ठहराओ, उनसे कुछ पूछना है। (25) तुमको क्या हुआ कि तुम एक दूसरे की सहायता नहीं करते। (26) बल्कि आज तो वह आज्ञाकारी हैं।

(27) और वह एक-दूसरे की ओर सम्बोधित करके प्रश्नोत्तर करेंगे। (28) कहेंगे, तुम हमारे पास दाहिनी ओर से आते थे। (29) वह उत्तर देंगे, बल्कि तुम स्वंय ईमान लाने वाले नहीं थे। (30) और हमारा तुम्हारे ऊपर कोई वश न था, बल्कि तुम स्वंय ही विद्रोही लोग थे। (31) अतः हम सब पर हमारे पालनहार की बात पूरी होकर रही, हमको इसका स्वाद चखना ही है।

(32) हमने तुमको भटकाया, हम स्वंय भी भटके हुए थे। (33) अतः वह सब उस दिन यातना में एक दूसरे के सहभागी होंगे।

(34) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते हैं। (35) यह वह लोग थे कि जब उनसे कहा जाता कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं तो वह घमण्ड करते थे। (36) और वह कहते थे कि क्या हम एक उन्मादी कवि के कहने से अपने उपास्यों को छोड़ दें। (37) बल्कि वह सत्य लेकर आया है और वह सन्देष्टाओं की भविष्यवाणियों की पुष्टि है (38) निस्सन्देह तुमको कष्टप्रद यातना चखनी होगी। (39) और तुमको उसी का बदला दिया जा रहा है जो तुम करते थे।

(40) परन्तु जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं। (41) उनके लिए नियत जीविका होगी। (42) मेवे (फल), और वह अत्यन्त सम्मानपूर्वक रहेंगे। (43) सुखपूर्ण बाग़ों में। (44) तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे।

(45) उनके पास ऐसा प्याला लाया जायेगा जो बहती हुई शराब से भरा जायेगा। (46) स्वच्छ, पारदर्शी पीने वालों के लिए स्वाद। (47) न उसमें कोई हानि होगी और न उससे बुद्धि भ्रष्ट होगी। (48) और उनके पास नीची दृष्टि रखने वाली, बड़ी आँखों वाली महिलाएँ होंगी। (49) मानो कि वह अण्डे हैं जो छिपे हुए रखे हों।

(50) फिर वह एक-दूसरे की ओर सम्बोधित होकर बात करेंगे। (51) उनमें से एक कहने वाला कहेगा कि मेरा एक परिचित था। (52) वह कहा करता था कि क्या तुम भी पुष्टि करने वालों में से हो। (53) क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी और हडि्डयाँ हो जायेंगे तो क्या हमको बदला मिलेगा। (54) कहेगा, क्या तुम झाँक कर देखोगे। (55) तो वह झाँकेगा और वह उसको नरक के मध्य में देखेगा। (56) कहेगा कि अल्लाह की सौगन्ध, तुम तो मुझको नष्ट कर देने वाले थे। (57) और यदि मेरे पालनहार की कृपा न होती तो मैं भी उन्हीं लोगों में होता जो पकड़े हुए आये हैं। (58) क्या अब हमको मरना नहीं है। (59) परन्तु पहली बार जो हम मर चुके और हमको यातना न होगी। (60) निस्सन्देह यही बड़ी सफलता है। (61) ऐसी ही सफलता के लिए कर्म करने वालों को कर्म करना चाहिए।

(62) यह आतिथ्य अच्छा है, अथवा जक़्क़ूम का वृक्ष। (63) हमने उसको अत्याचारियों के लिए परीक्षा बनाया है। (64) वह एक वृक्ष है जो नरक के तल से निकलता है। (65) उसका फल ऐसा है जैसे शैतान का सिर। (66) तो वह लोग उससे खायेंगे। फिर उसी से पेट भरेंगे। (67) फिर उनको खौलता हुआ पानी मिलाकर दिया जायेगा। (68) फिर उनकी वापसी नरक ही की ओर होगी। (69) उन्होंने अपने बाप दादा को पथभ्रष्टता में पाया। (70) फिर वह भी उन्हीं के पदचिन्हों पर दौड़ते रहे। (71) और उनसे पहले भी अगले लोगों में अधिकतर पथभ्रष्ट हुए। (72) और हमने उनमें भी डराने वाले भेजे। (73) तो देखो, उन लोगों का अन्त कैसा हुआ जिनको डराया गया था। (74) परन्तु वह जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे थे।

(75) और हमको नूह ने पुकारा तो हम क्या ख़ूब पुकार सुनने वाले हैं। (76) और हमने उसको और उसके लोगों को बहुत बड़े दुख से बचा लिया। (77) और हमने उसके वंश को शेष रहने वाला बनाया। (78) और हमने उसके मार्ग पर पिछलों में एक समूह को छोड़ा। (79) सलाम है नूह पर सम्पूर्ण संसार वालों में। (80) हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। (81) निस्सन्देह वह हमारे आस्थावान बन्दों में से था। (82) फिर हमने दूसरों को डुबा दिया।

(83) और उसी के मार्ग वालों में से इब्राहीम भी था। (84) जबकि वह आया अपने पालनहार के पास शुद्ध हृदय के साथ। (85) जब उसने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि तुम किस चीज़ की उपासना करते हो। (86) क्या तुम अल्लाह के अतिरिक्त मनगढ़ंत उपास्यों को चाहते हो। (87) तो संसार के स्वामी के सम्बन्ध में तुम्हारा क्या विचार है। (88) फिर इब्राहीम ने तारों पर एक दृष्टि डाली। (89) तो कहा कि मैं अस्वस्थ हूँ। (90) फिर वह लोग उसको छोड़ कर चले गये (91) तो वह उनकी मूर्तियों में घुस गया, कहा कि क्या तुम खाते नहीं हो। (92) तुमको क्या हुआ कि तुम कुछ बोलते नहीं। (93) फिर उनको मारा पूरी शक्ति के साथ। (94) फिर लोग उसके पास दौड़े हुए आये।

(95) इब्राहीम ने कहा, क्या तुम लोग उन चीज़ों को पूजते हो जिनको

तुम स्वंय तराशते हो (96) और अल्लाह ही ने पैदा किया है तुमको भी और उन चीज़ों को भी जिनको तुम बनाते हो। (97) उन्होंने कहा, इसके लिए एक घर (अग्नि कुण्ड) बनाओ, फिर इसको दहकती हुई आग में डाल दो। (98) अतः उन्होंने उसके विरुद्ध एक चाल चलनी चाही तो हमने उन्हीं को नीचा कर दिया। (99) और उसने कहा कि मैं अपने पालनहार की ओर जा रहा हूँ, वह मेरा मार्गदर्शन करेगा। (100) ऐ मेरे पालनहार, मुझको सदाचारी सन्तान प्रदान कर। (101) तो हमने उसको एक सहनशील लड़के की शुभ सूचना दी।

(102) अतः जब वह उसके साथ चलने फिरने की आयु को पहुँचा, उसने कहा कि ऐ मेरे बेटे, मैं स्वप्न में देखता हूँ कि तुमको ज़बह (क़ुर्बान) कर रहा हूँ। अतः तुम सोच लो कि तुम्हारा क्या विचार है। उसने कहा कि ऐ मेरे पिता, आपको जो आदेश दिया जा रहा है आप उसको कर डालिये, यदि अल्लाह चाहेगा तो आप मुझको धैर्यवानों में से पायेंगे। (103) अतः जब दोनों आज्ञाकारी हो गये और इब्राहीम ने उसको माथे के बल गिरा दिया। (104) और हमने उसको पुकारा, ऐ इब्राहीम! (105) तुमने स्वप्न को सच कर दिखाया। निस्सन्देह हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। (106) निश्चय ही यह एक स्पष्ट परीक्षा थी। (107) और हमने एक बड़ी क़ुर्बानी के बदले उसको छुड़ा लिया। (108) और हमने उस पर पिछलों में एक समूह को छोड़ा। (109) सलामती हो इब्राहीम पर। (110) हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला देते हैं। (111) निस्सन्देह वह हमारे आस्थावान बन्दों में से था। (112) और हमने उसको इस्हाक़ की शुभ सूचना दी, एक सन्देष्टा सदाचारियों में से। (113) और हमने उसको और इस्हाक़ को बरकत (विभूति) प्रदान की। और उन दोनों के वंश में अच्छे भी हैं। और ऐसे भी जो अपने आप पर स्पष्ट अत्याचार करने वाले हैं।

(114) और हमने मूसा और हारुन पर उपकार किया। (115) और उनको और उनकी क़ौम को एक बड़ी विपत्ति से छुटकारा दिया। (116) और हमने उनकी सहायता की तो वही प्रभुत्वशाली होने वाले बने। (117) और हमने उन दोनों को स्पष्ट किताब दी। (118) और हमने उन दोनों को सीधा मार्ग दिखाया। (119) और हमने उनके मार्ग पर पीछे

वालों में एक समूह को छोड़ा। (120) सलामती हो मूसा और हारुन पर। (121) हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। (122) निस्सन्देह वह दोनों हमारे आस्थावान बन्दों में से थे।

(123) और इलयास भी पैग़म्बरों में से था। (124) जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा। (125) क्या तुम डरते नहीं। क्या तुम लोग 'बअल' (देवता) को पुकारते हो। और सर्वश्रेष्ठ रचयिता को छोड़ देते हो। (126) अल्लाह को, जो तुम्हारा भी पालनहार है और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी। (127) तो उन्होंने उसको झुठलाया। तो वह पकड़े जाने वालों में से होंगे। (128) परन्तु जो अल्लाह के विशेष बन्दे थे। (129) और हमने उसके मार्ग पर पिछलों में एक समूह को छोड़ा। (130) सलामती हो इलियास पर (131) हम भलाई करने वालों को ऐसा ही बदला देते हैं। (132) निस्सन्देह वह हमारे आस्थावान बन्दों में से था।

(133) और निस्सन्देह लूत भी पैग़म्बरों में से था। (134) जबकि हमने उसको और उसके लोगों को बचा लिया। (135) परन्तु एक बुढ़िया जो पीछे रह जाने वालों में से थी। (136) फिर हमने दूसरों को नष्ट कर दिया। (137) और तुम उनकी बस्तियों पर गुज़रते हो सुबह को भी। (138) और रात को भी, तो क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते।

(139) और निस्सन्देह यूनुस भी सन्देष्टाओं में से था। (140) जबकि वह भाग कर भरी हुई नाव पर पहुँचा। (141) फिर क़ुरआ (पर्ची) डाला तो वही दोषी निकला। (142) फिर उसको मछली ने निगल लिया। और वह स्वंय को बुरा-भला कह रहा था। (143) यदि वह स्तुति करने वालों में से न होता। (144) तो लोगों के उठाये जाने के दिन तक वह मछली के पेट ही में रहता। (145) फिर हमने उसको एक मैदान में डाल दिया और वह निढाल था। (146) और हमने उस पर एक लता वाला वृक्ष उगा दिया। (147) और हमने उसको एक लाख या उससे अधिक लोगों की ओर भेजा। (148) फिर वह लोग ईमान लाये तो हमने उनको लाभ उठाने दिया एक अवधि तक।

(149) तो उनसे पूछो, क्या तुम्हारे पालनहार के लिए बेटियाँ हैं और उनके लिए बेटे। (150) क्या हमने फ़रिश्तों को नारी बनाया है और वह

देख रहे थे। (151) सुन लो, यह लोग मात्र मनगढ़ंत रूप से ऐसा कहते हैं। (152) कि अल्लाह सन्तान रखता है और निश्चय ही वह झूठे हैं। (153) क्या अल्लाह ने बेटों की तुलना में बेटियाँ पसन्द की हैं। (154) तुमको क्या हो गया है, तुम कैसा निर्णय करते हो। (155) फिर क्या तुम बुद्धि से काम नहीं लेते। (156) क्या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट प्रमाण है। (157) तो अपनी किताब लाओ यदि तुम सच्चे हो।

(158) और उन्होंने अल्लाह और जिन्नों में भी नातेदारी जोड़ रखा है। और जिन्नों को ज्ञात है कि निश्चित रूप से वह पकड़े हुए आयेंगे। (159) अल्लाह पवित्र है उन बातों से जो ये बयान करते हैं। (160) परन्तु वह जो अल्लाह के चुने हुए बन्दे हैं। (161) अतः तुम और जिनकी तुम उपासना करते हो। (162) अल्लाह से किसी को फेर नहीं सकते। (163) परन्तु उसको जो नरक में पड़ने वाला है। (164) और हममे से प्रत्येक का एक निर्धारित स्थान है। (165) और हम अल्लाह के समक्ष मात्र पंक्तिबद्ध रहने वाले हैं। (166) और हम उसकी स्तुति करने वाले हैं।

(167) और यह लोग कहा करते थे। (168) कि यदि हमारे पास पहले के लोगों की कोई शिक्षा होती। (169) तो हम अल्लाह के विशेष बन्दे होते। (170) फिर उन्होंने उसको झुठला दिया तो शीघ्र ही वह जान लेंगे। (171) और अपने भेजे हुए बन्दों के लिए हमारा यह निर्णय पहले ही हो चुका है। (172) कि निस्सन्देह वही प्रभावी होंगे। (173) और हमारी सेना ही विजयी रहने वाली है। (174) तो कुछ अवधि तक उनसे मुँह मोड़ो। (175) और देखते रहो, शीघ्र ही वह भी देख लेंगे।

(176) क्या वह हमारी यातना के लिए जल्दी कर रहे हैं। (177) अतः जब वह उनके प्रांगण में उतरेगी तो बड़ी ही बुरी होगी उन लोगों की सुबह जिनको उससे डराया जा चुका है। (178) तो कुछ अवधि के लिए इनसे मुँह मोड़ो। (179) और देखते रहो, शीघ्र ही वह स्वंय देख लेंगे। (180) पवित्र है तेरा पालनहार, सम्मान का स्वामी, उन बातों से जो यह लोग बयान करते हैं। (181) और सलाम है पैग़म्बरों पर। (182) और समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो पालनहार है सम्पूर्ण संसार का।

38. सूरह सॉद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सॉद। सौगन्ध है उपदेश वाले क़ुरआन की। (2) बल्कि जिन लोगों ने झुठलाया वह घमण्ड और हठधर्मिता में हैं। (3) इनसे पहले हमने कितनी ही क़ौमें नष्ट कर दीं, तो वह पुकारने लगे और वह समय बचने का न था।

(4) और उन लोगों ने आश्चर्य किया कि उनके पास उनमें से एक डराने वाला आया। और झुठलाने वालों ने कहा कि यह जादूगर है, झूठा है। (5) क्या उसने इतने उपास्यों के स्थान पर एक उपास्य कर दिया, यह तो बड़ी विचित्र बात है। (6) और उनके सरदार उठ खड़े हुए कि चलो और अपने उपास्यों पर जमे रहो, यह कोई मतलब की बात है। (7) हमने यह बात पिछले धर्म में नहीं सुनी, यह मात्र एक बनायी हुई बात है। (8) क्या हम सब में से इसी व्यक्ति पर अल्लाह की वाणी उतारी गई। बल्कि यह लोग मेरे अनुस्मरण की ओर से सन्देह में हैं। बल्कि उन्होंने अब तक मेरी यातना का स्वाद नहीं चखा।

(9) क्या तेरे पालनहार की दयालुता के भण्डार उनके पास हैं जो प्रभुत्वशाली है, कृपालु है। (10) क्या आकाशों और धरती और उनके मध्य की चीज़ों का स्वामित्व उनके अधिकार में है। फिर वह सीढ़ियाँ लगाकर चढ़ जायें। (11) एक सेना यह भी यहाँ नष्ट होगी। समस्त सेनाओं में से। (12) इनसे पहले नूह की क़ौम और आद और मेखों वाले। (13) फ़िरऔन और समूद और लूत की क़ौम और ऐका वालों ने झुठलाया। यह लोग बड़े-बड़े समूह थे। (14) उन सबने सन्देष्टाओं को झुठलाया तो मेरी यातना पहुंच कर रही। (15) और यह लोग मात्र एक चिंघाड़ की प्रतीक्षा में हैं, जिसके बाद कोई ढील नहीं। (16) और उन्होंने कहा कि ऐ हमारे पालनहार, हमारा हिस्सा हमको हिसाब के दिन से पहले दे दे।

(17) जो कुछ वह कहते हैं उस पर धैर्य रखो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो सामर्थ्य वाला, (अपने पालनहार की ओर) झुकने वाला था। (18) हमने पहाड़ों को उसके साथ वश में कर दिया कि वह उसके साथ सुबह

और सायं स्तुति करते थे। (19) और पक्षियों को भी एकत्र होकर। सब अल्लाह की ओर लौटने वाले थे। (20) और हमने उसकी सत्ता सुदृढ़ की, और उसको विवेक प्रदान किया, और मामलों का निर्णय करने की योग्यता प्रदान की।

(21) और क्या तुमको सूचना पहुँची है मुक़द्दमा (वादों) वालों की जबकि वह दीवार कूद कर उपासना कक्ष में आ पहुंचे। (22) जब वह दाऊद के पास पहुँचे तो वह उनसे घबरा गया। उन्होंने कहा कि आप डरें नहीं, हम दो पक्ष हैं, एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है तो आप हमारे बीच सच्चाई के साथ निर्णय कीजिए, अन्याय न कीजिए और हमको सन्मार्ग बताइए।

(23) यह मेरा भाई है, इसके पास निन्यानवे दुंबियाँ हैं और मेरे पास मात्र एक दुंबी है तो वह कहता है कि वह भी मुझे सौंप दे। और इसने वाद-विवाद में मुझको दबा लिया। (24) दाऊद ने कहा, इसने तुम्हारी दुंबी को अपनी दुंबियों में मिलाने की माँग करके वास्तव में तुम पर अत्याचार किया। और अधिकतर शिर्क (साझीदार ठहराने वाले) करने वाले एक दूसरे पर अत्याचार किया करते हैं। परन्तु वह जो ईमान रखते हैं ओर अच्छे कर्म करते हैं, और ऐसे लोग बहुत कम हैं। और दाऊद के मन में विचार आया कि हमने उसकी परीक्षा ली है, तो उसने अपने पालनहार से क्षमा माँगी और सजदे में गिर गया और (अल्लाह की ओर) वापस लौटा। (25) फिर हमने उसके उस पाप को क्षमा कर दिया। और निस्सन्देह हमारे यहाँ उसके लिए सामीप्य है और अच्छा परिणाम।

(26) ऐ दाऊद, हमने तुमको धरती में ख़लीफा (सत्ताधारी) बनाया है तो लोगों के बीच न्याय के साथ निर्णय करो और इच्छा का अनुसरण न करो, वह तुमको अल्लाह के मार्ग से भटका देगी। जो लोग अल्लाह के मार्ग से भटकते हैं उनके लिए कठोर दण्ड है। इस कारण से कि वह हिसाब के दिन को भूले रहे।

(27) और हमने धरती और आकाश और जो उनके मध्य है निरुउद्देश्य नहीं पैदा किया, यह उन लोगों का भ्रम है जिन्होंने झुठलाया, तो जिन लोगों ने झुठलाया उनके लिए विनाश है आग से। (28) क्या हम उन लोगों को जो ईमान लाये और अच्छे कर्म किए, उनकी भाँति कर देंगे जो धरती में

उपद्रव करने वाले हैं, अथवा हम सदाचारियों को दुराचारियों जैसा कर देंगे। (29) यह एक बरकत वाली (विभूतिपूर्ण) किताब है जो हमने तुम्हारी ओर उतारी है, ताकि लोग इसकी आयतों पर विचार करें और ताकि बुद्धि वाले इससे उपदेश प्राप्त करें।

(30) और हमने दाऊद को सुलेमान प्रदान किया। सर्वश्रेष्ठ बन्दा, अपने पालनहार की ओर बहुत झुकने वाला। (31) जब सायं के समय उसके समक्ष उत्तम श्रेणी के तीव्र गामी घोड़े प्रस्तुत किये गये। (32) तो उसने कहा, मैंने मित्र रखा सम्पत्ति के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण से, यहाँ तक कि सूरज छिप गया ओट में। (33) उनको मेरे पास वापस लाओ। फिर वह झाँड़ने लगा पिंडलियाँ और गर्दनें।

(34) और हमने सुलेमान की परीक्षा ली। और हमने उसके सिंहासन पर एक धड़ डाल दिया। फिर वह लौटा। (35) उसने कहा ऐ मेरे पालनहार, मुझको क्षमा कर दे और मुझको ऐसा राज्य प्रदान कर दे जो मेरे बाद किसी के लिए शोभनीय न हो, निस्सन्देह तू बहुत देनेवाला है। (36) तो हमने हवा को उसके लिए आज्ञाकारी कर दिया। और उसके आदेश से नम्रता के साथ चलती थी जिधर वह चाहता। (37) और जिन्नों को भी उसका आज्ञाकारी कर दिया। हर प्रकार के निर्माणकर्त्ता और ग़ोताख़ोर। (38) और दूसरे जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते। (39) यह हमारा दिया हुआ उपकार है तो चाहे इसको दो अथवा रोको, बेहिसाब। (40) और उसके लिए हमारे यहाँ सामिप्य है और सर्वश्रेष्ठ परिणाम।

(41) और हमारे बन्दे अय्यूब को याद करो। जब उसने अपने पालनहार को पुकारा कि शैतान ने मुझको कष्ट और यातना में डाल दिया है। (42) अपना पैर मारो। यह ठण्डा पानी है, स्नान के लिए और पीने के लिए। (43) और हमने उसको उसका परिवार प्रदान किया और उनके साथ उनके समान और भी, अपनी ओर से दयालुता के रूप में और बुद्धि वालों के लिए उपदेश के रूप में। (44) और अपने हाथ में सीकों का एक गुच्छा और लो और उससे मारो और सौगन्ध न तोड़ो। निस्सन्देह हमने उसको धैर्यवान पाया। सर्वश्रेष्ठ बन्दा, अपने पालनहार की ओर बहुत झुकने वाला।

(45) और ऐ हमारे बन्दो, इब्राहीम और इस्हाक़ और याक़ूब को याद करो, वह हाथों वाले और आँखों वाले थे। (46) हमने उनको एक विशेष बात के साथ ख़ास किया था कि वह परलोक का अनुस्मरण है। (47) और वह हमारे यहाँ चुने हुए सदाचारी लोगों में से हैं। (48) और इस्माईल और यसअ और जुल-किफ़्ल को याद करो, सभी भले लोगों में से थे।

(49) यह उपदेश है, और निस्सन्देह अल्लाह से डरने वालों के लिए अच्छा ठिकाना है। (50) सदैव के बाग़ जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे। (51) वह उनमें तकिया लगाये बैठे होंगे। और बहुत से फल और पेय माँगते होंगे। (52) और उनके पास शर्मिली और समान आयु वाली पत्नियाँ होंगी। (53) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे हिसाब का दिन आने पर वादा किया जाता है। (54) यह हमारी जीविका है जो कभी समाप्त होने वाली नहीं।

(55) यह बात हो चुकी और विद्रोहियों के लिए बुरा ठिकाना है। (56) नरक, उसमें वह प्रवेश होंगे। तो क्या ही बुरा स्थान है। (57) यह खौलता हुआ पानी और पीप है, तो यह लोग इनको चखें। (58) और इस प्रकार की दूसरी और भी वस्तुएँ होंगी। (59) यह एक सेना तुम्हारे पास घुसी चली आ रही है, उनके लिए कोई स्वागत नहीं। वह आग में पड़ने वाले हैं। (60) वह कहेंगे बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई स्वागत नहीं। तुम्हीं तो यह हमारे समक्ष लाये हो, तो कैसा बुरा है यह ठिकाना। (61) वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, जो व्यक्ति इसको हमारे समक्ष लाया उसको तू दो गुनी यातना दे, नरक में। (62) और वह कहेंगे, क्या बात है कि हम उन लोगों को यहाँ नहीं देख रहे हैं जिनको हम बुरे लोगों में गिना करते थे। (63) क्या हमने उनका उपहास बना लिया था या उनसे निगाहें चूक रही हैं। (64) निस्सन्देह यह बात सच्ची है, नरक वालों का परस्पर झगड़ना।

(65) कहो कि मैं तो मात्र एक डराने वाला हूँ। और कोई उपास्य नहीं परन्तु अल्लाह यक्ता और प्रभुत्वशाली। (66) वह पालनहार है आकाशों और धरती का और उन चीज़ों का जो इनके मध्य हैं, वह प्रभुत्वशाली है, क्षमा करने वाला है। (67) कहो कि यह एक बड़ी सूचना है। (68) जिससे तुम असावधान हो रहे हो। (69) मुझको परलोक की कुछ सूचना न थी, जबकि वह परस्पर

वाद-विवाद कर रहे थे। (70) मेरे पास तो वह्य (श्रुति) मात्र इसलिए आती है कि मैं एक स्पष्ट डराने वाला हूँ। (71) जब तुम्हारे पालनहार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं मिट्टी से एक मनुष्य बनाने वाला हूँ। (72) फिर जब मैं उसको ठीक कर लूँ ओर उसमें अपनी आत्मा फूँक दूँ तो तुम उसके आगे सजदे में गिर पड़ना। (73) अतः सभी फ़रिश्तों ने सजदा किया। (74) परन्तु इबलीस कि उसने घमण्ड किया। और वह अवज्ञा करने वालों में से हो गया। (75) फ़रमाया कि ऐ इबलीस, किस चीज़ ने तुझको रोक दियाः कि तू इसको सजदा करे जिसको मैंने अपने दोनो हाथो से बनाया। यह तूने घमण्ड किया या तू बड़े दर्जों वालों में से है। (76) उसने कहा कि मैं आदम से श्रेष्ठ हूँ। तूने मुझको आग से पैदा किया है। और इसको मिट्टी से। (77) फ़रमाया कि तू यहाँ से निकल जा, क्योंकि तू तिरस्कृत है। (78) और तुझ पर मेरा धिक्कार है बदले के दिन तक।

(79) इबलीस ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मुझको अवकाश दे उस दिन तक के लिए जब लोग पुनः उठाये जायेंगे। (80) फ़रमाया कि तुझको अवकाश दिया गया। (81) निर्धारित समय के लिए। (82) उसने कहा कि तेरे सम्मान की सौगन्ध, मैं उन सबको भटकाकर रहूँगा। (83) सिवाय तेरे उन बन्दों के जिन्हें तूने शुद्ध कर लिया है। (84) फ़रमाया, तो सच्चाई यह है और मैं सत्य ही कहता हूँ। (85) कि मैं नरक को तुझसे और उन समस्त लोगों से भर दूँगा जो उनमें से तेरा अनुसरण करेंगे।

(86) कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं माँगता और न मैं संकोच करने वालों में से हूँ। (87) यह तो मात्र एक उपदेश है संसार वालों के लिए (88) और तुम शीघ्र उसकी दी हुइ सूचना को जान लोगे।

39. सूरह अज़-ज़ुमर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) यह किताब अल्लाह की ओर से उतारी गयी है जो प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है। (2) निस्सन्देह हमने यह किताब तुम्हारी ओर सत्य के साथ अवतरित की है, तो तुम अल्लाह ही की उपासना करो, उसी के लिए दीन

(धर्म) को विशुद्ध करते हुए। (3) सचेत रहो, दीन (धर्म) शुद्ध तो मात्र अल्लाह के लिए है। और जिन लोगों ने उसके अतिरिक्त दूसरे समर्थक बना रखे हैं, कि हम तो उनकी उपासना मात्र इसलिए करते हैं कि वह हमको अल्लाह से निकट कर दें। निस्सन्देह अल्लाह उनके बीच उस बात का निर्णय कर देगा जिसमें वह मतभेद कर रहे हैं। अल्लाह ऐसे व्यक्ति को सन्मार्ग नहीं प्रदान करता। जो झूठा, सत्य को न मानने वाला हो।

(4) यदि अल्लाह चाहता कि वह बेटा बनाये तो अपनी सृष्टि में से जिसको चाहता चुन लेता, वह पवित्र है। वह अल्लाह है, अकेला, सब पर प्रभुत्व रखने वाला। (5) उसने आकाशों और पृथ्वी को सच्चाई के साथ पैदा किया है। वह रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है। और उसने सूरज और चाँद को वशीभूत कर रखा है। प्रत्येक ठहरी हुई अवधि पर चलता है। सुन लो कि वह प्रभुत्वशाली है, क्षमा करने वाला है।

(6) अल्लाह ने तुमको एक जान से पैदा किया, फिर उसने उसी से उसका जोड़ा बनाया। और उसी ने तुम्हारे लिए नर और मादा मवेशियों की आठ क़िस्में अवतरित कीं। वह तुमको तुम्हारी माँओं के पेट में बनाता है, एक रचना के बाद दूसरी रचना, तीन अन्धेरी परतों के अन्दर। यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है। बादशाही उसी की है। उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। फिर तुम कहाँ से फेरे जाते हो।

(7) यदि तुम इन्कार करो तो अल्लाह तुमसे निस्पृह है। और वह अपने बन्दों के लिए इन्कार को पसन्द नहीं करता। और यदि तुम कृतज्ञता करो तो वह उसको तुम्हारे लिए पसन्द करता है। और कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठायेगा। फिर तुम्हारे पालनहार ही की ओर तुम्हारी वापसी है। तो वह तुमको बता देगा जो तुम करते थे। निस्सन्दे वह दिलों की बात को जानने वाला है।

(8) और जब मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह अपने पालनहार को पुकारता है, उसकी ओर एकाग्र होकर। फिर जब वह उसको अपने पास से नेमत प्रदान कर देता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए वह पहले पुकार रहा था। और दूसरों को अल्लाह का बराबर ठहराने लगता है

ताकि वह उसके मार्ग से भटका दें। कहो कि तू अपनी अवज्ञा से कुछ दिन लाभ उठा ले, निस्सन्देह तू आग वालों में से है। (9) भला कोई व्यक्ति रात की घड़ियों में सजदा और क़याम की स्थिति में विनम्रता कर रहा हो, परलोक से डरता हो और अपने पालनहार की दयालुता का प्रत्याशी हो। कहो, क्या जानने वाले और न जानने वाले दोनों समान हो सकते हैं। उपदेश तो वही लोग पकड़ते हैं जो बुद्धि वाले हैं। (10) कहो कि ऐ मेरे बन्दो, जो ईमान लाये हो, अपने पालनहार से डरो। जो लोग इस संसार में भलाई करेंगे उनके लिए भला बदला है। और अल्लाह की धरती विस्तृत है। निस्सन्देह धैर्य रखने वालों को उनका बदला बेहिसाब दिया जायेगा।

(11) कहो, मुझको आदेश दिया गया है कि मैं अल्लाह ही की उपासना करूँ, उसी के लिए दीन (धर्म) को शुद्ध करते हुए। (12) और मुझको आदेश दिया गया है कि मैं सबसे पहले मैं स्वंय मुस्लिम (आज्ञाकारी) बनूँ। (13) कहो कि यदि मैं अपने पालनहार की अवज्ञा करूँ तो मैं एक भयानक दिन की यातना से डरता हूँ। (14) कहो कि मैं अल्लाह की उपासना करता हूँ उसी के लिए दीन (धर्म) को शुद्ध करते हुए। (15) अतः तुम उसके अतिरिक्त जिसकी चाहो उपासना करो। कहो कि वास्तविक घाटे वाले तो वह हैं, जिन्होंने अपने आप को और अपने घर वालों को क़ियामत (उठाये जाने) के दिन घाटे में डाला। सुन लो यही स्पष्ट घाटा है। (16) उनके लिए उनके ऊपर से भी आग की छाया (छत्र) होगी और नीचे से भी। यह चीज़ है जिससे अल्लाह अपने बन्दो को डराता है। ऐ मेरे बन्दो, तुम मुझसे डरो।

(17) और जो लोग शैतान से बचें कि वह उसकी उपासना करें और वह अल्लाह की ओर एकाग्र हुए, उनके लिए शुभ सूचना है, तो मेरे बन्दों को शुभ सूचना दे दो। (18) जो बात को ध्यान से सुनते हैं। फिर उसके श्रेष्ठ अर्थ का अनुसरण करते हैं। यही वह लोग हैं जिनको अल्लाह ने मार्गदर्शन प्रदान किया है। और यही हैं जो बुद्धि वाले हैं।

(19) क्या जिस पर यातना की बात सिद्ध हो चुकी, फिर क्या तुम ऐसे व्यक्ति को बचा सकते हो जो कि आग में है। (20) लेकिन जो लोग अपने पालनहार से डरें उनके लिए ऊँचे भवन हैं जिनके ऊपर और ऊँचे भवन हैं,

बने हुए। उनके नीचे नहरें बहती हैं। यह अल्लाह का वादा है। अल्लाह अपने वादे के विरुद्ध नहीं करता।

(21) क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा। फिर उसको धरती के स्रोतों में जारी कर दिया। फिर वह उससे विभिन्न प्रकार की खेतियाँ निकालता है, फिर वह सूख जाती है, तो तुम उसको पीला देखते हो। फिर वह उसको तिनका-तिनका कर देता है। निस्सन्देह इसमें सीख है बुद्धि वालों के लिए। (22) क्या वह व्यक्ति जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम (आज्ञापालन) के लिए खोल दिया, तो वह अपने पालनहार की ओर से एक प्रकाशमय मार्ग पर है। तो विनाश है उनके लिए जिनके दिल अल्लाह के उपदेश के सम्बन्ध में कठोर हो गये। यह लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

(23) अल्लाह ने सर्वश्रेष्ठ वाणी उतारी है। एक ऐसी किताब परस्पर मिलती जुलती, बार-बार दुहरायी हुई, इससे उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते हैं जो अपने पालनहार से डरने वाले हैं। फिर उनके शरीर और उनके दिल कोमल होकर अल्लाह की याद की ओर केन्द्रित हो जाते हैं। यह अल्लाह का मार्गदर्शन है। इससे वह मार्ग दिखाता है जिसको वह चाहता है। और जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे तो उसका कोई मार्गदर्शक नहीं।

(24) क्या वह व्यक्ति जो क़ियामत के दिन अपने चेहरे को बुरी यातना की ढाल बनायेगा, और अत्याचारियों से कहा जायेगा कि चखो स्वाद उस कमाई का जो तुम करते थे। (25) इसे पहले वालों ने भी झुठलाया तो उन पर यातना वहाँ से आ गयी जिधर से उनको अनुमान भी न था। (26) तो अल्लाह ने उनको सांसारिक जीवन में अपमान का स्वाद चखाया और परलोक की यातना और भी बड़ी है, काश यह लोग जानते।

(27) और हमने इस क़ुरआन में प्रत्येक क़िस्म की मिसाले बयान की हैं। ताकि वह उपदेश प्राप्त करें। (28) यह अरबी क़ुरआन है, इसमें कोई टेढ़ नहीं, ताकि लोग डरे। (29) अल्लाह मिसाल (उदाहरण) बयान करता है एक व्यक्ति का जिसके स्वामित्व में अनेक हठधर्मी स्वामी सम्मिलित हैं। और दूसरा व्यक्ति पूरा का पूरा एक ही स्वामी का दास है। क्या इन दोनों की दशा समान होगी। सम्पूर्ण प्रशंसा अल्लाह के लिए है परन्तु अधिकतर

लोग नहीं जानते। (30) तुमको भी मरना है और वह भी मरने वाले हैं। (31) फिर तुम लोग क़ियामत के दिन अपने पालनहार के समक्ष अपना मुक़द्दमा प्रस्तुत करोगे।

(32) उस व्यक्ति से अधिक अत्याचारी कौन होगा जिसने अल्लाह पर झूठ बाँधा। और सच्चाई को झुठला दिया जबकि वह उसके पास आयी। क्या ऐसे अवज्ञाकारियों का ठिकाना नरक में न होगा। (33) और जो व्यक्ति सच्चाई लेकर आया और जिसने उसकी पुष्टि की, यही लोग अल्लाह से डरने वाले हैं। (34) उनके लिए उनके पालनहार के पास वह सब है जो वह चाहेंगे, यह बदला है भलाई करने वालों का। (35) ताकि अल्लाह उनसे उनके बुरे कर्मों को दूर कर दे और उनके भले कर्मों के बदले उनको उनका पुण्य दे।

(36) क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। और यह लोग उसके अतिरिक्त दूसरों से तुमको डराते हैं, और अल्लाह जिसको भटका दे उसको कोई मार्ग दिखाने वाला नहीं। (37) और अल्लाह जिसको मार्ग प्रदान कर दे उसको कोई भटकाने वाला नहीं, क्या अल्लाह प्रभुत्वशाली, प्रतिशोध लेने वाला नहीं।

(38) और यदि तुम इनसे पूछो कि आसमानों को और धरती को किसने पैदा किया तो वह कहेंगे कि अल्लाह ने। कहो, तुम्हारा क्या विचार है, अल्लाह के अतिरिक्त तुम जिनको पुकारते हो, यदि अल्लाह मुझको कोई कष्ट पहुँचाना चाहे तो क्या यह उसके दिये हुए कष्ट को दूर कर सकते हैं, अथवा अल्लाह मुझ पर कोई कृपा करना चाहे तो क्या ये उसकी कृपा को रोकने वाले बन सकते हैं। कहो कि अल्लाह मेरे लिए पर्याप्त है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं। (39) कहो कि ऐ मेरी क़ौम, तुम अपने स्थान पर कर्म करो, मैं भी कर्म कर रहा हूँ, तो तुम शीघ्र जान लोगे। (40) कि किस पर अपमानित करने वाली यातना आती है और किस पर वह यातना आती है जो कभी टलने वाली नहीं। (41) हमने लोगों के मार्गदर्शन के लिए यह किताब तुम पर तथ्यों के आधार पर उतारी है। अतः जो व्यक्ति मार्गदर्शन प्राप्त करेगा वह अपने ही लिए प्राप्त करेगा। और जो व्यक्ति विपथ होगा तो उसका विपथ होना उसी पर पड़ेगा। और तुम इनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं हो।

(42) अल्लाह ही मृत्यु देता है प्राणों को उनकी मृत्यु के समय, और जिनकी मृत्यु नहीं आयी उनके सोने के समय। फिर वह उनको रोक लेता है जिनकी मृत्यु का निर्णय कर चुका है और दूसरों को एक नियत समय तक के लिए छोड़ देता है। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं। (43) क्या इन्होंने अल्लाह को छोड़कर दूसरों को सिफ़ारिश करने वाला बना रखा है। (44) कहो, यद्यपि वह न कुछ अधिकार रखते हों और न कुछ समझते हों। कहो, सिफ़ारिश सारी की सारी अल्लाह के अधिकार में है। आकाशों और धरती की सत्ता उसी की है। फिर तुम उसी की ओर लौटाये जाओगे। (45) और जब मात्र एक अल्लाह का चर्चा किया जाता है तो उन लोगों के दिल कुढ़ते हैं जो परलोक पर विश्वास नहीं रखते। और जब उसके अतिरिक्त दूसरों का चर्चा होता है तो उस समय वह प्रसन्न हो जाते हैं। (46) कहो कि ऐ अल्लाह, आकाशों और धरती के पैदा करने वाले, परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले, तू अपने बन्दों के बीच उस चीज़ का निर्णय करेगा जिसमें वह मतभेद कर रहे हैं। (47) और यदि अत्याचार करने वालों के पास वह सब कुछ हो जो धरती में है और उसी के बराबर और भी, तो वह क़ियामत के दिन कठोर यातना से बचने के लिए उनको अर्थदण्ड में दे दें। और अल्लाह की ओर से उनको उस मामले का सामना होगा जिसकी उनको संभावना भी न थी। (48) और उनके समक्ष आ जायेंगे उनके बुरे कर्म और वह चीज़ उनको घेर लेगी जिसका वह उपहास करते थे।

(49) अतः मनुष्य को कोई कष्ट पहुँचता है तो वह हमको पुकारता है, फिर जब हम अपनी ओर से उसको दुयालुता प्रदान कर देते हैं तो वह कहता है कि यह तो मुझको मेरे ज्ञान के आधार पर दिया गया है, बल्कि यह परीक्षा है परन्तु उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते। (50) उनसे पहले वालों ने भी यह बात कही तो जो कुछ वह कमाते थे वह उनके काम न आया। (51) अतः उन पर वह बुराईयाँ आ पड़ीं जो उन्होंने कमाई थीं। और उन लोगों में से जो अत्याचारी हैं, उनके समक्ष भी उनकी कमाई के बुरे परिणाम शीघ्र आयेंगे। वह हमको विवश कर देने वाले नहीं हैं। (52) क्या उनको ज्ञात नहीं कि अल्लाह जिसको चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है और वही संकुचित कर देता है।

निस्सन्देह इसके अन्दर निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाने वाले हैं।

(53) कहो कि ऐ मेरे बन्दो, जिन्होंने अपने आप पर अत्याचार किया है, अल्लाह की दयालुता से निराश न हो। निस्सन्देह अल्लाह समस्त पाप को क्षमा कर देता है, वह बड़ा क्षमावान अतः कृपाशील है। (54) और तुम अपने पालनहार की ओर लौटो और उसके आज्ञाकारी बन जाओ इससे पहले कि तुम पर यातना आ जाये, फिर तुम्हारी कोई सहायता न की जाये।

(55) और तुम अनुसरण करो अपने पालनहार की भेजी हुई किताब के श्रेष्ठ पहलू की, इससे पहले कि तुम पर अचानक यातना आ जाये और तुमको सूचना न हो। (56) कहीं कोई व्यक्ति यह कहे कि अफ़सोस मेरी कोताही पर जो मैंने अल्लाह के बारे में की, और मैं तो उपहास करने वालों में सम्मिलित रहा। (57) अथवा कोई यह कहे कि यदि अल्लाह मुझको मार्गदर्शन प्रदान करता तो मैं भी डरने वालों में से होता। (58) अथवा यातना को देखकर कोई व्यक्ति यह कहे कि काश, मुझे संसार में पुनः जाना हो तो मैं नेक बन्दों में से हो जाऊँ। (59) हाँ तुम्हारे पास मेरी आयतें आयीं फिर तूने उनको झुठलाया और घमण्ड किया और तू अवज्ञाकारियों में सम्मिलित रहा। (60) और तुम क़ियामत (उठाये जाने) के दिन उन लोगों के चेहरे काले देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूठ बोला था। क्या घमण्डियों का ठिकाना नरक में न होगा। (61) और जो लोग डरते रहे, अल्लाह उन लोगों को सफलता के साथ बचा लेगा, और उनको कोई कष्ट न पहुँचेगा और न वह दुखी होंगे।

(62) अल्लाह हर चीज़ का सृष्टा है और वही हर चीज़ का संरक्षक है। (63) आकाशों और धरती की कुंजियाँ उसी के पास हैं। और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों को झुठलाया वही घाटे में रहने वाले हैं। (64) कहो कि ऐ नासमझों, क्या तुम मुझको अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना करने के लिए कहते हो। (65) और तुम्हारी ओर और तुमसे पहले वालों की ओर भी वह्य (श्रुति) भेजी जा चुकी है कि यदि तुमने शिर्क (साझेदारी) किया तो तुम्हारे कर्म नष्ट हो जायेंगे। और तुम घाटे में रहोगे। (66) बल्कि मात्र अल्लाह की उपासना करो और आभार व्यक्त करने वालों में से बनो।

(67) और लोगों ने अल्लाह का सम्मान न किया जैसा कि उसका सम्मान करने का अधिकार है। और सम्पूर्ण धरती उसकी मुठ्ठी में होगी क़ियामत के दिन और समस्त आकाश लिपटे होंगे उसके दाहिने हाथ में। वह पवित्र और श्रेष्ठ है उस शिर्क (साझेदारी) से जो यह लोग करते हैं। (68) और सूर (महाशंख) फूँका जायेगा तो आकाश और धरती में जो भी हैं सब मूर्छित होकर गिर पड़ेंगे, परन्तु जिसको अल्लाह चाहे। फिर पुनः उसमें फूँका जायेगा तो अचानक सब के सब उठकर देखने लगेंगे। (69) और धरती अपने पालनहार के प्रकाश से चमक उठेगी। और किताब रख दी जायेगी और पैग़म्बर और गवाह उपस्थित किये जायेंगे। और लोगों के बीच ठीक-ठीक निर्णय कर दिया जायेगा और उन पर कोई अत्याचार न होगा। (70) और प्रत्येक व्यक्ति को उसके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दिया जायेगा। और वह भली भाँति भिज्ञ है जो कुछ वह करते हैं।

(71) और जिन लोगों ने झुठलाया, वह समूह-समूह होकर नरक की ओर हाँके जायेंगे यहाँ तक कि जब वह उसके पास पहुँचेंगे, उसके द्वार खोल दिये जायेंगे और उसके रक्षक उनसे कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं लोगों में से पैग़म्बर नहीं आये जो तुमको तुम्हारे पालनहार की आयतें सुनाते थे और तुमको तुम्हारी इस दिन की भेंट से डराते थे। वह कहेंगे कि हाँ, परन्तु यातना का वादा अवज्ञाकारियों पर पूरा होकर रहा। (72) कहा जायेगा कि नरक के द्वारों में प्रवेश हो जाओ, उसमें सदैव रहने के लिए। अतः कैसा बुरा ठिकाना है घमण्ड करने वालों का।

(73) और जो लोग अपने पालनहार से डरे, वह समूह-समूह स्वर्ग की ओर ले जाये जायेंगे। यहाँ तक कि जब वह वहाँ पहुँचेंगे और उसके द्वार खोल दिये जायेंगे और उसके रक्षक उनसे कहेंगे कि सलाम हो तुम पर, प्रसन्न रहो, तो इसमें प्रवेश हो जाओ सदैव के लिए। (74) और वह कहेंगे कि आभार है उस अल्लाह के लिए जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया और हमको इस धरती का उत्तराधिकारी बना दिया। हम स्वर्ग में जहाँ चाहें आवास करें। तो क्या ख़ूब बदला है कर्म करने वालों का। (75) और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि सिंहासन के चारों ओर परिधि बनाये हुए अपने पालनहार की

प्रशंसा और स्तुति करते होंगे। और लोगों के मध्य ठीक-ठीक निर्णय कर दिया जायेगा और कहा जायेगा कि समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है, समस्त संसार का स्वामी।

40. सूरह अल-मोमिन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) यह किताब उतारी गयी है अल्लाह की ओर से जो प्रभुत्वशाली है, जानने वाला है। (3) पापों को क्षमा करने वाला और तौबा स्वीकार करने वाला है। कठोर दण्ड देने वाला, बड़ा सामर्थ्य वाला, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। उसी की ओर लौटना है।

(4) अल्लाह की आयतों में वही लोग झगड़े निकालते हैं जो अवज्ञाकारी हैं, तो उन लोगों का नगरों में चलना-फिरना तुमको धोखे में न डाले। (5) इनसे पहले नूह की क़ौम ने झुठलाया, और उनके बाद के समूह ने भी। और प्रत्येक उम्मत (समूह) ने चाहा कि अपने सन्देष्टा को पकड़ ले और उन्होंने अनाधिकृत झगड़े निकाले, ताकि वह उससे सत्य को पराजित कर दें तो मैंने उनको पकड़ लिया। फिर कैसा था मेरा दण्ड। (6) और इसी प्रकार तेरे पालनहार की बात उन लोगों पर पूरी हो चुकी है जिन्होंने अवज्ञा की कि वह आग वाले हैं।

(7) जो सिंहासन को उठाये हुए हैं और जो उसके आस-पास है वह अपने पालनहार की स्तुति करते हैं, उसकी प्रशंसा के साथ। और वह उस पर आस्था रखते हैं। और वह ईमान वालों के लिए क्षमा की प्रार्थना करते हैं। ऐ हमारे पालनहार, तेरी दयालुता और तेरा ज्ञान हर चीज़ को परिधि में लिये हुए है। अतः तू क्षमा कर दे उन लोगों को जो तौबा करें और तेरे मार्ग का अनुसरण करें और तू उनको नरक की यातना से बचा। (8) ऐ हमारे पालनहार, और तू उनको सदैव रहने वाले बाग़ों में प्रवेश कर जिनका तूने इनसे वादा किया है। और उनको भी जो सदाचारी हो, उनके माता-पिता और उनकी पत्नियों और उनकी सन्तान में से, निस्सन्देह तू प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है। (9) और

उनको बुराईयों से बचा ले। और जिसको तूने उस दिन बुराईयों से बचाया तो उन पर तूने दया की। और यही बड़ी सफलता है।

(10) जिन लोगों ने झुठलाया, उनको पुकार कर कहा जायेगा, अल्लाह की विमुखता तुमसे उससे अधिक है जितनी विमुखता तुमको अपने आप पर है। जब तुमको ईमान की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे। (11) वह कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, तूने हमको दो बार मृत्यु दी और दोबारा हमको जीवन दिया। तो हमने अपने अपराधों को स्वीकार किया, तो क्या निकलने की कोई युक्ति है। (12) यह तुम पर इसलिए है कि जब एक मात्र अल्लाह की ओर बुलाया जाता था तो तुम इन्कार करते थे। और जब उसके साथ साझी किया जाता तो तुम मान लेते। अतः अब निर्णय अल्लाह के अधिकार में है जो महान है, उच्च स्थान वाला है।

(13) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता है और आकाश से तुम्हारे लिए जीविका उतारता है। और उपदेश मात्र वही व्यक्ति स्वीकार करता है जो अल्लाह की ओर झुकने वाला हो। (14) अतः अल्लाह ही को पुकारो, दीन (धर्म) को उसी के लिए शुद्ध करके, चाहे अवज्ञाकारियों को नापसन्द ही क्यों न हो। (15) वह उच्च दर्जों वाला, सिंहासन का स्वामी है। वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है वह्य (श्रुति) भेजता है, ताकि वह भेंट के दिन से डराये। (16) जिस दिन कि वह प्रकट होंगे। अल्लाह से उनकी कोई चीज़ छिपी हुई न होगी। आज सत्ता किसकी है एक मात्र अल्लाह प्रभुत्वशाली की। (17) आज प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का बदला मिलेगा। आज कोई अत्याचार न होगा। निस्सन्देह अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है।

(18) और उनको निकट आने वाली विपत्ति के दिन से डराओ जबकि हृदय गले तक आ पहुँचेंगे, वह दुखः से भरे हुए होंगे। अत्याचारियों का न कोई मित्र होगा और न कोई सिफ़ारिश करने वाला जिसकी बात मानी जाये। (19) वह निगाहों के विश्वाघात को जानता है और उन बातों को भी जिनको सीने छिपाये हुए हैं। (20) और अल्लाह सच्चाई के साथ निर्णय करेगा। और जिनको वह अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते है। वह किसी चीज़ का निर्णय नहीं करते। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला है, देखने वाला है।

(21) क्या वह धरती पर चले फिरे नहीं कि वह देखते कि क्या परिणाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़र चुके हैं। वह उनसे बहुत अधिक थे शक्ति में और उन स्मृति-चिन्हों के अनुसार भी जो उन्होंने धरती में छोड़े। फिर अल्लाह ने उनके अपराधों पर उनको पकड़ लिया और कोई उनको अल्लाह से बचाने वाला न था। (22) यह इसलिए हुआ कि उनके पास उनके सन्देष्टा स्पष्ट निशानियाँ लेकर आये तो उन्होंने झुठलाया तो अल्लाह ने उनको पकड़ लिया। निश्चय ही वह शक्तिशाली है, कठोर दण्ड देने वाला है।

(23) और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ और स्पष्ट प्रमाण के साथ। (24) फ़िरऔन और हामान और कारुन के पास भेजा, तो उन्होंने कहा कि यह एक जादूगर है, झूठा है। (25) फिर जब वह हमारी ओर से सत्य लेकर उनके पास पहुँचा, उन्होंने कहा कि इन लोगों के बेटों की हत्या कर डालो जो इसके साथ ईमान लाये और इनकी महिलाओं को जीवित रखो। और इन अवज्ञाकारियों की युक्ति मात्र प्रभावहीन रही।

(26) और फ़िरऔन ने कहा, मुझको छोड़ो, मैं मूसा की हत्या कर डालूँ और वह अपने पालनहार को पुकारे, मुझको सन्देह है कि कहीं वह तुम्हारा दीन बदल डाले या देश में उपद्रव फैला दे। (27) और मूसा ने कहा कि मैंने अपने और तुम्हारे पालनहार की शरण ली हर उस घमण्डी से जो हिसाब के दिन पर विश्वास नहीं रखता।

(28) और फ़िरऔन वालों में से एक आस्थावान व्यक्ति, जो अपने ईमान को छिपाये हुए था, वह बोला क्या तुम लोग एक व्यक्ति की मात्र इस बात पर हत्या करोगे कि वह कहता है कि मेरा पालनहार अल्लाह है, हालाँकि वह तुम्हारे पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण भी लेकर आया है। और यदि वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर पड़ेगा। और यदि वह सच्चा है तो उसका कोई अंश तुमको पहुँच कर रहेगा जिसका वादा वह तुमसे करता है। निस्सन्देह अल्लाह ऐसे व्यक्ति को पथप्रदर्शन नहीं प्रदान करता जो सीमा का उल्लंघन करने वाला हो, झूठा हो। (29) ऐ मेरी क़ौम, आज तुम्हारा राज्य है कि तुम धरती में प्रभुत्वशाली हो। फिर अल्लाह की यातना की तुलना में हमारी कौन सहायता करेगा, यदि वह हम पर आ गयी। फ़िरऔन ने कहा, मैं तुमको वही

परामर्श देता हूँ जिसको मैं समझ रहा हूँ, और मैं तुम्हारा मार्गदर्शन पूर्ण रूप से भलाई के मार्ग की ओर कर रहा हूँ।

(30) और जो व्यक्ति ईमान लाया था, उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर और समूहों जैसा दिन आ जाये। (31) जैसा दिन नूह और आद और समूद की क़ौम पर और उनके बाद वालों पर आया। और अल्लाह अपने बन्दों पर कोई अत्याचार करना नहीं चाहता। (32) और ऐ मेरी क़ौम, मैं डरता हूँ कि तुम पर चीख़ पुकार का दिन आ जाये। (33) जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे। और तुमको अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा। और जिसको अल्लाह पथभ्रष्ट कर दे, उसको कोई मार्गदर्शन प्रदान करने वाला नहीं।

(34) और इससे पहले यूसुफ़ तुम्हारे पास स्पष्ट प्रमाण के साथ आये तो तुम उनकी लायी हुई बातों की ओर से सन्देह ही में पड़े रहे, यहाँ तक कि जब उनकी मृत्यु हो गयी तो तुमने कहा कि अल्लाह उनके बाद कदापि कोई सन्देष्टा न भेजेगा। इसी प्रकार अल्लाह उन लोगों को पथभ्रष्ट कर देता है जो सीमा का उल्लघंन करने वाले हैं और सन्देह करने वाले होते हैं। (35) जो अल्लाह की आयतों में झगड़ा करते हैं बिना किसी प्रमाण के जो उनके पास आयी है। अल्लाह और ईमान वालों के निकट यह अत्यन्त अप्रिय है। इसी प्रकार अल्लाह मुहर लगा देता है प्रत्येक घमण्डी और विद्रोही के हृदय पर।

(36) और फ़िरऔन ने कहा कि ऐ हामान, मेरे लिए एक ऊँचा भवन बनाओ, ताकि मैं रास्तों पर पहुँचूं। (37) आसमानों के रास्तों तक, तो मूसा के उपास्य को झाँक कर देखूँ, और मैं तो उसको झूठा समझता हूँ। और इस प्रकार फ़िरऔन के लिए उसके बुरे कर्म आकर्षक बना दिये गये और वह सीधे मार्ग से रोक दिया गया। और फ़िरऔन की युक्ति व्यर्थ होकर रही।

(38) और जो व्यक्ति ईमान लाया था उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम मेरा अनुसरण करो, मैं तुमको उचित मार्ग बता रहा हूँ। (39) ऐ मेरी क़ौम, यह संसार का जीवन मात्र कुछ दिनों के लिए है और वास्तविक आवास का स्थान परलोक है। (40) जो व्यक्ति बुराई करेगा तो वह उसके समान बदला पायेगा और जो व्यक्ति भला कर्म करेगा, चाहे वह पुरुष हो अथवा महिला, शर्त यह

है कि वह आस्थावान हो तो यही लोग स्वर्ग में प्रवेश होंगे, वहाँ वह असीमित जीविका पायेंगे। (41) और ऐ मेरी क़ौम, क्या बात है कि मैं तो तुमको क्षमा (बख़्शिश) की ओर बुलाता हूँ और तुम मुझको आग की ओर बुला रहे हो। (42) तुम मुझको बुला रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ अवज्ञा करुँ और ऐसी चीज़ को उसका साझीदार बनाऊँ जिसका मुझे कोई ज्ञान नहीं। और मैं तुमको प्रभुत्वशाली बड़े क्षमावान अल्लाह की ओर बुला रहा हूँ। (43) निश्चित बात है कि तुम जिस चीज़ की ओर मुझको बुलाते हो, उसका कोई ज़ोर न संसार में है और न परलोक में। और निस्सन्देह हम सब की वापसी अल्लाह ही की ओर है और सीमा का उल्लंघन करने वाले ही आग में जाने वाले हैं। (44) तो तुम आगे चलकर मेरी बात को याद करोगे। और मैं अपना मामला अल्लाह को सौंपता हूँ। निस्सन्देह अल्लाह समस्त बन्दों का संरक्षक है। (45) फिर अल्लाह ने उसको उनके बुरे षडयन्त्रों से बचा लिया। और फ़िरऔन वालों को बुरी यातना ने घेर लिया। (46) आग, जिस पर वह सुबह व सायं प्रस्तुत किये जाते हैं। और जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी, फ़िरऔन वालों को सबसे कठोर यातना में प्रवेश करो।

(47) और जब वह नरक में एक-दूसरे से झगडेंगे तो निर्बल लोग बड़ा बनने वालों से कहेंगे कि हम तुम्हारे अधीन थे, तो क्या तुम हमसे आग का कोई अंश हटा सकते हो। (48) बड़े लोग कहेंगे कि हम सभी इसमें हैं। अल्लाह ने बन्दों के बीच निर्णय कर दिया। (49) और जो लोग आग में होंगे, वह नरक के संरक्षकों से कहेंगे कि तुम अपने पालनहार से प्रार्थना करो कि वह हमारी यातना में से एक दिन की कमी कर दे। (50) वह कहेंगे, क्या तुम्हारे पास तुम्हारे सन्देष्टा स्पष्ट प्रमाण लेकर नहीं आये। वह कहेंगे कि हाँ, संरक्षक कहेंगे फिर तुम ही प्रार्थना करो। और अवज्ञाकारियों की पुकार व्यर्थ ही जाने वाली है।

(51) निस्सन्देह हम सहायता करते हैं अपने सन्देष्टाओं की और ईमान वालों की सांसारिक जीवन में, और उस दिन भी जबकि गवाह खड़े होंगे। (52) जिस दिन अत्याचारियों को उनका बहाना कुछ लाभ न देगा और उनके लिए धिक्कार होगा और उनके लिए बुरा ठिकाना होगा। (53) और हमने

मूसा को मार्ग दर्शन प्रदान किया और इस्राईल की सन्तान को किताब का उत्तराधिकारी बनाया। (54) मार्गदर्शन और उपदेश बुद्धि वालों के लिए। (55) अतः तुम धैर्य रखो, निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है और अपने अपराधों की क्षमा चाहो। और सुबह सायं अपने पालनहार की स्तुति करो। उसकी प्रशंसा के साथ।

(56) वह लोग किसी प्रमाण के बिना जो उनके पास आया हो, अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं, उनके दिलों में मात्र बड़ाई है कि वह उस तक कभी पहुँचने वाले नहीं। अतः तुम अल्लाह की शरण माँगो, निस्सन्देह वह सुनने वाला है, देखने वाला है।

(57) निश्चय ही आकाशों और धरती का पैदा करना मनुष्यों को पैदा करने की तुलना में अधिक बड़ा कार्य है, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते। (58) और अन्धा और आँखों वाला समान नहीं हो सकता, और न ईमानदार और सदाचारी और वह जो बुराई करने वाले हैं। तुम लोग बहुत कम चिन्तन करते हो। (59) निस्सन्देह क़ियामत (प्रलय) आकर रहेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु अधिकतर लोग नहीं मानते।

(60) और तुम्हारे पालनहार ने फ़रमा दिया है कि मुझको पुकारो, मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूँगा। जो लोग मेरी उपासना से मुँह मोड़ते हैं, वह शीघ्र ही अपमानित होकर नरक में प्रवेश होंगे। (61) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनायी ताकि तुम उसमें विश्राम करो, और दिन को प्रकाशमय किया। निस्सन्देह अल्लाह लोगों पर बहुत कृपा करने वाला है परन्तु अधिकतर लोग आभार प्रकट नहीं करते। (62) यही अल्लाह तुम्हारा पालनहार है, हर चीज़ का पैदा करने वाला, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। फिर तुम कहाँ से भटकाये जाते हो। (63) इसी प्रकार वह लोग भटकाये जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे। (64) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए धरती को ठहरने का स्थान बनाया और आकाश को छत बनाया और तुम्हारा रूप बनाया तो क्या ही अच्छा रूप बनाया। और उसने तुमको उत्तम चीज़ों की जीविका दी। यह अल्लाह है तुम्हारा पालनहार, जो बड़ा ही बरकत वाला (विभूतिवाला) है अल्लाह जो पालनहार

है समस्त संसार का। (65) वह सजीव है उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। अतः तुम उसी को पुकारो, दीन (धर्म) को उसकी के लिए शुद्ध करते हुए। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए जो पालनहार है समस्त संसारक का।

(66) कहो, मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी उपासना करूँ जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, जबकि मेरे पास मेरे पालनहार की ओर से स्पष्ट प्रमाण आ चुके। और मुझको आदेश दिया गया है कि मैं अपने आप को संसार के पालनहार को सौपं दूँ। (67) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैदा किया, फिर वीर्य से, फिर ख़ून के लोथड़े से, फिर वह तुमको बच्चे के रूप में निकालता है, फिर वह तुमको बढ़ाता है ताकि तुम अपने पूर्ण सामर्थ्य को पहुँचो, फिर उसने तुमको बूढ़ा होने दिया। यद्यपि तुममें से कोई पहले ही मर जाता है। और ताकि तुम नियत समय तक पहुँच जाओ और ताकि तुम चिन्तन करो। (68) वही है जो जीवित करता है और मारता है। फिर जब वह किसी मामले का निर्णय कर लेता है तो मात्र वह उसको कहता है कि हो जा, तो वह हो जाता है।

(69) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़े निकालते हैं। वह कहाँ फिरे जाते हैं। (70) जिन्होंने किताब को झुठलाया और उस चीज़ को भी जिसके साथ हमने अपने सन्देष्टाओं को भेजा, तो शीघ्र ही वह जान लेंगे। (71) जबकि उनकी गर्दनों में पट्टे होंगे और जंजीरे, वह घसीटे जायेंगे। (72) जलते हुए पानी में। फिर वह आग में झोंक दिये जायेंगे। (73) फिर उनसे कहा जायेगा, कहाँ हैं वह जिनको तुम साझी करते थे। (74) अल्लाह के अतिरिक्त। वह कहेंगे- वह हमसे खो गये बल्कि हम इससे पहले किसी चीज़ को पुकारते न थे। इस प्रकार अल्लाह भटकाता है इन्कार, करने वालों को। (75) यह इस कारण से कि तुम धरती में औचित्य के बिना प्रसन्न होते थे और इस कारण से कि तुम घमण्ड करते थे। (76) नरक के द्वारों में प्रवेश हो जाओ, उसमें सदैव रहने के लिए तो कैसा बुरा ठिकाना है घमण्ड करने वालों का।

(77) अतः धैर्य रखो, निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। फिर जिसका हम इनसे वादा कर रहे हैं, उसका कुछ अंश हम तुमको दिखा देंगे, या तुमको

मृत्यु देंगे, अतः इनकी वापसी तो हमारी ही ओर है। (78) और हमने तुमसे पहले बहुत से सन्देष्टा भेजे, उनमें से कुछ के वृत्तान्त हमने तुमको सुनाये हैं और उनमें कुछ ऐसे भी हैं जिनके वृत्तान्त हमने तुमको नहीं सुनाये। और किसी सन्देष्टा का यह सामर्थ्य न था कि वह अल्लाह की अनुमति के बिना कोई निशानी ले आये। फिर जब अल्लाह का आदेश आ गया। तो न्याय के अनुसार निर्णय कर दिया गया। और बुराई करने वाले लोग उस समय घाटे में रह गये।

(79) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए मवेशी (पशु) बनाये ताकि तुम कुछ से सवारी का काम लो और उनमें से कुछ को तुम खाते हो। (80) और तुम्हारे लिए उनमें और भी लाभ हैं। और ताकि तुम उनके माध्यम से अपनी आवश्यकता तक पहुँचो जो तुम्हारे दिलों में हो और उन पर और नौकाओं पर तुम सवार किये जाते हो। (81) और वह तुमको और भी निशानियाँ दिखाता है तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को झुठलाओगे।

(82) क्या वह धरती में चले फिरे नहीं कि वह देखते कि उनका कैसा परिणाम हुआ उन लोगों का जो इनसे पहले गुज़रे हैं। वह इनसे अधिक थे, और शक्ति में और निशानियों में जो कि वह धरती पर छोड़ गये, वह इनसे बढ़े हुए थे। अतः उनकी कमाई उनके कुछ काम न आयी। (83) तो जब उनके पैग़म्बर उनके पास स्पष्ट प्रमाण लेकर आये तो वह अपने उस ज्ञान पर गर्वित रहे जो उनके पास था, और उन पर वह यातना आ पड़ी जिसका वह उपहास करते थे। (84) फिर जब उन्होंने हमारी यातना देखी, वह कहने लगे कि हम एक मात्र अल्लाह पर ईमान लाये और हम उसका इन्कार करते हैं। जिनको हम उसके साथ साझी करते थे। (85) तो उनका ईमान उनके काम न आया जबकि उन्होंने हमारी यातना देख ली। यही अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो उसके बन्दों में निरन्तर रही है, और उस समय इन्कार करने वाले घाटे में रह गये।

41. सूरह हा. मीम. अस-सज्दह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) यह अत्यन्त कृपालु असीम दयावान की ओर से उतारी हुई वाणी है। (3) यह एक किताब है जिसकी आयतें खोल-खोल कर बयान की गयी हैं, अरबी भाषा का क़ुरआन, उन लोगों के लिए जो समझ रखते हैं। (4) शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला। अतः उन लोगों में से अधिकतर ने इससे मुँह मोड़ा। अतः वह नहीं सुन रहे हैं। (5) और उन्होंने कहा हमारे दिलों पर पर्दे पड़े हुए हैं जिनकी ओर तुम हमको बुलाते हो और हमारे कानों में डाट है। और हमारे और तुम्हारे बीच में एक ओट है। अतः तुम अपना काम करो। हम भी अपना काम कर रहे हैं।

(6) कहो, मैं तो एक मनुष्य हूँ तुम जैसा। मेरे पास यह वह्य (श्रुति) आती है कि तुम्हारा उपास्य मात्र एक ही उपास्य है, अतः तुम सीधे रहो उसी की ओर और उसी से क्षमा चाहो। और विनाश है साझीदार ठहराने वालों के लिए। (7) जो ज़कात (अनिवार्य दान) नहीं देते और परलोक को झुठलाते हैं। (8) निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले कर्म किये, उनके लिए ऐसा बदला है जिसका क्रम टूटने वाला नहीं।

(9) कहो क्या तुम लोग उस हस्ती को झुठलाते हो जिसने पृथ्वी को दो दिन (काल) में बनाया, और तुम उसके समकक्ष ठहराते हो, वह पालनहार है समस्त संसार वालों का। (10) और उसने धरती में उसके ऊपर पहाड़ बनाये। और उसमें लाभ की चीज़ें रखी। और उसने उसकी खाद्‌य सामग्री ठहरा दी चार दिन में, पूरा हुआ पूछने वालों के लिए। (11) फिर उसने आकाश की ओर ध्यान दिया और वह धुआँ था। फिर उसने आकाश और पृथ्वी से कहा कि तुम दोनों आओ प्रसन्नता से अथवा अप्रसन्नता से । दोनों ने कहा हम प्रसन्नतापूर्वक उपस्थित हैं। (12) फिर उसने दो दिन में उसके सात आकाश बनाये और प्रत्येक आकाश में उसने आदेश भेज दिया। और हमने संसार के आकाश को दीपकों से सौन्दर्य प्रदान किया, और उसको सुरक्षित कर दिया। यह प्रभुत्वशाली और सर्वज्ञ की योजना है।

(13) तो यदि वह विमुख होते हैं तो कहो कि तुमको उसी प्रकार की यातना से डराता हूँ जैसी यातना आद और समूद पर उतारी गई। (14) जबकि उनके पास सन्देष्टा आये, उनके आगे से और उनके पीछे से कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। उन्होंने कहा कि यदि हमारा पालनहार चाहता तो वह फ़रिश्ता उतार देता, अतः हम उस चीज़ को झुठलाते हैं जिसको देकर तुम भेजे गये हो।

(15) आद की यह हालत थी कि उन्होंने धरती में बिना किसी औचित्य के घमण्ड किया, और उन्होंने कहा, कौन है जो शक्ति में हमसे अधिक है। क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया है, वह शक्ति में उनसे अधिक है और वह हमारी निशानियों को झुठलाते रहे। (16) तो हमने कुछ अशुभ दिनों में उन पर अत्यन्त तूफ़ानी हवा भेज दी ताकि उनको सांसारिक जीवन में अपमान की यातना चखाये, और परलोक की यातना उससे भी अधिक अपमानजनक है। और उनको कोई सहायता न पहुँचेगी। (17) और वह जो समूद थे, तो हमने उनको सन्मार्ग का रास्ता दिखाया परन्तु उन्होंने सन्मार्ग की अपेक्षा अन्धेपन को पसन्द किया, तो उनको अपमानजनक यातना के कड़के ने पकड़ लिया उनके दुराचारों के कारण से। (18) और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाये और डरने वाले थे।

(19) और जिस दिन अल्लाह के शत्रु आग की ओर एकत्र किये जायेंगे, फिर वह अलग-अलग किये जायेंगे। (20) यहाँ तक कि जब वह उसके पास आ जायेंगे, उनके कान और और उनकी आँखें और उनकी चमड़ियाँ उन पर उनके कर्मों की गवाही देंगी। (21) और वह अपनी चमड़ियों से कहेंगे, तुमने हमारे विरुद्ध क्यों गवाही दी। वह कहेंगी कि हमको उसी अल्लाह ने बोलने की क्षमता दी जिसने हर चीज़ को बोलने वाला कर दिया है। और उसी ने तुमको पहली बार पैदा किया और उसी के पास तुम लाये गये हो। (22) और तुम अपने को उससे छिपा न सकते थे कि तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी चमड़ियाँ तुम्हारे विरुद्ध गवाही दें, परन्तु तुम इस भ्रम में रहे कि अल्लाह तुम्हारे बहुत से उन कर्मों को नहीं जानता जो तुम करते हो। (23) और तुम्हारे इसी भ्रम ने जो कि तुमने अपने पालनहार के साथ किया था

तुमको नाश किया, अतः तुम घाटा उठाने वालों में से हो गये। (24) अतः यदि वह धैर्य रखें तो भी आग ही उनका ठिकाना है, और यदि वह क्षमा माँगें तो उनको क्षमादान नहीं मिलेगा।

(25) और हमने उन पर कुछ साथी नियुक्त कर दिये तो उन्होंने उनके आगे और पीछे की प्रत्येक चीज़ उनको शोभायमान बनाकर दिखाया। और उन पर वही बात सिद्ध होकर रही जो जिन्नों और मनुष्यों के उन समूहों पर सिद्ध हुई जो इनसे पहले गुज़र चुके थे। निस्सन्देह वह घाटे में रह जाने वाले थे।

(26) और अवज्ञा करने वालों ने कहा इस क़ुरआन को न सुनो और इसमें विघ्न डालो, ताकि तुम प्रभावशाली रहो। (27) अतः हम अवज्ञा करने वालों को कठोर यातना चखायेंगे और उनको उनके कर्म का निकृष्टम बदला देंगे। (28) यह अल्लाह के शत्रुओं का बदला है, अर्थात आग। उनके लिए उसमें सदैव रहने का ठिकाना होगा, इस बात के बदले में कि वह हमारी आयतों को झुठलाते थे।

(29) और अवज्ञा करने वाले कहेंगे कि ऐ हमारे पालनहार, हमें उन लोगों को दिखा जिन्होंने जिन्नों और मनुष्यों में से हमको भटकाया, हम उनको अपने पैरों के नीचे डालेंगे, ताकि वह अपमानित हों। (30) जिन लोगों ने कहा कि अल्लाह हमारा पालनहार है, फिर वह इस पर अटल रहे, निश्चय ही उन पर फ़रिश्ते उतरते हैं और उनसे कहते हैं कि तुम न डरो और न दुख करो। और उस जन्नत की शुभ सूचना से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुमसे वादा किया गया है। (31) हम सांसारिक जीवन में तुम्हारे मित्र हैं और परलोक में भी। और तुम्हारे लिए वहाँ प्रत्येक चीज़ है जिसका तुम्हारा दिल चाहे और तुम्हारे लिए उसमें प्रत्येक चीज़ हैं जो तुम माँगोगे। (32) क्षमावान और कृपा करने वाले की ओर से आतिथ्य के रूप में।

(33) और उससे श्रेष्ठ किसकी बात होगी जिसने अल्लाह की ओर बुलाया और अच्छा कर्म किया और कहा कि मैं आज्ञाकारियों में से हूँ। (34) और भलाई और बुराई दोनों समान नहीं, तुम उत्तर में वह कहो जो उससे श्रेष्ठ हो फिर तुम देखोगे कि तुममें और जिसमें शत्रुता थी, वह ऐसा हो गया जैसे कोई मित्र सम्बन्ध वाला। (35) और यह बात उसी को मिलती है जो ध

ैर्य रखने वाले हैं, और यह बात उसी को मिलती है जो बड़ा भाग्यवान है। (36) और यदि शैतान तुम्हारे हृदय में कुछ शंका डाले तो अल्लाह की शरण माँगो। निस्सन्देह वह सुनने वाला, जानने वाला है।

(37) और उसकी निशानियों में से है रात और दिन और सूरज और चाँद। तुम सूरज और चाँद को सजदा न करो बल्कि उस अल्लाह को सजदा करो जिसने उन सबको पैदा किया, यदि तुम उसी की उपासना करने वाले हो। (38) अतः यदि वह घमण्ड करें तो जो लोग तेरे पालनहार के पास हैं, वह रात व दिन उसी की स्तुति करते हैं और वह कभी नहीं थकते।

(39) और उसकी निशानियों में से यह है कि तुम धरती को दबी पड़ी हुई देखते हो, फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह उभरती है और फूल जाती है। निस्सन्देह जिसने इसको जीवित कर दिया, वह मुर्दों को भी जीवित कर देने वाला है। निस्सन्देह वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्यवान है। (40) जो लोग हमारी आयतों को उल्टे अर्थ पहनाते हैं, वह हमसे छिपे हुए नहीं हैं। क्या जो आग में डाला जायेगा वह अच्छा है अथवा वह व्यक्ति जो क़ियामत (उठाये जाने) के दिन शान्तिपूर्वक आयेगा। जो कुछ चाहे कर लो, निस्सन्देह वह देखता है जो तुम कर रहे हो।

(41) जिन लोगों ने अल्लाह के उपदेश की अवज्ञा की जबकि वह उनके पास आ गया, और निस्सन्देह यह एक प्रभुत्वशाली किताब है। (42) इसमें झूठ न इसके आगे से आ सकता है और न इसके पीछे से, यह तत्वदर्शी और प्रशंसित की ओर से अवतरित की गयी है। (43) तुमको वहीं बातें कही जा रही हैं जो तुमसे पहले सन्देष्टाओं को कही गयी हैं। निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार माफ़ करने वाला है और कष्टप्रद दण्ड देने वाला भी।

(44) और यदि हम उसको अजमी (गैर-अरबी) क़ुरआन बनाते तो वह कहते कि इसकी आयतें साफ़-साफ़ क्यों नहीं बयान की गयीं। क्या अजमी किताब और अरबी लोग। कहो कि वह ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन और आरोग्य है, और वह लोग जो ईमान नहीं लाते, उनके कानों में डाट है और वह उनके पक्ष में अन्धापन है। यह लोग मानो कि दूर के स्थान से पुकारे जा रहे हैं।

(45) और हमने मूसा को किताब दी थी तो उसमें मतभेद पैदा किया गया। और यदि तेरे पालनहार की ओर से एक बात पहले निर्धारित न हो चुकी होती तो उनके बीच निर्णय कर दिया जाता। और यह लोग उसकी ओर से ऐसे सन्देह में हैं जिसने उनको असमंजस में डाल रखा है। (46) जो व्यक्ति अच्छा कर्म करेगा तो अपने ही लिए करेगा और जो व्यक्ति बुराई करेगा तो उसकी विपत्ति उसी पर आयेगी। और तेरा पालनहार बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं।

(47) क़ियामत का ज्ञान अल्लाह ही से सम्बन्धित है। और कोई फल अपने खोल से नहीं निकलता और न कोई महिला गर्भवती होती और न जन्म देती है, परन्तु यह सब उसके संज्ञान में होता है और जिस दिन अल्लाह उनको पुकारेगा कि मेरे साझीदार कहाँ हैं, वह कहेंगे कि हम आपसे यही प्रार्थना करते हैं कि हममें कोई इसका दावेदार नहीं। (48) और जिनको वह पहले पुकारते थे, वह सब उनसे खो जायेंगे, और वह समझ लेंगे कि उनके लिए कोई बचाव का उपाय नहीं।

(49) और मनुष्य भलाई माँगने से नहीं थकता, और यदि उसको कोई कष्ट पहुँच जाये तो वह निराश और हताश हो जाता है। (50) और यदि हम उसको कष्ट के बाद जो कि उसे पहुँचा था, अपनी कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह कहता है यह तो मेरा अधिकार ही है, और मैं नहीं समझता कि क़ियामत (महाप्रलय) कभी आयेगी। और यदि मैं अपने पालनहार की ओर लौटाया गया तो उसके पास भी मेरे लिए श्रेष्ठता ही है। अतः हम इन अवज्ञाकारियों को इनके कर्मों से अवश्य सचेत करेंगे। और इनको कठोर यातना का स्वाद चखायेंगे।

(51) और जब हम मनुष्य पर कृपा करते हैं तो वह मुँह मोड़ लेता है और विमुख हो जाता है। और जब उसको कष्ट पहुँता है तो वह लम्बी-लम्बी प्रार्थनाएँ करने वाला बन जाता है। (52) कहो कि बताओ, यदि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से आया हो, फिर तुमने इसको झुठलाया हो तो उस व्यक्ति से अधिक पथभ्रष्ट और कौन होगा जो विरोध में बहुत दूर चला जाये।

(53) शीघ्र ही हम उनको अपनी निशानियाँ दिखायेंगे क्षितिजों में भी और

स्वंय उनके अन्दर भी। यहाँ तक कि उन पर प्रकट हो जायेगा कि यह क़ुरआन सत्य है। और क्या यह बात पर्याप्त नहीं कि तेरा पालनहार हर चीज़ का गवाह है। (54) सुन लो, यह लोग अपने पालनहार की भेंट में सन्देह रखते हैं। सुन लो, कि प्रत्येक चीज़ उसकी परिधि में है।

42. सूरह अश-शूरा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) ऐन. सीन. क़ाफ. (3) इसी प्रकार अल्लाह प्रभुत्वशाली व तत्वदर्शी वह्य (प्रकाशना) करता है तुम्हारी ओर और उनकी ओर जो तुमसे पहले गुज़र चुके। (4) उसी का है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है, वह सर्वापरि है, महिमावान। (5) निकट है कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े, और फ़रिश्ते अपने पालनहार की स्तुति करते हैं उसकी की प्रशंसा के साथ और धरती वालों के लिए क्षमा माँगते हैं। सुन लो कि अल्लाह ही क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (6) और जिन लोगों ने उसके अतिरिक्त दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, अल्लाह उनके ऊपर निगाह रखे हुए है और तुम उनके ऊपर ज़िम्मेदार नहीं।

(7) और हमने इसी प्रकार तुम्हारी ओर अरबी क़ुरआन उतारा है, ताकि तुम मक्का वालों को और उसके आस-पास वालों को डरा दो। और उनको एकत्र होने के दिन से डरा दो जिसके आने में कोई सन्देह नहीं। एक समूह जन्नत में होगा और एक समूह आग में।

(8) और यदि अल्लाह चाहता तो उन सब को एक ही उम्मत (समुदाय) बना देता, परन्तु वह जिसको चाहता है अपनी दयालुता में प्रवेश देता है और अत्याचारियों का कोई समर्थक और सहायक नहीं। (9) क्या उन्होंने उसके अतिरिक्त दूसरे संरक्षक बना रखे हैं, तो अल्लाह ही संरक्षक है और वही मुर्दों को जीवित करता है और वह प्रत्येक चीज़ पर सामर्थ्य रखता है। (10) और जिस किसी बात में तुम मतभेद करते हो उसका निर्णय अल्लाह ही के सुपुर्द

है। वही अल्लाह मेरा पालनहार है, उसी पर मैंने भरोसा किया और उसी की ओर मैं लौटता हूँ।

(11) वह आकाशों का और पृथ्वी का पैदा करने वाला है। उसने तुम्हारी जाति से तुम्हारे जोड़े पैदा किये और पशुओं के भी जोड़े बनाये। उसके माध्यम से वह तुम्हारे वंश को चलाता हैं कोई चीज़ उसके समान नहीं। और वह सुनने वाला, देखने वाला है। (12) उसी के अधिकार में आकाशों और धरती की कुंजियाँ हैं। वह जिसके लिए चाहता है अधिक जीविका देता है और जिसको चाहता है कम कर देता है। निस्सन्देह वह हर चीज़ का ज्ञान रखने वाला है।

(13) अल्लाह ने तुम्हारे लिए वही दीन (धर्म) निर्धारित किया है जिसका आदेश उसने नूह को दिया था और जिसकी वह्य (प्रकाशना) हमने तुम्हारी ओर की है और जिसका आदेश हमने इब्राहीम को और मूसा को और ईसा को दिया था कि दीन (धर्म) को स्थापित रखो और उसमें भेद न डालो। साझी ठहराने वालों पर वह बात बहुत भारी है जिसकी ओर तुम उनको बुला रहे हो। अल्लाह जिसको चाहता है अपनी ओर चुन लेता है। और वह अपनी ओर उनका मार्गदर्शन करता है जो उसकी ओर ध्यान लगाते हैं।

(14) और जिन लोगों ने विभेद किया इसके पश्चात कि उनके पास ज्ञान आ चुका समूह समूह हुए, मात्र आपस की हठधर्मी के कारण। और यदि तुम्हारे पालनहार की ओर से एक नियत समय की बात निर्धारित न हो चुकी होती तो उनके बीच निर्णय कर दिया जाता। और जिन लोगों को उनके बाद किताब दी गयी, वह उसकी ओर से सन्देह में पड़े हुए हैं जिसने उनको असमंजस में डाल दिया है। (15) अतः तुम इसी की ओर बुलाओ और इस पर जमे रहो जैसा कि तुमको आदेश दिया गया है और उनकी इच्छाओं का अनुसरण न करो। और कहो कि अल्लाह ने जो किताब उतारी है मैं उस पर ईमान लाता हूँ। और मुझको यह आदेश हुआ है कि मैं तुम्हारे बीच न्याय करूँ और अल्लाह हमारा पालनहार है और तुम्हारा पालनहार भी। हमारा कर्म हमारे लिए और तुम्हारा कर्म तुम्हारे लिए। हममें और तुममें कुछ झगड़ा नहीं। अल्लाह हम सबको एकत्र करेगा। और उसी के पास जाना है। (16) और जो लोग अल्लाह के सम्बन्ध में तर्क-वितर्क कर रहे हैं, इसके बाद कि वह मान

लिया गया, उनका तर्क-वितर्क उनके पालनहार के निकट असत्य है और उन पर क्रोध है और उनके लिए कठोर दण्ड है।

(17) अल्लाह ही है जिसने अधिकार के साथ किताब उतारी और तराजू भी। और तुमको क्या मालूम संभवतः वह घड़ी निकट हो। (18) जो लोग उसका विश्वास नहीं रखते, वह उसकी जल्दी कर रहे हैं। और जो लोग विश्वास रखने वाले हैं वह उससे डरते हैं और वह जानते हैं कि वह सत्य है। याद रखो कि जो लोग उस घड़ी के सम्बन्ध में झगड़ते हैं, वह पथभ्रष्टता में बहुत दूर निकल गये हैं।

(19) अल्लाह अपने बन्दों पर कृपा करने वाला है। वह जिसको चाहता है जीविका देता है। और वह शक्तिवाला और प्रभुत्ववाला है। (20) जो व्यक्ति परलोक की खेती चाहे हम उसको उसकी खेती में उन्नति प्रदान करेंगे। और जो व्यक्ति संसार की खेती चाहे हम उसको उसमें से कुछ दे देते हैं और परलोक में उसका कोई हिस्सा नहीं।

(21) क्या इनके कुछ साझीदार हैं जिन्होंने इनके लिए ऐसा दीन (धर्म) निर्धारित किया है जिसकी अल्लाह ने अनुमति नहीं दी। और यदि निर्णय की बात तय न हो चुकी होती तो उनका निर्णय कर दिया जाता। और निस्सन्देह अत्याचारियों के लिए कष्टप्रद यातना है। (22) तुम अत्याचारियों को देखोगे कि वह डर रहे होंगे उससे जो उन्होंने कमाया। और वह उन पर अवश्य पड़ने वाला है। और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये, वह जन्नत के बागो में होंगे। उनके लिए उनके पालनहार के पास वह सब कुछ होगा जो वह चाहेंगे, यही बड़ा पुरस्कार है। (23) यह चीज़ है जिसकी शुभ सूचना अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छे कर्म किये। कहो कि मैं इस पर तुमसे कोई बदला नहीं चाहता परन्तु निकट सम्बन्ध का प्रेम। और जो व्यक्ति कोई भलाई करेगा हम उसके लिए उसमें भलाई बढ़ा देंगे। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला है गुणग्राहक है।

(24) क्या वह कहते हैं कि इसने अल्लाह पर झूठ बाँधा है। तो यदि अल्लाह चाहे तो वह तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। और अल्लाह झूठ को मिटाता है और सत्य को सिद्ध करता है अपनी बातों से। निस्सन्देह वह दिलों

की बातें जानता है। (25) और वही है जो अपने बन्दों की तौबा स्वीकार करता है और बुराईयों को क्षमा करता है और वह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (26) और वह उन लोगों की प्रार्थनाएँ स्वीकार करता है जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छा कर्म किया। और वह उनको अपनी कृपा से, अधिक दे देता है। और जो झुठलाने वाले हैं, उनके लिए कठोर यातना है।

(27) और यदि अल्लाह अपने बन्दों के लिए जीविका को खोल देता तो वह धरती में उपद्रव करते। परन्तु वह पैमाने के साथ उतारता है जितना चाहता है। निस्सन्देह अल्लाह अपने बन्दों को जानने वाला है, देखने वाला है। (28) और वही है जो लोगों के निराश हो जाने के बाद वर्षा बरसाता है और अपनी दया फैला देता है और वह काम बनाने वाला है, प्रशंसा योग्य है। (29) और उसी की निशानियों में से है आकाशों और धरती का पैदा करना। और वह जीवधारी जो उसने उनके बीच फैलायें है। और वह उनको एकत्र करने का सामर्थ्य रखता है जब वह उनको एकत्र करना चाहे।

(30) और जो विपत्ति तुम पर आती है, वह तुम्हारे हाथों के किये हुए कामों ही से आती है और बहुत से पापों को वह क्षमा कर देता है। (31) और तुम धरती में अल्लाह के नियन्त्रण से निकल नहीं सकते। और अल्लाह के अतिरिक्त न तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न कोई सहायक।

(32) और उसकी निशानियों में से यह है कि जहाज समुद्र में चलते हैं जैसे पहाड़ । (33) यदि वह चाहे तो वह हवा को रोक दे फिर वह समुद्र की सतह पर ठहरे हुए रह जायें। निस्सन्देह इसके अन्दर निशानियाँ हैं प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य रखने वाला, कृतज्ञता करने वाला है। (34) या वह उनको नष्ट कर दे उनके कर्मों के कारण और क्षमा कर दे बहुत से लोगों को। (35) और ताकि जान लें वह लोग जो हमारी निशानियों में झगड़ते हैं कि उनके लिए भागने कि कोई जगह नहीं।

(36) अतः जो कुछ तुमको मिला है वह मात्र सांसारिक जीवन की अस्थाई सुख सामग्री है। और जो कुछ अल्लाह के पास है वह अधिक श्रेष्ठ है और सदैव रहने वाला है उन लोगों के लिए जो ईमान लाये और वह अल्लाह पर भरोसा रखते हैं।

(37) और वह लोग जो बड़े पापों से और अश्लीलता से बचते हैं और जब उनको क्रोध आता है तो वह क्षमा कर देते हैं। (38) और वह जिन्होंने अपने पालनहार के निमन्त्रण को स्वीकार किया और नमाज़ स्थापित किया और वह अपना काम परस्पर परामर्श से करते हैं। और हमने जो कुछ उन्हें प्रदान किया है वह उसमें से ख़र्च करते हैं। (39) और वह लोग कि जब उन पर चढ़ाई होती है तो वह बदला लेते हैं। (40) और बुराई का बदला है वैसी ही बुराई। फिर जिसने क्षमा कर दिया और सुधार किया तो उसका बदला अल्लाह के पास है। निस्सन्देह वह अत्याचारियों को पसन्द नहीं करता। (41) और जो व्यक्ति अपने ऊपर अत्याचार होने के बाद बदला ले तो ऐसे लोगों के ऊपर कोई आरोप नहीं। (42) आरोप मात्र उन पर है जो लोगों के ऊपर अत्याचार करते हैं और धरती में अनाधिकृत रूप से विद्रोह करते हैं। यही लोग हैं जिनके लिए कष्टप्रद यातना है। (43) और जिस व्यक्ति ने धैर्य रखा और क्षमा कर दिया तो निस्सन्देह यह साहस के कार्य हैं।

(44) और जिस व्यक्ति को अल्लाह भटका दे तो उसके बाद उसका कोई संरक्षक नहीं। और तुम अत्याचारियों को देखोगे कि जब वह यातना को देखेंगे तो वह कहेंगे कि क्या वापस जाने का कोई उपाय है। और तुम उनको देखोगे कि वह नरक के सामने लाये जायेंगे। (45) वह अपमान से झुके हुए होंगे। छिपी निगाहों से देखते होंगे। और ईमान वाले कहेंगे कि घाटे वाले वही लोग है जिन्होंने क़ियामत (उठाये जाने) के दिन अपने आप को और अपने सम्बन्धियों को घाटे में डाल दिया। सुन लो, अत्याचारी लोग सदा की यातना में रहेंगे। (46) और उनके लिए कोई सहायक न होंगे जो अल्लाह के मुक़ाबले में उनकी सहायता करें। और अल्लाह जिसको भटका दे तो उसके लिए कोई मार्ग नहीं।

(47) तुम अपने पालनहार का निमन्त्रण स्वीकार करो इससे पहले कि ऐसा दिन आ जाये जिसके लिए अल्लाह की ओर से हटना न होगा। उस दिन तुम्हारे लिए कोई शरण न होगी और न तुम किसी चीज़ को निरस्त कर सकोगे। (48) अतः यदि वह मुँह मोड़ें तो हमने तुमको उनके ऊपर संरक्षक बनाकर नहीं भेजा है। तुम्हारा दायित्व मात्र पहुँचा देना है। और मनुष्य को जब हम

अपनी कृपा से सुशोभित करते हैं। तो वह उस पर प्रसन्न हो जाता है और यदि उनके कर्मों के बदले में उन पर कोई आपत्ति आ पड़ती है तो मनुष्य कृतघ्नता करने लगता है।

(49) आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह के लिए है, वह जो चाहता है पैदा करता है वह जिसको चाहता है बेटियाँ प्रदान करता है और जिसको चाहता है बेटे प्रदान करता है। (50) अथवा उनको एकत्र कर देता है बेटे भी और बेटियाँ भी। और जिसको चाहता है निःसंतान रखता है। निस्सन्देह वह जानने वाला है, सामर्थ्य वाला है।

(51) और किसी मनुष्य का यह सामर्थ्य नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, परन्तु वह्य (श्रुति) के माध्यम से अथवा पर्दे के पीछे से अथवा वह किसी फ़रिश्ते को भेजे कि वह वह्य कर दे उसकी अनुमति से जो वह चाहे। निस्सन्देह वह सबसे ऊपर है, विवेक वाला है। (52) और इसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर वह्य (प्रकाशना) की है, एक रुह अपने आदेश से। तुम न जानते थे कि किताब क्या है और न यह जानते थे कि ईमान क्या है। परन्तु हमने इसको एक प्रकाश बनाया, इससे हम मार्गदर्शन प्रदान करते हैं अपने बन्दों में से जिसको चाहते हैं। और निस्सन्देह तुम एक सीधे मार्ग की ओर मार्गदर्शन कर रहे हो। (53) उस अल्लाह के मार्ग की ओर जिसका वह सब कुछ है जो आकाशों और धरती में है। सुन लो, सभी मामले अल्लाह ही की ओर लौटने वाले हैं।

43. सूरह अज़-ज़ुख़रुफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) सौगन्ध है इस स्पष्ट किताब की। (3) हमने इसको अरबी भाषा का क़ुरआन बनाया है ताकि तुम समझो। (4) और निस्सन्देह यह मूल किताब में हमारे पास है, उच्च और विवेकपूर्ण।

(5) क्या हम तुम्हारे मार्गदर्शन से इसलिए अनदेखी कर लेंगे कि तुम सीमा का उल्लघंन करने वाले हो। (6) और हमने अगले लोगों में कितने ही सन्देष्टा

भेजे। (7) और उन लोगों के पास कोई सन्देष्टा नहीं आया जिसका उन्होंने उपहास न किया हो। (8) फिर जो लोग उनसे अधिक बलवान थे, उनको हमने नष्ट कर दिया। और अगले लोगों की मिसालें (उदाहरण) गुज़र चुकीं।

(9) और यदि तुम इनसे पूछो कि आकाशों और धरती को किसने बनाया है तो वह अवश्य कहेंगे कि इनको प्रभुत्वशाली, जानने वाले ने बनाया। (10) जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी को फ़र्श बनाया और उसमें तुम्हारे लिए मार्ग बनाये ताकि तुम राह पाओ। (11) और जिसने आसमान से पानी उतारा एक पैमाने के साथ। फिर हमने उससे मृत भूमि को जीवित कर दिया, इसी प्रकार तुम निकाले जाओगे। (12) और जिसने विभिन्न प्रकार की चीज़ें बनाईं और तुम्हारे लिए वह नौकाएँ और पशु बनाये जिन पर तुम सवार होते हो। (13) ताकि तुम उनकी पीठ पर जम कर बैठो। फिर तुम अपने पालनहार की नेमत को याद करो जबकि तुम उन पर बैठो। और कहो कि पवित्र है वह जिसने इन चीज़ों को हमारे वश में कर दिया। और हम ऐसे न थे कि इनको नियन्त्रण में करते। (14) और निस्सन्देह हम अपने पालनहार की ओर लौटने वाले हैं।

(15) और उन लोगों ने अल्लाह के बन्दों में से अल्लाह का अंश ठहराया। निस्सन्देह मनुष्य स्पष्ट कृतघ्न है। (16) क्या अल्लाह ने अपनी रचनाओं में से बेटियाँ पसन्द कीं और तुमको बेटों से सुशोभित किया। (17) और जब उनमें से किसी को उस चीज़ की सूचना दी जाती है जिसको वह रहमान के लिए बयान करता है तो उसका चेहरा काला पड़ जाता है और वह दुख से भर जाता है। (18) क्या वह जो साज-सज्जा में पालन-पोषण पाये और झगड़े में बात न कह सके। (19) और फ़रिश्ते जो रहमान के बन्दे हैं उनको उन्होंने महिला घोषित कर रखा है। क्या वह उनकी रचना के समय उपस्थित थे। उनका यह दावा लिख लिया जायेगा और उनसे पूछ होगी।

(20) और वह कहते हैं कि यदि रहमान चाहता तो हम उनकी उपासना न करते। उनको इसका कोई ज्ञान नहीं। वह मात्र काल्पनिक बात कर रहे हैं। (21) क्या हमने इनको इससे पहले कोई किताब दी है तो इन्होंने उसको दृढ़ता से पकड़ रखा है। (22) बल्कि वह कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादा को एक मार्ग पर पाया है और हम उनके पीछे चल रहे हैं। (23) और इसी

प्रकार हम तुमसे पहले जिस बस्ती में कोई डराने वाला भेजा तो उसके सम्पन्न लोगों ने कहा कि हमने अपने बाप-दादा को एक मार्ग पर पाया है और हम उनके पीछे चले जा रहे हैं। (24) नज़ीर (डराने वाले) ने कहा, यद्यपि मैं इससे अधिक उचित मार्ग तुम्हें बताऊँ जिस पर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है। उन्होंने कहा कि हम उसको झुठलाते हैं जो देकर तुम भेजे गये हो। (25) तो हमने उनसे प्रतिशोध लिया, अतः देखो कि कैसा परिणाम हुआ झुठलाने वालों का।

(26) और जब इब्राहीम ने अपने पिता से और अपनी क़ौम से कहा कि मैं उन चीज़ों से बरी हूँ जिनकी तुम उपासना करते हो। (27) परन्तु वह जिसने मुझको पैदा किया, तो निस्सन्देह वह मेरा मार्गदर्शन करेगा। (28) और इब्राहीम यही वाक्य अपने पीछे अपनी सन्तान में छोड़ गया। ताकि वह उसकी ओर लौटें। (29) बल्कि मैंने उनको और उनके बाप-दादा को सांसारिक सामग्री प्रदान की यहाँ तक कि उनके पास सत्य आया और सन्देष्टा स्पष्ट सुना देने वाला। (30) और जब उनके पास सत्य आ गया, उन्होंने कहा कि यह जादू है और हम इसको झुठलाते हैं।

(31) और उन्होंने कहा कि यह क़ुरआन दोनों बस्तियों में से किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतारा गया। (32) क्या यह लोग तेरे पालनहार की कृपा को बाँटते हैं। सांसारिक जीवन में उनकी जीविका को तो हमने बाँटा है और हमने एक को दूसरे पर श्रेष्ठता प्रदान की है ताकि वह एक-दूसरे से काम लें। और तेरे पालनहार की कृपा उससे श्रेष्ठ है जो ये एकत्र कर रहे हैं। (33) और यदि यह बात न होती कि सब लोग एक ही मार्ग के हो जायेंगे तो जो लोग रहमान को झुठलाते हैं, उनके लिए हम उनके घरों की छतें चाँदी की बना देते और सीढियाँ भी जिन पर वह चढ़ते हैं। (34) और उनके घरों के किवाड़ भी और तख़्त भी जिन पर वह तकिया लगाकर बैठते हैं। (35) और सोने के भी, और यह चीज़ें तो मात्र सांसारिक जीवन की सामग्री हैं और परलोक तेरे पालनहार के पास उससे डरने वालों के लिए है।

(36) और जो व्यक्ति रहमान के उपदेश से मुँह मोड़ता है तो हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं, तो वह उसका मित्र बन जाता है।

(37) और वह उनको सन्मार्ग से रोकते रहते हैं। और यह लोग समझते हैं कि वह सन्मार्ग पर हैं। (38) यहाँ तक कि जब वह हमारे पास आयेगा तो कहेगा काश मेरे और तेरे बीच पूर्व और पश्चिम की दूरी होती। तो क्या ही बुरा मित्र था। (39) और जबकि तुम अत्याचार कर चुके तो आज यह बात तुमको कुछ भी लाभ नहीं देगी कि तुम यातना में एक-दूसरे के साझी हो।

(40) तो क्या तुम बहरों को सुनाओगे अथवा तुम अन्धों को मार्ग दिखाओगे और उनको जो स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं। (41) अतः यदि हम तुमको उठा लें तो हम उनसे बदला लेने वाले हैं। (42) या तुमको दिखा देंगे वह चीज़ जिसका हमने उनसे वादा किया है। (43) तो हम उन पर पूर्ण रूप से सामर्थ्यवान हैं। अतः तुम इसको दृढ़तापूर्वक थामे रहो जो तुम्हारे ऊपर वह्य (प्रकाशना) किया गया है। निस्सन्देह तुम एक सीधे मार्ग पर हो। (44) और यह तुम्हारे लिए और तुम्हारी क़ौम के लिए उपदेश है। और शीघ्र ही उनसे पूछ होगी। (45) और जिनको हमने तुमसे पहले भेजा है, उनसे पूछ लो कि क्या हमने रहमान के अतिरिक्त अन्य उपास्य ठहराये थे कि उनकी उपासना की जाये।

(46) और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा तो उसने कहा कि मैं संसार के स्वामी का भेजा हुआ हूँ। (47) अतः जब वह उनके पास हमारी निशानियों के साथ आया तो वह उस पर हँसने लगे। (48) और हम उनको जो निशानियाँ दिखाते थे वह पहली निशानी से बढ़ कर होती थीं। और हमने उनको यातना में पकड़ा ताकि वह लौटें। (49) और उन्होंने कहा कि ऐ जादूगर, हमारे लिए अपने पालनहार से प्रार्थना करो, उस वचन के आधार पर जो उसने तुमसे किया है, हम अवश्य मार्ग पर आ जायेंगे। (50) फिर जब हमने वह यातना उनसे हटा दिया तो उन्होंने अपना वचन तोड़ दिया।

(51) और फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के बीच पुकार कर कहा कि ऐ मेरी क़ौम, क्या मिस्र का साम्राज्य मेरा नहीं है, और ये नहरें जो मेरे नीचे बह रही हैं। क्या तुम लोग देखते नहीं। (52) बल्कि मैं श्रेष्ठ हूँ उस व्यक्ति से जो कि निम्न है। और स्पष्ट बोल नहीं सकता। (53) फिर क्यों न उस पर सोने के कंगन आ पड़े अथवा फ़रिश्ते उसके साथ पंख बाँधकर आते।

(54) अतः उसने अपनी क़ौम को विवेकहीन कर किया। फिर उन्होंने उसकी बात मान ली। यह अवज्ञाकारी लोग थे। (55) फिर जब उन्होंने हमको क्रोध दिलाया तो हमने उनसे बदला लिया। और हमने उन सबको डुबा दिया। (56) फिर हमने उनको भूतकाल की कहानी बना दिया और दूसरों के लिए एक शिक्षा सामग्री।

(57) और जब मरियम के बेटे की मिसाल (उदाहरण) दी गयी तो तुम्हारी क़ौम के लोग उस पर चिल्ला उठे। (58) और उन्होंने कहा कि हमारे उपास्य अच्छे हैं अथवा वह। यह उदाहरण वह तुमसे मात्र झगड़ने के लिए बयान करते हैं। (59) बल्कि यह लोग झगड़ालू हैं। ईसा तो मात्र हमारा एक बन्दा था जिस पर हमने कृपा की और उसको इस्राईल की सन्तान के लिए एक आदर्श बना दिया। (60) और यदि हम चाहें तो तुम्हारे अन्दर से फ़रिश्ते बना दें। जो पृथ्वी पर तुम्हारे उत्तराधिकारी हों। (61) और निस्सन्देह ईसा क़ियामत (प्रलय) का एक निशान हैं, तो तुम इस में सन्देह न करो और मेरा आज्ञापालन करो। यही सीधा मार्ग है। (62) और शैतान तुमको इससे रोकने न पाये, निस्सन्देह वह तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है।

(63) और जब ईसा स्पष्ट निशानियों के साथ आया, उसने कहा कि मैं तुम्हारे पास तत्वदर्शिता लेकर आया हूँ और ताकि मैं तुम पर स्पष्ट कर दूँ कुछ बातें जिनमें तुम मतभेद कर रहे हो। अतः तुम अल्लाह से डरो और मेरा आज्ञापालन करो। (64) निस्सन्देह अल्लाह ही मेरा पालनहार है और तुम्हारा पालनहार भी, तो तुम उसी की उपासना करो, यही सीधा मार्ग है। (65) फिर समूहों ने परस्पर मतभेद किया। तो विनाश है उन लोगों के लिए जिन्होंने अत्याचार किया, एक कष्टप्रद दिन की यातना से।

(66) यह लोग मात्र क़ियामत (प्रलय) की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि वह उन पर अचानक आ पड़े और इनको ख़बर भी न हो। (67) सारे मित्र उस दिन एक-दूसरे के शत्रु होंगे, सिवाय डरने वालों के। (68) ऐ मेरे बन्दो, आज तुम पर न कोई भय है और न तुम दुखी होगे। (69) जो लोग हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे। (70) जन्नत में प्रवेश हो जाओ तुम और तुम्हारी पत्नियाँ, तुम प्रसन्न किये जाओगे। (71) उनके समक्ष सोने के प्याले

और थालियाँ प्रस्तुत की जायेंगी। और वहाँ वह चीज़ें होंगी जिनका मन चाहेगा और जिनसे आँखों को तृप्ति मिलेगी। और तुम यहाँ सदैव रहोगे। (72) और यह वह जन्नत है जिसके तुम स्वामी बनाये गये उस कारण से जो तुम करते थे। (73) तुम्हारे लिए इसमें बहुत से फल हैं जिनमें से तुम खाओगे।

(74) निस्सन्देह अपराधी लोग सदैव नरक की यातना में रहेंगे। (75) वह उनसे हल्की न की जायेगी और वह उसमें निराश पड़े रहेंगे। (76) और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वह स्वंय ही अत्याचारी थे। (77) और वह पुकारेंगे कि ऐ स्वामी, तुम्हारा पालनहार हमारा समापन ही कर दे। फ़रिश्ता कहेगा तुमको इसी प्रकार पड़े रहना है। (78) हम तुम्हारे पास सत्य लेकर आये परन्तु तुममें से अधिकतर लोग सत्य से विमुख रहे। (79) क्या उन्होंने कोई बात नियत कर ली है तो हम भी एक बात नियत कर लेंगे। (80) क्या इनका भ्रम है कि हम इनके रहस्यों को और इनके परामर्शों को नहीं सुन रहे हैं। हाँ, और हमारे भेजे हुए उनके पास लिखते रहते हैं।

(81) कहो कि यदि रहमान के कोई सन्तान हो तो मैं सबसे पहले उसकी उपासना करने वाला हूँ। (82) आकाशों और धरती का स्वामी, सिंहासन का स्वामी। वह उन बातों से पवित्र है जिसको लोग बयान करते हैं। (83) अतः उनको छोड़ दो कि वह वाद-विवाद करें और खेलें, यहाँ तक कि वह उस दिन का सामना करें जिसका इनसे वादा किया जा रहा है।

(84) और वही है जो आसमान में स्वामी है और वही पृथ्वी पर स्वामी है और वह तत्वदर्शी, ज्ञान वाला है। (85) और बहुत बरकत वाली (विभतिपूर्ण) है वह हस्ती जिसका साम्राज्य आकाशों और धरती में है और जो कुछ उनके मध्य है। और उसी के पास क़ियामत (महाप्रलय) की सूचना है। और उसी की ओर तुम लौटाये जाओगे।

(86) और अल्लाह के अतिरिक्त जिनको यह लोग पुकारते हैं वह सिफ़ारिश का अधिकार नहीं रखते, परन्तु वह सत्य की गवाही देंगे और वह जानते होंगे। (87) और यदि तुम इनसे पूछो कि इनको किसने पैदा किया है तो वह यही कहेंगे कि अल्लाह ने, फिर वह कहाँ भटक जाते हैं। (88) और उसको सन्देष्टा के इस कथन की सूचना है कि ऐ मेरे पालनहार,

यह ऐसे लोग हैं कि ईमान नहीं लाते। (89) अतः इनकी अनदेखी करो और कहो कि सलाम है तुमको, शीघ्र ही उनको ज्ञात हो जायेगा।

44. सूरह अद-दुख़ान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) सौगन्ध है इस स्पष्ट किताब की। (3) हमने इसको एक बरकत वाली (विभूतिपूर्ण) रात में अवतरित किया है, निसन्देह हम चेतावनी देने वाले थे। (4) उस रात में प्रत्येक तत्वदर्शिता वाला मामला निर्धारित किया जाता है,

(5) हमारे आदेश से। निस्सन्देह हम थे भेजने वाले (6) तेरे पालनहार की कृपा से, वही सुनने वाला है, जानने वाला है। (7) आकाशों और धरती का पालनहार और जो कुछ उनके मध्य है, यदि तुम विश्वास रखने वाले हो। (8) उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। वही जीवित करता है और मृत्यु प्रदान करता है। वह तुम्हारा भी पालनहार और तुम्हारे अगले बाप-दादा का भी पालनहार। (9) बल्कि वह सन्देह में पड़े हुए खेल रहे हैं। (10) तो प्रतीक्षा करो उस दिन की जब आकाश एक खुले हुए धुँए के साथ प्रकट होगा। (11) वह लोगों को घेर लेगा। यह एक कष्टप्रद यातना है। (12) ऐ हमारे पालनहार, हम पर से यातना टाल दे, हम ईमान लाते हैं। (13) उनके लिए मार्गदर्शन कहाँ, और उनके पास सन्देष्टा आ चुका था स्पष्ट सुनाने वाला। (14) फिर उन्होंने उससे पीठ फेरी और कहा कि यह तो एक सिखाया हुआ दिवाना है। (15) हम कुछ समय के लिए यातना को हटा दें तुम फिर अपनी उसी दशा पर आ जाओगे। (16) जिस दिन हम पकड़ेंगे बड़ी पकड़, उस दिन हम पूरा बदला लेंगे।

(17) और इनसे पहले हमने फ़िरऔन की क़ौम की परीक्षा ली। और इनके पास एक सम्मानित सन्देष्टा आया। (18) कि अल्लाह के बन्दों को मेरे सुपुर्द करो। मैं तुम्हारे लिए एक विश्वस्त सन्देष्टा हूँ। (19) और यह कि अल्लाह के मुक़ाबले में विद्रोह न करो। मैं तुम्हारे समक्ष एक स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता हूँ। (20) और मैं अपने और तुम्हारे पालनहार की शरण ले चुका हूँ और इस

बात से कि तुम मुझे पत्थरों से मार डालो। (21) और यदि तुम ईमान नहीं लाते तो तुम मुझसे अलग रहो।

(22) अतः मूसा ने अपने पालनहार को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (23) तो अब तुम मेरे बन्दों को रात ही रात में लेकर चले जाओ, तुम्हारा पीछा किया जायेगा। (24) और तुम पानी को थमा हुआ छोड़ दो, उनकी सेना डूबने वाली है। (25) उन्होंने कितने ही बाग़ और स्रोत। (26) और खेतियाँ और अच्छे भवन। (27) और विश्राम की सामग्री जिसमें वह प्रसन्न रहते थे, सब छोड़ दिये। (28) इसी प्रकार हुआ। और हमने दूसरी क़ौम को उनका स्वामी बना दिया। (29) तो न उन पर आकाश रोया और न धरती रोई, और न उनको अवकाश दिया गया।

(30) और हमने इस्राईल की सन्तान को अपमान वाली यातना से छुटकारा दे दिया। (31) अर्थात फ़िरऔन से, निस्सन्देह वह विद्रोही और सीमा से निकल जाने वालों में से था। (32) और हमने उनको अपने ज्ञान की दृष्टि से संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की। (33) और हमने उनको ऐसी निशानियाँ प्रदान कीं जिनमें प्रत्यक्ष पुरस्कार था।

(34) यह लोग कहते हैं। (35) मात्र यही हमारा पहला मरना है और हम फिर उठाये नहीं जायेंगे। (36) यदि तुम सच्चे हो तो ले आओ हमारे बाप-दादा को। (37) क्या यह श्रेष्ठ हैं अथवा तुब्बअ की क़ौम और जो उनसे पहले थे, हमने उनको नष्ट कर दिया, निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी थे।

(38) और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है खेल के रूप में नहीं बनाया। (39) उनको हमने सत्य के साथ बनाया है लेकिन उनके अधिकतर लोग नहीं जानते। (40) निस्सन्देह निर्णय का दिन इन सबका निर्धारित समय है। (41) जिस दिन कोई सम्बन्धी किसी सम्बन्धी के काम नहीं आयेगा और न उनका कुछ समर्थन किया जायेगा। (42) हाँ, परन्तु वह जिस पर अल्लाह दया करे। निस्सन्देह वह प्रभुत्वशाली है, दयालुता वाला है।

(43) जक़्क़ूम का वृक्ष। (44) पापी का भोजन होगा। (45) तेल की तलछट जैसा, वह पेट में खौलेगा। (46) जिस प्रकार गर्म पानी खौलता

है। (47) इसको पकड़ो और इसे घसीटते हुए नरक के मध्य तक ले जाओ। (48) फिर इसके सिर पर खौलते हुए पानी की यातना उड़ेल दो। (49) चख इसको, तू बड़ा सम्मानित, कुलीन है। (50) यह वही चीज़ है जिसमें तुम सन्देह करते थे।

(51) निस्सन्देह अल्लाह से डरने वाले शान्ति के स्थान में होंगे। (52) बाग़ों और स्रोतों में। (53) वह बारीक रेशम और मोटे रेशम के वस्त्र पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे। (54) यह बात इसी प्रकार है, और हम उनसे विवाह कर देंगे हूरें बड़ी-बड़ी आँखों वाली। (55) वह उसमें माँगेंगे प्रत्येक प्रकार के फल अत्यन्त निश्चिन्तता के साथ। (56) वह वहाँ मृत्यु को न चखेंगे परन्तु वह मृत्यु जो पहले आ चुकी है और अल्लाह ने उनको नरक की यातना से बचा लिया। (57) यह तेरे पालनहार की कृपा से होगा, यही है बड़ी सफलता।

(58) अतः हमने इस किताब को तुम्हारी भाषा में सरल बना दिया है ताकि लोग मार्गदर्शन प्राप्त करें। (59) अतः तुम भी प्रतीक्षा करो, वह भी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

45. सूरह अल-जासियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम. (2) यह उतारी हुई किताब है अल्लाह प्रभुत्वशाली, तत्वदर्शिता वाले की ओर से। (3) निस्सन्देह आकाशों और धरती में निशानियाँ हैं ईमान वालों के लिए। (4) और तुम्हारी रचना में और उन जीवधारियों में जो उसने धरती में फैला रखे हैं, निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो विश्वास रखते हैं। (5) और रात और दिन के आने जाने में और उस जीविका में जिसको अल्लाह ने आकाश से उतारा, फिर उससे भूमि को जीवित कर दिया उसके मृत हो जाने के उपरांत, और हवाओं के चलने में भी निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो बुद्धि रखते हैं। (6) यह अल्लाह की आयतें हैं जिनको हम सच्चाई के साथ तुम्हें सुना रहे हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद कौन सी बात है जिस पर वह ईमान लायेंगे।

(7) विनाश है प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो झूठा, पापी हो। (8) जो अल्लाह की आयतों को सुनता है जबकि वह उसके समक्ष पढ़ी जाती हैं, फिर वह घमण्ड के साथ अड़ा रहता है, मानो उसने उनको सुना ही नहीं। अतः तुम उसको एक पीड़ादायक यातना की शुभ सूचना दे दो। (9) और जब वह हमारी आयतों में से किसी चीज़ की सूचना पाते हैं तो वह उसको हँसी बना लेते हैं। ऐसे लोगों के लिए अपमानजनक यातना है। (10) उनके आगे नरक है। और जो कुछ उन्होंने कमाया, वह उनके कुछ काम आने वाला नहीं। और न वह जिनको उन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त संरक्षक बनाया। और उनके लिए बड़ी यातना है। (11) यह मार्गदर्शन है, और जिन्होंने अपने पालनहार की आयतों को झुठलाया उनके लिए कठोर पीड़ादायक यातना है।

(12) अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए समुद्र को वशीभूत कर दिया ताकि उसके आदेश से उसमें नौकाएँ चलें और ताकि तुम उसकी कृपा तलाश करो और ताकि तुम आभार प्रकट करो। (13) और उसने आकाशों और धरती की सम्पूर्ण चीज़ों को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया, सबको अपनी ओर से। निस्सन्देह इसमें निशानियाँ हैं उन लोगों के लिए जो चिन्तन करते हैं।

(14) ईमान वालों से कहो कि उन लोगों को क्षमा करें जो अल्लाह के दिनों की आशा नहीं रखते, ताकि अल्लाह एक क़ौम को उसकी कमाई का बदला दे। (15) जो व्यक्ति भला कर्म करेगा उसका लाभ उसी के लिए है। और जिस व्यक्ति ने बुरा किया तो उसकी विपत्ति उसी पर पड़ेगी फिर तुम अपने पालनहार की ओर लौटाये जाओगे।

(16) और हमने इस्राईल की सन्तान को किताब और हुक्म (निण र्यशक्ति) और पैग़म्बरी प्रदान की और उनको पवित्र जीविका प्रदान की और हमने उनको संसार वालों पर श्रेष्ठता प्रदान की। (17) और हमने उनको दीन (धर्म) के सम्बन्ध में प्रत्यक्ष प्रमाण दिये। फिर उन्होंने मतभेद किया परन्तु इसके बाद कि उनके पास ज्ञान आ चुका था, आपस की हठधर्मिता से। निस्सन्देह तेरा पालनहार क़ियामत (उठाये जाने) के दिन उनके बीच निर्णय कर देगा, उन चीज़ों के सम्बन्ध में जिनमें वह परस्पर मतभेद करते थे। (18) फिर हमने तुमको दीन (धर्म) के एक स्पष्ट मार्ग पर स्थापित किया। फिर तुम उसी पर

चलो और उन लोगों की इच्छाओं का अनुसरण न करो जो ज्ञान नहीं रखते। (19) यह लोग अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकते। और अत्याचारी लोग एक-दूसरे के मित्र हैं। और डरने वालों का मित्र अल्लाह है। (20) यह लोगों के लिए विवेक की बातें हैं और मार्गदर्शन और दयालुता उन लोगों के लिए जो विश्वास करें।

(21) क्या वह लोग जिन्होंने बुरे कर्म किए हैं, वह समझते हैं कि हम उनको उन लोगों की भाँति कर देंगे जो ईमान लाये और भला कर्म किया। उन सब का जीना और मरना समान हो जाये। बहुत बुरा निर्णय है जो वह कर रहे हैं। (22) और अल्लाह ने आकाशों और धरती को योजना के साथ पैदा किया और ताकि प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का बदला दिया जाये और उन पर कोई अत्याचार न होगा।

(23) क्या तुमने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को अपना उपास्य बना रखा है और अल्लाह ने उसके ज्ञान के बावजूद उसको पथभ्रष्टता में डाल दिया। और उसके कान और उसके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँख पर पर्दा डाल दिया। तो ऐसे व्यक्ति को कौन मार्गदर्शन दे सकता है, इसके बाद कि अल्लाह ने उसको भटका दिया हो, क्या तुम ध्यान नहीं देते हो।

(24) और वह कहते हैं कि हमारे इस संसार के जीवन के अतिरिक्त कोई और जीवन नहीं। हम मरते हैं और जीते हैं और हमको तो मात्र कालचक्र ही विनष्ट करता है। और उनको इस सम्बन्ध में कोई ज्ञान नहीं। वह मात्र कल्पना के आधार पर ऐसा कहते हैं। (25) और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें सुनायी जाती हैं तो उनके पास कोई तर्क इसके अतिरिक्त नहीं होता कि हमारे बाप-दादा को जीवित करके लाओ यदि तुम सच्चे हो। (26) कहो कि अल्लाह ही तुमको जीवित करता है फिर वह तुमको मारता है फिर वह क़ियामत (उठाये जाने) के दिन तुमको एकत्र करेगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, परन्तु अधिकतर लोग नहीं जानते।

(27) और अल्लाह ही का साम्राज्य है आकाशों में और पृथ्वी में और जिस दिन क़ियामत स्थापित होगी उस दिन असत्य के मानने वाले घाटे में पड़

जायेंगे। (28) और तुम देखोगे कि प्रत्येक समूह घुटनों के बल गिर पड़ेगा। प्रत्येक समूह अपने कर्म-पत्रों की ओर बुलाया जायेगा। आज तुमको उस कर्म का बदला दिया जायेगा जो तुम कर रहे थे। (29) यह हमारी पंजिका है जो तुम्हारे ऊपर ठीक-ठीक गवाही दे रही है। हम लिखवाते जा रहे थे जो कुछ तुम करते थे।

(30) अतः जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किए तो उनका पालनहार उनको अपनी दयालुता में प्रवेश देगा। यही स्पष्ट सफलता है। (31) और जिन्होंने झुठलाया, (उनसे कहा जायेगा) क्या तुमको मेरी आयतें पढ़ कर नहीं सुनायी जाती थीं। तो तुमने घमण्ड किया और तुम अपराधी लोग थे। (32) और जब कहा जाता था कि अल्लाह का वादा सच्चा है और क़ियामत में कोई सन्देह नहीं तो तुम कहते थे कि हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है, हम तो मात्र एक भ्रम्र सा रखते हैं, और हम इस पर विश्वास करने वाले नहीं।

(33) और उन पर उनके कर्मों की बुराईयाँ प्रकट हो जायेंगी और वह चीज़ उनको घेर लेगी जिसका वह उपहास करते थे। (34) और कहा जायेगा कि आज हम तुमको भुला देंगे जिस प्रकार तुमने अपने उस दिन के आने को भुलाये रखा। और तुम्हारा ठिकाना आग है और कोई तुम्हारा सहायक नहीं। (35) यह इस कारण से कि तुमने अल्लाह की आयतों का उपहास किया। और संसार के जीवन ने तुमको धोखे में रखा। अतः आज न वह उससे निकाले जायेंगे और न उनकी क्षमा याचना स्वीकार की जायेगी।

(36) अतः सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो पालनहार है आकाशों का और पालनहार है धरती का, पालनहार है समस्त संसार का। (37) और उसी के लिए बड़ाई है आकाशों और धरती में। और वह प्रभुत्वशाली है, विवेक वाला है।

46. सूरह अल-अहक़ाफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हा. मीम.। (2) यह किताब अल्लाह प्रभावशाली, विवेकवाले की ओर से उतारी गयी है। (3) हमने आकाशों और धरती को और इनके मध्य की चीज़ों को नहीं पैदा किया परन्तु तथ्यों के साथ और निर्धारित अवधि के लिए। और जो लोग अवज्ञाकारी हैं वह उससे मुँह मोड़ते हैं जिससे उनको डराया गया है।

(4) कहो कि तुमने विचार भी किया उन चीज़ों पर जिनको तुम अल्लाह के अतिरिक्त पुकारते हो, मुझे दिखाओ कि उन्होंने धरती में क्या बनाया है, अथवा उनका आकाश में कुछ साझा है, मेरे पास इससे पहले कि कोई किताब ले आओ अथवा कोई ज्ञान जो चला आता हो, यदि तुम सच्चे हो। (5) और उस व्यक्ति से अधिक पथभ्रष्ट कौन होगा जो अल्लाह को छोड़कर उनको पुकारे जो क़ियामत तक उनका जवाब नहीं दे सकते, और उनको उनके पुकारने की भी जानकारी नहीं। (6) और जब लोग एकत्र किये जायेंगे तो वह उनके शत्रु होंगे ओर उनकी उपासना के झुठलाने वाले बन जायेंगे।

(7) और जब हमारी स्पष्ट आयतें उनको पढ़ कर सुनायी जाती हैं तो अवज्ञाकारी लोग उस सत्य के सम्बन्ध में, जबकि वह उनके पास पहुँचा है, कहते हैं कि यह प्रत्यक्ष जादू है। (8) क्या यह लोग कहते हैं कि इसने इसको अपनी ओर से बनाया है। कहो कि यदि मैंने इसको अपनी ओर से बनाया है तो तुम लोग मुझको तनिक भी अल्लाह से बचा नहीं सकते। जो बातें तुम बनाते हो, अल्लाह उनको भली-भाँति जानता है। वह मेरे और तुम्हारे बीच गवाही के लिए पर्याप्त है। और वह क्षमा करने वाला और दयालुता वाला है।

(9) कहो कि मैं कोई अनोखा सन्देष्टा नहीं हूँ। और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जायेगा और तुम्हारे साथ क्या किया जायेगा। मैं तो मात्र उसी का पालन करता हूँ जो मेरी ओर वह्य (श्रुति) के माध्यम से आता है और मैं तो मात्र एक प्रत्यक्ष सचेत करने वाला हूँ। (10) कहो, क्या तुमने कभी सोचा कि यदि यह क़ुरआन अल्लाह की ओर से हो और तुमने इसको नहीं माना, और इस्राईल की सन्तान में से एक गवाह ने इस जैसी किताब

पर गवाही दी है। अतः वह ईमान लाया और तुमने घमण्ड किया। निस्सन्देह अल्लाह अत्याचारियों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता।

(11) और झुठलाने वाले, ईमान लाने वालों के सम्बन्ध में कहते हैं कि यदि यह कोई अच्छी चीज़ होती तो वह इस पर हमसे पहले न दौड़ते। और चूँकि उन्होंने इससे मार्गदर्शन प्राप्त नहीं किया तो अब वह कहेंगे कि यह तो पुराना झूठ है।

(12) और इससे पहले मूसा की किताब थी मार्गदर्शन और दयालुता। और यह एक किताब है जो उसकी पुष्टि करती है, अरबी भाषा में, ताकि उन लोगों को डराये जिन्होंने अत्याचार किया। और वह शुभ सूचना है नेक लोगों के लिए। (13) निस्सन्देह जिन लोगों ने कहा कि हमारा पालनहार अल्लाह है, फिर वह उस पर जमे रहे तो उन लोगों पर कोई भय नहीं और न वह दुखी होंगे। (14) यही लोग जन्नत वाले हैं जो उसमें सदैव रहेंगे, उन कर्मों के बदले जो वह संसार में करते थे।

(15) और हमने मनुष्य को आदेश दिया कि वह अपने माता–पिता के साथ भलाई करे। उसकी माँ ने कष्ट के साथ उसको पेट में रखा। और कष्ट के साथ उसको जन्म दिया। और उसका गर्भ में रहना और दूध छुडाना तीस महीने में हुआ। यहाँ तक कि जब वह अपनी प्रौढ़ता को पहुँचा और चालीस वर्ष की आयु को पहुँच गया तो वह कहने लगा कि ऐ मेरे पालनहार, मुझे सामर्थ्य दे कि मैं तेरे उपकार का आभार व्यक्त करूँ जो तूने मुझ पर किया और मेरे माता–पिता पर किया और यह कि मैं वह भला कर्म करूँ जिससे तू प्रसन्न हो। और मेरी सन्तान में भी मुझको नेक सन्तान प्रदान कर। मैं तेरी ओर लौटा और मैं आज्ञाकारियों में से हूँ। (16) यही लोग हैं जिनके अच्छे कर्मों को हम स्वीकार करेंगे और उनकी बुराईयों को हम क्षमा करेंगे, वह जन्नत वालों में से होंगे, सच्चा वादा है जो उनसे किया जाता था।

(17) और जिसने अपने माता–पिता से कहा कि मैं दुखी हूँ तुमसे। क्या तुम मुझको यह भय दिलाते हो कि मैं क़ब्र से निकाला जाऊँगा, हालाँकि मुझसे पहले बहुत सी क़ौमें गुज़र चुकी हैं और वह दोनों अल्लाह से फ़रियाद

करते हैं कि तेरा नाश हो, तू ईमान ला, निस्सन्देह अल्लाह का वादा सच्चा है। अतः वह कहता है कि यह सब अगलों की कहानियाँ हैं। (18) यह वह लोग हैं जिन पर अल्लाह का कथन पूरा हुआ उन समूहों के साथ जो इनसे पहले गुज़रे, जिन्नों और मनुष्यों में से। निस्सन्देह वह घाटे में रहे।

(19) और प्रत्येक के लिए उनके कर्मों के अनुसार दर्जे होंगे। और ताकि अल्लाह सबको उनके कर्म पूरे कर दे और उन पर अत्याचार न होगा। (20) और जिस दिन अवज्ञा करने वाले आग के समक्ष लाये जायेंगे, (उनसे कहा जायेगा कि) तुम अपनी अच्छी चीज़ें संसार के जीवन में ले चुके और उनका उपभोग कर चुके तो आज तुमको अपमान का दण्ड दिया जायेगा, इस कारण से कि तुम संसार में व्यर्थ घमण्ड करते थे और इस कारण से कि तुम अवज्ञा करते थे।

(21) और आद के भाई (हूद) को याद करो। जबकि उसने अपनी क़ौम को अहक़ाफ (रेत की टीलो) में डराया। और डराने वाले उससे पहले भी गुज़र चुके थे और वह इसके बाद भी आये- कि अल्लाह के अतिरिक्त किसी की उपासना न करो। मैं तुम पर एक भयानक दिन की यातना से डरता हूँ। (22) उन्होंने कहा कि क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हमको हमारे उपास्यों से फेर दो। तो यदि तुम सच्चे हो तो वह चीज़ हम पर लाओ जिसका तुम हमसे वादा करते हो। (23) उसने कहा कि इसका ज्ञान तो अल्लाह को है, और मैं तो तुमको वह संदेश पहुँचा रहा हूँ जिसके साथ मुझे भेजा गया है, परन्तु मैं तुमको देखता हूँ कि तुम लोग नासमझी की बाँते करते हो। (24) अतः जब उन्होंने उसको बादल के रूप में अपनी घाटियों की ओर आते हुए देखा तो उन्होंने कहा कि यह तो बादल है जो हम पर बरसेगा। नहीं बल्कि यह वह चीज़ है जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। एक आँधी है जिसमें कष्टदायक यातना है। (25) वह प्रत्येक चीज़ को अपने पालनहार के आदेश से उखाड़ फेंकेगी। अतः वह ऐसे हो गये कि उनके घरों के सिवा वहाँ कुछ दिखाई न देता था। अपराधियों को हम इसी प्रकार दण्ड देते हैं।

(26) और हमने उन लोगों को उन बातों में सामर्थ्य प्रदान किया था कि तुमको उन बातों में सामर्थ्य नहीं दिया और हमने उनको कान और आँख

और दिल दिये परन्तु वह कान उनके कुछ काम न आये, और न आँखें और न दिल। क्योंकि वह अल्लाह की आयतों का इन्कार करते थे और उनको उस चीज़ ने घेर लिया जिसका वह उपहास करते थे। (27) और हमने तुम्हारे आस-पास की बस्तियाँ भी नष्ट कर दी। और हमने बार-बार अपनी निशानियाँ बतायीं ताकि वह सँभल जायें। (28) अतः क्यों न उनकी सहायता की उन्होंने जिनको उन्होंने अल्लाह के सामिप्य के लिए उपास्य बना रखा था। बल्कि वह सब उनसे खोये गये और यह उनका झूठ था और उनकी गढ़ी हुई बात थी।

(29) और जब हम जिन्नों के एक समूह को तुम्हारी ओर ले आये, वह क़ुरआन सुनने लगे। अतः जब वह उसके पास आये तो कहने लगे कि चुप रहो। फिर जब क़ुरआन पढ़ा जा चुका तो वह लोग डराने वाले बनकर अपनी क़ौम की ओर वापस गये।

(30) उन्होंने कहा कि ऐ हमारी क़ौम, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद उतारी गयी है, उन भविष्यवाणियों की पुष्टि करती हुई जो इससे पहले से मौजूद हैं। वह सत्य की ओर और एक सीधे की रास्ते का मार्गदर्शन करती है।

(31) ऐ हमारी क़ौम, अल्लाह की ओर बुलाने वाले का निमन्त्रण स्वीकार करो और उन पर ईमान ले आओ, अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुमको कष्टप्रद यातना से बचायेगा।

(32) और जो व्यक्ति अल्लाह के आवाहक के निमन्त्रण पर "मैं उपस्थित हूँ" नहीं कहेगा तो वह धरती में पराजित नहीं कर सकता और अल्लाह के अतिरिक्त उसका कोई सहायक न होगा। ऐसे लोग स्पष्ट पथभ्रष्टता में हैं।

(33) क्या उन लोगों ने नहीं देखा कि जिस अल्लाह ने आकाशों और धरती को पैदा किया और वह उनके पैदा करने से नहीं थका, इस पर सामर्थ्य रखता है कि वह मुर्दों को जीवित कर दे, हाँ वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

(34) और जिस दिन यह झुठलाने वाले आग के समक्ष लाये जायेंगे, (उनसे कहा जायेगा कि) क्या यह वास्तविकता नहीं है। वह कहेंगे कि हाँ,

हमारे पालनहार की सौगन्ध। कहा जायेगा फिर चखो यातना उस इन्कार के बदले जो तुम कर रहे थे।

(३5) फिर तुम धैर्य रखो जिस प्रकार साहस वाले पैग़म्बरों ने धैर्य रखा। और उनके लिए शीघ्रता न करो जिस दिन यह लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो मानो कि वह दिन की एक घड़ी से अधिक नहीं रहे। यह पहुँचा देना है। तो वहीं लोग विनष्ट होंगे जो अवज्ञा करने वाले हैं।

47. सूरह मुहम्मद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जिन लोगों ने अवज्ञा की और अल्लाह के मार्ग से रोका, अल्लाह ने उनके कर्मों को व्यर्थ कर दिया। (2) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये और उस चीज़ को माना जो मुहम्मद पर उतारा गया है। और वह सत्य है उनके पालनहार की ओर से, अल्लाह ने उनकी बुराइयाँ उनसे दूर की दीं और उनकी दशा सुधार दी। (3) यह इसलिए कि जिन लोगों ने अवज्ञा की उन्होंने झूठ (असत्य) का अनुसरण किया। और जो लोग ईमान लाये उन्होंने सच का अनुसरण किया जो उनके पालनहार की ओर से है। इस प्रकार अल्लाह लोगों के लिए उनके उदाहरण बयान करता है।

(4) तो जब अवज्ञाकारियों से तुम्हारी मुठभेड़ हो तो उनकी गर्दनें मारो। यहाँ तक कि जब अच्छी तरह रक्तपात कर चुको तो उनको मज़बूती से बाँध दो। फिर इसके बाद या तो उपकार करके छोड़ना है या क्षतिपूर्ति लेकर, यहाँ तक कि युद्ध अपने शस्त्र रख दे। यह है कार्य। और यदि अल्लाह चाहता तो वह उनसे बदला ले लेता, परन्तु इसलिए कि वह तुम लोगों को एक दूसरे से आज़माये। और जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जायेंगे, अल्लाह उनके कर्मों को कदापि नष्ट नहीं करेगा। (5) वह उनको मागदर्शन प्रदान करेगा और उनकी दशा सुधार देगा। (6) और उनको जन्नत में प्रवेश करेगा। जिसकी उसने उन्हें पहचान करा दी है।

(7) ऐ ईमान वालों, यदि तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा ओर तुम्हारे क़दमों को जमा देगा। (8) और जिन लोगों ने अवज्ञा की उनके लिए विनाश है और अल्लाह उनके कर्मों को नष्ट कर देगा। (9) यह इस कारण से कि उन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जो अल्लाह ने उतारी है। तो अल्लाह ने उनके कर्मों को अकारथ कर दिया। (10) क्या यह लोग देश में चले फिरे नहीं कि वह उन लोगों का अन्त देखते जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, अल्लाह ने उनको उखाड़ फेंका और यही अवज्ञाकारियों के लिये पूर्वनियोजित है। (11) यह इस कारण से कि अल्लाह ईमान वालों का संरक्षक है और अवज्ञाकारियों का कोई संरक्षक नहीं।

(12) निस्सन्देह अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाये और जिन्होंने अच्छा कर्म किया ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जिन लोगों ने अवज्ञा की, वह उपभोग कर रहे हैं और खा रहे हैं जैसे कि मवेशी खायें, और आग उन लोगों का ठिकाना है। (13) और कितनी ही बस्तियाँ हैं जो शक्ति में तुम्हारी इस बस्ती से अधिक थीं जिसने तुमको निकाला है। हमने उनको नष्ट कर दिया तो कोई उनका समर्थक न हुआ।

(14) क्या वह जो अपने पालनहार की ओर से एक स्पष्ट तर्क पर है, वह उसकी भाँति हो जायेगा जिसके बुरे कर्म उसके लिए शोभायमान बना दिये गये हैं और वह अपनी इच्छाओं पर चल रहे हैं। (15) जन्नत का उदाहरण, जिसका वादा डरने वालों से किया गया था, जिसकी विशेषता यह है कि इसमें नहरें बहती होंगी ऐसे पानी की जिसमें परिवर्तन न होगा और नहरें होंगी दूध की जिसका स्वाद नहीं बदला होगा और नहरें होंगी शराब की जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होगी। और नहरे होंगी शहद की जो पूर्णतः स्वच्छ होगा। और उनके लिए वहाँ प्रत्येक प्रकार के फल होंगे। और उनके पालनहार की ओर से माफ़ी होगी। क्या यह लोग उन जैसे हो सकते हैं जो सदैव आग में रहेंगे और उनको खौलता हुआ पानी पीने के लिए दिया जायेगा। तो वह उनकी आँतों को टुकड़े-टुकड़े कर देगा।

(16) और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं, यहाँ तक कि जब वह तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो ज्ञान वालों से पूछते हैं कि

उन्होंने अभी क्या कहा। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने मुहर लगा दी। और वह अपनी इच्छाओं का अनुसरण करते हैं। (17) और जिन लोगों ने सन्मार्ग का रास्ता अपनाया तो अल्लाह उनको और अधिक मार्गदर्शन प्रदान करता है और उनको उनकी परहेज़गारी प्रदान करता है।

(18) यह लोग तो मात्र इसकी प्रतीक्षा में हैं कि क़ियामत इन पर अचानक आ जाये तो उसकी निशानियाँ प्रकट हो चुकी हैं। तो जब वह आ जायेगी तो इनके लिए उपदेश प्राप्त करने का अवसर कहाँ रहेगा। (19) तो जान लो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और क्षमा माँगो अपने ग़लतियों के लिए और ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली महिलाओं के लिए। और अल्लाह जानता है तुम्हारे चलने फिरने को और तुम्हारे ठिकानों को।

(20) और जो लोग ईमान लाये हैं वह कहते हैं कि कोई सूरह क्यों नहीं उतारी जाती। तो जब एक स्पष्ट सूरह उन पर उतारी गयी और उसमें युद्ध का भी उल्लेख था। तो तुमने देखा कि जिनके दिलों में रोग है, वह तुम्हारी ओर इस प्रकार देख रहे हैं जैसे किसी पर मृत्यु छा गयी हो। अतः विनाश है उनका। (21) आदेश मानना है और अच्छी बात कहना है। अतः जब मामले का अन्तिम निर्णय हो जाये तो यदि वह अल्लाह से सच्चे रहते तो उनके लिए बहुत बेहतर होता। (22) अतः यदि तुम फिर गये तो इसके अतिरिक्त तुमसे कुछ आशा नहीं कि तुम धरती में बिगाड़ करो और आपस के सम्बन्धों को तोड़ो। (23) यही लोग हैं जिनको अल्लाह ने अपनी दया से दूर किया, अतः उनको बहरा कर दिया और उनकी आँखों को अन्धा कर दिया।

(24) क्या यह लोग क़ुरआन में चिन्तन नहीं करते अथवा दिलों पर उनके ताले लगे हुए हैं। (25) जो लोग पीठ फेर कर हट गये, इसके बाद कि सन्मार्ग उन पर स्पष्ट हो गया, शैतान ने उनको धोखा दिया और अल्लाह ने उनको ढील दे दी। (26) यह इस कारण से हुआ कि उन्होंने उन लोगों से जो कि अल्लाह की उतारी हुई चीज़ को नापसन्द करते हैं, कहा कि कुछ बातों में हम तुम्हारा कहना मान लेंगे। और अल्लाह उनके रहस्यों को जानता है। (27) तो उस समय क्या होगा जबकि फ़रिश्ते उनके प्राण निकालते होंगे, उनके मुँह और उनकी पीठों पर मारते हुए। (28) यह इस कारण से कि उन्होंने उस

चीज़ का अनुसरण किया जो अल्लाह को क्रोध दिलाने वाली थी और उन्होंने उसकी प्रसन्नता को नापसन्द किया। अतः अल्लाह ने उनके कर्म अकारथ कर दिये।

(29) जिन लोगों के दिलों में रोग है, क्या वह समझते हैं कि अल्लाह उनके द्वेष को कभी प्रकट न करेगा। (30) और यदि हम चाहते तो हम उनको तुम्हें दिखा देते, तो तुम उनकी निशानियों से उनको पहचान लेते और तुम उनकी वाक्शैली से अवश्य उनको पहचान लोगे। और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है।

(31) और हम अवश्य तुमको परीक्षा में डालेंगे ताकि हम उन लोगों को जान लें जो तुममें जेहाद करने वाले हैं और अपना क़दम दृढ़ रखने वाले हैं और हम तुम्हारी परिस्थितियों की जाँच कर लें। (32) निस्सन्देह जिन लोगों ने अवज्ञा की और अल्लाह के मार्ग से रोका और सन्देष्टा का विरोध किया जबकि मार्गदर्शन उन पर स्पष्ट हो चुका था, वह अल्लाह को कुछ हानि न पहुँचा सकेंगे, और अल्लाह उनके कर्मों को ढ़ा देगा।

(33) ऐ ईमान वालों, अल्लाह का आज्ञापालन करो और सन्देष्टा का आज्ञापालन करो और अपने कर्मों को नष्ट न करो। (34) निस्सन्देह जिन लोगों ने झुठलाया और अल्लाह के मार्ग से रोका और फिर वह अवज्ञा की स्थिति में ही मर गये, अल्लाह उनको कभी माफ़ न करेगा। (35) फिर तुम धैर्य न छोड़ो और शान्ति समझौते का निवेदन न करो। और तुम ही प्रभावशाली रहोगे। और अल्लाह तुम्हारे साथ है और वह कदापि तुम्हारे कर्मों में कमी न करेगा।

(36) संसार का जीवन तो मात्र एक खेल तमाशा है और यदि तुम ईमान लाओ और परहेज़गारी अपनाओ तो अल्लाह तुमको तुम्हारा बदला प्रदान करेगा और वह तुम्हारी सम्पत्ति तुमसे न माँगेगा। (37) यदि वह तुमसे तुम्हारी सम्पत्ति माँगे और अन्त तक माँगता रहे तो तुम कृपणता करने लगो और अल्लाह तुम्हारे द्वेष को प्रकट कर दे। (38) हाँ, तुम वह लोग हो कि तुमको अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करने के लिए बुलाया जाता है, तो तुममें से कुछ लोग हैं जो कृपणता करते हैं और जो व्यक्ति कृपणता करता है तो वह अपने ही से कृपणता करता है। और अल्लाह निस्पृह है, तुम मुहताज (संसाधन का अभाव) हो। और यदि

तुम फिर जाओ तो अल्लाह तुम्हारे स्थान पर दूसरी क़ौम ले आयेगा, फिर वह तुम जैसे न होंगे।

48. सूरह अल-फ़त्ह्

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) निस्सन्देह हमने तुमको स्पष्ट विजय प्रदान कर दी। (2) ताकि अल्लाह तुम्हारी अगली और पिछली ग़लतियां (भूल) क्षमा कर दे। और तुम्हारे ऊपर अपने उपकारों को पूर्ण कर दे। और तुमको सीधा मार्ग दिखाये। (3) और तुमको अपार सहायता प्रदान करे।

(4) वही है जिसने मोमिनों (आस्थावानों) के दिल में सन्तुष्टि उतारी, ताकि उनके ईमान के साथ उनका ईमान और बढ़ जाये। और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं। और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (5) ताकि अल्लाह मोमिन पुरुषों और मोमिन महिलाओं को ऐसे बाग़ों में प्रवेश करे जिनके नीचे नहरें जारी होंगी, वह उनमें सदैव रहेंगे। और ताकि अल्लाह उनकी बुराईयाँ उनसे दूर कर दे। और यह अल्लाह के निकट बड़ी सफलता है। (6) और ताकि अल्लाह कपटाचारी पुरुषों और कपटाचारी महिलाओं को और मुश्रिक (साझी ठहराने वाले) पुरुषों और मुश्रिक महिलाओं को दण्ड दे जो अल्लाह के साथ बुरे विचार रखते हैं। बुराई का चक्र उन्हीं पर है। और उन पर अल्लाह का क्रोध हुआ और उन पर उसने फटकार की। और उनके लिए उसने नरक तैयार कर रखी है और वह बहुत बुरा ठिकाना है। (7) और आकाशों और धरती की सेनाएँ अल्लाह ही की हैं और अल्लाह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है।

(8) निस्सन्देह हमने तुमको गवाही देने वाला, शुभ सूचना देने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है। (9) ताकि तुम लोग अल्लाह पर और उसके सन्देष्टा पर ईमान लाओ और उसकी सहायता करो और उसका सम्मान करो। और तुम अल्लाह की स्तुति करो सुबह और सायं। (10) जो लोग तुमसे बैअत (प्रतिज्ञा) करते हैं वह वास्तव में अल्लाह से प्रतिज्ञा करते हैं। अल्लाह का

हाथ उनके हाथों के ऊपर है। फिर जो व्यक्ति इसको तोड़ेगा, उसके तोड़ने की विपत्ति उसी पर पड़ेगी। और जो व्यक्ति उस प्रतिज्ञा को पूरा करेगा जो उसने अल्लाह से किया है तो अल्लाह उसको बड़ा बदला प्रदान करेगा।

(11) जो देहाती पीछे रह गये वह अब तुमसे कहेंगे कि हमको हमारी सम्पत्ति और हमारे बाल-बच्चों ने व्यस्त रखा, अतः आप हमारे लिए क्षमा की प्रार्थना करें। यह अपने मुँह से वह बात कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं है। तुम कहो कि कौन है जो अल्लाह के समक्ष तुम्हारे लिए कुछ अधिकार रखता हो यदि वह तुमको कोई हानि अथवा कोई लाभ पहुँचाना चाहे, बल्कि अल्लाह उससे भिज्ञ है जो तुम कर रहे हो। (12) बल्कि तुमने यह समझा कि सन्देष्टा और मोमिन कभी अपने घरवालों की ओर लौट कर न आयेंगे। और यह विचार तुम्हारे दिलों को बहुत भला दिखाई दिया और तुमने बहुत बुरे विचार किये। और तुम नाश होने वाले लोग हो गये। (13) और जो ईमान न लाया अल्लाह पर और उसके सन्देष्टा पर तो हमने ऐसे अवज्ञाकारियों के लिए दहकती हुई आग तैयार कर रखी है। (14) और आकाशों और धरती की बादशाही अल्लाह ही की है, वह जिसको चाहे क्षमा कर दे। और जिसको चाहे यातना दे। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(15) जब तुम ग़नीमतें (युद्ध में प्राप्त होने वाला शत्रु धन) लेने के लिए चलोगे तो पीछे रह जाने वाले लोग कहेंगे कि हमें भी अपने साथ चलने दो। वह चाहते हैं कि अल्लाह की बात को बदल दे। कहो कि तुम कदापि हमारे साथ नहीं चल सकते। अल्लाह पहले ही यह फ़रमा चुका है। तो वह कहेंगे बल्कि तुम लोग हमसे ईर्ष्या करते हो, बल्कि यही लोग बहुत कम समझते हैं।

(16) पीछे रहने वाले देहातियों से कहो कि शीघ्र ही तुम ऐसे लोगों की ओर बुलाये जाओगे जो बड़े ताक़तवर हैं, तुम उनसे लड़ोगे या वह इस्लाम लायेंगे। अतः यदि तुम आदेश मानोगे तो अल्लाह तुमको अच्छा बदला देगा और यदि तुम मुँह मोड़ोगे, जैसा कि तुम इससे पहले मुँह मोड़ चुके हो तो वह तुमको कष्टदायक यातना देगा। (17) न अंधे पर कोई पाप है और न लंगड़े पर कोई पाप है और न रोगी पर कोई पाप है और जो व्यक्ति अल्लाह और

उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करेगा, उसको अल्लाह ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा उसको वह कष्टदायक यातना देगा।

(18) अल्लाह ईमान वालों से प्रसन्न हो गया जबकि वह तुमसे वृक्ष के नीचे बैअत (प्रतिज्ञा) कर रहे थे, अल्लाह ने जान लिया जो कुछ उनके दिलों में था। अतः उसने उन पर सकीनत (प्रशान्ति) अवतरित की और उनको पुरस्कार में एक शीघ्र प्राप्त होने वाली विजय प्रदान कर दी। (19) और वह बहुत सी ग़नीमतें (युद्ध में प्राप्त होने वाला शत्रु धन) भी जिनको वह प्राप्त करेंगे। और अल्लाह प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है। (20) और अल्लाह ने तुमसे बहुत सी ग़नीमतों का वादा किया है जिनको तुम लोगे, अतः यह उसने तुमको तात्कालिक रूप से दे दिया। और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिये और ताकि ईमान वालों के लिए यह एक निशानी बन जाये। और ताकि वह तुमको सीधे मार्ग पर चलाये। (21) और एक विजय और भी है जिस पर तुम अभी समर्थ नहीं हुए। अल्लाह ने उसको घेर कर रखा है। और अल्लाह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है।

(22) और यदि यह अवज्ञाकारी लोग तुमसे लड़ते तो वह अवश्य पीठ फेर कर भागते, फिर वह न कोई समर्थक पाते और न सहायक। (23) यह अल्लाह की सुन्नत (नियम) है जो पहले से चली आ रही है। और तुम अल्लाह की सुन्नत में कोई परिवर्तन न पाओगे। (24) और वही है जिसने मक्का की घाटी में उनके हाथ तुमसे और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिये, इसके बाद कि तुमको उन पर नियन्त्रण दे दिया था। और अल्लाह तुम्हारे कार्यों को देख रहा है।

(25) वही लोग हैं जिन्होंने झुठलाया और तुमको मस्जिद-ए हराम (क़ाबा) से रोका और क़ुर्बानी के जानवरों को भी रोके रखा कि वह अपने स्थान पर न पहुँचें। और यदि (मक्के में) बहुत से मोमिन पुरुष और मोमिन महिलाएँ न होतीं जिनको तुम अज्ञानता में पीस डालते, फिर उनके कारण तुम पर अज्ञानतावश आरोप आता (तो हम युद्ध की अनुमति दे देते, परन्तु अल्लाह ने अनुमति इसलिए न दी), ताकि अल्लाह जिसको चाहे अपनी दयालुता में

प्रवेश दे और यदि वह लोग अलग हो गये होते तो उनमें जो अवज्ञाकारी थे उनको हम कष्टदायक दण्ड देते।

(26) जब अवज्ञा करने वालों ने अपने दिलों में आत्मसम्मान पैदा किया, अज्ञानता का आत्मसम्मान, फिर अल्लाह ने अपनी ओर से सकीनत (प्रशान्ति) अवतरित की अपने सन्देष्टा पर और ईमान वालों पर, और अल्लाह ने उनको तक़्वा (अल्लाह का डर) की बात पर जमाये रखा और वह इसके अधिक हक़दार और इसके योग्य थे। और अल्लाह हर चीज़ का जानने वाला है।

(27) निस्सन्देह अल्लाह ने अपने सन्देष्टा को सच्चा स्वप्न दिखाया जो वास्तविकता के अनुसार है। निस्सन्देह अल्लाह ने चाहा तो तुम मस्जिद-ए हराम में अवश्य प्रवेश करोगे, शान्ति के साथ, बाल मुँडवाते हुए अपने सिरो के और कतरवाते हुए, तुमको कोई डर न होगा। अतः अल्लाह ने वह बात जानी जो तुमने नहीं जानी, अतः इससे पहले उसने एक विजय दे दी।

(28) और अल्लाह ही है जिसने अपने सन्देष्टा को मार्गदर्शन और सच्चे दीन (धर्म) के साथ भेजा, ताकि वह उसको सभी धर्मो पर वर्चस्व प्रदान कर दे। और अल्लाह पर्याप्त गवाह है।

(29) मुहम्मद अल्लाह के सन्देष्टा और जो लोग उनके साथ हैं, वह अवज्ञाकारियों पर कठोर हैं और आपस में दयालु। तुम उनको रुकू (झुकने) में और सजदा (माथा टेकने में) देखोगे, वह अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता की चाहत में लगे रहते हैं। उनकी निशानी उनके चेहरो पर है सजदा के प्रभाव से, उनका यह उदाहरण तौरात में है। और इंजील में उनका उदाहरण यह है कि जैसे खेती, उसने अपना अंकुर निकाला, फिर उसको दृढ़ता प्रदान की, फिर वह और मोटा हुआ, फिर अपने तने पर खड़ा हो गया, वह किसानों को भला लगता है ताकि उनसे अवज्ञाकारियों को जलाये। उनमें से जो लोग ईमान लाये और अच्छा कर्म किया, अल्लाह ने उनसे क्षमा का और बड़े पुण्य का वादा किया है।

49. सूरह अल-हुजुरात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ ईमान वालों, तुम अल्लाह और उसके सन्देष्टा से आगे न बढ़ो, और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला, जानने वाला है।

(2) ऐ ईमान वालों, तुम अपनी आवाज़ें सन्देष्टा की आवाज़ से ऊपर न करो और न उनको इस प्रकार आवाज़ देकर पुकारो जिस प्रकार तुम आपस में एक दूसरे को पुकारते हो। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जायें और तुमको ख़बर भी न हो। (3) और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह सब कुछ सुनने वाला जानने वाला है।

(3) जो लोग अल्लाह के सन्देष्टा के आगे अपनी आवाज़ें नीची रखते हैं, वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़्वा (ईश परायणता) के लिए जाँच लिया है। उनके लिए क्षमा है और बड़ा पुण्य है। (4) जो लोग तुमको आवासीय कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अधिकतर समझ नहीं रखते। (5) और यदि वह धैर्य रखते यहाँ तक कि तुम स्वंय उनके पास निकल कर आ जाओ तो यह उनके लिए श्रेष्ठ होता। और अल्लाह क्षमाशील और दयावान है।

(6) ऐ ईमान वालों, यदि कोई अवज्ञाकरी तुम्हारे पास सूचना लाये तो तुम भली प्रकार जाँच कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी समूह को अज्ञानतावश कोई हानि पहुँचा दो, फिर तुमको अपने किये पर पछताना पड़े। (7) और जान लो कि तुम्हारे बीच अल्लाह का सन्देष्टा है। यदि वह बहुत से मामलों में तुम्हारी बात मान ले तो तुम बड़ी कठिनाई में पड़ जाओ। परन्तु अल्लाह ने तुम्हारे लिये ईमान को प्रिय बना दिया और तुम्हारे दिलों में उसका प्रेम डाल दिया, और अल्लाह की अवज्ञा और अधर्म और पाप को तुम्हारे लिए अप्रिय बना दिया। (8) ऐसे ही लोग अल्लाह की कृपा और दया से सन्मार्ग पर हैं। और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है।

(9) और यदि ईमान वालों के दो समूह परस्पर लड़ जायें तो उनके बीच समझौता कराओ। फिर यदि उनमें का एक समूह दूसरे समूह पर अत्याचार करे तो उस समूह से लड़ो जो अत्याचार करता है, यहाँ तक कि वह अल्लाह

के आदेश की ओर लौट आये। फिर यदि वह लौट आये तो उनके बीच न्याय के साथ समझौता कराओ और न्याय करो, निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। (10) ईमान वाले सभी भाई हैं अतः अपने भाईयों के बीच मिलाप कराओ और अल्लाह से डरो, ताकि तुम पर दया की जाये। (11) ऐ ईमान वालों, न पुरुष दूसरे पुरुषों का उपहास करें, हो सकता है कि वह उनसे श्रेष्ठ हों, और न महिलाएँ दूसरी महिलाओं का उपहास करें, हो सकता है कि वह उनसे श्रेष्ठ हों, और न एक दूसरे पर व्यंग करो और न एक दूसरे को बुरे उपनामों से पुकारो। ईमान लाने के बाद पाप का नाम देना बुरा है। और जो उससे न रुकें तो वही लोग अत्याचारी हैं।

(12) ऐ ईमान वालों, बहुत से अनुमानों से बचो, क्योंकि कुछ अनुमान पाप होते हैं और टोह में न लगो। और तुममें से कोई किसी की पीठ पीछे निन्दा न करे। क्या तुम में से कोई इस बात को पसन्द करेगा कि वह अपने मरे हुए भाई का माँस खाये, इसको तुम स्वंय अप्रिय समझते हो। और अल्लाह से डरो। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है।

(13) ऐ लोगों, हमने तुम्हें एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया। और तुमको जातियों और परिवारों में बाँट दिया, ताकि तुम एक दूसरे को पहचानो। निस्सन्देह अल्लाह के निकट तुम में से अधिक सम्मान वाला वह है जो सबसे अधिक परहेज़गार (संयमी) है। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, ख़बर रखने वाला है।

(14) देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाए, कहो कि तुम ईमान नहीं लाए। अपितु इस तरह कहो कि हमने इस्लाम स्वीकार किया और अभी तक ईमान तुम्हारे हृदय में प्रवेश नहीं हुआ। और यदि तुम अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करो तो अल्लाह तुम्हारे कर्मों में से कोई कमी न करेगा। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (15) मोमिन (आस्थावान) तो मात्र वह हैं जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा पर ईमान लाये फिर उन्होंने सन्देह न किया और अपनी सम्पत्ति व प्राणों से अल्लाह के मार्ग में जिहाद (कड़ा संघर्ष) किया। यही सच्चे लोग हैं।

(16) कहो, क्या तुम अल्लाह को अपने दीन (धर्म) से सूचित कर रहे हो,

जबकि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। और अल्लाह सर्वज्ञता है। (17) यह लोग तुम पर एहसान रखते हैं कि उन्होंने इस्लाम स्वीकार किया है। कहो कि अपने इस्लाम का एहसान (उपकार) मुझ पर न रखो, बल्कि अल्लाह का तुम पर उपकार है कि उसने तुमको ईमान का मार्ग दिखाया। यदि तुम सच्चे हो। (18) निस्सन्देह अल्लाह आकाशों और धरती की छिपी हुई बातों का ज्ञाता है। और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

50. सूरह क़ाफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क़ाफ़.। सौगन्ध है महानता वाले क़ुरआन की। (2) बल्कि उनको आश्चर्य हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक डराने वाला आया, तो अवज्ञाकारियों ने कहा कि यह आश्चर्य की चीज़ है। (3) क्या जब हम मर जायेंगे और मिट्टी हो जायेंगे, यह पुनः जीवित होना बहुत दूर है। (4) हमको ज्ञात है जितना धरती उनके अन्दर से घटाती है और हमारे पास किताब है जिसमें सब कुछ सुरक्षित है। (5) बल्कि उन्होंने सत्य को झुठलाया है जबकि वह उनके पास आ चुका है, तो वह उलझन में पड़े हुए हैं।

(6) क्या इन लोगों ने अपने ऊपर आकाश को नहीं देखा, हमने कैसा उसको बनाया और उसको सौन्दर्य प्रदान किया और उसमें कोई दोष नहीं। (7) और पृथ्वी को हमने फैलाया और उसमें पहाड़ डाल दिये और उसमें प्रत्येक प्रकार की सौन्दर्य की चीज़ उगाई। (8) समझाने को और याद दिलाने को प्रत्येक उस बन्दे के लिए जो लौटे, (9) और हमने आकाश से बरकत (विभूति) वाला पानी अवतरित किया, फिर उससे हमने बाग़ उगाये और काटी जाने वाली फसलें। (10) और खजूरों के ऊँचे वृक्ष जिनमें तह-तह गुच्छे लगते हैं। (11) इंसानों की जीविका के लिए। और हमने उसके माध्यम से मृत भूमि को जीवित किया। इसी प्रकार पृथ्वी से निकलना होगा।

(12) इनसे पहले नूह की क़ौम और अर-रस वाले और समूद के लोग।

(13) और आद और फ़िरऔन और लूत के भाई। (14) और ऐका वाले और तूब्बअ की क़ौम ने भी झुठलाया, सबने पैग़म्बरों को झुठलाया। अतः मेरा डराना उन पर वास्तव में घटित होकर रहा। (15) क्या हम पहली बार पैदा करने से विवश रहे। बल्कि यह लोग नये सिरे से पैदा करने की ओर से सन्देह में हैं।

(16) और हमने मनुष्य को पैदा किया और हम जानते हैं उन बातों को जो उसके दिल में आती हैं। और हम उसकी गर्दन की नस से भी अधिक उससे निकट हैं। (17) जब दो लेने वाले लेते रहते हैं जो कि दाये और बाये ओर बैठते हैं। (18) कोई शब्द वह नहीं बोलता परन्तु उसके पास एक सचेत निरीक्षक उपस्थित रहता है।

(19) और मृत्यु की बेहोशी अधिकार के साथ आ पहुँची। यह वही चीज़ है जिससे तू भागता था। (20) और सूर (महाशंख) फूँका जायेगा, वह डराने का दिन होगा। (21) प्रत्येक व्यक्ति इस प्रकार आ गया कि उसके साथ एक हाँकने वाला है और एक गवाही देने वाला। (22) तुम उससे अचेतन में रहे। तो हमने तुम्हारे ऊपर से पर्दा हटा दिया। तो आज तुम्हारी दृष्टि बड़ी तीव्र है। (23) और उसके साथ का फ़रिश्ता कहेगा, यह जो मेरे पास था, उपस्थित है। (24) नरक में डाल दो कृतघ्न, विरोधी को। (25) भलाई से रोकने वाला, सीमा से बढ़ने वाला, सन्देह डालने वाला। (26) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे उपास्य बनाये, अतः इसको डाल दो कठोर यातना में। (27) इसका साथी (शैतान) कहेगा कि ऐ हमारे पालनहार, मैंने इसे विद्रोही नहीं बनाया बल्कि वह स्वंय मार्ग भूला हुआ दूर पड़ा था। (28) आदेश होगा, मेरे समक्ष झगड़ा न करो और मैंने पहले ही तुमको यातना से सावधान कर दिया था। (29) मेरे यहाँ बात बदली नहीं जाती। और मैं बन्दों पर अत्याचार करने वाला नहीं।

(30) जिस दिन हम नरक से कहेंगे, क्या तू भर गयी। और वह कहेगी कि कुछ और भी है। (31) और जन्नत डरने वालों के निकट लायी जायेगी, कुछ दूर न रहेगी। (32) यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था, प्रत्येक रूजूअ (अल्लाह की ओर पलटने वाला) वाले और याद रखने वाले के लिए। (33) जो व्यक्ति रहमान से डरा बिन देखे और रूजूअ करने वाला दिल

लेकर आया। (34) प्रवेश हो जाओ इसमें सलामती के साथ, यह दिन सदैव रहेगा। (35) वहाँ उनके लिए वह सब होगा जो वह चाहें। और हमारे पास और अधिक है।

(36) और हम उनसे पहले कितनी ही क़ौमों को नष्ट कर चुके हैं, और वह शक्ति में इनसे अधिक थीं, अतः उन्होंने देशों को छान मारा कि है कोई शरण पाने की जगह। (37) इसमें अनुस्मरण है उस व्यक्ति के लिए जिसके पास दिल हो या वह कान लगाये ध्यान देकर।

(38) और हमने आकाशों और धरती को और जो कुछ उनके मध्य है छः दिन में बनाया और हमको कुछ थकान नहीं हुई। (39) तो जो कुछ वह कहते हैं उस पर धैर्य रखो और अपने पालनहार की स्तुति करो। प्रशंसा के साथ, सूरज निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले। (40) और रात में उसकी स्तुति करो और सजदों के पश्चात भी।

(41) और कान लगाये रखो कि जिस दिन पुकारने वाला बहुत निकट से पुकारेगा। (42) जिस दिन लोग निश्चय ही चिंघाड़ को सुनेंगे, वह निकलने का दिन होगा। (43) निस्सन्देह हम ही जीवित करते हैं और हम ही मृत्यु देते हैं और हमारी ही ओर लौटना है। (44) जिस दिन पृथ्वी उन पर से खुल जायेगी, वह सब दौड़ते होंगे, यह एकत्र करना हमारे लिए सरल है।

(45) हम जानते हैं जो कुछ यह लोग कह रहे हैं। और तुम उन पर ज़बरदस्ती करने वाले नहीं हो। अतः तुम क़ुरआन के माध्यम से उस व्यक्ति को उपदेश दो जो मेरे डराने से डरे।

51. सूरह अज़-ज़ारियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है उन हवाओं की जो धूल उड़ाने वालीं हैं। (2) फिर वह उठा लेती हैं बोझ। (3) फिर वह चलने लगती हैं धीमी। (4) फिर अलग-अलग करती हैं मामला। (5) निस्सन्देह तुमसे जो वादा किया जा रहा है वह सत्य है। (6) और निस्सन्देह न्याय होना निश्चित है। (7) सौगन्ध है जालदार आसमान

की। (8) निस्सन्देह तुम एक मतभेद में पड़े हुए हो। (9) इससे वही फिरता है जो फेरा गया।

(10) मारे गये अटकल से बातें करने वाले। (11) जो ग़फ़लत में भूले हुए हैं। (12) वह पूछते हैं कि कब है बदले का दिन। (13) जिस दिन वह आग पर रखे जायेंगे। (14) चखो स्वाद अपने विद्रोह का, यह है वह चीज़ जिसकी तुम जल्दी कर रहे थे। (15) निस्सन्देह डरने वाले लोग बाग़ों में और स्रोतों में होंगे। (16) ले रहे होंगे जो कुछ उनके पालनहार ने उनको दिया, वह इससे पहले नेकी करने वाले थे। (17) वह रातों को कम सोते थे। (18) और सवेरे की घड़ियों में वह क्षमा माँगते थे। (19) और उनके माल में भिखारी और वंचित का हिस्सा था।

(20) और धरती में निशानियाँ हैं विश्वास करने वालों के लिए। (21) और स्वंय तुम्हारे अन्दर भी, क्या तुम देखते नहीं। (22) और आकाश में तुम्हारी जीविका है। और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है। (23) अतः आकश और धरती के पालनहार की सौगन्ध, वह निश्चित है जैसा कि तुम बोलते हो।

(24) क्या तुमको इब्राहीम के सम्मानित अतिथियों की बात पहुँची। (25) जब वह उसके पास आये। फिर उनको सलाम किया। उसने कहा तुम लोगों को भी सलाम है- कुछ अनजाने लोग हैं। (26) फिर वह अपने घर की ओर चला और एक बछड़ा भुना हुआ ले आया। (27) फिर उसको उनके पास रखा, उसने कहा, आप लोग खाते क्यों नहीं। (28) फिर वह दिल में उनसे डरा। उन्होंने कहा कि डरो मत। और उनको ज्ञान वाले लड़के की शुभ सूचना दी। (29) फिर उसकी पत्नी बोलती हुई आयी, फिर माथे पर हाथ मारा और कहने लगी कि बूढ़ी, बाँझ। (30) उन्होंने कहा कि ऐसा ही फ़रमाया है तेरे पालनहार ने। निस्सन्देह वह प्रभुत्वशाली और तत्वदर्शी है।

(31) इब्राहीम ने कहा कि ऐ फ़रिश्तो, तुम्हारे समक्ष क्या अभियान है। (32) उन्होंने कहा कि हम एक अपराधी क़ौम (लूत की क़ौम) की ओर भेजे गये हैं। (33) ताकि उस पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसायें। (34) जो निशान लगाये हुए हैं तुम्हारे पालनहार के पास उन लोगों के

लिए जो सीमा से आगे बढ़ने वाले हैं। (35) फिर वहाँ जितने ईमान वाले थे उनको हमने निकाल लिया। (36) तो हमने वहाँ एक घर के अतिरिक्त कोई मुस्लिम (आज्ञाकारी) घर न पाया। (37) और हमने उसमें एक निशानी छोड़ी उन लोगों के लिए जो कष्टदायक यातना से डरते हैं। (38) और मूसा में भी निशानी है जबकि हमने उसको फ़िरऔन के पास एक प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ भेजा। (39) तो वह अपने सभासदों के साथ फिर गया। और कहा कि यह जादूगर है। (40) तो हमने उसको और उसकी सेना को पकडा, फिर उनको समुद्र में फेंक दिया। और वह निन्दनीय था। (41) और आद में भी निशानी है जबकि हमने उन पर एक लाभहीन हवा भेज दी। (42) वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री, उसको उलट-पुलट करके छोड़ दिया। (43) और समूद में भी निशानी है जबकि उनसे कहा गया कि थोड़ी अवधि के लिए लाभ उठा लो। (44) अतः उन्होंने अपने पालनहार के आदेश की अवज्ञा की, तो उनको कड़क ने पकड़ लिया। और वह देख रहे थे। (45) फिर वह न उठ सके। और न अपना बचाव कर सके। (46) और नूह की क़ौम को भी इससे पहले, निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी लोग थे।

(47) और हमने आकाश को अपने सामर्थ्य से बनाया और हम विस्तृत करने वाले हैं। (48) और धरती को हमने बिछाया, फिर क्या ही हम अच्छा बिछाने वाले हैं। (49) और हमने प्रत्येक चीज़ को जोड़ा-जोड़ा बनाया है। ताकि तुम ध्यान करो। (50) अतः दौड़ो अल्लाह की ओर, मैं उसकी ओर से एक खुले तौर पर डराने वाला हूँ। (51) और अल्लाह के साथ कोई और उपास्य न बनाओ, मैं उसकी ओर से तुम्हारे लिए प्रत्यक्ष डराने वाला हूँ।

(52) इसी प्रकार उनके अगलों के पास कोई पैग़म्बर ऐसा नहीं आया जिसको इन्होंने जादूगर या दीवाना न कहा हो। (53) क्या यह एक दूसरे को इसकी वसीयत करते चले आ रहे हैं, बल्कि यह सब विद्रोही लोग हैं। (54) अतः तुम इनसे मुँह मोड़ो तुम पर कुछ आरोप नहीं। (55) और समझाते रहो क्योंकि समझाना ईमान वालों को लाभ देता है।

(56) और मैंने जिन्न और मुनष्य को मात्र इसीलिए पैदा किया है कि वह मेरी उपासना करे। (57) मैं उनसे जीविका नहीं चाहता और न यह चाहता

हूँ कि वह मुझको खिलायें। (58) निस्सन्देह अल्लाह ही जीविका देने वाला, शक्तिशाली और ज़बरदस्त है। (59) अतः जिन लोगों ने अत्याचार किया, उनका डोल भर चुका है जैसे उनके साथियों के डोल भरे थे, अतः वह शीघ्रता न करे। (60) अतः अवज्ञाकारियों के लिए विनाश है उनके उस दिन से जिसका उनसे वादा किया जा रहा है।

52. सूरह अत-तूर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है तूर की। (2) और लिखी हुई किताब की। (3) विस्तृत पन्नों में। (4) और आबाद घर की। (5) और ऊँची छत की। (6) और उबलते हुए समुद्र की। (7) निस्सन्देह तुम्हारे पालनहार की यातना घटित होकर रहेगी। (8) उसको कोई टालने वाला नहीं। (9) जिस दिन आसमान डगमगायेगा।

(10) और पहाड़ चलने लगेंगे। (11) तो विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (12) जो बातें बनाते हैं खेलते हुए। (13) जिस दिन वह नरक की आग की ओर ढकेले जायेंगे। (14) यह है वह आग जिसको तुम झुठलाते थे। (15) क्या यह जादू है अथवा तुमको दिखाई नहीं देता। (16) इसमें प्रवेश कर जाओ। अब तुम धैर्य रखो अथवा धैर्य न रखो, तुम्हारे लिए समान है। तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे।

(17) निस्सन्देह ईश परायण लोग बाग़ो और नेमतों में होंगे। (18) वह प्रफुल्लित होंगे उन चीज़ों से जो उनके पालनहार ने उन्हें दी होंगी, और उनके पालनहार ने उनको नरक की यातना से बचा लिया। (19) खाओ और पीओ आनन्द के साथ अपने कर्मों के बदले में। (20) तकिया लगाये हुए पंक्तिबद्ध तख़्तों के ऊपर। और हम बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों (रूपवती) से उनका विवाह कर देंगे।

(21) और जो लोग ईमान लाये और उनकी सन्तान भी उनके मार्ग पर ईमान के साथ चली, उनके साथ हम उनकी सन्तान को भी एकत्र करेंगे, और हम उनके कर्म में से कोई चीज़ कम नहीं करेंगे। प्रत्येक व्यक्ति

अपनी कमाई में फँसा हुआ है। (22) और हम उनकी पसन्द के फल और माँस उनको निरन्तर देते रहेंगे। (23) उनके बीच शराब के प्यालों का आदान-प्रदान हो रहा होगा जो बेहूदगी और पाप से रहित होगा। (24) और उनकी सेवा में बच्चे दौड़ते फिर रहे होंगे, मानो कि वह सुरक्षापूर्वक रखे हुए मोती हैं। (25) वह एक दूसरे की ओर सम्बोधित होकर बात करेंगे। (26) वह कहेंगे कि हम इससे पहले अपने घरों में डरते (अपने पलनहार की नाराज़गी से) रहते थे। (27) तो अल्लाह ने हम पर कृपा की और हमको झुलसा देने वाली यातना से बचा लिया। (28) हम इससे पहले उसी को पुकारते थे, निस्सन्देह वह वादों का पूरा करने वाला, दयावान है।

(29) अतः तुम उपदेश करते रहो, अपने पालनहार की कृपा से तुम न ढोंगी भविष्य वक्ता हो और न दिवाना। (30) क्या वह कहते हैं कि यह एक कवि है। हम इस पर काल परिवर्तन की प्रतीक्षा में हैं। (31) कहो कि प्रतीक्षा करो, मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। (32) क्या इनकी बुद्धि इनको यही सिखाती है या यह विद्रोही लोग हैं। (33) क्या वह कहते हैं कि यह क़ुरआन को स्वंय बना लाया है। बल्कि वह ईमान नहीं लाना चाहते। (34) अतः वह इस जैसी कोई वाणी ले आयें, यदि वह सच्चे हैं।

(35) क्या वह किसी रचयिता के बिना पैदा हो गये, अथवा वह स्वंय ही रचयिता हैं। (36) क्या धरती और आकाश को उन्होंने पैदा किया है, बल्कि वह विश्वास नहीं रखते। (37) क्या इनके पास तुम्हारे पालनहार के ख़ज़ाने हैं या वह प्रतिरक्षक हैं। (38) क्या इनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर वह बातें सुन लिया करते हैं, तो इनका सुनने वाला कोई प्रत्यक्ष प्रमाण ले आये। (39) क्या अल्लाह के लिए बेटियाँ हैं और तुम्हारे लिए बेटे।

(40) क्या तुम इनसे पारिश्रमिक माँगते हो कि वह अर्थदण्ड के बोझ से दबे जा रहे हैं। (41) क्या इनके पास परोक्ष है कि वह लिख लेते हैं। (42) क्या वह कोई षडयन्त्र करना चाहते हैं, तो अवज्ञा करने वाले स्वंय ही उस षडयन्त्र में ग्रस्त होंगे। (43) क्या अल्लाह के अतिरिक्त इनका और कोई उपास्य है। अल्लाह पवित्र है उनके साझीदार बनाने से।

(44) और यदि वह आकाश से कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो वह कहेंगे

कि ये परत-परत बादल हैं। (45) तो उनको छोड़ो, यहाँ तक कि अपने उस दिन का सामना करें जिसमें होश जाते रहेंगे। (46) जिस दिन इनके षड़यन्त्र इनके कुछ काम न आयेंगे और न इनको कोई सहायता मिलेगी। (47) और इन अत्याचारियों के लिए इसके अतिरिक्त भी यातना है, परन्तु इनमें से अधि ाकतर नहीं जानते।

(48) और तुम धैर्यपूर्वक अपने पालनहार के निर्णय की प्रतीक्षा करो। निस्सन्देह तुम हमारी दृष्टि में हो। और अपने पालनहार की स्तुति करो। उसकी प्रशंसा के साथ, जिस समय तुम उठते हो। (49) और रात को भी उसकी स्तुति करो, और तारों के पीछे हटने के समय भी।

53. सूरह अन-नज्म

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है तारे की जबकि वह अस्त हो। (2) तुम्हारा साथी न भटका है और न वह पथभ्रष्ट हुआ है (3) और वह अपने मन से नहीं बोलता। (4) यह एक वह्य (श्रुति) है जो उस पर भेजी जाती है। (5) उसको प्रभुत्वशाली और शक्तिशाली ने शिक्षा दी है। (6) बुद्धिमान और विवेकशील ने। (7) फिर वह उदय हुआ और वह क्षितिज के उच्चतम छोर पर था। (8) फिर वह समीप हुआ। (9) फिर वह उतर आया। फिर दो कमानों के बराबर या उससे भी कम दूरी रह गयी। (10) फिर अल्लाह ने वह्य (आकाशवाणी) की अपने बन्दे की ओर जो वह्य (श्रुति) की। (11) झूठ नहीं कहा सन्देष्टा के दिल ने जो उसने देखा। (12) अब क्या तुम उस चीज़ पर उससे झगड़ते हो जो उसने देखा है। (13) और उसने एक बार और भी उसको उतरते हुए देखा है। (14) सिद्‌रतुल मुन्तहा (अन्तिम छोर पर स्थित बेरी का पेड़) के पास। (15) उसके पास ही जन्नतुल मावा (ठिकाने वाली जन्नत) है आराम से रहने की। (16) जबकि सिदरा (बेरी) पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था। (17) दृष्टि बहकी नहीं और न सीमा से बढ़ी। (18) इसने अपने पालनहार की बड़ी-बड़ी निशानियाँ देखी हैं।

(19) भला तुमने लात और उज़्ज़ा पर विचार किया है। (20) और तीसरे एक और मनात पर। (21) क्या तुम्हारे लिए बेटे हैं और अल्लाह के लिए बेटियाँ। (22) यह तो बहुत बेढंगा बँटवारा हुआ। (23) यह मात्र नाम हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने रख लिये हैं। अल्लाह ने इनके पक्ष में कोई प्रमाण नहीं उतारा। वह मात्र भ्रम का अनुसरण कर रहे हैं और मन की इच्छा का, जबकि उनके पास उनके पालनहार की ओर से मार्गदर्शन आ चुका है। (24) क्या मनुष्य वह सब पा लेता है जो वह चाहे। (25) तो अल्लाह के अधि ाकार में है परलोक और संसार।

(26) और आकाशों में कितने फ़रिश्ते हैं जिनकी सिफ़ारिश कुछ भी काम नहीं आ सकती, परन्तु यह कि अल्लाह अनुमति दे जिसको वह चाहे और पसन्द करे। (27) निस्सन्देह जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते, वह फ़रिश्तों के नाम महिलाओं के नाम पर रखते हैं। (28) जबकि उनके पास इस पर कोई प्रमाण नहीं। वह मात्र कल्पना पर चल रहे हैं। और कल्पना सच्चाई के मामले में तनिक भी लाभप्रद नहीं। (29) अतः तुम ऐसे व्यक्ति से मुँह मोड़ो जो हमारे उपदेश से मुँह फेरे और वह सांसारिक जीवन के अतिरिक्त और कुछ न चाहे। उनकी समझ मात्र यहीं तक पहुँची है। (30) तुम्हारा पालनहार भली भाँति जानता है कि कौन उसके मार्ग से भटका हुआ है। और वह उसको भी भली भाँति जानता है जो सन्मार्ग पर है।

(31) और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाशों में हैं और जो कुछ धरती में है, ताकि वह बदला दे बुरा काम करने वालों को उनके किये का और बदला दे भलाई वालों को भलाई से। (32) जो कि बड़े पापों से और अश्लीलता से बचते हैं, परन्तु कुछ गंदगी। निस्सन्देह तुम्हारे पालनहार की क्षमाशीलता अत्यन्त व्यापक है। वह तुमको भली भाँति जानता है जबकि उसने तुमको ध ारती से पैदा किया। और जब तुम अपनी माओं के पेट में भ्रूण के रूप में थे, तो तुम अपने आप को पवित्र न समझो। वह तक़्वा (ईश-भय) वालों को भली भाँति जानता है।

(33) भला तुमने उस समय उस व्यक्ति को देखा जिसने मुँह मोड़ा। (34) थोड़ा सा दिया और रुक गया। (35) क्या उसके पास परोक्ष का ज्ञान

है कि वह देख रहा है। (36) क्या उसको सूचना नहीं पहुँची उस बात की जो मूसा के सहीफ़ों (ग्रन्थों) में है। (37) और इब्राहीम के, जिसने अपना वचन पूरा कर दिया। (38) कि कोई उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा। (39) और यह कि मनुष्य के लिए वही है जो उसने कमाया। (40) और यह कि उसकी कमाई शीघ्र ही देखी जायेगी। (41) फिर उसको पूरा बदला दिया जायेगा। (42) और यह कि सबको तुम्हारे पालनहार तक पहुँचना है।

(43) निस्सन्देह वही हँसाता है और रुलाता है। (44) और वही मारता है और जिलाता है। (45) और उसी ने दोनों क़िस्म, नर और मादा को पैदा किया। (46) एक बूँद से जबकि वह टपकायी जाये। (47) और उसी के ज़िम्मे हैं दूसरी बार उठाना। (48) और उसी ने सम्पत्ति दी और धनवान बनाया। (49) और वही शअरा (एक तारा) का पालनहार है।

(50) और अल्लाह ही ने नष्ट किया प्रथम आद को। (51) और समूद को। फिर किसी को शेष न छोड़ा। (52) और नूह की क़ौम को इससे पहले, निस्सन्देह वह अत्यन्त अत्याचारी और विद्रोही लोग थे। (53) और उल्टी हुई बस्तियों को भी फेंक दिया। (54) तो उनको ढाँक लिया जिस चीज़ ने ढाँक लिया। (55) अतः तुम अपने पालनहार के किन-किन चमत्कारों को झुठलाओगे।

(56) यह एक डराने वाला है। पहले डराने वालों की तरह। (57) निकट आने वाली निकट आ गयी। (58) अल्लाह के अतिरिक्त कोई उसका हटाने वाला नहीं। (59) क्या तुमको इस बात से आश्चर्य होता है। (60) और तुम हँसते हो और तुम रोते नहीं। (61) और तुम घमण्ड करते हो। (62) अतः अल्लाह के लिए सजदा करो और उसी की उपासना करो।

54. सूरह अल-क़मर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क़ियामत निकट आ गयी और चाँद फट गया। (2) और वह कोई भी निशानी देखें तो वह मुँह ही फेरेंगे। और कहेंगे कि यह तो जादू है जो पहले से चला आ रहा है। (3) और उन्होंने झुठला दिया और अपनी

इच्छाओं का अनुसरण किया और प्रत्येक कार्य का समय निर्धारित है। (4) और उनको वह सूचनाएँ पहुँच चुकी हैं जिसमें पर्याप्त शिक्षा है। (5) उच्चतम दर्जे की तत्वदर्शिता, परन्तु चेतावनियाँ उनको लाभ नहीं देतीं। (6) अतः उनसे मुँह मोड़ो, जिस दिन पुकारने वाला एक नापसन्दीदा चीज़ की ओर पुकारेगा। (7) आँखें झुकाये हुए क़ब्रों से निकल पडेंगे मानो कि वह बिखरी हुई टिाियाँ हैं। (8) भागते हुए पुकारने वाले की ओर, अवज्ञाकारी कहेंगे कि यह दिन बड़ा कठोर है।

(9) इनसे पहले नूह की क़ौम ने अवज्ञा की, उन्होंने हमारे बन्दे को झुठलाया और कहा कि दिवाना है और झिड़क दिया। (10) तो उसने अपने पालनहार को पुकारा कि मैं दबा हुआ हूँ, तू बदला ले। (11) तो हमने आसमान के दरवाज़े मूसलाधार वर्षा से खोल दिये। (12) और धरती से स्रोत बहा दिये। तो सम्पूर्ण पानी एक काम पर मिल गया जो नियत हो चुका था। (13) और हमने उसको एक तख़्तों और कीलों वाली (नाव) पर उठा लिया। (14) वह हमारी आँखों के सामने चलती रही। उस व्यक्ति का बदला लेने के लिए जिसका अनादर किया गया। (15) और उसको हमने निशानी के लिए छोड़ दिया। फिर कोई है सोचने वाला। (16) फिर कैसी थी मेरी यातना और कैसा था मेरा डराना। (17) और हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया है, तो क्या कोई है उपदेश प्राप्त करने वाला।

(18) आद ने झुठलाया तो कैसी थी मेरी यातना और कैसा था मेरा डराना। (19) हमने उन पर एक तीव्र हवा भेजी निरन्तर अशुभ (सख़्त सर्दी के) के दिन में। (20) वह लोगों को उखाड़ फेंकती थी जैसे कि वह उखड़े हुए खजूरों के तने हों। (21) फिर कैसी थी मेरी यातना और (कैसा था) मेरा डराना। (22) हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया, तो क्या कोई है उपदेश प्राप्त करने वाला।

(23) समूद ने चेतावनी को झुठलाया। (24) अतः उन्होंने कहा क्या हम अपने ही अन्दर के एक मनुष्य के कहे पर चलेंगे, इस स्थिति में तो हम भूल और जुनून में पड़ जायेंगे। (25) क्या हम सबमें से इसी पर उपदेश उतरा है, बल्कि वह झूठा है, बड़ा बनने वाला। (26) अब वह कल के दिन

जान लेंगे कि कौन झूठा है और बड़ा बनने वाला है। (27) हम ऊँटनी को भेजने वाले हैं उनके लिए परीक्षा बनाकर, तो तुम प्रतीक्षा करो। (28) और धैर्य रखो। और उनको सचेत कर दो कि पानी उनमें बाँट दिया गया है। प्रत्येक (अपनी) बारी पर उपस्थित हो। (29) फिर उन्होंने अपने आदमी को पुकारा, तो उसने हमला किया और ऊँटनी को काट डाला। (30) फिर कैसी थी मेरी यातना और (कैसा था) मेरा डराना। (31) हमने उन पर एक चिंघाड़ भेजी, तो वह बाढ़ वाले की रौंदी हुई बाढ़ की तरह होकर रह गये। (32) और हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया, तो क्या कोई है उपदेश प्राप्त करने वाला।

(33) लूत की क़ौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। (34) हमने उन पर पथराव करने वाली हवा भेजी। मात्र लूत के घरवाले उससे बचे, उनको हमने बचा लिया भोर से पहले। (35) अपनी ओर से कृपा करके। हम इसी प्रकार बदला देते हैं उसको जो कृतज्ञता करे। (36) और लूत ने उनको हमारी पकड़ से डराया, फिर उन्होंने उस डराने में झगड़े पैदा किये। (37) और वह उसके अतिथियों को उससे लेने लगे अतः हमने उनकी आँखें मिटा दीं। अब चखो मेरी यातना और मेरा डराना। (38) और प्रातः काल उन पर यातना आ पड़ी जो ठहर चुकी थी। (39) अब चखो मेरी यातना और मेरा डराना। (40) और हमने क़ुरआन को उपदेश के लिए सरल कर दिया, तो क्या कोई है उपदेश प्राप्त करने वाला।

(41) और फ़िरऔन वालों के पास पहुँचे डराने वाले। (42) उन्होंने हमारी सभी निशानियों को झुठलाया। तो हमने उनको एक वर्चस्व वाले और सामर्थ्य वाले के पकड़ने की भाँति पकड़ा।

(43) क्या तुम्हारे इन्कार करने वाले इन लोगों से श्रेष्ठ हैं अथवा तुम्हारे लिए आकाशीय किताबों में क्षमा लिख दी गई है। (44) क्या वह कहते हैं कि हम ऐसे समूह हैं जो प्रभावशाली रहेंगे। (45) शीघ्र ही यह समूह पराजित होगा और पीठ फेरकर भागेगा। (46) बल्कि क़ियामत उनके वादे का समय है और क़ियामत अत्यन्त कठोर और कड़वी चीज़ है।

(47) निस्सन्देह अपराधी लोग पथभ्रष्टता में और नासमझी में हैं। (48) जिस दिन वह मुँह के बल आग में घसीटे जायेंगे। चखो स्वाद आग का।

(49) हमने प्रत्येक चीज़ को पैदा किया है पैमाने से। (50) और हमारा आदेश बस अचानक आ जायेगा जैसे आँख का झपकना। (51) और हम नष्ट कर चुके हैं तुम्हारे साथ वालों को, फिर क्या कोई है सोचने वाला। (52) और जो कुछ उन्होंने किया, सब किताबों में लिखा हुआ है। (53) और प्रत्येक छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है। (54) निस्सन्देह डरने वाले बाग़ों में और नहरों में होंगे। (55) वह बैठे होंगे सच्ची बैठक में, सामर्थ्य वाले बादशाह के पास।

55. सूरह अर-रहमान

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) रहमान (दयावान) ने। (2) क़ुरआन की शिक्षा दी। (3) उसने मनुष्य को पैदा किया। (4) उसको बोलना सिखाया। (5) सूरज और चाँद के लिए एक हिसाब है। (6) और तारे और वृक्ष सजदा करते हैं। (7) और उसने आकाश को ऊँचा किया और उसने तराज़ू रख दी। (8) कि तुम तौलने में अन्याय न करो। (9) और न्याय के साथ सीधा तराज़ू तौलो और तौल में न घटाओ।

(10) और धरती को उसने रचनाओं के लिए रख दिया। (11) इसमें फल हैं और खजूर हैं जिनके ऊपर खोल (कवर) होता है। (12) और भूसे वाले अनाज भी हैं और सुगन्ध वाले फूल भी। (13) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (14) उसने पैदा किया मनुष्य को ठीकरे की तरह खनखनाती हुई मिट्टी से। (15) और उसने जिन्नों को आग की लपट से पैदा किया। (16) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (17) और वह स्वामी है दोनों पूर्व का और दोनों पश्चिम का। (18) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (19) उसने चलाये दो दरिया मिलकर चलने वाले। (20) दोनों के बीच एक पर्दा (रोक) है जिससे वह आगे नहीं बढ़ते।

(21) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (22) इन दोनों से मोती और मूँगा निकलता है। (23) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (24) और उसी के हैं जहाज, समुद्र में ऊँचे खड़े हुए जैसे पहाड़। (25) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(26) जो भी पृथ्वी पर है, वह नाश होने वाला है। (27) और तेरे पालनहार की हस्ती शेष रहेगी, प्रतापवान और आदर वाली। (28) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (29) उसी से माँगते हैं जो आकाशों और धरती में हैं। प्रतिदिन उसका एक काम है। (30) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(31) हम शीघ्र ही निवृत्त होने वाले हैं तुम्हारी ओर, ऐ दो भारी क़ाफिलों। (32) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (33) ऐ जिन्नों और मनुष्यों के समूह। यदि तुमसे हो सके कि तुम आकाशों और धरती की सीमाओं से निकल जाओ। तो निकल जाओ, तुम नहीं निकल सकते बिना प्रमाण के। (34) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (35) तुम पर छोड़े जायेंगी आग की लपटें और धुँआ तो तुम बचाव न कर सकोगे। (36) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(37) फिर जब आकाश फटकर चमड़े की तरह लाल हो जायेगा। (38) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (39) अतः उस दिन किसी मनुष्य या जिन्न से उसके पाप के सम्बन्ध में पूछ न होगी। (40) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (41) अपराधी पहचान लिये जायेंगे अपने लक्षणों से, फिर पकड़ा जायेगा ललाट के बाल से और पैर से। (42) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (43) यह नरक है जिसको अपराधी लोग झूठ बताते थे। (44) वह फिरेंगे उसके बीच और खौलते पानी के बीच। (45) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(46) और जो व्यक्ति अपने पालनहार के समक्ष खड़ा होने से डरे, उसके

लिए दो बाग़ हैं। (47) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (48) दोनों बहुत शाख़ाओं वाले। (49) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (50) उनके बीच दो स्रोत जारी होंगे। (51) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (52) दोनों बाग़ों में प्रत्येक फल की दो किस्में। (53) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (54) वह तकिया लगाये ऐसे बिछौनों पर बैठे होंगे जिनके स्तर मोटे रेशम के होंगे। और फल उन बाग़ों का झुक रहा होगा। (55) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (56) उनमें नीची निगाहों वाली महिलाएँ होंगी, जिन्हें उन लोगों से पहले न किसी मनुष्य ने छुआ होगा न किसी जिन्न ने। (57) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (58) वह ऐसी होंगी जैसे याक़ूत (लाल) और मरजान (मूँगा) हैं। (59) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (60) भलाई का बदला भलाई के अतिरिक्त और क्या है। (61) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(62) और इनके अतिरिक्त दो बाग़ और हैं। (63) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (64) दोनों गहरे हरे कालापन लिये हुए। (65) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (66) उनमें दो स्रोत होंगे उबलते हुए। (67) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (68) उनमें फल और खजूर और अनार होंगे। (69) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (70) उनमें भले चरित्रवाली सुन्दर महिलाएँ होंगी। (71) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (72) हूरें (स्वर्ग की सुन्दर युवतियां) ख़ेमों में रहने वालियाँ (73) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (74) उनसे पहले उनको न किसी मनुष्य ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने। (75) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे। (76) तकिया लगाये हरे मसनदों पर और मूल्यवान उत्कृष्ट बिछौने पर। (77) फिर तुम अपने पालनहार के किन-किन उपकारों को झुठलाओगे।

(78) बड़ा विभूति वाला है तेरे पालनहार का नाम, बड़ाई वाला और महानता वाला।

56. सूरह अल-वाक़िअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब घटित होने वाली घटित हो जायेगी। (2) उसके घटित होने में कुछ झूठ नहीं। (3) वह नीचा करने वाली, ऊँचा करने वाली होगी। (4) जबकि धरती हिला डाली जायेगी। (5) और पहाड़ टूट कर कण-कण हो जायेंगे। (6) फिर वह बिखरी हुई धूल बनकर रह जायेंगे। (7) और तुम लोग तीन प्रकार के हो जाओगे।

(8) फिर दायें वाले, तो क्या ख़ूब हैं दायें वाले। (9) और बायें वाले, कैसे बुरे लोग हैं बायें वाले। (10) और आगे वाले तो आगे ही वाले हैं। (11) वह निकट रहने वाले लोग हैं। (12) नेमत के बाग़ों में। (13) उनकी बड़ी संख्या अगलों में से होगी। (14) और थोड़े पिछलों में से होंगे। (15) जड़ाऊ तख़्तों पर। (16) तकिया लगाये आमने-सामने बैठे होंगे। (17) फिर रहे होंगे उनके पास बच्चे (किशोर अवस्था) सदैव रहने वाले। (18) कटोरे और जग लिये हुए और प्याला स्वच्छ शराब का। (19) उससे न सिरदर्द होगा न बुद्धि में विकार आयेगा। (20) और फल कि जो चाहें चुन लें। (21) और पक्षियों का माँस जो उनको प्रिय हो। (22) और बड़ी आँखों वाली हूरें। (23) जैसे मोती के दाने अपने आवरण के अन्दर। (24) बदला उन कर्मों का जो वह करते थे। (25) उसमें वह कोई व्यर्थ और पाप की बात नहीं नहीं सुनेंगे। (26) परन्तु मात्र सलामती-सलामती का बोल।

(27) और दाहिने वाले, क्या ख़ूब हैं दाहिने वाले। (28) बैर के वृक्षों में जिनमें काँटा नहीं। (29) और गुच्छेदार केले। (30) और फैली हुई छाया। (31) और बहता हुआ पानी। (32) और प्रचूर मात्रा में फल। (33) जो न समाप्त होंगे और न कोई रोक-टोक होगी। (34) और ऊँचे बिछौने। (35) हमने उन महिलाओं को विशेष रूप से बनाया है। (36) फिर उनको

कुँवारी रखा है। (37) मन मोहने वाली और समान आयु वाली। (38) दाहिने वालों के लिए। (39) अगलों में से एक बड़ा समूह होगा। (40) और पिछलों में से भी एक बड़ा समूह।

(41) और बायें वाले, कैसे बुरे हैं बायें वाले। (42) आग में और खौलते हुए पानी में। (43) और काले धुँए की छाया में। (44) न ठण्डा और न सम्मान का। (45) यह लोग इससे पहले सम्पन्न थे। (46) और वह बड़े पाप पर अड़े रहते थे। (47) और वह कहते थे, क्या जब हम मर जायेंगे और हम मिट्टी और हाियाँ हो जायेंगे तो क्या हम फिर उठाये जायेंगे। (48) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी। (49) कहो कि अगले और पिछले। (50) सभी एकत्र किये जायेंगे एक निर्धारित दिन के समय पर। (51) फिर तुम लोग, ऐ बहके हुए और झुठलाने वालों। (52) ज़क़्क़ूम के पेड़ में से खाओगे। (53) फिर उससे अपना पेट भरोगे। (54) फिर उस पर खौलता हुआ पानी पिओगे। (55) फिर प्यासे ऊँटों की तरह पीओगे। (56) यह उनका आतिथ्य होगा न्याय के दिन।

(57) हमने तुमको पैदा किया है, फिर तुम पुष्टि क्यों नहीं करते। (58) क्या तुमने विचार किया उस चीज़ पर जो तुम टपकाते हो। (59) क्या तुम उसको आकार देते हो या हम हैं आकार देने वाले। (60) हमने तुम्हारे बीच मृत्यु नियत की है और हम उससे विवश नहीं। (61) कि तुम्हारे स्थान पर तुम्हारे जैसे पैदा कर दें और तुमको ऐसे रूप में बना दें जिसको तुम जानते नहीं। (62) क्या तुम पहले जन्म को जानते हो, फिर क्यों शिक्षा नहीं लेते। (63) क्या तुमने विचार किया उस चीज़ पर जो तुम बोते हो। (64) क्या तुम उसको उगाते हो। या हम हैं उगाने वाले। (65) यदि हम चाहें तो उसको उलट पलट कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ। (66) हम तो घाटे में पड़ गये। (67) बल्कि हम पूर्णतः वंचित हो गये। (68) क्या तुमने विचार किया उस पानी पर जो तुम पीते हो। (69) क्या तुमने उसको बादल से उतारा है। (70) या हम हैं उतारने वाले। यदि हम चाहें तो उसको अत्यन्त नमकीन बना दें, फिर तुम कृतज्ञता क्यों नहीं करते। (71) क्या तुमने विचार किया उस आग पर जिसको तुम जलाते हो। (72) क्या तुमने पैदा किया है उसके वृक्ष को या हम हैं उसके पैदा करने वाले। (73) हमने

उसको अनुस्मरण बनाया है, और यात्रियों के लिए लाभ की चीज़ (74) अतः तुम अपने महान पालनहार के नाम की स्तुति करो।

(75) तो नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ तारों की स्थितियों की। (76) और यदि तुम विचार करो तो यह बहुत बड़ी सौगन्ध है। (77) निस्सन्देह यह एक सम्मान वाला क़ुरआन है। (78) एक सुरक्षित किताब में। (79) इसको वही छूते हैं जो पवित्र बनाये गये हैं। (80) उतरा है सारे संसार के पालनहार की ओर से। (81) फिर क्या तुम इस वाणी के साथ बेपरवाही बरतते हो। (82) और तुम अपना हिस्सा यही लेते हो कि तुम इसको झुठलाते हो।

(83) फिर क्यों नहीं, जबकि प्राण कंठ में पहुँचता है। (84) और तुम उस समय देख रहे होते हो। (85) और हम तुमसे अधिक उस व्यक्ति से निकट होते हैं परन्तु तुम नहीं देखते। (86) फिर क्यों नहीं, यदि तुम अधीन नहीं हो। (87) तो तुम उस प्राण को क्यों नहीं लौटा लाते, यदि तुम सच्चे हो। (88) तो यदि वह निकटवर्तियों में से हो।

(89) तो आराम है और अच्छी सुख सामग्री है और नेमत का बाग़ है। (90) और यदि वह दाहिने वालों में से हो। (91) तो तुम्हारे लिए सलामती, तू दाहिने वालों में से है। (92) और यदि वह झुठलाने वाले पथभ्रष्ट लोगों में से हो। (93) तो गर्म पानी का आतिथ्य है। (94) और नरक में प्रवेश होना। (95) निस्सन्देह यह अन्तिम सत्य है। (96) अतः तुम अपने महान पालनहार के नाम की स्तुति करो।

57. सूरह अल-हदीद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह की स्तुति करती है प्रत्येक चीज़ जो आकाशों और धरती में है और वह प्रभुत्वशाली है। सर्वज्ञाता है। (2) आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी का है। वही जीवन देता है और मृत्यु देता है। और वह हर चीज़ की सामर्थ्य रखता है। (3) वही प्रथम भी है और अन्तिम भी और परोक्ष भी है और प्रत्यक्ष भी। और वह हर चीज़ का जानने वाला है। (4) वही है जिसने आकाशों और धरती को पैदा किया छः दिनों में, फिर वह

सिंहासन पर विराजमान हुआ। वह जानता है जो कुछ धरती के अन्दर जाता हैं और जो कुछ उससे निकलता है और जो कुछ आकाश से उतरता है और जो कुछ उसमें चढ़ता है, और वह तुम्हारे साथ है जहाँ भी तुम हो, और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो। (5) आकाशों और धरती का साम्राज्य उसी का है, और अल्लाह ही की ओर लौटते हैं सभी मामले। (6) वह रात को दिन में प्रवेश करता है और दिन को रात में प्रवेश करता है, और वह दिल की बातों को जानता है।

(7) ईमान लाओ अल्लाह और उसके सन्देष्टा पर और ख़र्च करो उस चीज़ में से जिसमें उसने तुमको अधिकारी बनाया है, अतः जो लोग तुम में से ईमान लाये और ख़र्च करें उनके लिए बड़ा बदला है। (8) और तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह पर ईमान नहीं लाते। हालाँकि सन्देष्टा तुमको बुला रहा है कि अपने पालनहार पर ईमान लाओ और वह तुमसे प्रण ले चुका है, यदि तुम मोमिन (आस्थावान) हो। (9) वही है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतारता है ताकि तुमको अँधेरों से प्रकाश की ओर ले आये, और अल्लाह तुम्हारे ऊपर नरमी करने वाला है, दयावान है। (10) और तुमको क्या हुआ कि तुम अल्लाह के मार्ग में ख़र्च नहीं करते, हालाँकि समस्त आकाश और धरती अन्त में अल्लाह ही का रह जायेगा। तुममें से जो लोग विजय के बाद ख़र्च करें और युद्ध करें वह उन लोगों के समान नहीं हो सकते, जिन्होंने विजय से पहले ख़र्च किया और युद्ध किया, और अल्लाह ने सबसे भलाई का वादा किया है, अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

(11) कौन है जो अल्लाह को ऋण दे, अच्छा ऋण, कि वह उसको उसके लिए बढ़ाये, और उसके लिए सम्मान वाला बदला है। (12) जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनका प्रकाश उनके आगे और उनके दायें चल रहा होगा- आज के दिन तुमको शुभ सूचना है बाग़ों की जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, तुम उनमें सदैव रहोगे, यह बड़ी सफलता है। (13) जिस दिन कपटाचारी मर्द और कपटाचारी औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमें अवसर दो कि हम भी तुम्हारे प्रकाश से कुछ लाभ उठा लें। कहा जायेगा कि तुम अपने पीछे लौट जाओ, फिर प्रकाश तलाश करो। फिर उनके

बीच एक दीवार खड़ी कर दी जायेगी जिसमें एक द्वार होगा। उसके अन्दर की ओर दया होगी और उसके बाहर की ओर यातना होगी। (14) वह उनको पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे। वह कहेंगे कि हाँ, परन्तु तुमने अपने आप को परीक्षा में डाला और मार्ग देखते रहे और सन्देह में पड़े रहे और झूठी आशाओं ने तुमको धोखे में रखा, यहाँ तक कि अल्लाह का निर्णय आ गया। और धोखेबाज ने तुमको अल्लाह के मामले में धोखा दिया। (15) अतः आज न तुमसे कोई अर्थदण्ड स्वीकार किया जायेगा और न उन लोगों से जिन्होंने अवज्ञा की। तुम्हारा ठिकाना आग है। वही तुम्हारा साथी है। और वह बुरा ठिकाना है।

(16) क्या ईमान वालों के लिए वह समय नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के उपदेश के आगे झुक जायें। और उस सत्य के आगे जो उतारा जा चुका है। और वह उन लोगों की भाँति न हो जायें जिनको पहले किताब दी गयी थी, फिर उन पर लम्बी अवधि बीत गयी तो उनके दिल कठोर हो गये। और उनमें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं। (17) जान लो कि अल्लाह ध ारती को जीवन देता है उसकी मृत्यु के बाद हमने तुम्हारे लिए निशानियाँ बयान कर दी हैं, ताकि तुम समझो।

(18) निस्सन्देह दान देने वाले मर्द और दान देने वाली महिलाएँ। और वह लोग जिन्होंने अल्लाह को ऋण दिया, अच्छा ऋण, तो उनके लिए बढ़ाया जायेगा और उनके लिए सम्मानित प्रतिदान है। (19) और जो लोग ईमान लाये अल्लाह पर और उसके सन्देष्टाओं पर, वही लोग अपने पालनहार के निकट सच्चे और शहीद हैं। उनके लिए उनका बदला और उनका प्रकाश है, और जिन लोगों ने अवज्ञा की और हमारी आयतों को झुठलाया वह नरक के लोग हैं।

(20) जान लो कि सांसारिक जीवन इसके अतिरिक्त कुछ नहीं कि खेल और तमाशा है और सौन्दर्य और आपसी स्वाभिमान और सम्पत्ति और सन्तान में एक दूसरे से बढ़ने का प्रयास करना। जैसे कि वर्षा कि उसकी पैदावार किसानों को भली लगती है, फिर वह सूख जाती है, फिर तू उसको पीला देखता है, फिर वह तिनका-तिनका हो जाती है। और परलोक में कठोर यातना है और

अल्लाह की ओर से क्षमादान और प्रसन्नता भी। और संसार का जीवन धोखे की पूँजी के अतिरिक्त और कुछ नहीं। (21) दौड़ो अपने पालनहार की क्षमा की ओर, और ऐसी जन्नत की ओर जिसकी व्यापकता आकाश और पृथ्वी की व्यापकता के समान हैं। वह उन लोगों के लिए तैयार की गई है जो अल्लाह और उसके सन्देष्टाओं पर ईमान लायें, यह अल्लाह की कृपा है। वह उसको देता है जिसे वह चाहता है। और अल्लाह अत्यनत अनुग्रही।

(22) कोई विपत्ति न धरती में आती है और न तुम्हारी जानों में परन्तु वह एक किताब में लिखी हुई है। इससे पहले कि हम उसको पैदा करें। निस्सन्देह यह अल्लाह के लिए सरल है। (23) ताकि तुम दुख न करो उस पर जो तुमसे खो गया। और न उस चीज़ पर अभिमान करो जो उसने तुमको प्रदान की। और अल्लाह इतराने वालों, अभिमान करने वाले को पसन्द नहीं करता। (24) जो कि कंजूसी करते हैं और दूसरों को भी कंजूसी की शिक्षा देते हैं। और जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह बेनियाज़ (निस्पृह), प्रशंसनीय है।

(25) हमने अपने सन्देष्टाओं को निशानियों के साथ भेजा और उनके साथ उतारा किताब और तराज़ू, ताकि लोग न्याय पर स्थापित हों। और हमने लोहा उतारा जिसमें अत्याधिक शक्ति है और लोगों के लिए लाभ हैं और ताकि अल्लाह जान ले कि कौन उसकी और उसके सन्देष्टाओं की सहायता करता है बिन देखे, निस्सन्देह अल्लाह शक्तिवाला, प्रभुत्वशाली है।

(26) और हमने नूह को और इब्राहीम को भेजा। और उनकी सन्तान में हमने पैग़म्बरी और किताब रख दी। फिर उनमें से कोई सन्मार्ग पर है। और उनमें से बहुत से अवज्ञाकारी हैं। (27) फिर उन्हीं के पदचिन्हों पर हमने अपने सन्देष्टा भेजे और उन्हीं के पदचिन्हों पर मरियम के बेटे ईसा को भेजा। और हमने उसको इंजील प्रदान किया। और जिन लोगों ने उसका अनुसरण किया हमने उनके दिलों में स्नेह और दया रख दी। और सन्यास को उन्होंने स्वंय ही गढ़ लिया है, हमने इसको उन पर अनिवार्य नहीं किया था। परन्तु उन्होंने अल्लाह की प्रसन्नता के लिए उसको स्वंय अपना लिया, फिर उन्होंने इसका पूरा ध्यान न रखा, अतः उनमें से जो लोग ईमान लाये उनको हमने उनका बदला दिया। और उनमें से अधिकतर लोग अवज्ञाकारी हैं।

(28) ऐ ईमान वालों, अल्लाह से डरो और उसके सन्देष्टा पर ईमान लाओ। अल्लाह तुमको अपनी दया से दोगुना प्रदान करेगा। और तुमको प्रकाश प्रदान करेगा जिसको लेकर तुम चलोगे। और तुमको क्षमा कर देगा। और अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (29) ताकि किताब वाले जान लें कि वह अल्लाह की कृपा में से किसी चीज़ पर अधिकार नहीं रखते और यह कि कृपा अल्लाह के हाथ में है। वह जिसे चाहता है प्रदान करता है। और अल्लाह बहुत कृपा वाला है।

58. सूरह अल-मुजादिलह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह ने सुन ली उस औरत की बात जो अपने पति के सम्बन्ध में तुमसे झगड़ती थी। और अल्लाह से शिकायत कर रही थी, और अल्लाह तुम दोनों की वार्ता सुन रहा था, निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला और जानने वाला है।

(2) तुममें से जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार (तलाक़ देने की एक सूरत जिसमें पति अपनी पत्नी से कहता है कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो।) करते हैं। वे उनकी मातायें नहीं हैं। उनकी मातायें तो वही हैं जिन्होंने उन्हें जन्म दिया। और ये लोग निस्सन्देह अविवेकपूर्ण और असत्य बात कहते हैं, और अल्लाह क्षमा करने वाला, बख़्शने वाला है। (3) और जो लोग अपनी पत्नियों से ज़िहार करें फिर उससे वापस हों जो उन्होंने कहा था तो एक गर्दन (दास) को स्वतन्त्र करना है, इससे पहले कि वह आपस में हाथ लगायें। इससे तुमको उपदेश दिया जाता है, और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (4) फिर जो व्यक्ति न पाये तो रोज़े हैं दो महीने के निरन्तर, इससे पहले कि वह आपस में हाथ लगायें, फिर जो व्यक्ति न कर सके तो 60 निर्धनों को भोजन कराए। यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके सन्देष्टा पर ईमान लाओ। और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं और अवज्ञाकारियों के लिए कष्टप्रद यातना है।

(5) जो लोग अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध करते हैं, वह

अपमानित होंगे जिस प्रकार वह लोग अपमानित हुए जो इनसे पहले थे और हमने स्पष्ट आयतें उतार दी हैं, और अवज्ञाकारियों के लिए अपमान की यातना है। (6) जिस दिन अल्लाह उन सबको उठायेगा और उनके किये हुए काम उनको बतायेगा। अल्लाह ने उसको गिन रखा है। और वह लोग उसको भूल गये, और अल्लाह के समक्ष है हर चीज़।

(7) तुमने नहीं देखा कि अल्लाह जानता है जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ धरती में है। कोई काना-फूसी (गुप्त वार्ता) तीन व्यक्तियों की नहीं होती जिसमें चौथा अल्लाह न हो। और न पाँच की काना-फूसी होती है जिसमें छठा वह न हो। और न इससे कम की या अधिक की। परन्तु वह उनके साथ होता है जहाँ भी वह हों, फिर वह उनको उनके किये से अवगत करेगा क़ियामत के दिन। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक बात का ज्ञान रखने वाला है। (8) क्या तुमने नहीं देखा जिनको कानाफूसियों से रोका गया था, फिर भी वह वही कर रहे हैं जिससे वह रोके गये थे। और वह पाप और अत्याचार और सन्देष्टा की अवज्ञा की कानाफूसियाँ करते हैं, और जब वह तुम्हारे पास आते हैं। तो तुमको ऐसे ढ़ंग से सलाम करते हैं जिससे अल्लाह ने तुमको सलाम नहीं किया। और अपने दिलों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर अल्लाह हमको यातना क्यों नहीं देता। उनके लिए नरक ही पर्याप्त है, वह उसमें पड़ेंगे, अतः वह बुरा ठिकाना है।

(9) ऐ ईमान वालों, जब तुम कानाफूसी करो तो पाप और अन्याय और सन्देष्टा की अवज्ञा की कानाफूसी न करो। और तुम भलाई और ईशभय की कानाफूसी करो। और अल्लाह से डरो जिसके पास तुम एकत्र किये जाओगे। (10) यह कानाफूसी शैतान की ओर से है ताकि वह ईमान वालों को दुख पहुँचाये, और वह उनको कुछ भी दुख नहीं पहुँचा सकता परन्तु अल्लाह के आदेश से। और ईमान वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

(11) ऐ ईमान वालों, जब तुमको कहा जाये कि बैठको में फैलकर बैठो तो तुम फैलकर बैठो, अल्लाह तुमको फैलाव प्रदान करेगा। और जब कहा जाये कि उठ जाओ तो तुम उठ जाओ। तुममें से जो लोग ईमान वाले हैं और

जिनको ज्ञान दिया गया है, अल्लाह उनके दर्जे ऊँचे करेगा। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे भिज्ञ है।

(12) ऐ ईमान वालों जब तुम सन्देष्टा से रहस्यपूर्ण बात करो तो अपनी रहस्यपूर्ण बात से पहले कुछ दान दो। यह तुम्हारे लिए अच्छा है और अधिक पवित्र हैं। फिर यदि तुम न पाओ तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है। (13) क्या तुम डर गये इस बात से कि तुम अपनी रहस्यपूर्ण वार्ता से पहले दान दो। तो यदि तुम ऐसा न करो, और अल्लाह ने तुमको क्षमा कर दिया, तो तुम नमाज़ स्थापित करो और ज़कात अदा करो। और अल्लाह और उसके सन्देष्टा का आज्ञापालन करो। और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे भिज्ञ है। (14) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ऐसे लोगों से मित्रता करते हैं जिन पर अल्लाह का क्रोध हुआ। वह न तुममें से हैं और न उनमें से हैं, और वह झूठी बात पर सौगन्ध खाते हैं जबकि वह जानते हैं। (15) अल्लाह ने उन लोगों के लिए कठोर यातना तैयार कर रखी है, निस्सन्देह वह बुरे काम हैं जो वह करते हैं। (16) उन्होंने अपनी सौगन्धों को ढ़ाल बना रखा है, फिर वह रोकते हैं अल्लाह के मार्ग से, अतः उनके लिए अपमान की यातना है।

(17) उनकी सम्पत्ति और उनकी सन्तान उनको तनिक भी अल्लाह से न बचा सकेंगे। यह लोग नरक वाले हैं। वह उसमें रहेंगे। (18) जिस दिन अल्लाह उन सबको उठायेगा तो वह उससे भी उसी प्रकार सौगन्ध खायेंगे जिस प्रकार तुमसे सौगन्ध खाते हैं। और वह समझते हैं कि वह किस चीज़ (आध ाार) पर हैं, सुन लो कि यही लोग झूठे हैं। (19) शैतान ने उन पर नियन्त्रण प्राप्त कर लिया है, फिर उसने उनको अल्लाह की याद भुला दी है। यह लोग शैतान का समूह हैं। सुन लो कि शैतान का समूह अवश्य नष्ट होने वाला है। (20) जो लोग अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध करते हैं, वहीं लोग हैं सबसे अधिक अपमानित लोग। (21) अल्लाह ने लिख दिया है कि मैं और मेरे सन्देष्टा ही प्रभुत्वशाली रहेंगे। निस्सन्देह अल्लाह शक्ति वाला, प्रभुत्ववाला है।

(22) तुम ऐसी क़ौम नहीं पा सकते जो अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखती हो और वह ऐसे लोगों से मित्रता रखे जो अल्लाह और उसके सन्देष्टा के विरोधी हैं। यद्यपि वह उनके पिता अथवा उनके बेटे

अथवा उनके भाई अथवा उनके परिवार के लोग क्यों न हों। यही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है। और उनको अपनी कृपा से सामर्थ्य प्रदान किया है। और वह उनको ऐसे बाग़ों में प्रवेश देगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह सैदव रहेंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न हुआ और वह अल्लाह से प्रसन्न हुए। यही लोग अल्लाह का समूह हैं, और अल्लाह का समूह ही सफलता पाने वाला है।

59. सूरह अल-हश्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह की पवित्रता का वर्णन करती हैं सब चीज़ें जो आकाशों और धरती में है, और वह सर्वज्ञ है, शक्तिशाली है। (2) वही है जिसने किताब वाले अवज्ञाकारियों को उनके घरों से पहली ही बार एकत्र करके निकाल दिया। तुम्हारा अनुमान न था कि वह निकलेंगे और वह समझते थे कि उनके दुर्ग उनको अल्लाह से बचा लेंगे, फिर अल्लाह उन पर वहाँ से पहुँचा जहाँ से उनको कल्पना भी न थी। और उनके दिलों में भय डाल दिया, वह अपने घरों को स्वंय अपने हाथों से उजाड़ रहे थे और मुसलमानों के हाथों से भी। अतः ऐ आँख वालों, शिक्षा प्राप्त करो।

(3) और यदि अल्लाह ने इन पर निर्वासन न लिख दिया होता तो वह संसार ही में उनको यातना दे देता, और परलोक में उनके लिए आग की यातना है। (4) यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके सन्देष्टा का विरोध किया। और जो व्यक्ति अल्लाह का विरोध करता है तो अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (5) खजूरों के जो पेड़ तुमने काट डाले या उनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया तो यह अल्लाह के आदेश से, और ताकि वह अवज्ञाकारियों को अपमानित करे।

(6) और अल्लाह ने उनसे जो कुछ अपने सन्देष्टा की ओर लौटाया तो तुमने उस पर न घोड़े दौड़ाये और न ऊँट और लेकिन अल्लाह अपने सन्देष्टाओं को जिस पर चाहता है प्रभुत्व प्रदान कर देता है। और अल्लाह

हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है। (7) जो कुछ अल्लाह अपने सन्देष्टा को बस्तियों वालों की ओर से लौटाये तो वह अल्लाह के लिए है और सन्देष्टा के लिए है और सगे-सम्बिन्धयों और अनाथों और निर्धनों और यात्रियों के लिए है, ताकि वह तुम्हारे पूँजी वालों ही के बीच न घूमता रहे। और सन्देष्टा तुमको जो कुछ दे उसको तुम ले लो और वह जिस चीज़ से तुमको रोके उससे तुम रुक जाओ और अल्लाह से डरो, अल्लाह कठोर दण्ड देने वाला है। (8) उन निर्धन मुहाजिरों (प्रवासियों) के लिए जो अपने घरों और अपनी सम्पत्तियों से निकाले गये हैं। वह अल्लाह की कृपा और उसकी प्रसन्नता चाहते हैं। और वह अल्लाह और उसके सन्देष्टा की सहायता करते हैं, यही लोग सच्चे हैं।

(9) और जो लोग पहले से मदीने में ठिकाना पकड़े हुए हैं और ईमान पर जमे हुए हैं, जो उनके पास हिजरत (प्रवास) करके आता है उससे वह प्रेम करते हैं और वह अपने दिलों में उससे खटक नहीं पाते जो मुहाजिरों (प्रवासियों) को दिया जाता है। और वह उनको अपने ऊपर वरीयता देते हैं यद्यपि वह स्वंय भूखे हों। और जो व्यक्ति अपने मन के लालच से बचा लिया गया तो वही लोग सफलता पाने वाले हैं। (10) और जो उनके बाद आये वह कहते हैं कि ऐ हमारे पालनहार, हमको क्षमा कर दे और हमारे उन भाईयों को जो हमसे पहले ईमान ला चुके हैं। और हमारे दिलों में ईमान वालों के लिए द्वेष न रख, ऐ हमारे पालनहार तू अत्यन्त स्नेहिल और अत्यन्त कृपाशील है।

(11) क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो कपट में लिप्त हैं। वे अपने भाईयों से कहते हैं जिन्होंने किताब वालों (यहूदियों और इसाईयों) में से अवज्ञा की है, यदि तुम निकाले गये तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जायेंगे। और तुम्हारे मामले में हम किसी की बात न मानेंगे। और यदि तुमसे युद्ध हुआ तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे। और अल्लाह गवाही देता है कि वह झूठे हैं। (12) यदि वह निकाले गये तो यह उनके साथ नहीं निकलेंगे। और यदि उनसे युद्ध हुआ तो ये उनकी सहायता नहीं करेंगे। और यदि उनकी सहायता करेंगे तो अवश्य वह पीठ फेर कर भागेंगे, फिर वह कहीं सहायता न पायेंगे।

(13) निस्सन्देह तुम लोगों का भय उनके दिलों में अल्लाह से अधिक है, यह इसलिए कि वह लोग समझ नहीं रखते। (14) ये लोग सब मिलकर तुमसे

कभी नहीं लड़ेंगे, परन्तु सुरक्षा वाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ में। उनकी आपस में अत्यधिक लड़ाई है। तुम उनको एकजुट समझते हो और उनके दिल अलग-अलग हो रहे हैं, यह इसलिए कि वह लोग बुद्धि नहीं रखते।

(15) ये उन लोगों की भाँति हैं जो उनसे कुछ ही पहले अपने किए का स्वाद चख चुके हैं, और उनके लिए कष्टदायक यातना है। (16) जैसे शैतान जो मनुष्य से कहता है कि अवज्ञाकारी हो जाओ, फिर जब वह अवज्ञाकारी हो जाता है तो वह कहता है कि मैं तुमसे विरक्त हूँ। मैं अल्लाह से डरता हूँ जो समस्त ब्रह्माण्ड का पालनहार है। फिर दोनों का अन्त यह हुआ कि दोनों नरक में गये जहाँ वे सदैव रहेंगे, और अत्याचारियों का दण्ड यही है। (17)

(18) ऐ ईमान वालों अल्लाह से डरो, और हर व्यक्ति देखे कि उसने कल के लिए क्या भेजा है और अल्लाह से डरो, निस्सन्देह अल्लाह भिज्ञ है उससे, जो तुम करते हो। (19) और तुम उन लोगों की भाँति न हो जाओ जो अल्लाह को भूल गए तो अल्लाह ने भी उन्हें स्वंय उनके प्राणों से बेपरवाह कर दिया, यही लोग अवज्ञाकारी हैं। (20) नरक वाले और स्वर्ग वाले कभी समान नहीं हो सकते। स्वर्ग वाले ही वास्तव में सफल हैं।

(21) यदि हम इस क़ुरआन को पहाड़ पर उतारते तो तुम देखते कि वह अल्लाह के डर से दब जाता और फट जाता, और इन मिसालों को हम लोगों के लिए वर्णन करते हैं ताकि वह चिंतन करें। (22) वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाला, वह अत्यन्त कृपाशील है, अत्यधिक दया करने वाला है। (23) वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, बादशाह, सभी कमियों से मुक्त, पूर्णतः सलामती, शान्ति देने वाला, संरक्षक, प्रभुत्वशाली, शक्तिशाली, महानता वाला, अल्लाह उस शिर्क (साझी ठहराने) से पवित्र है जो लोग कर रहे हैं। (24) वही अल्लाह है पैदा करने वाला, अस्तित्व में लाने वाला, रूप प्रदान करने वाला, उसी के लिए हैं सारे अच्छे नाम। हर चीज़ जो आसमानों और धरती में है उसकी स्तुति कर रही है और वह शक्तिशाली है, तत्वदर्शी है।

60. सूरह अल-मुमतहिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ ईमान वालों, तुम मेरे शत्रुओं और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ, तुम उनसे मित्रता प्रकट करते हो यद्यपि उन्होंने उस को झुठलाया जो तुम्हारे पास आया, वह सन्देष्टा को और तुमको इस कारण से निर्वासित करते हैं कि तुम अपने पालनहार, अल्लाह पर ईमान लाये- यदि तुम मेरे मार्ग में जेहाद और मेरी प्रसन्नता चाहने के लिए निकले हो। तुम छिपाकर उन्हें मित्रता का सन्देश भेजते हो। और मैं जानता हूँ जो कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम प्रकट करते हो। और जो व्यक्ति तुममें से ऐसा करेगा वह सन्मार्ग से भटक गया। (2) यदि वह तुम पर नियन्त्रण पा जायें तो वह तुम्हारे शत्रु बन जायेंगे। और वह अपने हाथ और अपनी जुबान से तुमको कष्ट पहुचायेंगे। और चाहेंगे कि तुम भी किसी प्रकार अवज्ञाकारी हो जाओ। (3) तुम्हारे सगे-सम्बन्धी और तुम्हारी सन्तान क़ियामत (उठाये जाने) के दिन तुम्हारे काम न आयेंगे, वह तुम्हारे बीच निर्णय करेगा, और अल्लाह देखने वाला है जो कुछ तुम करते हो।

(4) तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों में उत्तम आदर्श (नमूना) है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कहा कि हम अलग हैं तुमसे और उन चीज़ों से जिनकी तुम अल्लाह के अतिरिक्त इबादत करते हो, हम तुम्हारे अवज्ञाकारी हैं और हमारे और तुम्हारे बीच सदैव के लिए शत्रुता और वैमनस्य प्रकट हो गया, यहाँ तक कि तुम एक मात्र अल्लाह पर ईमान लाओ। परन्तु इब्राहीम का अपने पिता से यह कहना कि मैं आपके लिए क्षमा याचना करूँगा, और मैं आपके लिए अल्लाह के समक्ष किसी बात का अधिकार नहीं रखता। ऐ हमारे पालनहार, हमने तेरे ऊपर भरोसा किया और हम तेरी ओर लौटे और तेरी ही ओर लौटना है। (5) ऐ हमारे पालनहार, हमको अवज्ञाकारियों के लिए परीक्षा न बना, और ऐ हमारे पालनहार हमको क्षमा प्रदान कर दे, निस्सन्देह तू शक्तिशाली है, विवेक वाला है। (6) निस्सन्देह तुम्हारे लिए उनके अन्दर उत्तम आदर्श है, उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह का और परलोक के दिन का प्रत्याशी हो। और जो व्यक्ति मुँह मोड़ेगा तो अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसाओं वाला है। (7) आशा है कि अल्लाह

तुम्हारे और उन लोगों के मध्य मित्रता उत्पन्न कर दे जिनसे तुमने शत्रुता की। और अल्लाह सब कुछ कर सकता है, और अल्लाह क्षमा करने वाला, कृपाशील है।

(8) अल्लाह तुमको उन लोगों से नहीं रोकता जिन्होंने दीन (धर्म) के मामले में तुमसे युद्ध नहीं किया। और तुमको तुम्हारे घरों से नहीं निकाला कि तुम उनसे भलाई करो और तुम उनके साथ न्याय करो। निस्सन्देह अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। (9) अल्लाह मात्र उन लोगों से तुमको रोकता है जो दीन (धर्म) के मामले में तुमसे लड़े और तुमको तुम्हारे घरों से निकाला। और तुम्हारे निकालने में सहायता की। कि तुम इनसे मित्रता करो, और जो उनसे मित्रता करे तो वही लोग अत्याचारी हैं।

(10) ऐ ईमान वालों, जब तुम्हारे पास मुसलमान महिलाएँ हिजरत (प्रवास) करके आयें तो तुम उनको जाँच लो, अल्लाह उनके ईमान को भली भाँति जानता है। तो यदि तुम जान लो कि वह आस्था वाली हैं तो उनको अवज्ञाकारियों की ओर न लौटाओ। न वह महिलाएँ उनके लिए वैध हैं और न वह इन महिलाओं के लिए वैध हैं। और अवज्ञाकारी पतियों ने जो कुछ ख़र्च किया वह उनको अदा कर दो। और तुम पर कोई पाप नहीं यदि तुम उनसे निकाह (विवाह) कर लो जबकि तुम उनके महर उनको अदा कर दो। और तुम अवज्ञाकारी महिलाओं को अपने निकाह (विवाह बन्धन) में न रोके रहो। और जो कुछ तुमने ख़र्च किया है उसको माँग लो। और जो कुछ अवज्ञाकारियों ने ख़र्च किया वह भी तुमसे माँग लें। यह अल्लाह का आदेश है, वह तुम्हारे बीच निर्णय करता है, और अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (11) यदि तुम्हारी पत्नियों के महर में से कुछ अवज्ञाकारियों की ओर रह जाये फिर तुम्हारी बारी आए तो जिनकी पत्नियाँ गयी हैं उनको अदा कर दो जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया। और अल्लाह से डरो जिस पर तुम ईमान लाये हो।

(12) ऐ पैग़म्बर जब तुम्हारे पास मोमिन (आस्थावान) महिलाएँ इस बात पर प्रण करने के लिए आएँ कि वह अल्लाह के साथ किसी को साझी न करेंगी। और वह चोरी न करेंगी। और वे व्यभिचार न करेंगी। और वह अपनी सन्तान की हत्या न करेंगी। और वह अपने हाथ और पैर के आगे कोई आरोप

गढ़ कर न लायेंगी और वह किसी भलाई के कार्य में तुम्हारी अवज्ञा न करेंगी तो तुम उनसे प्रण ले लो और उनके लिए अल्लाह से क्षमा की प्रार्थना करो, निस्सन्देह अल्लाह क्षमा देने वाला, दयावान है।

(13) ऐ ईमान वालों, तुम उन लोगों को मित्र न बनाओ जिनके ऊपर अल्लाह का क्रोध हुआ, वह परलोक से निराश हो गये हैं जिस प्रकार क़ब्रों में पड़े हुए अवज्ञाकारी निराश हैं।

61. सूरह अस-सफ़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह की स्तुति करती है प्रत्येक चीज़ जो आसमानों और धरती में है। और वह प्रभुत्वशाली है, विवेकशील है। (2) ऐ ईमान वालों, तुम ऐसी बात क्यों कहते हो जो तुम करते नहीं। (3) अल्लाह के निकट यह बात बहुत अप्रसन्नता की है कि तुम ऐसी बात कहो जो तुम करो नहीं। (4) अल्लाह तो उन लोगों को पसन्द करता है जो उसके मार्ग में इस प्रकार मिलकर युद्ध करते हैं मानो वह एक सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

(5) और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि ऐ मेरी क़ौम, तुम लोग मुझे क्यों सताते हो, हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ सन्देष्टा हूँ। अतः जब वह फिर गए तो अल्लाह ने उनके दिलों को फेर दिया और अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को सन्मार्ग प्रदान नहीं करता।

(6) और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इस्राईल की सन्तान मैं तुम्हारी ओर अल्लाह का भेजा हुआ सन्देष्टा हूँ, पुष्टि करने वाला हूँ उस तौरात की जो मुझसे पहले से मौजूद है, और शुभ सूचना देने वाला हूँ एक सन्देष्टा का जो मेरे बाद आयेगा, उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह उनके पास प्रत्यक्ष निशानियाँ लेकर आया तो उन्होंने कहा, यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (7) और उससे बढ़ कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह पर झूठ बाँधे यद्यपि वह इस्लाम की ओर बुलाया जा रहा हो, और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता। (8) वह चाहते हैं कि अल्लाह के प्रकाश

को अपने मुँह से बुझा दें, जबकि अल्लाह अपने प्रकाश को पूरा करके रहेगा, चाहे अवज्ञाकारियों को यह कितना ही नापसन्द हो। (9) वही है जिसने भेजा अपने सन्देष्टा को मार्गदर्शन और सच्चे दीन (धर्म) के साथ, ताकि वह उसको सब धर्मों पर प्रभुता प्रदान कर दे चाहे शिर्क करने वालों को यह कितना ही नापसन्द हो।

(10) ऐ ईमान वालों, क्या मैं तुमको एक ऐसा व्यापार बताऊँ जो तुमको एक कष्टदायक यातना से बचा ले। (11) तुम अल्लाह और सन्देष्टा पर ईमान लाओ और अल्लाह के मार्ग में अपनी सम्पत्ति और अपनी जान से युद्ध करो। यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो। (12) अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुमको ऐसे बाग़ों में प्रवेश करायेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी। और उत्कृष्ट आवासों में जो सदैव रहने के बागों में होंगे, यह है बड़ी सफलता। (13) और एक और चीज़ भी जिसकी तुम अभिलाषा रखते हो, अल्लाह की सहायता और शीघ्र प्राप्त होने वाली विजय, और मोमिनों (आस्थावानों) को शुभ सूचना दे दो।

(14) ऐ ईमान वालों, तुम अल्लाह के सहायक बनो। जैसा कि मरियम के बेटे ईसा ने अपने साथियों से कहा, कौन अल्लाह के लिए मेरा सहायक बनता है। साथियों ने कहा हम हैं अल्लाह के सहायक, तो इस्राईल की सन्तान में से कुछ लोग ईमान लाये और कुछ लोगों ने अवज्ञा की। फिर हमने ईमान लाने वालों की उन शत्रुओं के मुक़ाबले में सहायता की अतः वह विजयी हो गये।

62. सूरह अल-जुमुअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह की स्तुति कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो धरती में है- जो बादशाह है, पवित्र है,शक्तिशाली, विवेकशील है। (2) वही है जिसने अनपढ़ों के अन्दर एक सन्देष्टा उन्हीं में से उठाया, वह उनको उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है। और उनको शुद्ध करता है। और उनको किताब और तत्वदर्शिता की शिक्षा देता है, और वह इससे पहले प्रत्यक्ष पथभ्रष्टता में

थे। (3) और दूसरों के लिए भी उनमें से जो अभी उनमें सम्मिलित नहीं हुए। और वह शक्तिशाली है, तत्वदर्शी है। (4) यह अल्लाह की कृपा है वह देता है जिसको चाहता है, और अल्लाह बड़ा ही अनुग्रही है।

(5) जिन लोगों को तौरात का वाहक बनाया गया फिर उन्होंने उसको न उठाया, उनका उदाहरण उस गधे जैसा है जो किताब का बोझ उठाये हुए हो। क्या ही बुरा उदाहरण है उन लोगों का जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुठलाया और अल्लाह अत्याचारी लोगों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता। (6) कहो कि ऐ यहूदियों, यदि तुम्हारा भ्रम है कि तुम दूसरों की तुलना में अल्लाह के प्रिय हो तो तुम मृत्यु की कामना करो, यदि तुम सच्चे हो। (7) और वह कभी मृत्यु की कामना न करेंगे, उन कामों के कारण जिनको उनके हाथ आगे भेज चुके हैं। और अल्लाह अत्याचारियों को भली-भाँति जानता है। (8) कहो कि जिस मृत्यु से तुम भागते हो वह तुम्हें आकर रहेगी, फिर तुम परोक्ष और प्रत्यक्ष के जानने वाले के पास ले जाये जाओगे, फिर वह तुमको बता देगा जो तुम करते रहे हो।

(9) ऐ ईमान वालों, जब जुमअ के दिन की नमाज़ के लिए पुकारा जाये तो अल्लाह की याद की ओर चल पड़ो और क्रय-विक्रय छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है यदि तुम जानो। (10) फिर जब नमाज़ पूरी हो जाये तो धरती में फैल जाओ और अल्लाह की कृपा तलाश करो और अल्लाह को अधिकता से याद करो, ताकि तुम सफलता पाओ। (11) और जब वह कोई व्यापार या खेल-तमाशा देखते हैं तो उसकी ओर दौड़ पड़ते हैं और तुमको खड़ा हुआ छोड़ देते हैं, कहो कि जो अल्लाह के पास है वह खेल तमाशे और व्यापार से बेहतर है, और अल्लाह सबसे अच्छी जीविका देने वाला है।

63. सूरह अल-मुनाफ़िक़ून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब कपटाचारी लोग तुम्हारे पास आते हैं तो वह कहते हैं कि हम गवाही देते हैं कि आप निस्सन्देह अल्लाह के सन्देष्टा हैं और अल्लाह जानता

है कि निस्सन्देह तुम उसके सन्देष्टा हो, और अल्लाह गवाही देता है कि ये कपटाचारी झूठे हैं (2) उन्होंने अपनी सौगन्धों को ढाल बना रखा है, फिर वे रोकते हैं अल्लाह के मार्ग से, निस्सन्देह अत्यन्त बुरा है जो वह कर रहे हैं। (3) यह इस कारण से है कि वे ईमान लाए फिर उन्होंने अवज्ञा की, फिर उनके दिलों पर मुहर कर दी गयी, अतः वह नहीं समझते।

(4) और जब तुम उन्हें देखो तो उनके शरीर तुमको अच्छे लगते हैं, और यदि वह बात करते हैं तो तुम उनकी बात सुनते हो, मानों कि वह लकड़ियाँ हैं टेक लगाई हुई। वे प्रत्येक तीव्र ध्वनि को अपने विरुद्ध समझते हैं। यही लोग शत्रु हैं, अतः इनसे बचो। अल्लाह उनको नष्ट करे, वह कहाँ फिरे जाते हैं। (5) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ, अल्लाह का सन्देष्टा तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करे तो वह अपना सिर मोड़ लेते हैं। और तुम उनको देखोगे कि वह घमण्ड के साथ खिंचे रहते हैं। (6) उनके लिए समान है, तुम उनके लिए क्षमा की प्रार्थना करो या क्षमा की प्रार्थना न करो। अल्लाह कदापि उनको क्षमा न करेगा। अल्लाह अवज्ञाकारी लोगों को मार्गदर्शन प्रदान नहीं करता।

(7) यही हैं जो कहते हैं, कि जो लोग अल्लाह के सन्देष्टा के निकट हैं उन पर ख़र्च न करो यहाँ तक कि वे तितर-बितर हो जाएँ। और आसमानों और ज़मीन के कोष अल्लाह ही के हैं लेकिन कपटाचारी नहीं समझते (8) वह कहते हैं कि यदि हम मदीना लौटे तो सम्मान वाला वहाँ से अपमान वाले को निकाल देगा। हालाँकि सम्मान अल्लाह के लिए और उसके सन्देष्टा के लिए और मोमिनीन (आस्थावानो) के लिए है परन्तु कपटाचारी लोग नहीं जानते।

(9) ऐ ईमान वालों, तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान तुमको अल्लाह की याद से निश्चेत न करने पाये और जो ऐसा करेगा तो वही घाटे में पड़ने वाले लोग हैं। (10) और हमने जो कुछ तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो। इससे पहले कि तुममें से किसी की मृत्यु आ जाये, फिर वह कहे कि ऐ हमारे पालनहार, तूने मुझे कुछ और अवकाश क्यों न दिया कि मैं दान करता और भले लोगों में सम्मिलित हो जाता। (11) और अल्लाह कदापि किसी प्राण को

अवकाश नहीं देता जबकि उसका समय आ जाये और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

64. सूरह अत-तग़ाबुन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अल्लाह की स्तुति कर रही है हर चीज़ जो आकाशों में है और हर चीज़ जो धरती में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए प्रशंसा है। और वह हर चीज़ का सामर्थ्य रखता है। (2) वही है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुममें से कोई अवज्ञाकारी है और कोई आस्थावान, और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो। (3) उसने आकाशों और धरती को ठीक ढंग से पैदा किया और उसने तुम्हारा रूप बनाया तो अत्यन्त अच्छा रूप बनाया, और उसी की ओर है लौटना। (4) वह जानता है जो कुछ आकाशों और धरती में है। और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो कुछ तुम व्यक्त करते हो। और अल्लाह दिलों तक की बातों का जानने वाला है।

(5) क्या तुमको उन लोगों की सूचना नहीं पहुँची जिन्होंने इससे पहले अवज्ञा की, फिर उन्होंने अपने किए का स्वाद चखा और उनके लिए कष्टदायक यातना है। (6) यह इसलिए कि उनके पास उनके सन्देष्टा स्पष्ट प्रमाणों के साथ आये, तो उन्होंने कहा कि मनुष्य हमारा नेतृत्व करेंगे। अतः उन्होंने झुठलाया और मुँह मोड़ लिया, और अल्लाह उनसे बेपरवाह हो गया, और अल्लाह निस्पृह है, प्रशंसा वाला है।

(7) अवज्ञा करने वालों ने दावा किया कि वे कदापि पुनः उठाये न जायेंगे, कहो कि हाँ, मेरे पालनहार की सौगन्ध, तुम अवश्य उठाये जाओगे, फिर तुमको बताया जायेगा जो कुछ तुमने किया है, और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है। (8) अतः अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके सन्देष्टा पर और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है। और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो। (9) जिस दिन वह तुम सबको एक एकत्र होने के दिन एकत्र करेगा यही दिन हार और जीत का दिन होगा। और जो व्यक्ति अल्लाह पर

ईमान लाया होगा और उसने अच्छे कर्म किये होंगे, अल्लाह उसके पाप उससे दूर कर देगा। और उसको ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, वह सदैव उसमें रहेंगे। यही है बड़ी सफलता। (10) और जिन लोगों ने अवज्ञा की और हमारी आयतों को झुठलाया, वही लोग आग वाले हैं, उसमें वह सदैव रहेंगे, और वह बुरा ठिकाना है।

(11) जो विपत्ति भी आती है अल्लाह की अनुमति से आती है। और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान रखता है अल्लाह उसके दिल को मार्ग दिखाता है, और अल्लाह हर चीज़ को जानने वाला है। (12) और तुम अल्लाह का आज्ञापालन करो और सन्देष्टा का आज्ञापालन करो फिर यदि तुम मुँह मोड़ोगे तो हमारे सन्देष्टा पर मात्र साफ़—साफ़ पहुँचा देना है। (13) अल्लाह, उसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, और ईमान लाने वालों को अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

(14) ऐ ईमान वालों, तुम्हारी कुछ पत्नियाँ और तुम्हारी कुछ सन्तान तुम्हारे शत्रु हैं, अतः तुम उनसे सावधान रहो, और यदि तुम क्षमा कर दो और दरगुज़र करो और माफ़ कर दो तो अल्लाह क्षमा करने वाला, दया करने वाला है। (15) तुम्हारी सम्पत्ति और तुम्हारी सन्तान परीक्षा की चीज़ हैं, और अल्लाह के पास बहुत बड़ा बदला है। (16) अतः तुम अल्लाह से डरो जहाँ तक हो सके। और सुनो और मानो और ख़र्च करो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और जो व्यक्ति मन के लोभ और कृपणता से सुरक्षित रहा तो ऐसे ही लोग सफलता पाने वाले है। (17) यदि तुम अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा। और तुमको क्षमा कर देगा, और अल्लाह गुणग्राहक, सहनशील है। (18) परोक्ष और प्रत्यक्ष को जानने वाला है, प्रभुत्वशाली है, तत्वदर्शी है।

65. सूरह अत-तलाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ सन्देष्टा, जब तुम लोग महिलाओं को तलाक़ दो तो उनकी इद्दत (अवधि) पर तलाक दो और इद्दत को गिनते रहो, और अल्लाह से डरो जो

तुम्हारा पालनहार है। उन महिलाओं को उनके घरों से न निकालो और न वह स्वंय निकलें, सिवाय यह कि वह कोई प्रत्यक्ष अश्लीलता करें, यह अल्लाह की सीमाएँ हैं, और जो व्यक्ति अल्लाह की सीमाओं का उल्लघंन करेगा तो उसने अपने ऊपर अत्याचार किया, तुम नहीं जानते संभवतः अल्लाह इस तलाक़ के बाद कोई नई स्थिति पैदा कर दे। (2) फिर जब वह अपनी अवधि को पहुँच जायें तो उनको या तो रीति के अनुसार रख लो या रीति के अनुसार उनका छोड़ दो और अपने में से दो विश्वसनीय गवाह बना लो और ठीक-ठीक अल्लाह के लिए गवाही दो। यह उस व्यक्ति को उपदेश दिया जाता है जो अल्लाह पर और परलोक के दिन पर विश्वास रखता हो। और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए मार्ग निकालेगा। (3) और उसको वहाँ से जीविका देगा जहाँ से उसने कल्पना भी न की हो और जो व्यक्ति अल्लाह पर भरोसा करेगा तो अल्लाह उसके लिए पर्याप्त है, निस्सन्देह अल्लाह अपना काम पूरा करके रहता है। अल्लाह ने हर चीज़ के लिए एक पैमाना निर्धारित कर रखा है।

(4) और तुम्हारी महिलाओं में से जो मासिक धर्म से निराश हो चुकी हों, यदि तुमको सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीन महीना है और इसी प्रकार उनकी भी इद्दत जिनको मासिक धर्म नहीं आया, और गर्भवती महिलाओं की इद्दत उस गर्भ का जन्म लेना है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके लिए उसके काम में आसानी कर देगा। (5) यह अल्लाह का आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर उतारा है, और जो व्यक्ति अल्लाह से डरेगा, अल्लाह उसके पाप उससे दूर कर देगा और उसको बड़ा बदला देगा।

(6) तुम उन महिलाओं को अपने सामर्थ्य के अनुसार रहने का घर दो जहाँ तुम रहते हो और उनको तंग करने के लिए उन्हें कष्ट न पहुँचाओ, और यदि वह गर्भ वालियाँ हों तो उन पर ख़र्च करो यहाँ तक कि उनका प्रसव हो जाये। फिर यदि वह तुम्हारे लिए दूध पिलायें तो उनकी मजदूरी उन्हें दो। और तुम आपस में एक दूसरे को नेकी सिखाओ। और यदि तुम आपस में हठध ार्मी करो तो कोई और महिला दूध पिलायेंगी। (7) चाहिए कि सामर्थ्य वाला अपनी क्षमता के अनुसार ख़र्च करे और जिसकी आय कम हो उसको चाहिए

कि अल्लाह ने जितना उसको प्रदान किया है वह उसमें से ख़र्च करे। अल्लाह किसी पर बोझ नहीं डालता परन्तु उतना ही जितना उसको प्रदान किया है, अल्लाह कठिनाई के बाद शीघ्र ही आसानी पैदा कर देगा।

(8) और बहुत सी बस्तियाँ हैं जिन्होंने अपने पालनहार के आदेश से मुँह मोड़ा, और उसके दूतों के आदेश से मुंह मोड़ा। अतः हमने उनका कठोर हिसाब किया और हमने उनको भयानक दण्ड दिया। (9) अतः उन्होंने अपने किये का स्वाद चखा और उनका अन्त घाटे में हुआ।

(10) अल्लाह ने उनके लिए एक कष्टदायक यातना तैयार कर रखी है। अतः अल्लाह से डरो, ऐ बुद्धि वालों जो कि ईमान लाये हो। अल्लाह ने तुम्हारी ओर एक उपदेश उतारा है। (11) एक सन्देष्टा जो तुमको अल्लाह की स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाता है, ताकि उन लोगों को अँधेरों से प्रकाश की ओर निकाले जो ईमान लाये और उन्होंने अच्छा कर्म किया। और जो व्यक्ति अल्लाह पर ईमान लाया और भला कर्म किया, उसको वह ऐसे बाग़ों में प्रवेश करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगीं। वह उसमें सदैव रहेंगे, अल्लाह ने उसको बहुत अच्छी जीविका दी।

(12) अल्लाह ही है जिसने बनाये सात आसमान और उन्हीं की भाँति धरती भी। उनके अन्दर उसका आदेश उतरता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह हर चीज़ की क्षमता रखता है। और अल्लाह ने हर चीज़ को अपने ज्ञान की परिधि में घेर रखा है।

66. सूरह अत-तहरीम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ पैग़म्बर, तुम क्यों उस चीज़ को अवैध करते हो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिए वैध की है, अपनी पत्नियों की प्रसन्न्ता चाहने के लिए, और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला है, दया करने वाला है। (2) अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी सौगन्धों का खोलना नियत कर दिया है, और अल्लाह तुम्हारा संरक्षक है, और वह जानने वाला, विवेक वाला है।

(3) और जब पैग़म्बर ने अपनी किसी पत्नी से एक बात छिपाकर कही, तो जब उसने उसको बता दिया और अल्लाह ने पैग़म्बर को उससे अवगत कर दिया तो पैग़म्बर ने कुछ बात बतायी और कुछ टाल दी, फिर जब पैग़म्बर ने उसको यह बात बतायी तो उसने कहा कि आपको किसने इसकी सूचना दी। पैग़म्बर ने कहा कि मुझको बताया जानने वाले ने, भिज्ञ ने। (4) यदि तुम दोनों अल्लाह की ओर लौटो तो तुम्हारे दिल झुक पड़े हैं, और यदि तुम दोनो पैग़म्बर की तुलना में कारवाइयाँ करोगी तो उसका मित्र अल्लाह है और जिब्रील और सदाचारी ईमान वाले और उनके अतिरिक्त फ़रिश्ते उसके सहायक हैं। (5) यदि पैग़म्बर तुम सबको तलाक़ दे दे। तो उसका पालनहार तुम्हारे बदले में तुमसे बेहतर पत्नियाँ उसको दे दे, आज्ञाकारी, आस्थावाली, कृतज्ञ, तौबा करने वाली, इबादत करने वाली, रोजा रखने वाली, विधवा और कुँवारी।

(6) ऐ ईमान वालों, अपने आप को और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे, उस पर कठोर स्वभाव के बलवान फ़रिश्ते नियुक्त हैं, अल्लाह उनको जो आदेश दे उसमें वह उसकी अवज्ञा नहीं करते, और वह वही करते हैं जिसका उनको आदेश मिलता है। (7) ऐ लोगों जिन्होंने अवज्ञा की, आज बहाने न बनाओ, तुम वही बदला पा रहे हो जो तुम करते थे।

(8) ऐ ईमान वालों, अल्लाह के समक्ष सच्ची तौबा करो। आशा है कि तुम्हारा पालनहार तुम्हारे पाप क्षमा कर दे और तुमको ऐसे बाग़ों में प्रवेश दे जिसके नीचे नहरें बहती होंगीं, जिस दिन अल्लाह पैग़म्बर को और उसके साथ ईमान लाने वालों को अपमानित नहीं करेगा। उनका प्रकाश उनके आगे और उनके दायीं ओर दौड़ रहा होगा, वह कह रहे होंगे कि ऐ हमारे पालनहार, हमारे लिए हमारे प्रकाश को पूर्ण कर दे और हमें क्षमा कर, निस्सन्देह तू हर चीज़ की क्षमता रखता है।

(9) ऐ पैग़म्बर, अवज्ञाकारियों और कपटाचारियों से युद्ध करो और उन पर कठोरता करो, और उनका ठिकाना नरक है और वह बुरा ठिकाना है। (10) अल्लाह अवज्ञाकारियों के लिए उदाहरण बयान करता है। नूह की पत्नी का और लूत की पत्नी का। दोनों हमारे बंदों में से दो नेक बंदों की पत्नियाँ थीं,

फिर उन्होंने उनके साथ विश्वासघात किया तो वह दोनों अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके, और दोनों को कह दिया गया कि आग में प्रवेश हो जाओ, प्रवेश होने वालों के साथ।

(11) और अल्लाह ईमान वालों के लिए उदाहरण बयान करता है फ़िरऔन की पत्नी का, जबकि उसने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना दे। और मुझको फ़िरऔन और उसके कर्म से बचा ले। और मुझको अत्याचारी क़ौम से क्षुटकारा दे। (12) और इमरान की बेटी मरियम, जिसने अपने सतीत्व की रक्षा की, फिर हमने उसमें अपनी आत्मा फूँक दी और उसने अपने पालनहार की वाणी की और उसकी किताबों की पुष्टि की, और वह आज्ञाकारियों में से थी।

67. सूरह अल-मुल्क

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) बड़ा बरकत वाला (विभूतिपूर्ण) है वह जिसके हाथ में साम्राज्य है और वह हर चीज़ पर सक्षम है। (2) जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा किया ताकि वह तुमको जाँचे कि तुममें से कौन अच्छे कर्म करता है। और वह शक्तिशाली है, क्षमा करने वाला है। (3) जिसने बनाये सात आसमान ऊपर नीचे, तुम रहमान के बनाने में कोई त्रुटि न देखोगे, फिर दृष्टि डाल कर देख लो, कहीं तुमको कोई दोष दिखाई देता है। (4) फिर बार-बार दृष्टि डाल कर देखो, दृष्टि असफल थक कर तुम्हारी ओर वापस आ जायेगी।

(5) और हमने निकटवर्ती के आसमान को दीपकों से सजाया है। और हमने उनको शैतानों के मारने का माध्यम बनाया है। और हमने उनके लिए नरक की यातना तैयार कर रखी है। (6) और जिन लोगों ने अपने पालनहार को झुठलाया, उनके लिए नरक की यातना है। और वह बुरा ठिकाना है। (7) जब वह उसमें डाले जायेंगे, वह उसका दहाड़ना सुनेंगे। (8) और वह उबलती होगी, प्रतीत होगा कि वह क्रोध में फट पड़ेगी। जब उसमें कोई समूह डाला जायेगा, उसके दरोग़ा उससे पूछेंगे, क्या तुम्हारे पास कोई डराने वाला नहीं आया। (9) वह कहेंगे कि

हाँ, हमारे पास डराने वाला आया। फिर हमने उसको झुठला दिया और हमने कहा कि अल्लाह ने कोई चीज़ नहीं उतारी, तुम लोग बड़ी पथभ्रष्टता में पड़े हुए हो। (10) और वह कहेंगे कि यदि हम सुनते या समझते तो हम नरक वालों में से न होते। (11) अतः वह अपने पाप को स्वीकार करेंगे, तो फटकार हो नरक वालों पर।

(12) जो लोग अपने पालनहार से बिन देखे डरते हैं, उनके लिए क्षमा और बड़ा बदला है। (13) और तुम अपनी बात छिपा कर कहो अथवा पुकार कर कहो, वह दिलों तक की बातों को जानता है। (14) क्या वह न जानेगा जिसने पैदा किया है, वह सूक्ष्मीदर्शी है, और ख़बर रखने वाला है।

(15) वही है जिसने पृथ्वी को तुम्हारे लिए वशीभूत कर दिया तो तुम उसके रास्तों में चलो और उसकी जीविका में से खाओ और उसी की ओर है उठना। (16) क्या तुम उससे निडर हो गये जो आकाश में है कि वह तुमको धरती में धँसा दे, फिर वह काँपने लगे। (17) क्या तुम उससे जो आसमान में है निडर हो गये कि वह तुम पर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लो कि कैसा है मेरा डराना। (18) और उन्होंने झुठलाया जो उनसे पहले थे। तो कैसी हुई मेरी फटकार।

(19) क्या वे पक्षियों को अपने ऊपर नहीं देखते पंख फैलाये हुए और वह उनको समेट भी लेते हैं। रहमान के अतिरिक्त कोई नहीं जो उनको थामे हुए हो। निस्सन्देह वह हर चीज़ को देख रहा है। (20) भला कौन है कि वह तुम्हारी सेना बनकर रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी सहायता कर सके। इन्कार करने वाले धोखे में पड़े हुए हैं। (21) भला कौन है जो तुमको जीविका दे यदि अल्लाह अपनी जीविका रोक ले, बल्कि वह विद्रोह पर और बिदकने पर अड़ गये हैं।

(22) क्या जो व्यक्ति औंधे मुँह चल रहा है वह अधिक उचित मार्ग पाने वाला है अथवा वह व्यक्ति जो सीधा एक ठीक मार्ग पर चल रहा है। (23) कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिए कान और आँख और दिल बनाये। तुम लोग बहुत कम आभार प्रकट करते हो।

(24) कहो कि वही है जिसने तुमको धरती में फैलाया और तुम उसी की ओर एकत्र किये जाओगे।

(25) और वह कहते हैं कि यह वादा कब होगा यदि तुम सच्चे हो। (26) कहो कि यह ज्ञान अल्लाह के पास है और मैं मात्र प्रत्यक्ष डराने वाला हूँ। (27) अतः जब वह उसको निकट आता हुआ देखेंगे तो उनके चेहरे बिगड़ जायेंगे जिन्होंने अवज्ञा की, और कहा जायेगा कि यही है वह चीज़ जिसको तुम माँगा करते थे। (28) कहो कि यदि अल्लाह मुझको मृत्यु दे दे और उन लोगों को जो मेरे साथ हैं, अथवा हम पर दया करे तो अवज्ञाकारियों को कष्टदायक यातना से कौन बचायेगा। (29) कहो, वह रहमान है, हम उस पर ईमान लाये और उसी पर हमने भरोसा किया। अतः शीघ्र ही तुम जान लोगे कि स्पष्ट पथभ्रष्टता में कौन है। (30) कहो कि बताओ, यदि तुम्हारा पानी नीचे उतर जाये तो कौन है जो तुम्हारे लिए स्वच्छ पानी ले आये।

68. सूरह अल-क़लम

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) नून., सौगन्ध है क़लम की और जो कुछ लोग लिखते हैं। (2) तुम अपने पालनहार की कृपा से दीवाने नहीं हो। (3) और निस्सन्देह तुम्हारे लिए बदला है कभी समाप्त न होने वाला। (4) और निस्सन्देह तुम एक उत्तम चरित्र पर हो। (5) अतः अति शीघ्र तुम देखोगे और वह भी देखेंगे। (6) कि तुममें से किसको जुनून था। (7) तुम्हारा पालनहार ही भली भाँति जानता है, जो उसके मार्ग से भटका हुआ है, और वह मार्ग पर चलने वालों को भी भली भाँति जानता है।

(8) अतः तुम इन झुठलाने वालों का कहना न मानो। (9) वह चाहते हैं कि तुम नरम पड़ जाओ तो वह भी नरम पड़ जायें, (10) और तुम ऐसे व्यक्ति का कहना न मानो जो बहुत सौगन्धें खाने वाला हो, हीन हो। (11) व्यंग कसने वाला हो, चुग़ली लगाता (पीठ पीछे बुराई करना) फिरता हो। (12) अच्छे काम से रोकने वाला हो, सीमा का उल्लघंन करने वाला हो,

बेईमानी करने वाला हो। (13) पत्थर दिल हो, इससे बढ़ कर अधम हो। (14) इस कारण से कि वह पूँजी और सन्तान वाला है। (15) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनायी जाती हैं तो वह कहता है कि यह अगलों की प्रमाणहीन बातें हैं। (16) शीघ्र ही हम उसकी नाक पर दाग लगायेंगे।

(17) हमने उनको परीक्षा में डाला है, जिस प्रकार हमने बाग़ वालों को परीक्षा में डाला था। जबकि उन्होंने सौगन्ध खाई कि वह सुबह सवेरे अवश्य उसका फल तोड़ लेंगे। (18) और कुछ भी शेष न छोड़ेंगे। (19) अतः उस बाग़ पर तेरे पालनहार की ओर से एक फेरने वाला फिर गया और वह सो रहे थे। (20) फिर सुबह को वह ऐसा रह गया जैसे कटी हुई फसल। (21) अतः सुबह को उन्होंने एक दूसरे को पुकारा। (22) कि अपने खेत पर सवेरे चलो यदि तुमको फल तोड़ना है। (23) फिर वह चल पड़े और वह आपस में चुपके—चुपके कह रहे थे। (24) कि आज कोई निर्धन तुम्हारे पास बाग़ में न आने पाये। (25) और वह अपने को न देने पर सक्षम समझकर चले। (26) फिर जब बाग़ को देखा तो कहा कि हम रास्ता भूल गये। (27) बल्कि हम वंचित हो गये। (28) उनमें जो बेहतर व्यक्ति था उसने कहा, मैंने तुमसे नहीं कहा था कि तुम लोग स्तुति क्यों नहीं करते। (29) उन्होंने कहा कि हमारा पालनहार पवित्र है। निस्सन्देह हम अत्याचारी थे। (30) फिर वह आपस में एक दूसरे को आरोप लगाने लगे। (31) उन्होंने कहा, अफ़सोस है हम पर, निस्सन्देह हम सीमा का उलंघन करने वाले लोग थे। (32) संभवतः हमारा पालनहार हमको इससे अच्छा बाग़ इसके बदले में दे दे, हम उसी की ओर लौटते हैं। (33) इसी प्रकार आती है यातना, और परलोक की यातना इससे भी बड़ी है, काश यह लोग जानते।

(34) निस्सन्देह डरने वालों के लिए उनके पालनहार के पास नेमत के बाग़ हैं। (35) क्या हम आज्ञाकारियों को अवज्ञाकारियों के बराबर कर देंगे। (36) तुम्हें क्या हुआ, तुम कैसा निर्णय करते हो। (37) क्या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो। (38) इसमें तुम्हारे लिए वह है जिसको तुम पसन्द करते हो। (39) क्या तुम्हारे लिए हमारे ऊपर सौगन्धें हैं क़ियामत तक शेष रहने वाली कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो

तुम निर्णय करो। (40) इनसे पूछो कि इनमें से कौन उसका ज़िम्मेदार है। (41) क्या उनके लिए कुछ साझीदार हैं, तो वह अपने साझीदारों को लायें यदि वह सच्चे हों।

(42) जिस दिन सच्चाई पर से पर्दा उठाया जायेगा और लोग सजदे के लिए बुलाये जायेंगे तो वह सजदा न कर सकेंगे। (43) उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी उन पर अनादर छाया होगा, और वह सजदा के लिए बुलाये जाते थे। और वह हृष्ट पुष्ट थे। (44) अतः छोड़ो मुझको और उनको जो इस वाणी को झुठलाते हैं, हम उनको धीरे-धीरे ला रहे हैं जहाँ से वह नहीं जानते। (45) और मैं उनको अवकाश दे रहा हूँ, निस्सन्देह मेरी चाल बहुत मज़बूत है।

(46) क्या तुम इनसे क्षतिपूर्ति माँगते हो कि वह उसके अर्थदण्ड से दबे जा रहे हैं। (47) अथवा उनके पास परोक्ष है अतः वह लिख रहे हैं। (48) अतः अपने पालनहार के निर्णय तक धैर्य रखो और मछली वाले की भाँति न बन जाओ, जब उसने पुकारा और वह दुख से भरा हुआ था। (49) यदि उसके पालनहार की कृपा उसके साथ न होती तो वह निन्दित होकर चटियल मैदान में फेंक दिया जाता। (50) फिर उसके पालनहार ने उसको सम्मानित किया, अतः उसको सदाचारियों में सम्मिलित कर दिया। (51) और ये अवज्ञाकारी लोग जब उपदेश को सुनते हैं तो इस प्रकार तुमको देखते हैं मानो अपनी दृष्टि से तुमको फिसला देंगे, और कहते हैं यह अवश्य दीवाना है। (52) और वह संसार वालों के लिए मात्र एक उपदेश है।

69. सूरह अल-हाक़्क़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) वह होने वाली। (2) क्या है वह होने वाली। (3) और तुम क्या जानो कि क्या है वह होने वाली। (4) समूद और आद ने उस खड़खड़ाने वाली चीज़ को झुठलाया। (5) अतः समूद, तो वह एक भयानक दुर्घटना से नष्ट कर दिये गये। (6) और आद, तो वह एक प्रचण्ड़ हवा से नष्ट किये गये। (7) उसको अल्लाह ने निरन्तर सात रात और आठ दिन उन पर लगाये रखा, तो तुम देखते हो कि

वहाँ वह इस प्रकार गिरे हुए पड़े हैं मानो कि वह खजूरों के खोखले तने हों। (8) तो क्या तुमको उनमें से कोई बचा हुआ दिखाई देता है। (9) और फ़िरऔन और उससे पहले वालों ने और उल्टी हुई बस्तियों ने अपराध किया। (10) उन्होंने अपने पालनहार के सन्देष्टा की अवज्ञा की तो अल्लाह ने उनको बहुत कठोर पकड़ा। (11) और जब पानी सीमा से बढ़ गया तो हमने तुमको नौका में सवार कराया। (12) ताकि हम उसको तुम्हारे लिए स्मृति बना दें। और याद रखने वाले कान उसको याद रखें।

(13) अतः जब सूर (महाशंख) में अचानक फूँक मारी जायेगी। (14) और धरती और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में कण कण कर दिया जायेगा। (15) तो उस दिन घटित होने वाली घटित हो जायेगी। (16) और आकाश फट जायेगा तो वह उस दिन पूर्णतः क्षीण हो जायेगा। (17) और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और तेरे पालनहार के सिंहासन को उस दिन आठ फ़रिश्ते अपने ऊपर उठाये होंगे। (18) उस दिन तुम पेश किये जाओगे। तुम्हारी कोई बात छिपी हुई न होगी।

(19) तो जिस व्यक्ति को उसका कर्म पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा तो वह कहेगा कि लो मेरा कर्म पत्र पढ़ो। (20) मैंने कल्पना की थी कि मुझको मेरा हिसाब दिया जाने वाला है। (21) तो वह एक पसन्दीदा सुखमय जीवन में होगा। (22) ऊँचे बाग़ में। (23) उसके फल झुके पड़ रहे होंगे। (24) खाओ और पीयो आन्नदपूर्वक, उन कर्मों के बदले में जो तुमने बीते दिनों में किये हैं। (25) और जिस व्यक्ति का कर्म पत्र उसके बायें हाथ में दिया जायेगा, तो वह कहेगा- काश मेरा कर्म पत्र मुझे न दिया जाता। (26) और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है। (27) काश वही मृत्यु अन्तिम होती। (28) मेरी सम्पत्ति मेरे काम न आयी। (29) मेरी सत्ता समाप्त हो गयी। (30) उस व्यक्ति को पकड़ो, फिर उसको पट्टा पहनाओ। (31) फिर उसको नरक में डाल दो। (32) फिर एक जंजीर में जिसकी लम्बाई सत्तर हाथ है उसको जकड़ दो। (33) यह व्यक्ति महान अल्लाह पर विश्वास न रखता था। (34) और वह निर्धनों को खाना खिलाने पर नहीं उभारता था। (35) अतः आज यहाँ उसके

साथ कोई सहानुभूति रखने वाला नहीं। (36) और घावों के धोवन के अतिरिक्त उसके लिए कोई खाना नहीं। (37) उसको पापियों के अतिरिक्त कोई न खायेगा।

(38) तो नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ उन चीज़ों की जिनको तुम देखते हो। (39) और जिनको तुम नहीं देखते। (40) निस्सन्देह यह एक सम्मानित सन्देशवाहक की वाणी है। (41) और वह किसी कवि की वाणी नहीं, तुम बहुत कम आस्थावान बनते हो। (42) और यह किसी भविष्यवक्ता की वाणी नहीं, तुम बहुत कम चिन्तन करते हो। (43) संसार के स्वामी की ओर से उतारा हुआ है। (44) और यदि वह कोई बात गढ़ कर हमारे ऊपर लगाता, (45) तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते। (46) फिर हम उसके दिल की नस काट देते। (47) फिर तुममें से कोई इससे हमको रोकने वाला न होता। (48) और निस्सन्देह यह अनुस्मरण है डरने वालों के लिए। (49) और हम जानते हैं कि तुममें इसके झुठलाने वाले हैं। (50) और वह झुठलाने वालों के लिए पछतावा है। (51) और यह निश्चित सत्य है। (52) अतः तुम अपने महान पालनहार के नाम की स्तुति करो।

70. सूरह अल-मआरिज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) माँगने वाले ने यातना माँगी घटित होने वाली। (2) अवज्ञाकारियों के लिए कोई उसको हटाने वाला नहीं। (3) अल्लाह की ओर से जो सीढ़ियों का स्वामी है। (4) उसकी ओर फ़रिश्ते और जिब्रील चढ़कर जाते हैं, एक ऐसे दिन में जिसकी अवधि पचास हज़ार वर्ष के समान है। (5) अतः तुम धैर्य रखो, अच्छा धैर्य। (6) वह उसको दूर देखते हैं। (7) और हम उसको निकट देख रहे हैं। (8) जिस दिन आकाश तेल की तलछट की तरह हो जायेगा। (9) और पहाड़ धुने हुए ऊन की तरह। (10) और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा। (11) वह उनको दिखाये जायेंगे। अपराधी चाहेगा कि काश, उस दिन की यातना से बचने के लिए अपने बेटों। (12) और अपनी पत्नी और अपने

भाई। (13) और अपने परिवार को जो उसे शरण देने वाला था। (14) और सम्पूर्ण धरती वालों को अर्थदण्ड में देकर अपने आप को बचा ले।

(15) कदापि नहीं, वह तो भड़कती हुई आग की लपट होगी। (16) जो चमड़ी उतार देगी। (17) वह प्रत्येक उस व्यक्ति को बुलायेगी जिसने पीठ फेरा और मुँह मोड़ा। (18) एकत्र किया और सैंत कर रखा। (19) निस्सन्देह मनुष्य निम्न साहस वाला पैदा हुआ है। (20) जब उसको कष्ट पहुँचता है तो वह घबड़ा उठता है (21) और जब उसको सम्पन्नता मिलती है तो वह कृपणता करने लगता है। (22) परन्तु वह नमाज़ पढ़ने वाले। (23) जो अपनी नमाज़ को नियमित रुप से अदा करते हैं। (24) और जिनकी पूँजी में निश्चित अधिकार है। (25) माँगने वाले और वंचित का। (26) और जो न्याय के दिन पर विश्वास रखते हैं। (27) और जो अपने पालनहार की यातना से डरते हैं। (28) निस्सन्देह उनके पालनहार की यातना से किसी को निड़र न होना चाहिए। (29) और जो अपने गुप्तांगों की रक्षा करते हैं। (30) परन्तु अपनी पत्नियों से या अपनी अधिकृत महिलाओं से (विवाह के उपरांत), अतः उन पर उनको कोई निन्दा नहीं। (31) फिर जो व्यक्ति इसके अतिरिक्त कुछ और चाहे तो वही लोग सीमा का उल्लघंन करने वाले हैं। (32) और जो अपनी अमानतों और अपनी प्रतीज्ञा को निभाते हैं। (33) और जो अपनी गवाहियों पर अटल रहते हैं। (34) और जो अपनी नमाज़ की रक्षा करते हैं। (35) यही लोग जन्नतों में सम्मान के साथ होंगे।

(36) फिर इन अवज्ञाकारियों को क्या हो गया है कि वे तुम्हारी ओर दौड़े चले आ रहे हैं, (37) दाएँ से और बाएँ से समूह के समूह। (38) क्या उनमें से हर व्यक्ति यह लालच रखता है कि वह नेमत के बाग़ में प्रवेश कर लिया जायेगा। (38) कदापि नहीं, हमने उन्हें पैदा किया है उस चीज़ से जिससे वे परिचित हैं।

(40) अतः नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ पूर्वो और पश्चिमों के पालनहार की, हम इस पर सक्षम हैं (41) कि बदल कर उनसे अच्छा ले आएँ, और हम विवश नहीं हैं। (42) अतः उन्हें छोड़ दो कि वे बातें बनायें और खेल-तमाशे करें, यहाँ तक कि अपने उस दिन का सामना करें जिसका उनसे वादा किया

जा रहा है। (43) जिस दिन क़ब्रों से निकल पड़ेंगे दौड़ते हुए, जैसे कि वह किसी लक्ष्य की ओर भाग रहे हों। (44) उनकी निगाहें नीची होंगी। उन पर अपमान छाया होगा, यह है वह दिन जिसका उनसे वादा था।

71. सूरह नूह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हमने नूह को उसकी क़ौम की ओर सन्देष्टा बनाकर भेजा कि अपनी क़ौम के लोगों को सचेत कर दो इससे पहले कि उन पर एक पीड़ादायक यातना आ जाये। (2) उसने कहा कि ऐ मेरी क़ौम के लोगों, मैं तुम्हारे लिए एक स्पष्ट डराने वाला हूँ। (3) कि तुम अल्लाह की उपासना करो और उससे डरो और मेरा आज्ञापालन करो। (4) अल्लाह तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम्हें एक निर्धारित अवधि तक अवसर देगा। निस्सन्देह जब अल्लाह का निर्धारित किया हुआ समय आ जाता है तो फिर वह टाला नहीं जाता। काश, तुम उसे जानते।

(5) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, मैंने अपनी क़ौम को रात व दिन पुकारा। (6) परन्तु मेरी पुकार ने उनकी दूरी में ही वृद्धि की। (7) और मैंने जब भी उन्हें बुलाया कि तू उन्हें क्षमा कर दे तो उन्होंने अपने कानों में उँगलियाँ डाल लीं और अपने ऊपर अपने कपड़े लपेट लिए और हठ पर अड़ गए और अत्यधिक घमण्ड किया। (8) फिर मैंने उन्हें खुलकर पुकारा। (9) फिर मैंने उनके बीच सार्वजनिक प्रचार किया और उन्हें चुपके से समझाया। (10) मैंने कहा कि अपने पालनहार से क्षमा माँगों, निस्सन्देह वह बड़ा क्षमावान है। (11) वह तुम पर आसमान से पर्याप्त पानी बरसायेगा। (12) और तुम्हारी सम्पत्ति और सन्तान में वृद्धि करेगा। और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा करेगा। और तुम्हारे लिए नहरें बहा देगा। (13) तुमको क्या हो गया है कि तुम अल्लाह की महानता को मानते नहीं हो। (14) यद्यपि उसने तुमको तरह–तरह से बनाया। (15) क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने किस प्रकार सात आसमान एक पर एक बनाये। (16) और उनमें चाँद

को प्रकाश और सूरज को दीपक बनाया। (17) और अल्लाह ने तुमको धरती से विशेष ढ़ंग से उगाया। (18) फिर वह तुमको धरती में वापस ले जायेगा। और फिर उससे तुमको बाहर ले आयेगा। (19) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए धरती को समतल बनाया। (20) ताकि तुम उसके खुले रास्तों में चलो।

(21) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, इन्होंने मेरा कहा न माना और ऐसे व्यक्तियों का अनुसरण किया जिनकी सम्पत्ति और सन्तान ने उनके घाटे ही में वृद्धि की। (22) और इन्होंने बड़े षड़यन्त्र किए। (23) और इन्होंने कहा कि तुम अपने उपास्यों को कदापि न छोड़ना। और तुम कदापि न छोड़ना वद को और न सुवाअ को और न यग़ूस को और यऊक़ को और नस्र को। (24) और उन्होंने बहुत लोगों को भटका दिया। और अब तू इन पथभ्रष्ट लोगों की पथभ्रष्टता ही में वृद्धि कर। (25) अपने पापों के कारण वह डुबाये गये फिर वह आग में डाल दिये गये। तो उन्होंने अपने लिए अल्लाह से बचाने वाला कोई सहायक न पाया।

(26) और नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनहार, तू इन अवज्ञाकारियों में से कोई धरती पर बसने वाला न छोड़। (27) यदि तूने इनको छोड़ दिया। तो यह तेरे बन्दों को भटकायेंगे और इनके वंश से जो भी पैदा होगा, वह व्यभिचारी और कठोर अवज्ञाकारी ही होगा। (28) ऐ मेरे पालनहार, मुझे क्षमा कर दे। और मेरे माता–पिता को क्षमा कर दे। और जो मेरे घर में आस्थावान होकर प्रवेश हो, तू उसे भी क्षमा कर। और सभी आस्थावान मर्दों और आस्थावान महिलाओं को क्षमा कर दे और अत्याचारियों के लिए विनाश के अतिरिक्त किसी चीज़ में वृद्धि न कर।

72. सूरह अल-जिन्न

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कहो कि मुझे वह्य (सन्देश) की गई है कि जिन्नों के एक समूह ने क़ुरआन सुना तो उन्होंने कहा कि हमने एक विचित्र क़ुरआन सुना है। (2) जो मार्गदर्शन है तो हम उस पर ईमान लाये और हम अपने पालनहार

के साथ किसी को साझीदार न बनायेंगे। (3) और यह कि हमारे पालनहार का गौरव बहुत उच्च है। उसने न कोई पत्नी बनायी है और न सन्तान। (4) और यह कि हमारा नासमझ व्यक्ति अल्लाह के सम्बन्ध में बहुत वास्तविकता विरोधी बातें कहता था। (5) और हमने कल्पना की थी कि मनुष्य और जिन्न, अल्लाह के सम्बन्ध में कभी झूठ बात न कहेंगे। (6) और यह कि मनुष्यों में कुछ ऐसे थे। जो जिन्नों में से कुछ की शरण लेते थे, तो उन्होंने जिन्नों का अभिमान और बढ़ा दिया। (7) और यह कि उन्होंने भी कल्पना की, जैसे तुम्हारी कल्पना थी कि अल्लाह किसी को न उठायेगा।

(8) और हमने आसमान का निरीक्षण किया तो हमने पाया कि वह कठोर पहरेदारों और उल्काओं से भरा हुआ है। (9) और हम उसके कुछ ठिकानों में सुनने के लिए बैठा करते थे, तो अब जो कोई सुनना चाहता है तो वह अपने लिए एक तैयार उल्का पाता है। (10) और हम नहीं जानते कि यह धरती वालों के लिए कोई बुराई चाही गयी है अथवा उनके पालनहार ने उनके साथ भलाई चाही है। (11) और यह कि हममें कुछ भले हैं और कुछ भिन्न प्रकार के। हम विभिन्न मार्गों पर हैं। (12) और यह कि हमने समझ लिया कि हम धरती में अल्लाह को पराजित नहीं कर सकते। और न भाग कर उसको पराजित कर सकते हैं। (13) और यह कि हमने जब उपदेश की बात सुनी तो हम उस पर ईमान लाये। तो जो व्यक्ति अपने पालनहार पर ईमान लायेगा तो उसको न किसी कमी का डर होगा और अधिकता का। (14) और यह कि हममें कुछ आज्ञाकारी हैं और हममें कुछ मार्गविहीन हैं, अतः जिसने आज्ञापालन किया तो उन्होंने भलाई का मार्ग ढूँढ़ लिया। (15) और जो लोग मार्गविहीन हैं तो वह नरक के ईंधन होंगे।

(16) और मुझे वह्य (सन्देश) की गई है कि यह लोग यदि मार्ग पर अटल हो जाते तो हम इनको बाहुल्यता प्रदान करते। (17) ताकि उसमें उनकी परीक्षा लें, और जो व्यक्ति अपने पालनहार की याद से मुँह मोड़ेगा तो वह उसको कठोर यातना में डाल देगा। (18) और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं तो तुम अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो। (19) और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उसको पुकारने के लिए खड़ा हुआ तो लोग उस पर टूट पड़ने के लिए तैयार हो

गये। (20) क्योंकि मैं मात्र अपने पालनहार को पुकारता हूँ और उसके साथ किसी को साझी नहीं करता। (21) कहो कि मैं तुम लोगों के लिए न किसी हानि का अधिकार रखता हूँ और न किसी भलाई का। (22) कहो कि मुझको अल्लाह से कोई बचा नहीं सकता। और न मैं उसके अतिरिक्त कोई शरण पा सकता हूँ। (23) मात्र अल्लाह ही की ओर से पहुँचा देना और उसके सन्देशों को अदा कर देना है और जो व्यक्ति अल्लाह और उसके सन्देष्टा की अवज्ञा करेगा तो उसके लिए नरक की आग है। जिसमें वह सदैव रहेंगे।

(24) यहाँ तक कि जब वह देखेंगे उस चीज़ को जिसका उनसे वादा किया जा रहा है तो वह जान लेंगे कि किसके सहायक कमज़ोर हैं। और कौन संख्या में कम है। (25) कहो कि मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जा रहा है, वह निकट है या मेरे पालनहार ने उसके लिए लम्बी अवधि निर्धारित कर रखी है। (26) परोक्ष का जानने वाला वही है। वह अपने परोक्ष पर किसी को सूचित नहीं करता। (27) सिवा इस सन्देष्टा के जिसको उसने पसन्द किया हो, तो वह उसके आगे और पीछे रक्षक लगा देता है। (28) ताकि अल्लाह जान ले कि उन्होंने अपने पालनहार के सन्देश पहुँचा दिये हैं और वह उनके वातावरण को घेरे हुए है और उसने हर चीज़ को गिन रखा है।

73. सूरह अल-मुज़्ज़म्मिल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ कपड़े में लिपटने वाले, (2) रात में खड़े हो परन्तु थोड़ा भाग। (3) आधी रात अथवा उससे कुछ कम कर दो। (4) या उससे कुछ बढ़ा दो, और क़ुरआन को ठहर–ठहर कर पढ़ो। (5) हम तुम पर एक भारी बात डालने वाले हैं।

(6) निस्सन्देह रात का उठना अत्यंत कष्टकर है और बात ठीक निकलती है। (7) निस्सन्देह तुम्हें दिन में बहुत काम रहता है। (8) और अपने पालनहार का स्मरण करो और उसकी ओर ध्यान केन्द्रित कर लो सबसे अलग होकर। (9) वह पूर्व और पश्चिम का स्वामी है, उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं, अतः

तुम उसको अपना संरक्षक बना लो। (10) और लोग जो कुछ कहते हैं उस पर धैर्य रखो और भले ढंग से उनसे अलग हो जाओ। (11) और झुठलाने वाले सम्पन्न लोगों का मामला मुझ पर छोड़ दो और उनको थोड़ी ढील दे दो। (12) हमारे पास, बेड़ियाँ हैं और नरक है। (13) और गले में फँस जाने वाला खाना है और कष्टदायक यातना है। (14) जिस दिन धरती और पहाड़ हिलने लगेंगे और पहाड़ रेत के जैसे गिरते हुए ढ़ेर हो जायेंगे।

(15) हमने तुम्हारी ओर एक सन्देष्टा भेजा है, तुम पर गवाह बनाकर, जिस प्रकार हमने फ़िरऔन की ओर एक सन्देष्टा भेजा। (16) फिर फ़िरऔन ने सन्देष्टा का कहा न माना तो हमने उसको पकड़ा कठोर पकड़ना। (17) तो यदि तुमने झुठलाया तुम उस दिन की यातना से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगी। (18) जिसमें आसमान फट जायेगा, निस्सन्देह उसका वादा पूरा होकर रहेगा। (19) यह एक उपदेश है, तो जो चाहे अपने पालनहार की ओर रास्ता अपना ले।

(20) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार जानता है कि तुम लगभग दो तिहाई रात या आधी रात या एक तिहाई रात (नमाज़ के लिए) खड़े होते हो और एक समूह तुम्हारे साथियों में से भी। और अल्लाह ही रात और दिन का पैमाना (मापक्रम) ठहराता है, उसने जाना कि तुम उसको पूरा न कर सकोगे अतः उसने तुम पर कृपा की, अब क़ुरआन से पढ़ो जितना तुमको आसान हो। उसने जाना कि तुममें रोगी होंगे और कितने लोग अल्लाह की कृपा की खोज में धरती पर यात्रा करेंगे, और दूसरे ऐसे लोग भी होंगे जो अल्लाह के मार्ग में जिहाद करेंगे। तो इसमें से पढ़ो जितना तुमको आसान हो, और नमाज़ स्थापित करो और ज़कात (अनिवार्य दान) अदा करो। और अल्लाह को क़र्ज़ दो। अच्छा क़र्ज़। और जो भलाई तुम अपने लिए आगे भेजोगे उसको अल्लाह के यहाँ मौजूद पाओगे। वह उत्तम है और पुण्य में अधिक, और अल्लाह से क्षमा माँगों निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला, दयावान है।

74. सूरह अल-मुद्दस्सिर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) ऐ कपड़े में लिपटने वाले, (2) उठ और लोगों को डरा। (3) और अपने पालनहार की बड़ाई बयान कर। (4) और अपने कपड़े को पवित्र रख। (5) और गंदगी को छोड़ दे। (6) और ऐसा न करो कि उपकार करो और बहुत बदला चाहो। (7) और अपने पालनहार के लिए धैर्य रखो।

(8) फिर जब सूर (महाशंख) फूँका जायेगा। (9) तो वह बहुत कठोर दिन होगा। (10) अवज्ञाकारियों पर आसान न होगा। (11) छोड़ दो मुझको और उस व्यक्ति को जिसको मैंने पैदा किया, अकेला। (12) और उसको बहुत सा माल दिया। (13) और समीप रहने वाले पुत्र। (14) और सब तरह का सामान उसके लिए उपलब्ध कर दिया। (15) फिर वह लालसा रखता है कि मैं उसको और अधिक दूँ। (16) कदापि नहीं, वह हमारी आयतों का विरोधी है। (17) शीघ्र ही मैं उसको एक कठोर चढ़ाई चढाऊँगा।

(18) उसने सोचा और बात बनाई। (19) अतः वह नष्ट हुआ, उसने कैसी बात बनाई। (20) अतः वह नष्ट हुआ, उसने कैसी बात बनाई। (21) फिर उसने देखा। (22) फिर उसने तेवर चढ़ाये और मुँह बनाया। (23) फिर पीठ फेरी और घमण्ड किया। (24) फिर बोला यह तो मात्र एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है। (25) यह तो मात्र मनुष्य की वाणी है।

(26) मैं उसको शीघ्र ही नरक में डाल दूँगा। (27) और तुम क्या जानो कि क्या है नरक। (28) न बाक़ी रहने देगी और न छोड़ेगी। (29) चमड़े को झुलस देने वाली। (30) उस पर उन्नीस फ़रिश्ते हैं। (31) और हमने नरक के कार्यकर्त्ता मात्र फ़रिश्ते बनाये हैं। और हमने उनकी जो गिनती रखी है वह मात्र अवज्ञाकारियों को जाँचने के लिए, ताकि विश्वास प्राप्त करें वह लोग जिनको किताब प्रदान की गयी। और ईमान वाले अपने ईमान को बढ़ायें और किताब वाले (यहूदी व ईसाई) और मोमिन (आस्थावान) सन्देह न करें, और ताकि जिन लोगों के दिलों में रोग है वह और अवज्ञाकारी लोग कहेंगे कि इससे अल्लाह का क्या तात्पर्य है। इस प्रकार अल्लाह भटकाता है जिसको चाहता है

और मार्गदर्शन प्रदान करता है जिसको चाहता है, और तेरे पालनहार की सेना को मात्र वही जानता है, और यह तो बस समझाना है लोगों को।

(32) कदापि नहीं, सौगन्ध है चाँद की। (33) और रात की जबकि वह जाने लगे। (34) और सुबह की जब वह प्रकाशित हो जाये। (35) निस्सन्देह नरक बड़ी चीज़ों में से है। (36) मनुष्य के लिए डरावा। (37) उनके लिए जो तुममें से आगे की ओर या पीछे की ओर बढ़ना चाहें। (38) प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्मों के बदले में गिरवी है। (39) अतिरिक्त दायें वालों के। (40) वह बाग़ों में होंगे, पूछते होंगे। (41) अपराधियों से। (42) तुमको क्या चीज़ नरक में ले गयी। (43) वह कहेंगे हम नमाज़ पढ़ने वालों में से न थे। (44) और हम निर्धनों को खाना नहीं खिलाते थे। (45) और हम बहस करने वालों के साथ बहस करते थे। (46) और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे। (47) यहाँ तक कि वह निश्चित बात हम पर आ गयी। (48) तो उनको सिफ़ारिश करने वालों की सिफ़ारिश कुछ लाभ न देगी।

(49) फिर उनको क्या हो गया है कि वह उपदेश से मुँह मोड़ते हैं। (50) मानो कि वह जंगली गधे हों। (51) जो शेर से भागे जा रहे हैं। (52) बल्कि उनमें से प्रत्येक व्यक्ति यह चाहता है कि उसको खुली हुई किताबें दी जायें। (53) कदापि नहीं, बल्कि ये लोग परलोक से नहीं डरते। (54) कदापि नहीं। यह तो एक उपदेश है। (55) अतः जिसका जी चाहे, उससे उपदेश प्राप्त करे। (56) और वह उससे उपदेश प्राप्त नहीं करेंगे। परन्तु यह कि अल्लाह चाहे। वही है जिससे डरना चाहिए। और वही है क्षमा प्रदान करने योग्य।

75. सूरह अल-क़ियामह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) नहीं मैं सौगन्ध खाता हूँ क़ियामत के दिन की। (2) और नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ निन्दा करने वाली आत्मा की। (3) क्या मनुष्य समझता है कि हम उसकी हाियों को एकत्र न करेंगे। (4) क्यों नहीं, हम इस पर सक्षम हैं कि उसकी उँगलियों के पोर पोर तक ठीक कर दें। (5) बल्कि

मनुष्य चाहता है कि वह ढिठाई करे उसके सामने। (6) वह पूछता है कि क़ियामत का दिन कब आयेगा। (7) तो जब आँखें चौंधिया जायेंगी। (8) और चाँद प्रकाशहीन हो जायेगा। (9) और सूरज और चाँद एकत्र कर दिये जायेंगे। (10) उस दिन मनुष्य कहेगा कि कहाँ भागूँ। (11) कदापि नहीं, कहीं शरण नहीं। (12) उस दिन तेरे पालनहार ही के पास ठिकाना है। (13) उस दिन मनुष्य को बताया जायेगा कि उसने क्या आगे भेजा और क्या पीछे छोड़ा। (14) बल्कि मनुष्य स्वंय अपने आप को भली भाँति जानता है। (15) चाहे वह कितने ही बहाने (तर्क) प्रस्तुत करे।

(16) तुम उसके पढ़ने पर अपनी ज़ुबान न चलाओ (तेज़ी से) कि तुम उसको शीघ्र सीख लो। (17) हमारे ऊपर है उसको एकत्र करना। और उसको सुनाना। (18) तो जब हम उसको सुनाएँ तो तुम उस सुनाने का अनुसरण करो। (19) फिर हमारे ऊपर है उसको बयान कर देना।

(20) कदापि नहीं, बल्कि तुम चाहते हो जो शीघ्र आये। (21) और तुम छोड़ते हो जो देर में आये। (22) कुछ चेहरे उस दिन प्रफुल्लित होंगे। (23) अपने पालनहार की ओर देख रहे होंगे। (24) और कुछ चेहरे उस दिन उदास होंगे। (25) सोच रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला मामला किया जायेगा। (26) कदापि नहीं, जब प्राण कण्ठ तक पहुँच जायेंगे। (27) और कहा जायेगा कि कौन है झाँड़ फूँक करने वाला। (28) और वह समझ लेंगे कि यह अलगाव का समय है। (29) और पिण्डली से पिण्डली लिपट जायेगी। (30) वह दिन होगा तेरे पालनहार की ओर जाने का।

(31) तो उसने न सच माना और न नमाज़ पढ़ी। (32) बल्कि झुठलाया और मुँह मोड़ा। (33) फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की ओर चला गया। (34) अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है। (35) फिर अफ़सोस है तुझ पर अफ़सोस है। (36) क्या मनुष्य समझता है कि वह यूँ ही छोड़ दिया जायेगा। (37) क्या वह टपकाये हुए वीर्य का एक बूँद न था। (38) फिर वह रक्त की एक फुटकी हो गया, फिर अल्लाह ने बनाया, फिर अंग ठीक किये। (39) फिर उसकी दो किस्में कर दीं, पुरुष और महिला। (40) क्या वह इस पर समर्थ नहीं कि मृतकों को जीवित कर दे।

76. सूरह अद-दह्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कभी मनुष्य पर ज़माने में से एक समय गुज़रा है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था। (2) हमने मनुष्य को एक मिश्रित बूँद से पैदा किया, हम उसको पलटते रहे। फिर हमने उसको सुनने वाला, देखने वाला बना दिया। (3) हमने उसको मार्ग समझाया, चाहे वह कृतज्ञ बने या अकृतज्ञ।

(4) हमने अवज्ञाकारियों के लिए बेड़ियाँ और तौक़ (गले का पट्टा) और भड़कती हुई आग तैयार कर रखी है। (5) नेक लोग ऐसे प्याले से पियेंगे जिसमें कपूर का संमिश्रण होगा। (6) उस स्रोत से अल्लाह के बन्दे पियेंगे। (7) वे उसकी शाखाएँ निकालेंगे। वह लोग अनिवार्य कर्मों को पूरा करते हैं और ऐसे दिन से डरते हैं जिसकी कठोरता बड़ी वयापक होगी। (8) और उसके प्रेम में खाना खिलाते हैं वंचित को और अनाथ को और क़ैदी को। (9) हम जो तुमको खिलाते हैं तो अल्लाह की प्रसन्नता चाहने के लिए। हम न तुमसे बदला चाहते हैं और न कृतज्ञता। (10) हम अपने पालनहार की ओर से एक कठोर और कड़वे दिन का डर रखते हैं। (11) तो अल्लाह ने उनको उस दिन की कठोरता से बचा लिया। और उनको ताज़गी और प्रसन्नता प्रदान की। (12) और उनके धैर्य के बदले में उनको जन्नत और रेशमी वस्त्र प्रदान किया। (13) टेक लगाये होंगे वह उसमें तख़्तों पर, उसमें न वह गर्मी का सामना करेंगे और न सर्दी का। (14) बाग़ों की छाया उन पर झुकी हुई होगी। और उसके फल उनकी पहुँच में होंगे। (15) और उनके आगे चाँदी के बर्तन और शीशे के प्याले घूम रहे होंगे। (16) शीशे चाँदी के होंगे, जिनको भरने वालों ने उपयुक्त पैमाने से भरा होगा।

(17) और वहाँ उनको एक और जाम पिलाया जायेगा जिसमें सोंठ का मिश्रण होगा। (18) यह उसमें एक स्रोत है जिसको सलसबील कहा जाता है। (19) और उनके पास घूम रहे होंगे ऐसे बच्चे जो सदैव बच्चे ही रहेंगे। तुम उन्हें देखो तो समझो कि मोती हैं जो बिखेर दिये गये हैं। (20) और तुम जहाँ देखोगे, वहीं महान नेमत और महान साम्राज्य देखोगे।

(21) उनके ऊपर बारीक रेशम के हरे कपड़े होंगे और मोटे रेशम के कपड़े भी। और उनको चाँदी के कंगन पहनाये जायेंगे। और उनका पालनहार उनको पवित्र पेय पिलायेगा। (22) निस्सन्देह यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारा प्रयास स्वीकार्य हुआ।

(23) हमने तुम पर क़ुरआन थोड़ा—थोड़ा करके उतारा है। (24) अतः तुम अपने पालनहार के आदेश पर धैर्य रखो और उनमें से किसी पापी अथवा कृतघ्न की बात न मानो। (25) और अपने पालनहार का नाम सुबह और सायं याद करो। (26) और रात को भी उसको सजदा करो। और उसकी स्तुति करो। रात के लम्बे हिस्से में। (27) यह लोग शीघ्र मिलने वाली चीज़ को चाहते हैं और इन्होंने छोड़ रखा है अपने पीछे एक भारी दिन को। (28) हम ही ने उनको पैदा किया और हम ही ने उनके ढाँचे को सुदृढ़ किया, और जब हम चाहेंगे उन्हीं जैसे लोग उनके स्थान पर बदल लायेंगे। (29) यह एक उपदेश है। तो जो व्यक्ति चाहे, अपने पालनहार की ओर मार्ग अपना ले। (30) और तुम नहीं चाह सकते परन्तु यह कि अल्लाह चाहे। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला, विवेक वाला है। (31) वह जिसको चाहता है अपनी दया में प्रवेश देता है, और अत्याचारियों के लिए उसने कष्टदायक यातना तैयार कर रखी है।

77. सूरह अल-मुरसलात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है हवाओं की जो छोड़ दी जाती हैं। (2) फिर वह तूफ़ानी चाल से चलती हैं। (3) और बादलों को उठाकर फैलाती हैं। (4) फिर मामले को अलग करती हैं। (5) फिर अनुस्मरण प्रस्तुत करती हैं। (6) बहाने के रूप में अथवा डरावे के रूप में। (7) जो वादा तुमसे किया जा रहा है वह अवश्य घटित होने वाला है।

(8) अतः जब तारे प्रकाश विहीन हो जायेंगे। (9) और जब आसमान फट जायेगा। (10) और जब पहाड़ चूर्ण विचूर्ण कर दिये जायेंगे। (11) और जब पैग़म्बर निर्धारित समय पर एकत्र किये जायेंगे। (12) किस दिन के लिए

अवकाश दिया गया। (13) निर्णय के दिन के लिए। (14) और तुमको क्या पता कि निर्णय का दिन क्या है। (15) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (16) क्या हमने अगलों को नष्ट नहीं किया। (17) फिर हम उनके पीछे भेजते हैं पिछलों को। (18) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते हैं।

(19) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (20) क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से पैदा नहीं किया। (21) फिर उसको एक सुरक्षित स्थान पर रखा। (22) एक निर्धारित अवधि तक। (23) फिर हमने एक पैमाना ठहराया, हम कैसा अच्छा पैमाना ठहराने वाले हैं। (24) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों का। (25) क्या हमने धरती को समेटने वाला नहीं बनाया। (26) और जीवित लोगों के लिए और मृतकों के लिए। (27) और हमने उसमें ऊँचे पहाड़ बनाये और तुमको मीठा पानी पिलाया। (28) उस दिन विनाश है झुठलाने वालों के लिए।

(29) चलो उस चीज़ की ओर जिसको तुम झुठलाते थे। (30) चलो तीन शाख़ाओं वाली छाया की ओर। (31) जिसमें न छाया है और न वह गर्मी से बचाता है। (32) और अंगारे बरसायेगा जैसे कि ऊंचे भवन। (33) पीले ऊँटों की भाँति। (34) उस दिन विनाश है झुठलाने वालों के लिए। (35) यह वह दिन है जिसमें लोग बोल न सकेंगे। (36) और न उनको अनुमति होगी कि वह तर्क प्रस्तुत करें। (37) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (38) यह निर्णय का दिन है। हमने तुमको और अगले लोगों को एकत्र कर लिया। (39) तो यदि कोई युक्ति हो तो मेरे विरूद्ध चलो। (40) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए।

(41) निस्सन्देह डरने वाले छाया में और स्रोतों में होंगे। (42) और फलों में जो वह चाहें। (43) मज़े के साथ खाओ और पीओ। उस कर्म के बदले में जो तुम करते थे। (44) हम नेक लोगों को ऐसा ही बदला देते हैं। (45) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (46) खाओ और उपभोग कर लो थोड़े दिन, निस्सन्देह तुम पापी हो। (47) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (48) और जब उनसे कहा जाता है कि झुको

तो वह झुकते नहीं। (49) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के लिए। (50) अब इसके बाद वह किस चीज़ पर ईमान लायेंगे।

78. सूरह अन-नबा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) लोग किस चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं। (2) उस बड़ी सूचना के बारे में। (3) जिसमें वह लोग भिन्न हैं। (4) कदापि नहीं शीघ्र ही वह जान लेंगे। (5) कदापि नहीं। शीघ्र ही वह जान लेंगे। (6) क्या हमने धरती को फ़र्श नहीं बनाया। (7) और पहाड़ों को मेख़ें (सहारा देने वाले स्तम्भ)। (8) और तुमको हमने बनाया जोड़े-जोड़े। (9) और नींद को बनाया तुम्हारी थकान दूर करने के लिए। (10) और हमने रात को आवरण बनाया। (11) और हमने दिन को जीविका कमाने का समय बनाया। (12) और हमने तुम्हारे ऊपर सात दृढ़ आसमान बनाये। (13) और हमने उसमें एक चमकता हुआ दीपक रख दिया। (14) और हमने पानी भरे बादलों से घनघोर बारिश बरसायी। (15) ताकि हम उसके माध्यम से उगायें अनाज और सब्ज़ी। (16) और घने बाग़। (17) निस्सन्देह निर्णय के दिन का समय नियत है।

(18) जिस दिन सूर (महाशंख) फूँका जायेगा, फिर तुम दल के दल आओगे। (19) और आसमान खोल दिया जायेगा, फिर उसमें दरवाज़े ही दरवाज़ें हो जायेंगे। (20) और पहाड़ चला दिये जायेंगे तो वह रेत के समान हो जायेंगे। (21) निस्सन्देह नरक घात में है। (22) विद्रोहियों का ठिकाना। (23) उसमें वह लम्बे समय तक पड़े रहेंगे। (24) उसमें न वह किसी ठण्डक को चखेंगे और न पीने की चीज़ को। (25) परन्तु गर्म पानी और पीप। (26) बदला उनके कर्म के अनुसार। (27) वह हिसाब का डर नहीं रखते थे। (28) और उन्होंने हमारी आयतों को पूर्णतः झुठला दिया। (29) और हमने हर चीज़ को लिख कर उसकी गण्ना कर रखी है। (30) तो चखो कि हम तुम्हारा दण्ड ही बढ़ाते जायेंगे।

(31) निस्सन्देह डरने वालों के लिए सफलता है। (32) बाग़ और अंगूर। (33) और नवयुवतियां समान आयु वाली। (34) और भरे हुए जाम।

(35) वहाँ वह निराधार और असत्य बात न सुनेंगे। (36) बदला तेरे पालनहार की ओर से होगा, उनके कर्म के अनुसार। (37) रहमान की ओर से जो आकाश और धरती और उनके बीच की चीज़ों का पालनहार है, कोई सामर्थ्य नहीं रखता कि उससे बात करे। (38) जिस दिन जिब्रील और फ़रिश्ते पंक्ति बनाकर खड़े होंगे, कोई न बोलेगा परन्तु जिसको रहमान अनुमति दे, और वह उचित बात कहेगा। (39) यह दिन निश्चित है, अतः जो चाहे अपने पालनहार की ओर ठिकाना बना ले। (40) हमने तुमको निकट आ जाने वाली यातना से डरा दिया है। जिस दिन मनुष्य उसको देख लेगा जो उसके हाथों ने आगे भेजा है, और अवज्ञाकारी कहेगा, काश मैं मिट्टी होता।

79. सूरह अन-नाज़िआत

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है जड़ से उखाड़ने वाली हवाओं की। (2) और सौगन्ध है मद्धिम चलने वाली हवाओं कीं। (3) और सौगन्ध है तैरने वाले बादलों की। (4) फिर आगे बढ़ने वालों की। (5) फिर मामलों का उपाय करने वालों की। (6) जिस दिन हिला देने वाली हिला डालेगी। (7) उसके पीछे एक और आने वाली चीज़ आयेगी। (8) कितने दिल उस दिन कांप रहे होंगे। (9) उनकी आँखें झुक रही होंगी। (10) वह कहते हैं क्या हम पहली स्थिति में फिर वापस होंगे। (11) क्या जब हम सड़ी हड्डियाँ हो जायेंगे। (12) उन्होंने कहा कि यह वापसी तो बड़े घाटे की होगी। (13) वह तो बस एक डाँट होगी। (14) फिर अचानक (एकाएकी) वह मैदान में उपस्थित होंगे

(15) क्या तुमको मूसा की बात पहुँची है (16) जबकि उसके पालनहार ने उसे तुवा की पवित्र घाटी में पुकारा। (17) फ़िरऔन के पास जाओ, वह विद्रोही हो गया है। (18) फिर उससे पूछो, क्या तुझको इस बात की इच्छा है कि तू सुधर जाये। (19) और मैं तुझको तेरे पालनहार के मार्ग दिखाऊँ फिर तू डरे। (20) अतः मूसा ने उसको बड़ी निशानी दिखायी। (21) फिर उसने झुठलाया और न माना। (22) फिर वह पलटा प्रयास करते हुए।

(23) फिर उसने एकत्र किया, फिर उसने पुकारा। (24) अतः उसने कहा कि मैं तुम्हारा सबसे बड़ा पालनहार हूँ। (25) तो अल्लाह ने उसको परलोक और संसार की यातना में पकड़ा। (26) निस्सन्देह इसमें शिक्षा है प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो डरे।

(27) क्या तुम्हारा बनाना अधिक कठिन है या आकाश का, अल्लाह ने उसको बनाया। (28) उसकी छत को ऊँचा किया फिर उसको ठीक बनाया। (29) और उसकी रात को अँधेरी बनाया और उसके दिन को प्रकाशवान किया। (30) और धरती को उसके बाद फैलाया। (31) इससे उसका पानी और चारा निकाला। (32) और पहाड़ों को स्थापित किया। (33) जीवन सामग्री के रूप में तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए।

(34) फिर जब वह बड़ी आपदा आयेगी। (35) जिस दिन मनुष्य अपने किये को याद करेगा। (36) और देखने वालों के समक्ष नरक प्रकट कर दी जायेगी। (37) तो जिसने विद्रोह किया। (38) और सांसारिक जीवन को वरीयता दी। (39) तो नरक उसका ठिकाना होगी। (40) और जो व्यक्ति अपने पालनहार के समक्ष खड़ा होने से डरा और अपने जी को बुरी इच्छाओं से रोका। (41) तो जन्नत उसका ठिकाना होगी (42) वह क़ियामत के सम्बन्ध में पूछते हैं कि वह कब घटित होगी। (43) तुम्हारा क्या संबंध उसकी चर्चा से। (44) यह मामला तेरे पालनहार से संबंधित है। (45) तुम तो मात्र डराने वाले हो उस व्यक्ति को जो डरे। (46) जिस दिन यह उसको देखेंगे तो मानो वह संसार में नहीं ठहरे, परन्तु एक सायं या उसकी सुबह।

80. सूरह अल-अबस

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) उसने त्यौरी चढ़ाई और मुँह फेर लिया। (2) इस बात पर कि अन्ध ा उसके पास आया। (3) और तुमको क्या पता कि वह सुधर जाये। (4) अथवा उपदेश को सुने तो उपदेश उसके काम आये। (5) जो व्यक्ति बेपरवाही बरतता है। (6) तुम उसकी चिन्ता में पड़ते हो। (7) अगर्चे तुम पर कोई दायित्व

नहीं यदि वह न सुधरे। (8) और जो व्यक्ति तुम्हारे पास दौड़ता हुआ आता है। (9) और वह डरता है। (10) तो तुम उससे बेपरवाही बरतते हो। (11) कदापि नहीं, यह तो एक उपदेश है। (12) अतः जो चाहे अनुस्मरण प्राप्त करे। (13) वह ऐसे सहीफों (ग्रन्थों) में है जो प्रतिष्ठित हैं। (14) श्रेष्ठ हैं, पवित्र हैं। (15) लिखने वालों के हाथों में। (16) सम्मानित, नेक।

(17) बुरा हो मनुष्य का, वह कैसा कृतघ्न है। (18) उसको अल्लाह ने किस चीज़ से पैदा किया है। (19) एक बूँद से उसको पैदा किया फिर उसके लिए पैमाना ठहराया। (20) फिर उसके लिए रास्ता आसान कर दिया। (21) फिर उसको मृत्यु दी, फिर उसको क़ब्र में ले गया। (22) फिर जब वह चाहेगा तो उसको पुनः जीवित कर देगा। (23) कदापि नहीं, उसने पूरा नहीं किया जिसका अल्लाह ने उसे आदेश दिया था। (24) अतः मनुष्य को चाहिए कि वह अपने खाने को देखे। (25) हमने पानी बरसाया अच्छी तरह। (26) फिर हमने पृथ्वी को विशेष रुप से फाड़ा। (27) फिर उगाये उसमें अनाज। (28) और अंगूर और तरकारियाँ। (29) और ज़ैतून और खजूर। (30) और घने बाग़। (31) और फल और हरियाली। (32) तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए जीवन सामग्री के रूप में।

(33) अतः जब वह कानों को बहरा कर देने वाला शोर उठेगा। (34) जिस दिन मनुष्य भागेगा अपने भाई से। (35) और अपनी माँ से और अपने बाप से। (36) और अपनी पत्नी से और अपने बेटों से। (37) उनमें से प्रत्येक व्यक्ति को उस दिन ऐसी चिन्ता होगी जो उसको दूसरों से बेपरवा कर देगी। (38) कुछ चेहरे उस दिन प्रकाशमय होंगे। (39) हँसते हुए, खुशी करते हुए। (40) और कुछ चेहरों पर उस दिन धूल उड़ रही होगी। (41) उस पर कालिमा छायी हुई होगी। (42) यही लोग अवज्ञाकारी हैं, ढीठ हैं।

81. सूरह अत-तकवीर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब सूरज को लपेट दिया जायेगा। (2) और जब सितारे प्रकाशविहीन हो जायेंगे। (3) और जब पहाड़ चलाये जायेंगे। (4) और जब दस महीने की गाभिन (गर्भ) ऊँटनियाँ आवारा फिरेंगी। (5) और जब सभी जंगली जानवर इकट्ठा किये जायेंगे। (6) और जब समुद्र भड़का दिये जायेंगे। (7) और जब एक-एक प्रकार के लोग एकत्र किये जायेंगे। (8) और जीवित दफ़न हुई लड़की से पूछा जायेगा (9) कि वह किस अपराध में मारी गयी। (10) और जब कर्म पत्र खोले जायेंगे। (11) और जब आसमान खुल जायेगा। (12) और नरक की आग भड़काई जायेगी। (13) और जन्नत को निकट लाया जायेगा। (14) प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा कि वह क्या लेकर आया है।

(15) अतः नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ पीछे हटने वाले, (16) चलने वाले, और छिप जाने वाले तारों की। (17) और रात की जब वह जाने लगे। (18) और सुबह की जब वह आने लगे (19) कि यह एक आदरणीय सन्देशवाहक की लायी हुई वाणी है। (20) शक्ति वाले , सिंहासन वाले के निकट उच्च्व स्थान वाला है। (21) उसकी बात मानी जाती है, वह विशवसनीय है। (22) और तुम्हारा साथी दीवाना नहीं है। (23) और उसने उसे प्रत्यक्ष क्षितिज में देखा है। (24) और वह परोक्ष की बातों के लिए अति उत्सुक नहीं। (25) और वह धिक्कारे हुए शैतान का कथन नहीं। (26) फिर तुम किधर जा रहे हो। (27) यह तो मात्र संसार वालों के लिए एक उपदेश है। (28) उसके लिए जो तुममें से सीधा चलना चाहे। (29) और तुम नहीं चाह सकते, परन्तु यह कि संसार का पालनहार अल्लाह चाहे।

82. सूरह अल-इन्फ़ितार

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब आकाश फट जायेगा। (2) और तारे बिखर जायेंगे। (3) और जब समुद्र बह पड़ेंगे। (4) और जब क़ब्रें खोल दी जायेंगी। (5) प्रत्येक व्यक्ति जान लेगा कि उसने आगे क्या भेजा और पीछे क्या छोड़ा। (6) ऐ मनुष्य, तुझको किस चीज़ ने अपने दयावान पालनहार की ओर से धोखे में डाल रखा है। (7) जिसने तुझको पैदा किया, फिर तेरे अंगों को ठीक किया, फिर तुझको सन्तुलित बनाया। (8) उसने जिस रूप में चाहा, तुमको आकार दे दिया। (9) कदापि नहीं, बल्कि तुम न्याय के दिन को झुठलाते हो। (10) हालाँकि तुम पर निगरानी करने वाले नियुक्त हैं। (11) सम्मानित लिखने वाले। (12) वह जानते हैं जो कुछ तुम करते हो। (13) निस्सन्देह नेक लोग आराम में होंगे। (14) और निस्सन्देह अपराधी नरक में। (15) न्याय के दिन वह उसमें डाले जायेंगे। (16) वह उससे अलग होने वाले नहीं। (17) और तुमको क्या पता कि न्याय का दिन क्या है। (18) फिर तुमको क्या पता कि न्याय का दिन क्या है। (19) उस दिन कोई प्राणी किसी दूसरे प्राणी के लिए कुछ न कर सकेगा। और मामला उस दिन अल्लाह ही के अधिकार में होगा।

83. सूरह अल-मुतफ़्फ़िफ़ीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) विनाश है नाप तौल में कमी करने वालों के लिये। (2) जो लोगों से नाप कर लें तो पूरा लें। (3) और जब उनको नापकर या तौल कर दें तो घटाकर दें। (4) क्या यह लोग नहीं समझते कि वह उठाये जाने वाले हैं। (5) एक बड़े दिन के लिए। (6) जिस दिन सभी लोग संसार के स्वामी के समक्ष खड़े होंगे। (7) कदापि नहीं, निस्सन्देह पापियों का कर्म पत्र सिज्जीन में होगा। (8) और तुम क्या जानो कि सिज्जीन क्या है। (9) वह एक लिखित ब्योरा है। (10) विनाश है उस दिन झुठलाने वालों के

लिए (11) जो न्याय के दिन को झुठलाते हैं। (12) और उसको वही व्यक्ति झुठलाता है जो सीमा का उल्लघंन करने वाला हो, पापी हो। (13) जब उसको हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह कहता है कि यह अगलों की कहानियाँ हैं। (14) कदापि नहीं, बल्कि उनके दिलों पर उनके कर्मों का ज़ंग चढ़ गया है। (15) कदापि नहीं बल्कि उस दिन वह अपने पालनहार से ओट में रखे जायेंगे। (16) फिर वह नरक में प्रवेश करेंगे। (17) फिर कहा जायेगा कि यही वह चीज़ है जिसको तुम झुठलाते थे।

(18) कदापि नहीं, निस्सन्देह नेक लोगों का कर्म पत्र इल्लीईन में है। (19) और तुम क्या जानो इल्लीईन क्या है। (20) लिखा हुआ व्यौरा है। (21) समीपवर्ती फ़रिश्तों के संरक्षण में। (22) निस्सन्देह नेक लोग आराम में होंगे। (23) वह तख़्तों पर बैठे देखते होंगे। (24) उनके चेहरों में तुम आराम की ताज़गी महसूस करोगे। (25) उनको शुद्ध शराब (पेय) मुहर बन्द पिलाया जायेगा। (26) जिस पर मुश्क की मुहर होगी। और यह चीज़ है जिसकी कामना करने वालों को कामना करनी चाहिए। (27) और उस शराब में तस्नीम की मिलावट होगी। (28) एक ऐसा स्रोत जिससे समीपवर्ती लोग पियेंगे। (29) निस्सन्देह जो लोग अपराधी थे। वह ईमान वालों पर हँसते थे। (30) और जब वह उनके सामने से गुज़रते तो वह आपस में आँखों से इशारे करते थे। (31) और जब वह अपने लोगों में लौटते तो दिल्लगी करते हुए लौटते। (32) और जब वह उनको देखते तो कहते कि यह भटके हुए लोग हैं। (33) जबकि वह उन पर संरक्षक बनाकर नहीं भेजे गये। (34) अतः आज ईमान वाले अवज्ञाकारियों पर हँसते होंगे। (35) वह तख़्तों पर बैठे देख रहे होंगे। (36) वास्तव में अवज्ञाकारियों को उनके किये का पर्याप्त बदला मिला।

84. सूरह अल-इन्शिक़ाक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब आसमान फट जायेगा। (2) और वह अपने पालनहार का आदेश सुन लेगा और वह उसी योग्य है। (3) और जब धरती फैला दी

जायेगी। (4) और वह अपने अन्दर की चीज़ों को उगल देगी और ख़ाली हो जायेगी। (5) और वह अपने पालनहार का आदेश सुन लेगी और वह इसी योग्य है। (6) ऐ मनुष्य, तू अपने पालनहार की ओर खिंचता जा रहा है, फिर तू उससे मिलने वाला है। (7) तो जिसको उसका कर्म पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जायेगा। (8) उससे आसान हिसाब लिया जायेगा। (9) और वह अपने लोगों के पास ख़ुश–ख़ुश आयेगा। (10) और जिसका कर्म पत्र उसकी पीठ की पीछे से दिया जायेगा। (11) वह मौत को पुकारेगा। (12) और नरक में प्रवेश करेगा। (13) वह अपने लोगों में चिन्ता मुक्त रहता था। (14) उसने समझा था कि उसको लौटना नहीं है। (15) क्यों नहीं, उसका पालनहार उसको देख रहा था। (16) तो नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ शफ़क़ (सूर्य अस्त के समय की लालिमा) की। (17) और रात की और उन चीज़ों की जिनको वह समेट लेती है। (18) और चाँद की जब वह पूरा हो जाये। (19) कि तुमको अवश्य एक दशा के बाद दूसरी दशा पर पहुँचना है। (20) तो इन्हें क्या हो गया कि वह ईमान नहीं लाते। (21) और जब उनके सामने क़ुरआन पढ़ा जाता है तो वह अल्लाह की ओर नहीं झुकते। (22) बल्कि अवज्ञाकारी झुठला रहे हैं। (23) और अल्लाह जानता है जो कुछ वह इकट्ठा कर रहे हैं। (24) अतः उनको एक कष्टदायक यातना की शुभ सूचना दे दो। (25) लेकिन जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये, उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है।

85. सूरह अल-बुरूज

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है बुर्जों (तारामंडलों) वाले आकाश की। (2) और वादा किये हुए दिन की। (3) और देखने वाले की और जो देखा गया। (4) नाश हुए खाई वाले। (5) जिसमें भड़कते हुए ईंधन की आग थी। (6) जबकि वह उस पर बैठे हुए थे। (7) और जो कुछ वह ईमान वालों के साथ कर रहे थे, वह उसको देख रहे थे। (8) और उनसे उनकी शत्रुता इसके अतिरिक्त किसी कारण से न थी

कि वह ईमान लाये अल्लाह पर जो प्रभुत्वशाली है, प्रशंसा वाला है। (9) उसी का साम्राज्य आसमानों और धरती में है, और अल्लाह हर चीज़ को देख रहा है। (10) जिन लोगों ने मोमिन (आस्थावान) पुरुषों और मोमिन महिलाओं को प्रताड़ित किया, फिर तौबा न की तो उनके लिए नरक की यातना है। (11) और उनके लिए जलने की यातना है, निस्सन्देह जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छा कर्म किये उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, यह बड़ी सफलता है। (12) निस्सन्देह तेरे पालनहार की पकड़ बड़ी कठोर है। (13) वही प्रारम्भ करता है और वही पुनरावृत्ति करेगा। (14) और वह क्षमा देने वाला है, प्रेम करने वाला है। (15) उच्च्च सिंहासन का स्वामी। (16) कर डालने वाला जो चाहे। (17) क्या तुमको सेनाओं की सूचना पहुँची है। (18) फ़िरऔन और समूद की। (19) बल्कि यह अवज्ञाकारी झुठलाने पर लगे हुए हैं। (20) और अल्लाह उनको चँहु दिशा से घेरे हुए है। (21) बल्कि वह एक गौरवशाली क़ुरआन है। (22) लौह-ए महफ़ूज़ (सुरक्षित पट्टिका) में लिखा हुआ।

86. सूरह अत-तारिक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है आसमान की और रात को प्रकट होने वाले की। (2) और तुम क्या जानो कि वह रात को प्रकट होने वाला क्या है। (3) चमकता हुआ तारा। (4) कोई व्यक्ति ऐसा नहीं है जिसके ऊपर निरीक्षक न हों। (5) तो मनुष्य को देखना चाहिए कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है। (6) वह एक उछलते हुए पानी से पैदा किया गया है। (7) जो निकलता है पीठ और सीने के बीच से। (8) निस्सन्देह वह उसके पुनः पैदा करने पर सक्षम है। (9) जिस दिन छिपी हुई बातें परखी जायेंगी। (10) उस समय मनुष्य के पास न कोई बल होगा और न कोई सहायक। (11) सौगन्ध है आसमान चक्कर मारने वाले की। (12) और फूट निकलने वाली धरती की। (13) निस्सन्देह यह पक्की बात है। (14) और यह हँसी की बात नहीं। (15) वह

युक्तियां करने में लगे हुए हैं। (16) और मैं भी युक्तियां करने में लगा हुआ हूँ। (17) तो अवज्ञाकारियों को ढील दे, उनको ढील दे थोड़े दिनों।

87. सूरह अल-आला

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अपने पालनहार के नाम की पवित्रता का वर्णन करो जो सबसे श्रेष्ठ है। (2) जिसने बनाया फिर ठीक किया। (3) और जिसने ठहराया, फिर मार्ग बताया। (4) और जिसने चारा निकाला। (5) फिर उसको काले रंग का कूड़ा बना दिया। (6) हम तुमको पढ़ायेंगे फिर तुम नहीं भूलोगे। (7) परन्तु जो अल्लाह चाहे, वह जानता है प्रत्यक्ष को भी और उसको भी जो छिपा हुआ है। (8) और हम तुमको ले चलेंगे आसान मार्ग पर। (9) तो उपदेश दो यदि उपदेश लाभ पहुँचाये। (10) वह व्यक्ति उपदेश स्वीकार करेगा जो डरता है। (11) और उससे मुँह मोड़ेगा, वह जो अभागा होगा। (12) वह पड़ेगा बड़ी आग में। (13) फिर न वह उसमें मरेगा और न जीयेगा। (14) सफल हुआ जिसने अपने को पवित्र किया। (15) और अपने पालनहार का नाम लिया, फिर नमाज़ पढ़ी। (16) बल्कि तुम सांसारिक जीवन को वरीयता देते हो। (17) और परलोक बेहतर है और स्थायी है। (18) यही अगले सहीफ़ों (ग्रन्थों) में भी है। (19) मूसा और इब्राहीम के सहीफ़ों में।

88. सूरह अल-ग़ाशियह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क्या तुमको उस छा जाने वाली की सूचना पहुँची है। (2) कुछ चेहरे उस दिन अपमानित होंगे। (3) कठिन परिश्रम करने वाले थके हुए। (4) वह दहकती हुई आग में पड़ेंगे। (5) खौलते हुए स्रोत से पानी पिलाये जायेंगे। (6) उनके लिए काँटों वाले झाँड के अतिरिक्त और कोई खाना न होगा। (7) जो न मोटा करे और न भूख़ मिटाये। (8) कुछ चेहरे उस दिन प्रफुल्लित होंगे। (9) अपनी

कमाई पर प्रसन्न होंगे। (10) ऊँचे बाग़ में। (11) वह उसमें कोई व्यर्थ बात नहीं सुनेंगे। (12) उसमें बहते हुए स्रोत होंगे। (13) उसमें तख़्त होंगे ऊँचे बिछे हुए। (14) और कटोरे, सामने लगे हुए। (15) और बराबर बिछे हुए गद्दे। (16) और कालीन प्रत्येक दिशा में पड़े हुए। (17) तो क्या वह ऊँट को नहीं देखते कि वह कैसे पैदा किया गया। (18) और आकाश को कि वह किस प्रकार ऊँचा किया गया। (19) और पहाड़ों को कि वह किस प्रकार खड़ा किया गया। (20) और धरती को कि वह किस प्रकार बिछायी गयी। (21) अतः तुम नसीहत कर दो, तुम मात्र नसीहत करने वाले हो। (22) तुम उन पर दरोगा नहीं। (23) परन्तु जिसने मुँह मोड़ा और झुठलाया। (24) तो अल्लाह उसको बड़ा दण्ड देगा। (25) हमारी ही ओर उनकी वापसी है। (26) फिर हमारे ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना।

89. सूरह अल-फ़ज्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है उषाकाल की। (2) और दस रातों की। (3) और सम और विषम की। (4) और रात की जब वह चलने लगे। (5) क्यों, इसमें तो बुद्धिमान के लिए काफ़ी प्रमाण है। (6) तुमने नहीं देखा, तुम्हारे पालनहार ने आद के साथ क्या मामला किया। (7) स्तम्भों वाले एरम के साथ। (8) जिनके समान कोई क़ौम देशों में पैदा नहीं की गयी। (9) और समूद के साथ जिन्होंने घाटी में चट्टानें तराशीं। (10) और मेखों (खूटों) वाले फ़िरऔन के साथ (11) जिन्होंने देशों में व्रिदोह किया (12) फिर उनमें बहुत उपद्रव फैलाया। (13) तो तुम्हारे पालनहार ने उनके ऊपर यातना का कोड़ा बरसाया। (14) निस्सन्देह तुम्हारा पालनहार घात में है।(15) अतः मनुष्य का मामला यह है कि जब उसका पालनहार उसकी परीक्षा लेता है और उसको सम्मान और नेमत प्रदान करता है तो वह कहता है कि मेरे पालनहार ने मुझको सम्मान दिया। (16) और जब वह उसकी परीक्षा लेता है और उसकी जीविका उस पर संकुचित कर देता है तो वह कहता है कि मेरे पालनहार ने मुझको अपमानित

कर दिया। (17) कदापि नहीं, बल्कि तुम अनाथ का सम्मान नहीं करते। (18) और तुम निर्धन को खाना खिलाने पर एक दूसरे को नहीं उभारते। (19) और तुम विरासत को समेट कर खा जाते हो। (20) और तुम सम्पत्ति से बहुत अधिक स्नेह रखते हो। (21) कदापि नहीं, जब धरती को तोड़ कर चूर्ण विचूर्ण कर दिया जायेगा। (22) और तुम्हारा पालनहार आयेगा और फ़रिश्ते आयेंगे पंक्ति–पंक्ति होकर। (23) और उस दिन नरक लायी जायेगी, उस दिन मनुष्य को समझ आयेगी, और अब समझ आने का अवसर कहाँ। (24) वह कहेगा, काश मैं अपने जीवन में कुछ आगे भेजता। (25) अतः उस दिन न तो अल्लाह के बराबर कोई यातना देगा, (26) और न उसके बाँधने के बराबर बाँधेगा। (27) ऐ सन्तुष्ट आत्मा। (28) चल अपने पालनहार की ओर, तू उससे प्रसन्न, वह तुझसे प्रसन्न। (29) अतः सम्मिलित हो मेरे बन्दों में। (30) और प्रवेश हो मेरी जन्नत में।

90. सूरह अल-बलद

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) नहीं, मैं सौगन्ध खाता हूँ इस नगर (मक्का) की। (2) और तुम इसमें निवास करते हो। (3) और सौगन्ध है पिता की और उसकी सन्तान की। (4) हमने मनुष्य को कठिनाई में पैदा किया है। (5) क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बस नहीं। (6) कहता है कि मैंने बहुत सा माल ख़र्च कर दिया। (7) क्या वह समझता है कि किसी ने उसको नहीं देखा। (8) क्या हमने उसको दो आँखें नहीं दीं। (9) एक जीभ और दो होंठ। (10) और हमने उसको दोनों मार्ग बता दिये। (11) फिर वह घाटी पर नहीं चढ़ा। (12) और तुम क्या जानो कि क्या है वह घाटी। (13) गर्दन को छुड़ाना। (14) या भूख़े को खाना खिलाना। (15) सम्बन्धी अनाथ को (16) अथवा मिट्टी में पड़े हुए वंचित को। (17) फिर वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाये और एक दूसरे को धैर्य की और संवेदना का उपदेश दिया। (18) यही लोग भाग्य वाले हैं। (19) और जो आयतों के झुठलाने वाले हुए, वह दुर्भाग्य वाले हैं। (20) उन पर आग छायी हुई होगी।

91. सूरह अश-शम्स

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है सूरज की और उसकी धूप चढ़ने की। (2) और चाँद की जबकि वह सूरज के पीछे आये। (3) और दिन की जबकि वह उसको प्रकाशित कर दे। (4) और रात की जब वह उसको छिपाये। (5) और आसमान की और जैसा कि उसको बनाया। (6) और धरती की और जैसा कि उसको फैलाया। (7) और व्यक्ति की जैसा कि उसको ठीक किया। (8) फिर उसको समझ दी, उसकी बुराई की और उसकी भलाई की। (9) सफल हुआ जिसने उसको पवित्र किया। (10) और असफल हुआ जिसने उसको दूषित किया। (11) समूद ने अपने विद्रोह के कारण झुठलाया। (12) जबकि उठ खड़ा हुआ उनका सबसे बड़ा अभागा। (13) तो अल्लाह के सन्देष्टा ने उनसे कहा कि अल्लाह की ऊँटनी और उसके पानी पीने से सचेत हो जाओ। (14) तो उन्होंने उसको झुठलाया, फिर ऊँटनी को मार डाला, फिर उनके पालनहार ने उनके पाप के कारण उन पर विनाश उतारा, फिर सबको समतल कर दिया। (15) वह नहीं डरता कि उसके पीछे क्या होगा।

92. सूरह अल-लैल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है रात की जबकि वह छा जाये। (2) और दिन की जबकि वह प्रकाशित हो। (3) और उसकी जो उसने पैदा किये नर और मादा। (4) कि तुम्हारे प्रयास भिन्न भिन्न हैं। (5) तो जिसने दिया और वह डरा। (6) और उसने भलाई को सत्य माना। (7) तो उसको हम आसान मार्ग के लिए सुविधा देंगे। (8) और जिसने कंजूसी की और बेपरवाह रहा। (9) और भलाई को झुठलाया। (10) तो हम उसको कठिन मार्ग के लिए सुविधा देंगे। (11) और उसकी सम्पत्ति उसके काम न आयेगी जब वह गढ़े में गिरेगा। (12) निस्सन्देह हमारा दायित्व है मार्ग बताना। (13) और निस्सन्देह हमारे अधिकार में है परलोक और संसार। (14) अतः मैंने तुमको

डरा दिया भड़कती हुई आग से। (15) उसमें वही पड़ेगा जो बड़ा अभागा है। (16) जिसने झुठलाया और मुँह मोड़ा। (17) और उससे सुरक्षित रखा जायेगा अधिक डरने वाले को। (18) जो अपनी सम्पत्ति देता है पवित्रता प्राप्त करने के लिए। (19) और उसका किसी पर कोई उपकार नहीं जिसका बदला उसे लेना हो। (20) परन्तु मात्र अपने उच्च अल्लाह की प्रसन्नता के लिए। (21) और शीघ्र वह प्रसन्न हो जायेगा।

93. सूरह अज़्-ज़ुहा

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है प्रकाशमय दिन की। (2) और रात की जब वह छा जाये। (3) तुम्हारे पालनहार ने तुमको नहीं छोड़ा, और न वह तुमसे अप्रसन्न हुआ। (4) और निश्चित रूप से परलोक तुम्हारे लिए संसार से बेहतर है। (5) और शीघ्र ही अल्लाह तुझको देगा, फिर तू सन्तुष्ट हो जायेगा। (6) क्या अल्लाह ने तुमको अनाथ नहीं पाया, फिर उसने तुमको ठिकाना दिया। (7) और तुमको ढूँढ़ने वाला पाया तो उसने तुमको मार्ग दिखाया। (8) और तुमको निर्धन पाया तो तुमको सम्पन्न कर दिया। (9) तो तुम अनाथ पर कठोरता न दिखाओ। (10) और तुम भिखारी (मांगने वाले) को न झिड़को। (11) और तुम अपने पालनहार के उपकारों का वर्णन करो।

94. सूरह अल-इन्शिराह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क्या हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए नहीं खोल दिया है। (2) और तुम्हारा वह बोझ उतार दिया। (3) जिसने तुम्हारी पीठ झुका दी थी। (4) और हमने तुम्हारी ख्याति को उच्च कर दिया। (5) तो कठिनाई के साथ आसानी है। (6) निस्सन्देह कठिनाई के साथ आसानी है। (7) फिर तुम निवृत्त हो जाओ तो परिश्रम करो। (8) और अपने पालनहार की ओर अपना ध्यान लगाओ।

95. सूरह अत-तीन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है अंजीर की और ज़ैतून की। (2) और सीना पहाड़ की। (3) और इस शान्ति वाले नगर की। (4) हमने मनुष्य को श्रेष्ठतम संरचना पर पैदा किया। (5) फिर उसको सबसे नीचे फेंक दिया। (6) परन्तु जो लोग ईमान लाये और अच्छे कर्म किये तो उनके लिए कभी न समाप्त होने वाला बदला है। (7) तो अब क्या है जिससे तुम बदला मिलने को झुठलाते हो। (8) क्या अल्लाह समस्त शासकों से बड़ा शासक नहीं।

96. सूरह अल-अलक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) पढ़ अपने पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया। (2) पैदा किया मनुष्य को अलक़ (जमे हुए ख़ून) से। (3) पढ़ और तेरा पालनहार बड़ा उदार है। (4) जिसने ज्ञान सिखाया क़लम से। (5) मनुष्य को वह कुछ सिखाया जो वह जानता न था। (6) कदापि नहीं, मनुष्य विद्रोह करता है। (7) इस आधार पर कि वह अपने आप को आत्मनिर्भर देखता है। (8) निस्सन्देह तेरे पालनहार ही की ओर लौटना है। (9) क्या तुमने देखा उस व्यक्ति को जो मना करता है। (10) एक बन्दे को जब वह नमाज़ पढ़ता हो। (11) तुम्हारा क्या विचार है, यदि वह सन्मार्ग पर हो। (12) अथवा डर की बात सिखाता हो। (13) तुम्हारा क्या विचार है, यदि उसने झुठलाया और मुँह मोड़ा। (14) क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है। (15) कदापि नहीं, यदि वह नहीं माना तो हम माथे के बाल पकड़ कर उसको खीचेंगे। (16) उस माथे को जो झूठा, पापी माथा है। (17) अब वह बुला ले अपने समर्थकों को। (18) हम भी नरक के फ़रिश्तों को बुलायेंगे। (19) कदापि नहीं, उसकी बात न मान और सजदा कर और निकट हो जा।

97. सूरह अल-क़द्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हमने इसको उतारा है क़द्र (भाग्यशाली व मूल्यवान) की रात में। (2) और तुम क्या जानो कि क़द्र की रात क्या है। (3) क़द्र की रात हज़ार महीनों से बेहतर है। (4) फ़रिश्ते और रुह (जिब्रील) इसमें अपने पालनहार की अनुमति से उतरते हैं, प्रत्येक आदेश लेकर। (5) वह रात पूर्णतः सलामती है, भोर होने तक।

98. सूरह अल-बय्यिनह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) किताब वालों (यहूदियों व ईसाईयों) और मुश्रिकीन (साझी ठहराने वालो) में से जिन लोगों ने झुठलाया, वह मानने वाले नहीं। जब तक उनके पास स्पष्ट प्रमाण न आ जाये। (2) अल्लाह की ओर से एक सन्देष्टा जो पवित्र सहीफ़े (ग्रन्थ) पढ़कर सुनाये। (3) जिनमें ठीक विषय लिखे हों। (4) और जो लोग किताब वाले थे वह स्पष्ट प्रमाण आ जाने के बाद भी भिन्न—भिन्न हो गये। (5) हालाँकि उनको यही आदेश दिया गया था कि वह अल्लाह की उपासना करें। उसके लिए दीन (धर्म) को शुद्ध कर दें, एकाग्र होकर और नमाज़ स्थापित करें और ज़कात (अनिवार्य दान) दें, और यही उपयुक्त दीन (धर्म) है। (6) निस्सन्देह किताब वाले और मुश्रिकीन (साझी ठहराने वालों) में से जिन लोगों ने अवज्ञा की वह नरक की आग में पड़ेंगे, वह सदैव उसमें रहेंगे, यह लोग सबसे बुरे प्राणी हैं। (7) जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे कर्म किये, वह लोग सबसे अच्छे प्राणी हैं। (8) उनका बदला उनके पालनहार के पास सदैव रहने वाले बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वह सदैव रहेंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न और वह अल्लाह से प्रसन्न, यह उस व्यक्ति के लिए है जो अपने पालनहार से डरे।

99. सूरह अज़्-ज़िल्ज़ाल

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब धरती ज़ोर से हिला दी जायेगी। (2) और धरती अपना बोझ निकाल कर बाहर डाल देगी। (3) और मनुष्य कहेगां कि इसको क्या हुआ। (4) उस दिन धरती अपनी परिस्थितियों का वर्णन करेगी। (5) क्योंकि तुम्हारे पालनहार का उसको यही आदेश होगा। (6) उस दिन लोग अलग अलग निकलेंगे, ताकि उनके कर्म उन्हें दिखाये जायें। (7) तो जिस व्यक्ति ने कण बराबर भलाई की होगी, वह उसको देख लेगा। (8) और जिस व्यक्ति ने कण मात्र बुराई की होगी, वह उसको देख लेगा।

100. सूरह अल-आदियात

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है उन घोड़ों की जो हाँफते हुए दौड़ते हैं। (2) फिर टाप मारकर चिन्गारी निकालने वाले। (3) फिर भोर के समय छापा मारने वाले। (4) फिर उसमें धूल उड़ाने वाले। (5) फिर उस समय सेना में घुस जाने वाले। (6) निस्सन्देह मनुष्य अपने पालनहार का कृतघ्न है। (7) और वह स्वंय इस पर गवाह है। (8) और वह धन के मोह में अत्यन्त दृढ़ है। (9) क्या वह उस समय को नहीं जानता जब वह क़ब्रों से निकाला जायेगा। (10) और निकाला जायेगा जो कुछ दिलों में है। (11) निस्सन्देह उस दिन उनका पालनहार उनसे भली भाँति भिज्ञ होगा।

101. सूरह अल-क़ारिअह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) खड़खड़ाने वाली। (2) क्या है खड़खड़ाने वाली। (3) और तुम क्या जानो कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली। (4) जिस दिन लोग पतिंगों की तरह बिखरे हुए होंगे। (5) और पहाड़ धुनके हुए रंगीन ऊन की तरह

हो जायेंगे। (6) फिर जिस व्यक्ति का पलड़ा भारी होगा। (7) वह मनभावन आराम में होगा। (8) और जिस व्यक्ति का पलड़ा हल्का होगा। (9) तो उसका ठिकाना गड्ढा है। (10) और तुम क्या जानो कि वह क्या है। (11) भड़कती हुई आग।

102. सूरह अत-तकासुर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अधिकधिक के लालच ने तुमको भूल में रखा। (2) यहाँ तक कि तुम क़ब्रों में जा पहुँचे। (3) कदापि नहीं, तुम अतिशीघ्र जान लोगे। (4) फिर कदापि नहीं, तुम अतिशीघ्र जान लोगे। (5) कदापि नहीं, यदि तुम विश्वास के साथ जानते। (6) कि तुम अवश्य नरक को देखोगे। (7) फिर तुम उसको विश्वास की आँख से देखोगे। (8) फिर उस दिन निश्चित रूप से तुमसे नेमतों के सम्बन्ध में अवश्य पूछ होगी।

103. सूरह अल-अस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) सौगन्ध है व्यतीत होते समय की। (2) निस्सन्देह मनुष्य घाटे में है। (3) परन्तु जो लोग कि ईमान लाये और भले कर्म किये और उन्होंने एक दूसरे को सच्चाई का उपदेश दिया। और उन्होंने एक दूसरे को धैर्य रखने का उपदेश दिया।

104. सूरह अल-हुमज़ह

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) विनाश है प्रत्येक व्यंग करने वाले, कमियाँ निकालने वाले के लिए। (2) जिसने सम्पत्ति को समेटा और गिन–गिन कर रखा। (3) वह सोचता है कि उसकी सम्पत्ति सदैव उसके साथ रहेगी। (4) कदापि नहीं, वह फेंका जायेगा रौंदने वाली जगह में। (5) और तुम क्या जानो कि वह रौंदने वाली जगह क्या

है। (6) अल्लाह की भड़काई हुई आग। (7) जो दिलों तक पहुँचेगी। (8) वह उन पर बन्द कर दी जायेगी। (9) ऊँचे–ऊँचे स्तम्भों में।

105. सूरह अल-फ़ील

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क्या तुमने नहीं देखा कि तुम्हारे पालनहार ने हाथी वालों के साथ क्या किया। (2) क्या उसने उनकी युक्ति को असफल नहीं कर दिया। (3) और उन पर चिड़ियाँ (अबाबील) भेजीं झुण्ड के झुण्ड। (4) जो उन पर कंकड़ की पथरियाँ फेंकते थे। (5) फिर अल्लाह ने उसको खाये हुए भूसा की भाँति कर दिया।

106. सूरह कुरैश

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) इसलिए कि कुरैश अभ्यस्त हुए। (2) जाड़े और गर्मी की यात्रा से अभ्यस्त। (3) तो उनको चाहिए कि वह इस घर के पालनहार की उपासना करें। (4) जिसने उनको भूख़ में खाना दिया और उनको भय से मुक्त कर दिया।

107. सूरह अल-माऊन

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) क्या तुमने नहीं देखा उस व्यक्ति को जो न्याय के दिन को झुठलाता है। (2) वही है जो अनाथ को धक्के देता है। (3) और निर्धन को खाना देने पर नहीं उभारता। (4) तो विनाश है उन नमाज़ पढ़ने वालों के लिए। (5) जो अपनी नमाज़ से बेपरवाह हैं। (6) वह जो दिखावा करते हैं। (7) और साधारण आवश्यकता की वस्तुएँ भी नहीं देते।

108. सूरह अल-कौसर

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) हमने तुमको कौसर (प्रचुरता) दे दिया। (2) तो अपने पालनहार के लिए नमाज़ पढ़ो और क़ुर्बानी (त्याग) करो। (3) निस्सन्देह तुम्हारा शत्रु ही बे नाम-निशान है।

109. सूरह अल-काफ़िरून

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कहो कि ऐ अवज्ञाकारियो, (2) मैं उनकी उपासना नहीं करुँगा जिनकी उपासना तुम करते हो। (3) और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो जिसकी उपासना मैं करता हूँ। (4) और मैं उनकी उपासना करने वाला नहीं जिनकी उपासना तुमने की है। (5) और न तुम उसकी उपासना करने वाले हो जिसकी उपासना मैं करता हूँ। (6) तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन (धर्म), और मेरे लिए मेरा दीन (धर्म)।

110. सूरह अन-नस्र

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) जब अल्लाह की सहायता आ जाये और विजय। (2) और तुम देखोगे कि लोग अल्लाह के दीन (धर्म) में प्रवेश हो रहे हैं दल के दल। (3) तो अपने पालनहार की स्तुति करो उसकी प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो, निस्सन्देह वह बहुत क्षमा करने वाला है।

111. सूरह अल-लहब

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) अबू लहब के हाथ टूट जायें और वह विनष्ट हो जाये। (2) न उसकी सम्पत्ति उसके काम आयी और न वह जो उसने कमाया। (3) वह शीघ्र ही भड़कती हुई आग में पड़ेगा। (4) और उसकी पत्नी भी जो ईधन लिए फिरती है सिर पर। (5) उसकी गर्दन में रस्सी है बटी हुई।

112. सूरह अल-इख़्लास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कहो, वह अल्लाह एक है। (2) अल्लाह निस्पृह है। (3) न उसकी कोई सन्तान है और न वह किसी की सन्तान। (4) और कोई उसके समकक्ष नहीं।

113. सूरह अल-फ़लक़

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कहो, मैं शरण माँगता हूँ सुबह के पालनहार की। (2) हर चीज़ की बुराई से जो उसने पैदा की। (3) और अंधकार की बुराई से जबकि वह छा जाये। (4) और गाठों में फूँक मारने वालों की बुराई से। (5) और ईर्ष्यालु की बुराई से, जबकि वह ईर्ष्या करे।

114. सूरह अन-नास

शुरू अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपाशील, अत्यन्त दयावान है।

(1) कहो, मैं शरण माँगता हूँ लोगों के पालनहार की। (2) लोगों के सम्राट की। (3) लोगों के उपास्य की। (4) उसकी बुराई से जो वसवसा डाले और छिप जाये। (5) जो लोगों के दिलों में वसवसा डालता है। (6) जिन्न में से, और मनुष्य में से।

पवित्र कुरआन संपूर्ण मानव जाति के लिए अल्लाह का अंतिम संदेश है। यह अल्लाह के आख़िरी पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) पर सातवीं सदी ईस्वी के आरंभ में अल्लाह की ओर से अवतारित हुआ। यह पवित्र किताब, ईसा, मूसा (अलैहिमस्सलाम) और अनेक नबियों के संदेशों की पुष्टि करने और अल्लाह के अंतिम संदेश को पूरा करने के लिए अवतारित की गई। यह पवित्र कुरआन पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल.) के जीवन में २३ वर्ष के समय में थोड़ा-थोड़ा अवतरित हुआ। पैग़म्बर (सल्ल.) के जीवनकाल में पवित्र कुरआन के जो भाग अवतरित होते, आप अपने साथियों द्वारा उन को लिखवा लेते और इसी के साथ आपके साथी उस को याद भी कर लिया करते थे। इस्लाम के अनुयाइयों के बीच पवित्र कुरआन को याद करने की यह परंपरा आज तक जारी है। एतिहासिक और वैज्ञानिक स्तर पर यह साबित हो चुका है कि प्रथ्वी पर, आज पवित्र कुरआन सबसे प्रमाणिक और शुद्ध आस्मानी किताब है।

Goodword

info@goodwordbooks.com
info@cpsglobal.org